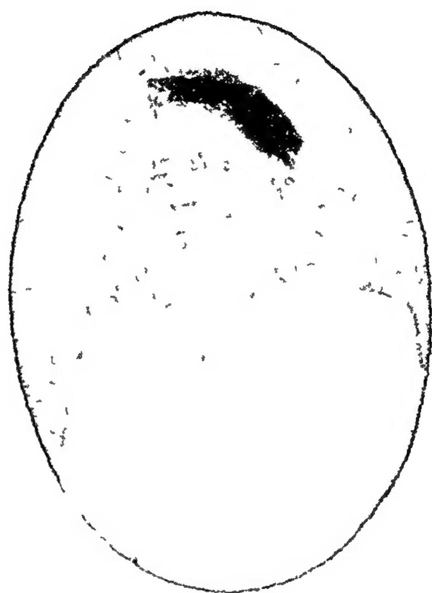
समर्पण

श्रीमान् माननीय प्रातःस्मरणीय पूज्य गुरुदेव
श्री १००८ श्री श्री श्री शार्दूलसिंहजी
म० सा० की परम पवित्र सेवा में:—

आपसे सीखी गुरु ! यह बाल लेखन की कला ।
आपके उपकार को कैसे भुलादूं मैं भला ॥
यह पुस्तिका कर कमल में स्वीकार करना दास की ।
करना क्षमा गुरुदेव ! जो हो त्रुटि बाल विलास की ॥

भवदीय चरणरज—

मुनि रूपचन्द्र जैन
"रजत"



जैनोपदेशक पंच मूलचन्द मुराण।

भूमिका

श्री राम-गुण रसिक प्रिय पाठकगण !

रामायण का महत्व — अखिल संसार के तत्वों का सार, आत्म कल्याण का आधार और नर तन जीवन का निर्धार नियमतः ज्ञानी जनों ने सत्य और सदाचार ही को फरमाया है।

सत्य सदाचार ही आत्मधर्म है, सत्य सदाचार ही आध्यात्मिक कर्म है, विशेष तो क्या कहें पर सत्य सदाचार ही धर्म का मर्म हैं।

संसार में सत्य और सदाचार को जिन पुरुषों ने हृदय से धारण किया है उन्हीं महापुरुषों का आत्म-कल्याण हुआ था, होता है, और होगा। सत्य-सदाचारी पुरुषों की ही संसार में जय विजय हुआ करती है, ऋद्धियों सिद्धियों लब्धियों व शक्तियों सत्य-सदाचारी मानव के चरणारविंदों में सदैव दास दासियों की तरह नतमस्तक हो हाजिर रहा करती है और अधिक तो क्या पर सत्य-सदाचारी की देव, दानव, सुर असुर किन्नर सभी नम्रीभूत हो सेवा करते हैं। यथा—

देव दानव गंधव्वा, जक्ख रक्खस किन्नरा।
बम्भयारिं नमंसन्ति, दुक्करं जे करन्ति ते॥

उत्त० अ० १६ गाथा १६

और जिस पुरुष में सत्य सदाचार की तपश्चर्या है, उस मानव में सब प्रकार की तपश्चर्या है, कहा भी है कि—"तवेसु वा उत्तमं

का निर्माण किया था। तदन्तर स्वल्पज्ञों के हितार्थ संगीतमय रामायण की कृति कवि 'केशराजजी' ने की है। अन्यान्य जैन कवियों ने भी यथाशक्ति 'रामायण' पर लेखनी चलाई परन्तु उपरोक्त कवियों की कविता जितनी प्रख्याति में आई उतनी अन्य कवियों की नहीं। अस्तु,

जैन पद्य रामायण के प्रकाशन की आवश्यकता

पाठक महाशय! जैन पद्य रामायण का प्रकाशन क्यों किया जा रहा है और इसमें क्या अधिकता है? इत्यादि के उत्तर में इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि 'केशराजजी' रचित रामयश का प्रकाशन कितने ही वर्षों के पहले हुआ था, मगर उसकी इस समय उपलब्धि विशेषतः कम होती है और स्थानकवासी जैन समाज में उसकी पूर्ण आवश्यकता भी है। बस इसी की पूर्ति करने के निमित्त ही इस जैन पद्य रामायण का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसमें अधिकता भी रहेगी वह यह कि इस जैन पद्य रामायण में कवि केशराजजी के सिवा अन्य जैन व अजैन कवियों की प्रसंगोपात सुन्दर रचनायें भी प्रविष्ट की गई हैं। संशोधन का खयाल तो पूर्ण रूप से रहा ही है पर उससे भी अधिक कागज कम्पोज-साइज बाइंडिंग आदि पुस्तक का कलेवर भी पूर्ण रूप से सजाया गया है। इसमें विशेष सुविधा तो यह रही है कि पुस्तक बहुत बड़ी शानदार व सजिल्द होने पर भी स्वल्प मूल्य रख कर ग्राहकों के हाथ दी गई है।

संग्राहकजी का परिचय

इसके संग्रहकर्ता ओसवाल वंश वीशा खानदान के सुराणा जाति के जैनोपदेशक वैद्य धूलचन्दजी हैं। आपका जन्म मरुधर देश पीपाड़ सीटी में सं १६४५

बम्भचेरं" "सत्यं चेत्तपसा च किं" इत्यादि आर्ष वचनों से स्वयं सिद्ध ही है और सत्य सदाचार से रहित मानव कितना ही जप तप तीर्थ व्रत त्याग क्रिया कर्म करले पर आत्म-कल्याण होना महा दुष्कर है, क्योंकि सब धर्म कर्म का मर्म सत्य सदाचार ही है, इसके बिना न धर्म है न कर्म और न कल्याण है।

अग्नि का जल बना देना, जल का थल बना देना महा भयंकर शेर का स्यार कर देना, और खूंखार सर्प की फूलों की माला बना देना इत्यादि शक्तियां सत्य सदाचार के प्रताप से ही उत्पन्न हुआ करती है।

जैन-पद्य रामायण का परिचय

अब इसके उदाहरण के लिए पुरुष-पावन श्री राम और सती शिरोमणि श्री सीताजी का जीवन चरित्र ही पर्याप्त होगा, अतएव यह "जैन पद्य-रामायण" पाठकों की सेवा में पेश कर रहा हूं।

रामायण का आशय यही है कि राम+अयन यानि राम का मार्ग अर्थात् रामचन्द्रजी जिस न्याय-नीति का आश्रय लेकर चले थे अथवा जिस सदाचार के मार्ग पर प्रगति की उसका जिसमें दिग्दर्शन किया गया हो उसी का नाम रामायण है।

रामायण का महत्व जैन दर्शन व अजैन दर्शन में सर्वत्र अति आदर से माना गया है. जैनेतर दर्शन में आदि कवि बाल्मीक व श्री गोस्वामी तुलसीदासजी और राधेश्याम आदि कवियों ने रामायण की बड़ी रसीली रचना की है और जैन दर्शन में पहले पहल श्री हेमचंद्राचार्यजी ने संस्कृत भाषा में 'रामायण'

का निर्माण किया था। तदन्तर स्वल्पज्ञों के हितार्थ संगीतमय रामायण की कृति कवि 'केशराजजी' ने की है। अन्यान्य जैन कवियों ने भी यथाशक्ति 'रामायण' पर लेखनी चलाई परन्तु उपरोक्त कवियों की कविता जितनी प्रख्याति में आई उतनी अन्य कवियों की नहीं। अस्तु,

जैन पद्य रामायण के प्रकाशन की आवश्यकता

पाठक महाशय! जैन पद्य रामायण का प्रकाशन क्यों किया जा रहा है और इसमें क्या अधिकता है? इत्यादि के उत्तर में इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि 'केशराजजी' रचित रामयश का प्रकाशन कितने ही वर्षों के पहले हुआ था, मगर उसकी इस समय उपलब्धि विशेषतः कम होती है और स्थानकवासी जैन समाज में उसकी पूर्ण आवश्यकता भी है। बस इसी की पूर्ती करने के निमित्त ही इस जैन पद्य रामायण का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसमें अधिकता भी रहेगी वह यह कि इस जैन पद्य रामायण में कवि केशराजजी के सिवा अन्य जैन व अजैन कवियों की प्रसगोपात सुन्दर रचनायें भी प्रविष्ट की गई है। संशोधन का खयाल तो पूर्ण रूप से रहा ही है पर उससे भी अधिक कागज कम्पोज-साइज बाइंडिंग आदि पुस्तक का कलेवर भी पूर्ण रूप से सजाया गया है। इसमें विशेष सुविधा तो यह रही है कि पुस्तक बहुत बड़ी शानदार व सजिल्द होने पर भी स्वल्प मूल्य रख कर ग्राहकों के हाथ दी गई है।

संग्राहकजी का परिचय

इसके संग्रहकर्ता ओसवाल वंश वीशा खानदान के सुराणा जाति के जैनोपदेशक वैद्य भूलचन्दजी है। आपका जन्म मरुधर देश पीपाड़ सीटी में सं १६४५

की साल में कार्तिक वदि चतुर्दशी (दीवाली) के दिन हुआ। आप बचपन से ही विद्यारसिक है। किन्तु आपकी बालकाल में ही चेचक (माता) की बीमारी से नजर चली गई थी, क्या किया जाय " कर्मणो गहना गतिः " कर्मों के आगे किसका जोर चल सकता है। बस आप प्रज्ञाचक्षु रहने पर भी वाणिज्य कला में पूर्ण प्रवीन बन गये और प्रत्येक कर्तव्य में आपकी कुशलता को देख कर बहुत से महाशय दंग होजाते हैं। ज्योतिष शास्त्र में आपकी अच्छी गति है और वैद्यक शास्त्र में तो आपका पूरा अधिकार है, आप जैन-वैद्य हैं, इलाज भी आपका ठीक ही हुआ करता है और औषधियों का निर्माण भी आप अपने ही हाथों किया करते हैं आपको नाड़ीज्ञान में भी काफी सफलता प्राप्त हुई हैं। जैन सूत्रों का तो आपको बोध बचपन से ही है।

आपके दिल में यह भावना कितने ही अर्से से थी कि 'रामायण' का संग्रह करवा कर प्रकाशन करूं मगर आप प्रज्ञाचक्षु रहे अतः आप लिख नहीं सकने के कारण यह भावना मन ही मन रही।

अच्छी भावना प्रत्येक प्राणी की समय पाकर हो ही जाती है, फलस्वरूप लेखकजी का भी संयोग मिल गया और पुस्तक भी तैयार होगई।

इस पुस्तक के लिखने का परिश्रम मरुस्थलीय श्रीमज्जैनाचार्य त्यागमूर्ति प्रसिद्ध पूज्य श्री श्री १००८ श्री चौथमल्लजी महाराज साहब की सम्प्रदायस्थ शान्त दान्त विमल वैरागी सकल कुवासना त्यागी यम नियम निष्ठ सकल गुण विशिष्ट स्थविर पद विभूषित श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव प्रवर्तक स्वामीजी श्री श्री 'शार्दूलसिंहजी' म० सा० के प्रधान शिष्य सरल हृदय

कवि मुनि श्री 'रूपचन्द्रजी' म० सा० ने हमारे अतीव आग्रह से आपने अपना अमूल्य समय देकर जो उदारता प्रकट की है एतदर्थ संग्राहक आपका पूर्ण आभारी है।

अब आपको यह भी मालूम कर देता हूं कि "जैन पद्य रामायण" में किन २ कवियों की रचना संग्रह की गई है।

मुख्यता में तो कवि 'केशराजजी' की मूल रामायण है, फिर पूज्य श्री जयमल्लजी म० सा० की सम्प्रदाय के पंडित मुनिश्री रामचन्द्रजी म० की कविता व श्री व्याख्यान वाचस्पति स्वामीजी श्री नथमल्लजी म० सा० की विशेष कविता ली गई है, आप दोनों सर्व गुण सम्पन्न व महान प्रतापी महात्मा थे, आप दोनों की कविताएँ काफी विद्यमान है।

तीसरे नम्बर में स्वामीजी श्री नथमलजी म० सा० के प्रधान शिष्य कविकुल कुमुद कलाधर स्वामीजी मन्त्री श्री चौथमल्लजी म० सा० की कविता का संग्रह किया गया है।

चौथे नम्बर में स्वामीजी आत्मार्थी मुनि श्री रावतमलजी म० सा० की कविता का संग्रह किया गया है।

पांचवें नम्बर में श्रीमज्जैनाचार्य श्री अमरसिंहजी म० सा० के सम्प्रदानुयायी स्वामीजी श्री नेमीचन्दजी म० की कविता भी संकलित की गई है जोकि शांत मुनिश्री नारायणदासजी म० सा० की कृपा से प्राप्त हुई है। श्री पूज्य प्रखर पण्डित वादीगज केसरी रेखराजजी म० के शिष्य श्री नथमल्लजी म० की अनुपम कविता भी इसमें डाली गई है।

छठे नम्बर में श्रीमान् दिवंगत पूज्य श्री १००८ श्री कानमलजी म० के सुशिष्य न्यायरत्न साहित्य-प्रेमी कविता कामिनीकान्त युवक हृदय पंडितरत्न श्री चैनमलजी म० की

यद्यपि वहुत साहित्य सुधार सरसित है तथापि पहिले खण्ड में हनुमानजी की उत्पत्ति के प्रसंग में थोड़ा सा अंजना का भी अधिकार केशराजजी ने अपने रामयश में लिया है तदनुसार हमने भी उस 'सती अंजना' से खास खास मौके पर गायन लिखे हैं आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं।

सातवें नम्बर पूज्य गुरुदेव श्री शार्दुलसिंहजी म० सा० के सुशिष्य मुनिश्री रूपचन्द्रजी म० सा० की कविता का संकलन चारों ही खण्डों में किया गया हैं इस ग्रंथ को संशोधन करने का कष्ट आपही ने किया है। आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं वे सब एक एक से वढकर हैं।

आठवें नम्बर में श्रीमान् जैनोपदेशक वैद्य भूलचन्दजी सुराणा की सरस व अतीव उपयोगी कविता का संग्रह समग्र ग्रंथ में किया गया है।

अवशेष में श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी की कविता का व राधेश्यामजी की कविता का भी प्रसंग २ पर और अमृतलालजी माथुर (जोधपुर निवासी) की कविता का भी संग्रह है जोकि ग्रंथ समाप्ति के बाद उपलब्ध होने से परिशिष्ट में लिखी गई है इत्यादि कवियों की मौलिक कविता का इस (जैन पद्य रामायण) में संग्रह किया गया है।

अब पाठकों के सम्मुख एक और शब्द कह कर इस भूमिका को यहीं समाप्त करता हूं तथा साथ ही शुद्धिपत्र जो इसके साथ दिया गया है उसकी सहायता लेते रहें और भी कोई गलती रह गई हो तो कृपया संग्रहाकजी को सूचित करें जिससे द्वितीयवृत्ति शुद्ध प्रकाशित हो सके।

आपका—

पं. बालकृष्ण उपाध्याय

* श्रीमतेऽर्हते नमः *

णमुत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्री जैन पद्य रामायण

—ः का ः—

प्रथम खण्ड

दोहा वेला-वलरागे

श्री "मुनिसुव्रत" स्वामीजी, त्रिभुवन तारण देव,
तीर्थंकर प्रभुवीशमो, सुरनरसारे सेव ॥ १ ॥
पुत्र "सुमित्र" नरेन्द्रनो, "पउमावई"[१] तसुमाय ।
जन्मभूमि जिनवर तणी, राजगृह" कहिवाय ॥ २ ॥
अवतारिया "हरिवंशमें", "हरि" साचविया चार ।
"कल्याणक" पांचेभला, नामसदा जयकार ॥ ३ ॥
चरण कमल तेहना नमी, "राम" सु "लिछमन" राय ।
"सीता" ने "रावण" तणूं, "चरित" रचूं सुखदाय ॥४॥
सुखदाई सहुलोकने. "रामकथा" अभिराम ।
श्रवण सुणन्त सरेसही, मनना वंछित काम ॥ ५ ॥
"रा" उच्चरतांमुखथकी, पाप पुलाई जाय ।
मतिफारि आवे तेहथी. "ममो" कमाड़ी थाय ॥ ६ ॥

---

१ पद्मावती = २ = केटलीक प्रतांमें "साचवीया" पाठान्तरे साचवीया, छे तेमनूं पुर्व भवेसिंहगिरि नामहत तेथी हरिसिंह थी बच्या राम अर्थ थईशके ॥ ३ रा अक्षर बोलतां (मुख खुल्ली आयछे तेमाटे पेटमांथी नीकलीने) पापदुर थायछे, तेफरी पेशतं नथी कारणकेमम्मो कमाडी थाय एटले म अक्षर कमाड़ रूप थायछे, (म बोलतां मुख बंध थायछे ॥

यद्यपि बहुत साहित्य सुधार सरसित है तथापि पहिले खण्ड में हनुमानजी की उत्पत्ति के प्रसंग में थोड़ा सा अंजना का भी अधिकार केशराजजी ने अपने रामयश में लिया है तदनुसार हमने भी उस 'सती अंजना' से खास खास मौके पर गायन लिखे हैं आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं।

सातवें नम्बर पूज्य गुरुदेव श्री शार्दुलसिंहजी म० सा० के सुशिष्य मुनिश्री रूपचन्द्रजी म० सा० की कविता का संकलन चारों ही खण्डों में किया गया हैं इस ग्रंथ को संशोधन करने का कष्ट आपही ने किया है। आपकी बनाई हुई कई पुस्तकें हैं वे सब एक एक से बढकर हैं।

आठवें नम्बर में श्रीमान् जैनोपदेशक वैद्य भूलचन्दजी सुराणा की सरस व अतीव उपयोगी कविता का संग्रह समग्र ग्रंथ में किया गया है।

अवशेष में श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी की कविता का व राधेश्यामजी की कविता का भी प्रसंग २ पर और अमृतलालजी माथुर (जोधपुर निवासी) की कविता का भी संग्रह है जोकि ग्रंथ समाप्ति के बाद उपलब्ध होने से परिशिष्ट में लिखी गई है इत्यादि कवियों की मौलिक कविता का इस (जैन पद्य रामायण) में संग्रह किया गया है।

अब पाठकों के सम्मुख एक और शब्द कह कर इस भूमिका को यहीं समाप्त करता हूं तथा साथ ही शुद्धिपत्र जो इसके साथ दिया गया है उसकी सहायता लेते रहें और भी कोई गलती रह गई हो तो कृपया संग्रहाकजी को सूचित करें जिससे द्वितीयवृत्ति शुद्ध प्रकाशित हो सके।

आपका—

पं. बालकृष्ण उपाध्याय

* श्रीमतेऽर्हते नमः *

णमुत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्री जैन पद्य रामायण

—: का :—

प्रथम खण्ड

दोहा वेला-वलरागे

श्री "मुनिसुव्रत" स्वामीजी, त्रिभुवन तारण देव,
तीर्थंकर प्रभुवीशमो, सुरनरसारे सेव ॥ १ ॥
पुत्र "सुमित्र" नरेन्द्रनो, "पउमावई"[१] तसुमाय ।
जन्मभूमि जिनवर तणी, राजगृह" कहिवाय ॥ २ ॥
अवतारिया "हरिवंशमें", "हरि" साचविया चार ।
"कल्याणक" पांचेभला, नामसदा जयकार ॥ ३ ॥
चरण कमल तेहना नमी. "राम" सु "लिछमन" राय ।
"सीता" ने "रावण" तणूं, "चरित" रचूं सुखदाय ॥४॥
सुखदाई सहुलोकने. "रामकथा" अभिराम ।
श्रवण सुणन्त सरेसही, मनना वंछित काम ॥ ५ ॥
"रा" उच्चरतांमुखथकी, पाप पुलाई जाय ।
मतिफरि आवे तेहथी, "ममो" कमाड़ी थाय ॥ ६ ॥

---

१ पद्‌मावती = २ = केटलीक प्रतांमें "साचवीया" पाठान्तरे ...ाचवीया, छे नेमनु पूर्व भवेसिंहगिरि नामहतु तेथी हरिसिंह थी ...ण्या नाम अर्थ थईशके ॥ ३ रा अक्षर बोलतां (मुख खुल्लो जायछे ...माटे पेटमांथी नीकलीने) पापदूर थायछे, तेफरी पेशतुं नथी ...ारणकेमम्मो कमाडी थाय एटले म अक्षर कमाड़ रूप थायछे, (म ...ोलतां मुख बंध थायछे ॥

पावनमें पावनमहा, कलिमल हरण अपार ।
मोक्षपन्थनूं सम्बलू, सज्जन जीवन सार ॥ ७ ॥
विसरामोस्थान की भलू, क्षेम कुशलनो ठाम ।
बीजधर्म तरुवरतणूं, "रामचन्द्र" नूं नाम ॥ ८ ॥
"लिछमन" "रावण" राजीया, तीर्थंकर पदपाय ।
मुक्तिपुरी जईथायसे, सकल जगतना राय ॥ ९ ॥
सत्यवती "सीता" सती, शीलतणो अवदात ।
स्वर्ग पहूंती बारहवें, वसुधामांहि विख्यात ॥ १० ॥

तर्ज गर्व मतिकररे—ढाल प्रक्षेप ।

श्रीमत् "सिद्ध" शिरनामी, गुरुका चरण महिरपामी, मेट निज तनमन की खामी, शारदा सन्तन सुखदाई "महिर कर वरदे प्रुजमाई" सत्यव्रत पालो, मेरी जहान सत्य व्रतपालो, सत्यसे शप विलय जावे, सत्य से "राम" शिवपावे, सत्यका सुरनर गुण-गावे ॥ सत्य० ॥ १ ॥

ढालपहीली तर्ज झकडी, सुण २ कन्तारे सीख सुहावणी ।

"जम्बू" द्वीपे क्षेत्र "भरतभलू" "लंका" नगरी स्थानक निरमलू; (उलालो) निर्मलूं स्थानक पूरी "लंका," द्वीपतो "राक्षस" जुवो ॥ "अजित" जिनवरतणे वारेभूप "धनवाहन" हुवो ॥ "महाराक्षस" सुत पाट थापी, अजित स्वामीहाथए ॥ चारित्र लेई मोक्ष पहूंच्या, घणा "मुनिवर" साथए ॥ १ ॥

मूलगी-ढालप्रक्षेप तर्ज गर्वमति कररे ।

" रूपाचल " " रत्न " पूरी राजे " भूपतिहां धनवाहन" जि " कंचनपुरी " " अशनीवेग " गाजे ॥ कन्यातसु " श्री कान्ता " भारी, वरयाजिणभूपतिदिलधारी ॥ सत्यव्रतपालो ॥२॥

ाद्याधर अमरससहुभरिया, " भूप " धनवाहन " नीसरीया,
 अजित " जिनपायशरणचरिया । ' अभय ' जिनराज उच्चरीया
न्द्र तब भीम समजावे, भूपने लंका पहठावे ॥ सत्य० ॥३॥
क्षसी विद्याही दीधी माणक नवहार परसिद्धि, भूप ने सर्व कही
ंधी, परस्त्री, साधु सन्तावेगा, उन्ही से राज्य गमावेगा
 सत्य व्रत पालो ॥४॥

ूलचन्दजी कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज अरणक मुनिवर चाल्या गौचरी–

लवण समुन्दर तिहूंदिश शोभतो, त्रिकूट गिरी इक पासोजी । ाक्षस द्वीप विच रलियामणो, जोयण सातसो खासोजी ॥ ानिसुणो भवियण वल्लभ वारता ॥ टेर ॥ १ ॥ स्वर्गपूरी सम लंका हभे, सुवर्ण में शोभावेजी । पंचप्रकारे मणिना कांगरा, निरखत ृप्ति न आवेजी ॥ निसुणो ॥ २ ॥ एहवी नगरीरे आपूं तुमभणी, ारिनो जोर न थावेजी । अठ जोयण की लंका दूसरी, पूहवी ांहि कहावेजी ॥ निसुणो ॥ ३ ॥

यतः पंचपाषाण प्राकाराः प्राकाराः सप्त चेष्टकाः
पुनस्ताम्रपुजः पंच, दशतेममयास्ततः ॥ १ ॥

राक्षस द्वीपको चौड़ापणो ७ योजन प्रमाण है ॥ उसमें त्रीकूट र्वत की ऊचाई नवयोजन और लम्बाई पांचसो योजन की है ॥ ्रीकूट पर्वत के नीचे तीनसो जोजन की खुली जमीन है वहां पाताल ंका है, जमीन में गुफाकार पाताल लंका है । पाताल लंका की लम्बाई व चडाई बीश योजन की है । त्रिकूट पर्वत के बिचले कूट में ंका नगर है, लंका के कोट का प्रमाण तीश लाख क्रोडमण लोह, ारा लाख क्रोड मण तांबो. दश लाख क्रोड़मण सोनो, कोटकी ाध में है ॥ सवैयो–चमरे योजन नीच भीत लंका की जाणो, ऊंची ोजन साठ भीत गढ की परवाणों त्रिशत जोजन लम्ब, चोडमो ्हूली जाणो, आगे जोजन शत, लंका रो प परमाणो । चार हजार [illegible]

(ढाल मूलगी)

राक्षस राजा राज्य करेघणूं, अवसर जाणी तपसंयम तणू, (उलालो)
अवसर जाणी पुण्यप्राणी "देवराक्षस" सुतभणी,
राज्य आपी ग्रही संयम, लही मोक्ष सुहामणी॥
असंख्याता हुवा भूपति, समय दशमा जिनतणे
"कीर्ति धवल" नरेन्द्र नीको राय आडम्बर घणे ॥ २ ॥
इण अवसर मेरे "रूपाचल[१]" विखे "मेघाभिधापुर[२]" नगर अछे[३] अखे
अखे खग[४] "अतीन्द्र" राजा नारी तेहनी "श्रीमती"
"श्रीकण्ठ" पुत्र पवित्र पुत्री नामे "देवी" गुणवती
"पुष्पोत्तर" नृप "रत्नपुरी" पति नन्द "पद्मोत्तर" सही।
तस अर्थे "देवी कन्यका रायमांगी ऊमही ॥ ३ ॥
खेचर सुतने परणावी नहीं, 'लंक पतिने' विवाहै गहगही ॥
गहगहि विवाहै अति उमाहै 'कीर्तिधवल' नरेन्द्र ने
'देवी' व[५] देवीसदा सुखदा शची[६] जेम सुरेन्द्र ने ॥
अति इर्ष्या थी 'रत्नपुरी' पति वहै अमरस[७] आकरो
नारी हैते क्लेश अधिको ऊपजे सुणीये खरो ॥ ४ ॥
'पुष्पोत्तर' नीं 'पद्मा कुँवरी, खग 'श्रीकण्ठे' रागे अपहरी,
अपहरी निसुणी जाम 'पद्मा' 'पुष्पोत्तर' नृप राजीयो।
दलबल विराजी पूठे हुवो, ताम खेचर[८] भाजीयो ॥
लंक पतिनूं शरण लीधूं 'लंकपति वतका करी।
समजावी राजा व्याव[९] कोधो पक्षतो जीते खरी ॥ ५ ॥
भाखे लंका नोपति सादरो, वास तुम्हारो इहांही करो।
इहांही तुम्ह वास ठाणो, तिहां तुम्ह द्वेषी सहू,
कोई वेला पिशुन्यवासे[१०] लाज तोल घटे बहू ॥

१ वैताढ्य पर्वत. २ मेघपुर, ३ छै, ४ राक्षस, ५ अथवा, ६ इन्द्राणी
७ क्रोध, ८ राक्षस (श्रीकण्ठ), ९ लग्न, १० चुगलखोर (शत्रु)

द्वीप वानर त्रिशतजोजन[1] ठाम अधिक सुहामणो,
वास कीजे सुखे रहीजे, प्रेमसाचो आपणो ॥ ६ ॥
भगिनी[2] पतिनो भाषित मानीयो, पुरी किष्किंधा वास वखाणीयो,
वरवाणीयो वरवास वारु, महिल मोटा मन्दिरू,
सुन्दराकार उत्तंग 'पोषह शाल' दिसे सुन्दरू।
उत्तमाचार अपार सहु अति, धर्म कर्म समाचरे,
देव अरिहन्त सुगुरु सेवा, जन्मनें सफलोकरे ॥ ७ ॥
'वानर द्वीपे' वानर देखीये, राजा रींज्यो प्रेम विसेखीये,
विसेखिये तब प्रेम बहुलो, मारिवा को नविलहै।
अन्नपाणी दीजीये 'नृप वचन' सहुए सद्दहै,
चित्र[3] विलेखे सुछत्र खेचर रूप वानरनूं करे॥
तेहथी अथ द्वीपनामे, जाम वानर विस्तरे ॥ ८ ॥
'श्रीकण्ठ' हीथी उपन्यो नन्दन, 'वज्रसुकण्ठ' नामे आनन्दन॥
आनन्द कारी राय इकदिन सभामें बैठो जिसे,
द्वीप अष्ट में जात्र देते जात देख्या सुरतिसे ॥
राय चलियो 'मानुष्योत्तरगिरी' यान खलाईयो।
साधु संगे लेई संयम राय मोक्ष सिधाईयो ॥ ९ ॥
वज्र सुकण्ठादिक अनेकजी, राजा हुवाछे सुविवेकजी ॥
सुविवेकी राय हुवा वीशर्मा जिनने समे,
'घनो दधि' वर राय हुवो अनमता आवीनमे ॥
लंक नगरी 'तडित्केश' ज राय रूडो राजतो,
राक्षसां वानरां मांहि प्रेमनो गुण गाजतो।
नन्दन वन में लंकानो धणी, रमवा चाल्यो साथे त्रियाघणी,
त्रियासागे रायखेले वानरो इक एटले।
राय त्रियाना कुचविलूर्या, कोपीयो नृप तेटले ॥

---

१ तीन सो। २ बहिननो पति। ३ छत्रादि ऊपर वानरनो रूप चित्रने से द्वीपनो नाम वानर द्वीप हुवा।

वाणे हणीयो भांय परियो, साधु दीये नवकारए,
सद्दयूं साचूं सोई वानर हुवो उदधी कुंवारए ॥ ११ ॥
ज्ञानपयुंजी देखे देवजी, आवी ऋपिजी सारे सेवजी,
सेवसारे ताम नृपना लोप वानर मारए ।
देखी कोप्यो देववानर सैन्य अतिविस्तारए ॥
कोपीया कपि तरु शिलासूं हणे राक्षस लाखए ।
सांति ने वले सुर मनाव्यो वक्षीस अव इमभाखए ॥ १२ ॥
साधु समीपे दोई आवीया, देशना निसुणी साता पावीया ॥
पावीया साता रायपूछे कहिये ऋपि करुणा करी ।
वानर नी ने माहरीए सुनावो पूरव[१] चरी ॥
पुरी 'सावत्थी' ए मंत्री–पुत्र तूंतो 'दत्त' हुतो,
'कासिए' लुब्धक 'जीव कपीनो पापजीवी'[२] थो छतो १३॥
मुनिवर पासे ते दीक्षावरी, 'वणारसीए' आव्यो संचरी ।
संचरी आव्यो ताम 'लुब्धक' मारियो ते मुनिवरु,
माहेन्द्र[३] कल्पे देव होई तूं हुवोरे नरेश्वरू ॥
नरकना दुःख देखी लुब्धक ऊपज्यो वानर पणे,
वैरकारण भववधारण ज्ञान वले मुनिवर भणे ॥ १४ ॥
पुत्र 'सुकेशीने' पद आपीयूं, संयम माथे नृपमन थापीयूं ।
थापियूं संजम माथे एमन, मोक्षमारग साधियो ।
'वनोदधि' वर ग्रही संजम, मोक्षपद आराधीयो ॥
'किष्कन्धी' राजा किष्कन्धाए, 'सुकेशी' लङ्कावली ।
'केशराज' अधिकार पहिली, ढाल ए भाखी भली ॥ १५ ॥

॥ दोहा भैरव रागे ॥

गिरी वैताढ्य विशेष थी, 'रथनूपुर' पुर देख ।
'अगनीवेग' राजाभलो, पाले राज्य विशेख ॥ १ ॥

१ पूर्व भवनो चरित्र (परि चरित्र । २ पारधी । ३ देवलोक दशमो ।

‘ विजयसिंह ’ विजयीमहा, ‘ विद्युत्वेग विशेष ।
दोरदण्ड[1] दो नन्दना, पावे सोह[2] नरेश ॥ २ ॥
तिण पर्वत ‘ आदित्य ’ पुरे, ‘ मन्दिरमाली ’ राय ।
तेघर पुत्री ऊपनी, ‘ श्रीमाला ’ सुखदाय ॥ ३ ॥
स्वयम्बर मण्डप तेहने, बोलाव्या बहु भूप ।
मण्डपनी रचना रची, आछी भांत अनूप ॥ ४ ॥
रायसहूने अति क्रमी, वरियो किष्किन्धी राय ।
‘ विजयसिंह ’ कोप्योघणूं, अमरस सह्यो न जाय ॥५॥
आगे ही ऊतारीया, पर्वतथी तुम आंहि ।
अरे छंडेला[3] छलवटो,[4] अबहु तजो न कांहि ॥ ६ ॥
कहे आपोवर मालिका, के शूरा संग्राम ।
राय सुणी कोप्यो घणूं, वानर-राक्षस स्वाम ॥ ७ ॥
‘ विजयसिंह[5] ’ ने मारियो, किष्किन्धी नृपनोभ्रात ।
अंध कहणी बदलो लीयो, विजयसिंह ने तात ॥ ८ ॥
किष्किन्धा ‘ लङ्का ’ धणी, कूटी काढ्या दोय ।
इहां पलेखो को नहीं, बलियो करे सो होय ॥ ९ ॥

ढाल दूजी तर्ज-प्रभुजी ने अङ्गी सुहावती है।
(कड़वो रे गुड़ भेली रो)

बलियां शूं कुण लागता है, फिरी पाछा ही भागता है ॥ टेर ॥
किष्किन्धा ‘लङ्का’ ना नायक, पायालां थिती ठावता है।
‘लङ्कपयाल’ प्रसिद्ध पृथिवी, वास कियां सुखपावता है ॥ब०॥१॥
अशनीवेगे ‘ नृपनिर्घात ’ ज. ‘ लङ्का ’ थाने थापता है ।
देशनगर पुर पाटण सहुए, यथायोग्य ने आपता है ॥बलि० ॥२॥

१ पुत्ररूपी बे भुजदण्ड। २ शोभा। ३ छोडेला। ४ कपट। ५ विजयसिंह ने किष्किधोना नानाभाई अन्धकेमार्यो तेथी विजयसिंहना बापे अन्धकूने मारी बदलो लीधो।

'सहश्रार' सुतने देई पदवी, आपण संयम धारता है।
समिति गुप्ति व्रतनो प्रतिपालक, निज-पर-कारज सारता है ।।व०।।३।।
राय 'सुकेशी' घरे इन्द्राणी, नारि शिरोमणि नायका है।
'माली' 'सुमाली' माल्यान ए, पुत्र तिनोंकी दायका है ।व०।।४।।
किष्किधा पतिनी वरवनिता, नामेतो वरमाला है।
'रुक्षरज' 'आदित्यरज' दो सुतनो, माय सुविशाला है ।।व०।।५।।
राय किष्किधी 'मधु' पर्वतपरे[१], सुखसाता अति माणता है।
नाम 'किष्किधा' नगर निवसावी, वास विशेपे ठाणता है।।व०।।६।।
राय 'सुकेशी' तणा सुत कोप्या, नृप 'निर्घात' निकासीयो[२] है।
'मालि' 'लंका' पुरी 'किष्किंधा' 'ख्ररजा'[३] नृप वासीयो है।व०।।७।।
नृप 'सहश्रार' तणे घरनारी, 'चित्त' सुन्दरी राजे है ।।
नन्दन 'ईन्द्र' अनोपम जायो, उपमा ईन्द्रही साजे है ।व० ।।८।।
'मालि' राजा इन्द्रेनिपात्यो[४], पुनरपि लंका लीधी है।
नृप 'वैश्रवण' भणीसा दीधी, खुणसनी खुणसी कीधी है ।व० ।।९।।
'लंकपयाल' 'सुमालि' वसन्तो, 'रत्नश्रवा' सुत तण्डियो है।
कुसुमोद्याने जय विद्यानो, साधन मोटो मण्डियो है ।व० ।।१०।।
खेचरनी कुंवरी मन हरणी, पासे आवी ऊभी है।
तनमन राची रहीछे साची, प्रभुजीने गुणे खोभी है ।व०।।११।।
निश्चलमन राखन्तो नरवरे, सझो साधन साधियो है।
'मानव' सुन्दरी विद्यासाधी, वानघणेरो वाधियो है ।व० ।।१२।।
दृष्टि पसारी जोतो देखे, पासे पद्मनी ठाढी है।
आपण कुण अछो कहे सुन्दरी, वचने कथने गाढी है ।व० ।।१३।।
'कौतुक मंगल' पुखर महोटूं, 'व्योमविन्दू' तिहां राजा है।
'कौशिका' कैकसी वेसहोदरी, रूप कला गुणताजा है ।व० ।।१४।।
'कौशिका' तो 'विश्रवसा' घरे, 'वैश्रवण' सुतयंका है।

१ ऊपर। २ मारीयो। ३ आदित्यरज पाठे। ४ मार्यो।

'इन्द्र' तणे अधिकारे अधिको, लंका राज्य निशंका है ।व० ॥१५॥
निमित्तिए मुज तुमपर भाख्यो, मनसा अधिक उमाही है।
तेडी कुटुम्ब आडम्बरे राजा, सा कन्या तब व्याही है ॥व०॥१६॥
पुर 'कुसुमांतर' नवूरे वसावी, वासवनो[१] सुखमाणे है।
धर्म सुकर्म करन्तां बहुलो, जन्म कृतार्थ जाणे है ।व० ॥ १७ ॥
एक दिवस 'कैकशी' निशाए, सिंह सलूणो देखीयो है ।
गजकुम्भस्थल[२] भेद करंतो, नृपने हर्ष विसेखियो है । व०॥१८॥
गर्भवती सा राणी वाणी, अति असुहाणी भाखे है।
मोडे अंग कलेश करन्ती, मानघणूं मनराखे है ।व० ॥ १९ ॥
दर्पण छांडी खडगे मुख देखे, इन्द्रही आण मनावे है ।
अरिशिर पाव दियूं इत्यादिक गर्भ प्रभाव जणावे है ।व० ॥२०॥
प्रति[३]पखियों घर त्रास पडंतों, शुभवेला सुत जायो है।
सहम[४] चतुर्दश वर्ष प्रमाणे, अविचल होई आयो है। व० ॥२१॥
'भीमेन्द्रेण'[५] पूरार्पित परगट, माणिक नव निपायो है।
हार उठाई ऊंचो लीधो, पहरी गले शोभायो है ।व० ॥ २२ ॥
देखी 'कैकशी' एह तमासो, अचरिज अधिक उपायो है।
'रत्नश्रवाने एह अपूरव, राणीए ख्याल दिखायो है ।व० ॥२३॥
राक्षस इन्द्रे 'घनवाहन ने' आप्योथो इम सुणियो है ।
पूर्वज जे तवअर्च्यो पूज्यो, देव तणी परे थुणियो है ।व० ॥२४॥
नाग हजारे सेवित किणही, उपाड्यो नवि दीठो है ।
बालक थांरो लिलाएसो, कण्ठे पहरी बैठो है ।व० ॥ २५ ॥
नव माणिक मानव मुख दीसे, दशमो सहज दिखायो है ।
'दशमुख' नाम पिता तब थापे, उच्छव अधिको थायो है ।व० ॥२६॥

---

१ इन्द्र। २ हाथीनुं कुम्भस्थल भेदतां सिंह दीठो। ३ शत्रु। ३ चौदह हजार वर्ष (सहम-सहस्र) जैनरामायणमां साडा बारे हजार वर्षनुं प्रमाण लख्युं छे। ५ भीमेन्द्र राजाए पूर्वे आपेलो॥

धरती छूटे जेहनी, मान महातम जाय,
सधन थकी निर्धन हुवे, जीवित मुआ गणाय ॥७॥
अण रखवाले छेत्रने, जो जाणे सो खाय,
रखवाला बैठां थकां, कोईयन खावा पाय ॥ ८ ॥
सो दिन नयणें निरख सूं, लंका नगरी जाय,
पितामहने आसने, तुम बैसो उसराय ॥ ९ ॥
लंकाना लूंट नारने, वन्दि खाना मांहै।
देखिस तव जाणिस सही, पुत्रवती हूं प्राहै ॥ १० ॥
एह मनोरथ माहरा, गगन[1] कुसुम समदेख,
मरुदेशे 'मरालिका' दिन २ क्षीण विशेख ॥ ११ ॥
एम वचन श्रवणे सुणी, विभीसण बोलन्त,
थाधिरी ढाढस पकड, माता मत डोलन्त ॥ १२ ॥

॥ ढाल तीजी तर्ज=पद आसावरी ॥

शकंधर[2] राजा चढतो तेज प्रतापे, तीन भुवन को कंटक कहीये।
ाणन कोई उथापे, रावण राजा चढतो० ॥ टेर ॥
ौणछे 'ईन्द्र धनद[2]' विचारा, कौणछे खेचर जाण,
हगण[3] रात्री न रात्री पतिरहै, जब ऊगे इक भाण ॥दश० ॥२॥
ावण' घर बैठां सुखपावो, 'कुम्भकरण' को जोर,
अष्टापद[4] ऊठ्यां थी 'केहरी' भाजीजाये भौर ॥ दश० ॥ ३ ॥
ुम्भकरण' भी अलगो जावो, माहरी अधिकी टेक।
मयंगल' मातो[5] 'केहरी' आगे, पाव भरे नहीं एक ॥दश० ॥४॥
ावण' भाखे माय सुणोजी, दिओ अमनें आदेश,

आकाशना फल। २ धन+द=धन देनार धनेन्द्र वैश्रवण। देव
सूर्योदय से ग्रहगण पटले तारानो समूह रात्री यानि अन्धकार
ौर रात्रीपति अर्थात् चन्द्रमा रहै नहीं। ४ सिंह को मारने वाला
ाणी। ५ मदोन्मत्त हाथी।

विद्या साधन साधी आवूं वाधे वान विशेप ॥ दश० ॥५॥
शुद्वा राधननें वलि साधी, विद्या एक हजार ।
'सिह' तणा ननु पाखर वैठा, हुवा अंगज अपार ॥ दश० ॥६॥
'कुम्भकर्ण' तो पांचज पामी, चार विभीपण लाधी ।
क्षेम कुशलसूं तीने बंधव, आया विद्या साधी ॥ दश० ॥७॥
विद्या साधन विधि अधिकी, पद्म पुराणे वखणी ।
मैं संवंध संक्षेपे कीधो, ग्रन्थ वचन्तो जाणी ॥ दश० ॥ ८ ॥
'पट्[१] उपवासे खांडो साध्यो, 'चन्द्रहास' वरदाई ।
चन्द्र जिम कला नित्य चढती, वाधे अधिक वडाई ॥ दश० ॥९॥
गिरि 'वैताढ्य' दक्षिणश्रेणी, पुरवर 'सुरसंगीत' ।
'मय' नृप 'केतुमतिनी'[२] जायी, 'मन्दोदरिय' पवित्त ॥दश० ॥१०॥
परणावी राजा 'रावण' ने, सन्मुख आणी कुंवारी ।
जिम शचि इन्द्र घरे राणी, राय घरे ए नारी ॥ दश० ॥११॥
गिरि 'मेघरथ' खेचर पुत्री, रमति दीठी राय ।
छए हजार वरी इकसाथे, पूरव पुण्य पसाय ॥ दश० ॥ १२ ॥
'पउमावई' पुत्रिनो तातज 'सुर सुन्दर' वडराजा ।
अवर जनक सहु मिलीसाथे, आया लस्कर ताजा ॥ दश० ॥१३॥
वहु सहु मिली वोले स्वामी, वेगे विमान चलावो ।
आया कटक विकट भट भारी, टले वैरी एम टलावो ॥ दश० ॥१४॥
'रावण' भाखे 'भामनियोंशूं' आरति कोई म आणो ।
भूरी[३] भुजंगे[४] गरुड न वीहै, ए उखाणो जाणो ॥ दश० ॥१५॥
करी संग्राम सहुने जीती, नागज पासे वांधे ।
नारी वचने छोडी वंधनथी, नेहघणेरो सांधे ॥ दश० ॥१६॥
'महोदर' नृप 'कुम्भ' पुराधिप, ' सुरूपनयना ' राणी ।

---

१ छ—जैन रामायणां पोडस—सोले पसा है। २ हेमवतीति जैन रामायणे। ३ बहुत। ४ सर्प।

,'तडित्माला'' पुत्रीपरणी, 'कुम्भकरण'' घर आंणी ॥ ॥ दश-१७ ॥
''ज्योतिपुर ''पति'' ''वीर नरेश्वर, नन्दवती नी जायी ।
'पंकजश्री' पंकजवरनयणी, विभीपणसुखदाई ॥ ॥ दश० १८ ॥
'मन्दोदरिये' नन्दन जायो ईन्द्र सरीसे तेजे ।
'इन्द्रजीतजी' नामप्रमाणी, वोलाव्यो घणाहेजे ॥ ॥ दश० १९ ॥
मेघ सरीसो नयणां नन्दन, वीजो नन्दन जायो ।
'मेघवाहन' चारू कुंवर, कर्मे तो कहवायो ॥ ॥ दश० २० ॥
'कुम्भकरण' विभीपण भाई, लंकाने उजाडे ।
'धनद' सुमालिसूं, ओलम्भो, दूत मुखे देवाडे ॥ ॥ दश० २१ ॥
रावण राजा भाई ताजा, चढिया ताम संग्रामे ।
'धनद' संघाने युद्ध किया थी, 'रावणजी' जशपामे ॥ ॥दश० २२॥
चरम 'शरीरी' धनद नरेश्वर, चारित्र सूं चित्त लावे ॥
शत्रुमित्रसूं सम परिणांमी, 'रावण' आवी खमावे ॥ ॥दश० २३
'लंका' लोधी रावण राये, 'पुष्पक' लोधू विमान ।
माय मनोरथ पूरा कीधा, पुरुषों एह प्रमाण ॥ ॥ दश० २४ ॥
'पुष्पक' विमाने वेसीने, गिरी वैताढ्ये आवे ।
भुवना लंकृत हाथी साही, गजशाले वन्धावे ॥ ॥ दश० २५ ॥
एक[१] 'विद्याधर' आवीसुनावे 'किष्किधा' नृपजाय ॥
'लंकपयाल' तजी निजनगरी, लेवासारु आय ॥ ॥ दश० २६ ॥

---

१ एक विद्याधर रावण के पास आकर कहने लगा कि किष्किंधा राजा के दोनों पुत्रों को यमराजा ने युद्ध में हराकर कैद में डाल दिया है और वे आपके सेवक हैं इसलिए उन्हों को आप छुडावें। ऐसा सुनकर रावण यमराज के पास जाकर यमराजा को परास्त कर दोनों पुत्रों को छुडा लाया और यमराजा रथनूपुर मां जाकर वहां का इन्द्र राजा ने अपनी मदद करने के लिये कहने पर वह तैयार हुवा तब मंत्री ने इन्कार किया फिर यम को सुरसङ्गीतक नगर देकर युद्ध करवाके लिये बुलावाये हैं।

विद्या साधन साधी आवे, वाधे वान विशेष ॥ दश० ॥५॥
शुद्धा राधननें वलि साधी, विद्या एक हजार।
'सिंह' तणा ननु पाखर बैठा, हुवा अंगज अपार ॥ दश० ॥६॥
'कुम्भकर्ण' तो पांचज पामी, चार विभीषण लाधी।
क्षेम कुशलसूं तीने बंधव, आया विद्या साधी ॥ दश० ॥७॥
विद्या साधन विधि अधिकी, पद्म पुराणे वखाणी।
मैं संबंध संक्षेपे कीधो, ग्रन्थ वधन्तो जाणी ॥ दश० ॥ ८ ॥
'षट्[1] उपवासे खांडो साध्यो, 'चन्द्रहास' वरदाई।
चन्द्र जिम कला नित्य चढती, वाधे अधिक वडाई ॥ दश० ॥९॥
गिरि 'वैताढ्य' दक्षिणश्रेणी, पुरवर 'सुरसंगीत'।
'मय' नृप 'केतुमतिनी'[2] जायी, 'मन्दोदरिय' पवित्त ॥दश० ॥१०॥
परणावी राजा 'रावण' ने, सन्मुख आणी कुंवारी।
जिम शचि इन्द्र घरे राणी, राय घरे ए नारी ॥ दश० ॥११॥
गिरि 'मेघरथ' खेचर पुत्री, रमति दीठी राय।
छए हजार वरी इकसाथे, पूरव पुण्य पसाय ॥ दश० ॥ १२ ॥
'पउमावई' पुत्रिनो तातज 'सुर सुन्दर' वडराजा।
अवर जनक सहु मिलीसाथे, आया लस्कर ताजा ॥ दश० ॥१३॥
बहु सहु मिली बोले स्वामी, वेगे विमान चलावो।
आया कटक विकट भट भारी, टले वैरी एम टलावो ॥ दश० ॥१४
'रावण' भाखे 'भामनियोंशूं' आरति कोई म आणो।
भूरी[3] भुजंगे[4] गरुड न बीहे, ए उखाणो जाणो ॥ दश० ॥१५॥
करी संग्राम सहुने जीती, नागज पासे बांधे।
नारी वचने छोडी बंधनथी, नेहघणेरो सांधे ॥ दश० ॥१६॥
'महोदर' नृप 'कुम्भ' पुराधिप, 'सुरूपनयना' राणी।

१ छ–जैन रामायणा षोडस–सोले पना है। २ हेमवतीति जैन रामायणे। ३ बहुन। ४ सर्प।

॥ 'शूरपनखा ने'अप हरी, खर खेचर गयो संचरी
ले' घर कर्यू ए ॥ १ ॥ 'सूररजानो नन्दन,
दन, नन्दन 'सूररजा' नो मारियोए ॥ खबर
ग्रर' ऊपर दल साजीयो, साजीयो 'मन्दोदरि' ये
'लंक पयाला' नो धणी, कीधो भगनी पतिभणि
ड़ो कर थापीयोए ॥ 'चन्द्रोदर' मारयो सुणी
णी, त्राटीघणी दैव रण्डापो आपीयोए ॥ ३ ॥
ईयो, नामे "विराध" कहाईयो, कहाइयो सकल
ए। यौवननी वयपामीयो, वैरि विशोधन कामीयो,
ा ऊतावलोए ॥४॥ 'वलि' सेवा वांछतो, आणमां
तो, आतुर दूत चलावियोए ॥ 'वालि' ने पग ला-
ा अनुरागीयो, रागियो 'रावण वचन सुणावीयोए
वल' थी मुजतांई, 'श्रीकण्ठ' थी तुजतांइ, तुजतांइ,
पणूंए ॥ अब अभिमान न कीजीये, जो कीजे तो
थोडामां भाखूंघणूंए॥६॥ 'वालि' कहे ए सहु खरो,
तरो, आंतरो पड्योछे मनमाहरे ए ॥ देव अने गुरु
स्तक वालिये, वालिये, नावृं हूं घर ताहरे ए ॥७॥
डरूँ, नही तो जाणूं जीम तिम करूं, तिमकरूँ
रीं ए॥ जा तुजस्वामीने कहे, अबतू शीलो कां
आवी वणी सहीए ॥८॥ 'दूत' वचन जब सांभल्यो
ल्यो, परजल्यो, दलबल बहु लेई चालीयोए
आवीयो, दल बल अन्तन पावीयो, पावीयो,
लीयोए ॥ ९ ॥ द्वन्द युद्धनी स्थापना, टाले
पापना, उपायए अलगा कीयाए ॥ दोडतो

युद्धे हरावी 'यम' राजा तस बन्दी स्थाने ठावे ।
'रावणे' छोडाव्या' यम हरिख, एम उदन्त सुणावे ॥ दश० २७॥
'लंका' लेई' किष्किधा लीधी, पुष्पक लीधू विमान ।
'सूर सुन्दर' संग्रामे हरायो, आज बडो राजान ॥ ॥दश० २८॥
कोप्यो 'इन्द्र' प्रधाने निपेध्यो, देखोनीं सुं थाय, ।
'यमने' सुरसंगीतक' समर्प्यू, आघूं काढे राय ॥ दश०॥ २९॥
'सूररज' ने पुरी 'किष्किधा' प्रीतीधरी नृपआये ।
'ऋक्ष' नगरे तो 'ऋक्ष रजने', आपणड़ो करी थापे ॥ दश० ३०
भलेमूहुर्ते डिम्भ घणांसूं, 'रावण' लंका आवे ।
नारी वधावे मंगलगावे । सयणमहासुखपावे ॥ ॥दश० ३१॥
अनन्द रंग विनोद विशेषे, घर २ मंगला चार ।
'केशराज' एत्रीजी ढाले, मुख २ जय २ कार ॥ ॥दस० ३२॥

॥ दोहा रामग्रीरागे ॥

'सूररज' ने घरजाणीये 'इन्दुमालिनी' नारि ।
'बालि सुत ऊपन्यो बली, कौन सके तस वारि ॥ १ ॥
समुद्रान्त पृथिवी सहु, नित्य प्रदिक्षणादेय ।
सब विधि वातां आगलो, शूर वीर जश लेय ॥ २ ॥
पुनरपि केते आंतरे, जायो सुत सुग्रीव ।
'सुप्रभा' छे कन्या भली, शोभनीक सदीव ।
'ऋक्षरजा' घर कामनी, 'हरीकांता' सुविधान ॥
'नील' अने 'नल' नामथी, जाया पुत्र प्रधान ॥ ४ ॥
'सूररजा' 'वाली' भणी, नृप पदवी आपन्न ।
चारित्र पाली निर्मल, मोक्षे पहूंच्यो सन्त ॥ ५ ॥

ढाल चोथी तर्ज छठो भावनामनधरो ए ।

एकदिवस 'लंका पति' क्रिडानी उपनी रति[१], उपनीरती पहूंच्यो

१ इच्छा ।

परवत मन्दरूए१ ॥ 'शूरपनखा ने'अप हरी, खर खेचर गयो संचरी संचरी, 'लंकपयाले' घर कर्यू ए ॥ १ ॥ 'सूररजानो नन्दन, 'चन्द्रोदर' आनन्दन, नन्दन 'सूररजा' नो मारियोए ॥ खबर लईने राजीयो, 'खर' ऊपर दल साजीयो, साजीयो 'मन्दोदरि' ये वारियो ए ॥२॥ 'लंक पयाला' नो धणी, कीधो भगनी पतिभणि पतिभणि, आपणड़ो कर थापीयोए ॥ 'चन्द्रोदर' मारयो सुणी 'अनुराधा' त्राटीघणी, त्राटीघणी दैव रण्डापो आपीयोए ॥ ३ ॥ वनमां नन्दन जाईयो, नामे "विराध" कहाईयो, कहाइयो सकल कला गुण आगलोए। यौवननी वयपामीयो, वैरि विशोधन कामीयो, कामियो कामकरण ऊतावलोए ॥४॥ 'वलि' सेवा वांछतो, आणमां लेवूं इच्छतो, इच्छतो, आतुर दूत चलावियोए ॥ 'वालि' ने पग लागियो, अन्तः करण अनुरागीयो, रागियो 'रावण वचन सुणावीयोए ॥ ५ ॥ 'कीर्ति धवल' थी मुझतांई, 'श्रीकण्ठ' थी तुजतांइ, तुजतांइ, चाल्यूपति सेवक पणूंए ॥ अब अभिमान न कीजीये. जो कीजे तो खीजिये, खीजीए थोडामां भाखूंघणूंए।।६॥ 'वालि' कहै ए सहु खरो, उणघरसूं नहिं आंतरो, आंतरो पड्योछे मनमाहरे ए ॥ देव अने गुरु टालिये, न नमूं मस्तक वालिये. वालिये, नावूं हूं घर ताहरे ए ॥७॥ जन अपवाद थकी डरूँ, नही तो जाणूं जीम त्तिम करूं, तिमकरूँ कीधाथी टलसूं नहीं ए।। जा तुजस्वामीने कहै, अबतू शीलो कां वहै, कां वहै, एतो आवी वणी सहीए ॥८॥ 'दूत' वचन जब सांभल्यो राजा 'रावण' परजल्यो, परजल्यो. दलबल बहु लेई चालीयोए ॥ कपिपति सामो आवीयो, दल बल अन्तन पावीयो. पावीयो, लोक उपद्रव टालीयोए ॥ ९ ॥ द्वन्द युद्धनी स्थापना, टाले उपाय ते पापना, पापना. उपायए अलगा कीयाए ॥ दोइतो

१ मेरु।

श्रावक भला, होईतो मति आगला, आगला, दया धर्म चित्त में लीयाए ॥ १० ॥ अस्त्र शस्त्र जो चालवे, 'वालि' तेसहु झालवे, झालवे, 'रावण' ना उमकर्म ने ए ॥ चतुर महाछे चौकसी, चोट करे अति औकसी, औकसी, हाम न मेटे धर्म ने ए ॥ ११ ॥ गिन्दुक[१] ने परे पिड़ियो, करकोटे इम भीडीयो, भीड़ीयो, चारे समुद्रे फेरीयो ए ॥ होई खिसाणो आपजी, आणे मन संतापजी, संतापजी, हारीयो 'रावण' हेरीयो ए ॥१२॥ सम्भारे अति सारजी, पूरव ना उपकारजी, उपकारजी, छोडीयो ' रावण ' राजीयो ए॥ लघुभाई स्थिर स्थापीने, राज्यतणीस्थिति आपीने, आपीने, आपण संयम साजीयो ए ॥१३॥ 'सुग्रीवे' सुविचारीयो, 'रावण' तो अधिकारियो, अधिकारीयो, 'श्रीप्रभा' परणावीयो ए । 'वाली' ऋपीश्वर संचरे, प्रतिमाधर बहु तपकरे, तपकरे, लब्धीवन्त कहावीयो ए ॥ १४ ॥ मास २ पारणूं करे, सदा सुखकारणो चरे, कारणोवरे, 'अष्टापद' गिरि आवीयो ए ॥ 'काउसग्गने' समाचरे, योग ध्यान निश्चलधरे, निश्चलधरे, जिनशासन शोभावीयो ए ॥१५॥ 'नित्यालोक' ज पुरवरु, 'नित्या लोक' नरेश्वरू, नरेश्वरू कन्यकाछे 'रयणावलीए' ॥ 'रावण' नृपजावे जाम, 'अष्टापद' आये ताम, आये ताम, आगेतो नासके चलीए ॥१६॥ दीठा तले ऋपिजी टाढो, 'रावण' रोप करे गाढो, करे गाढो, जाणूं ए पर्वत पाडें ए ॥ माथा माथे ऊपाडीयूँ, तवते पर्वत खडहड्यों, खडहड्यो, मुनिदाव्यो अंगूठड़े ए ॥ १७ ॥ त्रासकरीने[२] नामीयो, ऋपि चरणे चित वासीयो, वासीयो, रह्यो साधु पग अनुसरय ए ॥ ऋपिजी ने राग न रोपजी, सहु साथे सन्तोपजी, सन्तोपजी, लब्धीपणूं देखाडीयू ऐ ॥ १८ ॥ साधु जुहारी युक्तीसूं जिनगुण गावे भक्ति सूं, भक्ति सूं, तव धरणेन्द्र पधारीयो ए॥ 'अमोघ विजया' नामे भली, शक्तीरूपछे निर्मलो, निर्मली विद्या-

१ दडो=२ वाली मुनिना त्रासथी दशकंधर । र व अर्थात् भ्रमपाडने से उसका रावण नाम पडा=

देई सिधावीयोए ॥ १९ ॥ दश विध आराधनकरी, "वाली" ऋषी शिव गतिवरी, शिवगतिवरी, नमो २ ऋषिरायछेए ॥ चौथी ढाले चतुराई, चतुरलोकरेमनभाई, मनभाई "केशराज" गुणगायछेए ॥ २० ॥

॥ दोहा जयत श्री रागे ॥

गिरि "वैताढय" विशेपथी. 'ज्योती' पुर वरनाम ।
विद्याधरछे" ज्वलन सिंह" राजागुण अभिराम ॥ १ ॥
नारी नामे "श्रीमती" पुत्री तो परधान, ।
"तारा" तार विलोचना, कोईयन तेहसमान ॥ २ ॥
नृप "चक्रांक" तणोसही, सुत "साहसगति" जोय ।
तारा दर्शनमोहियो, करे याचनासोय, ॥ ३ ॥
वानरपतिनी वांछना, तात लखिएवात ।
"साहसगति" स्वल्पायुपो[१], "कपिपति" ने दीये तात ॥४॥
"तारा" उदरे ऊपन्या, अंगज आछा दोय ।
"जयानन्द" "अंगद" भला, वेलीसमफलजोय ॥ ५ ॥
"साहसगति" सांसोपडचो. झूरे रातने दीह,
अणसरजे किम पामीये. ए जिन वचननी लीह, ॥ ६ ॥
कोई दाय उपायकं, तारासंगकराऊं ।
तो जीवित्व लेखेगिणूं, नहींतो सघ मगीजाऊं ॥ ७ ॥
रूपपरावर्तनकरी, विद्यानो आरम्भ, ।
हिमवन्त परवत जई, मण्डे करवा दम्भ ॥ ८ ॥
भूचर खेचर राजवी, दलवली मवलविराज ।
दिग् मात्राए चालीयो, "रावण" रूडे साज ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचवीं ॥ तर्ज—घनमाला के छोदगा ॥

"रावण" दिग्विजये चालियो, साथे सव परिवारोरे ।
तेज प्रताप वाधेघणो, ऊगन्तो दिनकारोरे ॥ रा० ॥ १ ॥

(१) अल्प उमर वाला।

"लंकपायाले" आवीयो, "खर" "दूपण" मानीयोरे ।
खेचर चउद हजारसूं, साथे चलेवा वाणीयोरे ॥ रा० ॥ २॥
सरस खरो "सुग्रीवजी," चाल्यो "रावण" लारोरे ॥
अवसर ने आराधियों, उपजे प्रेम अपारोरे ॥ रा० ॥ ३ ॥
नदी "नर्वदा" आवीयो, कांठे कटक पडावोरे ।
सभा सरस भेलीकरी, बैठो "रावण" रावोरे ॥ रा० ॥ ४ ॥
अणाचिन्त्यूं जलवाधीयो, " रावण " साज तणाणोरे ।
खबर करी जन आवीया, पूछे रावण राणोरे ॥ रा० ॥ ५ ॥
नगरीछे "माहिष्मती", "सहश्रांस" तिहां राजा रे ।
रायहजारे सेविये, अधिकाछे अन्दाजारे ॥ रावण० ॥ ६ ॥
सहस एक छे सुन्दरी तसु सेवक दो लाखो रे ।
पंचेन्द्री सुख भोगवे, जलसूं अति अभिलाखो रे ॥ रावण० ॥७॥
पाली बांधी पाणी में केवल नारी साथी रे ।
सेवक राखी पाखती. हर्षे रमें जिम हाथी रे ॥ रावण० ॥ ८ ॥
सुभट गया तस साहिना, सामां मार मचाई रे ।
कोई न आवे आसनो, देखी तसु सुभटाई रे ॥ रावण० ॥ ९ ॥
"रावण" जी आवी अडथा, सामो थयो शर सांधो रे ।
लडिया विविधा-युद्ध सूं, लीधो रांवणे बांधी रे ॥ रावण० ॥१०॥
आकाशेथी ऊतरी चारण ऋषि इक आवे रे ।
"शतबाहु" नामें भलो. आवी सुत छोडावे रे ॥ रावण० ॥११॥
"ऋषिजी" नूं मन राखवां, मानीयो सोकरी भाई रे ।
देश अनेरो आपतां. चरण ग्रहै सुखदाई रे ॥ रावण० ॥ १२ ॥
'अनरण्य' नरेन्द्र सूं मित्र पणे छे वाचा रे ।
चारित्र लेसां एकठा, सगपण तो ए साचा रे ॥ रावण० ॥ १३ ॥
'दशरथ' नन्दन ने दीया, पूरी अयोध्या राजो रे ।
'अनरण्य' व्रत आदरी, सार्यो आतम काजो रें ॥ रावण० ॥१४॥

लात धमूकां कूटीयो, नारदे आवी पुकारचो रे ।
राजा 'रावण' पूछतां, उत्तर दीये हूं मरायो रे ॥ रावण० ॥१५॥
'राज' नगर नो राजीयो, नामे 'मरुत' कहायो रे ।
मिथ्या दृष्टि छे घणो, कुगुरुनो भरमायो रे ॥ रावण० ॥ १६ ॥
यज्ञ में हिंसाघणी, करतां में अवगणियो रे ।
विप्र विशेषे कोपीया, ते कारण हूं हणियो रे ॥ रावण० ॥ १७ ॥
'रावण' चाली आवीयो, 'मरुत' नूं मुखभंज्यो रे ।
जिनमते अधिक दृढावीयो, ऋषिजी नू मन रंज्यो रे॥रावण०१८॥
'रावण' जी सुसतोकरी, यज्ञ धणी समजायो रे ।
साचेते राचे सहूं, धर्म दया मन भायो रे ॥ रावण० ॥ १६ ॥
'नारद' ने नृपे पूछीयो, ए मत कोण चलायो रे ।
'वसु' राजाथी चालीयो, पापे पिण्ड भरायो रे ॥ रावण० ॥२०॥
'कनक प्रभा' छे कुंवरी, 'मरुत' रायनी जाई रे ।
'रावण' ने परणावतां, बांधी प्रीत सवाई रे ॥ रावण० ॥ २१ ॥
तिहां थकी नृप आवीयो, 'मथुरा' पुरी मजारो रे ।
'हरिवाहन' छे भूपति, पुत्रमधु सुविचारो रे ॥ रावण० ॥ २२ ॥
राम तणे पग लागतां, 'त्रिसुल' 'मधु' कर देखी रे ।
किहां थकी ते पामीयो, रावे वात विशेखी रे ॥ रावण० ॥ २३ ॥
मधुरपणे 'मधु' बोलियो, 'चमरेन्द्रे' मुजदीधोरे ।
पूर्वभवना मित्र थी, ए उपकारज कीधो रे ॥ रावण० ॥ २४ ॥
'चमरे' कह्यो मुज आगले, धात की खण्डे जोई रे ।
क्षैत्र 'ऐरावते' भलो, 'शतद्वार' पुरी होई रे ॥ रावण० ॥ २५ ॥
राय 'सुमीत्र' सोहामणो, 'प्रभव, अछे तस मित्रो रे ।
कला अभ्यासे गुरुकने, होई पुण्य पवित्रो रे ॥ रावण० ॥ २६ ॥
घोड़ा ने खेंच्यो थको, अटवीने अवगाहे रे ।
'पल्ली पतिनो' कुंवरी, 'वनमाला' ने विवाहे रे ॥ रावण० ॥२७॥

मित्र तणो मन मोहियो, मानिनीसूं मनलावे रे।
रहै घणूं उदासीयूं, राम तदा वोलावे रे॥ रावण० ॥ २८ ॥
मौन रह्यो बोले नहीं, राजा फरि २ भाखे रे।
आरती थारा मनतणी, मत को छानी राखे रे ॥ रावण० ॥२९॥
चित्तनी आरती सांभली, हॅसी नरेश्वर बोले रे।
ए तुच्छ वातने कारणे, मित्र किस्यूं डमडोले रे॥ रावण० ॥३०॥
मित्र तणे घरे मोकली, आवी भाखे वातोरे।
प्राण न राखे मांगतां मुज सरसी कौण मातोरे॥ रावण० ॥३१॥
'प्रभव' कहै हूं पापीयो, निर्लज धीट अत्यन्तोरे।
नार न राखी मांगतां, धन्य २ म्हारो मित्तोरे॥ रावण० ॥३२॥
आवो पधारो मातजी, बोले वारम्वारोरे।
हूं अपराधी रायनो, फिट म्हारो अवतारोरे॥ रावण० ॥३३॥
गुप्त रहीने निरखियो, राजा सहु विरतन्तोरे।
राणीजी घर मोकली, छेदे कण्ठ तुरन्तोरे॥ रावण० ॥३४॥
राजाये धसी साहिया, मित्र तणावे हाथोरे।
करे प्रशंसा मित्रनी, हरख धरी नरनाथोरे॥ रावण० ॥३५॥
राजाजी व्रत आदरी, पाम्यो कल्प ईशानोरे।
चवि 'हरिवाहन' नन्दन, 'मधु' नामे प्रधानोरे॥ रावण० ॥३६॥
मित्रभामी भवमें घणूं, 'विस्वावसु' उदारोरे।
'ज्योतिर्मति' उपरे ऊपनो, 'श्री कुंवर' कुंवारो रे ॥रावण० ॥३७॥
तप तपी नियाणूं करी, 'चमर' हुवो हूं एहोरे।
पूर्व स्नेहना बन्धथी, ए तुज साथे सनेहोरे॥ रावण० ॥३८॥
देई त्रिशूल सिधावीयो, ए मुज कही अवधारोरे।
काज करी फरी आवही, जोजन दोय हजारोरे॥ रावण० ॥३९॥
इमनिसुणी सुखमानीयूं, मधु सूं करे सगाईरे।
'मनोरमा' कुंवरी भली, दीधी तस परणाईरे॥ रावण० ॥ ४०॥

ढाल भली ए पांचवीं, पांचों रे मन भाई रे।
'केशराज' 'रावण' तणूं, चरित्र अछे सुखदाई रे॥ ४१॥

॥ दोहा सारङ्ग रागे॥

घर छोड्यों भूपाल ने, हुवा वर्ष अढार।
देश भलीपरे साधीने, घरने आवणहार॥ १॥
फरि आयो महिमण्डले, 'नलकुबेर' दिग्पाल।
पुर 'दुर्लंघ्य' तणो धणी, राज्यकरे सुविशाल॥ २॥
'आगालीविद्या' करी, शत जोजन परिमाण।
अग्नीकोट अति आकरो, अग्नी तणो मण्डाण॥ ३॥
'कुम्भकर्ण' 'घन' साथ सूं, आणी अडियो नरेश।
अग्नीजालने देखवे, कोईयन करे प्रवेश॥ ४॥
'कुम्भकर्ण' फरिआवियो, स्वामीतणे मनसोर।
सुभटां पगपाछापड़े, कोईयन चाले जोर॥ ५॥
आरति अधिकीऊपनी, केम रहे अब लाज।
एटले राणो रावली, पति करवाने काज॥ ६॥
'रावण' पासे दूतिका, भेजी करे अरदास।
जो मन राखो माहरो, तो पहूँचे सब आस॥ ७॥
'आसाली' विद्यामहा, वस्यवर्तावूं आज।
चक्र 'सुदर्शन' सूं सही, सूंपूं सगलो राज॥ ८॥
तुमसाथे मुजमनवस्यूं, इह भवे तूं भरतार।
प्रभु तुम विच में आंतरो, सो जाणे किरतार॥ ९॥
'उपरम्भा' नी वीनती, मनमांहि अवधारि।
उत्तरदीयो उतावलो, आतुर अतिसा नारि॥ १०॥

॥ ढाल छटो तर्ज-कुँवर सुभानु सुजाणजी॥

आतुर अति जाणी करी (टेर) लघु बन्धव तब बोले रे।
वेगे पधारो पद्मणी, तूं इन्द्राणी तोले रे॥ आतुर॥ १॥

' रावण ' रीसवस्ये कहे, बन्धव इमकिम भाखे रे।
पुरुषपनो तो तेहिज, परत्रियथी मन (न) राखे रे ॥आ०॥ २ ॥
कहे ' विभीषण ' दूषण, किहां हीथी होई रे।
विष व्यवहार करे सहू, मरण तो खायों जोई रे ॥ आतुर ॥ ३ ॥
वात कहन्तो कामनी, वेग ही वेग मूं आई रे।
विद्यादिधी विधिकही, साधी वार न लाई रे ॥ आतुर ॥ ४ ॥
शस्त्रदीयां सुरसानीधी, कारमियां सुविशालो रे।
नगर जीती ' नलकुबेर ' ने, लहुसाही तत्कालो रे ॥ आतुर॥५॥
'चक्रसुदर्शन' पामीयो, पाम्यो अधिकणी शोभा रे।
' नलकुबेर ' करी आपणो, थापियो न कियो लोभा रे॥आतुर॥६॥
' उपरम्भा ' समजावीने, रायसुं प्रेम मिलायो रे।
' रथनूपुर ' पुर ऊपरे, ' रावण ' जी चढी आयो रे ॥आतुर॥७॥
' सहश्रार ' नृप ' इन्द्र ' ज, नन्दन ने समझावे रे।
झूठ किलेस करूं किस्युं, कोई न पूगे दावे रे ॥ आतुर ॥ ८ ॥
सहश्र[1] सुं नृप सेवितो, ' सहश्रांशू ' ने जीत्यो रे।
' अष्टापद ' ने उपाडतां, वसुदा मांहि विदितो रे ॥ आतुर ॥९॥
विद्या साधन द्विपपती, गिरि वैताढ्ये चाल्यो रे।
पौमावे[2] पति शक्तीजी, सफल तणो वर आल्योरे ॥आतुर॥१०॥
'मरुत' तणूं सुख भंजन, भंजन काल हरायो रे।
'धनद' तणो मद मर्दन, सुग्रीव सेवकरायो रे ॥ आतुर ॥११॥
पुर 'दुर्लंघ्य' उलंघन, 'नल कुबेर' बल भंजीयो रे।
रायां राय कहावतो, आजन जावे गंजियो रे ॥ आतुर ॥१२॥
रूपवती अति 'रूपीणी' पुत्री ने परणावी रे।
आघृ काढीयो नन्दन, चितने लियो समजावी रे ॥ आतुर ॥१३॥
अति आकुलपणे अष्टापद, पामे छे सन्तापो रे।

(१) हजार मनुष्य सेवा करते हैं। (२) पद्मावतीनो पति धरणेन्द्र शक्तिनो रावण राजाने सफल कर दियो।

घननूं कांई न चिणसीयूं, प्राण तजेते आपो रे ॥ आतुर ॥१४
तात वचन नवि मानीजे, ताणे आप घणेरो रे।
धन्य हो धन्य थे तातजी. धन्य मनो ए तारो रे ॥ आतुर ॥१५
जे हणवो तस हाथेजी, सगपण केम कराय रे ?।
आज किस्यूं रे वैरतो. आगे चाली-यूं जाय रे ॥ आतुर ॥१६
'रावण' दूत पठावीयो, आयो इन्द्र ही पासे रे।
पुर घेराणूं ताहरूं, नृप अब किस्यूं विमासे रे ॥ आतुर ॥१७
भक्ती शक्ती दोई छेजी. जीव तजी रखवाली रे।
भक्ती भजो मन्मुख जाई, के लियो शक्ती सम्भालीरे॥आतुर॥१८
'दूत' प्रते 'सुरपति' कहे, रे ? तुम तो भरमाणा रे।
रांक मनावी रींजीया, पण नवि नमिया राणा रे ॥ आतुर ॥१९

ढाल प्रक्षेप तर्ज—गर्व मति कर रे।

जाय तुम स्वामी ने कहीजे, गाफिल तूं जरा मति रहीजे
बाण तूं म्यारा ही सहीजे। इन्द्र इममानसे बोले. जरा दिल मां
नहीं तोले ॥ भूप इम बोले मेरी जान भूप इमबोले, छक्यों नृ
मान क्यूं झूतो. याद उण दिन ने तूंतो ॥ भूप ॥ १ ॥ टेर
दूत जब आई ने भाखे. किणी की शंक नहीं राखे, मिजाज है म
मांहे जाके, सूणी इम 'रावण पर जलियो, वचन ओ किम बो
अलीयो ॥ भूप इम बोले ॥ २ ॥ चतुरङ्गी सेन्या सिणगारि
इन्द्र पिण आयो कर त्यारी, परस्पर युद्ध मंड्यो भारी. जोधां व
जोर बाण छूटे. अरि उर आग ही ऊठे ॥ भूप इम बोले ॥ ३
आवीयो 'विभीषण' वलियो, मारो ही दल तो खल चलियो. इ
तब कोपे पर जलीयो. दोनों का जोर है जाजा, 'रावण' व
सुधरेला काजा ॥ भूप इम बोले ॥ ४ ॥ सेन्या हटी 'रावण' ह
देखी, सामने आयो विवेकी. निकालूं अब इणरी सेखी. सराम
बाण मेह बूठा. तुरत ही इन्द्र पग छूटा ॥ भूप इम बोले ॥ ५

ढाल प्रक्षेप तर्ज--पूर्ववत ।

।कजहो आयो महिपति, माची नाम लड़ाई रे।
।ेनानी ' रावण ' तणो, भिड़ियो आगे आई रे ॥ आतुर ॥ टेर ॥
ईवे कांईक राक्षसां, पाछा पैर हटाया रे।
'रावण' राजा मोकल्या शूर सुभट जे आया रे ॥ आतुर ॥ २ ॥
'वज्रवेग' 'हस्त' 'प्रहस्त' जी, 'मारिच' उदभयवज्रो रे।
'शुक्र' 'घोर' 'सारण' 'गगन'' जी, 'ज्वलन' 'महाजय' 'जबरोरे ॥३॥
ए 'द्वादश' ही राजवी, वानर राक्षस पूरा रे।
आवी 'देवन' सूं अड्या, शूर भागी गया दूरा रे॥ आतुर ॥ ४ ॥
फौज भागी लखी इन्द्रजी, भेज्याा नीका राजा रे।
'मैघ' 'मालि' 'तडितांग' जी, 'ज्वलन तक्ष' अति ताजारे ॥आ०॥५॥
'सज्वर' 'पाचकसीद' जी, आया फौज ने आगे रे।
ए 'पट्' ही धीरज धरे, पिण धीरज नहीं जागेरे ॥ आतुर ॥ ६ ॥
सहन सक्या सुरतेगने, वानर राक्षम भाजे रे ।
'महेन्द्रसेन' हाकोकरे, भाज्यां थी न रहै लाजेरे ॥ आतुर ॥ ७ ॥
महेन्द्र सेन वानर वंशी, राक्षस ने वड मित्रो रे।
'प्रश्न कीर्ति' सुन तेहनो, पोखे प्रेम पवित्रो रे ॥ आतुर ॥ ८ ॥
मार हटाया खेचरु, अन्यदेव भट आवे रे।
घेर लीयो 'प्रश्नकीर्ति ने, तव माल्यवान' सुन धावेरे ॥ आ ॥९॥
'श्रीमाली' नामे भलो, 'रावण' रायनो काको रे।
बाणे अम्बर छाइयो, सुर उडिया जिम फाको रे ॥ आतुर ॥१०॥
'सुरस्थम्भन' 'सुरपति' तणो, भाणेजो चल आवे रे ।
'सिखकेशी' दण्डो ग्रही, कनक प्रवर बहुदावे रे ॥ आतुर ॥११॥
मारी कीधा पाधरा, 'माल्य' भणी जश दीधो रे।
'सुरपति' सुण आतुर थयो, आप चढण दिल कीधोरे ॥ आ १२॥
'इन्द्र' अनुज 'जयवन्तजी', नमी चरण इम दाखे रे ।
जे अंकुर नखछेदीये, फरसीचल किम राखे रे ॥ आतुर ॥१३॥

॥ ढाल मूलगी ॥

इन्द्र चढी रण आवीयो, रेणु रही नभ छाही रे ।
जेम वखाणी ग्रन्थ में, तेम हुई लढाई रे ॥ आतुर ॥ २० ॥
हार्यो 'इन्द्र' नरेन्द्रजी, जीत्यो 'रावण' राजा रे ।
जय २ कार हुवो बहु, वाग्या जशना वाजा रे ॥ आतुर ॥ २१ ॥
'रावण' 'लङ्का' आवीयो, सयण तणे मन भायो रे ।
'इन्द्र' दीयो कठ पिंजरे, आप कीयो फल पायो रे ॥ आ०॥२२॥
'सहस्रार' नृप आवीयो, 'रावण' सूं अरदासो रे ।
पुत्रभिक्षा मुज आपीये, थापो करी निज दासो रे ॥ आ० ॥२३॥
राय कहे सुण खेचरा, 'इन्द्र' करे ए कामो रे ।
नगर बुहारे नित्य को, आछो राखे गामो रे ॥ आतुर ॥ २४ ॥
सघली बात मनावीयो, छोडीयो 'इन्द्रज' राय रे ।
नीचूं काम करन्तजी, आरती में दिन जाय रे ॥ आतुर ॥ २५ ॥
'साधु' समीपे पूछीयो, पूर्वभव 'इन्द्र' ही आपो रे ।
नीच कर्म करवूं पडयूं, कोण कियो थो पापो रे ॥ आतुर ॥२६॥
साधु कहे नृप सांभलो, पूर्वभव भाखूं एहो रे ।
'अरिजय' पुरनो भूपती, खेचर 'मणिगुण' गेहो रे ॥ आतुर ॥२७॥
'ज्वलनसिंह' घरे नारीजी, ' वेगवती ' सुविचारी रे ।
'अहिल्या' नामे सुता अछे, मात पिता ने प्यारी रे ॥आतुर॥२८॥
'स्वयम्वर मण्डपे' तेहने, राय घणा मिली आवे रे ।
'आनन्दमालि' ने कन्याजी, वरमाला पहिरावे रे ॥ आतुर ॥२९
नाम 'तडितप्रभ' तूं तवजी, खीज्यो मनही मजारो रे ।
'आनन्दमालि' साथेजी, वहतो अतिघन खारो रे ॥ आतुर ॥३०
'आनन्दमालि' चारित्र ग्रही, करतो उग्रविहारो रे ।
ध्यानारूढ मुनीश्वरु, देख्योते इकवारो रे ॥ आतुर ॥ ३१ ॥
दीधो परिषह आकरो, साधुनो चूक्यो ध्यानो रे ।
सिंह सारिखो ना हुवो, हुओ श्वान समानो रे ॥आतुर॥३२॥

सुधारचा भवदोय ॥ हनु० ॥ खट् दर्शन में जोय ॥ हनु० ॥
ए सम अवरन कोय ॥ हनु० सु० ॥ १ ॥
सेवक 'हनुमन्त' सारिसोरे, 'राम' सरीखोरे राय ।
हुयो नहीं होसे नहीं, आजन कोई देखाय ॥ हनु० सु० ॥ २ ॥
ः । ए बोल छे, थारो कपि उपकार ।
प्राण दियां पणना वले, शेष तणो शिर भार ॥ हनु० सु० ॥३॥
सेवक ना ए बोल छे, वानर माहरो नाम ।
शाखा थी शाखा जई, पावूं सही विश्राम ॥ हनु० सु० ॥ ४ ॥
सायर जल उलंघियूं, बाली[1] नगरी लङ्क ।
'राम' राय परसादथी, कीधा काम निशंक ॥ हनु० सु० ॥ ५ ॥
दिन-करनी पर दीपतो, पुर 'आदित्य' प्रधान । हनु०
राय 'प्रहलाद' सुहामणो, पाले जिनवर आण ॥ हनु० सु० ॥६॥
'केतुमति' महिमावती, सत्यवती घरनार । हनु०
प्रीतिवति लीलावती, शीलवती संसार ॥ हनु० सु० ॥ ७ ॥
शुभसुपनो अवलोकीयो, विनवीयो जई राय । हनु०
रायकहे रलियामणो, नन्दन उपज्यो आय ॥ हनु० सु० ॥ ८ ॥
शुभ वेला सुत जाईयो, गुडिया गुहिर निसाण । हनु०
घर २ बार वधामणां, घर २ अति मण्डाण ॥ हनु० सु० ॥ ९ ॥
बारस में दिन थापीयो, पवनंजय तसु नाम । हनु० -
चन्द्र कला जिम वाधतो, वाधे सुत अभिराम ॥हनु० सु० ॥१०॥
बहोत्तरी बत्रीशजी, चार चार तनु मांहे । हनु०
सात अठार परिहरे, पुत्र पनो-तो आहे ॥ हनु० सु० ॥ ११ ॥
पुरवरछे 'माहेन्द्रजी', राय 'माहेन्द्र' उदार । हनु०
'रिदय सुन्दरी'-सुन्दरी, सुन्दर ने सुविचार ॥ हनु० सु० ॥१२॥
पुत्र एक शत ऊपरे, पुत्री हुई एक । हनु०
नामे 'अंजना' सुन्दरी, सकल गुणे सुविवेक ॥ हनु० सु० ॥१३॥

(१) पाड़ी इति पाठान्तरे ।

काय ॥ ब्रह्मचारीजी ॥ रांक हाथे जिम रतन ही रे लाल, कहां लगे ठहराय ॥ ब्र० सी० ॥ १० ॥ पांच-काम गुण को तजे रे लाल, सदा रहे चित्त शान्त ॥ ब्रह्मचारीजी ॥ वाड़ नवनो ए कोट छे रे लाल, सीधो है शिवपुर पन्थ ॥ ब्र० सी० ॥ ११ ॥ विष है विविध प्रकारना रे लाल, जंगम स्थावर जान ॥ ब्रह्मचारीजी ॥ पिण विषय-समो विषको नहीं रे लाल, हुवे अनन्ती हाण ॥ ब्र० सी० ॥ १२ ॥ जुगबाहु-मयणरेहा-कारणे रे लाल, मणिरथ घाल्यो घाय ॥ ब्र० ॥ सीता ने हरतां थकां रे लाल, रावण-लंक-गमाय ॥ ब्र० सी० ॥ १३ ॥ वाड़ सहित व्रत जे धरे रे लाल, शीयल व्रत सुखदाय ॥ ब्र० ॥ देव-असुर-सुर-तेहने रे लाल, नित्य प्रते नमन कराय ॥ ब्र० सीता ॥ १४ ॥ 'धूलचन्द' जे धारसी रे लाल, व्रत यह दुद्धर धार ॥ ब्र० ॥ पाले आराधे शुद्ध भावसूं रे लाल, हो जावे खेवो पार ॥ ब्र० सी० ॥ १५ ॥



मावित्रोने वाहालीखरी, वीरानो वड़मान। हनु०
भोजाई भगिनी महा, आदर मेरु समान ॥ हनु० सु० ॥ १
पुत्रीने परणाववा, यौवनवन्त कुँवार।
प्रधाने प्रगट कीया, जोई केई हजार ॥ हनु० सु० ॥ १
वरतो दो मन मानीया, सगला मांहि देखी।
'पवनंजय' 'प्रल्हाद' नो, विद्युत्प्रभ सुविशेखी ॥हनु० सु०॥
अष्टादशवर्षान्तरे, विद्युत्प्रभ शिवजाय।
प्रत्यक्षथयुछे आऊखो, कन्याकेम देवाय ॥ हनु० सु० ॥ १७
'पवनंजय' चिर आऊखे, पवनंजय परिमाण।
पुत्री 'पवनंजय' भणी, देवाकही राजान ॥ हनु० सु० ॥ १
खेचर मिलीया एकठा, नंदीश्वरनी जात।
प्रार्थना 'प्रह्लादनी', माने सगली तात ॥ हनु० सु० ॥ १९ ॥
आजथकी दिन तीसरे, मानसरोवर जाय।
विवाह करीजे वेग सूं, मेलोसहु समुदाय ॥ हनु० सु० ॥ २
'पवनंजय' कहे मित्र सूं, ते दीठी साचाल।
रम्भाथी अधिकी सही, रूपे झाक झमाल ॥ हनु० सु० ॥ २
जे-हवो आंखे देखिया, लहिये चैन अत्यन्त।
तेहवो वाचाएकरी, कोण कहै सुण मित्त ॥ हनु० सु० ॥ २
'पवनंजय' बोल्योहसी, वासरताएदूरी।
हूं जाणूं हमणांजाई, जोई होऊं हजूरी ॥ हनु० सु० ॥ २
वाल्हाना मेलाविषे, घड़िते एक दिन थाय।
दिनतो जई मासा मिले, कहोरे केम रहिवाय ॥ हनु०सु०॥२
मित्रकहै सुण स्वामीजी, आरती दूर निवार।
रात रहस्य पणेजई, देखाडूं तुजनार ॥ हनु० सु० ॥ २५
'पवनंजय' कुमारही, चाल्यो मित्रसमेत।
आयो अति उतावलो, नारी निरखण हेत ॥हनु० सु०॥२

जिम २ निरखे नारिने, तिम २ पावे चैन ।
दैव चहै अति आकरो, सुखमांहि दुख दैन ॥ हनु० सु० ॥२७॥
बैठी सप्तमी भूमिका, वारुवात विनोद ।
रङ्ग मांहि राचीथकी, करती अधिक प्रमोद ॥ हनु० सु० ॥ २८ ॥
'वसन्ततिलका' कहै सखी, कुँवरी तुजवड़भाग ।
'पवनंजय' पतिपाईयो, जेहनो जशू सोभाग ॥ हनु०सु० ॥ २९ ॥
'मिश्रकेशी' कहै सखी, केम प्रशंस्यो ऐह ।
'विद्युत्प्रभ' वरतो भलो, जेहनो अन्तिम देह ॥ हनु० सु० ॥३०॥
'वसन्ततिलका' कहेफरी, भोली जाणे न भेद ।
'विद्युत्प्रभ' स्वल्पायुषी, तेथीनसरे उमेद ॥ हनु० सु० ॥ ३१ ॥
अपर कहै आवात में, तूँ नवि लिखे लिगार ।
चन्दन थोड़ो ही भलो, नहीं विषकेरो भार ॥ हनु० सु० ॥ ३२ ॥
'पवनंजय' परिणाम सूं, तातो थयो तिवार ।
कुँवरी तो वरजे नहीं, जोई रही वातां प्यार ॥ हनु० सु० ॥ ३३ ॥
काढी खड्ग खड़ो रयो, ए दोई संहार ।
करूँ सही उतावलो, बोले राज कुँवार ॥ हनु० सु० ॥३४॥
मित्र कहै प्रभुजी सुणो, नारी अवध्य कहाय ।
तिण में निर अपराधणी, कहो प्रभु केम हणाय ॥हनु० सु०॥३५॥
कुँवरीए निन्दा नविकरी, ए कोई लै लवाड़ ।
तुमतो गिरुवा चाहीयो, पृथ्वीनाप्रतिपाल ॥ हनु० सु० ॥ ३६ ॥
फरिआण्यो निजथानके, ते कहै न करूँ विवाह ।
प्रथमज कवले मक्षिका, आयां कुण उच्छाह ॥ हनु० सु० ॥ ३७ ॥
रांधतहीजे कुहीयो, ते अन्नमी न मिठास ।
पछी कीसी परे पामिये, पिरसन्तां शाबास ॥ हनु० सु० ॥ ३८ ॥
मोतीत्रूट्यां ना मिले, त्रूट्यां नामिले नेह ।
ते माटे धुरही थकी, तूटणमतिद्यो तेह ॥ हनु० सु० ॥ ३९ ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज़-नवीन रसीया—मन्त्री श्री चौथमलजी म० कृत-

म्हांने मिली कुपातर नार, खबर म्हांने पड़गई सारी आज ॥ टेर ॥
में तो जाणतो छे मुजप्यारी, होसी नहीं हरगिज दुजारी।
निजरां देखी आज, खूँटी पर धरदी सारी लाज ॥ म्हांने० ॥१॥
एवातां सुपने नहीं जाणी, करसी आ अपने मन मानी।
सारो इणरो आय गयो है, मन मांही लो माज ॥ म्हांने ॥ २ ॥
इसी जाणतो जो मैं पैली, अधविच में आ गोतो देली।
तो नहीं करतो प्यार, नार आ मिली अवगुण की जाज ॥म्हांने॥३॥
मैं भोलो ओ काम न जान्यो, धोलो २ दूध पिछान्यो।
पडी न मांने तोल, पोल आ निकली कीयो अकाज ॥म्हांने॥४॥
कोई किणरी हुई न नारी, चौथमल्ल कहै समज्यो सारी।
मने चेतायों पेली गुरुजी, ' नथमलजी ' महाराज ॥ म्हांने॥५॥

॥ ढाल मूलगी ॥

मित्र कहे इम किम हुवे, आपण बोल्या बोल।
न पले तव सहु ये कहै, फिट् २ फूट्या ढोल ॥ हनु० सु० ॥ ४० ॥
सांतक में वेतालजी, उठाइया अजाण।
भङ्ग न पाड़े रङ्ग में' सज्जन नूं रे सयाण ॥ हनु० सु० ॥ ४१ ॥
सायरे शिवने आपीयूं, विपतो विश्वावीस।
नीलकण्ठ नामे रहे, अलगूं न करे ईश ॥ हनु० सु० ॥ ४२ ॥
चौंरी चढियो आय के, मित्रतणी मतिमान।
विवाहतणी विधि साचवी, नाम तणे अनुमान ॥हनु० सु० ॥४३॥

॥ ढाल प्रक्षेप तर्ज-म्हीजिन याल ब्रह्मचारी—धूलचन्दजी कृत ॥

पवनजी तोरण पर आयारे २ सब सखियन रही देख अचम्भे आनन्द अतिपाया ॥ टेर ॥
झीणेश्वर सूँ नारीसधवा, धवल मङ्गल गाया।
आनन्द रङ्ग विनोद विशेषे, हुवा चित्त चाया ॥ पवनजी ॥ १ ॥

इन्द्रतणी पर रूप अनूपम, दीसेसवाया ।
निरखन्तां धापे नहीं नयणां, सयणां मनभाया ॥ पवनजी ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

मयङ्गल मोटा मलपता, अति ताजा तो खार ।
दीधा वरने दायजे, मणि मोती वरहार ॥ हनु० सु० ॥ ४४ ॥
लाडीने लेईकरी, घरे आयो प्रह्लाद ।
सप्तभूमिसुहामणो, दीधो वर प्रासाद ॥ हनु० सु० ॥ ४५ ॥
हुंसे मनाची हरख हूं, उवारी अखियात ।
भायग भोग-वियेसही, ए निश्चय विधिवात ॥ हनु० सु० ॥४६॥
ढाल भणी ए सातमी, 'पवनंजय' परणेत ।
'केशराज' सुखपामिये, जो होवे चित्तचेत ॥ हनु० सु० ॥ ४७ ॥

दोहा खम्भायती राग

बोल कुबोलन वीसरे, सालसमां सालन्त ।
क्षणहि रति नविऊपजे, आगति घणी आलन्त ॥ १ ॥
नजर न मेले नाहलो, ऊपजे अति उचाट ।
आवटणूं लागेघणूं. विरहै वांकी वाट ॥ २ ॥
मात पितानी लाडली, सुसरानी शुभ दीठ ।
कंतमया विन कामिनी, ओछे देखे नीठ ॥ ३ ॥
'पवनंजय' नी पदमनी, परममहा सुखकारी ।
नाह निस्नेह निपटही, मेली माथे मारि ॥ ४ ॥

ढाल आठवीं तर्ज-भटियानी

मेली माथे मारि, 'पवनंजय' की नारी,
आगनि आकरीए, आणे सा खरीए ।
लांवा लीए निस्सास, वासर जाय निराश,
दैवकिसो कीयोए, फाटे छे हीयोए ॥ १ ॥
दिन वातां में जाय, रयणी दुभरथाय,
विरह वियोगणीए, सखी हू योगणीए ॥

(ढाल प्रक्षेप तर्ज-खोटो लालचीयो, स्वा. श्री चौथमलजी म. कृ
सखी भणी कहे सुन्दरी, म्हारो मनमोहन भरतार सखि किम रूठो
में जानूं जिम करतार, कलङ्क दीयूं झूंठोए ॥ टेर ॥
कुन भरमायो पापीये, कोई चुगलखोर चण्डाल । सखि०
म्हारे इणभव रो सही है हिवडा केरो हार ॥ सखि० ॥ १ ॥
विगर गुन्हैही छोडदी, म्हारी सगी नणद रो वीर । सखि०
हाय हिवे हूंस्यूं करूं, म्हारे लग्यो कलेजे तीर ॥ सखि० ॥ २
शीलवती सा सुन्दरी कांई बदन कीयो दिलगीर । सखि०
नीर झरे दोऊं आंख मे, कांई भीनो दिखनी चीर ॥ सखि०॥३
विन इजत सूं जीवनो. कांई मरूं कटारी खाय । सखि०
वसन्तमाला इम धीरपे, कहै 'चौथू' 'नाथ' सुपसाय ॥ स० ॥४

ढाल मूलगी

बोली सखी 'वसन्त तिलका' निकट वसन्त, बाइयन रोइयेए, काठो होइयेए ॥ २ ॥ सघला दिन एक रूप, नविजावे ए विरूप, फरिबाहुडसेए नेह जोडसेए ॥ मांय बापते वार समझावे विचार, त्रियसूं हठइसेए, पुत्र करें किसुंए ॥ ३ ॥ उत्तर न आपे जाम, छाना रहिया ताम, ताणि न तोडियेए, तूटथुं जोडियेए॥ ढिलूं मूँकीयू काम आप ही आवे ठाम, तूटे खेचीयूए, अधिकूं इच्छीयूए ॥ ४ ।

क्षेपक तर्ज अजनारी

पियरथी आवी रे सूखडी, वसन्त माला कर मोकली सोयतो ।
लेकर स्वामी आगे धरी, गावता गन्धर्व ने आपी छे तोय तो ॥
वस्त्र आभूषण-मोकल्या, जाणूं म्हारा स्वामीने शोभसी अंगतो ।
वस्त्र फाडी ने कटका कर्या, आभरण लेईने आपींमातङ्गतो ॥
सती में शिरोमणी अंजना ॥ टेर ॥
आणा घणा पाछा मोकल्या, इणरे आणे आवीयो वडवीर तो ।
अंजना-कहे नवि-वालीये, वस्त्र आभूषण मोकलिया चीरतो ॥

स्वामी ने मन मान्या नहीं, पीयर आवी हूं सूं करूं वात तो।
बन्धव पाछो हो थे वलो, मात पिता दुःख धरे दिन रात तो। सती।
अंजना बैठी रे गोखमें, पवनजी तुरीय खेलावण जाय तो।
आवतां जावतां निरखती, तिम २ हर्ष वधे हियमांयतो॥
पवनजी कोपे रे पर जल्यां, अंजना आणे छे अति घणी प्रीत तो।
जाणे रे नार नी हालसी, गोंखो आडी रे चुणाई छे भींततो। स.।
पांच से गांव पोते लिया, राय राणी वेहूं वर्जे छे पूत तो।
अंजणा सती रे सुलक्षणी, एहने सूंपीये निज घर सूत तो॥
म्होटा रे कुलतणी ऊपनी, राजा हो महेन्द्र तणी बहु लाज तो।
अंजना आदर कीजीये, यूं कहे केतुमति, राय-प्रहलाद तो॥ स.॥

ढाल मूलगी

आयो दूत उदार, 'रावण' नो सुविचार, भाषित कहे भलोए, प्रभुजी सांभलोए॥ 'वरुण' न माने आण, राखे अधिक गुमान, 'रावण' रावलोए, मिलीयो छे घणोए॥ ५॥ 'वरुणसुत सुविशाल, बांधिलीया तत्काल, 'खर दूषण' खराए, खेचर आकराए. तेड्यो ' रावण राय ', खेचर मिलीया आय, प्रभु तुमही चलोए काम उतावलोए॥ ६॥

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृ० ढाल प्रक्षेप तर्ज–खबर नहीं है जुग में

दूत 'दशमुख' नृपनो आयोरे ॥२॥ युद्धकरन के हेत राय प्रहलाद ने बुलवायो सहथ पुत्रां का पिता वरुण महा अभिमानी राजा।
रावण सन्मुख राड करण को, गयो बजत वाजा॥ दूत॥ १॥
चार प्रकार चमुले चालो, दूत इसी दाखे।
सुनकर राजा सन्नद्ध बद्ध हुय, सुभटों ने भाखे॥ दूत॥ २॥
हां सुभटों जल्दी से सारा, होवो हूंसीयार॥
थे म्हारी शक्तिने जोइ जो, मैं जोस्यूं थांरी॥ दूत॥ ३॥
सुन कर सुभट घणा हुंसाया, वरुण कोन बपूरो।
थो थों चनो बजे जगमांहै, कसविन जेम कपूरो॥ दूत॥ ४॥

इन पर करत ओ गाज सुभट सब, कूदे नवतालों।
'चौथमल्ल' नथमाल मुनि शिष्य, जोडी ए ढालो ॥ दूत ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

तात निवेदी जाम, चाल्यो कुँवर जाम, 'पवनंजय' जयोए, आनंद अति थयोए ॥ हयगय रह अधिकाय, मेली जनसमुदाय, कुंवर चालीयोए, हरखे हालीयोए ॥ ७ ॥ निसुणीए चिरतन्त, कटके चलन्तोकन्त, दर्शने सा चालीए, आवे उतावलीए॥ पञ्चाली जिम जोय, आगे ऊभी होय, पलकन पालटेए, प्रिय जोवूं घटेए ॥८॥ पड़वानो जेमचन्द दुर्बलदीसेमन्द, मांसन देखीयेए, चाम विसेखीयेए ॥ लुखी तालक देखाय, नहींरे विलेपनकाय, सादीसाटिकाए, तिमही ललाटिकाए ॥ ९ ॥ अण खाया तम्बोल, धूंसर अधर अमोल, काया दूबलीए, शीथलपडी वलीए ॥ नयन जल में झूली रही छै तन मन भूली, नारी निरखतोए, चाल्यो हरखतोये ॥१०॥ धसि लागी पतिपाय, सखी कहै खगराय, दासी तुमारहीए, चित्तहमारडोए॥ तिरस्कारीछे एह, मैं जाणीधुरेछेह, मानन मांगतांए, लहिए लागतांए ॥ ११ ॥

मन्त्री श्री चौथमलजी कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज-परस्तान से उतरी परी

पवन अंजनीपर रीसकरी इणचिरिया कां निजरपरी ॥ टेर ॥
आपापन व्यभिचारण नारी आडी क्यों आई इण वारी
मैं जगरनकारन राह पकरी प० १ मैं देख्यो पापण को मूंडो
पणसी आगे कारज भूंडो इण पर उणरी बुद्ध बिगरी प० २
पियमन तिय की परवाह नांही सातिय पिय को लेवे बधाई
या तिय पतिभर्त्ता सखरी प० ३ सति अंजना की मति मोटी
धन्यवाद है कोटान कोटी शिष्यनाथ चोथु उचरी प० ४

ढाल मूलगी

फरि आवी घरमांहि, धरणिये पडि प्राहि,
अवला नामथीए, अरु परीणामथीए ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज–नवीन रमीया–स्वामी श्री चौथमलजी म० कृत

म्हारा प्राण पतीजी प्रेम केम दीयो ऊंचो मेली रे ॥ टेर ॥
पंचां री साखी कर पियु मुज, लारे लेली रे ।
कांई कीयो मैं चूक करी मने, आज अकेली रे ॥ म्हारा ॥ १ ॥
चाय नहीं म्हारे और चाहूं मैं दरसण डेहली रे ।
तूं जाणे जूं जाण म्हारे तो तूंहिज बेली रे ॥ म्यारा ॥ २ ॥
मन मेलारी मालूम म्हांने पडी न पेली रे ।
सतगुरु पासे जाकर मैं तो बनती चेली रे ॥ म्हारा ॥ ३ ॥
'नाथ नो चौथू' कहत जोधाणे, सति अलबेली रे ।
पियू तणी अपमानित तदपि नवल नहेली रे ॥ म्हारा ॥ ४ ॥

ढाल मूलगो

दलवलनो विस्तार, चाल्यो राजकुंवार, मानसरोवरुए, वासो अनुसरुए ॥ १२ ॥ मंदिर रचना कीध, पलंकडे परसिध, सूतोसुंदरुए भोग पुरुन्दरूए ॥ दीनपणे कुरलन्त, पंखिणी शब्द सुणन्त, मनसूं जागीयोए, राय अनुरागीयोए ॥ १३ ॥

१. ढाल प्रक्षेप तर्ज नाथ कैसे गजको फन्द छुडायो

चकवी यों क्यूं शोर मचायो, क्यों चहचाट लगायो ॥ टेर ॥
गति नहीं कारण दीसत रनमें, जिससे जिय घबरायो ।
बिन कारण ही क्यों कुरलावे, पूरो पतो नहीं पायो ॥चकवी ॥१॥
सुनकर सज्जन' यू मन सोचे, आछो अवसर आयो ।
जिनसे सतिको यह अपनावें, ऐसो रङ्ग लगायो ॥ चकवी ॥२॥
चकवी इण विद्ध शोर मचायो ॥ टेर ॥
चकवी कहती चतुर सुनो तुम, चित्त किनको चमकायो ।
कलंक लगाकर कीया विछोहा, जिनको विरहफल पायो ॥च०॥३॥
सती अंजनापे रंज को कारण, सगलो भेद बतायो ।
ऐसो ढङ्ग रङ्ग दिखलाकर पवन केऽनङ्ग जगायो ॥ च० ॥ ४ ॥

---

१ सती अञ्जना से । नोट–"सती अञ्जना" कविवर पण्डित मुनि श्री चैनमलजी महाराज रचित है ।

वासर माणे भोग, रजनिनोरे वियोग.
ते कुरले घणीए, वचने दयामणीए ॥
जेहने दिन ने रात, एकज सरखी जात,
ते केम जीवहीए, आरती अति वहींए ॥ १४ ॥
परण्या पछीरेएहे, साथे कीयो नहीं नेह,
सतिय शिरोमणीए, सादीधी अवगणीए ॥
जो आवीथी चाल, तोहूँ गयो मुँह टाल,
बोल सन्तोषनोए, न कहिवाणो घणोए ॥ १५ ॥
आज लगेहती आश, अब तो हुई निराश,
आजमरे सहीए, एतो मे लहीए ॥
नारी हत्यानूं पाप, महोटो छे सन्ताप,
मुजने लागसेए, अपजश जागसेए ॥ १६ ॥
मित्र 'प्रहसित' बोलाय, मननी वात सुणाय,
पूछे सूं करूँए, मित्र कहै खरूँए ॥
नारी हुई निराधार, मरत न लावे वार,
साचो सोचणोए, मान विमोचणोए ॥ १७ ॥

१ ढाल प्रक्षेप तर्ज-हांक मतिकर गर्व दिवाना ॥

हां ! काम में खोटो करीयो, लोक लाज से जरा न डरियो
द्वेष सती के ऊपरे नाहकही धरीयो रे ॥ टेर ॥
मात पिता मुजने समजायो, तो पिण में नहीं रस्ते आयो ॥
मित्रतणी नहीं बात मान में, उलटो लड़ियो रे ॥ काम में ॥१॥

१ सती अञ्जना से—चैनमलजी महाराज रचित है।

(ढाल मूलगी)

अब ही जावूं तास, सन्तोषूं स उल्हास, मानी माननीए, आशा आननीए। मध्य रात्रीये सोई, स्वामी सेवक दोई, आया संचरीए, गगन गतीकरीए ॥ १८ ॥ स्वामी रहीयो बार, सेवग गेहमजार, आवी जोवहीए, राणी रोवहीए॥ पोयणे मारी हेम, सा तवदीसे तेम, जल विण माछलीए, तलपे वल वलीए ॥ १९ ॥ ऊंची नीची थाय, चैन न रंच लहाय, कंकण तोडतीए, गिरवूं लोटतीए ॥ वरजी २ राखन्त, धाई भल भाखन्त, जीवन्तां सहुए, सुख हो से बहुए॥ ॥ २० ॥ संचर जाणी धाय, धसीतस नारी ग्रहाय, काढे जेट लेए, भाखे तेट लेए ॥ हूं स्वामी नो मित्र, नामे "प्रहसित" पवित्र, स्वामी आवीयोए, मनने भावीयोए ॥ २१ ॥ भूंडा ? एसी हासी, कुंवरी कहै उदासी, नाम न मुज गमेए, दर्शन किम रमेए॥ वर्ष हुवा मुजवार, नवि दीठो भरतार, अलगोही रहैए, खार घणूं वहैए ॥ २२ ॥

दोहा— सति अंजना की सखी, सुण्या अपूरब बोल।
बोली उत्तर में, अहो, सुण रे फूटा ढोल ॥१॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज कायथडा

हांरे लम्पटी[1] के तूं मारग भूलीयो, हांरे लम्पटी के थारो आगयो काल रे पापी म्हारा पिया परदेशां में ॥ टेर ॥
हांरेक लम्पटी बाल्हूं थारी जीभडी, हांरेक लम्पटी थारी चिराऊं खाल रे पापी म्हारा पिया० ॥१॥ हांरे लम्पटी में ऐसी नहीं कामनी, हांरे लम्पटी राचूं थारे फन्द रे पापी म्हारा पिया० ॥२॥ हांरे लम्पटी क्या तूं मेरे सामने, हांरे लम्पटी गिणूं न इन्द्र नरेन्द्र रे पापी म्हारा० ॥ ३ ॥

दोहा— सती शील में झिल रही, लखली पवन कुंवार।
प्रेम लायके पुनरपि बोल्यो वचन विचार ॥१॥

[1] सती अंजना से।

ढाल क्षेपक तर्ज मेरा नन्नासा देवरा

जिनके लिये तूं झूरे झूरणा, उनको देवे किम गारी है ॥
मैं हूं तुम्हारा पियू पियारा, तूं है मेरी पियारी है ॥
हां म्हारी प्यारी अंजना, तो पर वारी है ॥ १ ॥

ोहा— दीपक लेकर देखीयो, निश्चय पवन कुंवार ॥
जाय वसन्ती सती भणी, बोली इणी प्रकार ॥१॥

ढाल मूलगी

तणो एदोष, करवो राग न रोस,
कीधो आपणोए, इह-पर भव तणोए
नीनो करतार, दीठो भलो भरतार,
फूली अङ्गमांए, राणी रङ्गमांए ॥२३॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज—पन्नजी मूडे बोल

घर आयोए २ । सुन सती अंजना मान बढायोए ॥ टेर ॥
२ अब खोल मून तूं, थारो भाग्य सवायोए ।
२ अब आयो पियुडो, विना बुलायोए ॥ पियु० ॥ १ ॥
यो वचन ओ सती अंजना, अनहद मोद बढायोए ।
आने से सती हिया में हर्ष न मायोए ॥ पियु० ॥ २ ॥
सती तब निज आसन से, वदन कमल विकसायोए ।
ल दुवार जोड कर दोनों, वचन सुनायोए ॥ पियु० ॥ ३ ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज—गवरल ईशरजी कैये तो०॥

आया हो प्रियतमजी जावूं वारणा हो, थांपर वारी हो बलि-
राज पधारणा हो ॥ टेर ॥
झट ऊठी शीष नमायो, पियु दरशन से मन विकसायो,
नो सब अपराध खमायो, झटपट आसन लाय बिछायो काज
ारणा हो ॥ १ ॥ आज आंगण में सुरतरु फलियो, म्हारो
रो दुखडो टलियो, पुण्य योग से प्रियतम मिलीयो, म्हारी

तती अंजना से। २ सती अंजना से। ३ सती अंजना से।

(ढाल मूलगी)

अब ही जावूं तास, सन्तोषुं स उल्हास, मानी माननीए, आशा आननीए। मध्य रात्रीये सोई, स्वामी सेवक दोई, आया संचरीए, गगन गतीकरीए ॥ १८ ॥ स्वामी रहीयो बार, सेवग गेहमजार, आवी जोवहीए, राणी रोवहीए ॥ पोयणे मारी हेम, सा तबदीसे तेम, जल विण माछलीए, तलपे बल बलीए ॥ १९ ॥ ऊंची नीची थाय, चैन न रंच लहाय, कंकण तोड़तीए, गिरवूं लोटतीए ॥ वरजी २ रायन्त, धाई भल भायन्त, जीवन्तां महुए, मुख हो से बहुए ॥ २० ॥ संचर जाणी धाय, धर्मीतम नारी ग्रहाय, काढे
माखे तेट लेए ॥ हूं स्वामी नो मित्र, नामे " "
स्वामी आवीयोए, मनने भावीयोए ॥ २१ ॥
कुंवरी कहे उदासी, नाम न मुज गमेए,
वर्ष हुवा मुजवार, नवि दीठो भरतार, अल
वहेए ॥ २२ ॥

दोहा— सति अंजना की सखी,
बोली उत्तर में, अहो,

१ ढाल प्रक्षेप

हांरे लम्पटी के तूं मारग भूलीयो,
काल रे पापी म्हारा पिया
हांरेक लम्पटी चालूं थारी
म्हाल रे पापी म्हारा पिया० ॥ १
कामनी, हांरे लम्पटी गचूं थारे
हांरे लम्पटी क्या तूं मेरे सामने,
रे पापी म्हारा० ॥ ३ ॥

दोहा— सती शील में झिल
प्रेम लायके

१ सती अंजना से।

१ ढाल क्षेपक तर्ज मेरा नन्नासा देवरा

जिनके लिये तूं झूरे झूरणा, उनको देवे किम गारी है ॥
मैं हूं तुम्हारा पियू पियारा, तूं है मेरी पियारी है ॥
हां म्हारी प्यारी अंजना, तो पर वारी है ॥ १ ॥

दोहा— दीपक लेकर देखीयो, निश्चय पवन कुंवार ॥
जाय वसन्ती सती भणी, बोली इणी प्रकार ॥१॥

ढाल मूलगी

कर्म तणो एदोष, करवो राग न रोम,
कीधो आपणोए, इह-पर भव तणोए
कामनीनो करतार, दीठो भलो भरतार,
फूली अङ्गमांए, राणी रङ्गमांए ॥२३॥

२ ढाल प्रक्षेप तर्ज–पन्नजी मूडे बोल

पियू घर आयोए २। सुन सती अंजना मान बढायोए ॥ टेर ॥
बोल २ अब खोल मून तूं, थारो भाग्य सवायोए।
देख २ अब आयो पियुडो, विना बुलायोए ॥ पियु० ॥ १ ॥
सुण्यो वचन ओ सती अंजना, अनहद मोद बढायोए।
पियु आने से सती हिया में हर्ष न मायोए ॥ पियु० ॥ २ ॥
ऊठी सती तब निज आसन से, वदन कमल विकसायोए।
खोल दुवार जोड कर दोनों, वचन सुनायोए ॥ पियु० ॥ ३ ॥

३ ढाल प्रक्षेप तर्ज–बाबरल ईशरजी फेवे तो०॥

भले आया हो प्रियतमजी जावूं वारणा हो, थांपर वारी हो बलिहारी राज पधारणा हो ॥ टेर ॥
सती झट ऊठी शीप नमायो, पियु दरशन से मन विकसायो, अपनो सब अपराध खमायो, झटपट आसन लाय बिछायो काज सुधारणा हो ॥ १ ॥ आज आंगण में सुरतरु फलियो, म्हारो मारो दुखडो टलियो, पुण्य योग से प्रियतम मिलीयो, म्हारी

१ सती अंजना से। २ सती अंजना से। ३ सती अंजना से।

(ढाळ मूलगी)

अब ही जावूं तास, सन्तोषूं स उल्हास, मानी माननीए, आशा आननीए । मध्य रात्रीये सोई, स्वामी सेवक दोई, आया संचरीए, गगन गतीकरीए ॥ १८ ॥ स्वामी रहीयो बार, सेवग गेहमझार, आवी जोवहीए, राणी रोवहीए ॥ पोयणे मारी हेम, सा तवदीसे तेम, जल विण माछलीए, तलपे बल बलीए ॥ १९ ॥ ऊंची नीची थाय, चैन न रंच लहाय, कंकण तोडतीए, गिरवूं लोटतीए ॥ वरजी २ राखन्त, धाई भल भाखन्त, जीवन्तां सहुए, सुख हो से बहुए ॥ ॥ २० ॥ संचर जाणी धाय, धसीनस नारी ग्रहाय, काढे जेट लेए, भाखे तेट लेए ॥ हूं स्वामी नो मित्र, नामे "प्रहसित" पवित्र, स्वामी आवीयोए, मनने भावीयोए ॥ २१ ॥ भूंडा ? एसी हासी, कुंवरी कहै उदासी, नाम न मुज गमेए, दर्शन किम रमेए ॥ वर्ष हुवा मुजवार, नवि दीठो भरतार, अलगोही रहैए, खार घणूं वहैए ॥ २२ ॥

दोहा— सति अंजना की सखी, सुण्या अपूरब बोल ।
बोली उत्तर में, अहो, सुण रे फूटा ढोल ॥१॥

१ ढाल प्रक्षेप तर्ज कायथडा

हांरे लम्पटी के तूं मारग भूलीयो, हांरे लम्पटी के थारो आगयो काल रे पापी म्हारा पिया परदेशां में ॥ टेर ॥
हांरेक लम्पटी वाळूं थारी जीभडो, हांरेक लम्पटी थारी चिराऊं खाल रे पापी म्हारा पिया० ॥१॥ हांरे लम्पटी में ऐसी नहीं कामनी, हांरे लम्पटी राचूं थारे फन्द रे पापी म्हारा पिया० ॥२॥ हांरे लम्पटी क्या तूं मेरे सामने, हांरे लम्पटी गिणूं न इन्द्र नरेन्द्र रे पापी म्हारा० ॥ ३ ॥

दोहा— सती शील में झिल रही, लखली पवन कुंवार ।
प्रेम लायके पुनरपि बोल्यो वचन विचार ॥१॥

१ सती अजना से ।

१ ढाल क्षेपक तर्ज मेरा नन्नासा देवरा

जिनके लिये तूं झूरे झूरणा, उनको देवे किम गारी है ॥
मैं हूं तुम्हारा पियू पियारा, तूं है मेरी पियारी है ॥
हां म्हारी प्यारी अंजना, तो पर वारी है ॥ १ ॥

दोहा— दीपक लेकर देखीयो, निश्चय पवन कुंवार ॥
जाय वसन्ती सती भणी, बोली इणी प्रकार ॥१॥

ढाल मूलगी

कर्म तणो एदोप, करवो राग न रोस,
कीधो आपणोए, इह-पर भव तणोए
कामनीनो करतार, दीठो भलो भरतार,
फूली अङ्गमांए, राणी रङ्गमांए ॥२३॥

२ ढाल प्रक्षेप तर्ज–पन्नजी मूढे बोल

पियू घर आयोए २ । सुन सती अंजना मान वढायोए ॥ टेर
बोल २ अब खोल मून तूं, थारो भाग्य सवायोए ।
देख २ अब आयो पियुडो, विना बुलायोए ॥ पियु० ॥ १ ॥
सुण्यो वचन ओ सती अंजना, अनहद मोद वढायोए ।
पियु आने से सती हिया में हर्ष न मायोए ॥ पियू० ॥ २ ॥
ऊठी सती तब निज आसन से, वदन कमल विकसायोए ।
खोल दुवार जोड़ कर दोनों, वचन सुनायोए ॥ पियु० ॥ ३ ॥

३ ढाल प्रक्षेप तर्ज–गधरल ईशरजी केये तो०॥

भले आया हो प्रियतमजी जावूं वारणा हो, थांपर वारी हो व
हारी राज पधारणा हो ॥ टेर ॥
सती झट ऊठी शीप नमायो, पियु दरशन से मन विकस
अपनो सब अपराध खमायो, झटपट आसन लाय विछायो व
सुधारणा हो ॥ १ ॥ आज आंगण में सुरतरु फलियो, म्ह
सारो दुखडो टलियो, पुण्य योग से प्रियतम मिलीयो, म्ह

१ सती अंजना से । २ सती अंजना से । ३ सती अंजना से

धन्य घडी धन्य भाग के लाज वधारणा हो ॥ २ ॥

दोहा—सती सरलता क्षांतिता, पतिवरता पिण और।
लखकर मन मुदित हुवा, बोला कुंवर किशोर ॥१॥

ढाल मूलगी

भद्रे ! खम अपराध, थारो छेह न लाध,
ओछो हूं धणीए, पूरी तूं भणीए।
दुःख सायर अगवाह, कांठे आवी नाह,
नामा धारथीए, नावा कारथीए २४ ॥
हसी रमी सुख पाय चालण लाग्यो राय,
राणी तव कहेए, गर्भ रहै सहेए।
उत्तरनूं अहिनाण, आपो स्वामी सुजाण,
लोकां थी डरूंए, सुखमें दिन भरूंए ॥२५॥

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज—नवीन रसिया

पाछा जाता प्रियवर ! राज मायत से मिलता जाईजोजी ॥ टेर ॥
तीन रात में रह्यो महिलां में, यों फुरमाईजोजी।
कहनो हमारो मान पति थे मत शर्माईजोजी ॥ पाछा ॥ १ ॥
बात कही में सोच समझ मत यों ही गमाईजोजी।
भविष्य ऊजरो होय इसी पिय बात बनाईजोजी ॥ पाछा ॥ २ ॥
जंग वरुण को जीत सुजशवर लारे लाईजोजी ॥
नित की उडास्यूं काग कंत झट पाछा आईजोजी ॥ पाछा ॥ ३ ॥
आनन्द मंगल वर्ते नित २ धर्म वधाईजोजी ॥
"चौथ्" कहै पवनंजयने नथमाल, मनाईजोजी ॥ पाछा ॥ ४॥

(ढाल मूलगी)

देई मूंदडी देव, चाली गयो ततखेव,
कट के जई मिल्योए, किणहिन अटकल्योए।
केगराज ए ढाल, नग[१] संख्या सुविशाल,
नारी नाहलोए, मिलण उमाहलोए ॥ २६ ॥

१ पर्वत (आठ)

दोहा (धन्या श्री रागे)

"पवनंजय" तब पाधरो, "लंका" नगरी जाय ॥
भूप भली परे भेटीयो, अति रलियायत थाय ॥ १ ॥
"रावण" रूड़े रावले, शुभ वेला सुविचार ।
वरुणो परि तत्खिण चल्यो, दल बलने अनुसार ॥२ ॥
अब तो अंजना सुन्दरी, गर्भ धरे तिण वार ।
गुप्त पणा नूं कामए, कोईयन जाणे सार ॥ ३ ॥
गर्भ तणे तब लक्षणे, गर्भ जणाणो जाम ।
"केतुमति" सासु कहे, किस्यूं कियो ए काम ॥४॥
"पवनंजय" परदेश छे, बहु वधारयूं पेट ।
हूं जाणू के एम हुसे, सोई हुवो नेट ॥ ५ ॥

ढाल नवमी तर्ज झुमकडानी

"केतुमति" कलह कारिणीजी, काल रूपणी होई, करमगति दोहली ।
बहु किम्यूं ते ए कियूंजी, लाजविया घर दोई ॥ कर्म० ॥ १ ॥
मोली अभागणी निठुरणीजी, थी मनना उन्माद ॥ कर्म० ॥
गुण तजबाथा भलाजी, कां लीधो अपवाद ॥ कर्म० ॥ २ ॥
मरचा थी फरि जीवीयेजी, शील रह्यां संसार ॥ कर्म० ॥
शील भलो सहुने सहीजी, सुन्दरी नो सिणगार ॥ कर्म० ॥ ३ ॥
नन्दननी अव मानताजी, जाणतां सहु कोय ॥ कर्म० ॥
रण थारो असतिपणोजी, आजे जणाणो जोय ॥ कर्म० ॥ ॥४॥
ोवे राणी रावलीजी, दुःख हिये न ममान ॥ कर्म० ॥

दोहा— कटुक वचन सासु तणा, सुण्या "अंजना" नार ॥
उत्तर में आतुर तदा, बोली वचन विचार ॥ १ ॥

मंत्री श्री चौथमलजी म० कृत ढाल प्रक्षेप तर्ज नवीन रसीया

साची कहदूं हो सासुजी मांसूं झूंठ न बोल्यो जाय ।
झूंठ न बोल्यो जाय मांसूं साच न खोल्यो (छोडयो) जाय ॥टेर॥
झूठ बोल क्यों जन्म बिगारूं, चौर जार समजो सुत थारूं ।
रया तीन इनरात सासुजी कटक सूं पाछा आय ॥ साची ॥१॥

सासू रीस करीने बोले, तूं कह भूली किण रे भोले ।
बोले क्यूं नहीं साच देवूंलां मैं थारी स्यान गमाय ॥ साची ॥२॥
सती कयो सासू नहीं माने, झूठी सारी वातां जाणे ।
'नाथ शिष्य चोथु' दी निसाणी ततखिणपति दिखाय ॥सा० ३॥

१ ढाल प्रक्षेप तर्ज-तावडा धीमोमो पडजारे

लाडीजी लखण नहीं आछा हे २ खोटा करके काम अबे थे बणस्या हो साचा ॥ टेर ॥
चौरी कर तूं लाई गहणा, बण रही साहूकार ।
जाणूं लखण मैं थारा सारा, तूं सेवे व्यभिचार ॥ लाडी ॥ १ ॥

(ढाल मूलगी)

देखावी सा मूंदडीजी पति आगमनी बात ॥ कर्मगत दोहीली ॥५॥
बलती वायण वेगसूंजी, संभलावे सहु लोक ॥ कर्मगत० ॥
नाम न भावे तेहनोजी, तेहसूं स्यूं संयोग ॥ कर्मगत ॥ ६ ॥
गिरी गिराई मुंद्रड़ीजी, हाथ चढ़ी कहीं आय ॥ कर्मगत० ॥
साची होवे सुन्दरीजी, क्यू न बोलावे ए माय ॥ कर्मगत० ॥७॥

दोहा—कूडा बोली कामणी, राखूं नहीं इक रात ।
आंख थकी अलगी करो, भाखे राणी वात ॥१॥

मंत्री स्या० श्री चौथमलजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज-गिणगोर की-

सासूजी थे म्हारा थांरा जाया ने आवण दोजी, जाया ने आवण दो जितरे ए वातां जावणदोजी ॥ टेर ॥
हाथ जोड ने अरज करू मैं बडा वरां की जाईजी ।
ऐसी वात सुणी नहीं आगे, आ कांई वात सुणाईजी ॥ सासु ॥१॥
एकलडी वनमांहे मांने, मतना मेलो सासूजी ॥
एंठी म्याय रहूं घर मांहे, बोले म्हाखी आंसूजी ॥ सासु ॥ २ ॥
माडांणी जो वन में मेलो, साप स्याग मुझ खासीजी ।
विगर गुन्हे ही मुझ मरवासो तो, थांरे हाथे कांई आसीजी ।सासु॥३॥
साम सुमरा सेथी बोलो, कांई जोर मैं करसूंजी ।

१ सती अञ्जना से ।

भूखां तिरसां मरती मैं तो, विना मौत मैं मरसूंजी ॥ सासु ॥४॥
दीन वचन हुय बोले वहुयर, सासूजी थे मानोजी।
दासी की दासी हुय रहसूं, चौथू कहै मत तानोजी ॥सासु ॥५॥

श्री. वैद्य धूलचन्दजी सुराणा कृत ढाल क्षेपक तर्ज–वधव बोल मानो

सासुजी म्हारी अरज सुणीजे हो, तुम सुत आवे ज्यां लगे घर मांही राखीजे हो ॥ टेर ॥
विगर गुन्है काढो मती, मन खांत करीजे हो।
कटक भणी जन मोकली खबरां कर लीजे हो ॥ सासु ॥ १ ॥
अर्ज इती अब धारजो, माताजी मोरी हो।
पछे ही पछतावसो, कहूं कर जोरी हो ॥ सासु ॥ २ ॥
गद २ वाणी बोलती नयणां जल ढलके हो।
दुःख अपूरब सांभरें, कालेजो कलके हो ॥ सासु ॥ ३ ॥
क्रोधवसे राणी कहै, बोले किण दावे हो।
झूठ वके मुझ आगले, जरा शर्म न आवे हो ॥ सासु ॥ ४ ॥
करम कोई बांधो मति, भवि जीवां भारी हो।
भुगतण विरियां जीवने, नहीं लागे कारी हो ॥ सासु ॥ ५ ॥

दोहा—राणी बोली रोस भर, दो दासी ने मार।
एह काम सब इण कीया, पकड़ो चेटी चार ॥१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयानी। धूलचन्दजी सुराणा कृत–

बाजेरे लीला ताजणा, रोवन्ती असराल सनेही।
डील थयो चक चोल ज्यूं, छूटे रुद्रनी धार सनेही–कर्म तणी गति दोहली ॥ टेर ॥
कूटण वाली कम्पे घणी, नहीं लागे कछु जोर सनेही।
हुकम धणीरे कारणे, काम करां ए भोर सनेही ॥ कर्म० ॥ २ ॥
सूंस करी सति भाखती, न्हाखे मुख निस्सास सनेही।
चौरी मैं कीधी नहीं, भावे देखो मुझ पास सनेही ॥ कर्म ॥३॥

दोहा—केतुमती अति क्रोध में, सुन्या न वचन लिगार॥
अनुचर को बुलवायके, बोली यों ललकार ॥ १ ॥

अन्न पाणी री आखड़ी, जोलो ए नहीं जाय ॥
सति विचारे चित्त में, अब बोलीजे नाय ॥ २ ॥

क्षेपक तर्ज लावणी (लेखक)

दोनों को कालो वास तुरत पहिराया,
जो आभूषण मणीमाल तुरत उतराया ॥
कालो रथ ने काला तुरङ्ग मंगाया,
दीयो कालो स्वारथी काला हीया बनाया ॥
सती करे अरराट सखी समझावे,
रथ चाल्यो सननाट नगर बिच आवे ।
मत देना कोई आल किसी पर भाई,
भुगते हाथो हाथ हुवे दुःख दाई ॥ टेर ॥१॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज आज शहर में हजा मारु सीपडे

नर नारी हो सारी जोवती, रोवती भर २ नेण, सुज्ञानी ।
हा हा दैव ए काम कीयो कीसूं, भाखे इण पर वेण ॥ सु० ॥
जोइजो अवस्था सतियों में पडी ॥ टेर ॥ १ ॥
म्होटा घर में अकाज हुवा इसा, छोटांनो स्यूं थाह ॥ सु० ॥
आरत करती हो कामण अतिघणी, जोवे नगरना शाह ॥सु.जो.॥२॥
काला रथ में बैसा संचरे, धरती दुःख अपार । सु०
मुख कुमलाणों मालती फूल ज्यूं लोक घणा छै लार ॥सु जो.॥३॥
नगरी उल्लंघी हो आई बन बिषे, तन में तेज न काय । सु०
मन दुःख धरतो स्वारथी बोलियो, दोषण म्हारो न माय ।सु.जो.४।
सती दुःख देखी स्वारथी इम कहे, धिक् २ पापी पेट । सु० ।
जन्म डुबोयो हो में इण वस पड्यो. नीच कर्म कीयो नेट ।सु.जो.५

ढाल मूलगी

निर्भेळी वचने खरीजी, आरक्ष पुरुषां हाथ ॥ कर्म०
काढी नगरे बाहरेजी, सखी चाली तस साथ ॥ कर्म० ॥ ८ ॥
आरक्ष पुरुषे पाथरीजी, पीहरे आणी सोय ॥ कर्म०
बाहिर मूकी बाहुड्याजी, एतो इमहिज होय ॥ कर्म० ॥ ९ ॥

रात्रे बाहीरे रहीजी, करती शोचा शोच। कर्म०
किणही ठामे पड़े नहींजी, आरतीमे आलोच ॥ कर्म ॥ १० ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज खबर नहीं है पलकी

सती में विपत पड़ी भारी रे, स०
मत कोई बांधो कर्म चतुर सब सुणजो नरनारी ॥ टेर ॥
क्यों रह्यो छे पीहर सासरो, प्रीयतम क्यों प्यारी।
अहो २ कर्म गती कुणटारे, निज कृत दुखकारी ॥ सती० ॥१॥
आक्रन्दशब्द करे दोई वनमें, रन है भयकारी।
रुदन सुनी पंखी कुरलावे, सुनन लगे खारी ॥ सती में ॥ २ ॥

१ ढाल क्षेपक तर्ज पपैया काहे मचावे शोर।

सहेली अब किम धारूँ धीर, पड़े नयन से नीर ॥ टेर ॥
परणी जद तो प्रीतम मुझपर, नाहक थे नाराज।
पिया प्रेम जब कीया मेरे से, सासु विगाड़ी लाज ॥
कलङ्क के काले तनपर चीर ॥ सहेली ॥ १ ॥
जशजीवन अपजश है मरना, कहते नीतिकार।
इसमें श्रेय मुझे है मरना, मरसूं खाय कटार ॥
सुनत यों जाय कलेजा चीर ॥ सहेली ॥ २ ॥
दोहा—रात पड़ी रवि आथमीयो, प्रसरयो घोर अंधार।
सागारी अनशन कीयो, नामगुणे नवकार ॥ १ ॥

तर्ज—अंजना री—

अंजना कहै सुन सुन्दरी, दुःखमांहै दुःख मुझ ऊपन्यो आज तो।
पाणीथकी कीवी पातली, सासरा विच म्हारी नीगमी लाजतो ॥
माता ने मुख किम दाखवूं, भाई भोजायों किम करसीए नीहतो।
ज्यों लगे स्वामी आवे नहीं, किमकरी दुखभर्या नीगमूं दीहतो—
सती में शिरोमणी अंजना ॥ १ ॥
'वसन्तमाला' वलती कहै, जहां लगे निर्मला ऊजला आपतो।
तहां लगे स्वजन सुहामणा, हर्ष बोलावसी तुम तणो बापतो ॥

१ सती अंजना के।

माता मनोरथ पूरसी, भाई भोजाईयों मिलसी उमङ्ग तो।
जहांलगे स्वामी आवे नहीं, तहां लगे पीयर पोखजो अङ्गतो।सती।२।

१　॥ ढाल क्षेपक तर्ज-मैं अङ्गरेजी पढ़ रई हूं ॥

नहीं पीयरीये चालू, मुझको शर्म सताती ॥ टेर ॥
कलंक लेय किम पीयर जावूं, साच कहूं महियर शर्मावूं।
हा हा कैसे हालू ॥ मुझको० ॥ १ ॥
जोगिन बनकर अलख जगासूं, सुत होने से फिर जलजासूं।
पूरण पतिव्रत पालूं ॥ मुझको० ॥ २ ॥

दोहा-क्षेपक,-उपसर्ग सहतां ऊगियो, सहस किरणनो सूर ।
पीयर जावे पद्मणी, विकट पन्थ छै भूर ॥

॥ धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज लावणी ॥

दोनों तो भूली वाट ऊजड में जावे,
रनवन के मांहै फिर फिर गोता खावे।
माणस मिलीयां विन रास्ता कुण दिखलावे,
सतीयन की छाती मांय दुःख नहीं मावे ॥
यों बोले अंजना सुन तूं सखी हमारी,
कर्मों की रेख कोई टले न किनसे टारी ॥ टेर ॥
मैं पूर्व भव में पाप कीया अति खोटा,
मैं लीया अदत्तादान आल दिया म्होटा।
वलि भूख तृपा से जीव घणो घवरावे,
तो पिण पीयर की आशा मन में लावे ॥
तिहां विविध परे तो वन दुःख सहतां हारी ॥ कर्मों की० ॥२॥

दोहा—अनुक्रमें वाटे चालतां, चरण थया चक चोल ।
मन संकोचित माननी, आई नगरनी पोल ॥ १ ॥

॥ क्षेपक तर्ज—अंजनारी ॥

नगरनी सेरी हो संचरी, आधो घूंघट नीचो है मुख तो।
काला हो वेष शोभे नहीं, दीठां ऊपजे अति घणूं दुःख तो ॥

---

१ सती अंजना से ।

हंस गमन गति चालती, राज विछोही ए दीसे छे नार तो ।
पाछल परजाहो परवरी, इण पर पहूंचीछे राज दुवारतो ।सती.।३।

॥ ढाल मूलगी ॥

दीन मुखी गाढी दुःखीजी, ऊभी राजदुवार ॥ कर्म०
प्रतिहारी ए आवीनेजी, कीधो राय जुहार ॥ कर्म० ॥ ११ ॥

॥ धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-पन्नजी मूंडे बोल ॥

खाट हिंडोले हींचे राजा, खुल रही केसर क्यारी रे ।
आनन्द रङ्ग विनोद विविध पर पालक अरज गुजारी रे ॥
मत कोई बांधोरे, मत कोई बांधो कर्म शुभाशुभ लगे न सांधोरे ॥टेर॥
पोल के बारे अंजना ऊभी, एक सखी तसु लारी रे ।
नगर सिणगारो नरपति बोले, करो नव २ त्यारी रे ॥ मत० १ ॥
प्रच्छन्न पणे सहु सम्बन्ध सुणायो, भयो शोच अति भारी रे ।
लग्यो कलेजे दाह भूप मूर्च्छा तिणवारी रे ॥ मत० ॥ २ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

सर्व विरतंत सुनावतांजी, राजा रोप धरन्त ॥ कर्म०
हाथ घसे शिर धूणवेजी, पश्चाताप करन्त ॥ कर्म० ॥ १२ ॥
कुलटा कर्म समाचरीजी, कुलने लीक[१] लगाय ॥ कर्म०
आवी मुख देखाड़वाजी, ए कुंण भलपण थाय ॥ कर्म० ॥ १३ ॥
घन[२] थी ऊपजे बीजलीजी, अमृतथी विप वेली ॥ कर्म०
दीवाथी जेम कालिमाजी[३], मुझ थी ए इम मेली[४] ॥ कर्म० ॥१४॥
प्रसन्न कीर्तिजी वदेजी, पापणी परहि जाय ॥ कर्म०
अंगुठो तो अहिरुपाजी[५], दसियाथी न रखाय ॥ कर्म० ॥ १५ ॥
सघलाने काने सुणीजी, कहे 'महोत्साह' मन्त्रीश ॥ कर्म०
दांते चढावी आंगुलीजी, किस्यूं कहो छो ईश ॥ कर्म० ॥ १६ ॥
रूठी बैठी पीहराजी[६], सुणो अछे आचन्त ॥ कर्म० ॥
जलथी अग्नी न ऊपजेजी, काए थकी उपजन्त ॥ कर्म० ॥१७॥

१ लांछन (लीटी) । २ बरसादथी । ३ काजल । ४ अस्पष्ट । ५ सर्प
६ पीयरीए ।

कुंवरी छाने राखियेजी, मेटी[1] सयल कहाव ॥ कर्म०
छब्या छब्याथी ऊजलाजी, होवे राया राव ॥ कर्म० ॥ १८ ॥
'केतुमती' नामे सुणोजी, अप कीर्ति छे आद[2] ॥ कर्म०
झूठो दोप लगाड़नेजी, वहु विगोवे वाद ॥ कर्म० ॥ १९ ॥
राजा कहे मन्त्रीशसूंजी, तूं नहीं जाणे मर्म ॥ कर्म०
सास वहु ने अवगणेजी, एतो अछे अधर्म ॥ कर्म० ॥ २० ॥
अण मिलंत भरतारसूंजी, तिण ही में परदेश ॥ कर्म०
पिछे हुई गर्भणीजी, एछे कांई विशेष ॥ कर्म० ॥ २१ ॥
उहांथी उत्तर करोजी, जाजे अलगी अपार ॥ कर्म०
मुख नवि देखूं ताहरोजी, छूं ! बहुलो विस्तार ॥ कर्म० ॥ २२ ॥
दिन सूधे सूधूं सहीजी, वांका थी अति वंक ॥ कर्म०
माणमनूं मारो नहीं जी, एजिन वचन निशंक ॥ कर्म० ॥ २३ ॥
नृप आदेशे पोलीयेजी, दूर करी ते बाल ॥ कर्म०

दोहा—कही सही नृपती कही, आतुर अनुचर आय।
कदलीदल ज्यों धरणी पे, पडी बाल मूर्च्छाय ॥१॥

३ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज—कोरो काजलियो ॥

'वसन्तमाला' वसने करी, कांई घाले शीत समीर ॥ पापी बावलीयो ॥
साव चेत हुई सुन्दरी, कांई नयनों वर्षे नीर ॥ पापी० ॥ १ ॥
'वसन्तमाला' बाला कहे, मोरा कालो देखी वेस ॥ पापी०
पूछ तांछ नहीं जांच की, उलटो करीयो द्वेप ॥ पापी० ॥ २ ॥
हट करके रहती नहीं, मैं कहती सुख दुःख वात ॥ पापी०
पीछे प्रभो! पिछतावसो, कांई जद आसी जामात ॥ पापी० ॥३॥

॥ तर्ज—अञ्जनारी ॥

पोलिये आवी ऊठावीयो, तुम्ह पर रूठो विद्याधर रायतो।
बांह माहा ने बैसी करी, मनमांही चिन्तवे आंपणी मायतो ॥

१ मुर्छा (तजी)। २ आदि (प्रथमथी)। ३ सती अञ्जना से।

ख थकीरे आंसू झरे, शरीर सूनो थयो शुद्ध न सारतो।
घारें पाय पाछा पडे, इणपर पहोंतीछे माय दुवारतो॥सती में ४॥

दोहा—माता मन्दिर मांयने, करती नवा २ रङ्ग।
वारी मारग देखतां, आवे पुत्री विरङ्ग॥ २॥

॥ तर्ज–अञ्जनारी॥

ठ सूकारे खरपटी पड़ी, जीभ सूकी नहीं तालवे नीरतो।
ग पर चालती बालिका, ढींचण पगतले फाटोछे चीरतो॥
लोरे वेश शोभे नहीं, नयन झरे जांणे मोतीना बिन्दतो।
ख कुमलाणोरे कामनी, जाणेके राहु ग्रह्योछे चंदतो॥सतीमें ५॥

१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज–मैं अङ्गरेजी पढ गई हूं॥

शरणे अब आई हूं, सुन तूं मेरी मैया॥ टेर॥
री गोद में तुमने पाली, मेरे मोद में होती काली।
वही तेरी हां जाई हूं॥ सुन०॥ १॥
सू मो शिर कलंक चढाया, काला वेष मुझे पहनाया।
जन से मैं शर्माई हूं॥सुन०॥ २॥
पिता साहब ने हुकम लगाया, प्यासी ने नहीं नीर पिलाया।
ाढ़ी में घबराई हूं॥ सुन०॥ ३॥

दोहा—हींडे हींचती मातने, सुनली ताम पुकार॥
लखि पुत्रीका अंजना, बोली निजरे निहार॥ १॥

२ ढाल क्षेपक तर्ज आखिर नार पराई है।

जबही अन्नजल खाऊँगी, कन्या बाहर कढाऊँगी॥ टेर॥
कलङ्क लेय क्यों आई आज, इनको जरा न आवे लाज॥
मैं नहीं मुँह लगाऊँगी॥ कन्या०॥ १॥
बांझ प्रभु हा! क्यों नहीं कीनी, क्यों कुलटा यह कन्या दीनी॥
इनका नाक कटाऊंगी॥ कन्या०॥ २॥

दोहा—आई क्यों यहां अंजना, माता का नहीं प्रेम॥
चेड़ी नेड़ी आयके, बोली बेडी एम॥ १॥

१ सती अञ्जना से। २ सती अञ्जना से।

१ ढाल क्षेपक तर्ज वीरा लूंबां झूंबां होई आईजो ॥
म्हांरी चूरी लगावोला कांईजी, तूं क्यों पीयरीए आईजी ॥ टेर ॥
क्यों खोटा कर्म कमाया, थे कुलने चावल चढ़ायाजी ॥ म्हां० ॥
थे अब तो कुछ शर्मावो, म्हांने मूँडो मति दिखावोजी ॥म्हां०॥१॥
मत मन्दिर अन्दर आना, चले झटपट यहां से जानाजी ॥म्हां०॥
है माताजी का कहना, मत खड़े मिन्ट भर रहनाजी ॥म्हां०॥२॥
दोहा—सती आंसको लालकर, वोली यों ललकार ॥
बस बस अब खामोश हो, बोलो बचन विचार ॥१॥
२ ढाल प्रक्षेप तर्ज–नवीन रसीया ॥
पहीले कहूं विचारी बोल सखी पीछे पिछतावोगी ॥ टेर ॥
सन्मुख मुझको गाली देते, नहीं गम खाओगी ॥
जितनी बनी सैतान आज, उतनी दुःख पाओगी ॥पहीले० ॥१॥
भूखी प्यासी दासी को देख तुम दया न लाओगी ॥
जब दिन मेरे घर आवेंगे, फिर घबराओगी ॥ पहीले० ॥ २ ॥
पति पवन जब युद्ध से आसी, फिर शर्माओगी ॥
सबके मुँह में धूड पडेगी, वदन छिपाओगी ॥ पहीले० ॥ ३ ॥
(लेखक) ढाल क्षेपक तर्ज पणिहारी—
सुण माता कहै अंजना, हूँ आई है,
जानी जनम देवाल, कीध मनाई है ॥
मैं नविजानी मायड़ी, छेह देसी है,
निकली कीध बेहाल ॥ वैरण जैसी है ॥ १ ॥
सुख दुःखनी जे वातडी, नहीं पूछी है,
नहीं कह्यो पीले नीर ॥ चढ गई ऊँची है ॥
तूं निर्दय किम नीकली, मोरी जननी है,
इक इचरज इकपीर, म्हारे मननी है ॥ २ ॥
कमल नयन से नीर, नीझर छूटी है,
मानो मोतीयन की माल, तट के तूटीहै ॥

---

१ सती अञ्जना से । २ सती अञ्जना से ।

मूर्च्छित होय धरणी पड़ी, अत ही रोवे रे,
तब कहै 'वसन्तमाल' क्यों तन खोवे है ॥ ३ ॥
बाईसा रोवो मती, रहो गाढा है,
ए मावित नहीं आज, आया आडा है ॥
बांह पकर बैठी करी, झट चाली है,
अब भौजाई घरे जाय, भावज भाली है ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पनजी मूँढे बोल ॥ मन्त्री श्री चौथमलजी म० कृ

बाईसारो वेप देखने, भोजाईजी भिडकीरे ॥
दास्यांने कहै वेगो जाकर, देदो खिड़की रे ॥ ॥
भावज मूँडे बोल, बोल २ घर आई थारी नणदल बाई है ॥
खिडकी वेगी खोल, खोल २ म्हारी सावसगी तूं वाहली भोजाईहै।टेर
नीची झुक २ जालियों में, नणद बाई ने निरखे रे।
ऊंची निजरां करी अञ्जना, प्रेम परखे रे ॥ भावज० ॥ १ ॥
निरमल जल झारी भर पावो, अवरन मांगू कांई रे।
पानी पीकर वन में जास्यां, डरपो नांई रे ॥ खिड़की० ॥ ३ ॥
वचन सुण्यां अणसुण्यां करने, भावज अन्दर वड़गी रे।
गोखां मायली बारीयां, वा जाती जड़गी रे ॥ खिड़की० ॥ ४ ॥
देख भावजरा भाव अंजना, गेल छोड गई आगे रे।
नाथ मुनि शिष्य 'चोथमल' कहै, सतियां सागे रे ॥ भावज ॥५॥

॥ तर्ज अजनारी ॥

अंजना घर २ हींडती, पग कुंकु वरणा कमलसम देहतो।
खुचता कांटाने काकरा, जिग रक्त राती भूमि थई तेहतो ॥
दीन वचन मुख दाखती, नैण झरे जाणू सावण मेहतो।
भूखी तिरसा करी आकुली, भाई भोजायां सब दीनो छे छेहतो।मती.६

दोहा—ऐसे आखिर आगई, माणक चौक मझार।
नागरीक नरखे सती, कर रही एम पुकार ॥ १ ॥

१ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज–तरकारी लेलो ॥

नगरी का लोकों ? कोई तो पिलाओ पानी आयके ॥ टेर ॥
प्यासां मरती मरूं हाय मैं, नीर नयन में आयो।
मात पिता तो मुझ पर रूठे, पानी भी नहीं पायो रे ॥नगरी १॥
अयि ! नगरा के लोकों आवो, मतना तुम भय खावो।
दीन दुःखी अबला दुर्बल की, जरा दया दिल लावो रे ॥ नगरी. २॥

दोहा—ऐसे कहतां अंजना, दृग भर आयो नीर।
हृदय विदारक आहसे, जाय कलेजे तीर ॥ १ ॥

२ ॥ छन्द मालती ॥

सब नगर निवासी देख लाये उदासी।
अति दुखित पियासी अंजना और दासी ॥
सब जन भय खावे चित्त में दुःख पावे।
पर जल न पिलावे पास कोई न आवे ॥ १ ॥

॥ छन्द द्रुत विलम्बित ॥

नगरि में गरि मे चरचा यही–
सुजनता जनता अकुला रही ॥
जल नहीं तुं कहां अन खावनो–
पुरभयो सघलो अण खावणो ॥ १ ॥

॥ छन्द मालती ॥

शिर पर अति चोटी हाथ सोटी लिये हैं।
जल भर कर लोटी स्नान शुद्धि किये हैं ॥
अतिकर करुणाई विप्र ने पास आई।
इम किम कुमलाई बोल तूं बोल बाई ॥ १ ॥

॥ छन्द द्रुत विलम्बित ॥

नृपति की पति की घटना सही।
नव कथा विकथा घटना कही ॥
जनकजी रु जहां जननी रहै।
मुझ लिये तू नहीं जन ! नीर है ॥ १ ॥

---

१ सती अंजना से। २ सती अञ्जना से।

॥ छन्द मालती ॥

सुनकर अकुलायो विप्र ने शीप नायो।
नहिं मन घबरायो धैर्य ऐसे बँधायो ॥
मुझ विनय सुनीजे देर माता न कीजे।
झटपट अब लीजे नीर ठण्डा तूं पीजे ॥१॥

दोहा—नीर पिऊं नहीं नगर में, सुनहु ब्राह्मण वीर।
आकर पुरने बाहरे. पायो निर्मल नीर ॥ १ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

क विलाप करे घणूंजी, भूल्योरे भूपाल ॥ कर्म० ॥ २४ ॥
खीं तरसी तलवले जी, आंसूं वरसे नयन ॥ कर्म०
र्भांकुर पग बींधतांजी, पामे अधिक कु चयन ॥ कर्म० ॥ २५ ॥
गे पगे गिर गिर पडेजी. तरु तर लीये विसराम ॥ कर्म०
सन्ततिलका' साथणीजी. चाली जाये ताम ॥ कर्म० ॥ २६ ॥
ाम नगर पुर पाटणेजी, नृपनी आयश कार ॥ कर्म०
हिलाहिज कही आवीयाजी, को मत द्यो पेसार ॥ कर्म०॥२७॥
ासो ही अण पावतीजी, धरती अति सन्ताप ॥ कर्म०
ामी अटवी मोटिकीजी. करती अति ही विलाप ॥ कर्म० ॥२८॥
ाग्य हीन जे भामिनीजी, सहूंनी हूं सिरदार ॥ कर्म०
इह पराभव देखवाजी. कां मरजी किरतार ॥ कर्म० ॥ २९ ॥
ात फर्यो माता फरीजी. फरीया भाई भूर ॥ कर्म०
ाथ फर्यो थीं जग फर्योजी. मरवूं झूरी झूर ॥ कर्म० ॥ ३० ॥
रवामें ओछो नहीं जी. साच तणो विश्वास ॥ कर्म०
कडावे द्वादस घणीजी. नृप जाचा दीये त्रास ॥ कर्म० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल क्षेपक तर्ज-तूही २ याद प्रभु आवे दरद में ॥

चालो अब बाई सम्भालो विपनने, सम्भालो विपनने निभावोला
पन नें ॥टेर॥

---

१ सती अञ्जना से।

पीयर सासरे आसरो नांही, कसकर कमरने वसकर मननें ॥चालो॥
वन मृगननके गनमें रहेंगे, भूल जाय तूं सखरे सदनने ॥चालो॥२॥

ढाल अञ्जनारी—

अंजना सती इण पर कहै, वसन्तमाला मने वन में ले जाय तो॥
विखमीरे डूगर अति घणा, जेह वन में घणी तरुतणी छायतो।
माणस मुख दीसे नहीं, सज्जन आपणां तिहां नहीं कोयतो॥
सूरज किरण नहीं संचरे, तिण वनमें सुखे रहसां दोयतो॥सतीमें॥७॥
अंजना वन मांहीं संचरी, लोक पीयर ना देवे छे गालतो॥
नगरना लोक झूरे घणा, ए किस्यूं रायने ऊपज्यो ख्यालतो॥
आंण दिवरावीजी घरो घरे, एहचो कर्म न करेरे चण्डालतो॥
पेटनी पुत्रीरे परहरी, वनमांहीं काढी छे अंजना बालतो॥सती॥८॥
माताजी दासीजी मोकली, जाए जोवो अंजणा रही किण ठामतो॥
दासी कहै बाई वन गई, हा हा दैव यह स्यूं कीधू काम तो॥
माहरी कूख में ऊपनी, बालपणे बेटी पर अति घणों रागतो॥
वनमांहीं बाघ विलूरसे, रात दिवस बले पेटनी आगतो॥सती९॥
नित भोजन करती रे बापपे, भाई भोजाइयोंने आपती भागतो॥
उच्छ रङ्ग रमती रे अमतणे, किम कर सहसी शीतने आगतो॥
अन्न पाणी किम पामस्ये, मैं तो जाणीयो कोई राखसे चीरतो॥
मातारे मूर्च्छारे वशथई, शरीर सम्भालीने साचव्यो चीरतो॥सती॥१०
राजा हो राणी ने श्रीछवे, राज सम्बंध नहीं जाणीयो भेद तो॥
कटक थी पवनजी आवस्ये, नासका कर्ण नो करसी रे छेद तो॥
किम कर लोकने श्रीछवूं१ किम कर राखूं म्हारा देशनी कारतो॥
जो घर आणूंरे अंजणा, तो नगरना लोक हींडे अनाचारतो॥सती११
वसन्तमाला इम उच्चरे, बाई तारो बाप छे कर्म चण्डाल तो॥
मूर्ख मातारे तुमतणी, वन्यव कीधो छे कर्म चिकरालनो॥
आंगण न राखी अवबड़ी, कलंक चढावीने दीधो छे आलतो॥

---

१ पूछवूं।

वसन्तमाला बलती कहै, थारा पिहर पर पडजोरे धारतो ॥सती१२॥
बाई म्हारो बाप छे निरमलो, इण किणने नहीं दीधो छे आलतो।
माता छे म्हारी महासती, पतिव्रता धर्म तणी प्रति पालतो।
बंधव भगता छे बापना, धरिये नहीं वसन्तमाला मन रोसतो।
पूर्व पुण्य किया नहीं, ए सहु आपणां कर्म नो दोषतो ॥सती १३॥

ढाल मूलगी

आगे जातां देखीयाजी, गुफामां एक साध ॥ कर्म० ॥
"अमितगती" नामे भलाजी, दर्शन थी सुख लाध ॥कर्म०॥३२
नवमी ढाले सगातणोजी, सगपण नो व्यवहार ॥
"केशराज" देख्यो घणोजी, धर्म एक आधार ॥ कर्म ॥ ३३

ढाल क्षेपक तर्ज चालो सजनी बहेली ॥

चालो जल्दी बाई, देखोंनी वन के मांहीं, मोरी सजनी ज्ञानी गु
ऊभाध्यान में ॥ टेर ॥
भलो भाग्य बाईजी थांरो, साचा सतगुरु मिलिया ॥
दर्शण करस्यां चरण भेटसां, अब तो दुखडा टलिया ॥ मोरी १
संयम रागी तृष्णा त्यागी, पूरण है वैरागी ॥
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, शिव पुर सूं लिव लागी ॥मोरी॥२
सती अंजना सुन सुख पाई, मुनिवर पासे आई ॥
नीची लुल लुल शीस नंवाई, बोली कर लघुताई ॥ मोरी ॥ ३

दोहा- (आशापरी राग)

देई प्रदिक्षणा भाव सूं, विधीयें वन्दन करन्त।
सुख पूछी बयठी सती, अधिको हर्ष धरन्त ॥ १ ॥
पूछे चारण[१] ऋषी भणी, वसन्त तिलका नाम ॥
कोण कर्मना दोष थी, साचा झूठा नाम ? ॥ २ ॥
ऋषि भाखे भले भाव सूं, कर्म कथा नहीं पार ॥
थोडा में भाखूं घणूं, सुणवा बोल ये चार ॥ ३ ॥

१ आकाश मां उड़ने वाला।

पीयर सासरे आसरो नांही, कम्कर कमरने वसकर मनने ॥चालो॥
वन मृगननके गनमें रहेंगे, भूल जाय तूं सखरे सदनने ।चालो॥२॥

ढाल अंजनारी—

अंजना सती इण पर कहै, वसन्तमाला मने वन में ले जाय तो॥
विखमीरे डूंगर अति घणा, जेह वन मे घणी तरुणी छायतो।
माणस मुख दीसे नहीं, सज्जन आपणां तिहां नहीं कोयतो॥
सूरज किरण नहीं संचरे. तिण वनमें सुखे रहसां दोयतो॥सतीमें॥७॥
अंजना वन मांहीं संचरी. लोक पीयर ना देवे छे गालतो॥
नगरना लोक झूरे घणा, ए किस्यूं रायने ऊपन्यो ख्यालतो॥
आंण दिवरावीजी घरो घरे. एहवो कर्म न करेरे चण्डालतो॥
पेटनी पुत्रीरे परहरी. वनमांहीं काढी छे अंजना वालतो॥सती॥८॥
माताजी दासीजी मोकली, जाए जोवो अंजणा रही किण ठामतो॥
दासी कहै वाई वन गई, हा हा दैव यह स्यूँ कीधू काम तो॥
माहरी कूख में ऊपनी, बालपणे बेटी पर अति घणो रागतो॥
वनमांहीं वाघ विलूरसे, रात दिवस वले पेटनी आगतो॥सती९॥
नित भोजन करती रे बापपे, भाई भोजाइयोंने आपती भागतो॥
उच्छ रङ्ग रमती रे अमतणे, किम कर सहसी शीतने आगतो॥
अन्न पाणी किम पामस्ये, मैं तो जाणीयो कोई राखसे चीरतो॥
मातारे मूर्च्छारे वशथई, शरीर सम्भालीने साचव्यो चीरतो॥सती॥१०
राजा हो राणी ने प्रीछवे, राज सम्बंध नहीं जाणीयो भेद तो॥
कटक थी पवनजी आवस्ये, नासका कर्ण नो करसी रे छेद तो॥
किम कर लोकने प्रीछवूं[१] किम कर राखूं म्हारा देशनी कारतो॥
जो घर आणूंरे अंजणा, तो नगरना लोक हींडे अनाचारतो॥सती११
वसन्तमाला इम उच्चरे, बाई तारो बाप छे कर्म चण्डाल तो॥
मूर्ख मातारे तुमतणी, बन्धव कीधो छे कर्म विकरालतो॥
आंगण न राखी अधघडी. कलंक चढावीने दीधो छे आलतो॥

---

१ पृछवूं।

वसन्तमाला बलती कहै, थारा पिहर पर पड़जोरे धारतो ॥सती१२॥
बाई म्हारो बाप छे निरमलो, इण किणने नहीं दीधो छे आलतो ॥
माता छे म्हारी महासती, पतिव्रता धर्म तणी प्रति पालतो ॥
बंधव भगता छे बापना, धरिये नहीं वसन्तमाला मन रोसतो ॥
पूर्व पुण्य किया नहीं, ए सहु आपणां कर्म नो दोपतो ॥सती १३॥

ढाल मूलगी

आगे जातां देखीयाजी, गुफामां एक साध ॥ कर्म० ॥
"अमितगती" नामे भलाजी, दर्शन थी सुख लाध ॥कर्म०॥३२॥
नवमी ढाले सगालणोजी, सगपण नो व्यवहार ॥
"केशराज" देख्यो घणोजी, धर्म एक आधार ॥ कर्म ॥ ३३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज चालो सजनी बहेली ॥

चालो जल्दी बाई, देखोंनी वन के मांहीं, मोरी सजनी ज्ञानी गुरु ऊभा ध्यान में ॥ टेर ॥
भलो भाग्य बाईजी थांरो, साचा सतगुरु मिलिया ॥
दर्शण करस्यां चरण भेटमां, अब तो दुखडा टलिया ॥ मोरी १ ॥
संयम रागी तृष्णा त्यागी, पूरण है वैरागी ॥
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, शिव पुर सूं लिव लागी ॥मोरी॥२॥
सती अंजना सुन सुख पाई, मुनिवर पासे आई ॥
नीची लुल लुल शीस नवाई, बोली कर लघुताई ॥ मोरी ॥ ३ ॥

दोहा- (आशावरी रागे)

देई प्रदिक्षणा भाव सूं, विधीये वन्दन करन्त ।
सुख पूछी बयठी सती, अधिको हर्ष धरन्त ॥ १ ॥
पूछे चारण[1] ऋषी भणी, वसन्त तिलका नाम ॥
कोण कर्मना दोष थी, साचा झूठा नाम ? ॥ २ ॥
ऋषि भाखे भले भाव सूं, कर्म कथा नहीं पार ॥
थोड़ा में भाखूं घणूं, सुणवा बोल ने चार ॥ ३ ॥

---

1 आकाश मां उड़ने वाल

पीयर सासरे आसरो नांही, कसकर कमरने वसकर मननें ॥चालो॥
वन मृगननके गनमें रहेंगे, भूल जाय तूं सखरे सदनने ॥चालो॥२॥

ढाल अञ्जनारी—

अंजना सती इण पर कहै, वसन्तमाला मने वन में ले जाय तो ॥
बिखमीरे डूगर अति घणा, जेह वन में घणी तरुतणी छायतो ।
माणस मुख दीसे नहीं, सज्जन आपणां तिहां नहीं कोयतो ॥
सूरज किरण नहीं संचरे, तिण वनमें सुखे रहसां दोयतो ॥सतीमें॥७॥
अंजना वन मांहीं संचरी, लोक पीयर ना देवे छे गालतो ॥
नगरना लोक झूरे घणा, ए किस्यूं रायने ऊपज्यो ख्यालतो ॥
आंण दिवरावीजी घरो घरे, एहवो कर्म न कररे चण्डालतो ॥
पेटनी पुत्रीरे परहरी, वनमांहीं काढी छे अंजना बालतो ॥सती॥८॥
माताजी दासीजी मोकली, जाए जोवो अंजणा रही किण ठामतो ॥
दासी कहै बाई वन गई, हा हा दैव यह स्यूँ कीधू काम तो ॥
माहरी कूख में ऊपनी, बालपणे बेटी पर अति घणों रागतो ॥
वनमांहीं बाघ बिलूरसे, रात दिवस बले पेटनी आगतो ॥सती९॥
नित भोजन करती रे बापपे, भाई भोजाइयोंने आपती भागतो ॥
उच्छ रङ्ग रमती रे अमतणे, किम कर सहसी शीतन आगतो ॥
अन्न पाणी किम पामस्ये, में तो जाणीयो कोई राखसे बीरतो ॥
मातारे मूर्च्छारे वशथई, शरीर सम्भालीने साचव्यो चीरतो ॥सती॥१०
राजा हो राणी ने प्रीछवे, गज सम्बंध नहीं जाणीयो भेद तो ॥
कटक थी पवनजी आवस्ये, नासका कर्ण नो करसी रे छेद तो ॥
किम कर लोकने प्रीछवूं? किम कर राखूं म्हारा देशनी कारतो ॥
जो घर आणूंरे अंजणा, तो नगरना लोक हींडे अनाचारतो॥सती११
वसन्तमाला इम उच्चरे, बाई तारो बाप छे कर्म चण्डाल तो ॥
मूर्ख मातारे तुमतणी, बन्धव कीधो छे कर्म विकरालतो ॥
आंगण न राखी अधघडी, कलंक चढावीने दीधो छे आलतो ॥

वसन्तमाला वलती कहै, थारा पिहर पर पड़जोरे धारतो ॥सती१२॥
बाई म्हारो बाप छे निरमलो, इण किणने नहीं दीधो छे आलतो ॥
माता छे म्हारी महासती, पतिव्रता धर्म तणी प्रति पालतो ॥
बंधव भगता छे बापना, धरिये नहीं वसन्तमाला मन रोसतो ॥
पूर्व पुण्य किया नहीं, ए सहु आपणां कर्म नो दोपतो ॥सती १३॥

ढाल मूलगी

आगे जातां देखीयाजी, गुफामां एक साध ॥ कर्म० ॥
"अमितगती" नामे भलाजी, दर्शन थी सुख लाध ॥कर्म०॥३२॥
नवमी ढाले सगातणोजी, सगपण नो व्यवहार ॥
"केशराज" देख्यो घणोजी, धर्म एक आधार ॥ कर्म ॥ ३३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज चालो सजनी सहेली ॥

चालो जल्दी बाई, देखांनी वन के मांहीं, मोरी सजनी ज्ञानी गुरु ऊभा ध्यान में ॥ टेर ॥
भलो भाग्य बाईजी थांरो, साचा सतगुरु मिलिया ॥
दर्शण करस्यां चरण भेटसां, अब तो दुखड़ा टलिया ॥ मोरी १ ॥
संयम रागी तृष्णा त्यागी, पूरण है वैरागी ॥
ज्ञान ध्यान में लीन मुनीश्वर, शिव पुर सूं लिव लागी ॥मोरी॥२॥
सती अंजना सुन सुख पाई, मुनिवर पासे आई ॥
नीची लुल लुल शीस नवाई, बोली कर लघुताई ॥ मोरी ॥ ३ ॥

दोहा- (आशावरी राग)

देई प्रदिक्षणा भाव सूं, विधीये वन्दन करन्त ।
सुख पूछी बयठी सती, अधिको हर्ष धरन्त ॥ १ ॥
पूछे चारण[1] ऋषी भणी, वसन्त तिलका ताम ॥
कोण कर्मना दोष थी, साचा झूठा नाम ? ॥ २ ॥
ऋपि भाखे भले भाव सूं, कर्म कथा नहीं पार ॥
थोड़ा में भाखूं घणूं, सुणवा बोल वे चार ॥ ३ ॥

---

१ आकाश मां उडने वाला ।

॥ ढाळ दशवीं–तर्ज–गुरांजी थे मने गोडे न राख्यो ॥

पूर्व भव वात सुणावे स्वामी, सा निसुणे सुखसाता पामी ।
जम्बू द्वीप प्रसिद्ध प्रमाण, जोजन लाख तणो मण्डाण ॥
क्षेत्र सुक्षेत्र 'भरत' भणीजे, 'मन्दर' पुरवर नगर सुणीजे ।पूर्व.१।
वणिक वसे नामे 'प्रिय नंदी', नारी 'जया' नामे आनन्दी ।
जायो नन्दन नीको जाम, कला तणो सागर अभिराम । पूर्व. २ ।
एत दिवस उद्यान सिधायो, ऋषि दर्शन देखी सुख पायो ।
समकित पामी पाले नेम, साधु दान देवामूं प्रेम ॥ पूर्व० ॥ ३ ॥
तप संयम सुधा आराधी, ईशाने सुरपदवी लाधी ।
नगर 'मृगांक' मनोहर कहीये, 'श्री हरिचन्द्र' नरेश्वर लहीये ।पूर्व. ४।
'प्रीयंगु लक्ष्मी' नारी नीकी, प्यारी छे अति राजाजी की ॥
सो सुर चवि राणी उयरे आयो, 'सिंहचन्द्रजी' नाम कहायो ।पूर्व.५।
धर्म करी फिर देवां मांहे, 'सिंहचन्द्रजी' उपज्यो प्रा हे ॥
वैताढ्ये 'अरुणपुर' वारु, राय 'सुकण्ठ' अछेज्यूं उदारुं ॥ पूर्व० ६ ॥
'कनकोदरी' राणी उयरेनन्द, नामे 'सिंहवाहन' आनन्द ॥
राज्य करी चिरसोई नरेशर,' विमलनाथने' तीर्थे सुखकर ॥ पूर्व० ७ ॥
'लक्ष्मीधर' मुनि पासे पधार्यो, संजम साधी कारज सुधार्यो ॥
दुःकर तप करणी करी सोई,' लांतक' सुर लोके सुर होई ॥ पूर्व० ८ ॥
तुझ उदरे सो आवी वस्यो छे, पुण्यवन्त होवेरे तिरयो छे ॥
चरम शरीरी उत्तम प्राणी, होशेए नन्दन तुझ राणी ॥ पूर्व० ९ ॥
'कनकपुरी' नगरीनों नायक 'कनकरथ' राजा सुखदायक ॥
राणी 'कनकोदरीय' सयाणी, बीजी 'लक्ष्मीवती' ए वखाणी ।पूर्व. १०
'कनकोदरीए' नन्दन जायो, रूप कला करी अधिक सुहायो ॥
'लक्ष्मी वतीए' छिपायो बालो, माताजी दुःख हुवो असरालो।।पूर्व११
वल वलती देखी तव राणी, पाडोसणी बोले तव वाणी ॥
रे भूंडी ! तें ए स्यूं कीधो, माता थी बालक चोरी लीधो ।।पूर्व १२।।
हुई खिसाणी राणी आपे, माता पासे बालक थापे ॥

देव धर्म गुरु सुधा सेवी, स्वर्ग सुधर्मे होई देवी ॥
तिहां थकी तूं आवी सीधी, 'अंजना' सुन्दरी नाम प्रसिद्धि॥पूर्व१४॥
माता पुत्री अन्तर राखी, तेह तणां फल लेवे छे चाखी ॥
किधां कर्म न छूटे कोई, अन्तर नयणे लीजो जोई ॥ पूर्व॥ १५॥
तव तूं हूती भगनी एहनी, अनुमोदी थी करणी तेहनी ।
ते माटे दुःख पामे साथे, कीधू लाभे हाथो हाथे ॥ पूर्व० ॥१६॥
भोगवी पड्यो छे एसहु कर्म. आज थकी ऊपजसे शर्म ।
दिन २ साता वधती जासे, शील सती तूं अधिक दृढासे ।पूर्व.।१७।
आवसे ए कुंवरीनो मामो, देख्यां थी लेसो विश्रामो ।
तुमने निजघर लेई जासे, पति मेलां पण वेगो थासे । पूर्व. ।१८।

(अञ्जना चरित्र में पूर्व भव इस प्रकार है)

पूर्व भव शोक लिखमावती, अहनिश करती हो जिनतणी सेवतो।
'सिंहरथ' पुत्र छे तेहनो, तेह पाडोसन अपहर्यो लेवतो ॥
तेरं घडी लगेटलवली, जे नहीं वीहरे न्याय करी एमतो ।
जिहां लगे पुत्र देखू नहीं, तिहां लगे अन्नपाणी तणो नेमतो ।सती १४।
साधवी आयने प्रीछव्यो, ताहरा मन मांही वसीयो वैरागतो ।
आपीयो पुत्र पाये नमी, मांहे मांही ऊपन्यो धर्म नो रागतो ॥
संजम साधीने तप करयो, आलोयणा विन पड्यो एकतो फेरतो ।
कीधारे कर्म नवि छूटीये, तेरं घडीना थया वर्ष तेरतो ।सती ।१५।
तिहां थकी तुमे सुरथया, सुरथकी चवी करी राजकुंवांरतो ।
साथ पाडोसण दुःख सहे, कूख तुम्हारे छे पुण्यवन्त वालतो ॥
चर्म शरीरो ए जीवडो, आगल होवसी धर्म साधारतो ।
पवनजी वरण सं रण भीड़ी, कुशल घर आय करसी तुम सारतो ।स.१६

॥ ढाल पूर्वली ॥

एम सुणी सुख पायो गाढो, ऋपिनू वचन सदा छे टाढो ।
पर उपकारी ऋपि पांगरीयो, गगनगति गगने संचरीयो ।पूर्व० १९।

॥ तर्ज अञ्जनारी ॥

वनमांहे भमतीरे वालिका, एतले गुफामांही गूंज्यो सिंहतो ।

गासपाडी सर्व सावजां, जाणे आपाढांरो गाजीयो मेहतो ॥
अंजणा कहै अलगी रहो, वसन्तमाला कहै मरण दो मायतो ।
जाणसे पिऊ परदेशे गई, ए संदेह टालजो अम तणो जायतो ।स. १६।
'वसन्तमाला' विरखे चढी, अंजणा आसन दृढ करी ठायतो ।
नाम जपे जगनाथनो, जाणे के ध्यान चढीयो मुनिरायतो ॥
चऊं गति जीव जीव खमावती, चार शरणा चिन्तवे मनमांयतो ।
केसरी रुठारे स्यूं करे, माहरो धर्म नहीं लेवे रे कायतो ॥ सतीमें० १७॥
'वसन्तमाला' विरपे टलवले, धाओ २ अंजना छे निराधारतो ।
बूंब पाडीने बटकाकरे, धाओ २ वन तणा रक्षपाल तो ॥
धाओ २ सज्जनजे हुवे, धाओ २ शील तणा रखवालतो ।
कुँवरीने वाव वीदारसे, इम कही रुदन करे असरालतो ।सती.१८।

॥ ढाल मूलगी ॥

सिंह एक आयो तब चाली, थर थर धूजण लागी बाली ।
आयो तब खेचर 'मणिचूड', शरभ[1] रूप कीधूं प्रतिकूल ।।पूर्व २०।।
नाठो केसरी वार न लागी, सुन्दरीनी ए आरती भागी ।
मुनि सुव्रत जिन धर्म करन्ती, वर्ते छे शुभमति अनुसरती ।।पूर्व।।२१।।

(अञ्जना-चरित्र में सिंह को हटाना इस मुताबिक है)

तिणवन व्यन्तर जक्ष रहै, बाहर जोयण तणो रखवालतो ।
यक्षणी यक्षने इम कहै, आपणे शरणे आवी छे बे बालतो ।।
'शार्दूल' 'रूप' जक्षे कर्यो, नखकरी केसरीनी छेदी छे देहतो ।
शार्दूले सिंह पराभव्यो, कूटीने काढीयो वन तणे छेहतो ।सतीमें ।१९।
देवता साहाय शीले हुवो, आनन्द शील तणा गुण गायतो ।
नारी महूमें तू निर्मली, वेकर जोडी सुर लागो छे पायतो ॥
शीले हो शिव सुख सम्पजे, शीयल हो मिलसे तिहारो कंततो ।
शान्तिहो मामाजी आवसी, तिहां लग इनवन रहो निश्चन्ततो ।स.।२०।

॥ ढाल मूलगी ॥

दिन पूरे प्रसव्यो वर पुत्र, जाणूं बाध्यूं सबलो घर सूत्र ।

1. अष्टापद नामक जानवर ।

कल कला लक्षण गुण पूरो, होसे ए कुंवर अति शूरो ॥ पूर्व० ॥ २२ ॥
ूती कर्म करे उत्कर्षे, 'वसन्त तिलका' सखी सुहर्षे।
क सखी अछे समभावी, आपदमें दुःख लेवे वटाची ॥पूर्व० २३॥

॥ तर्ज–अञ्जनारी ॥

तनी आठम चांदनी, पुष्प नक्षत्र ने सोमज वारतो।
छलो पहर रयणी तणो, अंजना जायो छे हनु रे कुँवारतो ॥
णे के सूरज ऊगीयो, स्वर्ग थी सुर करे जय २ कारतो।
क्षस रोवावण ऊपनो, रामनो सेवक धर्म नो धारतो ॥लती २१॥
हीयर पुत्र पखालीयो, निझरणे जाय पखालीयो चीरतो।
पोढायोरे पाखती, सीतानो वारुहओ हनुमन्त वीरतो ॥
रखतां तृप्ती पामे नही, मांही मांही वेहू सखी इम करे वाततो।
न्म महोच्छव कहो कुणकरे,कटक चालीयोछे कुंवर तणो ताततो २२

॥ ढाल मूलगी ॥

ने आरोपीरे उच्छंगे१, सुन्दरी दुःख आणे बहु भंगे।
ुन करन्ती मूर्च्छा आवे, दुष्ट देव तूं इम सुख पावे ॥पूर्व २४॥
वा सुतनो तो अति महोच्छव, घरे पितातो करतोरे महोच्छव।
अब रांकडीए सूं थाय, ! इम चिन्तवतां हैयूं भराय ॥पूर्व २५॥

॥ तर्ज–अञ्जनारी ॥

नणी रात पूनम तणी, अंजना बैठी छे सुत कर धरन्ततो।
वल चपल सुहामणो, अतिरलीयावणो बहु गुणवन्ततो ॥
बोलावेरे मायड़ी, कुंवर तणी अछे लघुवरवेयतो।
ांने ताकेरे वाल्हो, जाणेके चांदलो झपटीने लेयतो ॥मती मे२३॥

॥ ढाल मूलगी ॥

तिसूर्य' नामे खग एक, आवीगयो मन आणी विवेक।
न तणूने पूछे कारण, आपणपे छे दुःखनूं वारण ॥ पूर्व ॥ २६ ॥
न्त तिलका पासे कहावे, आदि अन्तथी चरित्र सुणावे।
भाखे हूं मामो थारो, पुत्री ! आणी नकल निवारो ॥पूर्व २७॥

ोला में।

लगन लेईने वेला साधे, वेला साधतां मन वाधे ।
ग्रह ऊंचाछे एहना जेहवा, महोटा ने जोई जेरे तेहवा ॥पूर्व०२८॥
भाणेजी सुत सखी समेत, विमाने बैसाडी सुहेत ।
निज नगरीए चाल्यो जाय, हर्ष घणो हैडे न समाय ॥पूर्व २९॥
यान[१] तणा कंकण नो नाद, काने सुणी ऊपज्यो अहह्लाद ।
साहावाने उदह्लसियो जाम, माय[२] गोदथी छटकीयो ताम ॥पूर्व ३०॥
पड्यो पर्वत ऊपर आई, पर्वत चोट शक्यो न सहाई ।
बालक ने भारे चूराणो, वज्र पडे जिम तिम अधिकाणो ॥पूर्व ॥३१॥
अंजना सुन्दरी आणे दुःख, मुझ दुखियारी ने शूं सुख ।
जाण्यूं ए सुत नो मुख जोवन्त, दिनभर सुहर्ष होवन्त ॥ पूर्व ॥ ३२ ॥

३ ॥ ढाल क्षेपक तर्ज नवीन रसीया ॥

म्हारो लाल गिर्यो सुकुमार लार में भी गिरजाऊंगी ।
मैंभी गिरजावूंगी हाय मैंभी मरजाऊँगी ॥ टेर ॥
अब नहीं हरगिज जिन्दी रहूंगी, मैं दुःख पाऊँगी ॥
लकड बाल कर जालो जाल में, मैं जल जाऊंगी ॥ म्हारो ॥ १ ॥
जब तक लाल नहीं देखूंगी, अति दुःख पाऊंगी ॥
हा? कर्मो ने यह क्या कीना, किम शान्ति मनाऊंगी ॥ म्हारो ॥ २ ।

(ढाल मूलगी)

पाछलथी मामो अति धसीयो, बालक ने देखी मन हसियो ।
आंचन आई कोई दीसे, पूण्यवन्तए वीश्वावीशे ॥ पूर्व० ३३ ॥
माताने आणी सुत आप्यो, माताए हैडे सुत थाप्यो ।
हरखन कोई पुत्र सरीखो, पुत्रहीथी नाम निरीखो ॥ पूर्व० ३४ ॥
'हनुपुर' पुरवर उच्छव ठाणे, भाणेजी ने मन्दिर आणे ।
सयल कुटुम्ब तणूं मनमानी, कुलदेवी जिम तिम सन्मानी॥पूर्व.३५॥
मामे नाम दीधूं हनुमान[४], चन्द्रकला जिम वधतूं वान ।

---

१ विमान । २ माताना खोलामाथी । ३ सती अञ्जना से । ४ जन्म्यापछी तुरत ते बालक 'हनुपुर' मां आव्यो, तेथी तेना मामाए तेनूं नाम हनुमान पाड्यूं ।

ल[1] चूर वे अपर विधान, प्रगट मल्यू 'श्री शैल' प्रधान ।पूर्व.३६।
जहंस जेम क्रीड़ा करतो, वाधे अंगज आनन्द धरतो ॥
शमीढाल कही समभावे, 'केशराज' ने सांच सुहावे ॥पूर्व०३७॥

मुनि श्री रूपचंद्रजी महाराज कृत.

॥ ढाल क्षेपक तर्ज–छोटोसो बलमों मेरे आंगणा मे गिल्ली खेले ॥

छोटोसो हुनुमन्त मेरे आंगणा में रिमझिम खेले ॥
इत उत दौडी जाय कुंवर माताजी झेले ॥ टेर ॥
लक्षण अंगे विराजता, उत्तम अलबेले ।
चाले चाल मराल यों ठमके पगमेले ॥ छोटोसो ॥ १ ॥
घमके घूघरीया पगमें फूठरा कानोंमें झेले ।
रुदन करे तव बाल मात गोदी में लेले ॥छोटोसो ॥ २ ॥
मुक्ता झटित मस्तक टोपली मोतियन को गेरे ।
माता लुकजावे अन्दर महिलके जब हनुमंत हेरे ॥ छोटोसो ॥३॥
पहीरणने फावे अम्बर फूटरे लपियन के घेरे ।
हँस २ रमतो बाल ख्याल कर चक्री ने फेरे ॥छोटोसो॥४॥

॥ दोहा (सोरठा रागे)

सुत मुख निरखवा हरख अति. फरि अरती अह्लोल[2] ।
साल सरीखा साल ही. जो शिर चढ्या कुबोल ॥ १ ॥
सो दिन कब ही आवसे. घर आवे भरतार ।
लोकां मांही ऊजली. कद करसे करतार ॥ २ ॥

॥ तर्ज–अञ्जनारी ॥

ाजना' 'हनुमंत' इहांरहै, पवनजी, कटकले पहुंता सनूरतो ॥
ाकर 'रावण' से मिल्या, लेई बीड़ोने चालियो शूरतो ॥
धीया 'खर' 'दुखर' छोडावजो. तिहां मनावजो हमतणी आणनो ॥
टकलेई कर संचर्‍यो, मेघपुरी. कीयो जाय मेलाणनो ॥मती२४॥

---

[1] शैल (पर्वत) ने चूरवाथी "श्री शैल" एवं प्रगट अने प्रधान (मोटू)
र विधान (बीजूं नाम) मल्यू । २ अत्यन्त । अतिशय—

'वरण' राजा तिहां आवीयो, सामुहो वर्षे छे बाणांनों मेहतो ॥
'पवनजी' पांव न चातरे, मांहांमाही शूरा जूंजेछे तेहतो ॥
वरसदिवस झगडो रयो, मांहांमांही वेहूं जणा कीधोछे मेलतो ॥
बांधीया 'खर' दुखर छोडावीया, आंण रावण तणी लीधीछे झेलतो २५

— दोहा —

'पवनंजय' परगट पणे, वरुण जीती वड राय ।
'खर' 'दुषण' छोडावीया, रावण ने सुखथाय ॥ ३ ॥
'रावण' 'लंका' आवीयो, 'पवनंजय' पगे लागी ।
घर आवणने ऊमह्यो, प्रभुनी अनुमति मांगी ॥ ४ ॥
मतपिता पग प्रणमीया, नारी निरखण नेह ।
अकुलाणो अणदेखवे, मनमें अति अन्देह[१] ॥ ५ ॥

॥ ढाल ग्यारहवीं—तर्जः—रायखेंगारना गीतनी ॥

पूछ्यूं हो पूछ्यूं कोई नारी, भाखे हो भाखे भूप प्रते भलोए ।
सुन्दरी हो सुन्दरी केरीवात, वातज हो वातज सहु तुमे सांभलोए ।१।
गर्भ हो गर्भ तणे अहिनाण[२], देखी हो देखी खीजी सासुखरीए ।
जाणी हो जाणी वात विरोध, काढी हो काढी सा घर बाहीरे ए ॥२॥
आरक्ष हो आरक्ष पुरषों साथ, पीहर हो पीयरीए सा मोकलीए ।
आगे हो आगे जाणे देव, वीतकहो वीतक चितसे चलीए ॥३॥

दोहा—एह वात श्रवणेसुणी, कोप्यो पवन कुंवार ।
हा हा मायत में कीयो, कीजे कवण विचार ॥ १ ॥
माता धड़हड़ धूजती, आई पुत्र की लार ।
गदगद हो वाणी वदे, सुन जाया सुकुमार ॥ २ ॥

॥ ढाल चेपक तर्ज—हां मगीजी ने पेड़ा भावे ॥

हां[३] लाल ! सुन अर्ज हमारी, काया कम्पे कहतां सारी ।
क्या कहूं हा ? हकनाक सती में विपदा डारी रे ॥ टेर ॥

१ ए फारसी नो शब्द छे तेनो मूल शब्द अन्देशह-अन्देशो छे, तेनो अर्थ सन्देह (शक) थाय छे । २ एधाण निशानी । ३ सती अंजना से ।

गर्भ देख मैंने ललकारी, ऊँची टेर सखी को मारी।
कहा सतीने खूब मुझे हा कर लाचारी रे॥ लाल॥ १॥
तो भी मुझे दया नहीं आई, कैसी कुमति ऊँधी छाई।
करके काला भेष देश के वार निकाली रे॥ लाल॥ २॥
पाछल बुद्धि नार कहावे, उणमें अकल कठासूं आवे।
हां वेगम की जात रहै नहीं गम हित कारी रे॥ लाल॥ ३॥

दोहा—पवन श्रवण कर शीघ्र ही, प्रजल्यो कोप मझार।
पर माता को देख के, बोला वचन विचार॥ १॥

१ ढाल चेपक तर्ज—नवीन रसिया।

माता! जबर जुलम कर डार्यों वनमें भेजी दो सतियों॥ टेर॥
अगर तुझे था निर्णय करना देनीथी पत्तियों॥
जैसी हुई थी वैसी मैया लिखदेता वतियों॥ माता॥ १॥
मैया तूं है समझदार क्यों छाई कुमतियों॥
सतियों की हा दया न लाई, गजब करी गतियों॥ माता॥ २॥

दोहा—यों कह चाले पवनजी, आई माता दौड़॥
हाथ पकर कर लाल का, बोली वेकर जोड़॥ १॥
भूल हमारी पुत्र भूलकर, करिये भोजन चाल।
पीहर होसी बीनणी, लेसां सार सम्भाल॥ २॥

२ ढाल चेपक तर्ज—पाणीड़ो भरवादे।

मैया मत करिये लाचार, झटपट जावणदो॥ टेर॥
भोजन माता किस विध भावे, जीव मेरा तो अति घवरावे॥
आवे दुःख अपार॥ झटपट॥ १॥
नारी विना नहीं नीर पीऊंगा, प्यारी विना अब नहीं जीऊंगा॥
मरसूं खाय कटार॥ झटपट॥ २॥
माता का झट हाथ छुडाकर, अपने मित्रों के महिलां आकर॥
बोला यों ललकार॥ झटपट॥ ३॥

---

१ सती अञ्जना से। २ सखी अञ्जना से।

१ ढाल क्षेपक तर्ज-लङ्गड़ी चाल ।

जोगी धन तन रस्मी रमाऊं, प्यारी ढूंढ कर लाऊंगा ।
जो न मिले नार यार में, जहर खाय मरजाऊंगा ॥ टेर ॥
सती विनां यह दुनियों सारी, मुझको झूंठी लखाती है ॥
बिना सती के गती हमारी, दिन २ विगड़ी जाती है ॥
प्यारी बिना क्या महल अटारी, खाना सोना पीना क्या ॥
बिना प्रिया के सांच कहूं मैं, जगत् बीच में जीना क्या ॥
मरी हुई या जीती है, यह खास खबर ले आऊंगा ॥जोगी॥ १ ॥
दोहा-मित्र कहै सुन पवन कुंवरजी. यों मत करो खयाल ।
चलो शीघ्र कीजे खबर, जाकर निज सुसराल ॥ १ ॥

तर्ज-अञ्जनारी ।

पवनजी कहै मित्र ! माहरा, राय राणी ने किम करूं परणामतो ।
माता ए अंजना परहरी, सासरा बिच म्हारी निर्गमी मामतो ॥
बरस दिवस विग्रह हुवा, राजा हो वरुण मामो थयो जुञ्जतो ।
बांध्या 'खर दुषण' छोड़ाविया, तेह तणी किण आगे करस्यूंरे गुञ्जतो२६
मित्र कहै मती निर्मली, अवगुण आपरा काढसी जोयतो ॥
गुण तोरे परतणा शिखहै, एहवी नारी नवि दीठेरे कोयतो ॥
पहिला माही नहीं जावसां, अलगा थका हो कहावो जुहारतो ॥
पवनजी आणेरे आवीया. अंजना पीहर पड़ी रे पुकारतो ।सती२७।
'महेन्द्र' कहै हूं पापीयो. कर्म कसाईनो कीधो तो काज तो ॥
हांजीया लोक म्हारे घणा, डावो नर कोई नहीं दीसे छे आजतो॥
सीखनी वात कोई ना कही, तो मन माहरी उतरती रीसतो ॥
नरक नीयांणो में बांधीयो, इण कर्मे केम छूटूं जगदीशतो।सती२८।
पवनजी आणेरे आवीया, सांभल मासु उर पड़ी झालतो ॥
हीयो हणे दोउ हाथ सूं, उदर आधान तूं किहां गई बालतो ॥
ऊभी थकी गिर आफले, जाणे छे कर भरे लागे छे बाणतो ॥

---

१ सती अञ्जना से ।

पुत्रीनो दुःख साले घणो, अजहु न छूटा किम रह्या प्राणतो॥२९
सेना मेली कर संचर्या, सुसरा जमाई ने सामो जायतो ॥
अति दुःख रायने सम्भवे, मन मांही पुत्रीनो अति घणो दाहतो
घरमें न राखी रे अध घड़ी, कालो मुख थई मिलीयो नरेशतो।
पवनजी यहां रे पधारीया, महेन्द्र कहै में किसो उत्तर देसतो॥३०
नगरी मांही पधरावीया, मर्दनीया मर्दे छे तेल चम्पेलतो ॥
निर्मल नीर अंघोलीया, जीमण बैठा छे बेजणा छेलतो ॥
भोजन विविध पर पुरसीया, सोवन थाल ने विछावीयो पाटतो ।
पवनजी हाथ खेंची रह्या, चउदिश अंजनानी जोवे छे वाटतो॥३१
अंजना जाई रे बालिका, पुत्र जायांनी वधामणी थायतो ॥
वसन्तमाला रे दीसे नहीं, वा पण कीहां रही रे छिपायतो ॥
सासने घर पड्यो पीटणो, मांहो मांही वेऊँ मिलो इम करे वाततो।
अंजना ने सासुरे दुहवी, पीयर आवीने करी अपघातती ।सती॥३२
साला तणी सुत नांनडो, लेई उत्संगे वेसाडी छे बालतो ॥
कह थारी फूंही रे शूं करे, तिवारे रुदन करो कहै ततकालतो ॥
मात पिता ए बंधवा, पापीये कीधो छे कर्म चण्डालतो ॥
आंगणे न राखी रे अधघडी, कलङ्क देई करी काढी छे वाग्नो॥३३

१ ढाल क्षेपक तर्ज—आखिर नार पराई है ।

इक दिन फूंफी आई थी, पिता नहीं बतलाई थी ॥ टेर ॥
माता से उणकरी पुकार, फिरी फेर सो बन्धव द्वार ॥
सबने वार कढाई थी ॥ इक दिन० ॥ १ ॥
फूंफी का लख काला वेष, राजा राणी करीयो द्वेष ॥
प्यासीने निकलाई थी ॥ एक दिन० ॥ २ ॥
कोई मति इणने बतलावो, भोजन और पाणी मत पावो ॥
एसी आण फिराई थी ॥ इक दिन० ॥ ३ ॥

१ सती अंजना से ।

तर्ज—अञ्जनारी ।

चालनो वयण श्रवणे सुणी, माथा पर फेरवीने फेंकीयों थालतो ॥
महैन्द्र आवी पाए नम्यो, मंत्री कहै तुमे कर्म चण्डालतो ॥
ऊठो स्वामी क्यों बैठी रह्या, जीवती मूईनी कीजीये सारतो ॥
राजाना लोक वरजे घणा, तो पिण आया छे नगरने बारतो॥२४॥
वनमांही कुंवरजी टलवले, किहां गई दान दया तणी वेलतो ॥
किहां गई धर्मनी धूंसरी, किहां गई शील सन्तोपनी वेलतो ॥
आवोनी नार आगल रहो, ताहरा मुखतणूं जोवूं छूं स्वरूपतो ॥
कटक थी कुशले हूं आवीयो, इम कही रुदन करे वहु भूपतो ।२५।

॥ ढाल मूलगी ॥

वज्र हो वज्र समो ए बोल, निसुणीहो निसुणी सासरड़े आव्यो सहीए ॥ सुसरोहो सुसरो बोलेएम, आवीहो आवी पण राखी नहीं ए ॥ ४ ॥ जङ्गल हो जङ्गल मांहे जाई, गिरिहो गिरि गिरि तरु तरु जोईया ए ॥ शुद्धि न हो शुद्धि न पामी कोय, आपण हो आपण उदासी होईयाए ॥ ५ ॥ मित्रजहो 'प्रहसित' नामे उदार, साथे हो साथे वदे वसुधा घणीए ॥ जाई हो जाई तूंहिज आप, बापज हो बाप अने माता भणीए ॥ ६ ॥ इमजहो इम कही तूं आव. लाधीहो लाधी नहीं छे सुन्दरीए ॥ घट[१]हो ए घटकेरो होम, करवोहो वांछे प्रभु निश्चय करीए ॥ ७ ॥ सुणतांहो सुणतां ए विपरीत, माताहो माता मूर्छाणी घणीए ॥ शीतलहो शीतल करी उपचार, मूर्छाहो मेटी माताजी तणीए ॥ ८ ॥ मित्रजहो मित्र संभाने ताम, माताहो माता ओलम्भो दीए एटलोए ॥ वालो हो वालो थारो विशेप, कांईहो कांई ने वीरो मेल्यो एकलोए ॥९॥ साचोहो साचो दैव विचार, आपणहो आप कीयां फल भोगवूंए ॥ विणठी हो विणठी वात अपार, सुतनेहो सुतने क्यूं करी जोगवूंए ॥ १० ॥ रोवेहो रोवे सा असराल, नयणांहो नयण प्रनाला जिम

[१] शरीर ।

हैए ॥ ए जगहो ए जग महोटो न्याय, जेहेवो हो जेछे तेहवो
ल लहैए ॥ ११ ॥ राजाहो राजा बहुले साथ, चाल्योहो चाल्यो
त्र गवेषणेए ॥ खेचर हो खेचर लेई हजार, धायाहो धाया सुत
ोधण भणीए ॥ १२ ॥ लाकडहो लाकड खडकी जाम, जम्या
ो जम्या वेछे जेटलेए ॥ पूर्वहो पूर्व पुण्य प्रमाण, तातजीहो तातजी
ायो तेटलेए ॥ १३ ॥

॥ तर्ज-अंजनारी ॥

महेन्द्र' राय तिहां आवीयो, नारी सहित आयो राय 'प्रहल्लादतो'॥
वनजीने आय बांहे धर्या, कांई रे कायर तूं मूकीछे लाजतो ॥
र्म थी बलीयोरे को नहीं, पेट चील्रती आई अंजनानी मायतो॥
राजाहो चरणसूं रणभडथा, अति दुःख करतां ऊखड़े घायतो ॥२६॥

॥ ढाल-मूलगी ॥

साहिहो साहि राख्यो सोई, लाकडहो लाकड़ अलगा नांखीयाए॥
जीवतहो जीवतने कल्याण, हेतजहो हेत घणो कही दाखीयाए
॥ १४ ॥ अवलाहो अवलानो ए काम, सवला हो सवलातो एम
केम करेए ॥ थारीहो थारी तो एमाय, तुझविणहो तुझविण तो
निश्चय मरेए ॥ १५ ॥ खेचरहो सोधन गया था जेह, हनुपुर हो
हनुपुर वरे आवीयाए ॥ सुन्दरीहो सुन्दरीने पगेलागी, वीतकहो
वीतक सहु सुणावीयाए ॥ १६ ॥ विन्हल हो विन्हल अधिकोहोय,
घटमे हो घटमे थो प्रभु आगमेंए ॥ लिखियोहो लिखियो तुझ
भरतार, करताहो करतारे तुझ भागमेंए ॥ १७ ॥ एटलेहो एटले
आयो तात, राख्यो हो राख्यो मरवाथी तुझनायकूए ॥ चिन्ते हो
चिन्ते मनही मझार, पापिणीहो पापिणी पति दुःखदायकूए ॥१८॥
'मामाहो मामा निसुणी एह, ऊंही वने हो ऊंहीं वने वेगो जाईयेए॥
पति हो पति ने देई तोष, कांई हो कांई एवा ओरण धाईयेए ॥
१९ ॥ रचियूं हो रचियू ताम विमान, जाणे हो जाणे ऊग्यो दिन-
पतीए ॥ मामोहो मामोजीने आप, सुतसूं हो सुतसूं चाल्यो मा

सतीए ॥२०॥ सोधत हो सोधत वन उद्यान, भूपज हो भूपज वने आया चलीए॥ मित्रेहो मित्रे दीठो ताम विमान, भूपतिहो भूपति सूं भाखे भलीए ॥ २१ ॥ आपो हो आपो मुझने ईश, आछी हो आछी आज वधामणीए॥ नयणे हो नयणे निरखी नारी, नन्दन हो नन्दन नंद शिरोमणीए ॥ २२ ॥ अमृत हो अमृत वूठ्यो मेह, चिन्तवण हो चिन्तवण चिन्ते चाहसूंए ॥ प्रणमें हो प्रणमें सुसरा पाय, नयणां हो नयणां तेह उमाहसूंए ॥ २३ ॥ नन्दन हो नन्दन लीधो गोद, रूड़ो हो रूड़ोने रलियामणोए ॥ रह्यो हो रह्यो कण्ठ लगाय, सुन्दर हो सुन्दर ने सुहामणोए ॥ २४ ॥ वारु हो वारु वार वखाण, बहुअर हो बहुअरने मामा तणोए ॥ प्रभुजी हो प्रभु जी तुम परसाद, अमघर हो अमघर रंगवधामणोए ॥ २५ ॥ सुन्दरीहो सुन्दरी ना मा वाप, भाई हो भाई भोजाई सहुए ॥ माताहो केतुमति पण आप, साजन हो साजन आवी मिल्या बहु ए ॥ २६ ॥ हनुपुर हो हनुपर पुरवरे आय, ओच्छव हो ओच्छव अधिको मांडीयोए ॥ भोजन हो भोजन वर तम्बोल, दानेहो दाने दारिद्र खांडीयोए ॥ २७ ॥ दिन दस हो दिन दस तांई ताम, साजनहो साजन सहु ए गहगहेए ॥ पहूंता हो पहूंता निज २ गेह, प्रभुजी हो बहु सुतसूं रे तिहां रहैए ॥ २८ ॥

(अंजना चरित्र में पवनंजय का अंजना से मिलना इस प्रकार है)

आगल पवनजी चालीया, पूठे थकी आयो सहु साथतो ॥
आवतां सहियर ओलख्यो, एहछे स्वामीनी आंपणो नाथतो ॥
अंजना आई पावे पडी, खोले वेसावीयो हनुरे कुंवारतो ॥
घडीयक पुत्र सामो जुवे, घडीयक जोवेछे अंजना नारतो ॥
पवनजी आनंद पामी रह्या, एहवो सुख नहीं दीठोरे संसारतो॥३७॥
वसन्तमालाजी पाय नमी, ओटले घाली लीधी हीया मझारतो ॥
कहो बाई तुम दुःख किमसया, किमका सही म्हारी मायनी मारतो॥
किम करी वनफल वीणीया, किमका पर्वन रह्या निराधारतो ॥

अंजना पुत्र किम जन्मीयो. किमकर नीगम्यो दुःखभर्यो कालतो ।स३८
जिवारे स्वामी थे कटकेगया, सासरा पीयर म्हांने दीनोंछे छेहतो।
तिवारे ऊठीने अमे वनगया, वनफल खावरी राखीछे देहतो ॥
वनमांही मुनिवर भेटीया, देवता कीधीछे अम्ह तणी सारतो ।
धर्म करतां सुत जन्मीयो, अंजनागुण तणो नहीं लहूं पारतो ।सती ३९।
धिन मुख दीठोछे तुम्हतणो, वेऊं सखी बोलेछे मधुरीतो वाणतो।
किम करी सैन्यमें संचर्या, किम कर सह्या राजा वरुणना वाणतो ।
'खर' 'दूषण' केम छोडावीया, पवनजी चोतक दीयो सुणाय तो ।
जुज्ज करीने ऊवर्या, अति सुख ऊपन्यो अंग न मायतो ।सती ४०।
अंजना सामोरे संचरी, सासु सुसरा तणे लागी छे पायतो ।
पीयरीया आय सहु मिल्या, हस्त वदन रह्या सहुरे खमायतो ॥
अंजना कहै सहु सांभलो, मनमांही माहरी मत करो लाजतो ।
कर्म म्हारारे हूं वनगई, हर्ष वदन थई सहु मिलो आजतो ।सती ४१
हनुरे पाटण थकी संचर्या, अंजनाने आपीछे अति घणी आथतो।
मामाजी आया पहोंचावना, रतनपुरो लग आयो सहु साथतो ॥
सामीहो परजा हो परवरी, लेई पधरावीया उत्तम ठायतो ।
पवनजी पाट वैसारने. राय राणी वेहूं तत्र वन जायतो ।सती ४२।

—: ढाल मूलगी :—

कुंवरहो कुंवर आचार्यजीने पास, पढियोहो पढियो पाठ अनेकनेए।
वहुतेरहो वहुतेरही विज्ञान. जाणेहो जाणे विनय विवेकनेए ॥२९॥
विद्याहो विद्या साधन कीध, हुवोहो हुवो अधिक मकाजजीए ।
ढालजहो ढालज इग्यारवींएह, भाखेहो भाखे मुनि केशराजजीए ।३०।

दोहा (रामग्री रागे)

वरुण प्रत्ये रावण चली. मेले कटक अपार ।
'प्रति सूरज' ने 'पवननृप' बोलाव्या तिणवार ॥१॥
दोई भूपति चालतां. नीषेधी हनुमान ।
चाल्यो आडम्बर घणे. रीझाया राजान ॥२॥
सुग्रीवादिक खेचरा, वरुण साथे संग्राम ।

रावण ने वरुणात्मज, वाज्या ताम दुदाम ॥३॥

—: तर्ज—अंजनारी :—

रावण सेना देखी करी, पुत्र सो वरुण ना आवीया सोयतो।
आगना ऊडेरे अङ्गारीया, लोह ना बाण करी आफले दोयतो॥
सामाहो सुभटज आवीया, खेंचोया धनुष्यने सांधीया बाणतो।
रोस चढ्या रण आफले, जोम सहित बोले इम वाणतो ॥सती४३॥
माताहो वैरण तुमतणी, तातने अलखावणो नांनडो बालतो।
जो मुख आवेरे वरणने, जिण दिन खूटसी ताहरो कालतो॥
वलतोहो हनुमन्त इम कहे, बंधव सोमीली आवीया साथतो।
बोल साचो करी मानसूं, जद वावरसो रणमांही हाथतो ॥सती४४॥
वांदरी विद्या साधीकरी, वन्दर रूप कीयो तिणवारतो।
हाक करी दल हाकवे, बारे जोजन लगे वाजे धूंकारतो॥
हाके करी सेनाहो थरहरी, वृक्ष उखेडीने नांखेछ घायतो।
पूछ फेरी करी एकठा, पुत्रसो बांधी नांख्या रणमांयतो ।सती ४५॥

दोहा—सेना दल लेईकरी, चढियो वरुण नरेश॥
हनुमन्त तेपिण सज्जथयो, सेना सबल विशेष ॥१॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज खड़का—

दोनोंई कटक सटक भेला हुआ, जोयण एक नो बीच राखे।
राग सिंधु गाईयो पोरस चढाईयो, कायर नर तिहां खाल ताखे ॥१॥
हनुमन्त वीर अति धीर रण में घणो ॥ टेर॥
निज २ मोरचे सुभट रग रोपीया, तीर सणणाट कर मेह वरसे॥
भलल कर वार कर खलल लोही वहे, शिर विना शूर नर लडे धरसे॥
तिमिर बाणे करी तिमिर फेलावीयो, लावीयो हनुमन्त रोस भारी॥
सूर्य बाणे करी तिमिर नासीगयो, तुरत उद्योत थयो जगत् जहारी॥
वरुण नृप आय हनुमन्त साथे भड्यो, लडत है विविध आयुध धारी॥
हनुमन्त योध उद्धन्त बलवन्त अति, वरुणना धनुष्यने तोडी डारी॥
अगन बाण मेलीयो जलधार ठेलीयो, फेलीयो कपिदल जोर करने॥
हाक दल हाकवे मंक नहीं राखवे, आखवे अब किम जाय टरने॥

तर्ज—अंजनारी

रथ थकी राजा हो ऊतरयो, आविने हनुमन्त दीधी छै बाथ तो।
चोटी ना बाल ते कर ग्रही, मूठीना प्रहार रु वाजे छै हाथ तो।
चपल चपेटारे वावरे, हनुमन्त ऊपरे बैठो छै रायतो।
'रावण' हनुमन्त ऊपर कीयो, वरुणने बांधी नोख्यो रथ मांयतो।

(दोहा)

नन्दन वरुण तणेघणो, खेडयो रावण जाम ।
हनुमन्ते ते बांधीयो, विद्याने बले ताम ॥ ४ ॥
'हनुमन्त' ऊपर वरुणजी, आवे होई विकराल ।
'रावण' रोसकरी घणो, जीत्यो ते ततकाल ॥ ५ ॥
जीत्यो वरुण विशेष थी, नृपने करे जुहार ।
थाप्यो थानक तेहने, अब नहीं खुनस लगार ॥ ६ ॥
'वरुण' घेर छे कन्यका, सत्यवती तसु नाम ।
परणावी हनुमन्तने, जाणी वर अभिराम ॥ ७ ॥
पुत्री शूर्पनखा तणी, अनंग कुसुमा नाम ।
हनुमन्तने विवाह मही, रावण जाणी सकाम ॥ ८ ॥
'पद्मसुरागा' पुत्रिका, वानर पतिने जोई ।
'नलराजा' हरिमालिनी, परणावी ए दोई ॥ ९ ॥
अनेरे विद्याधरे, पुत्री एक हजार ।
परणाणी हनुमन्तने, धर्मे सदा जयकार ॥ १० ॥
रावणना आदर लही, परणे नारी अमन्द ।
हनुमन्त आव्यो निज घरे, मातपिता आनन्द ॥ ११ ॥

तर्ज—अंजनारी

पाछली पहर रयणी तणो, धर्म चिन्ता करे अंजना देवतो।
चारित्र लेवारे चित थयो, पवनजीरे पाव लागी ततखेवतो॥
जन्म मरण दुःख दोहीला, जोग विजोग संसार कलेसतो।
पवन कहे हनुमन्त नांनडो, संयम लेवजो मूढने वेसतो ॥स.४७
विलम्ब तो स्वामीजी जे करे, नेहने काल को हुवे विसवास तो।

विषयना सुख पूरा हुवा, संयम लेवातणी मन आसतो ॥
इम सुणी राय वैरागीयो, हनुमन्त ने कहै मत कर तूं अन्दोहतो ॥
माताना चरण झालीरया. मायतों ऊपरे है घणो मोहतो ॥स.४८॥
पुत्र समझावी संयम लीयो, अंजना राय खमावती सोयतो ।
छेड़ो छोडी करी संचर्या, हम तुम देवो लेवो नहीं कोयतो ॥
पवनजी मुनिव्रत आदर्या, तपकर पामसी शिवपुर ठामतो ।
अंजना गुरुणी पासे गई, वसन्त माला साथे थई तामतो ॥स. ४९॥
लोचकरी संयम लीयो कर्म तणी बेऊं तोडे छे कोडतो ।
आभरण लेई सुत ऊदासीयो. सुग्रीव सुता समझावे कर जोड़तो ॥
अंजना कीरीया करे घणी, मास २ तप पारणो धारतो ।
मांस ने लोही सूकी गयो, लीलडी चाम दीसे नसाजालतो। म. ।५०।
अनशन करीने अराधीया, वेहूं सती पोतीछे स्वर्ग मझारतो ।
चवनेहो मोक्ष सिधावसी, इम कहै शीयल ग्रंथे अधिकारतो ॥
एह कथारे इहांरही, आगल सांभलो सीता अधिकारतो ।
सत्यवतीरे सांची सती, जगत माताने रामनी नारतो ॥स. ॥५१॥

— दोहा —

अब मिथीला नगरी भली, हरिवंशी राजान ॥
'वासवकेतु' सुहामणो, 'विपुला' नारी सुजान ॥१२॥
तेज प्रतापे आगलो, जनक नामे जग जोय ॥
प्रजाने पालण भणी, जनक सारीखो होय ॥१३॥

॥ ढाल बारहवीं तर्ज—चौपाई ॥

पुरी 'अयोध्या' प्रगटे नाम, राज्य करे 'आदेश्वर' स्वाम ॥
'सुनन्दा' 'सुमङ्गला' वली, नारी निरूपम गुण आगली ॥ १ ॥
'सुमङ्गला' ना जाया नन्द, नवाणुं आनन्द ना कन्द ॥
'सुनन्दा' ए जायो एक, 'बाहुबल' तसु अविचल टेक ॥ २ ॥
सो पुत्रों में मोटो सही, पाटोधर 'भरतेसर' सही ॥
सवा कोड़ी नन्दन जेहने, 'सूर्यजशा' मुखियो तेहने ॥ ३ ॥
'सूर्यजशा' थी 'सूरजवंश', पृथिवी मांहे अधिक प्रशंस ।

पुरुष असंख्य हुवा तेटले. मुनि सुव्रत' वारे जेटले ॥ ४ ॥
'विजय' राय मोटो राजान, 'हिमचूला' तसु नारी प्रधान ॥
जाया नन्दन नीका[1] दोय' 'वज्रबाहु' 'पुरन्दर' जोय ॥ ५ ॥
नगर 'अहिपुर[2]' छे अभिराम, 'हिमवाहन[3]' राजानूं नाम ॥
'चूडामणी' नामे घर नार, 'पुत्री' 'मनोरमा' है सुविचार ॥ ६ ॥
'वज्रबाहु सूं' कीधो विवाह, मनमां आणी अति उत्साह ॥
सुन्दरी लेई चाल्यो जाम, 'उदय सुन्दर' सालो ताम ॥ ७ ॥
पोंचावणने हुवो साथ, प्रीती भणो लीधो नर नाथ ॥
वाटे 'गुण सागर' ऋषिराय, दीठा दौडी लाग्यो पाय ॥ ८ ॥
वारोवार प्रशंसा करे, भव-दुःखथी आतम उद्धरे ॥
दर्शन दीठो ऋषिराजनो, धन्य धन्य हो वासर[4] आजनो ॥ ९ ॥
हांसी मिसे सालो कहे एम, घणूं घणूं प्रशंसा केम ?
जाणूं लेसो संयम भार, कुँवर कहे अम एह विचार ॥ १० ॥
सालो भाखे ढील है कांई, दिवस गयो फरी नावे श्राही[5] ॥
संयम साथे विमासण कीसी, म्हारे मन पिण एहीज वसी ॥११॥
कुंवर कहे ए सघली मही, वात विसेखे लीधी वही ॥
तूं मत चूके बोली वाच, सालो भाखे जाणों साच ॥ १२ ॥
संयम लेवा थयो हाँसीयार. ऋषिने कहे तारो संसार ॥
सालो कहे कां साचो करो, विवाह तणा गीत मनमां धरो॥१३॥
कंकण नवि छुट्यो ताहरो, एह मनोरथ झूठो खरो ॥
तुजपियु पाख[6] एसुन्दरी, मरीजासे दुःख भारे भरी ॥ १४ ॥
कुंवर कहे कुलवन्ती एह. नाह[7] सरिखो राखे नेह ॥
तोते कां न संयम आदरे. नारी नाह करणी अनुसरे ॥ १५ ॥
तूं तारी भगनी समजाव. तूं पण संयम मारगे आव ॥

१ ए हिन्दुस्थानी शब्द छे, सरस, उत्तम । २ नागपुर (जैन रामायण) ३ इभवाहन (जैन रामायणे) । ४ दिन । ५ एनो अर्थ "पाछू फरीने" एवो थाय छे, पण आ ठेकाणे मात्र अनुप्रास मेलववा अर्थेज वापर्यो जणाय छे (प्रायः प्राये) । ६ विना । ७ पति ।

दुःख पूर्वक सांसारिक सुख, पाछू ही देखावे दुःख ॥ १६ ॥
नारी नाह ने सालो साथ, व्रत लीधां 'गुण सागर' हाथ ॥
अवरही कुंवर पणवीश, चरण ग्रहै तब वीक्षा वीश ॥ १७ ॥
हांसी थकी ऊपजीयो धर्म, धर्म थकी लेसे शिव शर्म ॥
सोही सगो जगमांही भलो, धर्म करावे उतावलो ॥ १८ ॥
एह सुणी थी 'विजय' नरेश, वैरागे मन आणी विशेष ॥
'पुरन्दर' ने देई राज, राजाए सार्या निज काज ॥ १९ ॥
'पुरन्दर' सुत सोहामणो, जायो 'पृथिवी' राणी तणो ॥
'कीर्तिधर' ने पदवी दीध, राजाए संयम व्रत लीध ॥ २० ॥
'कीर्तिधर' नृप उदासीयो, संयम साथे मन वासीयो ॥
नकरे राज्य तणी सम्भाल, मंत्रीश्वर भाखे सुविशाल ॥ २१ ॥
जबघर ऊपजे नन्दन आय, तब तुम संयम लेवो राय ॥
भूप घणाए पाल्यू राज, तुम पगथी जावे छे आज ॥ २२ ॥
न्हानाही लोकोए सोच, तुम मन केम न करो आलोच ?॥
जेहने पाछल नहीं सन्तान, तेहना घरतो कह्या मसाण ॥ २३ ॥
एम सुणन्तां ढीलो पड्यो, विषय सुख ऊपर मन अड्यो ॥
'सहदेवी' नामे कामीनी, भाग्य वतीछे भली भामिनी ॥ २४ ॥
'सुकोशल' सुत ऊपन्यो जिसे, गुप्तपणेसो राख्यो तिसे ॥
जाण्यूं नृप थासे संयमी, राजऋद्धि रमणीने वमी ॥ २५ ॥
जाण्यो राजा भेद जेवार, सुतने सोंप्यो पृथिवी भार ॥
समतारस माँगे चित्तधरी, गयेवरी तब संजम सीरी ॥ २६ ॥
एह बारमीं ढाल अनूप, संयम व्रत पाले भलो भूप ॥
'देव राज' ऋषिराज बखाण, करतां थाए जन्म प्रमाण ॥ २७ ॥

—दोहा सिन्धु रागे—

भण्यो गुण्यो मति आगलो, करतो उग्र विहार ।
दिन केताने आंतरे, फरतो सो अणगार ॥ १ ॥
पुरि अयोध्या आवीयो, लेवा काजे आहार ।
मध्य दहाड़े तावडे, हिंडे घर घर बार ॥ २ ॥

अथामें मारवाड़ी मंत्री शांतमूर्ति श्रीचौथमलजी म. सा. विनिर्मिता कीर्तिध

चौपाई (प्रक्षेप) ढाल पहीली (प्रक्षेप) तर्ज-गव मति कररे—

असि आ उ सा युत ॐकारं, अलख अज अखण्ड अविकारं, अजपा जापहिये धारं, कहूंकथा 'कीर्तिधर' *मुनिकी, राणी है 'सहदेवी' उनकी ॥ १ ॥ जुलम मति कररे मेरी जान जुलम० जुलम से बहुत खराबी है, जुलम से शिव की ना भी है, पावे दुःख बात आबी है ॥ जुलम ॥ टेर ॥ 'अयोध्या' अवनी पति आछो, कीर्तिधर जाण्यो जग काचो, प्रवर्ज्या ले आयो पाछो, भूखा मुनि एक मासहूका, लेणकूं आये वहां टूका ॥ जुलम ॥ २ ॥

ढाल तेरहवीं तर्ज—देश सोरठ द्वारापुरी—

अई अई कर्म विटम्बना, राणी राजा लारोरे,
आप करे अविनय घणो, ए म्होटो अविचारोरे ॥ अई ॥ १ ॥
गोखे बेठी गोरड़ी, नगर निहालण हेतो रे,
फरतो ऋषि अवलोकीयो 'कडुआंणो[1] तसनेतोरे ॥ अई ॥ २ ॥
आप गयो मुजने तजी, लेई जासे ए पूतो रे,
वैरी विविधप्रकारनो, आयो करण कसूतो रे ॥ अई ॥ ३ ॥
पतिरे गयांथी पुत्रसूं, बांधी म्हूंछू नेहो रे,
पुत्र गयां करस्यूं किसूं, मुजमन एह अन्देहो रे ॥ अई ॥ ४ ॥
आंत तपाणी आकरी, न रही शुद्धि लगारो रे,
पुरजन म्हालो पतिथकी ए जगनों व्यवहारो रे ॥ अई ॥ ५ ॥
अन्य सुलिंगी आकरा, आवी अडिया नामो रे ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज-गर्व मति कररे

खिनावे राणी हलकारा, मोटेका करिये मुंह कारा, आये जहां

नोट—प्रक्षेप ढाल की अवशेष गाथाएं ॥ गमाने बैठी महाराणी, रोते मुनि देखे अन्न पानी, पुत्र के प्रेमे घबरानी, आगे मुझ त्याविन्द कं लेगा, पति ओपुत्र मूंडेगा ॥ जुलम ॥ ३ ॥ बात ए पुरजन सुन पाई, राणी के क्या दिल मे आई, ऐसो करे दूरडो पिटवाई, राणी कू नन नन धुत्कारे, मुनिने क्यं काड्या बारे ॥ जुलम ॥ ८ ॥

* कीर्ति ध्वज पाठान्तरे ॥ १ क्रोधथी नेत्र राता थया ॥

चालो अनगारा, तेरे पर माजीसा डोडा, भागजा यहां से अब मोडा ॥ जुलम ॥ ४ ॥ फेर इस ग्रामे नहीं आना, आये तो हर-लेंगे प्राना, बोला में चवडे नहीं छांना ॥ हुकम नहीं रात रेणेका, हुकम तुज मार देने का ॥ जुलम ॥ ५ ॥ गई कर छोडा हो अब के, मुनिकहै परवाह नहीं हमके, मुनि तब निकरे यूं कहके ॥ करे मुनि बात याद अगली, स्वारथ की दुनियां है सगली ॥ जुलम ॥६॥ राग रु द्वेष से न्यारे, मुनि वो तिरे और तारे, सदा मुनि क्षम शम दम धारे ॥ मुनि चल वन मांही आये, तरुतल ध्यान ही ठाये ॥ जुलम ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

काढीयो नगरी बाहिरे, जोवा मिलीयो गामो रे ॥ अई ॥ ६ ॥
फिटकारो जण जण मुखे, राणी साथे रोसो रे ।
जोर न चाले कोई नो, पण आणे अफसोसो रे ॥ अई ॥ ७ ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज—गर्व मति कररे

धामाता सुनलो ए वातां, रानी क्यूं खोई है हाथां, संताये मुनिवर कू जातां, एसे कुन जग में हत्यारा, मारदे मुनिकूं निकारा, जुलम मति कररे ॥ ९ ॥

दोहा—　　रूठी मन भूठी तदा, कूटी काढ्या संत ।
　　　　ऊठी ए झूंठी नहीं, छूटी चाल्या संत ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

धाव ज्यूं आवी रोवती, राजाजी ने पासेरे, कारण पूछयूं रायजी भाखे धाव उदासेरे ॥ अई ॥ ८ ॥ नात तुम्हारो देवजी, तपकरी दुर्बल कायेरे, भिक्षा लेवा कारणे, आयो थो उच्छायेरे ॥ अई ॥९॥

ढाल दूजी प्रक्षेप तर्ज—म्हारे हाथ में नवकर वाली

धामाता तब अरजी करवा, दौड गई दरबाररे, हाथ जोड नीचो कर लटको, इनविध करी पुकाररे ॥ १ ॥ महारानी निज नोकर मेली, जुल्म करायो आजरे, आहार लेनकूं आये मुनिवर " कीरत धज " महाराजरे ॥ टेर ॥

हलकारा कूं मेल रानीसा, मुनि कू दिया निकाररे, एक मास क मुनिवर भूखा, कीधो कर्म चण्डाररे ॥ महारानी ॥ २ ॥ धका दे मुनिकूं कडवाया, क्या लेता मुनिरायरे ॥ रात रेवन की आन दिरा एसी थांरी मायरे ॥ महारानी ॥ ३ ॥ जरा आपकू जाल सावि की, खबर पडी न लिगाररे, काम करयो खोटो महारानी, संताय अनगाररे ॥ महारानी ॥ ४ ॥ हाक फूटी है सब नगरी में, धुर कारा दे लोकरे, इण लखणां स्ह शिव किम मिलसी, दोरो है दिवलोकरे ॥ महारानी ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

राणी सेवा साचवी, तेतो कहियन जायरे, पूर्वना परिचय थकी, ए मुज हैयू भरायरे ॥ अ. १० एम सुणन्ता वेगसूं, घाबरीयो भूपालोरे ॥

ढाल प्रक्षेप तर्ज गर्व मति कररे

जुल्म यह राजाजी सुणीया, सोच कर मस्तकने धुनीया, कहो कुन एसे हत पुनीया, उन्हीं को जूत मार लावो, कारागृह[1] मांही पधरावो ॥ जुल्म मति कररे ॥ १० ॥ रानीसा विजनस मुनि टाल्यो, हाय ओ मुनिवर क्यू शाल्यो, अरे ! उन मेरो उर बाल्यो लोक सब देवे है धुरियों, लगी मुज कारजे छुरियों ॥ जुल्म मति कररे ॥ ११ ॥ मुनि कूं कूटासी जालिम, उन्हीं की कर लूगी मालिम, भेजे तब पोलिस के आलिम, कारागृह जुल्मी को पकडी, डारे तब घाल गोडा लकड़ी ॥ जुल्म ॥ १२ ॥

ढाल मूलगी

वन्दन करवा तातने, आय गयो तत्कालोरे ॥ अई. ॥ ११ ॥

ढाल प्रक्षेप तीजी तर्ज—नन्द पेण मति चुक्यो

घोड़े चढ राजा चाल्यो, वो रहे न किण को पाल्यो, नृप छडी असवारी हाल्यो, हो लाल १ ॥ जुल्म करयो रानी खोटो, सन्तायो मुनिवर म्होटो, इन वाते घर में टोटो हो लाल ॥ टेर ॥

---

१ केद ।

रु तरे मुनिवर बैठा, हैं ज्ञान ध्यान में सैंठा, राजाजी ऊतरया ठा हो लाल, जु० ॥ ३ ॥ मुनिवर कूं करी सिलामी, मेरे शहर पधारो स्वामी, मैं अर्ज करूं शिरनामी हो लाल ॥ जु० ॥ ४ ॥ मेरी अर्ज मंजूरी कीजे, दुनियों ने दर्शण दीजे, थांरी दाय पडे ज्यूं कीजे हो लाल ॥ जुलम ॥ ५ ॥ तब बोल्या अन्तरजामी, मैं आस्यां अवसर पामी, म्हारे द्वेप नहीं शिव कामी हो लाल ॥ जुल्म० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

पगे लागी ऊभो रह्यो, मांग्यो संयम भारोरे ।
जग मे कोई केहनूं नहीं, स्वार्थीयोए संसारोरे ॥ अई. १२ ॥

ढाल प्रक्षेपक मूलगी—

मधुर ध्वनी मुनिवरजी बोल्या, जीव यह चतुर्गति डोल्या, स्वारथ का सगपन सहु भोल्या, मेरा अब कथन मान लेनी, अथिर यह जगत छोड देनी ॥ जुल्म० ॥ १३ ॥ देख रुज आंखे जल भरती मेरही मरणे वा मरती, अजीजां ईश्वर ने करती, बाकी वा सहदेवी रानी, लेने नहीं दिया आहार पानी ॥ जुल्म ॥ १४ ॥ जगत में जोरू का झगरा, कनक हेतु होते हैं रगरा, स्वपन का ख्याल जग मगरा, राज का भार छोर दीना, भार शिर संयम का लीना ॥ जुलम ॥ १५ ॥

ढाल चौथी प्रक्षेपक तर्ज—नवली चन्दनी हेक सजनी चिन ऋतु वर्षे मेह—

राजाजी मुनिपे गया हेक सजनी, लोक मुखे या वात ॥ रानी सुन बिलखी थई हेक सजनी. आमन दूमन घातक ॥१॥ निगुना नेहको होक, साजन अद्भुत कौतुक एह ॥ टेर ॥ दुःख पूरित दिन आगला हेक सजनो, बिन सुत काढूं केम ॥ सुन कहनो मान्यो नहीं होक राजा, काम कर्यो बिन फेम ॥ निगुना ॥ २ ॥ हरगिजने छोडे नहीं हेक साजन, कांसूं बनसी सूत ॥ कोन कुमोतसूं मारसी हेक सजनी, जद आसी पाछो पूतक ॥ निगुना ॥ ३ ॥

॥ ढाल-मूलगी ॥

करजोड़ीने वीनवे, देवीं चित्रजमालारे,
सुत विन स्थिती किम चालसे, भाखो राय रसालारे ॥ अई ॥१३॥
गर्भ अछे ऊदर ताहरे, में तसुदीधो राजोरे,
अन्तराय कोई मति करो, सारण दीजो काजो रे ॥ अई ॥ १४ ॥
तात पासे थी समाचर्यो, चारित्र चोखो चायोरे,
बात सुणन्त मुई सही, तव सहदेवी मायो रे ॥ अई ॥ १५ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

रानीजी महिलों से परके, ध्यान मन आरत ही धरके, सिंहनी वनमें हुई मरके, सिंहनी इधर उधर म्हाले, पशु और मिनख मार खाले ॥ जुलम ॥ १६ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

कांईक आर्तध्यान में, कांईक क्रोध परिणामोरे,
वनमें हुई वाघणी, गिरी गुहिर तस ठामोरे ॥ अई ॥ १६ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

मुनि कहे जुल्मी ऊधरियो, मंत्री तब हूंकारो भरियो, माच सहु पाछो संचरियो, बात यह सुणी राजवर्गी, जुल्म कर रानी सा मरगी ॥ जुल्म ॥ १७ ॥ रानी के प्रेत कारज कीने, जुल्मी को रुचिर छोड दीने, जगत में मंत्री जस लीने, पांगूरया मुनिवर महियल में, आवे नहीं कर्महुके छल में ॥ जुलम ॥ १८ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

'कीर्तिधर' ने 'सुकोशलो', बाप पुत्र ए दोई रे,
चोखूं चारित्र पालतां, विचरे मुनिवर सोई रे ॥ अई ॥ १७ ॥
गिरी गुफा में अनुसरी, करता तप उपवासोरे,
समता रूपे विचरता, रया ऋषि चौमासोरे ॥ अई ॥ १८ ॥

॥ ढाल पांचवीं क्षेपक तर्ज-चंदा थारी चांदनी मी रात रे ॥

मुनिवर विचरत महियल में मतिवन्तरे, कांई आयारे गढ़ निनोडना बाग में ॥ उतरया मुनिवर निर्वद्य स्थानक तन्तरे, कांई लेलीरके

आज्ञा मालागारनी ॥१॥ इतरे महिनो श्रावण को आवन्तरे, कांई जलऋतुरेक देखी जग सुख पावीयो, दो कोश की अलगी छे चित्तोड़रे, कांई विचमैंरेक डर वाघन को सुनावियो ॥ २ ॥

॥ ढाल मूलगी ॥

कार्तिक पूनम कारणे, नगरभणी आवन्तारे,
एटले आवी वाघणी, ऋषि सामे धावन्तारे ॥ अई ॥ १९ ॥

॥ ढाल क्षेपक पांचवीं ॥

वहिरन खातिर जावे मुनि चित्तोड़रे, कांई विचमें रेक मिलगी इक दिन वाघनी. होले होले चाले चेलो लाररे. कांई आतीरेक अलगी देखी सिंघनी ॥ ४ ॥ नीची निजरां घाली गुरुजी जायरे, कांई उनकीरेक खबरां उनको कोयनी ॥ धीमें धीमें हेलो चेलो पाड़रे, कांई उभारेक राज्या निज गुरु जोयनी ॥ ५ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

देखी इत वाघन कूं आती, क्रोधसे आंखेंही राती, हातल दे धरणी धूजाती, गुरु तब चेलाकूं बोले. नाठजा पर्वत के ओले।जु।१९

॥ ढाल मूलगी ॥

तातकहे सुत सांभलो, एह उपद्रव आयो रे,
होवादो मुज आगले, सुत बोलन्त सुहायो रे ॥ अई ॥ २० ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

काम कांई क्या इत डरने का, कामए मुझकूं करणे का, मुझे नहीं सोच मरने का, लारे नहीं खुणे बेसण वाली, लहूं शिव आतम उजवाली ॥ जुलम ॥ २० ॥

ढाल छट्ठी क्षेपक तर्ज–ख्यालरी (गुरुजी थांरी वाणी प्यारीजी)

वाघन से मैं नहीं डरूंसरे, रविवंशी रजपूत, मुजे अगारी जानदोस मैं, देवूं मुगतरासूत ॥१॥ चेलाजी नहीं आगे घरवालीजी, आगे थे मतिजावो देखो आगे ऊभी पण[1]मुखवालीजी ॥ टेर ॥ कोमलतन वालो लघुसरे, तूं मुज जीवन प्रान, सुत चेलो वाल्हो घणोस तूं,

[1] सिंहनी ।

किम कहूं आगीवान ॥ २ ॥ चेलाजी हूं जावूं मति वरजोजी, दाय पड़े ज्यूं कीजो लारे थेंतोथोंरे रति मति डरजोजी ॥ टेर ॥ हरगिज ते नहीं होंनरे सरे ए नो गरिब निवाज, आप अन्दाता किम भरोसरे, म्हारे बैठां आज ॥ ३ ॥ महाराजा मैं लेसूं शिव-पुरीजी, जाने दो अबी मने आगे मेरी करो अरज मंजूरीजी ॥टेर॥

ढाल क्षेपक छठी

उपधी भेली कीरत मुनिके तीररे, कांई आपजरे पधारया सिंहनी सामने ॥ संलेखन कर किया संथारो साररे, कांई मनमें रेक जाप जपे जिननामने ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

पाछा पग न पाठवूं, क्षत्रीनो ए धर्मोरे, सही उपद्रव ए आजए, साधसूं शिव शर्मोरे ॥ अ० २१ ॥ उहांही ऊभो रह्यो, आराधन विधि साध्योरे, ममता मूकी देहनी, आतम गुण आराध्योरे ।अ.२२।

ढाल छठी क्षेपक

आती वाघन छाती में दी मचकायरे, कांई हाथलरीक मारे मुनि इन पापनी, सरररररर रुद्र खाल चल जायरे, कांई न कह्योरे क अररर मुखथी आपनी ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

विद्युत्[1]पाततणीपरे, वाघणीनो विकरालोरे, आवी पड़ी मुत ऊपरे धरणी पड्यो ऋषि वालोरे ॥ अ० २३ ॥ विदारे नख अंकुशे, वाल्हा तनुनी[2] चामोरे, तरसी[3] ए वलो अति तरस्यो, पीवे लोही तामोरे ॥ अ० २४ ॥ तोडी तोडी तन तणूं, खाए तव मा मांसोरे, विल्हरी नोख्योघणूं, कोधो अधिक प्रयासोरे. ॥ अ० २५ ॥ अमृत ने कवले[4] करी. पोखीथी जे देहोरे. वैर विनाई वाघणी. तोडी

क्षेपक मूलगी ढाल को अवशेष गाथा ॥ पूज्य श्री "जयमल्ल" गच्छजीपे, साम्प्रत मुनि सोहे अवनीपे, मेरे गुरु "नथमलजी" दीपे. "चौथमल" "मोजत" मन साचे, रागयुत रामचरित्र वांचे ॥ जुलम मति ररो॥२४॥

१ वीजली नूं पडवूं । २ शरीरनी । ३ तरस्युं एटले वेर लेवाने टांपी रहवुं अने तरस एटले आतुरता । ४ कोलिये ।

नोंखी तेहोरे ॥ अ० २६ ॥ चड़ते परिणामे करी, पाम्यो केवल[१] नाणोरे, कुशलपणेरे सुकोशले, साध्योपद, निरवाणोरे[२] ॥अ. २७॥

—ढाल क्षेपक मूलगी—

ध्यानतो शुकलही ध्याया. मुनि तो अमरापुर पाया, लारे हिव पड़ी रही काया ॥ खावे तन वाघन तसु अटकी, मुनि तब वाघन ने हटकी ॥ जुलम ॥ २१ ॥ पुत्र क्यूं मारयो हित्यारी, गति क्या होसी हिव थारी, दशन द्युति सुन्दर नीहारी. सुजाती स्मरनहीं धारयो, अररर में नन्दन क्यों मारयो ॥ जुलम ॥ २२ ॥ आतम की निन्दा ही करती, आंखों से आंसू ही भरती, अबे वा परभव से डरती । वाघन तब मुनिवर पे आई, 'सुकोशल' मार शर्माई ॥ जुलम ॥ २३ ॥ सिंहनी संथारो ठावे, कल्प तब आठ में जावे, 'कीर्ति ध्वज' मुनिवर शिव पावे, नमो नमो ऐसे मुनिवर कूं, 'सुकोशल' 'कीरत' नरवर कूं ॥ जुलम ॥ २४ ॥

ढाल मूलगी

'कीर्तिधर' करणी बले, कर्म तणो क्षय कीधोरे ॥
मोक्षे पहूंच्यो केवली, नरभवनो फल लीधो रे ॥ अई० ॥ २८ ॥
तेरसमीए ढालमें, जेरस पोख्यो तेणे रे ।
'केशराज' रस एहवो, पोपाय कहो केणेरे ॥ अई० ॥ २९ ॥

दोहा (गोडी रागे)

'चित्रसुमाला' राणीए, जायो सुन्दर नन्द ।
'हिरण्यगर्भ' नामेभलो, शत्रु स्कन्द निकंद ॥ १ ॥
' हिरण्य गर्भ घरे गौरडी, 'मृगावती' अभिराम ॥
'नघूक'[३] नामे सुत जाइयो, दुःखितजन विश्राम ॥ २ ॥

ढाल चवदवीं तर्ज–माई धन्य दिवस (सुखकारण भवियण)

'हिरण्यगर्भ'नृप माथे धवलो केश,देखी आलोचे[४]ए जमदूत विशेष॥१
तत्क्षणने राजा ' नघूक ' कुंवरने राज, आपी आपणपे सारे आतम

१ केवल ज्ञान । २ मोक्ष । ३ नहूप (जैन रामायण) । ४ आलोचयू एटले विचार्यू ।

काज ॥ २ ॥ राजा घरे राणी 'सिंहिका' 'अभिधान', सा सबविधी जाणे शूरपणे सुविधान ॥ ३ ॥ उत्तर पंथना नृप, जीतण चाल्यो राय, दक्षिण पन्थना नृप अड्या ' अयोध्या ' आय ॥ ४ ॥

(लेखक) ढाल क्षेपक तर्ज–हिडे हालोरे ।

राणी शूरीरे २ आ शीलवती गुण हिम्मत पूरीरे ॥ टेर ॥
नृप राणी सिंहिका जाण्यो, फिर कोई दुस्मन आयारे ।
अब क्या करणी बात नाथतो, कटक सिधायारे ॥ राणी ॥ १ ॥
वचन वदे राणी दास्योंको, मर्दी वेस सब करलोरे ॥
बक्तर टोप पहर लो हाथ बाण, बंदूकों भरलोरे ॥ राणी ॥ २ ॥

मुनिश्री रूपचन्द्रजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज–हां सगीजीने पेड़ा भावे

हां अबे सुभटां ! झट चालो, ज्यूं त्यूं कर दुस्मन दल टालो,
भालो झालो हाथ अबे पाछो मत भालोरे ॥ अबे ॥ १ ॥
राणी निज परिकर कर भेली, जोध झूंझार बनी अलबेली,
ताजा तूरी मंगाय जिणीपर, झीण मण्डालोरे ॥ अबे ॥ २ ॥
त्रिय सैन्या लड़वाने ताती, रीस लाय करआंखें राती ॥
देख वीरता कायर नर कहै आघा हालोरे ॥ अबे ॥ ३ ॥
हुबो युद्ध परस्पर भारी, हार्यो नृपने जीती नारी ॥
शार्दूल शिष्य मुनि रूप कहै जेतारण है वरसालोरे ॥ अबे ॥ ४ ॥

—ढाल मूलगी—

राणीए जीत्या करी सबल संग्राम,
सिंहणी के आगे गज क्यूं न तजे ठाम ॥ ५ ॥
नृप जीती आयो निसुणी एहउदन्त,
गाढो दुःख पायो कामिनी ऊपर कन्त ॥ ६ ॥
एहछे व्यभिचारणी, नहींतर एहवूं काम,
नकरे कोई योजी, नारी धरावी नाम ॥ ७ ॥
रहियो मन संची, न वले चाल्यो केम,
रुद्ध जग करतां, थाए भृंह एम ॥ ८ ॥
राजाने डीले ऊपजीयो ज्वरदाह,

औपध नविमाने, आणे अस्ती[१] अगाह[२] ॥ ९ ॥
सा दोप उतारण राजा आगे राणी,
सहुने सांभलतां, प्रगटे अवसर जाणी ॥ १० ॥
मैं निज पति टाली, अवरन वंछयो कोई,
तो शासनदेवी, सानिद्ध करजो सोई ॥ ११ ॥
एम कहती राणी फरस्यूं राजा अङ्ग,
हरिवाहन[३] आयां भाजी जाय भुजंग ॥ १२ ॥
तेम वेदना नाठी दीठी देह निरोग,
राणीसूं राच्यो पंचेन्द्री सुख भोग ॥ १३ ॥
राणी उदरे ऊपनो, पुत्र भलो 'सौदास',
पट थापी आपे संजमथूं सुखवास ॥ १४ ॥
'सौदास' नरेश्वर अष्टाइक उच्छाह,
मंडावे गावे श्रीजिन गुण अगाह ॥ १५ ॥
तव जीवदयानो, पडहो राय वजावे,
मन्त्रीश्वर बोले एतो मुजने सुहावे ॥ १६ ॥
तव पूर्वज पुरुषे मांस न किणही खायो,
तुम ही तिम चालो जो चाहो जश पायो ॥ १७ ॥
दाक्षिण्यथी मानी, पण मन मे न सुहाणी,
जे कुवशन पडियों, तेनो पापी प्राणी ॥ १८ ॥
तव सूद[४] संघाते, गुप्तपणे कहे राय,
क्षण एकहि में तो मांस पखेन रहाय ॥ १९ ॥
तूं हेतु म्हारो, तो मुज ने दीए मांस,
सोध्यो नविपावे दीठो करिय प्रयाश ॥ २० ॥
एक वालक मूवो, नृपने आण खवावे,
माणमने मांसे स्वाद घणेरो आवे ॥ २१ ॥
गीधो[५] तव राजा, नित्ये एक मरावे,

१ दुग्ध । २ अगाध वर्णूं । ३ गरुड़ । ४ रसोइयो । ५ गीधो (गृद्ध) मांसनो लोलुपी राजा नित्य एक वालक मरावतो ।

वर्ज्यो नविमाने लोक असाता पावे ॥ २२ ॥

मुनि श्रीरूपचंदजी म० कृत. ढाल चोपक तर्ज–सावड़ो धीमोसो पड़जा

सचिव ! म्हांरी अर्जी सुन लेना, रायकरे अन्याय अनूठो आखिर सुख है ना ॥ टेर ॥

नगर निवासी भये उदासी भरकर जल नैना, भलां हां भर० ।
मत कोई मारो जीव राज्य में, यह था नृप कहना ॥ सचिव १ ॥

मदिरा मांसतणा जे रसिया,* लुचा लागा कान, राजारे लुचा ।
बालक मांस खावे नित्य राजा, तोड़ी सघली आन ॥सचिव २॥

वल्लभ बालक मारण सारू, किण विध खूंप्यो जाय, राजाने किण ।
आगे अनरथ हुवो न एड़ो, करे सो खत्ता खाय ॥ सचिव ३ ॥

थे समजादो भूप भणी अब,तजदे खोटी चाल ।
'रूपमुनि' कहै रैयत बदल्यां, कांई करे भूपाल ॥ सचिव ४ ॥

मंत्रीश्वर म्होटो, राज्य तणो रखवालो,
कही कही समझावे, राजा नविदीवे टालो ॥ २३ ॥

तब बांधी काठो, काढी दीधो राजा,
थापक उत्थापक, लोक सदा ही ताजा ॥ २४ ॥

' सौदास ' तणांसुत, न्यायवन्त नरेश,
'सिंहरथ' स्थिर थाप्यो, सुखदाई सुविशेष ॥ २५ ॥

भूपति अति भमतो. दक्षिण दिश चलि आवे.
देखी इक मुनिवर, गाढी साता पावे ॥ २६ ॥

पूछे तब धर्मज, मुनिवर भाखे वारु.
परहरीये मांसज, अरु परिहरीये दारू ॥ २७ ॥

ओ बीजी नरके. ओत्रीजे पहूंचावे,
एम सुणनां मन में, राजा डर अति पावे ॥ २८ ॥

पच्चक्खाण करे नृप, मांस अने मधुकेरो.
तब श्रावक हुवो जाणे धर्म भलेरो ॥ २९ ॥

---

*लुचा: ‡ रोल विगाड़े राजने. मोल विगाड़े माल ॥ धोरे २ सरदारजी. पुगल विगाड़े चाल ॥ १ ॥

'दर्भ[१] स्थलपुर' जाणीयेरे, 'सुकोशल' जिहां रायोरे ।
राणी नामे 'अमृतप्रभारे, राजाने सुख दायोरे ॥ राजा ॥ २ ॥
पुत्रीवर 'अपराजीताजी[२]', ईन्द्राणो अवतारोरे ।
व्याहै[३] 'दशरथ' रायनेरे. ओछव करिया अपारोरे ॥ ३ ॥
'सुशीला' त्रियनो पतीरे, मित्रसुभू[४]' भूपालोरे ।
'सुमित्रा' पुत्री परणावेरे, 'दशरथ' ने सुविशालोरे ॥ राजा ४ ॥
सुप्रभा अति देहनीरे, 'सुप्रभा' तस नामोरे ।
राजा रंगे परणावेरे, 'दशरथ' ने अभिरामोरे ॥ राजा ॥ ५ ॥
पंचेन्द्रिय सुख भोगवेरे, पूर्व पुण्य प्रसादोरे ।
पूरब पुरुष उजालीयारे, विस्तर्गया जश वादोरे ॥ राजा ॥ ६ ॥
एक दिवस लङ्का धणीरे, बैठा परषदा माँहेरे ।
निमित्तियाने पूछीयूरे निज आयुबल प्राहेरे ॥ राजा ॥ ७ ॥

॥ ढाल चेपक तर्ज–गर्व मति कररे ॥

एक दिन 'रावण महाराजा', सोले सहश्र सामन्त ही ताजा, बाजता निशदिन ही बाजा, सभा की देख खूब त्यारी, बण्यो दिल मांही अहंकारी ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २ ॥ 'इन्द्रजीत' मेघवाहन' छाजे, पुत्र पौत्रादी अति गाजे, ऋद्धि से सुरपति पिण लाजे, पूण्यथी फते कीया काजा, बाजे नित सार्ध लक्ष बाजा ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ३ ॥ 'विभीपण' कुम्भकर्ण भाई. मन्दोदरी राणी सुखदाई, चौपन सहस्र शास्त्र मे गाई. ज्यगहे पूर्व पूण्याई, आंण है तीन खण्ड मांही ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ४ ॥

स्वामीजी श्रीरामचन्दजी महाराज कृत.

ढाल चेपक तर्ज–तुम चलो सखी कुछ जेज न करीये ।

सहश्र विद्यात्रीखण्ड को भुक्ता, "रावण" मन मे गरभायो ।
सुर नर पाय परे सब मेरे, कुणमुजसे सांमे थायो ॥ स० १ ॥
सूरदेव तो तपे रसोई. चन्द्र आप दीपक थायो ।
वेमाता मुझ दले कोद्रवा. यम राजा पाणी लायो ॥ स० २ ॥

---

२ कौशल्या, ३ परणावे, ४ स्वबंधु तिलक ।

कोई मोक्ष पधारया, स्वर्ग पधारया कोई,
ए वंश वडेरो, चौथ वदीतो जोई ॥ ४३ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, अयोध्यानूं राज,
करतो अतिवर्ते, सारे प्रजाना काज ॥ ४४ ॥
तेहना दो नन्दन, 'अनन्तरथ' अधिकाय,
'दशरथ' दिलदरियो, शोभा कहियन जाय ॥ ४५ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, खेचरसूं मित्राई,
साथे व्रत लेस्यां, आपण एह सगाई ॥ ४६ ॥
सो 'सहस्रकिरण'[१] नृप, 'रावण' साथे लड़ाई,
लेईने हार्यो तब व्रत लीधूं धाई ॥ ४७ ॥
'अन्यरण्य' नरेशर, 'अनन्तरथ' सुतसाथ,
संजमव्रत लीधूं म्होटा मुनिवर हाथ ॥ ४८ ॥
'विद्याधर' साथे, पाली बोली वाच,
सो मुक्ती सिधाव्या, जगमें म्होटो साच ॥ ४९ ॥
'चउदशमी' भाखी, ढाल रसाल अपार,
'केशराज' वखाणे, साधु सदा सुखकार ॥ ५० ॥

दोहा (परजिया रागे)

मास एकनो थापीयो, राजा 'दशरथ' राज ॥
चन्द्रकला जिम दिन दिने, वाधे दलबल साज ॥ १ ॥
शस्त्र शास्त्र आदे करी, कला सकलनो जाण ।
विनय विवेक विचार में, पण्डित पणूं प्रमाण ॥ २ ॥
यौवननी वय पामीयो, शूरवीर झुंझार ।
दाता भोक्ता अरु गुणी, वसुधा जश विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पनरहवीं तर्ज-पांहूरी पोट लीया आ कोणरे ॥

राजा 'दशरथ' दीपतोरे, दिन दिन तेज प्रतापेरे ।
अंगधणी में एहनोरे, दीसे आपो आपे रे ॥ राजा ॥ १ ॥

१ सहस्रांशु इति पाठान्तरे।

'महापुर' चलि आयो, शुभ कर्म नो प्रेर्यो,
सुभटे परधाने, आवीने नृपवेर्यो ॥ ३० ॥
तब दिव्यस्थ पंचे, 'महानगर' नो राजा,
सहु लोकां मान्यो, वाध्या अधिक दिवाजा ॥ ३१ ॥
तब पुरी 'अयोध्या' दूत मोकलीयो एक,
सुत सेवा[१] आवो. के तुम सहावो टेक ॥ ३२ ॥
सुतवात न माने, राजा दलबल साजे,
सुत पण सामहियो, सन्मुख आय विराजे ॥ ३३ ॥
तब तात पूत दोय, लड़िया विविध प्रकारे,
हार्यो तब नन्दन, जीत्यो तात ते वारे ॥ ३४ ॥
खिलखाणो देखी, राजा आंत तपाणी,
खोळे बेसाड़्यो, बालक आपणो जाणी ॥ ३५ ॥
दीधू दोनों राज्य, राजा संयम धारी,
विचरे महि मण्डल, पट्कायों हितकारी ॥ ३६ ॥
'सिंहरथ' राजानो, पुत्र श्री 'ब्रह्मरथ',
'चतुर्मुख' राजा, 'हेमरथ' 'सत्यरथ' ॥ ३७ ॥
'उदय' 'पृथु' राजा, 'वारीरथ' 'शरीरथ',
'आदित्यरथ' राजा, 'मान्धाता' समरथ ॥ ३८ ॥
नृप 'वीरसेन' जी, 'प्रत्युमन्यु' मानीतो,
नृप 'पद्मबंधुजी', 'रविमन्यु' जाणीतो ॥ ३९ ॥
सबही मनभावे, 'वसन्त' तिलक नरेश,
'कुबेरदत्तजी' नृप 'कुन्थू' 'शरभ' विशेस ॥ ४० ॥
'द्विरद' नृप नीको, 'सिंहदर्शन' दिलपाक,
नृप 'हरिण्यकशिपुजी' जेहनी जगमे धाक ॥ ४१ ॥
'पुंजस्थल' 'श्रीदो' कुकुत्स्थ' ने 'रघुराय',
ए सूरजवंशी राजा सहु सुखदाय ॥ ४२ ॥

१ वाबामां आवो ।

कोई मोक्ष पधारया, स्वर्ग पधारया कोई,
ए वंश वडेरो, वीथ्य वदीतो जोई ॥ ४३ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, अयोध्यानूं राज,
करतो अतिवर्ते, सारे प्रजाना काज ॥ ४४ ॥
तेहना दो नन्दन, 'अनन्तरथ' अधिकाय,
'दशरथ' दिलदरियो, शोभा कहियन जाय ॥ ४५ ॥
'अन्यरण्य' नरेसर, खेचरसुं मित्राई,
साथे व्रत लेस्यां, आपण एह सगाई ॥ ४६ ॥
सो 'सहस्रकिरण'[१] नृप, 'रावण' साथे लड़ाई,
लेईने हार्यों तब व्रत लीधूं धाई ॥ ४७ ॥
'अन्यरण्य' नरेशर, 'अनन्तरथ' सुतसाथ,
संजमव्रत लीधूं म्होटा मुनिवर हाथ ॥ ४८ ॥
'विद्याधर' साथे, पाली बोली वाच,
सो मुक्ती सिधाव्या, जगमें म्होटो साच ॥ ४९ ॥
'चउदशमी' भाखी, ढाल रसाल अपार,
'केशराज' वखाणे, साधु सदा सुखकार ॥ ५० ॥

दोहा (परजिया रागे)

मास एकनो थापीयो, राजा 'दशरथ' राज ॥
चन्द्रकला जिम दिन दिने, वाधे दलबल साज ॥ १ ॥
शस्त्र शास्त्र आदे करी, कला सकलनो जाण ।
विनय विवेक विचार में, पण्डित पणं प्रमाण ॥ २ ॥
यौवननी वय पामीयो, शूरवीर झुंझार ।
दाता भोक्ता अरु गुणी, वसुधा जश विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पनरहवीं तर्ज-पांहूरो पोट लीया आ कोणरे ॥

राजा 'दशरथ' दीपतोरे. दिन दिन तेज सवानेरे ।
अंगधणी में एहनोरे, दीसे आपो आपे रे ॥ राजा ॥ १ ॥

---

१ सहस्रांशु इति पाठान्तरे।

'दर्भ[1] स्थलपुर' जाणीयेरे, 'सुकोशल' तिहां रायोरे।
राणी नामे 'अमृतप्रभारे, राजाने सुख दायोरे॥ राजा॥ २॥
पुत्रीवर 'अपराजीताजी[2]', इन्द्राणी अवतारोरे।
व्याहे[3] 'दशरथ' रायनेरे. ओछव करिया अपारोरे॥ ३॥
'सुशीला' त्रियनो पतीरे, मित्रसुभू[4]' भूपालोरे।
'सुमित्रा' पुत्री परणावेरे, 'दशरथ' ने सुविशालोरे॥ राजा ४॥
सुप्रभा अति देहनीरे, 'सुप्रभा' तस नामोरे।
राजा रंगे परणावेरे, 'दशरथ' ने अभिरामोरे॥ राजा॥ ५॥
पंचेन्द्रिय सुख भोगवेरे, पूर्व पुण्य प्रसादोरे।
पूरव पुरुष उजालीयारे, विस्तरीया जश वादोरे॥ राजा॥ ६॥
एक दिवस लङ्का धणीरे, बैठो परषदा मांहेरे।
निमित्तियाने पूछीयूरे. निज आयुबल मांहेरे॥ राजा॥ ७॥

॥ ढाल क्षेपक तर्ज–गर्व मति कररे॥

एक दिन 'रावण महाराजा'. सोले सहश्र सामन्त ही ताजा. बाजता निशदिन ही बाजा, सभा की देख खूब त्यारी, वण्ये दिल मांही अहंकारी॥ सत्य व्रत पालो॥ २॥ 'इन्द्रजीत' मेघ वाहन' छाजे, पुत्र पौत्रादी अति गाजे, ऋद्धि सुं सुरपति पिए लाजे, पूण्यथी फते कीया काजा, बाजे नित सार्ध लक्ष बाजा॥ सत्यव्रत पालो॥ ३॥ 'विभीषण' कुम्भकर्ण भाई. मन्दोदरी राणी सुखदाई, चौपन सहस्त्र शास्त्र में गाई. उद्यरहे पूर्व पूण्याई, आंण है तीन खण्ड मांही॥ सत्यव्रत पालो॥ ४॥

स्वामीजी श्रीरामचन्द्रजी महाराज कृत.

ढाल क्षेपक तर्ज–तुम चलो सखी कुछ जेज न करीये।

सहश्र विद्यात्रीखण्ड को भुक्ता, "रावण" मन में गरभायो।
सुर नर पाय परे सब मेरे, कुणमुज से मांमे थायो॥ स॰ १॥
सूरदेव नो तपे रसोई, चन्द्र आप दीपक थायो।
वेमाता मुझ दले कोदरा, यम राजा पाणी लायो॥ स॰ २॥

[1] कुशस्थल, २ कौशल्या, ३ परणावे, ४ स्वबधु तिलक।

नवग्रह खाट तले नित रहते, दुर्गा आरती उत्तरायो ।
पवनदेव नित महिल बूहारे, पार नहीं कोई पायो ॥ स० ॥ ३ ॥
मो सरिसो तो विरलो होगो, नाम थकी जग थररायो ।
कुण मुज आज अड़े हुय सामो, किणरी मा अजमो खायो ॥स०४॥
अब मुज मनमें ऐसी आवे, वार सदा मुज एरेसी ।
केवलज्ञानी वातन छानी, पिण नैमित्तक केवे कीसी ॥ स० ॥५॥
'रावण' के मन ऐसी भासी, नैमित्तक तब बुलवायो ।
'रामचन्द्र' कहै कोई गर्वन कीजो, गर्वन कोई ठहरायो ॥स०॥६॥

॥ ढाल त्तेपक मूलगी तर्ज-गर्व मति कररे ॥

हुवो नहीं होवेगा ऐसा, मुझसे झंग करे जैसा, सुरासुर सेवे हमेसां सुनकर सभा सकल बोले, नहीं जगमें प्रभुके तोले ॥सत्यव्रत पालो ॥ ५ ॥ तिहां इक नैमित्तिक बैठो, ज्ञान को जो रहै सैंठो, वचन यह सुनियो है धेठो ॥ मुख से वचन नहीं भाखे, देख यह रीत भूप दाखे ॥ सत्यव्रत० ॥ ६ ॥ पंडितजी ! क्यों न वचन बोलो, तुम्हारा ज्ञान ही तोलो, हीयाका भरम सभी खोलो ॥ है कोई जगत बीच ऐसा, क मुझ को मार लेवे जैसा ॥ सत्यव्रत ॥ ७ ॥ विबुध कहै सुणीये महाराजा, गर्व क्या करीये दिल आजा, आज दिन पुण्य है ताजा, जिस दिन आयुखा आवे, दुनि सब यम घर कूं जावे ॥ सत्य व्रत पालो० ॥ ८ ॥

नं० ढाल त्तेपक तर्ज-चौकरी-स्वामी श्री नथमलजी म० कृत-

अहो नरवरजी, वचन विचारीने निजमुखसूं बोलीये ॥
सुनो हितधरजी, बात ज्ञान की पूछो तो हिय खोलीये ॥ टेर ॥
हुवा अनन्त बलि अरिहन्त सारा, पिण आयु कर्म नहीं टारा ॥
हुवा प्रभुजी शिवपुरना प्यारा ॥ अहो नरवरजी ॥ २ ॥
खट् खण्ड में आज्ञा विस्तारे, सुरसहसगमे सेवा सारे ॥
पिण आयु कर्म आगे हारे ॥ अहो नरवरजी ॥ २ ॥
सुर इन्द्रादिक दीपे भारी, नव नव विध भोगतणी त्यारी ॥

सुखमाने अमर पदवीधारी, पिण एक दि ास परभव त्यारी ॥३॥
तेजे जोध जिके बलिया, पिण काल आगे सहुको कलिया ॥
पूण राव रंक सगला छलिया ॥ अहो नरवरजी ॥ ४ ॥
इण कारण प्रभुने आखूं छूं, अन्तर कपट न राखूं छूं ॥
जिम ज्ञानमें तिमही दाखूं छूं ॥ अहो नवरवरजी ॥ ५ ॥

॥ ढाल क्षेपक मूलगी ॥

'अयोध्या' नगरी है जहारी, राय तिहां 'दसरथ' सुखकारी. 'कौशल्या' 'सुमित्रा' नारी ॥ कूखतसु उतपत धारेगा, भूपत! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ९ ॥ 'जानकी' स्वयम्बर त्यारी, सारङ्ग वो धनुप है भारी, विद्याधर मानकूं मारी ॥ युगल ही धनुप चढावेगा ॥ भूपत ! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य० ॥१०॥ 'वज्रकीर्ण' राजा सोहावे, 'सिहोदर' पास फत्ते पावे. भर्त का संकट मिटावावे ॥ दण्डकी वन में आवेगा, क भूपत ! सो तुझ मारेगा ॥ सत्य० ॥ ११ ॥ 'संवुक' विद्या ही साधे, चन्द्रहास्य खडग आगधे, लिछमन कूं जिस दिन ही लाधे ॥ उसीका स्कन्ध चिदारेगा, क नरपत ! सो तुझ मारेगा ॥सत्य०॥१२॥ 'दुःखर' 'खर' 'तिखर' ही भाई, विद्याधर चउदमहश्र घाई, विजय निज मुजने उपजाई, 'वि ध' कूं राज दिगवेगा ॥ क नरपत ! सो तुज मारेगा ॥ सत्य० ॥ १३ ॥ 'सुग्रीव' को न्यायही करसी, विविध विध भूपन सूं लग्मी, अडे सो जमगृह कूं वग्मी, खण्ड त्रय आण मनावेगा ॥ क नरपत! सो तुज मारेगा ॥सत्य०॥१४॥ इसी में शङ्का मति आणो. 'राम' अरु 'जानकी' जाणो, 'जनक' की पुत्री गुण खांणो ॥ 'लिछमन' के हाथ है मरणो, नहीं है हरि . को श . णो ॥ सत्य० ॥ १५ ॥ वात सुन सभा सवे शङ्की, विवुध की वाणी है वङ्की, केवली वचन निःसंकी । भूप कहे काणो अव कांई, विवुध कहे टले नहीं आई ॥ सत्य० ॥१६॥ राय कहे भावी वल टालो, ऐसा कोई उपाय नीकालो, हुवे जिम

जगमें उजवालो ॥ विबुध कहै टले नहीं आई, जचीसो प्रभुने दरसाई ॥ सत्य० ॥ १७ ॥ 'रत्नसेन' पुत्र आनन्दा, 'रत्नदत्त' पुनिम के चंदा, 'चन्द्रावती' व्याव सुखकन्दा, लगनदिन सत्तरमो जाणो, टलेतो वांछित फल प णो ॥ सत्य० ॥ १८ ॥ राय कहै नाम ठाम दाखो, उन्हींकी उत्पत सहु भाखो, वात यह दिलमां मत राखो ॥ तसल्ली सब के दिल आवे, मेरा जो मरणा टलजावे ॥ सत्य० ॥ १९ ॥

(स्वामी श्री नथमलजी म० विरचितम्) अथ रत्नदत्त व्याख्यानक कथ्यते
(क्षेपक मिदंच)
॥ ढाल पहली तर्ज-परभव की खरची लेलो ॥

विबुध कहै सुणजो समाचार, टरे नहीं कोई होवनहार ॥ टेर ॥
चारु विशाल नगर अति चारु, 'रत्नसेन' नृप अधिक उदार।वि०१।
प्रीतवती उर नन्दन उपज्यो, 'रत्नदत्त' कुंवर सिरदार ॥विबुध॥२॥
विद्यापढ योवन वय पायो, आयो इक दिन सभा मजार॥विबुध॥३॥
देख आकृति सब जन मोह्या, नृप कहै शादश जोवो नार। वि०॥४॥
'मतिसार' मंत्री तब चाल्यो, चित्रपटले बहु परीवार ॥ विबुध ॥५॥
देश प्रदेश विदेश भम्यो अति, नहीं दीठी कुंवर उनिहार ॥वि०॥६॥
गङ्गा तट इक सरवर दीठो, मीठो अम्बू वृक्ष अपार ॥ विबुध ॥७॥
डेरो दीधो भोजन कीधो, जल भरिवा अपच्छर उनिहार ॥वि०॥८॥
कन्या दीठी लागे मीठी, आडो फिरियो आय तिवार ॥ वि० ॥९॥
सा भाखे कारण मुझ दाखो, आयो नाम गाम नृप सार॥वि०॥१०॥
सा कहै 'चन्द्रस्थल' पुरजाणो, 'चन्द्रसेन्य' नृप सौम्य दीदार।११।
पांचसयां पदमण अति सोहे, 'चन्द्रलेखा' नामे पटनार वि०।१२।
रूपे रूड़ी सोवन चूड़ी, चन्द्रावती तस उर अवतार।विबुध १३।
ना ईन्द्राणी ना अप्सरा है, तसु गुणको नवि पावे पार।विबुध१४।
तेहनी दासी छूं उपवासी, ए जलसा पीवे सुखकार।विबुध १५।
जो तुम आखो सोभे भाखी, सांभल मंत्री हुवो हुंशीयार। विबुध१६।

दोहा—कारज सरसी माहरो, इणमें मीन न मेख ।
चाली आयो उतावलो, नृप भेटण सुविशेष ॥१॥
अति आदर अवनीपती, द्ये मन्त्रीने ताम ।
कन्या सज शृंगार अति, मेली मां अभिराम ॥२॥
अवनीपति के अङ्क में, बैठी कन्या सोय ।
इण सदृश जो वर मिले, तो मुज वंछित होय ॥३॥

ढाल दूजी तर्ज-प्रभुजीने गावो रङ्गसं (महाराजाजी हथणापुर मति जावजो)

मन्त्री भाखेरे, किंन कारन इहां आवीया, मंत्री० निवसो कुण से देश, राजिन्द पूछेरे वात कहो मुज मांडने ॥ टेर ॥ मंत्री० देश देखण ने नीसरयो, मंत्री० पुर २ भम्यो अशेस ॥ रा० ॥ १ ॥ इत चल आयारे, चरण भेटीया आपरा मत्री० आज सफल अवतार हुवो म्हारोरे अवनीपति तुम सांभलो ॥ टेर ॥ इलपति आखे रे, 'इचरज' वातको दाखवो. मन्त्री० इचरज नो नविपार ॥ मंत्री ॥ २ ॥ भूपति पभणेरे, पुरुप रूप कोई अभिनवो, कित ही देख्यो रे, कन्या वर मुज चाय. मन्त्री० रत्नाकीर्ण वसुंधरा. मन्त्री० कहतां पार न पाय ॥ मंत्री० ॥ ३ ॥ मन्त्री भाखेरे, पिण अद्भुत इक दाखवूं सुणजो साराँरे, रत्नसेन सुत जान ॥ मोहनगारारे सुरगुरु सम विद्याविपे, सब जन प्यारारे, शूरवीर सुविधान ॥ मंत्री ॥ ४ ॥ रत्नदत्तरे, रूपे काम कुंवर जिसो, प्रितवती नन्दनरे, दाता मोहन वेल ॥ मन्त्री० एक जीभथी किम कहूं, मंत्री चित्रनो जोवो खेल ॥ मंत्री० ॥ ५ ॥ चित्र अति नीकोरे, देख कन्या निश्चय कीयो, ओ नर नीकोरे, इण भव यो भरतार मो मन वसी योरे, नृप कहै फिर में पूछस्यूं, राजा भाखेरे, हिव जावो इन वार ॥ मंत्री० ॥ ६ ॥ पितुपय लागीरे, कन्या गई निज महल में, प्रीती जागीरे, चित्त में कुंवर ध्यान, मं० खान पान निन्द्रा तजी, मं० विरह जग्यो असमान ॥ मं० ॥ ७ ॥ सखि पूछेरे, कवण ध्यान छे ताहरो, स० तिल्कावती तिणवार स० वात कहो सब

मांडने ।। टेर ।। सखि० साकिनी ग्राहित नी परे, स० के कोई नसामजार, स० ।। ८ ।। कन्या भाखेरे, ना कोई साकिनी मुज- ग्रही, कन्या० ना कोई अवर प्रकार ।। कन्या-रतदत्त गुण सांभली क० निश्चय लीधो धार ।। स० ।। ९ ।। क० मोहन मुजने नवि- मिले, क० षट्मासां के मांय । क० तो तन होमुं आगमें, क० अवर नहीं मुज चाय ।। क० ।। १० ।।

दोहा—तिलक वती तिण अवसरं, कही मायने जाय ।
राणी सुण ते रायने, शीघ्र ही दीयो जताय ।।१।।
स्वयम्वर हूं मांडतो, मुज मन हूंती चाय ।
कन्या मन जोए रुच्यो, तो देसूं परणाय ।। २।।
तत् क्षिण तेडी मन्त्रीने, पूछे भूप तिहार ।
कुंवर के कितनी कामनी, भाखो सकल विचार ।।३।।
मन्त्री कहे महिपति सुनो, अजहु न परणी कोय ।
बहु नृप चाहे व्याववा, शादश मिलिया जोय ।।४।।

।। ढाल तीजी तर्ज—लावणी—खबर नहीं है जग मे पलकी ।।

मन्त्री वचन सुणी वसुधापति, मनमें हर्षायो, नेरया गणिक भणी तिणवारे, लगनतणी चायो ।। सुणो सहु होणहार भाईरं, १ सुणो० छल बल कोई कोड करो तो टले नहीं आई ।। टेर ।। अगणित द्रव्यधरी मुख आगे लगन शुद्ध कहीये, ते कहे दिन सतरमो जाणो, आगे नही लहीये ।। सुणो ।। २ ।। जो ए टलेतो वर्ष युगल में, नहीं लगन आवे, भूप कहे भूमी है केती, शतयोजन थावे ।। सुणो ।। ३ ।। भूप कहे मंत्री ! किम वणसी, सो कहे तिणवारो ।। घड़ी योजन मुज सांड चले है, मति को विचारो ।। सुणो ।। ४ ।। लेकर चित्र मंत्री तब चाल्यो, आय कही सारी, चित्र देख हरख्या सहु कोई, वाहा वाहा बुद्धि थारी ।। सुणो ।।५।। दोनूं घरां उच्छाह मंड्यो अति, अद्भुत तिणवारी, इन्द्रादि आय मिले तो भाविबल टले नहीं टारी ।। सुणो ।। ६ ।।

दोहा–राणा ' रावण ' जी तदा, पण्डित धरियो मांय ॥
निशाचर[१] ने बुलायने, कहै 'चन्द्रस्थल' पुर जाय ॥ १ ॥
लावो बाला मुजकने, ढील न करणी रञ्च ॥
रङ्गभुवन सखिवृन्द में, बैठी दीठी सञ्च ॥ २ ॥
तत्क्षिण ग्रही तसु चालीयो, सहु करे हाहाकार ॥
पिण कछु जोर चाले नहीं, न टले होवनहार ॥ ३ ॥
पूठे सहु आक्रन्द करे, सूंपी नृपने आय ॥
'तीमङ्गला' बुलायने, समुद्र तटे तूं जाय ॥ ४ ॥
यतन करीने राखजे, जब सतरादिन होय ॥
सूंपे ज्यो मुजने सही, पिण अवर अचिन्त्यो होय ॥ ५ ॥
पेटीधर मुखमें तदा, चाली देवी ताम ॥
गङ्गा सागर संग में, आवी बैठी आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौथी तर्ज–योगी रामारी ॥

'तक्षनाग' ने ताम बोलावे, वारु विशाल ही जावो,
'रत्नदत्त' ने डंक देईने, वहिला पाछा आवो ॥ १ ॥
' रावण ' हुकमें अर्द्ध निशामें, रङ्ग महिल में आवे,
कुंवर सेजाए सुखमां सुतो, डङ्क देई ने सिधावे ॥२॥
आय 'रावण' ने सगली दाखी, दशस्कंधर हरखावे,
किम ए व्याव हूसी ए एहनो, पिण भावी प्रबल कहावे ॥ ३ ॥
प्रात हुवा नृप खबर लही है, जहर व्याप्त तन देखे ।
रे रे नन्दन मुज कुल भूषण, एह अवस्था देखे ॥ ४ ॥
मंत्री परमुख गारुडी तेड्या, कीया विविध उपचार ।
यंत्र मंत्र औषध नवि लागे, सहु करे हाहाकार ॥ ५ ॥
पुत्र वियोगे राजा राणी, नेत्र भरी जल नांखे ।
जोतिष जोई नैमित्तिक भाखे, मरयो नहीं इमभाखे ॥६॥
आज तो उपचार न लागे, गङ्गाजल में बुहावो ।

---

१ राक्षस ।

हो लाल ॥ ४ ॥ उभय परम सुख पाय, साजन, वंछित करी ने भोग आनन्द अति मानीयो हो लाल ॥ पेठा पेटी मांय, साजन, आडा सूती है बाल सफल दिन जानीयो हो लाल ॥ ५ ॥ इतरे आई तेह, साजन, साद करन्तां कन्या बोली है तदा हो लाल ॥ हूं सूती निज ठौर, साजन, सुन देवो मनमांही सुख माने मुदा हो लाल ॥ ६ ॥ संध्याये सूरी सार, साजन, चाली पेटी लेय पूछे देवी इणपरे हो लाल ॥ वजन वध्यो किण काम, साजन, कन्या तब मृदु वेन क मुखथी ऊचरे हो लाल ॥ ७ ॥ खाया फलने फूल साजन, पीधोजल लागो पवन अमारे तन तणे हो लाल ॥ आप ग्रही बहु वार, साजन, इण कारण सूं भारी लागे आपने हो लाल ॥ ८ ॥

दोहा—सूंपीसा 'रावण' भणी, आप गई निजधाम ॥
पोहरो राख्यो रातरा, प्रात उदय रवितास ॥ १ ॥
सभा सबल भारी जुडी, मिलीया राणो राण ॥
राय कहे सबही सुणो, अवसर मिलीयो आंण ॥ २ ॥
सतरादिन पूरा हुवा, नहीं हुवो ए व्याव ॥
नैमित्तिकने तेडने, भाखे नृप उच्छाह ॥ ३ ॥
जोवो ज्ञान तुम्हारडो, भावी टली के नांय ॥
श्रोता एक चित्त सांभलो, वदे नैमित्तिक वाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी तर्ज—हांक मतिकर गर्व दिवाना ॥

हां कहे इम योतिषनाणी, सुणो प्रभु ए म्हारी वाणी, टलेन होवन हार कयो इम केवल नाणी रे ॥ टेर ॥ तीर्थंकर चक्री महाराया, होणहार आगे ववगाया, सम्भुमचक्री जल डबकाया, एसी भावी ज्ञान आन दिल भाख्यो ज्ञानीरे ॥ कहे ॥१॥ व्याव हुवो है दिन सतरमे, क्या जोवूं दर्पण में कर में, खोलो पेटी निकसे भरमे, देखे सगलो लोक थोक ओ मिलीयो आनीरे ॥ कहे ॥ २ ॥ नैमित्तिक ए कैसे बोले, वनक्षिण नृप पेटीने खोले, कुंवर सूतो कन्या के

ओले, चिन्ते रावण राय वाय ए सुपने न जानीरे ॥ कहै ॥ ३ ॥ विबुध कहै चवडे देखावो, सब ही जन को भर्म मिटावो, कन्या कुंवर बाहिर दिखलावो, देखे सगला लोक बात ए सत्य पीछानी रे ॥ कहै ॥ ४ ॥ राम कहे भावी बल भारी, टले नहीं है होवन हारी, नैमित्तिक ने रींजदी सारी, खेचर सामे देय मेल्या उभय निज २ थानी रे ॥ कहै ॥ ५ ॥ 'नथमल' कहै सुनजो सब भाई, नैमित्तिक ने कथा सुणाई, रामायण में हर्ष धर गाई, देसी गुरु मुखधार गायां रीजे बहुग्यानी रे ॥ कहै ॥ ६ ॥

॥ इति रत्नदत्त कथानकं समाप्तम् ॥

—ढाल मूलगी—

कहै हूं मरिस आपथी रे, के कोई मारण हारो रे ?
इन्द्रादिक सुर ना रहै रे, माणसनो शो भारो रे ॥राजा दशरथ८॥
पण्डित प्रगट पणे भणे रे, सीता हेते विनाशो रे ।
'दशरथ' सुत थी थायसे रे, लोक करे तब हांसो रे ॥राजा ॥९॥
विभीषण बलियो कहे रे, झूंठो पांड्र जाणो रे ।
'दशरथ' 'जनक' विनाशतांरे, विबुध वचन अप्रमाणोरे ।राजा १०
उत्पति बीज विना नहीं रे, 'रावण' कहे ए रुड़ रे ।
भरोसो भाई तणो रे, कदी ही न कहै कूड़ रे ॥ राजा ॥ ११ ॥
'नारद' बैठो थो तिहां रे, करवाने उपगारो रे ।
राजा 'दशरथ' आगले रे, भाखे एह विचारो रे ॥ राजा ॥ १२ ॥
मिथुला नगरी एजई रे, 'जनक ने रे' जणावेरे,
जाणी स्वामी साचलीरे, मति अशाता पावेरे ॥ राजा० ॥ १३ ॥
एहिज भोलामण रायजी रे, मंत्रीश्वरने दीजेरे,
दोई परदेशे नीकल्यारे, जाणे जिगतिम जीजेरे ॥ राजा० ॥१४॥
मूर्ति दोई रायनीरे, लेपमयी तब कीजेरे,
'विभीषण' भरमाववारे, एह उपाव ठवीजेरे ॥ राजा० ॥१५॥
रात अंधारे आवीयोरे, 'विभीषण' विकरालोरे,
मूर्ति मस्तक छेदीयारे, कोप्यो जाणे कालोरे ॥ राजा० ॥ १६ ॥
कलकल शब्द हुवो घणोरे, सुभट सबही धाईरे,

'केशराज' नन्दन नीको रे. नीको तात कहायो रे ।।राजा०।।३८।।

दोहा (कान्हडा रागे)

ब्रह्मलोक थकी चवी, महर्धिक सुर सार ।।
मान सरोवर हंसलो, उदरे लीयो अवतार ।। १ ।।
सुखमें सूती सुन्दरी, सुन्दर सेज मजार ।।
राणीजी 'अपराजिता' सुपन विलोक्या चार ।। २ ।।
सात हाथ ऊंचो सही, लांब पणे नव हाथ ।।
चौड पणे कर तीन जी, करी करणीनो नाथ ।। ३ ।।
केसरी कटी क्षीणोदरो, पञ्च मुखे प्रवेश ।।
करन्तो दीठो मध्ये, राणी ए हर्ष विशेष ।। ४ ।।
नायक तो ग्रह गणतणो, रोहणी नो भरतार ।।
ऊतरथो आकाशथी, चन्द्रमहा सुखकार ।। ५ ।।
ऊगन्तो अति रातड़ो, नहीं वापड़ो लगार ।।
सूर्य सहश्र किरणे करी, पावे शोभा अपार ।। ६ ।।
राय जगावी वीनवे, ईश सुणो अरदास ।।
एह सुपन नुं फल कहो, जिम पोहोंचे मन आश ।। ७ ।।
पियु परम सुख पाय के, भाखे सुपन विचार ।।
पुत्रपनोतो प्रसव से सहु जगनो आधार ।। ८ ।।
गर्भ दोष सहु टालतां, पोस करन्तां मार ।।
शुभ वेला सुत जाइयो, वर्त्या जय जय कार ।। ९ ।।

।। ढाल सोलहवीं तर्ज–अय त धीरो रे ।।

शुभ वेला शुभ वार कुंवर जायो रे ।।
हर्ष वधायो मंगल गायो. सब जगने रे सुहायो ।।कुंवरजायो रे।।१।।
नगर छंटायो, जल सिंचवायो, कुसुमावन वरसायो रे ।।
चोक पुरायो, कलश वधायो, इन्द्र तमासे आयो ।। कुंवरजायो।।२।।
लोक मिलायो, ढोल बजायो, गुहिर निशान गुहिरायो रे ।।
आनन्द पायो सब मन भायो. ओच्छव अति मंडायो ।। कुंवर।।३।।

रमणी आवे, केली रचावे, कुंकुम हाथ देवरावे रे ॥
रास रमावे पात्र नचावे, उचित अधिक उपात्रे ॥ कुंवर० ॥ ४ ॥
घर घर बारे तोरण रचना, नारी अखाणूं लावे रे ॥
दुर्वा पुष्प फलादिक आणी, मंगलाचार करावे ॥ कुंवर० ॥५॥
'चिन्तामणि' सुरतरु जिम राजा, दाने दारिद्र निवारे रे ॥
याचक नाम अयाचक कीधां, सुजश हुवो जग सारे ॥ कुंवर० ॥६॥
पदमनोरे निवास तेहथी, 'पद्म' दीधूं तस नामोरे ॥
सहु जगने अभिराम पणाथी, बीजूं नामज 'रामो' ॥ कुंवर० ॥७॥
गज१, हरि२, रवि३, शशि४, अग्नी५, जलकमला६, सायर७, सुपनां सातोरे।
देखी 'सुमित्रा' स्वामी आगे, आवी कहे ए वातो ॥ कुंवर० ॥८॥
देवलोक थकी चवि आव्यो, उत्तम जीव अपारोरे ॥
राणी उदरे निवास कीयोरे, हर्ष्यो सहु परिवारो ॥ कुंवर० ॥९॥
श्यामवर्ण सुत जायो सुन्दर, राजा मन उत्साहोरे ॥
ओच्छव विविध प्रकार करीने, लीधो लच्छी लाहो ॥ कुंवर० ॥१०॥
दश दिवसनो ओछव कीधो, छोड्या बंदी वानोरे ॥
उत्तमपुरुष ऊपजीयाथी, सहुने होय कल्याणो ॥ कुंवर० ॥ ११ ॥
'नारायण' तसु नाम दीयोरे, 'लक्ष्मण' अपर विधानोरे ॥
सुरतरु कंद तणीपरे दोई, वाधे पुरुष प्रधानो ॥ कुंवर० ॥ १२ ॥
अनुक्रम वीर विशेष विशेषे, मोह घणेरो पोखेरे ॥
नीलाम्बर पीताम्बर पहीरे, साजनीया संतोखे ॥ कुंवर० ॥ १३ ॥
आचारज साखे करी सीख्या, सकल कला गुण तेहोरे ॥
जाण पणे ते सुरगुरु सारीसा, प्रत्यक्ष दीसे एहो ॥ कुंवर० ॥ १४ ॥
लीला मुष्टि प्रहार करावे, पर्वत नांखे चूरीरे ॥
शूरवीर साहसिक मांही, पावे कीर्ति पूरीरे ॥ कुंवर० ॥ १५ ॥
क्रीड़ा कारण धनुष्य ग्रहीने, जब जब पूंखे वाणोरे ॥
खरज शङ्क धरीने शंके, पाड़ेमनि रे विमाणोरे ॥ कुंवर० ॥ १६ ॥
कांइक भुजबल गाय विचारयो, कांइक सुत बल जाणी रे ॥

'पुष्पवती' अभिधानो[1], सुखमाणे मेरु समाणो ॥ सुण ३ ॥
'सरसा' पिण संयम लेवी, बीजे सुरलोके देवी ॥
होई ने माने साता, सुख मांहे वासर[2] जाता ॥ सुण ४ ॥
'अनुभूतिज' आरती करतो, नारीनु अति दुःख धरतो ॥
भवमांही भमतो होई, हंस बालक हुवो सोई ॥ सुण० ॥ ५ ॥
सिंचाणे साही नडीयो, ऋषि आगल आवी पडीयो ॥
ऋषिजीए दीधो नवकारो लीधो किन्नरनो अवतारो ।सुण०॥६॥
दश सहश्र वरसनो आयो, भोगवतो पुण्य प्रभायो ॥
सो देव चवीने आवे, बदलो लेवे सुख पावे ॥ सुण० ॥ ७ ॥
विदग्ध नगर छे वारु, राजा छे अधिक उदारु ॥
'प्रकाशसिंह' नरनाहो 'प्रवरा' रेवतीनो नाहो । सुण० ॥ ८ ॥
सहु साजनने रे सुहायो, 'कुण्डल मण्डित' सुतजायो ॥
सुत सुन्दर अधिक मलूणो, सुततेज प्रतापे दूणो ॥ सुण० ॥ ९ ॥
'कयान' भवमां भमतो, सो वादि जमारो गमतो ॥
नारी 'चक्रपुर' राजे, 'चक्रध्वज' राज विराजे ॥ सुण० ॥ १० ॥
'धूमसेन' पुरोहित[4] तेहने, 'स्वाहा' रमणी छे जेहने ॥
जायो तिहां 'पिंगल' नन्दो, उपज्यो मा-मन आणन्दो । सुण० । ११ ।
'अतिसुन्दरी' बेटी राजानी, खप करती अति विद्यानी ॥
श्री आचारिजजी पासे, 'पिंगल' पण पढे उल्लासे ॥ सुण० ॥ १२ ॥
तयनो बंधाणो नेहो, 'पिंगल' ने कुँवरी तेहो ॥
संगतथी विणसे कामो, एमजोजो बहुलाठामो ॥ सुण० ॥ १३ ॥
कुँवरी ने लेई नाठो, ओ ब्राह्मणी ओ अति धाठो[5] ॥
'विदग्ध' नगर चलि आयो वसवानो मन ठहरायो ॥ सुण० ॥ १४ ॥
कसब[6] न कोई जाणे, तृण लाकडी मूली आणे ॥
जिमतिमतो पेट भरेवो, विण कसबज एम करेवो ॥ सुण० ॥ १५ ॥
ए कसब तणी अधिकाई, निजपुर में लहैरे वडाई ॥

---

१ नाम । २ दिन । ३ आयुष्य । ४ कुलगोर । ५ धीठो कठण हीयाने धोट । ६ कामो (कला)

ए कसव कलाए दीठो, शशि[१] रुद्र तणेशिर बैठो ॥ सुण ॥ १६ ॥
'अति सुन्दरी' सुन्दरता ए, नृप सुतने कोन बताए ॥
सा लीधी तेणे छिनाई, पिंगल रहियो मुख बाई ॥ सुण० ॥ १७ ॥
भय बाप तणो अति आणी, पर्वत में पल्ली ठाणी ॥
'कुण्डलमण्डित' तिहां वसीयो, सुख दुःख न देखे रसीयो । सुण.।१८।
नारीनो आणी वियोग, 'पिंगल' तब लीधो योग ।
चित्तथी नवि छूटे नारी, घाटी ए म्होटी भारी ॥ सुण० ॥ १९ ॥
'दशरथ' नो देश विणा से 'कुण्डलमण्डित' जन त्रासे ॥
तब 'बालचन्द्र' चढि आयो, बांधी नृप पासे लायो ॥ सुण० ॥ २० ॥
तब दीनपणं तस देखी, करुणा नृप ने सुविशेषी ॥
छोडी दीधो तिण वारो, 'कुण्डलमण्डित' सुकुमारो ॥ सुण० ॥ २१ ॥
ते बाप-राज्य ने काजे, कुंवरजी रहै नीति साजे ॥
'मुनिचंद्र' ऋषीश्वर संगे, हुवो श्रावक अति उच्छरंगे ॥ सुण. ॥ २२ ॥
राज्य-वांछाना मांही, तस प्राणज छूट्या प्राही ॥
जनक[१] घरे अवतारो, निसुणो[२] 'सीता' सुविचारो ॥ सुण० ॥ २३ ॥
'सरसा[३]' पण भवमें भमती, माफिरे इच्छाए रमती ॥
होई पुरोहितनी कुंवारी, सा पढवे गुणवे सुभारी ॥ सुण० ॥ २४ ॥
वेगवतीरे कहाणी, सुन्दर रूप सयाणी ॥
मुनि आल देई दुःख पायो, ते सुणज्यो चित्त न्यायो ॥ सुण० ॥ २५ ॥

दोहा क्षेपक—

पाप अठारे जिनकथा, करो मति भवी जीव ॥
कीयांथी दुःख पाहुवा, नरकां खादे रीव ॥ १ ॥
हिंसा झूठ चोरी अब्रम्भ, ममता घणी विशेष ॥
क्रोधमान माया लोभ, वले राग ने दोष ॥ २ ॥

१ जनक राजाके यहां भामण्डल पुत्र पणे पैदा हुवा । २ हवे सीतानो वीचार सांभलो । ३ सरसा जे ईशान देवलोकमां देवी थई हतीं ते त्यांथी चवी घणा भवकरी वेगवती नामे ऊपनी त्यांथी दीक्षा लेई ब्रह्म लोकमां जई त्यांथी चवी जनक राजानी स्त्री 'विदेहा' ने पेटे अवतरी ।

देखाव्या वसुधाविखेरे, राजा राज कुंवार।
सारिखो संसारमेंरे, कोईयन एक लगार ॥ सीता ३ ॥
अर्धवबरदेशनारे, अंतरंग" तसनाम,
म्लेछ महामयमंतछेरे, देश उजाड़े ताम ॥ सीता ॥ ४ ॥
जनक नपोंचेतेहनेरे, दूतमोकलेएक,
राजा दशरथ पासतीरे, बोले आणी विवेक ॥ सीता ॥ ५ ॥
सूर्य रहाम् देखीयेरे, आवे छींक जेवार ॥
भीडाणो छे भूपतीरे, आगे देव विचार ॥ सीता ॥ ६ ॥
उठ्यो अति आतुर थई रे, वाज्या ढोल दुमाम।
असवारी करवा भणी रे, ताम सूं बोले 'राम' ॥ सीता ॥ ७ ॥
तुमे पधारो छो सही रे, शूरां सूं संग्राम।
अमने घर बैसी रह्या रे, कीसी वध से१ माम ॥ सीता ॥ ८ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-ख्याल की मन्त्री श्री चोथमल्लजी म० कृत

क्यों ? आप पधारो, हुकम करो तो जावूं जुद्ध में ॥ टेर ॥
भेडां ऊपर जावतां सरे, आछा न लागो आप।
अर्ज करूं इण कारणे सरे, वगसो आज्ञा बापजी ॥ क्यों ॥ १ ॥
नाजुक देह लघु वय थांरी, जिण सूं मैंही जावों।
जनक केसी टाबर ने मेल्या, इण सूं थे गम खावोजी ॥क्यों २॥
'रामचन्द्र' कहै सुनो पिताजी, 'लछमन' लेऊं साथ।
'जनक' रायरी मदत में सरे, जाय दिखाऊं हाथजी ॥ क्यों ३ ॥
म्हारी तर्फ रो राजा ? मनमें, जरा सोच मत लावो।
जावां वेगा जुद्ध में सरे, झट आज्ञा वगसावोजी ॥ क्यों ॥ ४ ॥
लेई फौजने पछ पधारो, जुद्ध करनके तांई ॥
नवा शहरमे 'चोथमल्ल' कहै, 'नाथ' गुरु सुपसाईजी ।।क्यो ।।५ ॥

ढालमूलनी

अनु१ ज्ञाने आगे कहीरे, चाल्या 'राम' नरेश।
चतुरंगिणी सैन्या सझीरे, 'मिथीला' पुरीच प्रवेश ॥ सीता ॥ ९॥

१ होस मोत अथवा शर्म।

ढाल क्षेपक तर्ज—खडका स्वामी श्री नथमल्लजी म० कृत.

'दशरथ' नृपनो हुकमलेईचढे, 'राम' सु 'लिछमन' वीर शूरा ॥ हयगय रथ पायक दलसंचर्यो, सुभट ताजा लीया मानीपूरा ॥ चल्या श्री 'राम' 'लिछमन', अरिजीतवा, ॥टेर॥ १ ॥ मारग अनड नमावता जावता, जनक मिथीलापुरी आय मिलीया॥ जनक सैन्या लेई साथ हूवो तदा, असुर लडवा भणी शीघ्र चलिया ॥ च. ॥२॥ म्लेच्छ मदमस्त अति पुष्ट गर्भितरहै, राम, दल देखीने सजथावे ॥ वाजो रणतूर नो सांभली शूरमा, केईगज अश्व रथवैठआवे ॥ च, ॥ ३ ॥ शस्त्र रवारा चले कोई पालालडे. माचीयो शोर सं ग्रामभारी ॥ केई धरणीढले, केईपाछापडे. लेय मुखत्रण केई जाय हारी ॥ च, ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी—

असुरशूं आवीअड्यारे, सुभट जीके झूंझार ।
उठावरणी असुरांतणीरे, सही नसकया इक वार ॥ सीता ॥ १० ॥
धनुष्य चढावी रामजीरे, करतो उठावणीआप ।
असुर सहुअलगाथयारे. धर्मथकीजिमपाप ॥ सीता ॥ ११ ॥
'जनक' तणा जनपद तणोरे, टल्यो मयल४ कलेश ।
राजाजी सुखपामीयारे, रंग विनोद विशेष ॥ सीता ॥ १२ ॥
'सीता' दीधी रामनेरे. सारिखो संयोग ।
भलु २ भाखे घणूंरे हर्षे सवला लोग ॥ सीता ॥ १३ ॥
सीता रूप सोहामणूंरे. निसुणीने सुरदेव ।
निरखण हेतेआवीया. सीताघरे ततखेव ॥ सीता ॥ १४ ॥
केश नैत्र पीला खरारे, तूम्बीछत्रिकाधार ।
दण्ड पाणी कोर५ पीन सूंरे, शिरही शिरखा सुविचार ॥ सीता ॥ १५ ॥

टाल क्षेपक तर्ज ख्यालकी स्वामी श्री नथमल्लजी कृत.

एक दिवस म्हेलमें नारद' देखणने आयो जानकी ॥ टेर ॥
सीता सुन्दरतिण समेंसरे. वैठी म्हैल मझार,
दर्पण आगे शोभतोसरे, प्रतिबिम्ब पड्यो तिणवारजी ॥ टेर ॥ १ ॥

---

१ आज्ञा-रजा । २ युद्ध ३ देश । ४ सबलो । ५ लंगोटी। ६ चोटी ।

ढाल मूलगी

मिथिला नगरी छे भली रे, 'जनक' तिहां भूपाल।
'विदेहा' ऊदरे ऊपनी रे, 'सीता' रूप रसाल ॥ सीता ॥२२॥
अमरी[1] कुंवरी नागनी रे, मैं दीठी अवि लोय।
वारम्बार विचारतां रे, 'सीता' सम नहीं कोय ॥ सीता ॥२३॥
जेहवी छे सा सुन्दरी रे, तेहवी लखि न जाय।
लखि तैसी कही को सकेरे, अचरज है खग राय ॥ सी ॥२४॥
'भामण्डल' ने भामिनी रे, जड़रे मिले इक जोड।
साचू सुख संसारनूरे, म्हारे मन ए कोड ॥ सीता ॥ २५ ॥

ढाल चेपक पूर्ववत्

महाराजाजी हम जोगी जंगल फिरां महा० नहीं नारी में ध्यान, महा० तो घर आवे या कामनी महा० होवे परम कल्याण, म० नारदजी ॥ २ ॥ महा० दीधी 'दशरथ' नन्दने, म० इसडी सुणी मैं वात, म० शक्ती हुवे जो आपरी, म० तो तुमे घालजो हाथ। म० ॥ नारदजी ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

सुत वचने संतोषीयो रे, भलू करे करतार।
विसर्जीयो ऋषि राजीयो रे, उघमनो अधिकार ॥ सीता ॥२६॥
खग[2] 'चपलगति' मोकल्यो रे, करवाने अपहार।

दोहा चेपक

नभचर[3] उड्यो आकाश में, ऊतरयो मिथीला मांय।
कीयो रूप हयको सही, कांहूं धीरज नांय ॥ १ ॥
लोक मिली सहु जनकपे, कीधी ए अरदास।
अश्व मण्ड्यो घोकल शबद, करे सबन को नाश ॥ २ ॥

सोरठा—राजा गज असवार, आयो हयने पकडवा।
कपट तणो बहुपार, कैसे पावे आदमी ॥ १ ॥

---

१ देवी। २ आकाश में उड़ने वाला। ३ नभ आकाश—चर—यानी फिरने वाला।

—सवैयो—

देखो भूलोक में न भूम को चलणहार।
ऐसो हय ताजी वाजी नट जो करतू है॥
तातो है तुङ्ग रङ्ग शोभित अनेक अङ्ग।
वाजित्र मृदङ्ग खुर मनकूं हरतू है॥
वण्यो है शृंगार जिम जडित जडाव जड्यो।
जाकी अति शोभा दीसे ऊजलू भरतू है॥
ऐसो हय छूटो रवि रथ केण गाव सेती।
अैसो एह चंचल महा चपल पवंगू है॥ १॥

—अडियल छन्द—

हय ऊपर तिणवार मुकुट शिर भूपरे, होय गयो असवार, रायते ऊपरे, हय ले चल्यो आकाश, वाम तिहां जनक को, आय मुंक्यो तेह ठाम आवास शोभित नीको॥ १॥

ढाल मूलगी

राजा लेही आवीयो रे, किणही न जाणी सार॥ सीता॥२७॥
उठी आयो साहमोरे, मिलियो वांह पसार।
कुशल वात पूछी घणी रे, प्रीती तणे रे प्रकार॥ सीता॥ २८॥
'जनक'? तुम्हारी सांभली रे, पुत्री रत्न प्रधान।
नारी निरूपम जेटली रे, तेहमां तिलक समान॥ सीता॥ २९॥
अच्छे अनूपम कन्यकारे, जिम तुम भाखो तेम।
सर्व कलायुत आगली रे, पण देवाये केम॥ सीता॥ ३०॥
दीधी 'दशरथ' नन्दने रे, अवरने केम देवाय?
मणि माथे छे सापने रे, कहो किम लीधी जाय॥ सीता॥३१॥
प्रीती भणी मांगूं अछे रे, नहीं तरनो अपहार[१]।
करतां वेला छे कीसी रे, राखूं छूं व्यवहार॥ सीता॥ ३२॥
अमने जीती रामजी रे, परणे कन्या एह।
के 'भामण्डल' परणसे रे, एमां नहीं को संदेह॥ सीता॥ ३३॥

---

१ हरीजवूं।

ढाल मूलगी

'वज्रावर्तज' नामथी रे, अने अरणवा वर्त ।
धनुष्य अछे घर माहेरे, मण्डपे आणी धरंत ॥ सीता ॥ ३४ ॥
यक्ष हजारे सेवियां रे, अतिशय वन्त अतीव ।
गोत्रज देवीनी परेरे, सेवीये रे सदीव ॥ सीता ॥ ३५ ॥
धनुष्य नमायां हमनम्यारे, रुकटी[1] करवा नेम ।
समजो सीधी वातमां रे, जेम आपणो रहै प्रेम ॥ सीता ॥ ३६ ॥
एह अचम्भो छे खरो रे, एतो प्रत्यक्ष आज ।
एकहीने[2] चढ़ोडवे रे, सारो वछित काज ॥ सीता ॥ ३७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

धनुष्य दोय उहां लाय धरीये, कुलक्रम सेवा ही करीये, साधे सो कुंवरी ने वरीये । 'जनकने' भरियो हौंकारो, विद्याधर सर्व हुवा लारो ॥ सत्य ॥ २३ ॥

—ढाल मूलगी—

खेचर 'चन्द्रगति' चालीयोरे, पुत्र अने परिवार ।
धनुष्य दोय माथे भलां रे, राजा लेई लार ॥ सीता ॥ ३८ ॥
'मिथिला' नगरी आवीयो रे, बाहिर डेरा दीध ।
वर्णन तो विद्या धरो रे, पृथिवी मांही प्रसिद्ध ॥ सीता ॥ ३९ ॥
अष्टादशमीं ढाल में रे, वस्तु भलीनी चाय ।
'केशराज' पूरो मही रे, जो होय पूण्य अगाह ॥ सीता ॥ ४० ॥

दोहा (मारू रागे)

'जनक' 'विदेहा' नारि सूं, सम्भलावी सहु वाय ।
सालसमां साले सहु, कहै राणी विललाय ॥ १ ॥
देवन तृप्तो न हुयो, लीधो पुत्र प्रधान ।
लेवां चाहै पुत्रीका, केम राख्‌ सूं प्राण ॥ २ ॥
स्वेच्छाए परणेतनो, हर्ष घणो संसार ।
अण इच्छाए परणेतनो, हर्ष न होय लगार ॥ ३ ॥

---

1. योग तजवीज, इच्छा (शक्ति) । 2 एक धनुष्य ने चढ़ाववाथी ।

दैवयोगे श्री 'रामजी' धनुष्य चढावा आय ।
अवरनेरे चढावतां, अणसर्ज्यु दुःख थाय ॥ ४ ॥
'जनक' कहै जाणे नहीं, 'राम' महा बलवंत ।
मैं दीठो संग्राम में, पौरस नो नहीं अन्त ॥ ५ ॥
समजावीसा सुन्दरी, पूजी धनुष्य उदार ।
मण्डप मांही तेडीया, राजा राज कुंवार ॥ ६ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

सहुको मिथिला ही आया, स्वयम्बर मण्डप मण्डवाया, अयोध्या दूत पठवाया । सबल बल 'रामचन्द्र' धायो, भ्रात ले मिथिलापुर आयो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ २४ ॥ 'जानकी' स्वयम्बर आवे, साथ सहु सखियन सोहावे, मनमें 'रामचन्द्र' ध्यावे । दैव से अर्जी ही कीजे, क मुजने 'रघुवर' वर दीजे ॥ सत्य व्रत ॥२५॥

धूलचन्दजी कृत क्षेपक तर्ज-मालो थारा बाग मे दोय नारङ्गीयां पाकीरेलो

फावे अम्बर फूटरा पहिरण पञ्चरङ्गारे लो, अहो, पहि० ॥
अंजन-मंजन आंजीया, शिर आड सुचंगारे लो. अहो. शिर०॥१॥
झलके कुण्डल जोडला, तीखा तम्बोलोरे लो. अहो. तीखा० ॥
अधर रंग्या आछीतरे, राता रङ्गरोलोरे लो. अहो. राता० ॥ २ ॥
हार-धरिया हीयापरे, नीका नवसरियारे लो. अहो. नीका० ॥
करमें कंकण-कन्यका, भली पखरीयारे लो. अहो. भलो०॥ ३ ॥
चम्भल नयनी भामिनी वर रूप विगजेरे लो. अहो. वर० ॥
इन्द्राणीरती अप्सरा, लक्ष्मीपिन लाजेरे लो. अहो. ल० ॥ ४ ॥
इन्द्राणी जिम ओपती. मच वेप मनूगेरे लो. अहो. मच० ॥
शील सुरंगी सुन्दरी, पतिभक्ता पूरीरे लो. अहो. पति० ॥ ५ ॥

स्वामी श्री रावतमलजी म० कृत क्षेपक तर्ज-माता सीता की गोदी मे

आई-जनक-सुता सखि साथ. हाथ वर मालिकारे ।
दीसे इन्द्राणी अवतार अनोपम बालिकारे ॥ टेर ॥
सजकर सोले तन सिणगार. धार पति राम केरे ।

आवे स्वयम्वर मण्डप मांय, विलोके भूप-रूप-तन तांय ।
इणपर बोले विस्मय पाय ॥ आई० ॥ १ ॥
अहो यह कन्याने करतार रूप किम आपीयोरे ।
पूर्व पुण्य किया जिन प्राणी, जिन्हकी होसी यह पटराणी ।
ऐसी मुख २ होरही वाणी ॥ आई० ॥ २ ॥

दोहा—दिव्या भूषण धारीने, सखियो ने परिवार ।
मण्डपे आवी जानकी, ईन्द्राणी अवतार ॥ ७ ॥
धनुष्य तणी पूजा करी, मनमें समरे राम ।
मनसा वाचा कर्मणा, अवरां सूं नहीं काम ॥ ८ ॥

स्वामी श्रीनथमलजी म. कृत-ढाल चेपक तर्ज-परभव की खर्ची लेलो
'रामचन्द्र' मुजवर भावे, दूजो दाय नहीं आवे ॥ टेर ॥
'रघुवर' टाली ने वर दूजो, जनक भ्रात सम दिखलावे ।राम १।
सोहिनी सूरत मोहनी मूरत, झुरत ही अहो निशी जावे ।राम २।
चाप चढे तो कहा न चढे तो, हम दिल अवर नहीं स्वावे । राम ३।

—सवैया—
धनु भरी निहचे सजनी पुनि, तात हितैपन मेरो महा है ।
सुन्दर रूप सुरूप सखी, पन मोमन में रमराम रहा है ॥
मोतिन माग तो डार चूकी, उरधार चूकी अपनो दुलहा है ॥
चाप निगोडो अब जरजाह, चढ्यो तो कहा न चढे तो कहा है॥१॥

ढाल चेपक तर्ज-पूर्ववत
काच पाचके अन्तर महलो, अमृत तज विष कुण खावे ॥राम॥४॥
मुझ मनमें तो निश्चय करीयो, नाथ अयोध्या दिलचावे॥राम॥५॥

ढाल मूलगी चेपक
धनुष्य की पूजादी करती, राम को नाम अनुसरती, दिल विच ध्यान ही धरती, श्रोता जन सुणजो अब सारा, पहिरे कुण सिय की वरमाला ॥ मन्य० ॥ २६ ॥

टाल उगणीशवी तर्ज-काना प्रीत लागी हो ॥
'सीता' 'रामे' मनचाहा, जेम चकोरी चंदसूं ए,प्रीतज साची हो ।१।

भूधर खेचर राजवी, भरमाणा भारी हो।
भाग्य वडो ते भूपनो, जे ए पावे नारी हो॥ सीता॥ २॥
नारदे भाखी जेहवी, सा तेहवी जोई हो।
'भामण्डल' भूंई पड्यो, अति परवस्य होई हो॥ सीता॥ ३॥
'जनक' राम तिहां आयके, ए साच कहावे हो।
धनुष्य चढावे जे सही, ते ए कन्या पावे हो॥ सीता॥ ४॥
ऊठ्या केड काठीकरी, जे राय सनूरा हो।
धनुष्य चढावण करणे, शूरामां शूरा हो॥ सीता॥ ५॥
सापां साथे वींटीया, नावे गहता ऊंहो।
फरमी हो कोई नासके, जे गाढा ताऊंहो॥ सीता॥ ६॥
ज्वाला मूके छे घणी, दाजन्ता भाजी हो।
अधो[1] मुख अलगा रह्या, मन मांही लाजी हो॥ सीता॥ ७॥

ढाल क्षेपक मूलगी

विद्याधर चाप पास आवे, अहि अरु अगनी दीखावे, भाग्य विन ऐसा ही थावे। कहो कुण चाप पास जावे, जावे सो शर्म रहित आवे॥ सत्य०॥ २७। सहुको अलगा ही नाठा, धनुष्य के आगे ही त्राठा, पूर्वभव पाप कीया माठा। रोस कर रघुवरजी ऊठे, सुमित्रा नन्द है पूठे। सत्य व्रत पालो॥ २८।

—ढाल मूलगी—

इण अवसर श्री 'रामजी', लीला गति कारी हो।
धनुष्य समीपे आवीयो, आछो अवतारी हो॥ सीता॥ ८॥
'चन्द्र गत्यादिक' राजवी, करता अति हासोहो।
खेचर खेंचीनठहर्यो, एहनी शी आशोहो॥ सीता॥ ९॥
वज्र[2] पाणी जिम वज्र ने, 'राघवजी' हरसे हो।
शान्त करी अहि अग्नि ने, कर साथे फरसे हो॥ सीता॥ १०॥

—ढाल क्षेपक तर्ज–लड्का—

प्रबलबली आवीयो धावीयो रघुपति',(टेर)धनुष्य महासो तिणवार आवे

१ नीचू। २ इन्द्र।

ुण्यके सन्मुख पाप अलगो हुवे, तेम सगला उपद्रव पुलावे। प्र०। १।
ज्रावर्त नामथी धनुष्य सूर सेवता, सहश्र गमे सानिधि देवा।
ोरका शोर सुन सर्प अलगा हुवे, तेमने निकट कोईयन रहेवा। प्र. २।
ूजी अर्ची करी आप सम्भावीयो, ऐंचोयो खांच कर्णान्त तांई।

ढाल मूलगी

नेत्र१ तणी पर चालीने, प्रभु पणछ चढावे हो।
आंख कर्णान्तक खेंचीने, टंकारव सुणावे हो॥ सीता॥ ११॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पूर्ववत्

धनुष्य टंकारथी शब्द उठ्यो इसो, जाणे के प्रलयसमो दिखाई। प्र. ।३।
पर्वत शृङ्ग तूटी परे धरणपे, समुद्र ना जलजिहां क्षोभपावे।
शेषपिण खलवल्या, देवपिण टलवल्या हयगय बंधन तोड़ जावे। प्र.४।

ढाल क्षेपक पूर्ववत्

०८ यह 'चन्द्रगति' सुनिया, शोच से मस्तक ही धुनिया, अरे
'०' होगये हित पुनीया। धनुष्य निज खोय दीया दोई, आये
निज स्थान मान खोई॥ सत्य व्रत पालो॥ २९॥

ढाल मूलगी

'राम' गले वरमालिका, 'सीता' पहिरावे हो।
काज सर्यू चित्त चिन्तव्यू, अधिकूं सुख पावे हो॥ सीता॥१२॥

क्षेपक ढाल मूलगी

जानिकी अधिकी हरखावे, माल गल रघुवर के ठावे, स्त्रियां मिल
मङ्गल ही गावे। ब्याव का बाजा वजवावे, अपर नृप निज निज
पुर जावे॥ सत्य॥ ३०॥

ढाल मूलगी

बीजो२ 'लक्ष्मण' चढावीयो, एह विधी कीधी हो।
अष्टा दश वर कन्य का, खग गयां दीधी हो॥ सीता॥ १३॥
खिल्वाणो विद्याधरु, 'भामण्डल' लेई हो।
निज नगरं चलि आवीयो, भूमण्डले केई हो॥ सीता॥ १४॥
तेड्या दशरथ राजवी, मह मञ्जन माथे हो॥

१ नेत्रनी कोटी। २ अर्पणा वर्न।

—ढाल मूलगी—

रायतिहां 'दशरथ' बोलावे, हर्ष दिल मिथिला में आवे, जनक नृप सामो ही जावे। महिपति दोनों ही मिलीया, दूध में शाकर ही भिलीया ॥ सत्य ॥ ३१ ॥ बनडा की खुब करी त्यारी, शहर में आई असवारी, निरखवा आया नरनारी। मूर्ती देखी नहीं आगे, लोक कहै बनड़ो ओ सागे ॥ सत्य व्रत ॥ ३२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–ख्याल की

तूं चाल चंपली, बनड़ो आयो है माणक चौक में ॥ टेर ॥
झमकू चाली जोर से सरे, दोली आई दौड।
हुलासीरो हार सहेल्यां, तटके नाक्यो तोड रे ॥ तूं चाल ॥ १ ॥
हंजा हेलो पाडीयो सरे, आव ऊरी उमराव।
जमनी तो झाला करे सरे, अणची वेगी आवरे ॥ तूं चाल ॥ २ ॥
पानी रो तो पतो न लागो, वाली गमायो बोर।
चांदा चाली कर-चतुराई, सूंजी मचायो शोर रे ॥ तूं चाल ॥ ३ ॥
लाली लागी देखवा सरे, भंवरी भांगी भीड।
चुतरी तो चूडो फूटगीयो, चुनी फाड्यो चीर रे ॥ तूं चाल ॥ ४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पदरी—भूलचन्दजी कृत

बनड़ो घूमरयो छे जी, राजा 'जनकजी' रे द्वार ॥ टेर ॥ विद्याधर को मान मारीयो, असुर मनाई हार, बड़े २ भूपती ए सेवित, इण सम नहीं संसार ॥ ब० ॥ १ ॥ सुरपति सरिसो एहनो, मोह रया नरनार। धन्य २ जानि की कुंवरी, भल पायो भरतार। ब. २।

ढाल मूलगी

विवाह भलो सीता तणो कीधो नरनारी हो ॥ सीता ॥ १५ ॥

ढाल क्षेपकतर्ज–सत्वरो जोर चल्योरे छिन्दनारी को
स्वामी श्रीमगलमलजी म. कृत (स्वामीजी श्रीरावतमलजी म. से उपलब्ध)

सगरो भाग्य भलो रे सीया नारी को, जग जश छायो रे जनक कुँवारी को ॥ टेर ॥ धन्य २ सती सीया, पूर्व पुण्य कीया, पायो पति अवतारी को ॥ सगरो ॥ १ ॥ धनुष्य नमायो भारी, प्रबल प्रताप कारी, मान मिटायो अहंकारी को ॥ सगरो ॥ २ ॥ जुग

आंसू न्हांखी भारवती, सा गद गद वाणी हो ॥ सीता ॥ २६ ॥
अधरोने जल मोकल्यू, हूं क्यूं चित न आणी हो ? ।
एटले नाजर आवीयूं, ते आयो पाणी हो ॥ सीता ॥ २७ ॥
पाणी मस्तक मूकीयू, राणी सुख मान्यू हो ।
धन्य जमारो माहरो, मैं आजज जाण्यू हो ॥ सीता ॥ २८ ॥
राजाए नाजर ने पूछीयू, केम वार लगाई हो ।
वृद्ध भणी प्रभु वेग सूं, हूं नहीं शक्यू आई हो ॥ सीता ॥ २९ ॥
शुद्धा पांव पड़े नहीं, चालन्ता पग घासूं हो ।
खूं २ करतो खांसतो, सुगालो दीसूं हो ॥ सीता ॥ ३० ॥
दांत पड्या खोखो थयो, मुख लाल पडन्ती हो ।
नारी न आवे आसनी, नविसार करन्ती हो ॥ सीता ॥ ३१ ॥
जोर घटे तन लीलरी, काने न सुणाय हो ।
कर कम्पे शिर धूजणी, वृद्धापाये थाय हो ॥ सीता ॥ ३२ ॥

ढाल तेहक तर्ज—धमाल—स्वामी श्री रतनचन्दजी म० कृत

मात पिता सुत बांधवा हो, सगा सनेही मित्त ।
परणी हाथरी पदमणी हो, ते पिण न देवे चित्त ॥ १ ॥
बूढापो वैरी आवीयो हो ॥ टेर ॥
बोलन्ता जीभ थडथडू हो, कांनां सुणे नहीं वेण ।
नाकन आवे वासना हो, झरख्या दोनों नेण ॥ बूढापो ॥ २ ॥
काया पड गई जोजरी हो, पग पड़े नहीं ठाय ।
डांग पकड ऊभो रहे हो, उठी उठी पड जाय ॥ बूढापो ॥ ३ ॥
दांत श्रेणी खोली पडी हो, टिर गया दोनों होट ।
लालां ललकी मुख थकी हो, आय पडी जगलणो पोट ॥ बू. ४॥
माथल बलखीणो पड्यो हो, मल पड गया शरीर ।
निकली हाडरी पासली हो, सूख गयो भोलो पीर ॥ बूढापो ५ ॥
सास सास वधियो घणो हो, आवे मींट अपार ।
डेहली होगई डूंगरी हो, नो कोसथयोरे बाजार ॥ बूढापो ॥ ६ ॥

वात कहै जो हिततणी हो, तो नवि माने कोय ।
साठी बुद्ध नाठी कहै हो, सुणने सोमां रह्यो जोय ॥ बूढापो ७ ॥

ढाल मूलगी

बूढापाना दोषए, राजाजी, जाणे हो ।
विषय थकी मन वाली ने, वैरागे आणे हो ॥ सीता ॥ ३३ ॥
'सत्यभूती' नामे भला,मुनिवर चउनाणी हो ।
वनमें आवी समोसर्या, गुरु आगम जाणी हो ॥ सीता ॥३४॥
पुत्रों सूं तव रायजी, बहुयरने सासू हो ।
वन्दन काजे आवीया, पुरलोक उल्लासू हो ॥ सीता ॥ ३५ ॥
देई प्रदिक्षणा साधुने, पद पंकज वन्दे हो ।
सन्मुख सेवा साचवे, भव पाप निकन्दे हो ॥ सीता ॥ ३६ ॥
'चन्द्रगति' सुत नारी सूं, खेचर परिवारे हो ।
'रथ[१] आवर्त' जपरवते, जई क्रीडा कारे हो ॥ सीता ॥ ३७ ॥
बाहुड़तां[२] निजरे पड्या, ऋषि राय विराजे हो ।
आवीने सेवा करे, ऋषि देशना साजे हो ॥ सीता ॥ ३८ ॥
अभिलापी 'सीता' तणो, 'भामण्डल' दीठो हो ॥
मात पिता सुत नारीनो, भव भाख्यो मीठो हो ॥ सीता० ॥३९॥
'भामण्डल' 'सीता' सही युगलपणे जायां हो ॥
मात विदेहा जाणवी, कहीने समजाया हो ॥ सीता० ॥ ४० ॥
'पिंगल' देवे तूं हर्यो, निज वैर विचारी हो ॥
तूं वाध्यो खग मन्दिरे, घरे एह कुंवारी हो ॥ सीता० ॥ ४१ ॥
जाति स्मरण पामीने, 'भामण्डल' देखे हो ॥
साधु वदे साचो सहू, मनमांहे विशेषे हो ॥ सीता० ॥ ४२ ॥
मूर्छाए धरणी पड्यो, ऊपाडी लीधो हो ॥
पगे लाग्यो सीता तणे, मैं अविनय कीधो हो ॥ सीता० ॥ ४३ ॥

---

१ रथावर्त । २ पाछा फरता ।

क्षेपक ढाल मूलगी

मुनिपे भेदही पायो, 'भामण्डल' सुनके घबरायो, हाय में अनरथ करवायो ॥ बहिन से वंछना कीनी, नरकनी नीव मैं दीनी ॥ सत्य व्रत पालो ॥३३॥ मुनि कहै कर्मगती भारी, टरे नहीं कोई से टारी, सीता तो बेन है थारी ॥ आयने शीष ही नामे, निज कृत दोष ही खामे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ३४ ॥

ढाल मूलगी—

सीता दे आशीषजी, चिरंजीवो भाई हो ॥
करे घणी पगे लागणी, माचित्र बोलाई हो ॥ सीता० ॥ ४४ ॥
धाय मिलिया 'रामजी' लीये कण्ठ लगाई हो ॥
मिश्रीथी मीठी खरी, जगमें एह सगाई हो ॥ सीता० ॥ ४५ ॥
'भामण्डल' पट थापीयो, आपणपे राजा हो ॥
वैरागे व्रत आदरे, गुरु तारण जाजा हो ॥ सीता० ॥ ४६ ॥
साधु नमी राजा नमी, नमी 'राघव' राया हो ॥
'भामण्डल' सीता नमी निज मन्दिरे आया हो ॥ सीता० ॥४७॥
ढाल भली ऊगणीसवीं, सीता परणावी हो ॥
'केशराज' श्री रामनी, पटनारी कहावी हो ॥ सीता० ॥ ४८ ॥

दोहा (सबाव रागे)

'सत्यभूती' मुनिवर भलो, सत्यदेव सुविशाल ॥
शाशन सोह[1] वधारणो, षट् कायां प्रतिपाल ॥ १ ॥
विधिसूं देई प्रदक्षिणा, करजोडी नरनाथ ॥
प्रश्न करे प्रगट पणे, निसुणे सघलो साथ ॥ २ ॥

—ढाल वीशवी तर्ज—वीर नृपती अन्यदास में (हमीरोयारी)—

हमसूं भाखो एहजी, पूर्व भवान्तर वात ॥ साधुजी ॥
सुख दुःखनो अवदातजी, वांदी जमारो जात ॥ साधुजी ॥हम १॥
'सेनापुर' थो सुन्दरू, 'भावन शाह' सुजाण ॥ साधुजी ॥
पत्नी[2] थी तसु दीपिका, सुता 'उपास्ति' अजाण ॥ सा० ॥हम २ ॥

---

१ शोभा बधारनार। २ स्त्रीदती।

वात कहै जो हिततणी हो, तो नवि माने कोय ।
साठी बुद्ध नाठी कहै हो. सुणने सोमां रह्यो जोय ॥ बूढापो ७ ॥

ढाल मूलगी

बूढापाना दोषए, राजाजी, जाणे हो ।
विषय थकी मन वाली ने, वैरागे आणे हो ॥ सीता ॥ ३३ ॥
'सत्यभूती' नामे भला,मुनिवर चउनाणी हो ।
वनमें आवी समोसर्या, गुरु आगम जाणी हो ॥ सीता ॥३४॥
पुत्रों सूं तव रायजी, बहुपरने साथ हो ।
वन्दन काजे आवीया, पुरलोक उल्लास हो ॥ सीता ॥ ३५ ॥
देई प्रदिक्षणा साधुने, पद पंकज वन्दे हो ।
सन्मुख सेवा साचवे, भव पाप निकन्दे हो ॥ सीता ॥ ३६ ॥
'चन्द्रगति' सुत नारी सूं, खेचर परिवारे हो ।
'रथ[1] आवर्त' जपरवते. जई क्रीड़ा कारे हो ॥ सीता ॥ ३७ ॥
बाहुड़तां[2] निजरे पड़्या. ऋषि राय विराजे हो ।
आवीने सेवा करे, ऋषि देशना साजे हो ॥ सीता ॥ ३८ ॥
अभिलाषी 'सीता' तणो, 'भामण्डल' दीठो हो ॥
मात पिता सुत नारीनो, भव भाख्यो मीठो हो ॥ सीता० ॥३९
'भामण्डल' 'सीता' सही युगलपणे जायां हो ॥
मात विदेहा जाणवी. कहीने समजाया हो ॥ सीता० ॥ ४० ॥
'पिंगल' देवे तूं हर्यो, निज वैर विचारी हो ॥
[illegible] खग मन्दिरे, घरे एह कुंवारी हो ॥ सीता० ॥ ४१
[illegible] पामीने. 'भामण्डल' देखे हो ॥
साधु वंदे साचो सहु, मनमांहे विशेषे हो ॥ सीता० ॥ ४२ ॥
मूर्छाए धर्णी पड़्यो, उपाडी लीधो हो ॥
पगे लाग्यो सीता तणे, मैं अविनय कीधो हो ॥ सीता० ॥ ४३

---

१ रथावर्त । २ पाछा फरता ।

क्षेपक ढाल मूलगी

मुनिपे भेदही पायो, 'भामण्डल' सुनके घबरायो, हाय में अनरथ करवायो ॥ बहिन से वंछना कीनी. नरकनी नीव में दीनी ॥ सत्य व्रत पालो ॥३३॥ मुनि कहै कर्मगती भारी, टरे नहीं कोई से टारी. सीता तो बेन है थारी ॥ आयने शीप ही नामे, निज कृत दोष ही खामे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ३४ ॥

ढाल मूलगी—

सीता दे आशीषजी, चिरंजीवो भाई हो ॥
करे घणी पगे लागणी, माचित्र बोलाई हो ॥ सीता० ॥ ४४ ॥
धाय मिलिया 'रामजी' लीये कण्ठ लगाई हो ॥
मिश्रीथी मीठी खरी, जगमें एह सगाई हो ॥ सीता० ॥ ४५ ॥
'भामण्डल' पट थापीयो, आपणपे राजा हो ॥
वैरागे व्रत आदरे, गुरु तारण जाजा हो ॥ सीता० ॥ ४६ ॥
साधु नमी राजा नमी, नमी ' राघव ' राया हो ॥
'भामण्डल' सीता नमी निज मन्दिरे आया हो ॥ सीता० ॥४७॥
ढाल भली ऊगणीसवीं, सीता परणावी हो ॥
'केशराज' श्री रामनी, पटनागी कहावी हो ॥ सीता० ॥ ४८ ॥

दोहा (सवाव रागे)

'सत्यभूती' मुनिवर भलो, सत्यदेव सुविशाल ॥
शाशन सोह१ वधारणो, पट् कायां प्रतिपाल ॥ १ ॥
विधिसूं देई प्रदक्षिणा, करजोडी नरनाथ ॥
प्रश्न करे प्रगट पणे, निसुणे सघलो साथ ॥ २ ॥

—ढाल वीशवीं तर्ज—वीर नृपती अन्यदास मे (दमीरोयारी)—

हमसुं भाखो एहजी, पूर्व भवान्तर वात ॥ साधुजी ॥
सुख दुःखनो अवदानजी, वांदी जमारो जात ॥ साधुजी ॥हम १॥
'सेनापुर' यो सुन्दरूं, 'भावन शाह' सुजाण ॥ साधुजी ॥
पत्नी२ थी तसु दीपिका, सुता 'उपास्ति' अजाण ॥ सा० ॥हम २ ॥

१ शोभा बधारनार। २ स्त्रीहती।

साधु नी निन्दा करी, भव में भमी अपार ॥ साधुजी ॥
जीव तुम्हारो ओअछे, आगे सुणो अधिकार ॥ सा० ॥ हम ३ ॥
'चन्द्रपुरी' रे सुहामणी, 'धनगिरी' सुन्दरी नार ॥ साधुजी ॥
'वरुण' नामे सुत जाईयो, वर्ते शुभ व्यवहार ॥ सा० ॥ हम ४ ॥
साधुनी सेवा करे, श्रद्धालू समभाय ॥ साधुजी ॥
सुख दुःख ना अनुसारथी, मतितो उपजे आय ॥ सा० ॥ हम५॥
धानकी खण्डे जाणीये, उत्तर कुरुवर खेत ॥ साधुजी ॥
युगल पणे तिहां ऊपन्यो, शुभ कर्मो नो हेत ॥ साधुजी ॥हम ६॥
तीन पल्यनां आऊखो, भोगवी सुर सुखसार ॥ साधुजी ॥
'पुरुखला' नामेछे पूरी' 'पुरुखलावती' मजार ॥ सा० ॥ हम ७॥
'नन्दीघोष' राजा भलो, पृथ्वियो राणी होय ॥ साधुजी ॥
'नंदी वर्द्धन' नामथी, नन्दन नीको जोय ॥ सा० ॥ हम ॥ ८ ॥
'नंदी वर्द्धन' ने दीयो, राये राज्य तेवार ॥ साधुजी ॥
'यशोधर' गुरु पासती१, आप हुवा अणगार ॥ सा० ॥ हम ९ ॥
श्रावक नां व्रत पालीयां, पंचम कल्पे देव ॥ साधुजी ॥
जय २ कार हुवो घणो, सुरवर सारे सेव ॥ सा० ॥ हम ॥१० ॥
पूर्व विदेहे जाणीये, वैताढ्ये सुचि शेप ॥ साधुजी ॥
उत्तर श्रेणीएछे भलो, 'शशीपुर' नामे देश ॥ सा० ॥ हम ११ ॥
'रत्नमाली' विद्याधर, 'विद्युतलता' नार ॥ साधुजी ॥
'सूर्य जय' जय कारीयो, पुत्र भलो अवधार ॥ सा० ॥ हम १२॥
'रत्नमाली' नृप चालीयो, 'सिंहपुरी' नो ईश ॥ साधुजी ॥
'वज्र नयन' ने जीतवा, मनमें आणी रीस सा० ॥ हम १३ ॥
सिंहपुरी ने बालतो, चाले अवला चाल ॥ साधुजी ॥
पशु२ पंखीथी नाटले, होई रह्या विकाल ॥ सा० ॥ हम १४ ॥
पूर्व जन्म तणो भलो, पुरोहित नो जीव ॥ सा०
'उपमन्यु' ए नामथी, देव दयाल सदीव ॥ सा० ॥ हम १५ ॥
'सहश्रार' सुरलोकथी, आवी बोले एम ॥ सा०

१ पासे (पाठान्तरे पासे) । २ पशु पंखीथी नहीं डरनां विकाल थई रह्यां

उत्कृष्ट पातिक एहवूं, तुमने सूजे केम ? ॥ सा० ॥ हम १६ ॥
'भूरीसुनन्दन' तू हतो, पूर्व जन्मांरे राय ॥ सा०
मांस तज्यो तो थे सही, विप्र खवाड्यो आय ॥ सा० ॥हम १७॥
सोही पुरोहित१ एकदा, स्कंद हण्यो गजथाय ॥ सा०
'भूरी सुनन्दन' राजीए, घरे आण्यो गहताय ॥ सा० ॥हम १८॥
सो हाथी रण में हण्यो, 'भूरी सुनंदन' थाम ॥ सा०
गंधारी उदरे ऊपन्यों, ,अरि सुदन' तस नाम ॥ सा० ॥हम १९॥
जाति स्मरण पामीयो, लीधो संयमभार ॥ सा०
कल्प आठमें देवता, सोहै देव उदार ॥ सा० ॥ हम ॥ २० ॥
'भूरी सुनन्दन' पामीयो, अजगरनो अवतार ॥ सा०
दावानल मांही बल्यो, कर्म न चूके लार ॥ सा० हम ॥ २१ ॥
नरके पहूंच्यो दूसरे, उहांठी में तुज आय ॥ सा०
समजाव्यो ते कारणे, एतूं हूवो राय ॥ सा० ॥ हम ॥ २२ ॥
मांस तलीने वापर्यूं, तेहनो ए फल लाध ॥ सा०
आज होईने आकरो, कांई करे अपराध ॥ सा० ॥ हम ॥ २३ ॥
एम सुणीने ऊतर्यो, 'कुल नन्दन' नृप कीध ॥ सा०
'सूर्यज्जय' साथे करी, राजा संयम लीध ॥ सा० ॥ हम ॥ २४ ॥
स्वर्ग सातमें भोगवी, सुरसुखनो विस्तार ॥ सा०
'सूर्यजय' चवी तूं हुवो, 'दशरथ' राय उदार ॥ सा० ॥ हम २५॥
'रत्नमाली' आवी हुवा, 'जनक' रायजी एह ॥ सा०
'कनक' 'जनक' भाई भलो, उपमन्यु ससनेह ॥ सा० ॥ हम २६॥
'नंदोघोप' ग्रैव्येकनां, भोगवी सुरसुख भूरी ॥ सा०
'सत्य भूती' ए हूं हुवो, सूरि शिरोमणि सूरी ॥ सा० ॥ हम २७॥
एम सुणी वैरागीया, प्रणमी गुरुना पाय ॥ सा०
राजा मंदिर आवीयो, लोक लीधा बोलाय ॥ सा० ॥ हम ॥२८॥

१ पुरोहित मरी हे ते हूँ पुरोहितनाभवे स्कन्ध राजाना मारवाथी मरीने हाथी थयो, त्यांथी मरीने भूरीनन्दन राजानी स्त्री गंधारी ना पेटे पुत्र पणे ऊपन्यो ।

पाछल बुद्धि नारी केरी जाणो हो, एम्हा० पाछल० रा।
केणी सुणवी प्रभुजी दिलमें नाणोहो, एम्हा० के० रा० ॥ ३ ॥
नारी कथने बहुत अकारज हुवो हो, एम्हा० नारी० रा०।
शास्तर गावे केता देवूं दुहा हो, एम्हा० शा० रा० ॥ ४ ॥
हरगिज राज प्रभुजी मैं नहीं लेवूं हो, एम्हा० हर० रा०।
छाने नहीं हूं चवड़े २ केवूं हो. एम्हा० छा० रा० ॥ ५ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

राय कहै परतिज्ञा पालो, म्हारो ए ऋण ही तुम टालो, राम कहै मुजस्हामों भालो। चाय नहीं राजा की थारे. लोक सहु बैठा झक मारे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ३५ ॥ विनयए बापनो करवो, भ्रात को वचन दिल धरवो. मात को विखादही हरवो। 'भरत' जल नैत्र ही न्हांखे. वचन मुख दीन ही भाखे ॥ सत्य व्रत ॥ ३६ ॥ राम का चरण ही ग्रहीया, आपके शरणे ही रहीया. बात ए मन की जे कहीया। हरगिज नहीं राज लूं मैं तो, व्यर्थ ही कोड़ करो थे तो ॥ सत्य व्रत ॥ ३७ ॥

—सवैया—क्षेपक

भरत ? पिता की आण मानीये धर्म जाण—
मानीये न आण एतो लोक मांहीं लज्जिये ॥
भर्त कहै 'राम' सुनो नहीं मेरो काज एतो—
तुमहु अनीत करो मोही नाह रजिये ॥
राम ? तुमे करो राज सब ही की वधो लाज,
तुम बैठे अवर करे एतो बड़ी कजिये।
कीजिये विनय ताको, मानिये हुकम ताको—
'राम' कहै कह्यो करे सोई दुनियां में बड़ो जश लीजिये ॥

सोरठ—जननी जणे अनेक, सो कायर किस काम का।
पिता वचन शिर टेक. पूतवहै परमाण यह ॥ १ ॥

दोहा—पिता कहै सुण भर्त ? अब, लेहू शीघ्र तुम राज।
पालो परजा आपणी, घणी बधारो लाज ॥ १ ॥

राज लाज मुज काम नहीं, मेरे परम सन्तोष।
हूं त्यागी संसारनो, साधू मार्ग मोक्ष॥ २॥
रामोवाच—पिता वचन नहीं लोपीये, लीजे शीष चढाय।
कालपाय संयमग्रहो, वधे धर्म सुखदाय॥ ३॥
रामकहै भाई भरत ? तात वचन परणाम।
सो सुबुद्धिविनीतनर, धर्मी परम सुजाण॥ ४॥
भर्तोवाच—'भर्त' कहै सुण रामजी, एअनीत नहीं नीत।
पूज्यनीक तुम जगत में, करो सवन की चित्त॥५॥

ढाल मूलगी

घणी किसीए केलवणी करो, सो वातां की एकोरे।
राम छतां हूं राजा न थाऊं, म्हारी एहिज टेकोरे॥ एविधि १९॥
राजाजी सूं 'राम' तदाकहै, 'भरत' वचन ए साचोरे।
हूं वनवासे जावूं छूं सही, पालो तुमए वाचोरे॥ एविधि २०॥
आज्ञा लेईने पगे लागीयो, मूर्छांणों तव वापोरे।
भरत सुभाई रोवे छे घणूं, हाथे ग्रही शर[1] चापोरे॥एविधि २१॥

—ढाल मूलगी क्षेपक—

वज्रसम वचन उचरियो, खाय नृप मूर्छा ही परीयो, धरण को शरणो ही वरियो। थयो नृप सचेतन त्यारे, कहै कित चले पुत्र प्यारे॥ सत्य०॥ ३८॥ नमनकर वनवासे चाल्यो, राज्य यह भर्त ने आल्यो, किणी रो नहीं रेवे पाल्यो। 'भर्तजी' मग्ल माद रोवे कहै जिन होनहार होवे॥ सत्य०॥ ३९॥

—ढाल मूलगी—

पद पंकज प्रणमी माताना, वचन वदे समनेहोरे।
तारे नन्दन हूं छूं जेहवो, तेहवो भरतज एहोरे॥ एविधि २२॥
वाचा पालवा तणे कारणे, राज्य भरतने आल्योरे।
मुज बैठो तो राज्य करे नहीं, हूं वनवासे चाल्योरे॥एविधि २३॥
माजी साहस आणजो खरो, कायरनो मत होवोरे।

१ धाए।

योग वियोग जग करतानो कीयो, जललेई मुख धोवोरे ।एविधि २४।
एम सुणन्तां धरतीए गीरी पड़ी, फरि २ मूर्छा पावेरे ।
शीतल ताए करावे चेतना, हैयुं घणूं भरी आवेरे ॥ एविधि २५॥
हूं जीवाडी केही पापीये, मूर्छा थी मरी जातीरे ।
पुत्र वियोगथकी मरवूं भलूं, काती कापे छातीरे ॥ एविधि २६ ॥
प्रभुजी संयम मार्ग आदरे, सुत होवे वनवासीरे ।
वज्रमहीछे मही तूं कौशल्या, जीवे कांई विमासीरे ॥एविधि २७॥
'राम' वदारे मातासूं कहै, एम करे केम शाणीरे ।
कायर नारीनो एकामछे, तूं वडरायां राणीरे ॥ एविधि २८ ॥
सिंह एकाकी वनमांहे फरे, वे परवाही वीरोरे ।
निज जननी तो घर बैठी रहे, नाणे कोई अधीरोरे ॥ एविधि २९॥
बापतणे रे शिर ऋण जो रहै, तेतो सुतनो दोषो रे ।
मुज घर रहेतां ऋण नवी उतरे, आणोए संतोषो रे ॥एविधि ३०॥
एमसमजावीने पगे लागीयो, अवर माय शिर नामी रे ।
प्रभुजी वन वसवाने चालिया, हर्षपणेरो पामी रे ॥एविधि ३१॥
इकत्रीशमीरे ढाले रामजी, चाल्याछे वनवासेरे ।
'कथराज' 'कैकेयी' राणीने, वचने करी मह त्रासेरे ॥ एविधि ३२॥

ढाल दीपक मूलली

आश्वासन देई 'रघुवरजी', हर्ष दिल चाल्यो हितधरजी, माता अन्य नमस्कार करजी । जानकी खबर लही जामो, चले अब ... पूठे तामो ॥ मन्य० ॥ ४० ॥

दोहा (गोडी रागे)

पतिव्रता व्रत साचवे, पतिसूं प्रेम अपार ।
ते सुन्दरी संसार में, दीसे छे दो चार ॥ १ ॥
खावे पीवे पहिरवे, करवे भोग विलास ।
सुन्दरीनो मन सादरो, जबलग पूरे आस ॥ २ ॥
सुख में आवे आसनी, दुःख में अलगी जाय ।

स्वार्थणी सा सुन्दरी, सखरा[1] में न गणाय ॥ ३ ॥
सुसराने सादरपणे, सीताजी पगे लागि।
कौशल्या प्रणमी करी, चाली अनुमति मागि ॥ ४ ॥

—ढाल बावीशमी तर्ज–विमला चल चन्दी—

खोले लीधी खांचीने, बालक नी परे तेहहो।
न्हवरावी नयनोदके[2], वाणी वदे सस नेहहो ॥ १ ॥
'राम' रसे राची घणूं, माची प्रियने प्यारहो।
साची शील शिरोमणि, सत्यवन्ती संसार हो ॥ राम० ॥ २ ॥
बहुअर ! चोराने जावादे, तूं मत जावे आप हो।
व्हालो नहींय विदेशडो, सहवो अति सन्ताप हो ॥ राम० ३ ॥
वाहन विविध प्रकारनां, तूं चयठी चालन्त हो।
दोहिलो पाये चालवो, क्यूं हर्षे हालन्त हो ॥ राम० ॥ ४ ॥
दोहिलो तृपाअरु भूखडी, दोहिलो लेवो वास हो।
दोहिलो टाढने तावडो, रहवो नित्य उदास हो ॥ राम० ॥ ५ ॥
कोमल काया ताहरी, दोहिलो धरतीए शयन[3] हो।
पीछे ही पछतावसो, पाम्याथी कुचैन हो ॥ राम० ॥ ६ ॥
प्रियने पग बंधन कही, परदेशो में नार हो।
नारी तो घरमें भली, बाहिर पड़ो विकार हो ॥ राम० ॥ ७ ॥
फलने पेखी पंखीया, तूटी पड़े ततकाल हो।
नारी नयने निरखतां, उपजे अति जंजाल हो ॥ राम० ॥ ८ ॥
मानी हमारी सीखडी मति जा प्रियने लार हो।
सासुनी सेवा कर्या प्रिय सेव्यो सो चार हो ॥ राम० ॥ ९ ॥
आई ? एहवूकां कही, मैं अलगी न रहाय हो।
नारी कही तनु छांहडी, साथे रहो सुख पाय हो ॥ राम० १०॥
वाला सुख संसारनूं, जेको प्रिय विण होय हो।
प्रिय साथे दुःख ही भलूं, राम भाखे सहु कोय हो ॥राम० ११॥

१ सखा–स्नेही। २ नयन—उदक आंखनूं पाणी। ३ सुई रहवूं।

पुरुषतणी अर्धाङ्गना, नारीनू तो नाम हो ।
ते कहो अगली किम पड़े, प्रिय नामे विश्राम हो ॥ राम० १२॥
जेह नारी प्रिय मानीयो, तेणे मान्यो जगदीश हो ।
नारीनूं परमेश्वरु, नाथ नमूं निसदीश हो ॥ राम० ॥ १३ ॥
पियुडो आगे संचरे, नारी पूठे जाय हो ।
चरण कमल नी रेणुका[1], तन लागे सुख थाय हो ॥ राम० १४॥
प्रियनूं मुख अवि लोकतां, नयणे अमिय भराय हो ।
दुःख तो सो वर्षा तणूं एक क्षणमांहे पुलाय हो ॥ राम० १५ ॥
जलहरणे[2] पूंठे थकी, विद्युत् जेम शोभाय हो ।
तेम पियुजीनो पाखती, नारी रहे सो न्याय हो ॥ राम० १६ ॥
एम कहीने नीकली, लही सासु आशीष हो ।
आतम राम ज रामजी, मनमें एह जगीश हो ॥ राम० ॥ १७ ॥
हुई छे होसे वलि, जे पति भक्ति नारी हो ।
तिणमें आदि उदाहरणे, सत्यवती[3] अवधारी हो ॥ राम० ॥ १८ ॥
नगर तणी नारी मिली, रोवन्ती असराल हो ।
पति व्रता मांहे घणू, सराहे[4] है सुविशाल हो ॥ राम० ॥ १९ ॥
कष्ट पड़े वनवास नो, भय नवि माने जेह हो ।
उभय कुल उजवालणी, आज अछे त्रिये[5] एह हो ॥ राम० ॥ २० ॥
हर्ष जिस्यो थयो स्वयम्वरे, तेसो ही वनराम हो ।
कोइन दीसे आंतरो, साहसी[6] तने शाबाश[7] हो ॥ राम० ॥ २१ ॥
आननतो[8] अति उजलूं, आरती नहीं लव लेस हो ।
भाग्यवतीग भामिनी, प्रिय साथे परदेश हो ॥ राम० ॥ २२ ॥

—मूलगी टाल क्षेपक—

रामजी वनवासे जावे, रात सुन परजा दुःख पावे, सभी को जियड़ो थरहरे ॥ 'राम' से प्रेम हो धरता परस्पर बात यूं करता ॥

---

१ रज । २ वरसाद । ३ अवधारयूं-ध्यानमां लेवूं । ४ सराहवूं-प्रशंसा करवी । ५ त्रिया-स्त्री । ६ साहसीक-साहस करनार । ७ ८ फारसी शब्द छे, तेनो अर्थ धन्य एवो थाय छे । ८ मुख ।

सत्य व्रत पालो ॥ ४१ ॥

स्वामी श्रीनथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–तावड़ा धीमो सो पड़जा–

अकल कित गई दशरथ नृपनी २, 'राम' भणी वनवास देईने
करे पूरी अपनी ॥ टेर ॥

'राम' सरीसा पूत जगत में, जननी नहीं जाया ।
जिनको दूर छांड वन भीतर, 'भरत' तखत ठाया ॥ अकल १ ॥
नहीं सीख निज मतनी पतनी, भूपति भरमायो ।
नहीं लायक हे तखत 'भरत' शिशु, सब जग दरसायो ॥ अकल २॥
जासी राज 'अयोध्या' केरो, फेरो फिर देसी ।
निर्बलजानी खटपट कर कोऊ, हरसी परदेशी ॥ अकल ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

खबर तब 'लक्ष्मण' ने पाई, अबर वर हेरयो नहीं माई भरत की
दशा केम आई । किसी का जोर नहीं धारूं, चिन्तित निज काज
ही सारूं ॥ सत्य० ॥ ४२ ॥

ढाल मूलगी

'लक्ष्मण' कोपे कलकल्यो, कालो पीलो थाय हो ।
जाणे अब करिये किस्यूं, मातियन को ठहराय हो ॥ राम० २३ ॥
घर भण्डारं ए गरवीने क्युं मांगे दुःख दाय हो ।
ताततो सरल स्वभावीया, कपट कारी ए माय हो ॥ राम० २४॥
ऋण उतारण शिर तणुं, तात कियो सुविचार हो ।
'भरत' भलो थो भाईयो, कां डाल्यो थो भार हो ॥ राम० २५॥
'भरत' धर्म उदासीने, नृप पदवी लहूं आज हो ।
'राम' रायने आपीने, सारूं वंछित काज हो ॥ राम० ॥ २६ ॥
'राम' न लेशे राज्य ने, दुःख पाम से तात हो ।
ए उतपात उठावया, करे विमाती वात हो ॥ राम० ॥ २७ ॥
दुःख मत पावो तातजी, भरत करो ए राज्य हो ।
राम चाल्या हूं घर रहूं, तो रे पामूं लाज हो ॥ राम० ॥ २८ ॥

१ ए अरबी भाषानो शब्द छे जेनो अर्थ 'चाकरी' एवो थाय छे । २ माता

सेवक रूपी होई ने, रहिसूं प्रभुने साथ हो ।
खिजमत१ तो करसूं सही, सुजश दीयो जगनाथ हो ॥राम. २९॥
ताततणे पगे लागीने, माजीने परणाम हो ।
करीने लाग्यो चालवा, माय शीख दे ताम हो ॥ राम० ३० ॥
वत्स ? स्वस्थ मतिताहरी, खरूमतू तुजमांहे हो ।
साथ न तजवो भाईनो, लोक वचन ए ग्राहे हो ॥ राम० ३१ ॥
जाई मिलो उतावला, कांई करो विलम्ब हो ।
राम तात करी मानजो, कहे सुमित्रा अम्ब२ हो ॥ राम० ३२ ॥
'कौशल्या' पगे लागीने, चालण लाग्यो जाम हो ।
'कौशल्या' कहे मायजी, लक्ष्मण स्यामे ताम हो ॥ राम० ३३ ॥
'राम' गयो तूं जाय छे, म्हारा कवण हवाल हो ।
'लक्ष्मण' कहे माता सुणो, न तजूं 'राम' दुमाल हो ॥राम. ३४॥
वनवासे एकाकीयो, आप 'राम' जी जात हो ।
हूं न करूं सेवकपणूं, तो लाजत मुझ मात हो राम० ॥ ३५ ॥

ढाल मूलगी क्षेपक

माता कहे सुखे २ जावो, रामकी सेवा करवावो, जिणी से वंछित ही पावो । नाय शिर सौमित्रा नन्दा, कौशल्या प्रणमे आनन्दा ॥ सत्य० ॥ ४३ ॥ मा कहे सुणो पुत्र वाणी, अनुज तूं भक्ती दिल आणी, अछे तू गुणां तणी खाणी । पुत्र ? तब ओलूं ही आसी, दुक्कर यह दिवस कैसे जासी ॥ सत्य० ॥ ४४ ॥ वीर कहे सुणिये तूं माता, काया ज्यां छाया विख्याता, राम ज्यां लक्ष्मण शोभाता । जग जब ढील नहीं कीधी, आशीस तब मातांने दीधी ॥ सत्य० ॥ ४५ ॥

ढाल मूलगी

इण परे मारग चालियां, आणन्तो आनन्द हो ।
सायरनी परे हेलतो, रन गयां नहीं मंद हो ॥ राम० ॥ ३६ ॥
राजा राणी आवीया, आवीयो परिवार हो ।
साल अने गोपालजी, मिलिया लोक अपार हो ॥ राम० ॥३७ ॥

—ढाल मूलगी क्षेपक—

पुरुष दोय नारी इक जावे, राजादिक पहोंचावण आवे, सखी मिल ओलूं ही गावे । राम के सन्मुख ही जोवे, आंसूं सूं मुखडा ही धोवे ॥ सत्य० ॥ ४६ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—बन्धव बोल

सहियांमांने ओलूं आवे, हो ओलूं-राघवजीनी ओलूं आवे ॥टेर॥
रात न आसी नींदड़ी, दिन धान न भावे हो ।
पल २ माहे सांभरे, हीयो भरि जावे हो ॥ सहियां ॥ १ ॥
प्रभुजी ज्यां त्यां संचरे, सोही हरखावे हो ।
नेत्र विना मुख ज्यूं सही, प्रभु विन हम दरसावे हो ॥ सहियां २॥
धन्य भाई 'लक्ष्मण' अछे, प्रभु सङ्ग सिधावे हो ।
पति भक्ता 'सीता' सती, शोभा अधिकी पावे हो ॥ सहियां ३ ॥
समाचार प्रभु मुज भणी, वेगा वकसावे हो ।
वहिला राज पधारजो, दुनि दर्शन चावे हो ॥ सहियां ४ ॥

श्री समयसुन्दरजी कृत.

ढाल क्षेपक तर्ज—चान्दलीया सन्देशो रे कहीजे म्हारा कन्तनेरे

राजेश्वर वालेसर हो वेग पधारजोरे, थांरी जोवे बहुला वाट ।
पल अंतरथी अलगा नवि करूंरे, हिवडे घणुंरे उचाट ॥ राजे १ ॥
सुख मातामें पामी अन घणीरे, याद करां निन मेव ।
सफल दिहाडो सो में जाणसोरे, सो दिन करस्यां सेव ॥ राजे २॥
सुरभी जावे वन क्रीड़ा भणीरे, वच्छा कररे पुकार ।
तिम तुम दरशन विन हिव माहिरारे, अम्हे थावां छे निरधार ॥ राजे ३॥
मातपिता चले भ्रातजीरे, वलि वरजे वहु नरनार ।
दया आणीने दिलमें साहिबारे, पाछा फिरो इणवार ॥ राजे ४ ॥
पपैयो पिऊ २ कररे, पिण घनरे नहीं चाय ।
जिम तुम ऊभा ओलगेजी, मानो वचन न काय ॥ राजे ५ ॥
वारम्वारे कीधी वीनतीरे, पिण रामन माने एक ।
सो जिम सेवा कीजो भरतकीरे, थारी घणा विवेक ॥ राजे ६ ॥

दोहा—गद् गद् कण्ठी होगये जलभर आयो नैन ।
रोते रोते नागरीक, वदे राम से वैन ॥ १ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत. ढाल क्षेपक तर्ज—अहमद भूल न जाना

रघुवर ! भूल न जाना, विनती ध्यान में लाना ॥ टेर ॥
मायत वचन मानकर तुमने, निराधार इत छाडो हमने ।
वन को किया प्रयाना ॥ रघुवर ! भूल न जाना ॥ १ ॥
यद्यपि नहीं रहना था पुरमें, तो क्यों प्रेम लगाया धुर में ।
अधविच में छिटकाना, रघुवर ! भूल न जाना ॥ २ ॥
प्रतिपल याद आवेगी तोरी, हार्दिक विनती स्वामिन् मोरी ।
जल्दी दर्श दिलाना ॥ रघुवर० ॥ ३ ॥
हम मुख आप बड़े गुणधारी, शशी सम सौम्य सदा सुखकारी ।
मधुमय मीठी वाना ॥ रघुवर ! ॥ ४ ॥
सींच २ कर प्रेम सलिल को हराभरा किया इस उपवन को ।
आकर फिर विकसाना ॥ रघुवर ! ॥ ५ ॥
जनगण तव दर्शन का प्यासा, एक आपकी लग रही आशा ।
चित्त चरणों में लुभाना ॥ रघुवर ! ॥ ६ ॥
विरह तुम्हारा सहा न जासी, वार २ उर ओलूं आसी ।
दया भाव दिखलाना ॥ रघुवर ! ॥ ७ ॥
अवध निवासी अर्ज गुजारी, भूल हुई हो जोभी हमारी ।
भूल उन्हें तुम जाना, पर भूल हमें मत जाना ॥ ८ ॥
'रूप' कहे जनता के मनमें, राम रहे इत जावे न वन में—
यही आश मन लाना ॥ रघुवर ! ॥ ९ ॥
शार्दूल गुरुपद कज शिर नाई, 'जयतारण' में ढाल बनाई ।
रामायण में गाना ॥ रघुवर ! ॥ १० ॥

दोहा—सुनकर प्यारी प्रेम मय, परजा की अरदास ।
मधुमय मीठे वचन से, देन लगे आश्वास ॥ १ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—खेलण दो गिणगोर भँवर म्हाने

जावण दो एक बार विपनमें जावन दो इक वार, हो म्हांरी अ

निवासी जनता जादा मत तानों इनवार ॥ टेर ॥
वचन निभास्यां वनमें जास्यां, वहां पास्यां सुख साज।
फिर चल आस्यां वास बसास्यां, पिण जावणदो मोय आज ॥ जा.१॥

ढाल चेपक तर्ज-नवीन रसिया मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत.

रहीजो २ हो आनन्द में प्यारे सारे ही नरनार ॥ टेर ॥
हिलमिल प्यारे पुरजन रहीजो वहीजो कुल-आचार।
परधण परधन को तज करके कीजो प्रेम प्रचार ॥ रहिजो ॥१॥
निर्मल न्याय नीति पथ वहीजो लहीजो सुजश अपार।
चिन्तामणि मम धर्म जैन को, तजदो मतना यार ॥ रहीजो २ ॥
मम सम भर्त भणी समजीने हुकम वहो हरवार।
करसी माल सम्भाल निहाली नीति न्याय विचार ॥ रहिजो ३ ॥
सप्तव्यसन मद मच्छर ईर्षा कर दीजो परिहार।
रूप मुनि कहै रघुवर की या शीक्षा लो उरधार ॥ रहिजो ४ ॥

दोहा—रघुवरमायत चरण मे,नमन कीयो तिणवार।
हम लायक शीक्षा जनक, वात कहो धर प्यार ॥ १ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत.
ढाल चेपक तर्ज-काली कमली वाले तुमको

प्राण पियारे पुत्र हमारे क्रोडां स्यावास. तुमको क्रोडां० ॥ टेर ॥
सारा प्यारा परिकर तजकर. मानव गणका हृदय चुराकर।
तुमतो वनकी ओर पधारे. क्रोडां स्यावास ॥ प्राण० ॥ १ ॥
क्षत्रिय धर्म को पूर्ण निभाया. नहीं लालचमें मन ललचाया।
तुमहो वीर प्रतिज्ञा धारे, क्रोडां स्यावास ॥ प्राण ॥ २ ॥
दोनों भाई हिल मिल रहीजो. भ्रातृ वच्छल गुण हियमें गहीजो।
सप्त व्यसन तज देना प्यारे, क्रोडां स्यावास ॥ प्राण ३ ॥
जैन धर्म निज जीवन समजो. नीच तणी थे संगति तजजो।
दोनों ही मत होना न्यारे. क्रोडों स्यावास ॥ प्राण ॥ ४ ॥
मैंतो कार्य उचित नहीं कीना. प्यारे पुत्रों को दुःख दीना।
'रूप' मुनि कहे है गुण धारे. क्रोडों स्यावास ॥ प्राण ॥ ५ ॥

दोहा—राम कहै प्रभुजी सुणो, तुमचा वचन स्वीकार ।
सुखसूं संयम आदरो, निज आतम उजवाल ॥१॥

ढाल चेपक तर्ज—मैं अंग्रेजी पढ़ गई हूं मुनि श्री रूपचंदजी कृत.

अब हम वनको सिधाते, सुनले मेरी मैया ॥ टेर ॥
लाड प्यार कर तुमने पाले, आज आपसे हो रहे न्यारे ।
पितु वर वचन निभाते ॥ सुनले मेरी मैया ॥ १ ॥
दर्शन से हम परसन होते, तेरी गोद में आकर सोते ।
चरणां शीष झूकाते ॥ सुनले मेरी मैया ॥ २ ॥
ऐसा हम स्वपने नहीं जाना, तुम दर्शन का विरह होजाना ।
भावी प्रबल कह्यो नाथे ॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ३ ॥
खैर हुवा सो होगया माता, होनहार नहीं टले टलाता ।
हितकारी कहो वातें॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ४ ॥
नीति निपुण तुम तात प्रवीना, कह नाथा सो सब कह दीना ।
एक वात कहूं भ्राते ? सुनले मेरो मैया ॥ अ० ॥ ५ ॥

—सवैया—

वणा घाट लंघणा, नदी परवतने नाला । वन है वेटा विपम, पंथ चलणा है पाला । जहर भूख काटणी, गुणे दिन किसा गिणीजे, कहै मात 'कौशल्या' श्रवण दो भ्रात सुणीजे ॥ दन्ती वाराह नाहर रहोजो तिण ठौर मावता, रे पुत्र ? घणी मिल राखजो इण जनक सुतारा जावता ॥ १ ॥

ढाल चेपक पूर्ववत्

जनक सुता की रक्षा कीजे, राम कहै मम कथन करीजे, सियको मम सङ्ग मत भेजीजे, नारी सङ्ग दुःख पाने ॥ सुनले मेरी मैया ॥ अ० ॥ ६ ॥ 'शार्दूल' शिष्य मुनि 'रूप' सुनावे, रघुपतिजी [illegible]जावे, मो आगे जतलाते ॥ सुनले ॥ ७ ॥

(गो स्वामी [illegible] कृत. रामायण मे से)

[illegible] कहि प्रिय [illegible] मय, कीन्ह मातु परितोप ।

[illegible] का अर्थ—. [illegible] कहकर मानाको रामचन्द्र ने [illegible] वनमें [illegible] के गुण दोप [illegible] । पुनः जानकी [illegible] लगे ।

लगे प्रबोधन जानकिही, प्रगट विपिन गुण दोष ॥१॥
१ चौपाई—आपन मोर नीक जो चहहु, वचन हमार मान घर रहहु।
आयसु मोरि सासु सेवकाई, सबविधि भामिनी भवन भलाई।

—(चोपाई)—

१ में पुनि करी प्रणाम पितुबानी, वेगि फिरब सुन सुमुखी सयानी ॥१
दिवस जात नहीं लागहु बारा, सुन्दरी १ सिखवन सुनहु हमारा ॥२
जो हठ करहु प्रेम वश वामा, तो तुम दुःख पावहु परिणामा ॥ ३
कानन कठिन भयंकर भारी, घोर घाम हिम वारी बयारी ॥ ४ ॥

---

१ जो अपना और हमारा भला चाहो तो हमारा वचन मानिके घर रहो। मेरी आज्ञा है सासु की सेवा करनी चाहिये, हे प्यारी ! सब प्रकार से घर में रहने से भलाई होगी।

१ और में पिताकी आज्ञा प्रमाण करके हे सुमुखी १ सयानी जल्दी लोट के आवूंगा ॥ १ ॥ दिन जाते देर नहीं लगती हे सुन्दरी १ हमारा सिखाना सुनो ॥ २ ॥ जो तुम प्रेम से इस समय हठ करोगी तो परिणाम में दुःख पाओगी ॥ ३ ॥ वन कठिन और भयंकर होता है। मार्ग मे कठिन धूप जाड़ा पानी वायु से कष्ट होता है ॥ ४ ॥ मार्ग में कुश कांटे कंकर होते हैं, सवारी पर चले तोभी वनता पर सो भी नहीं, पांव २ चलना होगा, सोभी विना जूते के ॥ ५ ॥ तुम्हारे चरण कमल उज्वल और कोमल है, और मार्ग भी समान नहीं किन्तु अगम है, और बड़े २ पर्वत हैं एक तो राह कठिन दूसरा चढाव उतार ॥ ६ ॥ कन्दर पर्वत की गुफा नदी नद नाले बड़े अगाध है। जो निहारे नहीं जाते, पर्वत अगम हैं वहां जाना कठिन है ॥ ७ ॥ रीछ चीता भेडिया सिंहो के नाद सुनके धीरज नहीं रहता ॥ ८ ॥ भूमि मे सोना वृक्ष की त्वचा भोज पत्रादिक का पहरना, भोजन मूल फलकंद, कंद वर्तुलाकार मूल लम्बा सोभी क्या सदा सब दिन मिलते है १ किन्तु जब जिसका समय होगा तब मिलेंगे ॥ १ ॥ राक्षस मनुष्यों का भक्षण करते हैं, कोटी प्रकार से कपट वेष धरते हैं ॥ १ ॥ पहाड़ का पानी बहुत लगता है, हे प्यारी वन की विपती बखानी नहीं जाती ॥ २ ॥ विकराल सर्प घोर भयानक पक्षी और राक्षस बहुत से नर नारीयों को चुराने हारे होते हैं ॥ ३ ॥ धीर पुरुष भी वन की सुधि आने से डरजाते हैं. हे मृग नयनी १ तुमतो स्वाभाविक डरने हारी हो ॥ ४ ॥ हे हंसगमनी १ तुम वन के योग्य नहीं हो, सुनके लोग मुझे अपयश देंगे ॥ ५ ॥

कुश कंटक मग कंकर नाना, चलव पयादे विनु पद त्राना ॥ ५ ॥
चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे, मारग अगम भूमिधर भारे ॥ ६ ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे, अगम अगाध नजाहिं निहारे ॥ ७ ॥
भालु वाघ वृक केहरी नागा, करहि नाद सुनि धीरज भागा ॥ ८

दोहा—भूमि शयन वल्कल वसन, अशन कन्द फल मूल ॥
तेकि सदा सब दिन मिल हीं समय समय अनुकूल ॥१॥

—(चोपाई)—

नर आहार रजनी चर करहीं, कपट वेप विधि कोटिक धरहीं ॥१॥
लागई अति पहाड़ कर पानी, विपिन विपत्ति नहीं जाय वरवानी ॥२॥
व्याल कराल विहंग वन घोरा, निशिचर निकर नारि नर चोरा ॥ ३ ॥
डरपहु धीर गहन सुधिआये, मृग लोचनी ? तुम भीरु सुभाये ॥४॥
हंसगमनी तुम नहीं वन योगू, सुनि अपयश मोहिं देहहि लोगू ॥५॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली, जियई कि लवण पयोधी मराली ॥६॥
नवरसाल वन विहरन शीला, सोहकी कोकिल विपन करीला ॥ ७ ॥
रहहु भवन अस हृदय विचारी, चन्द्रवदनी दुःखकानन भारी ॥ ८ ॥

(जानकीरुवाच)

दोहा—प्राण नाथ ? करुणा यतन सुन्दर सुखद सुजान ।
तुम विन रघुकुल कुमुद विधु,? सुरपुर नरक समान ॥१॥

(चोपाई)

भोग रोग सम भूपण भारू, यमयातना सरिस संसारू ।
प्राणनाथ तुम विन जगमांही, मो कहे सुखद कहत हु कोई नांहीं ॥१॥
जिय विनु देह नदी विन वारी, तैसिय नाथ पुरुष विन नारी ।
: तुम्हारे, शरद विमल विधु वदन निहारे ॥२॥
नगर वन, वल्कल विमल दुकूल ।
, पर्ण ~ । ? ॥

हो आऊंगी ।
सुख पाऊंगी ॥

थाके चरण कमल चापूंगी, श्रमभये पवन डुलाऊंगी।
नयन चकोर निमुख मयंक छवि, सादर पान कराऊंगी॥
जो हठि नाथ साथ नहीं लेहो तो सङ्ग प्राण पठाऊंगी।
तुलसीदास प्रभु विन जीवन, रहै क्यों वदन दिखाऊंगी॥१॥

मेवाड़ी मुनि चौथमलजी कृत.

ढाल चेपक तर्ज—वीड़ो मत झेलो तथा तलटीये प्राण काय०

मेरे सङ्ग मत आ, सीता वहु दुःख पावोगी॥ टेर॥

वनमें कष्ट घणो है प्यारी, फिर पाछे पछताओगी। रात अंधेरी होगी वहां पे, कौनसे जतन का प्यारी दिवला-जलाओगी॥ मेरे॥ १॥ खट्टे कड़वे वनफल मिलसी, सो कैसे तुम खाओगी। दूध दही मावा मन गमता, ये चीजां वनमें प्यारी कहो कहां से लाओगी॥ मेरे॥ २॥ यहां फूलां की सेज सुहाली, वहां पर घास विछाओगी। शेर रिच्छ क्षुद्रिक जीवो को, जो तुम देखोगी सीता अती डरपाओगी॥ मेरे॥ ३॥ वहां नहीं म्याना और पालखी, पैदल पन्थ कटाओगी। कुश कङ्कर से पग फूटेंगे, क्षिण क्षिण त्रासित हो प्यारी रुदन मचाओगी॥ मेरे॥ ४॥ रतन जड़ित गहना विस्तर यहां, जो चाहो सो मंगवाओगी। भोजपत्र वहां धारण करके, कैसे इस दिलको प्यारी धीरज वंधाओगी॥ मेरे॥ ५॥ ना कोई संगमें दासी दास है, किनपे हुकम चलाओगी। चक्की चूला जल झाड़न की, ऐसी मुशीवत कैसे शिरपे उठाओगी॥ मेरे॥ ६॥ यहां पर बहुत सहेलियो बिचमें, बैठी मोज उडाओगी। वहां टपरी में सदा अकेली, कैसे रह करके प्यारी दिवस विताओगी॥ मेरे॥ ७॥ माता कौशल्या संग नहीं प्यारी, किनको कष्ट सुनाओगी। यो सोची घर रहो सन्तूणी थोड़े ही दिन में पीछी मुझे मिल जाओगी॥ मेरे॥ ७॥

(जवाब श्रीमती सीताजी का—ढाल चेपक तर्ज-पूर्वोक्त)

मुझे संग लेलो, प्रभुजी पीछे मरजाऊंगी॥ टेर॥
जो जो आज्ञा आप करोगे, सो सब शीश चढाऊंगी।

कुश कंटक मग कंकर नाना, चलव पयादे विनु पद त्राना ॥ ५ ॥
चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे, मारग अगम भूमिधर भारे ॥ ६ ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे, अगम अगाध नजाहिं निहारे ॥ ७ ॥
भालु वाघ वृक केहरी नागा, करहि नाद सुनि धीरज भागा ॥ ८ ॥

दोहा—भूमि शयन वल्कल वसन, अशन कन्द फल मूल ॥
तेकि सदा सब दिन मिल हीं समय समय अनुकूल ॥१॥

—(चोपाई)—

नर आहार रजनी चर करहीं, कपट वेष विधि कोटिक धरहीं ॥१॥
लागई अति पहाड़ कर पानी, विपिन विपत्ति नहीं जाय बरवानी ॥२॥
व्याल कराल विहंग वन घोरा, निश्चिर निकर नारि नर चोरा ॥ ३ ॥
डरपहु धीर गहन सुधिआये, मृग लोचनी ? तुम भीरु सुभाये ॥४॥
हंसगमनी तुम नहीं वन योगू, सुनि अपयश मोहिं देहहि लोगू ॥५॥
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली, जियई कि लवण पयोधी मराली ॥६॥
नवरसाल वन विहरन शीला, सोहकी कोकिल विपन करीला ॥ ७ ॥
रहहु भवन अस हृदय विचारी, चन्द्रवदनी दुःखकानन भारी ॥ ८ ॥

(जानकीरुवाच)

दोहा—प्राण नाथ ? करुणा यतन सुन्दर सुखद सुजान ।
तुम बिन रघुकुल कुमुद विधु,? सुरपुर नरक समान ॥१॥

(चौपाई)

भोग रोग सम भूषण भारू, यमयातना सरिस संसारू ।
प्राणनाथ तुम बिन जगमांही, मो कहे सुखद कहत हूं कोई नांहीं ॥१॥
जिय विनु देह नदी विन वारी, तैसिय नाथ पुरुष विन नारी ।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे, शरद विमल विधु वदन निहारे ॥२॥

दोहा—खग मृग परिजन नगर वन, वलकल विमल दुकूल ।
नाथ साथ सुर सदनसम, पर्ण शाल सुखमूल । १ ॥

—तर्ज—लावणी—

कृपा निधान सुजान प्राण पति, सङ्ग विपिन हो आऊंगी ।
गृहते कोटी मांनो सुख मारग, चलत साथ सुख पाऊंगी ॥

थाके चरण कमल चापूंगी, श्रमभये पवन डुलाऊंगी।
नयन चकोर निमुख मयंक छबि, सादर पान कराऊंगी ॥
जो हठि नाथ साथ नहीं लेहो तो सङ्ग प्राण पठाऊंगी।
तुलसीदास प्रभु विन जीवन, रहै क्यों वदन दिखाऊंगी ॥१॥

मेवाड़ी मुनि चौथमलजी कृत.

ढाल दीपक तर्ज—वीड़ो मत झेलो तथा तजदीये प्राण काय०

मेरे सङ्ग मन आ, सीता वहु दुःख पावोगी ॥ टेर ॥

वनमें कष्ट घणो है प्यारी, फिर पाछे पछताओगी। रात अंधेरी होगी वहां पे, कौनसे जतन का प्यारी दिवला-जलाओगी ॥ मेरे ॥ १ ॥ खट्टे कडुवे वनफल मिलसी, सो कैसे तुम खाओगी। दूध दही मावा मन गमता, ये चीजां वनमें प्यारी कहो कहां से लाओगी ॥ मेरे ॥ २ ॥ यहां फूलां की सेज सुहाली, वहां पर घास विछाओगी। शेर रिच्छ क्षुद्रिक जीवो को, जो तुम देखोगी सीता अती डरपाओगी ॥ मेरे ॥ ३ ॥ वहां नहीं म्याना और पालखी, पैदल पन्थ कटाओगी। कुश कङ्कर से पग फूटेंगे, क्षिण क्षिण त्रासित हो प्यारी रुदन मचाओगी ॥ मेरे ॥ ४ ॥ रतन जडित गहना विस्तर यहां, जो चाहो सो मंगवाओगी। भोजपत्र वहां धारण करके, कैसे इस दिलको प्यारी धीरज बंधाओगी ॥ मेरे ॥ ५ ॥ ना कोई संगमें दासी दास है, किनपे हुकम चलाओगी। चक्की चूला जल झाड़न की, ऐसी मुशीबत कैसे शिरपे उठाओगी ॥ मेरे ॥ ६ ॥ यहां पर बहुत सहेलियो चित्तमें, बैठी मोज उडाओगी। वहां टपरी में सदा अकेली, कैसे रह करके प्यारी दिवस बिताओगी ॥ मेरे ॥ ७ ॥ माता कौशल्या संग नहीं प्यारी, किनको कष्ट सुनाओगी। यो सोची घर रहो नन्दूणी थोड़े ही दिन में पीछी मुझे मिल जाओगी ॥ मेरे ॥ ७ ॥

(जवाब श्रीमती सीताजी का—ढाल दीपक तर्ज—पूर्वोक्त)

मुझे संग लेलो, प्रभुजी पीछे मरजाऊंगी ॥ टेर ॥
जो जो आज्ञा आप करोगे, सो सब शीश चढाऊंगी।

किसी तरह का कष्ट पड़ेगा, मैं नहीं घबराऊं सब ही शिरपे उठाऊंगी ॥ मुझे ॥ १ ॥ प्रभु प्रसादे वनफल भी, खादिम कर खा जाऊंगी। किसी बात की हठ करके मैं, सुनीये प्राणेश्वर तुम्हको कभी न सताऊंगी ॥ मुझे ॥ २ ॥ मैं सखियन में सुख नहीं पाऊं, निश्चय कर संग आऊंगी। नाथ आपका दर्शन देखी, स्वर्ग भवनसी साता हिरदे बसाऊंगी ॥ मुझे ॥ ३ ॥ शीत ताप की सहन करूंगी, मैं बिस्तर नहीं चाऊंगी। सदा हर्ष दिल होकर रहूंगी, क्षण भर भी प्रभुजी तुमसे कभी न रीसाऊंगी ॥ मु॰ ४॥ तीन लोक की सम्पत समझूं, जो पति देव रीझाऊंगी। मैं दुर्लक्षणी नारी नहीं हूं, जो के पल पल में पियु का कलेजा जलाऊंगी ॥ मु० ॥ ५ ॥ पछे लागी प्रभु! आपके, सङ्गमें शोभा पाऊंगी। दया दृष्टि करीये चेरी पे, मेरी व्यथा की चिन्ता कभी न जताऊंगी ॥ मु० ॥ ६ ॥ प्राणनाथ के पदपंकज में, सुख से दिवस बिताऊंगी। वनही नन्दन वनमा मेरे, बस्ती क्या सुर नगरी की परवा न लाऊंगी ॥ मु० ॥ ७ ॥ उभय वंश विख्यात करन को, पतिव्रत पूर्ण निभाऊंगी। तन छाया के तीर्थ करके जग महिलाओं का सच्चा स्वरूप दिखाऊंगी ॥ मु० ॥ ८ ॥ चरण शरण की दास होयके, सदैव सेव बजाऊंगी। चौथमल्ल कहै सीता बोली, सदाही चरणमें प्रभुजी शिरको झुकाऊंगी ॥ मु० ९॥

ढाल मूलगी

पगे लागी वहां आविया मातानी ने राय हो।
दई दिलासा लोकने, 'राघवजी' वन जाय हो ॥ राम ३८ ॥
ढाल भली बावीसमीं, 'राम' हुवा वनवास हो।
'केसराज' शुभ कर्म थी, होसे लील विलास हो ॥ राम ॥ ३९ ॥

मुनि श्री रूपचंदजी कृत, ढाल क्षेपक तर्ज—पपैया काहे मचावत शोर,

अवध की जनता मचावत शोर, 'राम' गये हमें छोर ॥ टेर ॥
हाय विहाय गये रघुवरजी, मानी नहीं प्रभु तनिक भी अरजी।
करके हृदय कठोर, अवध की जनता मचावत शोर ॥ १ ॥

भ्राता भक्त लिछमनजी भारी, राज्य वैभव तज महिल अटारी ।
चाले वनकी ओर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ २ ॥
सुन्दर कोमल काया वाली, सापिण सीता पियु संग चाली ।
शीलवती शिरमोर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ३ ॥
मानवत्रय सहर्ष सिधाये, मनमें सोच जरा नहीं लाये ।
क्षत्रिय कुल के तौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ४ ॥
अटवी कंकर कण्टक चारी, तीनों मानव पाय विहारी ।
कैसे सहेंगे दुख घौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ५ ॥
कहो हमें गुन्हा क्या कीना, वतन प्रेम युगपत् तज दीना ।
तीनों गये चित्त चौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ६ ॥
निर्भय निडर 'शार्दूलसिंह' जैसा, वनकर वन गये मिलना ऐसा ।
होगा कब करो गोर ॥ अवध में जनता मचावत शौर ॥ ७ ॥
पाछा रघुवर जल्दी आसे, तजदो सोच 'रूप' मुनि भासे ।
जाप जपो निज भौर ॥ अवध की जनता मचावत शौर ॥ ८ ॥

—क्षेपक ढाल मूलगी—

सकल मिल पाछा ही जावे, 'राम' का गुण मुख सब गावे, नर सब 'अयोध्या आवे, चित्त तो प्रभुजी ने आल्या, 'रघुपति' वन वासे चाल्या ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४६ ॥

दोहा (जयतशी रागे)

गांव गांव ना ग्रामपती, करे घणी अरदास ।
देव ! इहां थानक करो, एछे तुम्हारो वास ॥ १ ॥
'राम' न माने वातए, चाल्या ही वन जाय ।
गांव नगर पुर पाटणा, किहां ही न रहाय ॥ २ ॥
राज्यन झाले भरतजो, आक्रोशी निजमाय ॥
'राम' अने लक्ष्मण तणो, विरह खम्यो नविजाय ॥ ३ ॥
चारित्र ने उतावलो, राजा 'दशरथ' ताम ॥
'सामन्त मंत्री' मोकले मोलावण श्री राम ॥ ४ ॥
पश्चिम दीसे जातां थको, आवी पहोंच्यो एह ॥

करी घणी अरदास पिण, 'राम' नमाने तेह ॥ ५ ॥
पाछा वाले 'रामजी', ओ पाछा नवलन्त ॥
जाणे कदीही बावडे, तेहथी साथ चलन्त ॥ ६ ॥

—ढाल–तेवीशवीं–तर्ज–झकड़ीनी—

आगे जातां रे अटवी आवही, नरनवी दीसे अधिक डरावही, डरामणी अटवीए मांहे चाले नई छेरे विहामणी, उहां ऊभो होई भाखे अयोध्या पुरनो धणी, 'सामन्त मन्त्री' घरे जावो कष्ट छे आगे घणो, कुशल केजो माय बाप ही आजतांहीं अमतणो ॥ १ ॥
भाई 'भरतने' हम करी मानजो, तातसरीसोरे सही करी जाणजो ॥ जाणजो भाई भरतजीने, आंतरो कोई मत करो बाप जाया सहु सरिसा पाट पतीनो ए खरो ॥ सामन्त मंत्री ऊहां रहीया आंखे आंसु ढालवे, धिक् जमारो माहरोरे राम तजी घर चालवे ॥ २ ॥
तीने माणस तेही तरंगिणी, ऊतरियों रे ऊंडीथी घणी ॥ घणी ऊंडी नदी हूंती तरीने कांठो ग्रहे ॥ 'सामन्त मन्त्री' दृष्टि मांडी सामां देखीने रहे ॥ 'रामजी' आगे पधारीया दृष्टिथी अलगा टल्या, सामन्त मंत्री घरे आव्या, राय दशरथ ने मिल्या ॥ ३ ॥ 'राम' न आवे भरत बोलावीयो' राजा 'दशरथ' शिर डोलावियो ॥ डोलावीयो दशरथे मस्तक, 'भरत' सूं भाखे भलू, राज्य पालो आरति टालो, कहे नृप उतावलूं ॥ 'भरत' भाखे राज्य न करूं, कोडी वाने एक है, 'राम' आणूं प्रेम ठाणूं करूं विनय विविकए ॥ ४ ॥
राणी 'कैकेयी' आवी भाखेए, राज्य न चाले रे 'राघव' पाखेए ॥ पाखेए 'राघव' राज्य न चाले, राय सूं आवी कहे, भरत ने तो राज्य देतां वाच वरनी निरख है ॥ राज्य अर्थी भरत नहुवे, राम ˋ. तेडी करी, राज्य आपी मुहद थापी आप ग्रहो संयम सिरी ॥ .॥ अणर विमास्यो में कीयो खरो, अपयश लीधो जग अति आकरो ॥ आकरो में लीयो अपयश कानको मिरीयो नहीं, तीनही त्रिय रोज सुणतां हैयु फाटे छे सही ॥ भरत सूं हूं आज जाई करूं वीनती कोडए, 'राम' लक्ष्मण सती सीता आणी सूरे चहोडए ॥ ६ ॥

क्षेपक तर्ज—चन्द्रायण (भरतोवाच)

बुद्धि तुम्हारी मात बात में कहा करूं, कर्म उदे बलवान राज्यकूं में गहूं।
चली आवी ततकाल राम हर लेनकूं कीधो माय परमाण भरत के चैनकूं।१

ढाल क्षेपक तर्ज—आसावरी—श्री विनयचन्दजी कृत

तेरी मत कहां गई कैकेयीमात ? हिता हित ज्ञान नहीं तिल मात ॥टेर॥
भरत रीसाय कहै सुन मैया, निपट विगारी ते बात।
कुजस होय रहो जग सारे, कानों सुणीयो नहीं जात ॥ तेरी १ ॥
कहा कहूं तोय दोष नहीं तेरो, निठूर त्रियानी जात।
तूं जाणे नृप करूं भर्त ने, सो हमकूं न सुहात ॥ तेरी २ ॥
राज्य धुरन्धर श्री रघुनायक, ताबिन में अकुलात।
उनकूं तें वनवासे पठायो, दहन हमारो गात ॥ तेरी ३ ॥
विनय करी ल्यावूं रघुपति ने, अब ही चलो हम साथ।
विनय चन्द कहै हेतु भरत को, अजहूं लोक सरात ॥ तेरी ४ ॥

ढाल मूलगी

अनुमत दीजे मुजने आजए, अबही चालूं करवा काजए।
काज करवा अबही चालूं, भरत ने मंत्री सरू,
साथ लेई वेग चाली जोत गयी रथ वरू।
दिवस छठे जाई पहोंच्या देखी हो तरुवर तले,
राम लक्षमण सती सीता दूरहिथी अटकले ॥ ७ ॥

क्षेपक (चन्द्रायण)

रामचन्द्र हरि पास चले है कैकई, भरतभणी लई संग खोज उनको
सही। उडती देखी गोरद जानकी कहै तवे, भय ऊपज्यां मनमांय
'राम' 'हरि' सु लवे ॥ १ ॥

दोहा—कहै राम सु जानकी, सावधान होय धीर।
क्यों नवि चिन्ता आपको, आई फौज गम्भीर ॥१॥
राम उठ्यो रग मण्डले, ले हाथे हथियार।
देख पता का भर्त की, उरमें उपज्यो प्यार ॥२॥
आई सवारी भरत की, तुरत ही वेग मनाव।
घणी चूंप मिल भातणो, आनन्द अंग न माय ॥३

ढाल मूलगी

रथथी उतरी रे आगे आवए, वत्स वत्स करती अति सुख पावए। पावही अति सुख आवी सन्मुख, 'राम' जी पगे लागीयो, चूंबी शिर छाती लगायो, प्रेम अधिको जागीयो सुमित्रा सुत सती सीता, करे तव परणामए, हैये धरिया नेह भरिया पूछियो सुखनामए ॥ ८ ॥ भरत भली पर पगे लागी रह्यो, श्री 'राधवजी' सुख अधिको लह्यो। सुख लह्यो अधिको बांह गलेमें, घालवे आप आपणी, आंख आली वहै चाली भरतजी भाई तणी ॥ कुशल वात विशेष विचरी पूछि ही परगट पणे, आज छे अति स्वामिजी ने सो मन निजरे निरखणे ॥ ९ ॥ अभक्तनी परे रे मुजछां डीकरी, क्यूं रे पधार्या वन में संचरी। संचरी आया वन मांहे, वेग सूं तुम रघुपति, कपट केल वणी रे मांही हूं न समझूं छूं रती ॥ गाय ब्राह्मण बाल अबला मारवानो पापए, अब मोही लागो झूठ कहूं तो भरत भाखे आपए ॥ १० ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

'भरत' पिन आग्रह अति करतो, चरण बिच शीष ही धरतो, विनय को भाव अनुसरतो। पतिन की वीनती मानों, प्रभु थे मान सर्व जानो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४७ ॥

स्वामी श्री नथमलजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज–आसावरी पद

प्रभु किम जावो छिटकाई, हाथ जोडने अर्ज करूं एमी किन कहो दीनी साई ॥ टेर ॥

तुम विन सूनी सर्व अयोध्या, बोले भरत भाई ॥

अबतो मांनों हमारो केणो, केम आये छो रिसाई ॥ प्रभु ॥ १ ॥

रोवत दासी दास सखीजन, रोवत निज माई ॥

रोवत सगरी नगरी देखो, मासूं कर नरमाई ॥ प्रभु ॥ २ ॥

प्रभुजी पाछा ही चालो, क्यों रामायन वनमें पधार्या सो पहले मुझ घालो ॥ टेर ॥

प्रभु दर्शन विन घड़ी पटमासा, तुम दर्शन सुख व्हालो ॥

विरह व्यथा में साच कहूं मैं, होगयो हूं कालो ॥ प्रभु ॥ ३ ॥
राजगादी तुम विन नवि शोभे, परतझा मति झालो ॥
हमको कारागृह में देकर, पादो विषको प्यालो ॥ प्रभु ॥ ४ ॥
क्यूं प्रभुजी तुम हमको छोड़ो, मैं तुमचो व्हालो ॥
जम्पे भरत नरेश्वर इणपर, मुजरो म्हारो झालो ॥ प्रभु ॥ ५ ॥

—(ढाल मूलगी)—

आय अपूठोरे राज्य करीजीए, लोका केरी आरती हरीजीए। हरीजीए आरती लोककेरी, राज्य चापही परिहर्यो, तुम छतां पुत्रे राज्य स्वनूं भरत भाखे गह गह्यो ॥ मंत्रीश१ लक्ष्मण—पोलिओ हूं छत्रधारक तोल हूं, राजाधिराज 'राम' राजा भोगवो पृथ्वी सहु ॥ ११ ॥ कैकेयी कहैरे राघवजी सुणो, भाई भक्तों रे भरत अछे घणो। अछे भक्तो भरतकेरो बोलतो अब मानीये, मायनी मनुहार म्होटी जाणी अधिक न ताणीए ॥ जनक दोष न दोष भरत ही दोष ए छे माहरो, त्रिया स्वभावेमें कुभावे कीधो अविनय ताहरो ॥ १२ ॥ नारी सहेजे क्लेश करी कही, परघर भंजवाने रे ऊमही। ऊमही अधिकी करण भूण्डूं, दीपो दुःख राजा भणी. अपराजीता ने सुमित्रा ने करी अति खीजामणी॥ कुल रीति लोपी घणूं कोपी एह अवगुण मायना, होई सायर सहो सघला सुणो नन्द सुरायना ॥ १३ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

राणी कहै अवगुण है मेरो. विचारो विरुध अब तेरो. अयोध्या नगर है तेरो। भर्त ए राज नहीं लेवे, लोक मुज धुरकारा देवे, ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ४८ ॥

—ढाल क्षेपक तर्ज—आसावरी पद—

नंदन थे मांनो वात म्हारी, अरज करूं अति गरज दीन हे स्यो चित्त में धारी॥ टेर ॥

१ भरत कहे छे के—लक्ष्मण तमारो प्रधान हूं पोलीयो (द्वारपाल) अने शत्रुघ्न छत्र धारण करनारो थसे। (लहु शत्रुघ्न)।

कैकेयी कहै सुन पुत्र हमारे, काम कियो अविचारी ।
तुच्छ बुद्धि कामन की दाखी, थे छो बडे अवतारी ॥ नंदन १ ॥
राज भार तो भरत न झेले, छे आज्ञाकारी ।
फिट फिट लोक कहै सब हमने, आप जीते हूं हारी ॥ नंदन २॥

ढाल मूलगी

एम कहैतीरे आंसू नाखेए. वली वलीरे वारु भाखेए ।
भाखेए वारु वचन चारु कोन माने रामजी, तात दीधूं राज्य भरत ही माखे मुज अभिरामजी, तात जीवे हूंहीं जीवूं बोल क्यूं लोपायजी. वाप भाई कह्यो करवो सही सूं सुण मायजी ॥१४॥

स्वामीजी श्री नथमलजी कृत. ढाल क्षेपक तर्ज—जातरी गूजरणी

राम कहै सुण भाई एम, तूं राज्य न लेवे केम, मैं तुझने दीधो,
राज अयोध्यानो एहटीको तो कीधो ॥ टेर ॥
प्रथम तातनो वचन लोपाय. मुझने वेला थाय ॥ मैं ॥ १ ॥
लक्ष्मणजी पिण इमही भाखे, आ तात मातनी साखे ॥ मैं ॥२॥
सीता पास मंगावे नीर, टीको करयो है वडवीर ॥ मैं ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

सीता आण्योरे जल सुविवेक ही. राम करेरे भलो अभिषेकही ।
अभिषेक कीधो नाम दीधो भरत भलो भूपालए, सामन्त मंत्री साख राखी मेटीयो जंजालए । पाय प्रमणी भरत भूपति भलामण परजा भणी,

ढाल क्षेपक तर्ज—कव्वाली

कहैं श्री 'राम' भरत तांई, भया बात सुन लीजे ।
बैठ के अवध की गादी, अदल इन्साफ ही कीजे ॥ १ ॥

यत' शिखरणी छन्दम—क्षेपक

'पर श्री मानेव, क्वचिदपिन लोभो परधने ।
न मर्यादा भङ्गः, क्षणमपिन नीचे स्वभि रुचिः ॥
गिरां शौर्यं धैर्यं, त्रिपदि विनयं भङ्गति मता-
मिमां पूज्यां पृथ्वीं, भरत ? नितरां पालय सदा ॥२॥

ढाल मूलगी

देई दक्षिण दीशे चाल्या, नहीं हाजत अरजनी ॥ १५ ॥

पूरी अयोध्यारे आयो भरतए, रामादेशेए१ राज्य करन्तए।
राज्य करवे लोक सुखीया, नहीं असुख लिगारए, धर्म कर्म चलन्त अधिका राज्य तेज अपारए। देव हरिहन्त सुगुरु सेवा दयाने प्रतिपालवे, सूर्य वंशी सुजश पायो कुल तणे अजवालवे।१६
राजा दशरथ बहु परिवार सूं, मनमां हर्ष्यो कारज सारसूं।
सारसूं कारज हवे महारूं राज्य बैठ्ठ ठामए, 'सत्यभूति' मुनिन्द आगे कहै मस्तक नामिए॥ लेई संयम कारज सार्या टालए तेवी शर्मी, 'केशराज' कहे शुद्ध नरने सुधर्म सूं मनसारमी ॥ १७ ॥

दोहा (धोरणी रागे)

चालन्तां चित्त चावसूं, आणन्ता उल्लास।
चित्रकूट दिन केटला, रहिया करीय निवास ॥ १ ॥
आगे जातां आवीयो, 'अयवन्ती' वर देश।
निर्व्यजन थानक जई, लिये विश्राम नरेश ॥ २ ॥
सत्यवती२ थाकी खरी, वडतले विश्राम।
लक्ष्मण साथे बोलीया, ए अवसर श्रीराम ॥ ३ ॥
उज्जड थयो देखीए, अवही क्यूं ए देश।
कोई मिलेनो पूछिये, संशय छे सुविशेष ॥ ४ ॥
पंथी परगट नामथी, वातों में वाचाल।
आवी आगे नीकलीयो, पूछे तब भूपाल ॥ ५ ॥

ढाल चौबीसमी तर्ज-धोबीडा तूं धोजे मेलां लूगडां रे॥

पन्थीडा ! वात कहो धुर छेहथीरे, केणए उज्जड देश रे।
दीसेरे दीसे छे सुहामणोरे, वारु मांहि विशेष रे ॥ पंथी ॥ १ ॥
देशारे देशा 'उजेणी' नगरीभली रे, सिंहोदर तिहां राय रे।
रूडोरे रूडो ने रलियामणों रे, कोईगन नामो थायरे ॥ पंथी ॥२॥
वज्जरे 'वज्जकर्ण' नामे भलो रे, तेहने छे सामन्तरे।

१ रामना आदेशथी। २ सीताजी। ३ शोभार।

दशांगरे 'दशांगपुर' नो राजीयो रे, गिरवोने गुणवन्त रे।।पंथी।।३।।
हिंडेरे हिंडे आहीडे घणूं रे, नगणे पाप लगार रे।
प्रीतज 'प्रीतिवर्द्धन' नामथीरे, दीठो तव अणगार रे ।। पंथी ।।४।।
ऊभोरे ऊभो कायोत्सर्ग में रे, पूछे सामन्त नाम रे।
किस्यूंरे किस्यूं करो ऊभारह्यारे,! करूं आपणो काम रे ।।पंथी।।५।।
वन में रे वन मे काम किस्यो करोरे, । करूं तप उपवासरे।
जेहथीरे कर्म पड़े छे पातलारे, साधीजे शिव वासरे ।। पंथी ।।६।।
हिंसारे हिंसा दोष वतावीयारे, समज्यो तव भूपाल रे।
श्रावकरे श्रावक हुचो सुन्दरुरे, जीव दया प्रतिपाल रे ।पंथी।।७।।
देवजरे देव नमूं अरिहन्तजीरे. गुरु तो श्री सुध। साधरे।
अवररे अवरने शिर नामूं नहीं रे, धर्म रतन में लाधरे ।। पंथी. ८ ।।
नरवररे ऋषि वांदी घर आवीयोरे, चित्त सूं चिन्ते एमरे ।।
कीधोरे कीधो अभिग्रह आकरोरे. नर नमवानो नेमरे ।।पंथी. ९।।
राजारे सिंहोदर दुःख पामसेरे, कीजे कांई उपायरे।
नियमजरे नियम पले जिम आपणोरे. दुःख नवि पामे रायरे।पं.१०।
मणीनी रे मणिनी कीधी मूंदडी रे. मांहि लिखीयो नाम रे।
अरिहन्तरे अरिहन्त देवनो सहीरे, ए नियम पलवानो ठाम रे।पं.११।
माथे रे माथे चहुडी हाथने रे भलो मनावे राय रे।
मनमूं रे पग वांदे अरिहन्तनारे, आघृ काढ्यां जाय रे ।। पं. १२ ।।
राजारे राजा गीमाणूं घणूं रे. जाण्यो जवए मर्म रे।
व्हालोरे व्हालो एहने हूं नहीं रे, व्हालो श्री जिन धर्मरे।पं. १३।
कोई रे कोई नर उपगारीयोरे, आवी भाखे एहरे।
भूपति पूछे तें किम ए लहीरे. तो फिरी भाखेतेहरे ।।पंथी. १४।।

ढाल चेपक मूलगी—

राय कहे खबर केम पामी. सो कहे सुणीये हो स्वामी, साधर्मी भाई गिरनामी। वात प्रभो ? आगल में दाखूं, झूंठ नहीं साच ही भाखूं सत्यव्रत पाखो ।। ४९ ।।

ढाल मूलगी—

नगरीरे कुन्दनपुरी रलियामणीरे, तिहां वसे छे शाह रे।
यमुनारे उदरे हूं सुत ऊपन्यो रे विद्युत् अंग उच्छाहरे ॥पं. १५॥
अनुक्र मेरे योवननी वय पामीयो रे ,लेई किराणो सार रे।
नगरीरे 'उज्जयणी' चली आवीयो रे, करवाने व्यापार रे ।प. १६।
वेश्या रे वेश्या कामलता अछे रे, तिणसूं राच्यो सोयरे।
खाधोरे खाधो धन मघलो सहीरे, रह्यो निर्धन होयरे॥पंथी॥१७॥

ढाल क्षेपक तर्ज—जल्लो म्हारी जोड रो, उदीयापुर म्हाले रे॥

स्वजन मने वर्ज्यो घणो रे, मतजा वैश्या द्वार।
मूलन मांनी वातड़ी, अब भुगतूं दुःख अपार॥
कहै विद्युत वाणीयो, कुण्डनपुर वासी रे॥ टेर॥ १॥
निर्धनने आदर कुणदहे रे, जिणमें वैश्या जात।
कूड़ कपट री कोतली रे, सङ्ग कियां दुःख पात॥ कहै॥ २॥
वेश्या काढ्यो घर थकी रे, हूँ कह्यो जाऊँ नांय।
तिण कयो म्हारो धन विनारे, काज न चाले काय॥ कहै॥ ३॥
मैं कयो म्हारे धन नहीं रे, होसे तुझने दीध।
कामान्ध हो तब वश पड्यो, मैं तो जहर हलाहल पीध॥कहै॥४॥

— ढाल मूलगी —

राजारे राजानी पटरागीनी रे, श्रीधरा ने कान रे।
कुण्डल रे कुण्डल छे तेहवां रे, दे मुझने तूं आण रे॥ पंथी॥ १८॥
तबही रे तब भाखे भामिनी रे, कुण्डल आवे दाम रे।
चोरी रे चोरी करवा चालियो रे, कुण्डल लेवा काम रे॥पंथी॥१९॥
राणी रे राणी राजसूं कहै रे क्यूं हो उदासी आजरे। ?
दशांगरे 'दशांगपुर' नो नायकूरे, मारण केरे काजरे॥पंथी॥२०॥
रजनी रे रजनी वैरण हुयग्ही रे, कदी पामूं परभातरे।
भाई रे भाई सुतने सहु भलारे, करे सहुनो घातरे॥ पंथी॥२१॥
एहिजरे एह मतु मैं सांभल्यो रे, कुण्डल चोरी त्याजरे।
आव्यो रे आव्यो मैं कहवा भणी रे, साधर्मी निमित्ते साजरे।२२।

निसुणीरे निसुणी ए पुर राजीयोरे, कणतृण अधिक अपाररे।
वातजरे वात कहंता आवीयारे, दल वलनो नहीं पाररे ॥पंथी॥२३॥
वींट्योरे वींट्यो पुर घर चिहूं दिशेरे, चन्दनने जिम सापरे ।
आवणरे आवण जावण नकोल है रे, लोकों लाग्यो पापरे ॥२४॥
राजारे राजा दूतज मोकल्योरे, भूपति पासे तामरे ।
मुद्रारे मुद्रा मूकी मन्दिरेरे, आवी करो प्रणाम रे ॥ पंथी ॥२५॥
भूपतिरे भूपति भाखे एटलू रे, देवगुरु विण देखरे ।
मानसरे मानसने नमवो नहींरे, नियम अछे सुविशेषरे ।पंथी।२६।

ढाल चेपक मूलगी

राय कहे देवगुरु टाली, नमें नहीं मस्तक मुज ज्हारी, प्रतिज्ञा ऐसी है म्हारी । अवरको वात मुझ भाखो, किसी विध शङ्का मत राखो ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ५१ ॥ धर्म की दृढ़ता मन म्हारे, धर्म मुझ वंछित ही सारे, सुरासुर सब इनके लारे । प्रतिज्ञा लीधी सो साची , कदेही होवे नहीं काची ॥ सत्य० ॥ ५२ ॥

ढाल मूलगी

पोरुषरे पौरुष तो ए कोनहीं रे, धर्म तणो दृढावरे ।
बाकीरे बाकी कहो तिमही करूंरे, अवरन कोई कहावरे ॥ २७ ॥
धर्मजरे धर्म द्वारे मुज भणीरे, धर्म करवा जाऊंरे ।
म्हारेरे म्हारे धर्म सखाईयोरे, धर्म थकी सुखपाऊंरे ॥पंथी॥२८॥
एकहीरे एकनमाने राजवीरे, आणे अति अभिमान रे।
रोकीरे रोकी रह्यो सहु लोकनेरे, आगतितो असमानरे ॥ २९ ॥
लूंटेरे लूंटे देश दयामणोरे, रखवालो नहीं कोई रे ।
तेहथीरे तेहथी देश दयालजीरे, गयो सब उजड़ होईरे ॥ ३० ॥
दंपणरे दंपण लेई कुटुम्बों आपणोंरे, अलगो थयो अपाररे ।
बाल्यारे बाल्या मन्दिर मालीयारे, नाणं दया लगाररे ॥ ३१ ॥
म्हारीरे म्हारी नगरी छापरीरे, लोके न्हांकी पहाडीरे ।
जावूंरे जावूं लेवाने लाकडीरे, बगमें नार कुहाडीरे ॥पंथी॥३२॥

भूंडूंरे भूंडूंए भलामणी रे, दीठो दर्शन आजरे।
देवजरे देवतरुसम देवनूंरे, सरियू वंछित काजरे॥ पंथी॥ ३३॥
तेहनां रे एह वचन श्रवणे सुणीरे, आणी दया दिल मांहीरे।
दीधूंरे रत्न सुवर्णमय सूत्रजीरे, दारिद्र हरे नृप ग्राहिरे॥ ३४॥
लक्ष्मण रे लक्ष्मण पुरमें मोकल्योरे, तेह भूपतीनी पासरे।
उत्तम रे उत्तम नर अवलोकवेरे, पाम्यो अति उल्लासरे॥ ३५॥
सेवारे सेवकरूपी साचवेरे, लक्ष्मण भाखे तामरे।
वनमें रे वन में वयठो अछे रे, 'सीता' शूं श्री रामरे॥पंथी॥३६॥
भूपतिरे 'लक्ष्मण' जी तिहां आवीयारे, आण्या घर बोलायरे।
भोजनरे, भोजन भक्ती करी भलीरे, 'राम' तदा सुखपायरे॥३७॥
लक्ष्मणरे 'लक्ष्मण' जीने मोकल्योरे, राजा पासे तेवार रे।
जाणेरे, एह उपद्रव टालीयेरे, जग म्होटो उपकाररे॥पंथी॥३८॥

ढाल मूलगी क्षेपक

सिंहोदर पास ही आवे, भरत का दूत ही थावे. भरत का वचन सुनवावे, सुनो तुम सिंहोदर राजा, करो तुम मेरा यह काजा॥ सत्य व्रत पालो॥ ५३॥

ढाल मूलगी

राजारे राजा आण मनावीयारे, 'भरत' भलो भूपालरे।
एहजरे एह उपद्रव सांभलीरे, टालसे तत कालरे॥ पंथी॥३९॥
सेवकरे सेवक सूं अनुशासनारे, राजाजीनी जोईरे।
परण्योरे परण्या पछे लाते मारवूंरे, अण परण्या स्युं होईरे॥४०॥
एहिजरे सामन्तछे धुर माहरोरे, मुझ साथे गुमानरे।
वांकजरे काढीने सूंधू जोकररे, तो किस्यो राजानरे॥पंथी॥४१॥
पुनरपिरे पुनरपि 'लक्ष्मण' जी कहेरे, दीसे कवण अन्यायरे।
पालेरे पाले निश्चय धर्मने रे, कहै तुम्हारो शूं जायरे॥पंथी॥४२॥
आधूंरे आधूं तो नवि खींचियेरे, चित्तमां आण नयाण[१] रे।
सायररे सायर अंते जाणीयेरे, 'भरत' भूपनी आणरे॥पंथी॥४३॥

१ सज्जनपणो।

खीज्योरे खीज्यो राजा अतिघणूंरे, निसुणी भरत वखाणरे ।
लेईरे क्यूं नहीं जावे एहनेरे, पुरुषो वचन प्रमाणरे ॥पंथी॥४४॥

ढाल क्षेपक मूलगी

दूत है तुझने नहीं मारू, और का जोर नहीं धारूं, इसीका कुल ने संहारूं, धूगं लग चाक रहै म्हारो, बिगारयो नहीं कारज थारो ॥ सत्यव्रत पालो ॥ ५४ ॥

ढाल मूलगी

'लक्ष्मण' रे भाखे, भूपालने रे, भोलामांही भोलरे ।
ऊठीरे उठी आव उतावलोरे, जोऊं थारो जोर रे ॥ पंथी ॥४५॥

स्वामी नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–अरजी सुन नेम हमारी

बोले तब 'लक्ष्मण' प्यारो, देखूं अब जोर मैं थारो ॥ टेर ॥

यह धर्म धुरन्धर, दृढतारो अधिकारो । जिणसूं कोप राजा, होस्ये तुझ मुख कारो ॥ धिक् २ तुझ जमवारो ॥ १ ॥ स्वधर्मी यह ' भरत ' के कहीये, तिण सूं मदत । तिहूं खण्डाधिप 'भर्त' कहीजे, सहुको जानन हारो ॥ आवे नहीं चवड़े नीहारो ॥ बोले ॥ २ ॥ कोप्यो राय 'सिंहोदर' तब कहै, बोले दूत ए खारो । ग्रहो २ ए दुर्बुद्धि ने, गल हत्थो दे मारो ॥ लक्ष्मण कहै को हूंसियारो ॥बोले॥३॥ ' लक्ष्मण ' कहै रे ढोर शिरोमण, क्यों आयो अन्त थारो । एम कहन्ता सुभटज धाया, ग्रहि २ निज हथियारो ॥ दलबल अतुल अपारो ॥बोले॥४॥

ढाल मूलगी क्षेपक

लक्ष्मणजी कोपे परजलीयो, कोप से दल सब खलबलीयो, सिंहोदर कहै दूत ओ अकलियो, इस्यो नहीं देख्यो मैं आगे, जाणे कोई जमराजा मागे ॥ सत्य० ॥ ५५ ॥ समरना सौकी मनवारा, उठे तब सुभट हुंसियारा, पत्रायुध हाथ मे न्यारा, लेवे वे ढालों का ओटा, उठे अबे कादेमा पोटा ॥ सत्य० ॥ ५६ ॥ दूत हो वचन कटुक भाखे, कायदो जग नहीं राखे, बोलीरा फल यो अब चाखे कोई कहै इसका हैं काढो, कोई कहै जमी बीच गाडो ॥सत्य॥५७॥

ढाल मूलगी

आयोरे कर आडम्बर आकरोरे, आपणपे अयाणरे।
लक्ष्मणरे ऊपाडी लीधो सहीरे, हाथीनो आलानरे ॥ पंथी ॥४६॥
त्रास्यारे त्रास्या विविध त्रासस्युं रे, नाठा जावे दूर रे।
ऊछलिरे गज ऊपरथी बांधीयोरे, आण्यो राम हजूर रे ॥ ४७ ॥

क्षेपक चन्द्रायण

सुनहूं सिंहोदर बात सेवकर करणकी, मन तजीये अभिमान भेट मति मरणकी। जाणो एह विचार और कछु नावने, सुख से वीते काल पाय पड इणतने ॥ १ ॥ वचन तुम्हारो शीश हुकम परवांन है, आज्ञा है अखण्ड रामकी आण है। मोकू अपनो जाण दया चित्त दीजीये, मन मोंने सी आप भोलावण कीजीये ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

राजारे 'सिंहोदर' पगे लागीनेरे, राजन सूं भाखन्तरे।
जाण्योरे मैं नवि प्रभुजी तुम्ह अछोरे, कां ए फल चाखन्तरे।४८।

ढाल मूलगी क्षेपक

मनें नहीं आपरी खबर, हुतीतो लेलेतो सबर, जोरहै 'लिछमण' को जबर ॥ प्रभुके दया दिल आवे, जानकी बन्धन छुडवावे ॥ सत्य० ॥ ५८ ॥

ढाल मूलगी

म्हारोरे खमजो ए अपराधजीरे, आपो अब आदेशरे।
मांहोंरे मांहां मांहै, मन मेलव्योरे, भाखे ताम नरेशरे॥पंथी॥४९॥
बन्धनरे बन्धन खोल्या हाथसूंरे, मेलवीया नृप दोईरे।
घरघररे घरघर थार वधामणांरे, आनन्द वर्त्यो जोईरे॥पंथी॥५०॥
आधोरे राज्य दीयो सिंहोदररेरे, राघवजीनी साखरे।
मिटिओरे मिटियो तस सेवक पणंरे समृत जाई भाखरे॥ ५१ ॥
कुण्डलरे मांगीलीया राणीकनेरे, विद्युत अङ्गने दीधरे।
कीधोरे नगरीनो अधिकारीयोरे, पंचांमें परसिद्धरे॥ ५२
कन्यारे 'सिंहोदर' राजातणीरे, तीन सयां परिमाणरे।

आठज रे आठ अछे भूपालने रे, विवाह तणो मण्डाण रे॥पंथी५३॥
लक्ष्मण रे 'लक्ष्मण' कहे परणूं नहीं रे, वनवासो जवतांय रे।
पछी रे पछी परणीसुं सही रे, राजा निज घर जाय रे ॥पंथी॥५४॥
ढालज रे ढाल भली चौवीशमीं रे, राजा राखी टेक रे।
धर्मथी रे 'केशराज' प्रत्यक्षपणे, सरिया काज अनेकरे ॥पंथी॥५५॥

दोहा (आशावरी रागे)

रात रही श्री रामजी, मलया चलने जाम ।
जातां विचे आवीयो, देश सु 'निर्जल' नाम ॥ १ ॥
तृषा व्यापी सीता भणी, तरुतले ले विश्राम।
जल लेवाने कारणे, ' लक्ष्मण ' धायो ताम ॥ २ ॥
आगे एक सरोवरू, दीठुं अधिक अनूप ।
जलक्रीडा करवा भणी, आव्यो छे इक भूप ॥ ३ ॥
'कूबेरपुर' नो राजीयो, नाम 'कल्याण' सुकुमाल ।
'लक्ष्मण' ने देख्यों थकां, राच्यो रूप रसाल ॥ ४ ॥
आकारे करी ओलखी, ए छे कोई नार ।
आमंत्रण भोजन तणो, वड़ो प्राहूणो विचार ॥ ५ ॥
सो रे कहुं जिमवुं नहीं, भाई छे वनमांहि ।
मंत्रीश्वर सामन्तजे, लाया लेई उच्छाहि ॥ ६॥
स्नान करी भोजन भलूं, आरोगी रघुराय ।
बतलावे ते भूपने, सहज पणूं न छुपाय ॥ ७ ॥

ढाल पच्चीशमी

तर्ज—देखी सखी प्रभु कण्ठ विराजे ।

आभलो रे सीतापति करो, जिहां जिहां संचार रे ।
तिहां तिहां ना काज समारे, करी करी उपकाररे ॥ आभलो ॥१॥
' कूबेरपुर ' पति बोलीयोरे, स्वामी सुणो सुविचार रे ।
'बालिखिल्य' राजाभलोरे, पृथिवी नो भरतार रे ॥ आभलो ॥२॥
गर्भवती राणी हुई रे, एटले असुर आयरे ।
बांधी लीधो ने रायनेरे, छोरावीयो नविजाय रे ॥आभलो॥३॥

राणीए जाई पुत्रीकारे, मंत्रीए भाख्यो पुत्ररे।
पुत्र पनोताथी रह्यो रे, आगेही घर सूत्र रे ॥ आभलो ॥ ४ ॥
'सिंहोदर' सुत सांभलीरे, थापी चान प्रधान रे।
'वालिखिल्य' घरे न आवेरे, तिहां लगे ए राजानरे ॥आभलो॥५॥
पुरुषवेष धारी रही रे, बालपणाथी जोई रे।
माता मंत्री बाहिरो रे, भेदन जाणे कोई रे ॥ आभलो ॥ ६ ॥
वसुधा मांहै विख्यातजीरे, भूप 'कल्याण' सुकुमालरे।
मंत्री महोटो तो कयोरे, राज्यतणो रखवालरे ॥ आभलो ॥ ७ ॥
अर्थ घणों असुरां भणीरे, आपूं छूं हूं आप रे।
अर्थ तणा अर्थी नहीं रे, असुर न छोड़े बाप रे ॥ आभलो ॥८॥
'सिंहोदर' थी राखीयोरे, 'वज्रकर्ण' नृप जेमरे।
असुरांथी ऊवारीये रे, बाप अमारो तेम रे ॥ आभलो ॥ ९ ॥
'राम' कहै तूं तुरत में रे, पर हो मत करिश वेपरे।
तात छोड़ावी ताहरो रे, आवेज्यों सुविशेषरे ॥ आभलो ॥ १० ॥
महाप्रासाद करी लियो रे, कन्या राजा रूपरे।
लक्ष्मणजी ने परणावीये रे, मंत्री कहै अनूपरे ॥आभलो ॥ ११ ॥

ढाल चेपक मूलगी

कामए प्रभुजी मुज्ञ करणो, हमांने आपको शरणो, ब्याहको होंकारो भरणो ॥ प्रभो मत नाकारो दीजे. भेट आ चरणां में लीजे ॥ सत्य० ॥ ५९ ॥

ढाल मूलगी

'राम' कहै वनवास में रे. होई आवुं जाम रे।
तव लग घर बैठी रहो रे, पछे सरसी काम रे ॥आभलो ॥१२॥
तहति कही दिन तीसरे रे, प्रभुजी पाछली रातरे।
आगाने ऊठी चल्यारे, नृपे जाण्यो परभात रे ॥ आभलो ॥१३॥
नदी नर्मदा आवीया रे, विंध्या अटवी जाई रे।
लोके ते वज्यों घणूंरे. जाये बेपरवाई रे ॥ आभलो ॥ १४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी

कहन प्रभु किनकी नहीं माने, चालन की वातही ठाने, सिंह कहो किस का भय माने, निडर हो तिनोंही चाल्या, रह्या नहीं किणराही पाल्या ॥ सत्य० ॥ ६० ॥

—: ढाल मूलगी :—

दक्षिण नी दिशे अनुसरीरे, कण्ट की तरु भूरीरे ॥
माठो को दीसे नहींरे, जाये मार्ग रज चूरीरे ॥ आभलो ॥१५॥
शुकना शुकन नागणेरे, नागणे घाट विघाटरे ॥
दुर्बल ने एसोचनारं, बलियों उज्जड वाटरे ॥ आभलो ॥ १६॥
असुरोंनी सेनाघणीरे, दल बल नो नहीं पाररे ॥
देश घातने नीकल्यारे. मिल गया तेणी वाररे ॥ आभलो ॥१७॥
सेनामें सेनापतिरे, तरुण पणोछे तासरे ॥
सत्य वती अविलोक नारे, पायो अति उल्लासरे ॥ आभलो ॥१८॥
असु रोने नेडो कहेरे, उदालो ए बालरे ॥
धम मस करता धाईयारे, राम प्रत्ये तत कालरे ॥ आभलो ॥१९॥
लक्ष्मण भाखे राम सूंरे, तुम रहो सीता पासरे ॥
धनुष्यनाटंकारथीरे, असुर गया सब नाशरे ॥ आभलो ॥ २० ॥
सेना पति सामन्त सूंरे, लागो राघव पायरे ॥
चरित्र सुणावे आपणोरे, आगे ऊभो आयरे ॥ आभलो ॥ २१ ॥
"कौशाम्बी" नगरी भलीरे, "वैश्वानर" अभिधानरे ॥
ब्राह्मण 'सावित्री' धणीरे, जायो सुत अज्ञानरे ॥ आभलो ॥२२॥
'रुद्र देव' अति रुद्रजीरे, करतो करम क्रूररे ॥
चोर अन्यायीने जोररे, वाजे अपजश तूररे ॥ आभलो ॥ २३ ॥
चोरी करतां साहीयोरे, शूलीनो आदेशरे ॥
नृपे दीधो तव श्रावकेरे, छोडाव्यो सुविशेषरे ॥ आभलो ॥२४॥
शिक्षामण दीधी मुज भणीरे, मतकर एहवो कामरे ॥
पल्ली मांहे आवतांरे, मैं पायो विश्रामरे ॥ आभलो ॥ २५ ॥
पल्ली पति एहं हुवोरे, तेज प्रताप प्रचण्डरे ॥

कोई यन होवे सामु होरे, वर्ते आण अखण्डरे ॥ आभलो ॥२६॥
बांधू राणा राजीयारे, पाडूं सघले त्रासरे ॥
आज हुवो मुज जाणजोरे, देव ! तुम्हारो दासरे ॥ आभलो ॥२७॥
अविनय कीधो आकरोरे, खमजो मुझ अपराधरे ॥
भाग्य वडूं जे माहरुंरे, प्रभु तुम दर्शण लाधरे ॥ आभलो॥२८॥
कामतणो आदेशथी रे, द्यो मुझ प्रत्ये आजरे।
'बालिखिल्य' ने छोड़ीदे रे, पहलो करए काजरे ॥आभलो॥२९॥
'बाली खिल्य' ने छोडी नेरे, असुरें कर्यो प्रणामरे ॥
'बालि खिल्य' करजोडीनेरे, प्रणम्यो प्रभुजी रामरे॥ आभलो ॥३०॥
'राम' तणा आदेशथीरे, दीधो पूरी प्होंचायरे ॥
'कल्याणमाला' कूंवरीरे, देख्योंथी सुख थायरे ॥ आभलो ॥३१॥
ढाल भली पचीसमीं रे, बन्दी मोचन नाम रे ॥
'केशराज' श्री रामजी रे, काम करे अभिरामरे ॥ आभलो ॥३२॥

दोहा (सारंगरागे)

वींध्या अटवी अतिक्रमी१, मेलंतां बहुग्राम ॥
महानदी तापी नरी, उरहा आया ताम ॥ १ ॥
प्रान्त ग्राम ग्रामों विषे, 'अरुण' एहवो ग्राम ॥
निर्लज ने निर्धन घणा, लोक वसे निर्मामर२ ॥ २ ॥
'कपिल' नामे अति क्रोधियो, ब्राह्मण महा कुपात्र ॥
अग्नीहोत्र-कर्माचरे, गर्वे पूरित गात्र ॥ ३ ॥
'सुशर्मा' सुखदायीनी, ब्राह्मण गुणनी जाम ॥
मीठी बोली माननी, वसुधा मांहे वखाण ॥ ४ ॥
'सीता' ने तृष्णा व्यापथी, पाणी पीवा काज ॥
आवी गयाते गांवमां, वेश पन्थीनो साज ॥ ५ ॥

—(ढाल छावी गमी)—

तर्ज—धन्य धन्य सतीजी आपको रखे राम ॥

'राम' पधारीयाजी, ब्राह्मण केरे गेह ॥

१ प्योलंगी—हद बहार जई २ नायक विनाना—निरामी—

दर दे अति ब्राह्मणीजी, आणी धर्म सनेह ॥ राम० ॥ १ ॥
सन मांड्या जु जु आंजी, देती अति सन्मान ॥
तल पाणी पाईयोजी, जाणे अमृत पान ॥ राम० ॥ २ ॥

—ढाल क्षेपक मूलगी—

शर्मा' करती है अर्जी, कीजिये मोपर शुभ मरजी, विराजो रात
वरजी ॥ रामजी भर्यो हौंकारो, सीता तब देवे नाकारो ॥ सत्य.॥६१॥

यसुन्दरजी कृत–ढाल क्षेपक तर्ज अरणक मुनिवर चाल्या गौवरी—

युडा ! न रहीये रे मन्दिर पारके, (टेर) रहियों होत विखादो रे ॥
ापांनो वन वासो आदर्यो, छोड्या रसना स्वादो रे ॥ पियुड़ा ॥ १ ॥
नज इच्छाए रहियो अतिभलो, इण सम सुख जग नाहीं रे ॥
र इच्छाए सुख दुःख देखीये, शास्त्र वदेए प्राही रे ॥ पियुड़ा ॥ २ ॥
ाम कहे दिन थोड़ो अछे, ब्राह्मणी भक्ती अपारो रे ।
ात रहीने प्राते चालस्यों, जब उदे दिनकारो रे ॥ पियुड़ा ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

टल्ले ब्राभण आवीयोजी, प्रगट पणे रे पिशाच ।
कोप करे अति क्रोधीयोजी, ताम विखेरे बाच ॥ राम ॥ ३ ॥
रकोण मेले ल्हूगडेजी, घर में घाल्या आज ।
अग्नीहोत्र अपवित्रियोजी, कीधूं काज अकाज ॥ राम ॥ ४ ॥
नीकल म्हारा घर थकीजी, नहीं तर तोडूं हाड ।
मामिनीनो[१] मुख मांडवाजी, आयो लेई मुगड़ ॥ राम ॥ ५ ॥
शरणे आवी सुन्दरीजी, 'सीता' राखी पूठ ।
तो पण नटले पापीयोजी, 'लक्ष्मण' आयो ऊठ ॥ राम ॥ ६ ॥

टाल क्षेपक तर्ज–अरणक मुनिवर०

'सीता' मारे रघुवर में कह्यो, नहीं रहीये इण गेहो रे ।
बनमां सुखसूं रहिनां आपणे, वृठना अमृत मेहो रे ॥ पियुड़ा ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी

पग साहीने फेरीयोजी, उच्छाल्यो आकाश ।

१ चिल्ली ।

न्हांखण लाग्यो तेटलेजी, ब्राह्मण पायो त्रास ॥ ७ ॥
पाड़े अधिकी पीपडीजी, मिथ्या लोक अपार।
भेद लहीने भाखडीजी, फिट रे फिट गिमार ॥ राम ॥ ८ ॥
कीटी पर कटक एजी, करतां शोभा न कोई।
करुणा आणी रामजीजी, दीधो छोडावी सोई ॥ राम ॥ ९ ॥
तिहां थकी चाली गयाजी, बीजी अटवी मां है।
काजल वर्णी शामलीजी, परम भयंकर प्राहे ॥ राम ॥ १० ॥
जलधर[१] लाग्यो वरसवाजी, आवी गयो चौमास।
वडला तले वासो बस्योजी, आणी अति उल्लास ॥ राम ॥ ११ ॥
अधिष्टायक देवताजी, प्रभु थी पामे त्रास।
ए तेहने भारे नहीं जी, हुवो अधिक उदास ॥ राम ॥ १२ ॥
'ईभकर्ण' नामे भलोजी, जक्ष जक्ष सिरदार।
जाई पुकार्यो देवनेजी, तव ते करे सुविचार ॥ राम ॥ १३ ॥
भाग्य हीन सुर पापियाजी, अवसर चूक्यो एह।
एतो म्होटा प्राहुणाजी[२], आया छे तुम्ह गेह ॥ राम ॥ १४ ॥
वासुदेव अष्टमाजी, ए अष्टमा बलदेव।
महापुरुष पृथिवी विशेजी, क्यूं न करो ते सेव ॥ राम ॥१५॥
नव जोजन चहुडा पणेजी, लांबी जोजन बार।
कोट अने वर कांगुराजी, ऊंचा मन्दिर सार। राम ॥ १६ ॥
हाट भर्या बहु वस्तु सूंजी, धर्यो न धन नो पार।
कूप वापि वारी सुंजी, शोभा विविध प्रकार ॥ राम ॥ १७ ॥
पुरी 'अयोध्या' सारिखीजी, 'राम पुरी' अभिराम।
रात्री विषे रचना करीजी, देव तणा ए काम ॥ राम ॥ १८ ॥

स्वामी नथमलजी कृत—टाल क्षेपक तर्ज वेसर सोना की

नगरी राम की आतो तत क्षिण कीधी तैयार ॥ टेर ॥
देवतणी ऋद्धि नो विस्तार, कहतां नावे पार ॥ नगरी ॥ १ ॥
अभिनव अलकापुर अनुमांन, मानूं धरी है स्वर्ग की आन ॥ २ ॥

१ वर्षा। २ महमान।

महिल मनोहर अभिनव गोष, कर नूतन मनरी जोप ॥ ३ ॥
चहूं दिश चोहटा भरया भंडार, माल किराणा अति व्योपार ॥४॥
पोढया 'लिछमन' 'सीता' 'राम', सेज सुकोमल ठाम ॥नगरी॥५॥

ढाल मूलगी

मङ्गल शब्द सुहामणाजी, जाण्यो 'राम' नरेश ।
नगरी नयणे निरखतांजी, पायो सुख सुविशेष ॥ राम ॥ १९ ॥
विणा धार विशेषखूंजी, 'ईभकर्ण' वर यक्ष ।
दीठो ऊभो आगलेजी, सुरतरु तो प्रत्यक्ष ॥ राम ॥ २० ॥
विस्मयवंत विचारीयोजी, राजा 'राम' जेवार ।
यक्ष कहै यो मैं कियोजी, वासतणो विस्तार ॥ राम ॥ २१ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-हरखी २ रे

दिन उगेने लोग लुगाई, नगरी सोवनी देखे ।
मन्दिर माला अधिक रसाला, हर्ष घणो सुविशेषेजी ॥
नगरी खूब बनीछेजी, योंका राम धणीछेजी ॥ टेर ॥ १ ॥

श्री रामचन्दजी महाराज कृत ढाल क्षेपक तर्ज-येसर सोनाकी

नगरी 'राम' की, आतो देवता कीधी तैयार ॥ टेर ॥
पग पग प्रगटे नवे निधान, सुरनर किंकर समान ॥ नगरी ॥६॥
जहां जावे वहां हुवे आनन्द, काटे पराया फन्द ॥ नगरी ॥ ७ ॥
सोवन कोट विराजे एन, पुन्यवन्त करता चैन ॥ नगरी ॥ ८ ॥
धर्म जैन परम दयाल, गउ ब्राह्मण प्रतिपाल ॥ नगरी ॥ ९ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-हरखी २ रे

कूवा वावी अधिक सरोवर, मन्दिर मोहन गाराजी ।
हुक्का द्रव्य भर्या निज घरमें, वरसे कञ्चन धाराजी ॥नगरी॥ २ ॥
देवता मावे मुणो सहुजन, चिन्तामकरो कांइजी ।
क्षांशल्ल जाण प्रभुजीके, नगरी एह बनाईजी ॥ नगरी ॥ ३ ॥
सागर नाटिक कर शोभे, कहितां पार न आवेजी ।
स्वर्ग लोक सा सुख भोगवतां, सुखसूं काल गमावेजी ॥नगरी॥४॥

ढाल मूलगी

देव विशेष सेवा करेजी, आछो अवसर पामि।
हूंछूं सेवक ताहरोजी, तुम्हे छो महारा स्वामी ॥ राम ॥ २२ ॥
यक्ष पुरुष सेवा करेजी, पोपे परिगल प्रेम।
राम रहै सुखमें सहीजी, पुण्य तणा फल एम ॥ राम ॥ २३ ॥
'कपिल' विप्र इन्धन भणीजी, अटवी में आयन्त।
नूतन नगरी देखतोंजी, 'इजरज' अति पावन्त ॥ राम ॥ २४ ॥
नारी रूपे यक्षणीजी, विप्रे पूछ्यूं ताम।
नीपावी नूतन पुरीजी, वास बसे श्री राम ॥ राम ॥ २५ ॥
याचक ने जलधर परेजी, वरसे कंचन धार।
एम सुणन्तां खलवल्योजी, ब्राह्मण लाग्यो लार ॥ राम ॥ २६ ॥
जन्म दारीद्री हूं अछूजी, एले जमारो जाय।
जेम हूं पामू दक्षिणाजी, भाखो सोई उपाय ॥ राम ॥ २७ ॥
सा भाखे नगरी तणाजी, द्वार अछे वर चार।
रखवाला यक्ष ही रहेजी, कौन लिये पइसार ॥ राम ॥ २८ ॥
नवकार§ भणेजे मुख थकीजी, धारे नियमजे बार।
श्रावक होई जानतांजी, कोन करे भणवार ॥ राम ॥ २९ ॥
साधु समीपे आवीयोजी, आपण श्रावक होई।
घरणी कीधी श्रावीकाजी, तव चाल्यां ते दोई ॥ राम ॥ ३० ॥
पूर्व कथित विधि साचवीजी, राम समिपे आय।
उभा ब्राह्मण ब्राह्मणीजी, कोई य न कहीणो जाय ॥ राम ॥ ३१ ॥

---

§ तर्ज लंगड़ी—

मंत्रों का मंत्र नवकार मंत्र तंत्रों का तंत्र दरे दुःख तन का।
जो लेवे धार हुवे पल में पार, करदे उद्धार पापी जनका ॥ टेर
पूर्वों का सार शरण आधार है गुण अपार तारण तिरण।
मंगलीक आप, जयवन्त जप, दे सुख अमाप कल्याण करन ॥
मनोरथ के पूर चिन्ता दे चूर घटे कर्म कहर भय दुःख भजन।
है यही रत्न नागदमण जाण पारस प्रधान करदे कंचन ॥
भाखे जिनेश रटले हमेश, टल जावे कलेश उनके मनका ॥ जो लेवे

ढाल क्षेपक मूलगी—

'लिछमण' ने देखने ऋाठो, ब्राह्मण तब पाछो ही नाठो, एणे मुझ कूटयो तो काठो । 'राम' कहे स्वाधर्मी भाई, बोलावो अभयदान दाई ॥ सत्य ॥ ६२ ॥

ढाल मूलगी—

लक्ष्मण बोलावी लियोजी, तब ते देय आशीस ।
दीधी बंछित दक्षिणाजी, सफली करीय जगीश ॥ राम ॥ ३२ ॥
घरे आवी धन खरचीयूंजी, लीधो संयम भार ।
कारज सार्यों आपणोंजी, ए प्रभु नो उपकार ॥ राम ॥ ३३ ॥
अब चौमासो ऊनर्योंजी प्रभुजी चालण हार ।
यक्षे दीधो रामनेजी, 'स्वयम्प्रभ' वर हार ॥ राम ॥ ३४ ॥
लक्ष्मणने तो कुण्डलेजी, ते जडिया मणि रयण ।
चूड़ामणी* सीता भणीजी, आपी उपजाव्यो चयण ॥राम॥३५॥
मनना वांछित रागनेजी, सम्भलावाने हेत ।
वीणा दीधी वेगसूंजी, सघला साज समेत ॥ राम ॥ ३६ ॥
पहोंचाडी पाछा वल्याजी, देव महा सुखदाय ।
प्रभुजी आगे चालियाजी, नगरी गई विलाय ॥ राम ॥ ३७ ॥
ढाल भली छावीशमींजी, देवकियो अनुराग ।
'केशराज' मुनि भाखीयोजी, राम तणो सोभाग ॥ राम ॥ ३८ ॥

दोहा (सिंधुड़ा रागे)

मांचरतां सुखमें मही, सांज समें सहु कोई ।
'विजय' पुरी चलि आवीया, वासो सोधे सोई ॥ १ ॥
नगरीना उद्यान में, वडलो अछे विशेष ।
मन्दिरना आकार सूं, वासो वसे नरेश ॥ २ ॥
'महिधर' महिमा नीलो, राजा पाले राज ।
'इन्द्राणी' राणी तणी, कहीये कन्थ सकाज ॥ ३ ॥
'वनमाला' पुत्री भली, बालपणाथी एम ।

* मस्तकना गहना अर्थात बोर

टेक ग्रही ' लक्ष्मण ' वरूं, अवर वरूं तो नेम ॥ ४ ॥
वनवासो श्रवणे सुणी, राजा करे विचार ।
कदी घर आवी परणसे, विवाह तणी एवार ॥ ५ ॥
प्रौढी पुत्री जाणिने, माय बाप परिवार ।
परणावे उतावली, राखी करे विकार ॥ ६ ॥
' इन्द्रनगर '[१] नो राजीयो, ' वृषभ ' राय मल्हार ।
'सुरेन्द्ररूप' राजा भणी, सादीधी ते वार ॥ ७ ॥

ढाल सत्तावीशमीं
तर्ज–सिंधीकी देशी (गुरांजी थे मने गोडे न राख्यो)

'वनमाला' ए निसुणी जाम, मनमांहे अकुलणी ताम ।
रात ही में वनमांहे आवे, एकाकी मरवाने दावे ॥ वन ॥ १ ॥
वनदेवीनी कीधी पूजा, लक्ष्मण टालीने वर दूजा ।
जन्मान्तरे पण मुझ मति[२] आपे, एम कहीने मरवू थापे ॥ २ ॥
तेहीज वडले आवी चाली, लक्ष्मणजी ए दीठी साचाली ।
रामसु सीता सुखमें सोवे, लक्ष्मण जागे दश दिशे जोवे॥वन॥३॥
ए कोई वनदेवी दीसे, ए वटवसणी[३] विश्वावीशे ।
वड आरोही ऊपर आई, 'लक्ष्मण' पूठे चढ्यो धाई ॥ वन ॥ ४ ॥
वनदिग् व्योमतणी सहुदेवी, मनवच काया करीने सेवी ।
सांभलजो ए बोल हमारो, मुझने देजो लक्ष्मण प्यारो ॥ वन ॥५॥
इहभव टाल्यो परभव देजो, तूं तादशी बलिपूरा लेजो ।
एम कही नांख्यो गल पासो, 'लक्ष्मण' देखे एह तमासो ॥ ६ ॥
अविलम्बे सोचे ने तेंने, लक्ष्मणजी भाखे तस हेते ।
भद्रे ! साहस मकरो कान्चो, मोहूं 'लक्ष्मण' जाणो साचो ॥ ७ ॥
बांहे साही हेठी आणी, पड्ले जाग्या राजा राणी ।
'लक्ष्मण' सहु वृत्तान्त सुणावे, सीता राम सदा सुख पावे ॥ ८ ॥
लज्जा पामी प्रभुजी निरखी, पण सुन्दरी मनमांहे हरखी ।

१ चन्द्रनगर (जैन रामायण) २ मति । ३ वडमां वसनारी ।

सीता राम तणे पगे लागी, जाणे भाग्य दशा अब जागी ॥ ९ ॥
पछी 'इन्द्राणी' नृपनी नारी, नवि देखे 'वनमाला' प्यारी ।
करुणास्वरे ऊठी पोकारी, राजाने दुःख हुवो भारी ॥ वन ॥१०॥
'वनमाला' देखण ने राजा, चाल्यो साथे सुभट ले ताजा ।
प्रभुपासे 'वनमाला' देखी, राजाने अति रीस विशेषी ॥वन॥११॥
हणो हणो कही मचायो शोर, एछे मुझ कुंवरीनो चोर ।
सामो ऊठ्यो लक्ष्मण देवो, राय सुभट त्रास्या ततखेवो ॥ १२ ॥
ओलखीयो लक्ष्मण जामाता, राजाजी पाम्यो सुख साता ।
घरही आवी चाली गङ्गा, कुंवरीनो तो कर्म सुचङ्गा ॥वन॥१३॥
लक्ष्मण को वखाने डाही, बाल पणाथकी, उत्साही ।
अब प्रभुजी ए पुत्री परणो, एहि वाते विलम्ब न करणो ॥वन॥१४
आदर अधिके मन्दिर आणे, भोजन भक्ती करी सन्माने ।
वासर[1] हुवाछे वेचारो, वर्ते सुख नहीं असुख लगारो ॥वन॥१५॥
परन्दर[2] पूराणी अद्भूतो, एटले एक पधार्यो दूतो ।
अति वीर्ये मोकलीयो आयो, ऊपज्यो जाणो अति सन्तापो॥१६॥
'निंद्यावर्त' नगरथी आयो राजाजी ए सो बतलायो ।
भरत संघाते विग्रह[3] वारु, 'अतिवीर्य' ने आज अपारु ॥ १७ ॥

—ढाल मूलगी चेपक—

लक्ष्मण कहे भरतसुं झगडो, थयो किन कारण ए रगडो, दूत कहे मुझ स्वामी जबरो । भरत की सेवा ही चावे, भरत पिण सन्मुख ही आवे ॥ मन्य० ॥ ६३ ॥

ढाल मूलगी—

'भरत' पक्षे बहु भूपति आया, खड़ियूं खेत अंबाऊं बजाया ।
'अतिवीर्ये' तुमने बोलाया पक्षथकी बल बधत मचाया ॥ १८ ॥
काम पड्यां जे सारे काम, सोई सगो जगमें अभिराम ।
काम पड्यांथी जे दीये टालो, तेह सगानूं मुख करो कालो ॥१९॥
लक्ष्मण भाखे एह विरुद्ध, क्यूं उपजिओ छेरे अयुद्ध ।

1 दिन । 2 पुरन्दर । 3 सभा ।

दूत कहै मुझ स्वामी बलीयो, ए वातां में मैं अटकलीयो ॥२०॥
'भरत' भूपति वांछे सेवा. विग्रह कारण एह लहेवा।
कोई न हार्यां कोई न जीतो, दोई पक्षे छे सुजश विदीतो ॥२१॥
अब ही आयो मुझने जाणो, युद्ध विधि सघली ठाणो ।
एम कही मोकलीयो तेहो, पिण राघवसूं आणे नेहो ॥ वन॥ २२॥
मूर्ख मर्म न कांई जाणे, भरत भूपसूं कां अति ताणे ।
मुझ सहाय अधिको पामी, जीतण चाहे अयोध्या स्वामी ॥२३॥
सैन्या सघली सूं हूं जावूं, मित्र न जाणे तेम करावूं ।
एह हणीने पाछो आवूं, भरत भूपनी आण धरावूं ॥ वन ॥२४॥
राम कहे ए सघलो कूडो, तूं ताहरे घर बैठो रुडो ।
सुत सहुने देतूं मुझ लारे, ज्यूं मुझ कह्यू काम समारे ॥वन॥२५॥
भली कही भाखो नर नाथे. सुत सगला ए दीधा साथे ।
'निंद्यावर्त' नगरना पासे, आवी उतरे अति उल्लासे॥ वन ॥२६॥
देवी खेत्र तणी रखवाली, राम प्रत्ये भाखे सुविशाली ।
कारज कोई मुझ फरमावो. जे तुमने छे अधिक सुहावो॥वन॥२७॥
कार्य कोई नहीं मुझ तांई देवी कहे ए साचो सांई ।
तो पण कांई करी देखावूं, नाम भणो हूं लाज रहाऊं ॥वन॥२८॥
त्रियरूपे ते सघला होई. त्रियनूं राज्य होवे जेम जोई ।
राम अने लक्ष्मण दो भाई, स्त्री रूपे पण सुन्दरताई ॥वन॥२९॥

स्वामी नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-कूवडाना रूपे रावत० ॥

रामा केरे रूपे राघव, नहीं किणी रे सारे ।
नहीं किणीरे मारे, राघव आरती ऊतारे ॥ टेर ॥
मानूं अहि जिम वेणी गूंथी, चूंदड़ी अङ्गे धारे ।
भाल बिंदीने चक्षुकज्जल, दीसे अधिक उदारे ॥ रामा ॥ १ ॥
नवरंग साडी भारी पेरी, पग घूघर घमकारे ।
एम अनूपम धर धरणी छवि, कोन लहे तसु पारे ॥ रामा ॥ २ ॥
हाथे टुकड़ा वलि मरणाई, नौबत वजत नगारे ।
बाजा अभिनव नृत्यकरेते, मधुस्वर राग उचारे ॥ रामा ३

पग पग लाख पसावजदेते, पोलपे आप पधारे ।
प्रतिहार्योंनृप आगलआकर, पग लागीने पूकारे ॥ रामा ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी,

नारी साथे लीयेरे लडाई, राजाजीनी एह लघुताई ॥
तिण हीमे त्रिय आगे हारे, ते अपजश पामे जग सारे ॥ वन ३० ॥
महिधरे एसैन्याभेजी, संग्रामे ए शूर सतेजी ॥
द्वार पालेजई वातसुणावी, अतिवीर्य नृपनेरीस अणावी ॥ वन. ३१ ॥
दोहा- 'महीधर तो मानीजतो, रचिते उलटी रीत ॥
तुझ ऊपर करवा तुरत, मेली नारी अनीत ॥ १ ॥
पोल ऊपर तेपाधरी, आय ऊभीछे अत्र ॥
रीस लाय भूपतिकहे, ताडो जाई तत्र ॥ २ ॥

ढाल मुलगी-

भरत' भूपनेहूं साधसूं, सुजश घणो वसुधा वाधसूं ॥
त्रियसैन्याए पाछीभेजो मन्दिर नो धूर देख्यो चेजो ॥ वन ३२ ॥
एटले एक कहे नर फांसो, महीधरेए कीधोहासो ॥
वैश्वानर जेमथी मीचाणो, रोमे रोमे रायतपाणो ॥ वन. ३३ ॥
रामादिक त्रियसैन्या पूरी, आवी गई नृप द्वार सनूरी ॥
राय कहे काढो गलेमाही, आया शूर सुभट संवाही ॥ वन ३४ ॥

ढाल दोपक तर्ज पूर्ववत-

सुनत सुभट तब मांथ शर आया, बोलत विना विचारे ॥
रे रे रण्डे ? यहांक्यो आई, हट जावो थे वारे ॥ रामा ॥ ५ ॥
स्त्री वेशी रघु नाम पयम्पे सुणजो सबसिरदारे ॥
तुम नृपने नारी ज्यूं जाणी, 'महीधर' राय हमारे ॥ रामा ॥ ६ ॥
नारी की सैना कर भेजी, एम कही सरदारे ॥
हम से जो तुम रार करोगे, तो पहुंचाऊं जमद्वारे ॥ रामा ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

नारी स्हे नरनी घरनी की, 'अटल' टल्योने नहीं पड़े फीकी ।
कार्मणगो थांसो ऊठावे, हलधर हर्ष मार मचावे ॥ वन ॥ ३५ ॥

ढाल चेपक तर्ज पूर्ववत्—

राघव धनु टंकार करीने, सुभटने तामनसारे।
धड २ धूजत जनधवआगे बात कहैं विस्तारे॥ रामा॥ ८॥
त्रिष सैना दे मार गजबकी, इण आगे सवहारे।
ज्यूं वजें ज्यूं निकटजआवे, तुम ची फौज संहारे। रामा॥ ९॥

ढाल मूलखी—

भाग्या लोकन लागी वारो, राजाजी हुवो असवारो।
आवे खांडोकर सम्भाली, लक्षमण' जी ए लीधो उदाली॥वन३६॥
केशग्रही ने बांध्यो गाढो, लक्ष्मण' नो मन हुवो ठाढो।
भरत भूपसूं झींडो आडा, गवरावो ए सुजश पवाड़ा। वन ३७॥

ढाल मूलगी चेपक—

घीस कर लावे हैं वारे, रामके चरणांहींपारे, लक्ष्मणकहै भरत यूंमारे।
भरतसम राजा नहीं दूजो, उन्हींका पगल्या नित पूजो।सत्य६४॥

ढाल मूलगी

सीता ए बांध्यो छोडायो, गहिले बांदी गुमान गमायो।
खेत्र देवी संकोची माया, जे जिमया नेतिमही कराया॥वन ३८॥
राम रु लक्ष्मण दो ही दीठा, राजा लोयण अमिय पइठा।
पगे लागीने नरवरबोले, अवरन कोई प्रभुजी तुमतोले। वन ३९॥
अष्टापद जेम सुणीयो आगे, उदकी१ उदकीने पग मागे।
तेम मुझ मांही एहिज बीती, शी बनकार२ ए भाखूं छीनी। वन ४०
लाज गई निलज्जि कहाणो, लोको माँहे लुण्ड४ कहाणो।
प्रगट परभव३ एह सहाणो, चोर अन्यायी जेमग्रहाणो।वन४१॥
जलथी अलगो कीधो माछो, पाणी मांहे नाखे पाछो।
तड़प तड़प करतो अति तेवे, पापो कसरियो ने नविजीवे।वन४२॥
आंगलिये देखायो कुहलो, आपे आप मरे मनदूहलो।
दिन २ प्रत्ये नो जावे गलतो, लेई अपमान नचाहे चलतो॥४३॥
नालेरं जेम गल्योपाणी, एह सहिनाणी मनि मन आणी।

१ उछली-उछलीने। २ बाल। ३ गार। ४ पागल।

वाडी१ तीनकरो पाखलो राखो, कोन शके तेहनोजलचाखी ।वन४४
मानगया निघाईआया, साधु नी सेवा न सजाया ।
भाई पण जेहनाछे दीणा, परियण छे परदेशां खीणा । वन ४५॥
यौवन गयूं बूढापो भराणूं, तेहनो तो संयम नूं सराणूं ।
घणूं घणेरो कांई भाखूं, अब हूं म्हारा मननी राखूं ॥ वन ॥४६॥
राज्य तजीने संयम पालूं, जश मेलाणूं फरी अजवालूं ।
राम कहे तूं भरत सरीखो, राज्य करो हम बोल परीखो ॥ ४७ ॥
'अतिवीर्यनी' एह अधिकाई, विजयरथे थापी ठकुराई ।
'सिंहगुरु' पासे संयम लीधो, समता रूप सुधारस पीधो ॥४८॥
'विजयरथ' भगिनी सुविशाला, लक्ष्मण ने दीधी 'रतिमाला' ॥
'विजयसुन्दरी' बीजी भगिनी, 'भरत' भणी दीधी शुभ लगिनी॥४९॥
भरत भूपनी सेवा साधी, निज घर आयो नृप आराधी ।
'राम' 'विजयपुर' चलि आया, वनमालाने अधिक सुहाया॥५०॥
सत्तावीशमीं ढाल सुढाली, भरत भूपनी आरति टाली ।
'केशराज' कहे सारे काम, सोही महोदर जग अभिराम ॥ ५१ ॥

दोहा (धनाश्री रागे)

महीधरने रे पूछके, राम चाल्या उजाम ।
लक्ष्मणजी सूं वीनवे, सावनमाला नाम ॥ १ ॥
प्राणदान दातारतूं, अबक्यां तजे निराश ।
भाखे पूर्ण विलोचना, करे घणूं अरदास ॥ २ ॥
विवाह करी सुविशेषथी, मुझने लीजे लार ।
वनवासे साथेसूं रहूं, होई खिजमतदार ॥ ३ ॥
लक्ष्मण भाखे भामिनी, ए अवसर नहीं कोय ।
झूठो हट नवि कीजीये हूंये विमासी जोय ॥ ४ ॥
जब फिर मन्दिर आवसूं, सेवीने वनवास ।
बोल हमारो छे सही, पहोंचाविस तुझ आस ॥ ५ ॥

१ [illegible]

मुनि श्री रूपचन्द्रजी म० कृत ढाल क्षेपक तर्ज-पानीड़ो भरवादे

प्रिय ! मत करला इन्कार, संग में चालण दो ॥ टेर ॥
पिया विना मैं घर नहीं रहसूं, प्राण वल्लभ सङ्ग सुख दुःख सहसूं ।
मैं रहसूं प्रियतम लार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ १ ॥
महल अटारी वैभव सारा, तुम विन परिकर लागत खारा ।
सूना सब संसार ॥ सङ्ग मे चालण दो ॥ २ ॥
बड़े कठिन से दर्शन पाया, आजही आपने छेह दिखाया ।
वाहा वाहा आपको प्यार ॥ सङ्गमें चालण दो ॥ ३ ॥
निशदिन मुझको विरह सतासी, ओलूं मोहन मूर्ति की आसी ।
हिय उमटे अनंग अपार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ ४ ॥
रातको नींदन भोजन भावे, तुम विन जियडो अति अकुलावे ।
आवे दुःख अपार ॥ सङ्ग में चालण दो ॥ ५ ॥
नवली सनेही किम छिटकावो, जरान करुणा दिलमें लावो ।
करलो न्याव अवार ॥ सङ्गमें चालण दो ॥ ६ ॥
जो मुझको पियु संगन लेसो, निराधार यहांपर तजदेसो ।
मैं मरसूं खाय कटार ॥ संगमें चालण दो ॥ ७ ॥

(लक्ष्मणोवाच)

ढाल क्षेपक तर्ज-मीठो खरबूजो मुनि श्रीरूपचन्द्जी म० कृत

सुनो सुलक्षणी नार प्यार धर यहां ही रहीजो हो, हठ मत कीजो हो ॥ टेर ॥
वनवासे संग चालण कोये, भूल नाम मत लीजो हो ।
कथन हमारो मान आन, जिनवरकी वहीजो हो ॥ हठ ॥ १ ॥
पाछो वेगो आसूं प्यारी, सोच जरामत कीजो हो ।
रूप कहै शुद्ध न्याय नीतिमग, मत तज दीजो हो ॥ हठ ॥ २ ॥

दोहा-हुक्म विना जावा न दूं, रयणी भोजन पाप ॥
नावो तो तुमने अछे, मानी लीयो प्रभु आप ॥ ६ ॥

ढाल अलापीराजी तर्ज-सुधारस मुरली बाजे ।

रामको सुयश घणो, स्वर्ग मृत्यु पाताल, रामको सुजश घणो ॥टे०

पाछली राते आगे चालया, ओलंघ्यो वन एक।
'खेमाजल' पामी पूरी रे, दीसे शोभा अनेक ॥ राम ॥ १ ॥
ऊतरीया उद्यानमें रे. 'लक्ष्मण' वनमें जाय।
लेई आयो फल शागजी रे, पाणी पात्र भराय ॥ राम ॥ २ ॥
संस्कार सीता कियो रे आरोग्या उत्साहे।
राम तणा आदेश थीरे, 'लक्ष्मण' गयो पुरमां है ॥ राम ॥ ३ ॥
श्रवण सुणी उद्घोषणारे, सहेजे शक्ति प्रहार।
परणे पुत्री रायनीरे, नहीं सन्देह लगार ॥ राम ४ ॥
पुरुष एक तव पूछीयोरे, एछे किस्यों विचार।
शत्रु दमन राजा भलोरे, राजानों सिरदार ॥ राम ५ ॥
'कन्यका देवी' तेहनेरे, पुत्रीतो प्रधान।
'जित पद्मा' छे नामथीरे, प्रत्यक्ष पद्मा थान। राम ॥ ६ ॥
वरनू बल सुविचारवारे, मांड्यो एह उपाय।
आज लगे कोई नावोयोरे, जेहथी काम सराय ॥ राम ७ ॥
एम सुणीने आवीयो रे, परखदा मांही देव।
नृप पूछे तूं कोण छे रे, ? तव बोले ततखेव ॥ राम ॥ ८ ॥
भरत भूपनू दूत छूं रे. जावूं करवा काज।
परणूं पुत्री ताहरी रे, इहां हूं आयो आज ॥ राम ॥ ९ ॥

मुनि श्री रूपचन्द्रजी म. कृत. ढाल क्षेपक हां सगीजी पेड़ा भावे-
हां वाले यूं लिछमन प्यारो, अछूं दूत मैं भरत राजारो।
जातां दूजे गांव देखन आयो पुर थारो रे ॥ राम ॥ १ ॥
ढंढेरो सुन इत आयो राजा ! नारी विन दुःख पाऊ जाजा।
करतां रसवती धूम्र लग्यां तन वन गयो कालो रे ॥ बोले ॥ २ ॥
मेरे काम में हो रही देरी, झट परणा दे कन्या तेरी।
'रूप' देखले अनुपम मेरो इसो न दूजा रो रे ॥ बोले ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी

शक्ति घात ए माहरो रे, कह तू सहिस केम ?।
एक नहीं पण पंचनारे, सहू सही सूं एम ॥ राम ॥ १० ॥

जितपद्मा अनुरागिणी रे, होई गई ततकाल।
लक्ष्मण ने अविलोक तारे, राची रूप रसाल॥ राम॥ ११॥
पुत्री वरजे बापने रे, वह्यूं न माने रंच।
ख्याल रोप दो साचवे रे, मूके शक्ति स्व पंच॥ राम॥ १२॥
दो हाथों दो बांह मेरे, एक सुदन्तों जोय।
साही लीधी शक्तिजी रे, अजब तमासो होय॥ राम॥ १३॥
जित पदमा हरखी खरी रे, पहिरावे वरमाल।
राय कहे परणो सही रे, ए कुंवरी सुविशाल॥ राम॥ १४॥
लक्ष्मण कहे उद्यान में रे. बैठा छे श्री राम।
हूं छूं सेवक तेहनो रे, करूं बताव्यू काम॥ राम॥ १५॥
'राम' 'सुलक्ष्मण' जाणीयारे, धसि गयो तिहां राय।
लेई आयो रामने रे, परम महा सुख थाय॥ राम॥ १६॥
भक्ति भाव पोषे घणूं रे, पूज्या प्रभुना पाय।
तो पण आगे चालीया रे, राजा ने समझाय॥ राम॥ १७॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

भूपति करता है अरजी, कन्या को व्याहो हित धरजी, उत्तर में बोल्या रघुवरजी। पाछा मे अयोध्या जासां, ब्याव कर कन्या ले जासां॥ सत्यव्रत पालो॥ ६५॥

ढाल मूलगी—

वंशस्थल गिरि ऊपरे रे, 'वंशस्थल' पुरी देखी।
लोक भयानक देखनेरे, पूछ्यू पुरुष विशेषी॥ राम॥ १८॥
सो भाखे प्रभुजी सुणो रे, रात्रे अचम्भो थाय।
ध्वनी ऊठे छे आकरी रे, ते लोको न खमाय॥ राम॥ १९॥
रात्रे अनेरीजायगेरे, नासी जाए लोक।
प्रातः हुवां घर आवही रे, कष्ट तणो ए जोग॥ राम॥ २०॥
रामे लक्ष्मण मोकल्यो रे, जोई आवो एह।
काउसग्गमां है मुनि रे. दीठा दो गुण गेह॥ राम॥ २१॥
देई प्रदक्षिणा वांदिया रे, नगरनी ही विधि भाषी।

वीणा वजावे रामजी रे, यक्ष थकी जे लाधी ॥ राम ॥ २२ ॥
तान मान अनुमान सूं रे, राग तणू आलाप ।
लक्ष्मण लीलाए करे रे, अवसर जणी आप ॥ राम ॥ २३ ॥
रात जगावे रंग सूं रे, होई रह्यो विनोद ।
साधु तणी सेवा करे रे, पामे अधिक प्रमोद ॥ राम ॥ २४ ॥
'अनलप्रभ' सुर आवीयो रे, विकूर्वी वैताल ।
साधु ने संतापवारे. जाणे कोप्यो काल ॥ राम ॥ २५ ॥
'सीता' ऋपि पारवती रे, 'राम' सु लक्ष्मण दोई ।
जेटले आवे सामुहारे, नासी गयो सुरसोई ॥ राम ॥ २६ ॥
मुनिवर हुआ केवलीरे, आवे सुरवर कोडी ।
केवल महिमा साचवे रे, पायनमे कर जोडी ॥ राम ॥ २७ ॥
राम भणे प्रभुजी कहो रे, उपद्रव नूं ए हेत ।
'कुल भूपण' कहे केवली रे, निसुणो सहु सचेत ॥ राम ॥ २८ ॥
नगरी नामे पद्मनी रे, विजय पर्वत भूप ।
'अमृत स्वर' मति वन्तजीरे, एक सुदूत अनूप ॥ राम ॥ २९ ॥
'उपयोगा' तस कमिनीरे, नन्दन दोई उदार ।
उदित मुदित गुण आगलारे, कुल केरा साधार ॥ राम ॥ ३० ॥
दूत तणो इक मंत्रजी रे. ब्राह्मण छे वसुभूति ।
आसक्त उपयोगातणोरे, वात लिखी ए दूत ॥ राम ॥ ३१ ॥
मारी ने व्यभिचारिणीरे, 'अमृत स्वर' ने मारि ।
निष्कण्टक होई रहां रे, मान्यू सुख संसारि ॥ राम ॥ ३२ ॥
नृप आदेशे दूत विरे, चाल्यो मारग दूर ।
ब्राह्मण पण साथे लाग्यो रे, दूत हण्यो बलपूर ॥ राम ॥ ३३ ॥
ब्राह्मण घर आवीने मारे रे, मुझने पाछो वाली ।
कारन करवा वेगसूंजी, आप गयो सो चाली ॥ राम ॥ ३४ ॥
'उपयोगाने' वात जणावी, मन्त्र कर्यु ते सोई ।
पुत्र हण्या थी राग आपणो, कीजे तो सुख होई ॥ राम ॥ ३५ ॥

एह मतो तो ब्राह्मण केरो, रहस्य पणा थी जाणी ।
'उदित' 'मुदित' दो भाईया रे, अमरख अधिको आणि ॥राम॥३६॥
'उदिते' ब्राह्मण मारियो रे. आयो उदय कुशील ।
इपत 'नलपल्ली' विषेरे, सोमरी हुवो भील ॥ राम ॥ ३७ ॥
चारित्र लीधो रायजी रे, उदित मुदित पण संग ।
अप्रति बंध पणे तिहां रे, चाल्या ऋषि उच्छ रंग ॥ राम ॥ ३८ ॥
विचे मिल्यो सो भीलडो रे, मारे तब अणगार ।
छोडाव्या पल्ली पती रे मान लीयो उपकार ॥ राम ॥ ३९ ॥
पल्लीपति हु तो पंखीयो रे, ए हता करसण कार ।
पारधीए पंखी ग्रह्यो रे, हुओ मारण हार ॥ राम ॥ ४० ॥
इणे तव छोडावीयो रे, पंखी थयो पल्लीश ।
कीधो लाभे आपणडो रे, एतो वीश्वावीश ॥ राम ॥ ४१ ॥
उदित मुदित दो साधुजी रे, आराधी संथार ।
महाशुक्रना देवता रे, पाम्या जय जय कार ॥ राम ॥ ४२ ॥
ढाल भली अठावीशमी रे, प्रश्नतणो अधिकार ।
'केशराज' पूर्वतणो रे, साधु वदे ते सार ॥ राम ॥ ४३ ॥

दोहा—(मल्हार रागे)

ब्राह्मण तो वसुभूतिनो, जीव भमी भवमां है ।
माणस थई तापस तणू, पामी मुओ ते त्रा है ॥ १ ॥
देव हुवो पण ज्योतिषी. 'धूमकेतु' अभिधान ।
मिथ्या मतिनो वाहिओ, आणे अति अभिमान ॥ २ ॥
'उदित' 'मुदित' ना जीवते. सुरपद नञी आवन्त ।
शेष पुण्यना प्रेरिया, मनुष्य गति पावन्त ॥ ३ ॥
'अरिष्ट' पुरीनो राजीयो. 'प्रियचंद' भूपाल ।
'पोमावे' राणी उदरे, ऊपन्या सुत सुविशाल ॥ ४ ॥
'रत्नसुरथ' रलियामणो, 'चित्रसुरथ' सुविशाल ।
नामथकी अति पर वड़ा. सुन्दरने सुकुमाल ॥ ५ ॥

वीणा बजावे रामजी रे, यक्ष थकी जे लाधी ॥ राम ॥ २२ ॥
तान मान अनुमान सूं रे, राग तणू आलाप।
लक्ष्मण लीलाए करे रे, अवसर जाणी आप ॥ राम ॥ २३ ॥
रात जगावे रंग सूं रे, होई रह्यो विनोद।
साधु तणी सेवा करे रे, पामे अधिक प्रमोद ॥ राम ॥ २४ ॥
'अनलप्रभ' सुर आवीयो रे, विकूर्वी वैताल।
साधु ने संतापवा रे, जाणे कोप्यो काल ॥ राम ॥ २५ ॥
'सीता' ऋषि पारवती रे, 'राम' सु लक्ष्मण दोई।
जेटले आवे सामुहा रे, नासी गयो सुरसोई ॥ राम ॥ २६ ॥
मुनिवर हुआ केवली रे, आवे सुरवर कोडी।
केवल महिमा साचवे रे, पायनमे कर जोडी ॥ राम ॥ २७ ॥
राम भणे प्रभुजी कहो रे, उपद्रव नूं ए हेत।
'कुल भूषण' कहे केवली रे, निसुणो सहु सचेत ॥ राम ॥ २८ ॥
नगरी नामे पद्मनी रे, विजय पर्वत भूप।
'अमृत स्वर' मति वन्तजी रे, एक सुदूत अनूप ॥ राम ॥ २९ ॥
'उपयोगा' तस कामिनी रे, नन्दन दोई उदार।
उदित मुदित गुण आगला रे, कुल केरा साधार ॥ राम ॥ ३० ॥
दूत तणो इक मंत्रजी रे, ब्राह्मण छे वसुभूति।
आशक उपयोगा तणो रे, वात लिखी ए दूत ॥ राम ॥ ३१ ॥
माची ते व्यभिचारिणी रे, 'अमृत स्वर' ने मारि।
निष्कण्टक होई खरी रे, मान्यू सुख संसारि ॥ राम ॥ ३२ ॥
नृप आदेशे दूत विदेशे, चाल्यो मारग दूर।
ब्राह्मण पण साथे लाग्यो रे, दूत हण्यो बलपूर ॥ राम ॥ ३३ ॥
ब्राह्मण घर आवीने भाखे रे, मुझने पाछो वाली।
कारज करवा वेगसूं जी, आप गयो सो चाली ॥ राम ॥ ३४ ॥
'उपयोगाने' वात जणावी, मल्हू कर्यु ते सोई।
पुत्र हण्या थी राग आपणो, कीजे तो सुख होई ॥ राम ॥ ३५ ॥

एह मतो तो ब्राह्मण केरो, रहस्य पणा थी जाणी ।
'उदित' 'मुदित' दो भाईया रे, अमरख अधिको आणि ॥राम॥३६॥
'उदिते' ब्राह्मण मारियो रे. आयो उदय कुशील ।
इपत 'नलपल्ली' विपेरे, सोमरी हुवो भील ॥ राम ॥ ३७ ॥
चारित्र लीधो रायजी रे. उदित मुदित पण संग ।
अप्रति बंध पणे तिहां रे, चाल्या ऋषि उच्छ रंग ॥ राम ॥ ३८ ॥
विचे मिल्यो सो भीलडो रे, मारे तव अणगार ।
छोडाव्या पल्ली पती रे. मान लीयो उपकार ॥ राम ॥ ३९ ॥
पल्लीपति हु तो पंखीयो रे, ए हता करसण कार ।
पारधीए पंखी ग्रह्मो रे. हुओ मारण हार ॥ राम ॥ ४० ॥
इणे तव छोडावीयो रे, पंखी थयो पल्लीश ।
कीधो लाभे आपणडो रे, एतो वीश्वावीश ॥ राम ॥ ४१ ॥
उदित मुदित दो साधुजी रे, आराधी संथार ।
महाशुक्रना देवता रे, पाम्या जय जय कार ॥ राम ॥ ४२ ॥
ढाल भली अठावीशमी रे, प्रश्नतणो अधिकार ।
'केशराज' पूर्वतणो रे, साधु वदे ते सार ॥ राम ॥ ४३ ॥

दोहा—(मल्हार रागे)

ब्राह्मण तो वसुभूतिनो, जीव भमी भवमां हे ।
माणस थई तापस तणू. पामी मुओ ते प्राहे ॥ १ ॥
देव हुवो पण ज्योतिषी. 'धूमकेतु' अभिधान ।
मिथ्या मतिनो वाहिओ, आणे अति अभिमान ॥ २ ॥
'उदित' 'मुदित' ना जीवते. सुरपद तजी आवन्त ।
शेष पुण्यना प्रेरिया, मनुष्य गति पावन्त ॥ ३ ॥
'अरिष्ठ' पुरीनो राजीयो, 'प्रियचंद' भूपाल ।
'पोमावे' राणी उदरे, ऊपन्या सुत सुविशाल ॥ ४ ॥
'रत्नरथ' रलियामणो, 'चित्ररथ' गुणिशाल ।
नामथकी अति परवडा, सुन्दरने सुकुमाल ॥ ५ ॥

'धूमकेतु' ना जीवनो, उणही घरे अवतार ।
अपर त्रिया उदर ऊपन्यो, नामे 'अनुरद्ध' सार ॥ ६ ॥

ढाल गुणतीशवीं तर्ज–जगन्नाथजी रावलो आशपूरे ॥

उच्छ्रत अधिक सो नन्द हुओ, वडा बंधवथीरे चालन्त जुओ । पूर्वभव वैर नयणां जणावे, महारीसनो हेतु आणी पावे ॥ १ ॥ 'रत्नमुरथ' नंदने राज्य दीधो, दोई अपर लघुनंद युवराज कीधो ॥ षट् दिवसनो अणशण साधी सारो, नृपदेव हुवो कियो धन्य जन्मारो ॥ २ ॥ एक भूपने 'श्रीप्रभा' थी कुंवरी, दीधी रायने रंगसूं जाणी प्यारी ॥ 'अनुद्धर' युवरायथी वेटी मांगी, गई और ने तेहने कर न लागी ॥ ३ ॥ तव रीससूं रायना गाम मारे, करी मृस्यो सोर तो देशमारे ॥ चढ्यो रायजी रावलो लेई रूडो, सोतो बांधी आण्यो कलिकाल कूडो ॥ ४ ॥ विडम्बीपने बंधवा मेलो दीधो, जई तापमां पासे व्रत नियम लीधो ॥ त्रिय संगते निष्फल योग कीधो, विषया विष अमृत जाणी पीधो ॥ ५ ॥ भवमांहि भम्यो चिरकाल मोई, लेई नर गति तापस फेरी होई ॥ करी बाल१ तप ज्योतीषीने गणेवो, मोतो एह 'अनूलप्रभ' नामदेवो ॥ ६ ॥ 'रत्नमुरथ' चित्रमुरथ' दोई भाई, ग्रही संजम वारमें स्वर्ग जाई ॥ 'महाबल' नैं अतिवल नाम पाया, हलुकर्मी या भव तणे छेह आया ॥ ७ ॥ हिवे नारी 'विमला' तणे उदरें आवी, तेणे सुस्वरं मोहतो अधिक पावी ॥ 'कुलभूषण' ए कुल कुंवर एहो, एहे 'देशभूषण' शुभवान देहो ॥ ८ ॥ उपाध्याय 'घरघोष' पासे पढाया, अंस वरस नो वार नमघरे रहाया ॥ जब तेरमो वर्ष आवी सुहावे, नृप पासनी पण्डित लेई आवे ॥ ९ ॥ तव गोख बैठी थकी इक कुंवरी, अविलोकतां जाणीऊं एह अमरी ॥ तव दोई भाई तणो राग होवे, मुखमाहमूं मांग्ही बार जोवे ॥ १० ॥ तब चालीके आवीया राय पासे, कन्या देखतां राय पाम्यो हुल्हासे ॥

१ अज्ञान तप

तब पण्डित पूजीया शीपनामी, निजमन्दिरे आवीया हर्ष पामी।११। पगेलागीने माय सेवा विशेषी, ते कुंवरी मायने पास देखी ॥ तब पूछीयूं मायने कौन कुंवारी !, तब मांय भाखे तुम वहिन प्यारी ॥१२॥ गुरु मन्दिरे वास हूतो तुम्हारो, तब ऊपजी एह ए साच धारो॥ चित्त चित्तवे वंछीयो वहिनभोग, एम जाणी हम आदर्यो जोग ॥१३॥ तप तीव्र करन्तां एह गिरिही आया, हमे काउसग्गे रह्या तजीयकाया ॥ नहीं आशज जीववे डर न मरणे, दिनरात रहेवूं अरिहन्त शरणे ॥ १४ ॥ पिता हम तणो आणीयो दुःख गाढो, समजावतां किणही नविथाय ठाढो ॥ मुओ अण शण ग्रहीय सो गरुड इसो, 'महालोचन' सुरथयो, अति जगीसो॥१५॥ उपसर्ग हमारो तेणे ज्ञान लखीयो, इहां आवायो सोह तो प्रेम पखीयो ॥ मुनि 'अनन्तवीर्य' ने शुद्ध ज्ञानो, करण ओच्छव देव जाये प्रधानो ॥ १६ ॥ 'अनलप्रभ' देव गुरु देव सोही, सुरसाथे चाली गया ख्याल मोही॥ सुर मानव परखदा मांहे भाखे, दया धर्मज केवली कहिय दाखे ॥ १७॥ तब 'मुनिसुव्रत' मुनि पुछन्त शीष्ये, तुम पाछे केवली कोण दीसे? ॥ 'कुलभूषण' 'देशभूषण' दोई भाई, होसे केवली एह दीधा वताई ॥१८॥ 'अनलप्रभ' एह निसुणीय सारी, तवही थकी पूठ लाग्यो हमारी ॥ कांई एक मिथ्यात्वनो अधिक वाहीयो, कांई एक पूर्व वैर उमाहियो॥१९॥ दिन चार हुआ उपसर्ग करतां, एतो पाप भण्डार भरपूर भरतां ॥ तुम आवीया सो गयो देव नासी, हम ऊपज्यो ज्ञान सब जग प्रकाशी ॥ २० ॥ 'महालोचन' पाम्यो अधिक तोषो, श्री 'राम' जी सूं करे प्रेम पोषो ॥ गुर वांछकी प्रत्युपकार करणो, प्रभु भाखे तुरत भण्डार धरणो ॥ २१ ॥ 'वंशस्थल' पुर पति खबर पामे, श्री 'राम' लक्ष्मण प्रत्ये शीष नामे ॥ ध्वनि रुद्र उपद्रव एह अल्गो, किरो भय नवि आवसे फेरी वल्गो ॥ २२ ॥ श्री राम आदेशे कियो प्रसादे, ध्वज वलहले गगनसूं करेय वादे ॥ श्री 'राम–

गिरि' गिरि तणो नाम थाप्यू, कीयो उच्छव अर्थिया अर्थ आप्यू ॥ २३ ॥ सुरपतिने पूछिने देव आगे, जव चलीया लोक बहु पूठे लागे ॥ बोलावीया लोक सन्मानदेई, प्रभु चालिया लोक चित्त साथ लेई ॥ २४ ॥ उद्दण्ड अति 'दण्डकारण्य' भाखी, तिहां आवीया चित्त अडर राखी ॥ गिरिगुफा गेह समतोल लेखी, तिहां वास कीधो कई दिन विशेषी ॥ २५ ॥ अनेरे दहाड़े जब जिमण वेला, दोय चारण साधुजी पुण्य मेला ॥ 'त्रिगुप्त' 'सुगुप्त' नामे विराजे, आया आंगणे सूजता अन्न काजे ॥ २६ ॥ द्वौ मास उपवासीया दोई साधो, घणे पुण्यने प्रेरणे दर्श लाधो ॥ श्री 'राम' जी 'लक्ष्मण' सतीय सीता, भला श्रावक विश्व मांहे विदिता ॥२७॥ भलि भक्ति सुं साधुना चरण वन्दे, भव सन्तति सयलना दुःख निकन्दे ॥ सतीए निज हाथसुं हर्ष आणी, प्रति लाभीयो प्रासुक भात पाणी ॥ २८ ॥ दुःखवारणो पारणो कीध जामो, भलां पुष्प अरु वस्त्र वरसंततामो ॥ रत्न गंधाम्बुनी वृष्टि हुई, उद्घोषणा देवनी हुई जुई ॥ २९ ॥ पांच सुदिव्य हुवा वखाण्या भला दायका आज दिन सफल जाण्या ॥ एतो ढाल गुणतीसवीं जगत जाची, 'केशराज' भाखे सदा वात साची ॥ ३० ॥

दोहा (रामग्री रागे)

रत्नजटी रलियामणो, 'कम्बूद्वीप' दयाल ।
खेचर मुरथ अश्वसुं, आप्योते[१] सुविशाल ॥ १ ॥
गन्धाम्बूनी वृष्टिनो, गन्धवणो विस्तार ।
विस्तरीयो छे दश दिशे, सुरभिर महासुखकार ॥ २ ॥
'गन्धाभिध' इक पंखीयो रोगी एहवुं नाम ।
तरुथी उतरी आवीयो, गन्ध वासना पाम ॥ ३ ॥
दर्शन दीठो साधुनो, जाति स्मरण लाध ।
मूर्छाथी वर्गी पड्यो ते पंखी साधाध ॥ ४ ॥
सीताए सुमनो कीयो, वन्दे ऋषिना पाय ।

१ रत्नजटी अने बे देवो ए राम ने अश्व सहित रथ आप्यो। २ सुवास ।

ऋषिजी चरणे स्पर्शियों, ताम निरोगी थाय ॥ ५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–कव्वाली–कर्ता धूलचन्दजी सुराणा

लगे जो रंज चरणों की, अगर तन वाय भी फरसे ।
हुवे निरोगही काया, मुनिश्वर होतो ऐसा हो ॥ १ ॥ टेर ॥
मल–मूत्र–लगेजो मेल, रोम–नख–केश ही लगते ।
मिटे सब जीवकी व्याधी, मुनिश्वर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
ज्ञान–का दान ही देकर, मिटावो तप्त दुनियों की ।
हटावे कर्म–वैरी को ॥ मुनि० ॥ ३ ॥
काम–रु क्रोध–नहीं तनमें, राग–रु द्वेप–नहीं मन में ।
मगन रहै सदा ही वनमें ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

— दोहा —

पांख हुई सोना समी, चंचू विद्रुम भाव१ ।
नाना रत्न सुमय तनु, पद्मराग२ सम पाव ॥ ६ ॥
रत्नांकुरनी श्रेणीसम, माथे जटा सुहाय ।
नाम 'जटायु' पंखीयो, ते दिन थी कहीवाय ॥ ७ ॥

—(ढाल तीशवीं)—

—तर्ज धन्य २ शीलवन्त नर नारी—

रे भाई ! सेवो साधु सयाणा, हेत युक्ति भल भाव बतावी, तार्या जीव अयाणारे ॥ टेर ॥
'दृढ प्रहारी' दृढ पणेरे, मेले आय प्रहारो ।
परमारथ पदपाम्या प्रत्यक्ष, साधु तणा उपकारोरे ॥ भाई० ॥१॥
'विलायती' बांदीनो चेटो, नाम 'चिलायती पूतो ।
साधु संगत कारज सार्यो, कीधी दूर कुसूतोरे ॥ भाई० ॥ २ ॥
'अर्जुन माली' मारी मारे, नर षट् एकज नारी ॥
खट्मांसा लग एमकरन्ता, लीधो कारज सारीरे ॥ भाई० ॥ ३ ॥
'परदेशी' परभव नहीं माने, पाप करे अति पापी ॥
'केशी' गुरु समजावी लीधो, सुमति सदा स्थिर थापीरे ॥भाई० ॥४॥

१ परवालां । २ ए नामनो मणी ।

'राघव' पूछे साधु संघाते, ए गृद्ध पंखी देखो ॥
शान्त होई तुम सेवा साधे, इचरज एह विशेषोरे ॥ भाई० ॥५॥
भगवन् ! भारी देह विकारी, रोगी में सिरदारो ॥
कंचन वर्णी काया होई, एछे कवण विचारोरे ॥ भाई० ॥६॥
साधु 'सु गुप्त' कहै सुण राजा, चरित्र तणो विस्तारो ॥
'कुम्भकारकट' पुरए हुतो, 'दण्डक राय उदारोरे ॥ भाई० ॥७॥
'सावत्थी' नगरीनो राजा, 'जितशत्रु' सुखकारो ॥
राणी धारणी ए सुतजायो, 'स्कन्दक' नाम कुंवारोरे ॥भाई० ॥८॥
पुत्री 'पुरन्दरयशा' ते, 'दण्डक' ने परणावे ॥
'पालक' ब्राह्मण दूत पणेरं, सावत्थीए आवेरे ॥ भाई० ॥९॥
'जितशत्रु' राजा धर्म परायण, गोष्टी धर्म की भावे।
नास्तिक वादी पाल कनेरं, धर्म कथान सुहावेरे ॥ भाई० ॥१०॥
'स्कन्दक' कुंवरे युक्ते जीत्यो जावे अपूठो नावे ॥
होई खीमाणो निज घर आयो, रहै कुंवरसूं दावेरे ॥ भाई० ॥११॥
'स्कन्दक' कुंवर पांच सयांसूं, 'श्री मुनि सुव्रत' पासे॥
संजम लेई शुद्धोपाले धर्म मार्ग प्रकाशेरे ॥ भाई० ॥१२॥
इक दिन वन्दीन प्रभु समझावूं, एह मतो चित्त ठाणी ॥
'कुम्भकार' 'कट' नगरे जावा, पूछ्यू प्रभुने आणीरे ॥ भाई० ॥१३॥
प्रभुजी भाखे कांई न राखे, मरणान्तक ए नामो ॥
उपसर्ग उपजतो दीसे, 'स्कन्दक' भाखे तामो रे ॥ भाई० ॥१४॥
हम आराधक हुवा के नाहीं, पुनरपि स्वामी भाखे ॥
तुज विण सघलाही आराधक, जेमदेखे तेम दाखे ॥ भाई० ॥१५॥
आप विराधक होतां सघला, केरो सीजे कामो ॥
एह विचारी चाल्यो स्कन्दक, पहुंतो तेणे ठामो रे ॥भाई० ॥१६॥
'पालक' पापी सुमरि पराभव, आणे ए अविचारो ॥
साधु सनो सया छे जिहां, गाडे बहु हथियारोरे ॥ भाई ॥ १७ ॥
राजा पासी खबर ते राखे, आवी मुनिवर वन्दे ॥

देशना सांभली निजघर आवे, मन में अति आनन्दे रे ॥ १८ ॥
'पालक' पाप घणेरो पोखे, राजाने सम्भलावे ॥
शालो तुझ मारेवा आयो, ते हथियार देखावेरे ॥ भाई ॥ १९ ॥
राजा वात न कोई विचारी, एकान्ते रीसाणो ॥
'पालक' मंत्रीने मुनिसूंप्या, करजो जेम तुम जाणोरे ॥भाई॥२०॥
पालक शीघ्र पणाथी ते म्होटो, मांडे यंत्रे[1] जेवारे ॥
'स्कन्दक' दृष्टे साधु एके को, पीले तेह तेवारे रे ॥ भाई ॥२१॥
निर्यामक तब होई स्कन्दक, आचारजजी आपे ॥
आराधन विधि शुद्ध करावे, अप्पा[2] में मन थापे रे ॥ भाई॥२२॥
श्रेणी क्षपकनी वाटे चढतां, पामी केवल नाणो ॥
अष्ट महागुण केरा नायक, पहूंता अविचल ठाणोरे ॥ भाई ॥२३॥
चार सयां नवाणूं पील्या, एक सुचेलो बालो[3] ॥
एहनूं दुःख मने मत देखाड़े, माने नहीं चाण्डालो रे ॥भाई॥२४॥
बालकने पीलन्तां देखी, नयणे नीर प्रवाहो ॥
सहुनो काज समर्या पाछे, ऊपज्यो रोष अगाहोरे ॥ भाई ॥२५॥
'दण्डक' 'पालक' देश सहुनो, होजो हूं क्षयकारी ॥
पोते छे भवसन्तती तेहथी, कीधूं नियाणूं भारीरे ॥ भाई ॥ २६ ॥
एह नीयाणू कीधां पाछे, पीली नांख्यो सोई ॥
पावईयाने[4] पानो न चढे, एह उखाणो जोई रे ॥ भाई ॥ २७ ॥
वन्हि कुमारो[5] मांही विदितो, देव हुवो ततकालो ॥
पापी पन्थे सहु तिणहीमें, पाप महा अमरालो रे ॥ भाई ॥२८॥
दण्डकी राजा वात सांभली, सोचे तेह अपारो ॥
फिटरे कूडा पालक पापी, कीधो साधु संहारोरे ॥ भाई ॥ २९ ॥
' पुरन्दरयशा' राणी ए, मुझ सालो सुखदाई ॥
साधु तणी पदवी थी म्होटी, पाप कियो ते अथाई रे ॥भाई॥३०॥
राजा चिन्ते संयम लेऊं, मुनिसुव्रत पे जाई ॥

---

१ घाणी । २ आत्मामें । ३ छोटा । ४ नपुंसक । ५ अग्निकुमार ।

एटला मांही अग्नी प्रज्वली, वेला पूगी आई रे ॥ भाई ॥ ३१ ॥
रत्न कम्बल तंतुज पुरन्दर, यशा ए दीधोथो ॥
बहिन तणो मन राखण सारूं, बंधवजी लीधोथो रे ॥भाई॥३२॥
ओ तंतुज रजोहरणो रे, लोही खरड्यो देखी ॥
गृद्धनी एकन्ते लेई चाली, ए आहार विशेषी रे ॥ भाई ॥ ३३ ॥
भार घणे पंखीनी अकुलाणी, चांच थकी अड़घड़ीओ ॥
दैव योगे तब देवी आगे, ओघो तंतुज पड़ियो रे ॥भाई ॥ ३४ ॥
देखी भाई मार्या केरी, जाणी ए महिनाणी ॥
कन्ता ? कांई म्होटा मुनिवर, पील्या घाली घाणी रे । ३५ ॥
शोक करन्तां शासन देवी ए, पापी पुरथी लीधी ।
श्री मुनि सुव्रत पासे मूकी, स्वामी दीक्षा दीधी रे ॥ भाई ॥३६॥
'अग्निकुमार' अग्नी विकुर्वी, बाल्या पुरना लोको ।
'दण्डक' राजा 'पालक' पापी, ए कृत कर्म जोगो रे॥भाई॥३७॥
'दण्डकारण्य' तेहिज दिनथी, पुर नवो करि वमाणो ॥
भूंड करतां भूंडं हुवे, रूड़ रूड़ं जाणो रे ॥ भाई ॥ ३८ ॥
[illegible]क राजा भवमां भमीयो, दुःख तणो संयोगी ॥
'गंधाभिध' ए पंखी हूवो तोही महातन रोगी रे ॥ भाई ॥ ३९ ॥
जाती स्मरण मुख दर्शन थी, ऊपन्यु एहने आजो ॥
स्पर्शोषधि लब्धी थकी रे, जाणजो ए सहु साचो रे ॥ भाई । ४०॥
रोग गयो निरोगीयोरे, रत्नमयीरे शरीरे ॥
श्रावक हूवो साचलोरे, धर्म करे वा धीरेरे ॥ भाई ॥ ४१ ॥
जीवनी घाते फल नवि खाए, रात्री भोजन त्यागे ॥
बालन्ता पचखाण कराया, जाणो जेहवो रागेरे ॥ भाई० ॥४२॥
'राघवने' रे भोलामणी दीधी, रहेजो सेवा मांहीं ॥
स्वामी ने वात्सल्य घणेरे, पुण्य घणेरो प्राहेरे ॥ भाई० ॥४३॥
राम कहे ए भाई छेरे, तुम वचन थी वारू ॥

१ पक्षिणी पातालमें संचरी ।

सत्य यतीनी पासे रहैरे, चातुर पणेछे चारुरे ॥ भाई० ॥४४॥
एम कहीने ऋषि पांगरीया, उपकारी अणगार ॥
संजम तप करी शोभ तारे, ज्ञान तणा भण्डाररे ॥ भाई० ॥४५॥
देवदीयो रथ जोतरीरे, वैसे 'सीता' 'रामो' ॥
लक्ष्मण होवे सारथी रे, पंखो आगे तामोरे ॥ भाई० ॥४६॥
क्रिडा करतां संचरेरे, प्रबल पुण्य प्रभावो ॥
राम तिहांहीं अयोध्यारे, मिलीयो एह कहावोरे ॥ भाई० ॥४७॥
ढाल त्रीसमीं में कह्यो रे, पंखी प्रश्न प्रकारोरे ॥
'केशराज' ऋषि वायकमेरे, नहीं सन्देह लगारोरे ॥ भाई० ॥४८॥

दोहा केदारा गोडी रागे—

लंक पयालां राजीयो, खर नामे भूपाल ।
शूर्पनखा[1] घर सुन्दरी, सुन्दर रूप रसाल ॥ १ ॥
शुभ वेला सुखकारीया, जाया नन्दन दोय ॥
शम्बुक 'सुन्द' मोहामणा, पाम्या यौवन सोय ॥ २ ॥
मांय बाप ने वरजतां, 'दण्डकारण्ये' मांहे ॥
'सूर्यहास' असिसाधवा, 'शम्बुक' थयो उच्छा है ॥ ३ ॥
हणवं वर्जन हारने, वचन वदे विकराल ।
अभिमानी माने चड्यो आय पहूंतो काल ॥ ४ ॥
'कौंचरवा' तीरे अछे, गन्धर्व वंश विशेष ॥
तिहांरही साधन करे, एक मने अकलेश ॥ ५ ॥
एकान्त भूमि शुद्धात्मा, जीतेन्द्रिय ब्रह्मचार ॥
पग बांधी बड मारखं, अधो मुखो सुविचार ॥ ६ ॥
वर्ष बार दिन सातमूं, विद्या साधन सार ॥
प्रारंभ्यो परगटपणे, किस्यूं करे करतार ॥ ७ ॥
वरस बार वोली गयां, ऊपरनो दिन चार ॥
सिद्धि की सिद्धि हूवे, वरसे विद्याधार ॥ ८ ॥

---
[1] चन्द्रनखा इति पाठान्तरे ।

तेजमहा सूरज तणो, गन्धर्व मांहीं ताम ॥
विस्तर्यो दीसे घणू, कुंवर हरष्यो जाम ॥ ९ ॥
क्रीडा कारण आवीयो, 'लक्ष्मण' मन उल्हास ॥
'सूर्यहास' असि देखीयो, जाणे सूर्य प्रकाश ॥ १० ॥
खांडो लीधो हाथ में, काढी सर्मे सोई ॥
अपूर्व शस्त्र विलोकतां, क्षत्री ने सुखहोई ॥ ११ ॥
तास परीक्षा कारणे, आतुर हुवो ईश ॥
वंशजाल में वाहीयो,[१] शम्बुक केरो शीष ॥ १२ ॥
उतरि पड़ीयो आगळे, चित्त सूं चिन्तवेराय ॥
निष्कारण ए मारीयो, फरी फरी ने पछताय ॥ १३ ॥

क्षेपक–दोहा

लक्ष्मण मन विलखोथयो, लखीयो नहीं लिगार ॥
पकियो फल पूरो पड्यो, रखियो नहीं रखवाल ॥ १४ ॥

स्वामीजी श्री रामचन्दजी कृत-ढाल क्षेपक तर्ज असी रुपैया लो कलदार

कोई नर मरियो, शिर धर परियो, करीयो लछमन हाहाकार ।
भावीने कुण टालणहार टाली नहीं टले लाख प्रकार ॥ टेर ॥ १ ॥
शरीर सुगन्धो तेज दिनंदो, चन्दो लज्जित हुवे वदन नीहार ॥२॥
राजकुंवर वर, उत्तम नरवर, दिनकर कर सम तेज अपार॥भावी॥३॥
क्यूं इहां आऊं, खड्ग उठाऊं, क्यूं वाऊं मैं विना विचार ॥ ४ ॥
आयोहूं भटक्यो, क्यों इहां अटक्यो, झटक्यो खड् लग्यो अनाचार॥५॥
विन अपराधन विद्या साधन, आराधन करतो लियो मार॥भावी॥६॥
इम पिछनावे शीश धुनावे, आवे न पाछो फल तरु डार ॥भावी॥७॥
दोहा–कुब्हर में जोवे जई, वडला केरी डाल ।
दीठो धड़ अविलम्बियो, नाम चल्यो ततकाल ॥१५॥
राम समीपे आवीयो, संभलाव्यो विरतन्त ।

---

१ वाह्यो–(वाव्यों) वंशजालने कापतां शम्बुक नूं मस्तक कपाई गयूं अने ते लक्ष्मणजी ने आगल आवीने पड़यूं ने थी गव्हरमां जईने जातां वड़नी शाखाए धड़ लटकतां जोयुं ।

खांडो मूक्यो आगले, भाखे राम तुरन्त ॥ १५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

सियकहै देवर यहै बीज तरुवर, फर लगेगे रहो हुंसियार॥भावी॥८॥
एह सोचन काई, सुन भोजाई, लक्ष्मण कहै मुझ एक लिगार ॥ ९ ॥
मुनि 'राम' कहै भाई, टरे नहीं राई पिछताई रहै उत्तम आचार।१०।

ढाल इकतीशवी तर्ज–राजवीयांने राज पीयारो।

हो भाई ! ते उपद्द उठायो, जस ए खांडो सो नर चांडो,
आयो के हिव आयो ॥ टेर ॥
रावण भगिनी शूर्प नखाजी, विद्या सिद्धि जाणी।
पूजा पाणी अन्न अनूपम, आणे सा खर राणी ॥ हो भाई ॥ १ ॥

श्रावक वैद्य धूलचंदजी ढालक्षेपक तर्ज अहो २ पासजी मुझ मिलीयाहो।

कहो ! ए सखी आज पियुघरआसी ए, आसी आसीने आनन्द थासी टेर ॥ लारे शम्बुक नीनारीरे, करे विध २ महिलनी त्यारीरे तन सकल सज्या सिणगारी ॥ कहो १ ॥ करीविकटतपस्या वनमेरे, पियु दुर्बलहोगया तनमेंरे, उनकी लगन लगी मेरामनमें ॥ क २ ॥ बारे बरस नी आशाफलसीरे, म्हांरी विरहव्यथा सहुटरसीरे म्हारा वंछित कारज सरसी ॥ कहो ॥ ३ ॥ नारी बन रही झाकड़ मालारे, इमगूंथी मनोरथ मालारे, इमहर्ष मनावे बाला ॥ कहो ॥ ४ ॥ इतने दक्षिण अङ्ग फरकेरे, तब धड़ धड़ छतियों धड़केरे, कामण को कलेजो कलके ॥ कहो ॥ ५ ॥ पियु आयां आनन्द बरसेरे, मिलवाने तनमन तरसेरे, पिण विधना कहो युं करसे ॥ कहो ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

दीठो धड़ मस्तक जब जूवो, अपि अपि देच प्रकासो ॥
कीधोथो अणमोल्यो अधिको, मूर्छाणी ना तामो ॥ हो भाई ॥२॥
हुई सचेतन हा वत्स ! हा वत्स !, शम्बूक शम्बूक जोई ॥
करती फरती अति आरड़ती, मरोडे कर दोई ॥ हो भाई ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–धन्तुरो राचणो ॥

आतो आई वन्न मझार, निरख्यो नन्दनजी हांजी ।
आतो धरण पडी धसकाय, कुंवर तूं गयो कीहांजी ॥
थारी मायडी कूके वन मांय, कुँवर वेगो आवजे रे ॥ टेर ॥ १ ॥
धड मस्तक न्यारा दोय, कुण्डल झिग मिग करेजी ॥
काया कञ्चन रूप रसाल, पड्यो धरणो तलेजी ॥ थारी ॥ २ ॥
हा हा होगई अचिरज बात, महा दुःख कारीणीजी ।
आता वाल्हा खाणी भोम के, महा डरावणोजी ॥ थारी ॥ ३ ॥
थने वर्ज्यो मैं पूत ! अपार, मूल मान्यो नहींजी ।
मैंतो आश अलुद्धि नार, आय इमहीज रहीजी ॥ थारी ॥ ४ ॥
ए अरोगो पय पान, लाई तुम कारणेजी ।
सामो जोवो नयन उघाड, जावूं तुम्ह वारणेजी ॥ थारी ॥ ५ ॥
थारो किहां गयो खड्ग रतन्न क, विश्व वीहामणोजी ।
कुण पापी कियो यह काम क, दुःख लागे घणोजी ॥ थारी ॥ ६ ॥
थे तपस्या करी रे अपार, जीती बाजी हारीयोजी ।
कोई पापी नीच कुजात, चिन्तव इम मारीयोजी ॥ थारी ॥ ७ ॥
किहां जो ऊरे पुत्र दीदार, थारो नयने करीजी ।
थारी झुरसी सब परिवार के, बाल अन्ते ऊरीजी ॥ थारी ॥ ८ ॥
म्हारो फाटे हियड़ो हीरक छाती पर जलेजी ।
फिर २ मूर्च्छा खाय, क अति ही टलवलेजी ॥ थारी ॥ ९ ॥

टाल मूलगी क्षेपक—

मरदे माटही रोवे, पूत्र ? क्युं धरणी पर सोवे, दशोदिश वैरीने जोवे ॥ नन्दन की विरह व्यथा जागी, वैरी की निगह करन लागी ॥ मन्य व्रत पालो ॥ ६६ ॥

टाल मूलगी

लखणवन्ती लक्ष्मण केरी, पगनी१ पंक्ती देखे ।
मुझ सुत हंतार२ ए रे जाणेवो, रीस घणी मुनिरोपे ॥होमाटी॥ ४ ॥

१ पृथिवीपर पैर हूवे खोज । २ मारने वाला ।

पगने खोजे चाली आवी, 'सीता' 'लक्ष्मण' रामो।
निरखी हरखी परखे पदमनी, 'राम' रूप अभिरामो ॥ हो ॥ ५ ॥
काम बाणसूं बींधी लीधी, न रही शुद्ध लगारो।
भूली नन्दन आनन्द ऊपन्यो, करवाने भरतारो ॥ हो भाई ॥ ६ ॥
मुनि श्री प्रसन्नचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-म्होटी जगमें मोहिणी
विह्वल थईसा भामिनी, कांई हुई अपच्छर उणिहार।
कनक वरण द्युती सोहनी, कांई मोहनी हो सवही संसार ॥ १ ॥
धिक् धिक् विषय विकारने ॥ टेर ॥
मांग भरी गजमोतीयों, मुख चावेहो मा बीडा पान ॥
नखराली चित्त चोरती, कांई राखे हो दिल अधिकी आन ॥२॥
नाके नकवेसर सजी, गल पहरीयो मोतियन को हार ॥
चोली पहरी चूंपसुं, पग बाजे हो झांझर झणकार ॥ धिक् ॥ ३ ॥
ठमक ठमक पगल्या ठवे, कांई चाली हो मानूं जेम मराल ॥
काणां घूंघट पट धरी, वणि षोडसहो वर्षां री बाल ॥ धिक् ॥४॥
हाव भाव करती थकी मन धरती हो वा अधिको प्रेम।
वचन सुधा सम दाखती, चित्त लागो हो चकवीने जेम ॥ ५ ॥
ढाल मूलगी
कुंवरी अमरीने अनुसरती, धरती रूप रसालो।
रामचंद्रने पासे आवी, ऊभी सा ततकालो ॥ हो भाई ॥ ७ ॥
पूछे प्रभुजी पद्मणि सेथी, कोण अछो तुम्ह भाखो ॥
अटवीमां एकाकी दीसो, शंका कोई मति राखो ॥ होभाई० ८ ॥
सा भाखे हूं राज कुंवारी, ऊपरी भोंमे सोऊं ॥
निद्रा गत नर मुआ सरिसो, अधिक अचे तन होऊं ॥ होभाई० ९ ॥
एक विद्याधर रूपे मोयो, इहां लेई मुझ आयो ॥
एटले अपर खेचर चल आयो चाहे मुझ छीनायो ॥ होभाई० १० ॥
मुझने हेठी मूकी आपण, लडवा लागा दोई ॥
लडता लडता दोई मुआ, कुव्यसन थी एम होई ॥ होभाई० ११ ॥
एकाकी हूं अबला बाला, वन में फिरूं उदासी ॥

अबमें प्रभुजीना पग पाम्या, आरती गई सब नासी ॥होभाई॥१२॥

जैनोपदेशक वैद्य सुराणा धूलचन्दजी कृत—
ढाल क्षेपक तर्ज हां सगीजी ने पेडा भावे ॥

हां प्रभो ? सुन अरज हमारी, शरणे आई अबला नारी ॥
वेगी कीजो ब्याव करोमति, ढील लिगारोरे ॥ प्रभो० ॥ १ ॥
धिन २ दर्शन आज मे निरख्यो, म्हारोतो मन अति ही हर्ष्यो ॥
परख्यो पुरुष प्रधान, जोड मिल गई मझारी रे ॥ प्रभो० ॥ २ ॥
एह अवस्था म्हारी नीकी, आप तणीतो मुझसे अधिकी ॥
बाल पणाको भोग जोग ओ, मिलीयो भारी रे ॥ प्रभो० ॥ ३ ॥
ललितांगी करती बहु लटका, कर गूंघट से करती मटका ॥
झटका देवे काम राम मन, प्रीत तुम्हारीरे ॥ प्रभो० ॥ ४ ॥
तुम दर्शण की हो रही प्यासी, निरखत मिट गई सर्व उदासी ॥
दासी की अरदास पास कर, रखलो प्यारीरे ॥ प्रभो० ॥ ५ ॥
विरह आग थकी अकुलाणी, जिणसुं बोल रही छूं वाणी ॥
राणी कर महाराज लाज मे, तजदी सारीरे ॥ प्रभो० ॥ ६ ॥
इणपर नार अरज बहु करती, हर्षित हिये नेण जल भरती ॥
करती नखरा खूब लाज मन, नहीं लिगारीरे ॥ प्रभो० ॥ ७ ॥
लाल पाल्ह करती बहु नारी, म्हे छूं प्रभु तुमची नारी ॥
मान कही में थारी आप, अब करदो जहारीरे ॥ प्रभो० ॥ ८ ॥
मैं शरणे लीधो सुखकारी, कंवारी छूं राज दुलारी ॥
सांवातां की एक ब्याव की, करलो त्यारी रे ॥ प्रभो० ॥ ९ ॥
धिक् धिक् धिक् धिक् काम विकारा, 'धूलचन्द' कहे सुणजो मारा
प्यारा मन कर प्यार नार एह, नागण कारीरे ॥ प्रभो० ॥ १० ॥

दोहा— बोली सुसमा सुन्दरी, और न जग में कोय ॥
तुम मामो सुन्दर युवा, कहीं न दूजा होय ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज—राधेश्याम (राधेश्याम रामायण में से)

मानों हम दोनों का स्वरूप, विधिने विचार कर रक्खा है ।
चन्द्रमा बनाने वाले ने, सूरज तैयार कर रक्खा है ॥

संकोच छोड़कर वनवासी, पूरा विधिका उत्साह करो ।
मैं तुमको आज्ञा देती हूं, मुझसे गन्धर्व विवाह करो ॥

ढाल मूलगी

अबे मुझ व्याहो वार न लाहो, बाल पणानो भोगो ।
भोगवतां सुखदाई पिछे, दोहीलो ए संयोगो ॥ हो भाई ॥ १३॥
प्रभुजी ए प्रपंच विचार्यो, महोटानी मति महोटी ॥
कपट कुटी कलह कारी कामनी, ए सब वातां खोटी ॥ होभाई ॥ १४॥
धूता का धूताए धुरत, धूती ने पकडाई ॥
तवदीये नयणां सयण बताई, मांहो मांही भाई ॥ होभाई ॥ १५ ॥
राम कहै म्हारे एक छे नारी, बीजी केम बराये ॥
वेची निद्रा उजागर लेवे, सांसा में दिन जाये ॥ होभाई ॥ १६ ॥
पेला छडो छटक दिखावे, करसे थारो विवाहो ॥
जेहने नहीं तेने आतुरता, मनमें अति उमाहो ॥ होभाई ॥ १७ ॥
प्रार्थना लक्ष्मण सूं कीनी, लक्ष्मण कहै भलेरी ॥
माय हमारी प्रभु प्रार्थियो, भाभी? मकडीसो फेरी ॥ होभाई ॥ १८॥

जै. वै. सु. धूलचन्दजी कृत.—

ढाल क्षेपक—तर्ज गवरल ईसरजी केवेतो हंसकर बोलणाजी ॥

लक्ष्मण भाखे है भाभी, सुन वातां मायरी ए. ॥ टेर ॥
अवसर चूक गई तू स्याणी, होकर आई रघुवर राणी । तूंलो हाथां
घात गमाणी । अवतो स्यूं होवे पिछनाणी, पेला आतीतो वातां
माने तो तायरीए ॥ ल० ॥ १ ॥

—(तर्ज—राधेश्याम रामायण में से)—

लक्ष्मण से बोली—मुझे देख तुम क्यों इतने मुसकाते हो ।
वेतो व्याहे हैं लेकिन तुम नारी विहीन दिखलाते हो ॥

(कवित्त) निरखे अवरां नयण, वयण अवरां बतलावे, अवरांनूं अनुराग
चित्त अवरां ललचावे ॥ दे अवरां सिर दोष, रोष अवरां सिर नारे ॥
अवरां सूं अभिलाख भाग अवरां सुख भारे । रति मेल केल अवरां
करे ध्यान अवरां मन धारीणी चित्तमांही दीप समजो चतुर, चरित्र एह
व्यभिचारीणी ॥ १ ॥

नसिरी गरज लिगारी ॥ अब तो कोईयन लागे कारी, इनपर गाढो तो पिछतावो नारी खायरहीए ॥ लक्ष्मण ॥ २ ॥

दोहा–शिक्षा सुन वन पति की, जली जलगई और।
मिली शुद्ध जलको–नहीं, चिकने घटपरठौर ॥

राधेश्याम

राक्षसीने सोचा-इससे तो, गल सकती दाल नहीं अपनी।
यह तो पूरा उपदेशक है, बदलेगा चाल नहीं अपनी ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

आतो भिडकी गई आकाशे, थे मुझ कीधो कुंवर विणासे, आई खररायने पासे, आंसूं न्हांखे अधिक उदासे, इसका खाती करे अरदासे, मैं तो नीठ लाज राखी कर आई मायरी है ॥लक्ष्मण॥३

ढाल मूलगी

याचना भङ्ग थकी रीसाणी, रीसाणी सुतमार्यो,
खरसूं खरी आय पुकारी, रीसघणो विस्तार्यो ॥ होभाई ॥ १९ ॥
चउदहजार खराही खेचर, संन्नाह्या ते वारो।
आई गया ते वात करन्ता, ऊठे ' राम ' जे बारो होभाई॥२०॥
'लक्ष्मण' भाखे देव दयाकरी, बैठा रहो तुम आपो।
मुझ उठ्यां ए नाठा देखो, पुण्य थकी जिम पापो ॥होभाई॥२१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयारी

मंत्री कहे नृप खर भणी, भेजीजे एक दूत राजेश्वर।
आण लगे तुम चरणने, छोडी अपनी आकृत राजेश्वर ॥ १ ॥
काम विचारी कीजीये ॥ टेर ॥
मूवो सुत जीवे नहीं, गई बात न होय ॥ राजेश्वर।
खड्ग मेल कर धोकदे, सावन्त हुवे सोय ॥ राजेश्वर ॥काम॥२॥
दूत भेज्यो खर दूषणे, लेख देई ने हाथ ॥ राजेश्वर।
सुनम्हारी खांडो लीयो, उठो हमारी साथ ॥ राजेश्वर ॥काम॥३॥
के पगे लागो खर तणे, लेई खांडो हाथ ॥ राजेश्वर।
के संग्राम सम्भारीये, अवगन नीजी बात ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ४ ॥

अच्छा तुम उनकी तरह, मुझे उत्तर देना खुर खुरा नहीं ।
तुम बने बनों में बनी बनूं, यह जोडा भी कुछ बुरा नहीं ॥
दोहा–लक्ष्मण का तो प्रकृती से, था स्वभाव ही गर्म ।
गर्मा कर कहने लगे, चल दुष्टा बे शर्म ॥ ० ॥

॥ राधेश्याम ॥

एसी बाते करने में तुझे, ओ कुलटा१ लाज न आती है ।
मुझसे यह कहने के पहीले, पापीनी मर नहीं जाती है ॥
पहली ही बार जिन्दगी में, एसी निर्लज्ज देखी हमने ।
है आज का दिन मनहूस बडा, इतनी निर्लज्ज देखो हमने ॥
ओ कुल कलङ्किनी पिशाचिनी, यदि हुआ विवाह नहीं तेरा ।
तो अपने संरक्षक से कह, वह करदे ठौर कहीं तेरा ॥
है आर्य्य-विवाह योग साधन, सौदान समझ बाजार का यह ।
आराम ऐस इसका न लक्ष्य बंधन कर्तव्य-भारका यह ॥
और अगर विवाह होचुका हो, तो जा निजपति की सेवाकर ।
वहही आराध्य देव तेरा, उससे ही सुख की आशाकर ॥
यदि हो वैधव्य अवस्था तो, पति नामकी वैरागिनी बनजा ।
देश और जाति की सेवाको, बस सच्ची सन्यासिनी बनजा ॥
बहनों का अपनी कर सुधार, यह राह है तेरी शुभ गति की ।
संसार में बस कायम करदे, यों यादगार अपने पति की ॥
वरना यों बाही फिरने में, क्यों अपना जन्म लजाती है ।
कुलको-समाजको-देशको भी, व्यभिचारणी दाग लगाती है ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्वोक्त

मैं तो लाज गमाई म्हारी बातां करदी सगली जहारी, म्हारी

यत: नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं, न ज्ञायते दुष्ट मनोरथाश्च ।
स्त्रियाश्चरित्रं, पुरुषस्य भाग्य, देवो न जानाति कुतोमनुष्य: ॥

ऊंदर सूं डरके पकड बैठग् बग आणे, डोरो देखी डरे सापदे सूं
सिरांरे ॥ अगला घर अडवडे, चढे टूक्कर गि चडहड, पूछ्यां पकडे सून
हसे स्वेच्छाचार हडहड ॥ स्वारथ सूं प्यार मांडे जुगन कन्त हुवी कलह
कारिणी. जिनमांही 'दीप' समझो चतुर चरित्र एह व्यभिचारिणी ॥२॥

नसिरी गरज लिगारी ॥ अब तो कोईयन लागे कारी, इनपर
गाढो तो पिछतावो नारी खायरहीए ॥ लक्ष्मण ॥ २ ॥

दोहा–शिक्षा सुन चन पति की. जली जलगई और।
मिली शुद्ध जलको–नहीं. चिकने घटपरटौर ॥

राधेश्याम

राक्षसीने सोचा-इससे तो, गल सकती दाल नहीं अपनी।
यह तो पूरा उपदेशक है, बदलेगा चाल नहीं अपनी ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

आतो भिडकी गई आकाशे. शे मुझ कीधो कुंवर विणासे. आई
खररायने पासे. आंसू न्हांखे अधिक उदासे, इमका खाती करे
अरदासे, मैं तो नीठ लाज राखो कर आई मायरी है ॥लक्ष्मण॥३

ढाल मूलगी

याचना भङ्ग थकी रीसाणी, रीसाणो सुतमार्यां,
खरमूं खरी आय पुकारी, रीमघणी विस्तार्यां ॥ होभाई ॥ १९ ॥
चउदहजार खराही खेचर, संवाह्या ते वारो।
आई गया ते बात करन्ता, ऊडे ' राम ' जे सारो होभाई॥२०॥
'लक्ष्मण' भाखे देव दयाकरी, वैठा रहो तुम आपो।
मुझ उठ्यां ए नाठा देखो, पुण्य थकी जिम पापो ॥होभाई॥२१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयारी

मंत्री कहै नृप खर भणी, भेजीजे एक दूत राजेश्वर।
आण लगे तुम चरणने, छोडी अपनी आकूत राजेश्वर ॥ १ ॥
काम विचारी कीजीये ॥ टेर ॥
मूवो सुत जीवे नहीं, गई बात न होय ॥ राजेश्वर।
खड्ग मेल कर धोकदे. सायन्न हुवे सोग ॥ राजेश्वर ॥काम॥२॥
दूत भेज्यो खर दूषणे, लेख देई ने हाथ ॥ राजेश्वर।
सुनम्हारी खांडो लीयो, ऊठो हमारी साथ ॥ राजेश्वर ॥काम॥३॥
के पगे लागो खर तणे, लेई खांडो हाथ ॥ राजेश्वर।
के संग्राम सम्भारीये, अवरन तीजी बात ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ४॥

अच्छा तुम उनकी तरह, मुझे उत्तर देना खुर खुरा नहीं ।
तुम बने बनों में बनी बनूं, यह जोडा भी कुछ बुरा नहीं ॥
दोहा—लक्ष्मण का तो प्रकृती से, था स्वभाव ही गर्म ।
गर्मा कर कहने लगे, चलु दुष्टा बे शर्म ॥ ० ॥

॥ राधेश्याम ॥

ऐसी बाते करने में तुझे, ओ कुलटा१ लाज न आती है ।
मुझसे यह कहने के पहीले, पापीनी मर नहीं जाती है ॥
पहली ही बार जिन्दगी में, ऐसी निर्लज्ज देखी हमने ।
है आज का दिन मनहूस बडा, इतनी निर्लज्ज देखी हमने ॥
ओ कुल कलङ्किनी पिशाचिनी, यदि हुआ विवाह नहीं तेरा ।
तो अपने संरक्षक से कह, वह करदे ठौर कहीं तेरा ॥
है आर्य्य-विवाह योग साधन, सौदा न समझ बाजार का यह ।
आराम ऐश इसका न लक्ष्य बंधन कर्तव्य-भारका यह ॥
और अगर विवाह होचुका हो, तो जा निजपति की सेवाकर ।
वहही आराध्य देव तेरा, उससे ही सुख की आशाकर ॥
यदि हो वैधव्य अवस्था तो, पति नामकी वैरागिनी बनजा ।
देश और जाति की सेवाको, बस सच्ची सन्यासिनी बनजा ॥
बहनों का अपनी कर सुधार, यह राह है तेरी शुभ गति की ।
संसार में बस कायम करदे, यों यादगार अपने पति की ॥
बस्ना यों बाही फिरने में, क्यों अपना जन्म लजाती है ।
कुलको-समाजको-देशको भी, व्यभिचारणी दाग लगाती है ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—पूर्वोक्त

मैं तो लाज गमाई म्हारी बातां करदां सगली जहारी, म्हारी

यत: नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं, न ज्ञायते दुष्ट मनोरथाश्च ।
स्त्रियाश्चरित्रं, पुरुषस्य भाग्य, देवो न जानाति कुतोमनुष्यः ॥
[illegible] सूं [illegible] पकड़ केहर वश आणे, डोरो देखी डरे सापद सूं [illegible] ॥ [illegible] पर [illegible], चढे डूंगर गिरि चड़दड़, पूछ्यां पकड़े सूत [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] प्यार मांडे जुगत करत हुयी कलह [illegible]. चित्रमांही 'वीर' समजो चतुर चरित्र एक व्यभिचारिणी ॥१॥

नसिरी गरज लिगारी ॥ अब तो कोईयन लागे कारी, इनपर गाढो तो पिछतावो नारी खायरहीए ॥ लक्ष्मण ॥ २ ॥

दोहा–शिक्षा सुन पन पति की, जली जलगई और।
मिली शुद्ध जलको–नहीं, चिकने घटपरटौर ॥

राधेश्याम

राक्षसीने सोचा-इससे तो, गल सकती दाल नहीं अपनी।
यह तो पूरा उपदेशक है, बदलेगा चाल नहीं अपनी ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–पूर्ववत्

आतो भिडकी गई आकाशे, थे मुझ कीधो कुंवर विणासे, आई खररायने पासे, आंसूं न्हांखे अधिक उदासे, इसका खाती करे अरदासे, मैं तो नीठ लाज राखी कर आई मायरी है ॥लक्ष्मण॥२

ढाल मूलगी

याचना भङ्ग थकी रीसाणी, रीसाणी सुतमार्यां,
खरसूं खरी आय पुकारी, रीसघणो विस्तार्यो ॥ होभाई ॥ १९ ॥
चउदहजार खराही खेचर, संचाल्या ते वारो।
आई गया ते वात करन्ता, ऊठे ' राम ' जे बागे होभाई॥२०॥
'लक्ष्मण' भाखे देव दयाकरी, बैठा रहो तुम आपो।
मुझ उठ्यां ए नाठा देखो, पुण्य थकी जिम पापो ॥होभाई॥२१॥

ढाल क्षेपक तर्ज–हमीरीयारी

मंत्री कहे नृप खर भणी, भेजीजे एक दूत राजेश्वर।
आण लगे तुम चरणने, छोडी अपनी आकृत राजेश्वर ॥ १ ॥
काम विचारी कीजीये ॥ टेर ॥
मूवो सुत जीवे नहीं, गई वात न होय ॥ राजेश्वर।
खड्ग मेल कर धोकदे, मावन्त हुवे सोय ॥ राजेश्वर ॥काम॥२॥
दूत भेज्यो खर दूषणे, लेख देई ने हाथ ॥ राजेश्वर।
सुतम्हारो खांडो लीयो, ऊठो हमारी साथ ॥ राजेश्वर ॥काम॥३॥
के पगे लागो खर तणे, लेई खांडो हाथ ॥ राजेश्वर।
के संग्राम सम्भारीये, अवगन तांजी बात ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ४ ॥

लक्ष्मण कहे श्री रामसूं, ए खर बोली गर्व ॥ राजेश्वर ।
हुकम करो तुम देवजी, तो ए म्हारुं सर्व ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

जाओ वेगा वैरी जीतो, जो जाणो ए त्रासो ।
'सिंहनाद' निज मुखती कीजो, हूं छूं थारे पासो ॥होभाई॥२२॥
धनुष बाण लई पाये लागी, 'लक्ष्मण' चाल्यो जामो ।
खेचर खेते खराही शूरा, मांड्यो अति संग्रामो ॥ हो भाई ॥ २३ ॥
गरुड तणे आगे जिम अहिवर, तेमने खेचर भाजे ।
अरण्य मांहीं अटल एकलो, लक्ष्मण वीर विराजे ॥हो भाई॥२४।
पूठ गयवा रावण आगे, भगनी जाय पुकारी ॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' दण्ड कारण्ये, आयाछे अधिकारी ॥ होभाई ॥२५॥
विद्या साधन करतो वीरो, मारी लीयो बेकाजो ॥
लक्ष्मण सूं खरदूषण अडिया, जुडियाछे जई आजो ॥ होभाई ॥२६॥
लघुभाई ना बलथी बलियो, बलियो आप अपारो ॥
बेपरवाई करतो अडगो, नाणे मनही मझारो ॥ होभाई ॥ २७ ॥
सीता सूं सुखमाणे स्वामी सीतानो अति रूपो ॥
नारी सघली ही सोधन्ता, सीता रूप अनूपो ॥ होभाई ॥ २८ ॥
तीन लोकनी नारी जेती, तेतो जोई विमासी ॥
एक एक थी ओप अतिघण, सीता आगल दासी ॥ होभाई ॥२९॥
पग नखथी लई शिखा वखाणत, सुर गुरु पार न पावे ॥
नारी एक वखाण वणेगी, सांपे किम कहिवावे ॥ होभाई ॥३०॥

* सवैया-पूज्यश्री रेखराजजी म० के शिष्य नथमलजी म० कृत
इन्द्र की परी है धरि है विधाता आप,
चन्द्रमां सूं बीर काढी सार अमीपान की ।
कंचन वर्ण तन रंच न दिखाता खोड़,
सावन की तीजमानूं बीज आसमान की ॥
कहत केती बात एसी अनूपम और एसी ।
करन अंगना सेवा सुमन सुगन की ॥

स्वर्ग लोक मृत्यु लोक पाताल मांहीं।
जायदेखी नारीहून दूजी एसीजैसी नाथ जानकी॥

—(ढाल चेपक तर्ज वीरारी)—

वीरा सीता २ रूप अपार हो, वीरा ईन्द्राणी ने रद करेजी।
वीरा कहतां २ नावे पारहो, वीरा ईन्द्रादीक आशा धरेजी॥ १॥
वीरा थारी २ राणीयो पोई सहो, वीरा सीताने आगे पाणी भरेजी॥
वीरा थांने २ भेजी जगदीशहो, वीरा इणसूं केल क्यूं नहीं करेजी॥२॥
वीरा राम २ सु लिछमन मील हो, वीरा वांने जाय मारो सहीजी॥
वीरा सीता २ सूं कीजे लीलहो, वीरा मानोंनी म्हारी कहीजी॥३॥

ढाल मूलगीं—

सायर अन्ते ५ पृथिवी मांहीं, रत्न जीके छे जाचा॥
तेतो वन्धव सघला थारा, स्वामी पणाथी साचा॥ होभाई॥३१॥
पुष्पक नामे वेसी विमाणे, आणो आणी आशो॥
वदन विलोकी ने तव मुझने, देसो म्हो शाबासो॥ होभाई॥३२॥
ढाल भली ए इकतीशवीं, रावण मांड्या कानो।
केशराज होतारथ चलीयो, आयो तस अवमानो॥ हो भाई॥३३॥

दोहा (कल्याण रागे)

वीतराग उपदेश में, चार प्रकारे धर्म।
दान शीयल तप भावना, साधे वा शिव शर्म॥ १॥
चित्त वित अनुसारथी, दया दान कहिवाय।
तपतो काया सोसवी, भावे भावना भाय॥ २॥
शील पालयो दोहीलो, नहीं मोहिन्नोलिगार।
चंचल चित्त स्थिर राखिवो, चालवो खांडा धार॥ ३॥
वाये भरवो कोथलो, तरवा उदधि अपार।
माचो साप खिलावणो, पालवो शीलाचार॥ ४॥

ढाल बत्तीशवीं तर्ज पदनी—

जीवरे तूं शील तणो कर संग, अवर रंग सहुकारमोरे, एह करारो रंग॥ टेर॥

लक्ष्मण कहै श्री रामसूं, ए खर बोली गर्व ॥ राजेश्वर ।
हुकम करो तुम देवजी, तो ए म्हारुं सर्व ॥ राजेश्वर ॥काम॥ ५ ॥

ढाल मूलगी

जाओ वेगा वैरी जीतो, जो जाणो ए त्रासो ।
'सिंहनाद' निज मुखनी कीजो, हूं छूं थारे पासो ॥होभाई॥२२॥
धनुष बाण लई पाये लागी, 'लक्ष्मण' चाल्यो जामो ।
खेचर खेने खगही शूरा, मांड्यो अति संग्रामो ॥ हो भाई ॥ २३ ॥
गरुड तणे आगे जिम अहिवर, तेमते खेचर भाजे ।
अरण्य मांहीं अटल एकलो, लक्ष्मण वीर विराजे ॥हो भाई॥२४॥
पूठ रावणा रावण आगे, भगनी जाय पुकारी ॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' दण्ड कारण्ये, आयाछे अधिकारी ॥ होभाई ॥२५॥
विद्या साधन करतो वीरो, मारी लीयो बेकाजो ॥
लक्ष्मण सूं खरदूषण अडिया, जुडियाछे जई आजो ॥ होभाई ॥२६॥
लघुभाई ना वलब्ध बलियो, बलियो आप अपारो ॥
बेपरवाई करतो अडरतो, नाणे मनही मझारो ॥ होभाई ॥ २७ ॥
सीता सूं गुलमाणे स्वामी सीतानो अति रूपो ॥
नारी सघली ही मोधन्ता, सीता रूप अनूपो ॥ होभाई ॥ २८ ॥
तीन लोकनी नारी जेती, तेतो जोई विमासी ॥
एक एक थी ओप अतिपण, सीता आगल दासी ॥ होभाई ॥२९॥
पग नखथी लई शिखा वणाव्वन, सुर गुरु पार न पावे ॥
वाणी एक रसना वणेरे, मांपे किम कहिवावे ॥ होभाई ॥३०॥

सवैया-पूज्यश्री रत्नराजजी म० के शिष्य नथमलजी म० कृत

इन्द्र की परी है कि है विधाता आप,
चन्द्रमा सू बीर काढी सीर अमीपान की ।
कंचन वर्ण तन रंच न दिखाता खोड,
मानव की तीजमानू बीज आसमान की ॥
गात कैसो ठाट बनो अनूपम और एसो ।
करन अंगना देखा सूरत सुगन की ॥

स्वर्ग लोक मृत्यु लोक पाताल मांहीं।
जायदेखी नारीहून दूजी एसीजैसी नाथ जानकी॥

—(ढाल क्षेपक तर्ज वीरारी)—

वीरा सीता २ रूप अपार हो, वीरा ईन्द्राणी ने रद करेजी।
वीरा कहतां २ नावे पारहो, वीरा ईन्द्रादीक आशा धरेजी॥ १॥
वीरा थारी २ राणीयो पोई सहो, वीरा सीताने आगे पाणी भरेजी॥
वीरा थांने २ भेजी जगदीशहो, वीरा इणसूं केल क्यूं नहीं करेजी॥२॥
वीरा राम २ सु लिछमन मील हो, वीरा वांने जाय मारो सहीजी॥
वीरा सीता २ सूं कीजे लीलहो, वीरा मानोंनी म्हारी कहीजी॥३॥

ढाल मूलगी—

सायर अन्ते ५ पृथिवी मांहीं, रत्न जीके छे जाचा॥
तेतो बन्धव सघला थारा, स्वामी पणाथी साचा॥ होभाई॥२१॥
पुष्पक नामे बेसी विमाणे, आणो आणी आशो॥
वदन विलोकी ने तब मुझने, देसो सही शाबासो॥ होभाई॥२२॥
ढाल भली ए इकतीशवीं, रावण मांड्या कानो।
केशराज होतारथ चलीयो, आयो तस अवमानो॥ हो भाई॥२३॥

दोहा (कल्याण रागे)

वीतराग उपदेश में, चार प्रकार धर्म।
दान शीयल तप भावना, साधे वा शिव शर्म॥ १॥
चित्त वित अनुसारथी, दया दान कहिवाय।
तपतो काया सोसवी, भावे भावना भाय॥ २॥
शील पालवो दोहीलो, नहीं मोहिल्लोलिगार।
चंचल चित्त स्थिर राखिवो, पालवो खांडा धार॥ ३॥
वाये भरयो कोथलो, तरवा उदधि अपार।
माचो साप खिलावणो, पालवो शीलाचार॥ ४॥

ढाल बत्तीसवीं तर्ज पदनी—

जीवरे तूं शील तणो कर संग, अवर रंग सहूकारमोरे, एह कारगे रंग॥ टेर॥

आग थकी जल ऊपजे रे, साप थकी वरमाल।
वाघ किटी होय हरणलोरे, अंधे पणूं लहै व्याल२ ॥ जीव ॥ १ ॥
पर्वत होवे पाव हीयो रे, विष थी अमृत होय।
विघ्न थाने ओच्छव घणो रे, दुर्जन सज्जन होय ॥ जीव ॥ २ ॥
सायर गांव तलावड़ी रे, अटवी निजघर वार।
वृग निके भलपण भजे रे, शील तणा उपकार ॥ जीव ॥ ३ ॥
पड़हो जगे अपयश तणो रे, गुणवने देवी आग।
चारित्रने तीलांजली रे, तप जप जाये भाग ॥ जीव ॥ ४ ॥
माई सर्वापद तणी रे, कालो करवो गोत।
द्वार देखाड़े नर्कनों रे, शील विना इम होत ॥ जीव ॥ ५ ॥
पग भरे नग जेटला रे, परनारी ने हेत।
ब्राह्मण मारे तेटलारे, मारग अपर मत देत ॥ जीव ॥ ६ ॥
नजर मेलो नजरनो रे, होवे जेती वार।
पलके पलके पल्योपमें रे, वसवो नरक मझार ॥ जीव ॥ ७ ॥
कुसमे नारी निरखतांरे, ब्रह्म हत्यानो दोष।
लागे लम्पटने घणो रे, पाप तणो ए पोष ॥ जीव ॥ ८ ॥
राजदण्ड अति आकरोरे, और करे नुकसान।
आयु विन मरणो सहीरे, न वधे कोई मान ॥ जीव ॥ ९ ॥
आंख ऊंडी दोनिद्क्षये रे, क्षण २ खीणो देह।
चन्द्र ग्रहे निज वारमो रे, जेहनो परघर नेह ॥ जीव ॥ १० ॥
लाज गयां निर्लज पणूं रे, कुकर केरू नाम।
पग पग माथे ठोकरणांरे, शील विना ए काम ॥ जीव ॥ ११ ॥
शीलवती सीता सती रे, वसुधा मां विख्यान।
शीलन लोप्यो सुन्दरी रे, निसुणो ए अवदान ॥ जीव ॥ १२ ॥
पुष्पक नाम विमान में रे, बैठो रावण नाम।
दण्डकारण्ये आवीयो रे, बैठा दीठा श्री राम ॥ जीव ॥ १३ ॥

१ [illegible] । २ साप । ३ गाम-तलावड़ी-गामनी तलावड़ी
[illegible] ।

आघा पांव पड़े नहीं रे, नवि लोपाये कार।
सिंह न आवे आसनो रे, देखी आग अपार ॥ जीव ॥ १४ ॥
सीता तो लेवी सही रे, राम छतां न लेवाय।
आगे हरी पाछे तटी रे, सोच घणो तव थाय ॥ जीव ॥ १५ ॥
विद्यातो अवलोकनी रे, समरी तव आवन्त।
करजोड़ी ऊभी रही रे, प्रभुजी सुख पावन्त ॥ जीव ॥ १६ ॥
सहाय करो तुम मायरी रे, पामूं सीता आज।
फिरी गया पंचो मध्ये रे, हूं पामूं अति लाज ॥ जीव ॥ १७ ॥
शिरधूणी विद्याकहे रे, ए तो भूंड़ काम।
सीता हरतां तुमतणूं रे, थासे जगमें कुनाम ॥ जीव ॥ १८ ॥
सतियों मांही शिरोमणी रे, 'रामचन्द्र' की नार।
शीलथकी चूके नहीं रे, जो होवे क्रोड़ प्रकार ॥ जीव ॥ १९ ॥
'रावण' तो माने नहीं रे, देवी केरी वाय।
म्हारे मन सीता वसी रे, एही करो उपाय ॥ जीव ॥ २० ॥
विद्या कहे रघुजी छतां रे, कीधां कोडी कलाप।
हाथ न आवे जानकी रे, सुरपति आयां आप ॥ जीव ॥ २१ ॥
'लक्ष्मण' लड़वाने गयो रे, राम कियो संकेत।
सिंहनाद तुझ सांभल्यां रे, आगां देखे खेत ॥जीव॥ २२ ॥
सिंहनादने हूं करूं रे, राघव ऊठी जाय।
सीता लेनां मोहली रे, भाख्यो एह उपाय ॥ जीव ॥ २३ ॥
लड़ता था तिण दिश जई रे, विद्या कियो सिंहनाद।
रामचंद्रजी सांभल्यो रे, आणे मन विखवाद ॥ जीव ॥ २४ ॥
नाद सुणी प्रभु चिन्तवेरे, एछे को परपंच।
लक्ष्मण तो हारे नहींरे, संकट नो स्युं संच ॥ जीव ॥ २५ ॥
मायन्न जायो एह वोरे, जीते लक्ष्मण साथ।
खग्तो कुटेवो करोरे, एमकही रघु नाथ ॥ जीव ॥ २६ ॥
वारम्वार चदेस्वरारे, सीता आणी सनेह।

आग थकी जल ऊपजे रे, साप थकी वरमाल।
वाघ फिटी होय हरणलोरे, अंधे पणूं लहै व्याल२ ॥ जीव ॥ १ ॥
पर्वत होवे पाव हीयो रे. विप थी अमृत होय ।
विघ्न थाने ओच्छव घणो रे, दुर्जन सज्जन होय ॥ जीव ॥ २ ॥
सायर गांव तलावड़ी रे, अटवी निजघर वार ।
यूग तिके भलपण भजे रे, शील तणा उपकार ॥ जीव ॥ ३ ॥
पड़हो जगे अपयश तणो रे, गुणवने देवी आग ।
चारित्रने तीलांजली रे, तप जप जाये भाग ॥ जीव ॥ ४ ॥
मार्ग सर्वापद तणी रे, काल्लो करवो गोत ।
द्वार दिखाड़े नर्कनों रे. शील विना इम होत ॥ जीव ॥ ५ ॥
पग भरे नर जेटला रे. परनारी ने हेत ।
ब्राह्मण मारे तेटलारे, मास अपर मत देत ॥ जीव ॥ ६ ॥
नजर मेलो नजरनो रे, होवे जेती वार ।
पल्के पल्कं पल्योपमें रे, वसवो नरक मझार ॥ जीव ॥ ७ ॥
कुमने नारी निरखतां रे, ब्रह्म हत्यानो दोप ।
लागे लम्पटने घणो रे. पाप तणो ए पोप ॥ जीव ॥ ८ ॥
राजदण्ड अति आकरो रे, और करे नुकसान ।
आयु विन मरणो सही रे, न वधे कोई मान ॥ जीव ॥ ९ ॥
आंख ऊंडी दोनिंदक्षये रे, क्षण २ क्षीणी देह ।
चन्द्र रहै नित्य बारमो रे, जेहनो परघर नेह ॥ जीव ॥ १० ॥
लाज गयां निर्लज्ज पणूं रे, कुकर केरू नाम ।
पग पग माथे ठोकरणो रे. शील विना ए काम ॥ जीव ॥ ११ ॥
शीलवंती सीता सती रे वसुधा मां विख्यात ।
शीलने लोप्यो सुन्दरी रे, निगुणो ए अवदात ॥ जीव ॥ १२ ॥
पुष्पक नाम विमान में रे, बैठो रावण नाम ।
दण्डकारण्ये आवीयो रे, बैठा दीठा श्री राम ॥ जीव ॥ १३ ॥

१ अकस्मात् पड़तो रहे । २ साप । ३ गाम-तलावड़ी-गामनी तलावड़ी
[illegible] अघोर ठाम पर मूकी गलाय ।

रामचन्द्र की सीता राणी, लेई किहां तूंजाई ॥ तत् १ ॥
देख पराक्रम अवतू मेरो, मैं तुझ छोडूं नांई।
जाय आकाशे ऊपर पडतां, खगसे खगकी लडाई ॥ तत्० २ ॥
रावण वर्जे पिण नहीं माने, दीनो मुकट गिराई ॥
तिम २ रोप करे पंखीडो, जीवत जावा द्यूं नांई ॥ तत्० ३ ॥

ढाल मूलगी—

वर्ज्यो तो माने नहीं रे, ताम रिसाणो राय ॥
कापी नांखी पांखडीरे, पडीयो धरती आय ॥ जीव० ३४ ॥
शंकन माने कोइ नोरे, बैठो जाय विमान।
एह मनोरथ मायरोरे, पूर्यो श्रीभगवान् ॥ जीव० ३५ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

अब रावण के हृदयको, हुआ पूर्ण विश्वास।
मनही मन मनमें सीयाको, उसने किया प्रणाम ॥
फिर इकके बादहु आवहही, जो होनहार दिखलाता था।
रावण के विमान में सीता थी, और वह लंका को जाता था ॥
विमान ज्यों ज्यों आगे बढता था, त्यों त्यों सीता चिल्लाती थी।
हा ! राम राम ! हा ! राम राम बस, यह आवाजें आती थी ॥
विरहाग्नी के सन्तापित तन को उस नाम के तापसे सेकती थी।
हा ! राम यह कहती जाती थीं और भूपण वस्त्र फेंकती थी ॥

ढाल मूलगी—

हा सुसरा दशरथजी रे, जनक जनक हा तात।
हा लक्ष्मण हा रामजी रे, हा भामण्डल भ्रात ॥ जीव ॥ ३६ ॥
सिचाणो जिम चिरकलो रे, वायस बलीने जेम।
ए कोई मुझने ग्रहीरे, लेई जावे एम ॥ जीव ॥ ३७ ॥
आवी कोई उतावलो रे, शूरो जे संसार।
राक्षस थी राखी लीयो रे, करती जाय पुकार ॥ जीव ॥ ३८ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज-कांटो लागो रे देवरीया।

बेगो आजेरे देवरीया म्हांने, राक्षस लीयो जाय ॥ रा० ॥
म्हांने लम्पट लीयो जाय ॥ टेर ॥

लक्ष्मण संकटमे पडयोरे, नाद करे छे एह ॥ जीव ॥ २७ ॥
कन्त कहै सुण कामनीरे, हमने थारो सोच ।
अटवीमांही एकलीरे, आप गयां आलोच ॥ जीव ॥ २८ ॥
अबही जई फरी आवजोरे, करी बन्धवनी सार ।
आयो छूं इम मांभलीरे, झूझे अति झूंझार ॥ जीव ॥२९ ॥

जैनोपदेशक वैद्य सुगणा धूलचंदजी कृत
ढाल क्षेपक तर्ज— वेगा आवो जिनवरजी—

वेगा जावो वालमजी म्हारो देवरीयो दुःखपाय ॥ टेर ।
वाग ए विद्योधरतणो, भट प्रबलबली कहिवाय ॥ वेगा १ ॥
भोम पराई भयघणो, जीतवो मुसकिल थाय ॥ वेगा २
वेगा जावो वेगासुं, बंधवनी करोसहाय । वेगा ३ ॥
राज्य ऋद्धि सबछोरने, संग आयो लक्ष्मण भाय । वेगा ४ ॥
नेह निभावो प्रभु आपही, वारम लावोकाय ॥ वेगा ५ ॥
सोचकरो मनमायरो, इहां कहो कुण आय । वेगा ६ ॥
काटी कांवाडो देयने, मैंरहूंला मांय । वेगा ७ ॥
प्रबल जोर भावी तणो, पुरुष करे कहो काय । वेगा ८ ॥

ढाल मूलगी—

कांइयक सीता प्रेरणारे, कांइक सिमुण्योनाद ।
धनुष्य बाण सम्भाही केरे, ऊठ्यो धरी अल्हाद । जीव ३० ॥
राम् नेनो वानोंघणोरे, चाल्यो जाय सरोष ।
नमिटेछे भवितव्यतारे, देवन देवो दोष । जीव ३१ ॥
पछे रावण आवीयोरे, रोवन्ती अपराल ।
सीताने लेई चल्योरे, दीठुं रूप रसाल । जीव ३२ ॥
ताम जटायु पंखीयोरे, जाई मिलीयो धाय ।
रोष भरीनख-अंकुशेरे, ताम विलुरे काय । जीव ३३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पदरी जैनोपदेशक वैद्य सुगणा धूलचंदजी कृत

[illegible] आडो फिरीयोरे जटाई । टेर ॥
सुना घरमें चोर ज्युं बर्मायो रे रे दुष्ट अन्याई ।

आपणपे आलोच में रे, सायर ऊपर सोई।
करे घणी ममझावणी रे, समझावाने तोई ॥ जीव ॥ ४५ ॥
भूचर खेचर राजवी रे, सयल नमें हम पाय।
अछूं त्रिखण्डनो धणी रे, ईन्द्र आप गुण गाय ॥ जीव ॥ ४६ ॥
करी थापूं पटरागीनी रे, महिमा अधिक वधाय।
रोवे मति रहै रङ्ग में रे, सुख में दुःख न खमाय ॥ जीव ॥४७॥
कर्ता कोप्यो थो घणो रे, हंत किसं खुणसाण।
भाग्यहीण इण रामने रे, दीधी गले लगाय ॥ जीव ॥ ४८ ॥
काग गले कञ्चन तणी रे, माल भली न देखाय।
सरिखासूं सरिखो मले रे, आवे सहुने दाय ॥ जीव ॥ ४९ ॥
मानो मुझने पति पणे रे, होई रहुं तुम दास।
मुझ मान्या सहु मानसे रे, आणो तुम्हारी आश ॥ जीव॥ ५० ॥
निजर न ऊंची सा करे रे, दीन ए अपूठो जबाब।
अक्षर१ दोना ध्यानथी रे, आणो रही अति आब ॥ जीव ॥५१॥
विंध्यो मन्मथर२ वाणसूं रे, आरति अति मनमांहै।
ऊठीने पग लागीयो रे, विषय विह्वल थाहै ॥ जीव ॥ ५२ ॥
लम्पट ललचाणो घणूं रे, तूं क्यों न करे परवाण।
अण इच्छन्ति नारनोरे, पहिलां छे पञ्चक्खाण ॥ जीव ॥ ५३ ॥
सीता पग खैंची लीयो रे, छिब्यो नहीं शिर तास।
परपुरुषांने आ भर्ख्यांरे, थाये शीयल विणास ॥ जीव ॥ ५४ ॥
देवलनी ध्वज सारखीरे, पतिव्रता कहिवाय।
होय अपूठी वायथीरे, आपही अलगी पुलाय ॥ जीव ॥ ५५ ॥
सीता आक्रोशे घणूरे, रे रे निर्लज्ज ! नरेश।
मुझ आण्यां थी ताहरीरे, निणठी थान विशेष ॥ जीव ॥ ५६ ॥
सारणादिक तो घणारे, मंत्रीने सामन्त।
साम्हा आवी सादरारे, प्रभुने शोप नामन्त ॥ जीव ॥ ५७ ॥

राम। कामदेव।

प्राण वल्लभ मेरे दिलजानी, आप कही सो मैं नहीं मानी ।
जिणरा ए फल पाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ १ ॥
धावो धावो लक्ष्मण देवर, एम कही नांख्यो पगनेवर ।
ए सेनाणी थाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ २ ॥
हा हा दैव ! अबे स्युं करसूं, आप घात करने मैं मरसूं ।
एम कही विललाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ ३ ॥
हृदय विदारक सीता रोवे, गगन विहारी पंखी जोवे ।
स्या माग ही कुरलाय ॥ म्हांने राक्षस० ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी

अर्क जटीनो जाईयो रे, ' रत्नजटी ' खग एक ।
रोज सुणी सीता तणो रे, मन में करीय विवेक ॥ जीव ॥ ३९ ॥
भगिनी 'भामण्डल' तणी रे, 'रामचन्द्र' नी नार ।
'रावण' जी छलके लवी रे, लेई चाल्यो अपहार ॥ जीव ॥ ४० ॥
'भामण्डलना' पक्षथी रे, रत्नजटी तलवार ।
सम्वाही सांमो हुवो रे, रावणजी तिणवार ॥ जीव ॥ ४१ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-चन्द्रायणा

भामण्डल की बहिन राम की नार है, रे लेजावे केमके मूढ गीवार है । देनो इणने छोड़ केण तू मानले, नहींतर देसूं मार निश्चय ए जानले ॥ १ ॥ रावण भाखे रङ्क ! भक्त थारी थई, जा तूं थारे पन्थ मान म्हारी कही । तो पण कर करवाल के ले सामो थयो, वज्यों रावण वहोतक मानत नहीं कयो ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

मुलकाणो मनमें घणुं रे, किस्यूं करे ए रङ्क ।
विद्या सवनी अपहरी रे, लीधी राय निशङ्क ॥ जीव ॥ ४२ ॥
पांख विहुणो पंखीयो रे, होवे तेमए देख ।
छोटा म्होटा सूं अडे रे, पावे दुःख विशेष ॥ जीव ॥ ४३ ॥
कम्बू द्वीप कम्बू गीरी रे, गिरतो गिरतो तेह ।
कानो अधिका ओंगना रे, आयो धरती छेह ॥ जीव ॥ ४४ ॥

श्री सेठिया जैन ग्रन्थालय ।
बीकानेर ।

॥ श्रीमच्छार्दूलसिंह जित्-गुरवे नमः ॥

अथ तृतीय खण्डं प्रारभ्यते।

दोहा-(सोरठी रागे)

वाग् देवी वरदायनी, कविजन केरी माय ।
मया करीने आपजो, शुद्ध मति सुखदाय ॥ १ ॥
राम चली ऊतावला, आया 'लक्ष्मण' पास ।
रण रङ्गे रमतो खरो. दीठो सो उल्लास ॥ २ ॥
'राम' प्रत्ये 'लक्ष्मण' कहै, तुमतो कियो अकाज ।
अटवी मांहीं एकली, 'सीता' मूकी आज ॥ ३ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी म० कृत क्षेपक तर्ज-सरोता कहां भूल आये ।

सीता को क्यों छोड आये, प्यारे मेरे भैया ॥ टेर ॥
दिवी भोलामण इतनी तुम्हको, सीयका जतन करैया ।
विकट भयङ्कर अटवी इसमें, निशिचर खूब फरैया ॥ सीता ॥१॥
पर्ण कूटी में सीताजी को, एकाकी छोडैया ।
विना बुलाये आये यहां क्यों, वनमें तजी भोजैया ॥ सीता ॥२॥
वार २ सिंहनाद सुनीकर, चित्त में मैं चमकैया ।
जङ्गमें जीते लक्ष्मणजी को. ऐसा कुण मा जैया ॥ सीता ॥ ३ ॥
तोरी भावज जबरन मुझको, तोके पास पठैया ।
रूप मुनि कहै रामायण मे. गावो खूब गवैया ॥ सीताको ॥ ४ ॥

दोहा--राम कहै तें तेडीयो, हूं आव्यो अवधार ।
सो कहै मैं नवि नेडीयो, ए प्रपञ्च विचार ॥ ४ ॥
फरी जावो ऊतावला, मति को विणसे काम ।
पाछल थी आवीश हूं, जीतिने संग्राम ॥ ५ ॥
वेगा २ वाटे वही, राम पधार्या जाम ।
नजर न देखे जानकी. मूर्छाणा प्रभु ताम ॥ ६ ॥

यतः
ऊतावलसूं धावीयो, दारुण भरतो डग ।
वर्ष एक नदी वीसरे, पद्म रायरा पग ॥

ढाल तेतीशमीं तर्ज–घड़ीदे लाल तम्बाखू

श्री रामजी ए वनमें मेली, सीता शुद्ध न पाई हो ।
इत उत ढूंढत डोलत वनमें, सा नवि दीये दिखाई हो ॥ १ ॥
श्री रामे नार गमाई हो ॥ टेर ॥
संज्ञा पामी अन्तर्यामी, आगे आई धाई हो ।
पंख विहूणो पंखी पड़ीयो, दीठो ऊपर आई हो ॥ श्री रामे ॥ २ ॥
पंखीड़े दीठो नर कोई, नारी लीधां जाई हो ।
पूठ हुवां थी पापी पुरुषे, नांख्यो छे ए घाई हो ॥ श्री रामे ॥३॥

क्षेपक राधेश्याम

चलते २ उस जगह, पहुंच गये सुख धाम ।
जहां अधमरा गीध वह, कहता था हे राम ! ॥
उन मुंदती आंखों के आगे, वे दया भरी आंखे पहूंची ।
अध मरे गीध के कंधों पर, वे बड़ी २ बाहें पहूंची ॥
मरने वाले के कानों में, पहुंची यह वाणी प्रेम–भरी ।
हे ! परोपकारी बोल २, किसने तेरी दुर्दशा करी ॥
आंखे खोली सामने, देखे, शोभा धाम ।
लेकर आंखों में किया, आंखों से ही प्रणाम ॥
फिर आंख मूंद कर बोल उठा, है कौन जो मुझे सम्हालता है ?
हा राम यह जाप मैं जपता हूं, उस जाप में विघ्न डालता है ॥
कोई भी हो मैं कहता हूं, हट जाओ मुझको मरने दो ।
हा राम ! मंत्र है माता का, आराधना उसकी करने दो ॥
गद् २ हो बोले प्रभु, मैं ही हूं वह राम ।
भक्तराज ! देखो तुम्हें, करता राम प्रणाम ॥
यह सुनते ही फिर खुले, गीधराज के नैन ।
टूटी फूटी जुबान से, लगा बोलने बैन ॥
(हा राम !) सिया को एक दुष्ट, (हा राम !) लेगया दक्षिण को ।
(हा राम !) लड़ता था मैं उससे, (हा राम !) छुड़ा न सका उनको ॥
(हा राम !) न बोला जाता है, (हा राम) मुझे अब मरने दो ।

(हा राम !) सामने आजावो, (हा राम !) यह स्वरूप देखने दो॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अगाड़ी पंखी ही पायो, जिणीने पूछे रघुरायो. पंखी कहे नारी ले जायो, संज्ञा से वात चेतायो, धनुष्य ले तिण दिश ही जावे, लाधी नहीं फिर पाछा आवे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ६७ ॥ पंखीने देखी दुःख पावे, सोचतव मनमांही लावे, तथापि तसु तिरणो चावे। प्रभुजी करुणा दिल लाई, वक्त फिर यह आवे नांई ॥ ॥ सत्य० ॥ ६८ ॥

ढाल मूलगी—

श्रावक जाणी जाणी सहाई, प्रभु उपकार कराई हो।
श्री नमोकार अपार अनूपम, दीधो तसु सुखदाई हो॥श्रीरामे॥४॥
मंत्र प्रभावे स्वर्ग चतुर्थे, सुरनी पदवी पाई हो।
संगत थी पंखीउद्धरियो, संगत थी सुख थाई हो ॥ श्री रामे ॥५॥
ऊंचो देखे नीचो देखे, पास न कोई सखाई हो।
संचर जाणी आशा आणी. ताम रहे पस्ताई हो* ॥ श्री रामे ॥६॥

सवैया—

वनके कुरंग ते कहा कुरंग कीनो.
अब कहूं मृग नेनी सीय ताकी सोध लायदे।
कोकिल सो कण्ठ जाको,
मधुर आनन्दकारी, कोकिल कूं वेग जाई इतही कूं आयदे॥
ताही के शरीर की सुगंध अगर रूप अरे,
पवन वीर वास इतकूं पठाय दे।
अहो हंसराज हंस गामीनी गमन कीनो,
मेरी दया देख अब सीय कू मिलाय दे॥

---

* अरे लम्बे २ वट. तेरे माथे मोटी भट. मेरी सीया बतादे नट॥ अरे मौर. दई दिश दौर, बतादे मेरी सीय को चोर॥ अरे काग सूता क्यं है जाग, सीता गई किण माग ॥ अरे सूवा जोतां घणी वार हूवा. बतादे सीता का दूहा—

ढाल तेतीशमीं तर्ज–घड़ीदे लाल तम्बाखू

श्री रामजी ए वनमें मेली, सीता शुद्ध न पाई हो।
इत उत ढूंढत डोलत वन में, सा नवि दीये दिखाई हो॥ १॥
श्री रामे नार गमाई हो ॥ टेर॥
संज्ञा पामी अन्तर्यामी, आगे आई धाई हो।
पंख विहूणो पंखी पडीयो, दीठो ऊपर आई हो॥ श्री रामे॥ २॥
पंखीड़े दीठो नर कोई, नारी लीधां जाई हो।
पूठ हुवां थी पापी पुरुषे, नांख्यो छे ए घाई हो॥ श्री रामे ॥३॥

क्षेपक राधेश्याम

चलते २ उस जगह, पहूंच गये सुख धाम।
जहां अधमरा गीध वह, कहता था हे राम!॥
उन मुंदती आंखों के आगे, वे दया भरी आंखे पहूंची।
अध मरे गीध के कंधों पर, वे बडी २ बाहें पहूंची॥
मरने वाले के कानों में, पहूंची यह वाणी प्रेम–भरी।
हे! परोपकारी बोल २, किसने तेरी दुर्दशा करी॥
आंखे खोली सामने, देखे, शोभा धाम।
लेकर आंखों में किया, आंखों से ही प्रणाम॥
फिर आंख मूंद कर बोल उठा, है कौन जो मुझे सम्हालता है?
हा राम यह जाप मैं जपता हूं, उस जाप में विघ्न डालता है॥
कोई भी हो मैं कहता हूं, हट जाओ मुझको मरने दो।
हा राम! मंत्र है माता का, आराधना उसकी करने दो॥
गद् २ हो बोले प्रभु, मैं ही हूं वह राम।
भक्तराज! देखो तुम्हे, करता राम प्रणाम॥
यह सुनते ही फिर खुले, गीधराज के नैन।
टूटी फूटी जुबान से, लगा बोलने बैन॥
(हा राम!) सिया को एक दुष्ट, (हा राम!) लगाया दक्षिण को।
(हा राम!) लड़ना था मैं उससे, (हा राम!) छुड़ा न सका उनको॥
(हा राम!) न बोला जाता है, (हा राम) मुझे अब मरने दो।

(हा राम !) सामने आजावो, (हा राम !) यह स्वरूप देखने दो॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अगाड़ी पंखी ही पायो, जिणीने पूछे रघुरायो. पंखी कहे नारी ले जायो, संज्ञा से वात चेतायो, धनुष्य ले तिण दिश ही जावे, लाधी नहीं फिर पाछा आवे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ६७ ॥ पंखीने देखी दुःख पावे , सोचतव मनमांही लावे, तथापि तसु तिरणो चावे । प्रभुजी करुणा दिल लाई, वक्त फिर यह आवे नांई ॥ ॥ सत्य० ॥ ६८ ॥

ढाल मूलगी—

श्रावक जाणो जाणी सहाई, प्रभु उपकार कराई हो ।
श्री नमोकार अपार अनूपम, दीधो तसु सुखदाई हो ॥श्रीरामे॥४॥
मंत्र प्रभावे स्वर्ग चतुर्थे, सुरनी पदवी पाई हो ।
संगत थी पंखीउद्धरियो, संगत थी सुख थाई हो ॥ श्री रामे ॥५॥
ऊंचो देखे नीचो देखे, पास न कोई सखाई हो ।
संचर जाणी आशा आणी. ताम रहे पस्ताई हो* ॥ श्री रामे ॥६॥

सवैया—

वनके कुरंग ते कहा कुरंग कीनो.
अब कहूं मृग नेनी सीय ताकी सोध लायदे ।
कोकिल सो कण्ठ जाको,
मधुर आनन्दकारी, कोकिल कूं वेग जाई इतही कूं आयदे ॥
ताही के शरीर की सुगंध अगर रूप अरे,
पवन वीर वास इतकूं पठाय दे ।
अहो हंसराज हंस गामीनी गमन कीनो,
मेरी दया देख अब सीय कू मिलाय दे ॥

---

* अरे लम्बे २ वट, तेरे माथे मोटी भट. मेरी सीया वतादे भट ॥ अरे मौर, दई दिश दौर, वतादे मेरी सीय को चौर ॥ अरे काग भूला क्यं है जाग, सीता गई किण माग ॥ अरे सूवा जोतां पथी वार हुवा. वतादे सीता का दूहा—

ढाल तेतीशमीं तर्ज–घड़ीदे लाल तम्बाखू

श्री रामजी ए वनमें मेली, सीता शुद्ध न पाई हो।
इत उन ढूंढत डोलत वनमें, सा नांवि दीये दिखाई हो॥ १॥
श्री रामे नार गमाई हो ॥ टेर॥
संज्ञा पामी अन्तर्यामी, आगे आई धाई हो।
पंख विहूणो पंखी पडीयो, दीठो ऊपर आई हो॥ श्री रामे॥ २॥
पंखीड़े दीठो नर कोई, नारी लीधां जाई हो।
पूठ हुवां थी पापी पुरुषे, नांख्यो छे ए घाई हो॥ श्री रामे॥३॥

क्षेपक राधेश्याम

चलते २ उस जगह, पहुंच गये सुख धाम।
जहां अधमरा गीध वह, कहता था हे राम!॥
उन मुंदती आंखों के आगे, वे दया भरी आंखे पहूंची।
अध मरे गीध के कंधों पर, वे बडी २ बाहें पहूंची॥
मरने वाले के कानों में, पहूंची यह वाणी प्रेम–भरी।
हे! परोपकारी बोल २, किसने तेरी दूर्दशा करी॥
आंख खोली सामने, देखे, शोभा धाम।
लेकर आंखों में किया, आंखों से ही प्रणाम॥
फिर आंख मूंद कर बोल उठा, है कौन जो मुझे सम्हालता है?
हा राम यह जाप मैं जपता हूं, उस जाप में विघ्न डालता है॥
कोई भी हो मैं कहता हूं, हट जाओ मुझको मरने दो।
हा राम! मंत्र है माला का, आराधना उसकी करने दो॥
गद् २ हो बोले प्रभु, मैं ही हूं वह राम।
भक्तराज! देखो तुम्हें, करता राम प्रणाम॥
यह सुनते ही फिर खुले, गीधराज के नैन।
टूटी फूटी जुबान से, लगा बोलने बैन॥
(हा राम!) सिया को एक दुष्ट, (हा राम!) लेगया दक्षिण को।
(हा राम!) लड़ता था मैं उससे, (हा राम!) छुड़ा न सका उनको॥
(हा राम!) न बोला जाता है, (हा राम) मुझे अब मरने दो।

(हा राम !) सामने आजावो, (हा राम !) यह स्वरूप देखने दो॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अगाड़ी पंखी ही पायो, जिणीने पूछे रघुरायो. पंखी कहै नारी ले जायो, संज्ञा से बात चेतायो, धनुष्य ले तिण दिश ही जावे, लाधो नहीं फिर पाछा आवे ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ६७ ॥ पंखीने देखी दुःख पावे , सोचतव मनमांही लावे, तथापि तसु तिरणो चावे । प्रभुजी करुणा दिल लाई, वक्त फिर यह आवे नांई ॥ ॥ सत्य० ॥ ६८ ॥

ढाल मूलगी—

श्रावक जाणी जाणी सहाई, प्रभु उपकार कराई हो ।
श्री नमोकार अपार अनूपम, दीधो तसु सुखदाई हो ॥श्रीरामे॥४॥
मंत्र प्रभावे स्वर्ग चतुर्थे, सुरनी पदवी पाई हो ।
संगत थी पंखीउद्धरियो, संगत थी सुख थाई हो ॥ श्री रामे ॥५॥
ऊंचो देखे नीचो देखे, पास न कोई सखाई हो ।
संचर जाणी आशा आणी, ताम रहे पस्ताई हो* ॥ श्री रामे ॥६॥

सवैया—

वनके कुरंग ते कहा कुरंग कीनो,
अब कहूं मृग नेनी सीय ताकी सोध लायदे ।
कोकिल सो कण्ठ जाको,
मधुर आनन्दकारी, कोकिल कूं वेग जाई इनही कूं आयदे ॥
ताही के शरीर की सुगंध अगर रूप अरे,
पवन वीर वास इतकूं पठाय दे ।
अहो हंसराज हंस गामीनी गमन कीनो,
मेरी दशा देख अब सीय कूं मिलाय दे ॥

* अरे लम्बे २ पट, तेरे माथे मोटी लट, मेरी सीया बतादे झट ॥ अरे मौर, दई दिश दौर, बतादे मेरी सीय को ठौर ॥ अरे काग नुना क्युं है जाग, सीता गई किण माग ॥ अरे सूवा जोतां थयो बाव डूबा, बतादे सीता का कूहा—

स्वामी श्री नथमलजी म. कृत ढाल क्षेपक तर्ज नणदल री—

अवे री मने नहीं आवड़े, सीता केरे राग हो रघुपति ।
अवर बात गमे नहीं, एक सीता री लाग हो ।।रघु०।। अवे. ।।१।।
सूना झूपा सहु दीसे, राम पावे दुःख रास हो । रघु० ।
सूनी सेज छे रावली, प्रीतवती नहीं पास हो ।।रघु०।। अवे ।२।।
आसन शयन विलोकतां, वेदनतो असमान हो रघुपति० ।
माजनीया१ साले नहीं, माले आई ठाण हो । रघु० ।। अवे।। ३ ।।
दोहा–द्रुमगहन२ सोच करता फिरे, मारे वन मझार ।
मोह गहला थया रामजी, रुदन करे अनपार ।। १ ।।

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज–जल्लो मेरी जोड़ को

सती मेरी 'जानकी' कुण लेगयो पापी रे ।। टेर ।।
पतिव्रताथी पदमणी रे, रहती सदा इक रङ्ग ।
वन दुःख साथे सहे रे, कुण कीयो रङ्ग में भङ्ग ।। सीता ।। १ ।।
दुःख दीनो मोय पापीयो रे, लेगयो सीता नार ।
'लक्ष्मण' पिण हाजर नहीं रे, कुण करसी तरवार ।।सती।। २ ।।
क्षिण इक मूर्छा पामतो रे, क्षिण इक होय सचेत ।
अटवी मांही टलवले रे, सीता केरे हेत ।। सीता ।। ३ ।।

ढाल मूलगी—

'लक्ष्मण साथे, खर खेचर सो, मांडे ताम लड़ाई हो ।
'त्रिशिरा' लघु भाई खर रावो, आप करे अधिकाई हो ।।श्री।।७।।
रथ बैसी ने लक्ष्मण साथे, झूंझनणी विधि ठाई हो ।
'लक्ष्मण' वीर मार्ग नांख्यो पहेली एह वधाई हो ।। सीता ।।८।।

ढाल क्षेपक तर्ज–खड़का ।

'लक्ष्मण' वीर अति धीर शूरपणे, लक्ष्मन चपेट अति चोट बाहे ।

[illegible] १ केश गयां माल्हे नहीं, माल्हे आई ठाण ।
दंत गयो माल्हे नहीं, माल्हे पडीयो पिलाण ॥
२ दौडे विहरन जगत में, कुण नहीं मोच कीयो ।
सीता हरण हुवो जद मटके, रघुपति रोय दीयो ॥

विकट रणभूमी में भट्ट झट्ट आवीया, सामी आवे जको मृत्यु चाहै ॥ ल० ॥ १ ॥ बाण सणणण वहै चोट कोई ना सहै, कहै मुख खेचरा एम वाणी । वनतणो वासीयो सहुने ए त्रासीयो, नासीया सहु जणा भ्रान्ति आणी ॥ ल० ॥ २ ॥

ढाल मूलगी

लङ्क पयालां केरो स्वामी, "चन्द्रोदय" सुत सोई हो ।
'वीरविराध' सबल बलसाजी, आवी सहाई होई हो ॥ श्री ॥ ९ ॥
सेवक सोई आडो आवे, काम पड़े नहीं काचो हो ।
'लक्ष्मण' साथे 'विराध' वदेरे, सेवक हूं छूं साचो हो ॥श्री॥१०॥
बाप हणीने लङ्का लीधी, रीस घणी छे आगे हो ।
स्वामी कारज वैर बापको, जगमांही जश जागेहो ॥ श्री रामे११॥
तुम्ह आगेए कीट पतंगा, भृत्य पणूं हूं भाखूं हो ।
द्यो आदेश विशेष बतावूं, रण अखयायति राखूंहो ॥ श्री रामे १२॥
ईषत् हसि लक्ष्मणजी बोले, स्योंरे सहायज शूराहो ।
आपोबले बलवन्त कहावे, परबल नित्य अधूराहो ॥ श्री रामे १३ ॥
जेठो बन्धव राम नरेश्वर, दुःखीजन प्रति पालहो ।
देसे तुझने राज्य तुम्हारो, शत्रू कन्द कुदालहो ॥ श्री रामे १४ ॥
देखी विराध विरोधीखर, तो बोल्यो रोष प्रकाशीहो ।
शम्बूक' हणतां सहायज एहने, तूं वरीयो वनवासीहो ॥श्रीरामे१५॥
लक्ष्मण' भाखे' खर मतभूके, नन्दन त्रिशिरा भाई हो ।
उणही पन्थेतूंही चलावूं तोरे सुमित्रा माईहो ॥ श्री रामे १६ ॥
मार्यो के मार्या में मूरख, जीभतजी गुमटाईहो ।
करी प्रगट मोटा पक्षपाती, लांजे नाम बुलाई हो ॥ श्री १७ ॥
एम कहन्तां नट जिम नाचे, बाणे अम्बर छाई हो ।
बाण' क्षुरप्र१ खर शिरछेद्यूं अवर रमा मुग्ध चाईहो ॥श्री रामे१८॥
'दूखण' दल लेईने दोड्यो, तेपिण मारी लीधो हो ।

१ पासणाने आकारे बाण ।

स्वामी श्री नथमलजी म. कृत ढाल क्षेपक तर्ज नणदल री—

अबे री मने नहीं आवड़े, सीता केरे राग हो रघुपति ।
अवर वात गमे नहीं, एक सीता री लाग हो ॥रघु०॥ अबे. ॥१॥
सूना झुपा सहुदीसे, राम पावे दुःख रास हो । रघु० ।
सूनी सेज छे गवली, प्रीतवती नहीं पास हो ॥रघु०॥ अबे ॥२॥
आसन शयन विलोकतां, वेदनतो असमान हो रघुपति० ।
माजनीया१ माले नहीं, माले आई ठाण हो । रघु० ॥ अबे॥ ३ ॥

दोहा—इमगहन२ सोच करता फिरे, मारे वन मझार ।
मोह गहला थया रामजी, रुदन करे अनपार ॥ १ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज—जल्लो मेरी जोड़ को

सती मेरी 'जानकी' कुण लेगयो पापी रे ॥ टेर ॥
पतिव्रताथी पदमणी रे, रहती सदा इक रङ्ग ।
वन दुःख साथे सहे रे, कुण कीयो रङ्ग में भङ्ग ॥ सीता ॥ १ ॥
दुःख दीनो मोय पापीयो रे, लेगयो सीता नार ।
'लक्ष्मण' पिण हाजर नहीं रे, कुण करसी तसवार ॥सती॥ २ ॥
क्षिण इक मूर्छा पामतो रे, क्षिण इक होय सचेत ।
अटवी मांही टलवले रे, सीता केरे हेत ॥ सीता ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

लखमण साथे, खर खेचर सो, मांडे नाम लड़ाई हो ।
'त्रिशिरा' लघु भाई खर सरखी, आप करे अधिकाई हो ॥श्री॥७॥
रथ बेसी ने लखमण साथे, झुंजनणी विधि ठाई हो ।
'लखमन' वीर मारी नांख्यो पहली मह वधाई हो ॥ सीता ॥८॥

ढाल क्षेपक तर्ज—खटका ।

'लक्ष्मन' वीर अति वीर शूरपणे, लड़त चपोट अति चोट वाहे ।

अ०- १ भेल गयां माले नहीं, माले आई ठाण ।
पेट गये माले नहीं, माले पड़ीयां पिजाण ॥
२ [illegible] विख्यात जगत में, [illegible] नहीं सोच कीयो ।
[illegible] हुवो [illegible] सटके, रघुपति रोय दीयो ॥

आपण कीधो आपसमार्यो, अवरांसु जश नवि दीधो हो॥श्री १९
लेई साथे विराध विदीतो, उमग्यो उमग्यो आवेहो।
एटले रामू नेत्र फरकियू. ताम असाता पावेहो॥ श्री रामे २०॥
अलगीथी दीठो अलवेसर१, अटवी मांही भमतो हो।
नारी वियोगे योगीज हुओ, आरतो मांही रमतो हो॥श्री २१॥
लई वित्ववाद विशेष विचारे, ए तो मेंधुर जाणी हो।
'अटवीमां एकाकी विशेषे, राम गवेषे२ राणीहो॥ श्री २२॥
लक्ष्मण आगे आवी ऊभो, राम' नसांमो३ देखे हो।
निरह माल सरीखो साले, नभमू वात विशेषे हो॥ श्री रामे २३॥
पान पान करी वनमेंसोध्यो, नारी नयणे न आवीं हो।
वन देवी तुमछोवन वामिनी, थांछो कयूंन वतावी हो॥ श्री २४॥
तुम४ भरोसे नारी मूकी. मेंतो काम सीधायो हो।
कामन कीधो नारमाई, जग अपजश बोलायो हो॥ श्री २५॥
माई भरोसे थारे मूक्यो. त्रिया रखवाली कामो हो।
आयोथो सो एकन हुई, ओछो दीठो रामो हो॥ श्री रामे २६॥
राजभार देवा नवि दीधो, धन्य? कैकयो मात हो।
नारीन राखी शक्यो नरनिश्चे. तोकिम राज्य रखात हो॥ श्री २७
एम कहेतो राम नरेश्वर, धरणी पड्यो मूर्छाई हो।
राम दुःखे पशु पंखी दुःखिया, ऊभां आगे आई हो॥ श्री ।२८।
'लक्ष्मणजी' करी ! शीतलताई बोले आवी आगेहो।
आरे! करी छु कार्य कि मूंए, मई नमूढ लागेहो॥ श्री २९॥
भाई तुम्हारो [illegible] आयो, मगनो कन्द निकन्दी हो।
वचन सुधारसथूं सींचाणो, लहे संज्ञा आनन्दी हो॥ श्री ३०॥
देखे लक्ष्मण ऊभोआगे, ऊठी मिलियो धाई हो।
आणी दोई मिल्या त्रियान रखाणी. हरखाणी उमाई हो॥ श्री ३१॥
हरख सुमीत्रीं हम मारे, प्रभु ए आरती म आणो हो।

१—सुत—२ ढोले—३ अवलोके—४ वनदेवियों के भरोसे—

नादभेद करी ने किणईके, सीता लीधी जाणोहो ॥ श्री ३२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज मतकरजो कई प्रीत—

लिछमन मोही कहोरी, कौनहरी है सीत ॥ टेर ॥
लेगयो नार कवहून रहूंगो अवमें हूंगो अतीत ॥ ली ॥ १ ॥
तुमसा वीर प्रवल वलवन्ता, लही खेचरसूंजीत ॥ ली ॥ २ ॥
अब दो वंधव होके सामिल, दुष्ठको करो फजीत ॥ लि ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज कपिरे ग्रीया साथे—

लक्ष्मण भाई' सीता को कौन हरी ॥ टेर ॥
इस मंडीया पर कागऊडत है, देखो आसूनी परी ॥ लक्ष्मण १ ॥
के कोई विद्या धर लेगयो, के कोई सिंह चरी ॥ ल ॥ २ ॥
झाड़ झाड सब वनकूढूंढे, तोही न खबरपरी ॥ ल ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

तेहना प्राण संघाते सीता, वेगे पाछी आणूं हो ।
तो तो लक्ष्मण नाम हमारूं, नहींतो झूठ थपाणूं हो ॥ श्री ३३ ॥
वीर विराध खरोओमिलियो, आपो बोल उदारू हो ।
लंक पयाले प्रभू थिरथायो, वचन पले जिम चारू हो ॥ श्री ३४ ॥
सीता खबर करेवा कारण, भट मोकलिया भारी हो ।
वीर' वीराध घणोजल फलीयो, अवसर सेवाप्यारीहो ॥ श्री ३५ ॥
सुभट सहु पृथिवी फिरआया, सीता खबर न पामी हो ।
अधोमुखा ऊभा प्रभु आगे, बतलावे तब स्वामी हो ॥ श्री ३६ ॥

(शिखरिणी)

सियाजी रागहणा, निरखहरि नेणां जलभरे ।
प्रियाजी राप्यारा, सहज गुण भाग हियधरे ।
हरे चिन्ता सारी, तदपि दुःखभारी मनकरे ।
विजोगीहै जोगी भगती रसभोगी सबपरे ॥ १ ॥

(चौपाई)

राम-लक्षमण! देख सियाग गेणां । ओलखलाल? निरख निजनेणां ।
लक्ष्मण- मैं नेणां जगदम्बन जोई । तन-भूषण जाणू नहीं कोई ।

आपण की धो आपममार्यो, अवरांसु जश नवि दीधो हो ॥ श्री १९

लेई माथे विगध विदीतो, उमग्यो उमग्यो आवेहो ।
एटले वामू नेत्र फरकियू. ताम असाता पावेहो ॥ श्री रामे २० ॥

अलगोथी दीठो अलवेसर१, अटवी मांही भमतो हो ।
नारी वियोगे योगीज हुओ, आरतो मांही रमतो हो ॥ श्री २१ ॥

लई विलवाद विशेष विचारे, ए तो मेंधुर जाणी हो ।
'अटवीमां एकाकी विशेषे, राम गवेषे२ राणीहो ॥ श्री २२ ॥

लक्ष्मण आगे आवी ऊभो, राम' नसांमो३ देखे हो ।
विरह साल मरीग्यो साले, नभमूं वात विशेषे हो ॥ श्री रामे २३ ॥

पान पान करी वनमेंसोधो, नारी नयणे न आवीं हो ।
वन देवी तुमछोवन वामिनी, द्योछो कथूंन वतावी हो ॥ श्री २४ ॥

तुम४ भरोसे नारी मूकी. मैंतो काम मीधायो हो ।
कामन की धो नारगमाई, जग अपजश बोलायो हो ॥ श्री २५ ॥

भाई भरोसे थारे मूक्यो. त्रिया रखवाली कामो हो ।
आयोपो मो एकन हुई, ओछो दीठो गमो हो ॥ श्री गमे २६ ॥

गजभार देवा नवि दीधो, धन्य? कैकेयी मात हो ।
नागिन गर्गी शकयो नरनिश्व. नोकिम गज्य रखात हो ॥ श्री २७

एम कहेतो गम नरेश्वर, धरणी पड्यो मूर्च्छाई हो ।
गम दुःखे पशु पंखी दुःखिया, ऊभां आगे आई हो ॥ श्री ।२८।

'लक्ष्मणजी' कही ! शांत कराई बोले आवी आगेहो ।
भाई ! कहो छु कार्य कि मूंए, मई नेभूई लागेहो ॥ श्री २९ ॥

भाई तुम्हारो [illegible] आवो, नगनो कन्द निकन्दी हो ।
वचन सुधारसथुं सांचायो. लहै संज्ञा आनन्दी हो ॥ श्री ३० ॥

देखे' लक्ष्मण ऊभोआगे. उठी मिलिया धाई हो ।
अन्दः दोई मिली विचान करायो, हरखाणी उमाई हो ॥ श्री ३१ ॥

वृतान्तु मांभोयो हम माथे. प्रभु ए आरती म आणो हो ।

१—गुरु—२ शोधे—३ [illegible]—४ वनदेवीके भरोसे—

नादभेद करी ने किणईके, सीता लीधी जाणोहो ॥ श्री ३२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज मतकरजो कई प्रीत—

लिछमन मोही कहोरी, कौनहरी है सीत ॥ टेर ॥
लेगयो नार कवहून रहूंगो अवमे हूंगो अतीत ॥ ली ॥ १ ॥
तुमसा वीर प्रवल वलवन्ता, लही खेचरसूंजीत ॥ ली ॥ २ ॥
अब दो वंधव होके सामिल, दुष्टको करो फजीत ॥ लि ॥ ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज कपिरे प्रीया साथे—

लक्ष्मण भाई' सीता को कौन हरी ॥ टेर ॥
इस मंडीया पर कागऊडत है, देखो आसूनी परी ॥ लक्ष्मण १ ॥
के कोई विद्या धर लेगयो, के कोई सिंह चरी ॥ ल ॥ २ ॥
झाड झाड सब वनकूढूंढे, तोही न खवरपरी ॥ ल ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

तेहना प्राण संघाते सीता, वेगे पाछी आणूं हो।
तो तो लक्ष्मण नाम हमारूं, नहींतो झूठ थपाणूं हो॥ श्री ३३ ॥
वीर विराध खरोओमिलियो, आपो बोल उदारू हो।
लंक पयाले प्रभू थिरथायो, वचन पले जिम वारू हो ॥ श्री ३४॥
सीता खवर करेवा कारण, भट मोकलिया भारी हो।
वीर' वीराध घणोजल फलीयो, अवसर सेवाप्यारीहो ॥ श्री ३५ ॥
सुभट सहु पृथिवी फिरआया, सीता खवर न पामी हो।
अधोमुखा ऊभा प्रभु आगे, बतलावे तव स्वामी हो ॥ श्री ३६ ॥

(शिखरिणी)

सियाजी रामहणा, निरखहरि नेणां जलभरे।
प्रियाजी राप्यारा, सहज गुण नाग हियधरे।
हरे चिन्ता सारी, तदपि दुःखभारी मनकरे।
विजोगीहै जोगी भगती स्वभोगी नवपरे ॥ १ ॥

(चौपाई)

राम-लक्ष्मण! देख सियाग गेणां। ओलखलाल? निरख निजनैणां।
लक्ष्मण- मैं नेणां जगदम्बन जोई। तन-भूषण जाणूं नहीं कोई।

ए नूपर माता राजाणूं । नित पग वन्दनसूं यहीचाणूं ।
टोरन कोई सेवक जननो, उद्यमनो अधिकारी हो ।

ढाल मूलगी

प्रभु कुदिशाए कारज न सरे, सुदिशा कार्य समारी हो ॥श्री॥३७॥
वीर 'विराध' 'प्रभो' पग लागी, अरज करे अनुरागी हो ।
धापी पयालां दोडूं दश दिशे, कारज केड़े लागी हो॥ श्री ॥३८॥
वीर विराध सबल बल साथे, रामसूं लक्ष्मण दोई हो ।
लंक पयाले चाली आया, खबर लहै सहु कोई हो ॥ श्री ॥३९॥
'खर' नो नन्दन 'शम्बूक' भाई, 'सुन्द' नरेश्वर आप हो ।
मामो आवी खेत जडावे, हाथग्रही शर चाप हो ॥श्री रामे॥४०॥
वीर विराध विशेषे लड़वे, वारु वैरज वाले हो ।
कांहय हाथी कांहय पायक, लोक वचन सम्भाले हो ॥श्री॥४१॥
'राम' सु लक्ष्मण देखी रण--मुखे, शूर्पनखा सुत लेई हो ।
'रावण' पासे पधार्या पापण, घरनो चोड करेई हो ॥श्री॥ ४२ ॥
वीर विराध' तीहांस्थिर थाप्यो, आरती सघली टाले हो ।
महोटानी१ मति महोटी होवे, महोटा बोल्यु पाले हो ॥ श्री॥४३॥
राम सुलक्ष्मण खर ने महीले, वसिया आप विराजे हो ।
सुर राज पदवी विराधज, सुन्द सरे सुखमाजे हो ॥ श्री ४४ ॥
ढाल भली ए तीसुगमी, वीर विराध वधायो है ।
केशराज ऋषिराज कहै, राज्य गयो वेहोडायो है ॥ श्री ॥ ४५ ॥

दोहा (नहरागे)

स्वाराणी वियामहा, हेमवंत गिरिजाय ।

नोट ॥ वीर विराध के सुभट सीता की खोज मे गयेसो- रास्तेमें मिलेहुवे रत्न लेकर वापिस राम- लक्ष्मण को दिखलाये ॥
यथा कुण्डले नैवजानामि- नैवजानामि कङ्कण नूपुरमेव जानामि नित्यं पदा भिवन्दनात् ॥ १ ॥
१ महोटां केरी गुन नजर, सोवो मिले लटाक ।
ज्यों घन उनम्यां वान, सुन, सूंगो होय मटाक ॥

साहसगति, साधीसही, तवही आयो धाय ॥ १ ॥
तारा नो अभिलासियो, आतुर थयो अपार ।
रूपधरे सुग्रीवनो नकरे कांई विचार ॥ २ ॥
पुरी किष्किन्धा आवीयो, करि सरिखो सुविलास ।
गति मति वाणि विचारवे, बीजो रवि अकाश ॥ ३ ॥
वनक्रीडा करवाभणी, गयो नाम 'सुग्रीव'।
एघरमें चलि आवियो, अवसर लही अतीव ॥ ४ ॥
तामधणी घर आवियो, रोकाणो दरबार ।
घरमें छे सुग्रीवजी, वातपड़ी सुविचार ॥ ५ ॥
दो 'सुग्रीव' विचारने, वाली तणोते पूत ।
काकीघर ताला जड़े, राखे वा घरसूत ॥ ६ ॥
चन्द्ररस्मि रलियामणो, युवराजा जयवन्त ।
वाली वीरनो जाईयो, बल प्रबल नहींअन्त ॥ ७ ॥
आवीने आडोरह्यो, कोईन आगेजाय ।
कूटी बाहर काढिया, वलियाथी इमथाय ॥ ८ ॥

ढाल चौतीशवीं तर्ज मुरली

'तारा' प्रत्यक्ष मोहनी, तारा अधिक रसाल ।
'तारा' सुग्रीव सोहनी, हो, तारा अति सुविशाल तारा ॥
तारा रूप अनूपम तारा, तारा ए मोह्यो भूप तारा ।
तारा मोहन वेली तारा, तारा कोमल केली ॥ टेर ॥ १ ॥
चौदह अक्षोहणी नो धणी, राजा श्री सुग्रीव ।
पार नहीं प्रभु तातणोहो, माहिब आपनदीव ॥ तारा ॥ २ ॥
एके डांगे मारीया, साचा झूठा दोई ।
ज्ञान विना निश्चय नहीं हो, लोकों थी शूं होई ॥ तारा ॥ ३ ॥
साचो मिलसे साचने, झूठो झूठे जोई ।
झूंठ तणी झड़ ऊतलेहो, जोमुनतारे कोई ॥ तारा ॥ ४ ॥
हंस अने बक ऊजला, लोकां एक प्रसंग ।

नीर नीर ने पारखे हो, बग बग हंस ही हंस ॥ तारा ॥ ५ ॥
काच अने मणि सारसी, लोकां एक ही वाच ।
पण पारखियां आगलेहो, मणि मणि काच ही काच ॥ तारा॥६॥
काग अने तो कोकिला, वरणे एक सुहाग ।
मास वसन्त विराजियां हो, पिक २ काग ही काग ॥ तारा ॥७॥
मंत्री ने पंचों मिली, निवेड्यो एहवो न्याय ।
सात सात अक्षौहणी हो, दोई पक्षे थाय ॥ तारा ॥ ८ ॥
दोई लडो ए आप में, साचे देव सहाय ।
झूठो नासी जाय सहीहो, सहु ने आवी दाय ॥ तारा ॥ ९ ॥
सेन युद्धार्थी मोकलो, ऊभा दोई आय ।
लोक लड्या आप आपणा हो, झगड़ो तो न मिटाय ॥ तारा ॥१०॥
लोक न चाहे नारी ने, चाहे ए दो भाई ।
कोई मरो को जीवजो हो, लोकां लागे कांई ॥ तारा ॥ ११ ॥
तब दोई सुग्रीवजी, लड़िया शस्त्र उपाड़ी ।
भ्रांति न गयी भेद में हो, तोहि न मेटी राड़ी ॥ तारा ॥ १२॥
दोई तो समतोलजी दोई विद्यावन्त ।
दोई तो खेचर खग हो, दोई तो मयमन्त ॥ तारा ॥१३॥
हाथी सुं हाथी अड़े, सिंह साथे सिंह ।
सारे साप मिटे नहीं हो, शूरे शूर अबीह ॥ तारा ॥ १४ ॥
[illegible] ने सम्भारियो, हनुमन्त आयो चाली ।
[illegible] सुग्रीव कहियो हो, न शके झगड़ो टाली ॥तारा॥१५॥
सुग्रीव चिन्तवे चिन्तवे, मानो एतो सोच ।
कहने तजे कहने भजे हो, लोको ए आलोच१ ॥तारा॥१६॥
बाली हूतो बलवन्तजी, जग जश साचो जोर ।
सो तो हूओ संजमी हो, भव ए गहियो मोर ॥ तारा ॥ १७ ॥
'चन्द्रगर्भा' बलियो वली, मरदों में मरदान ।

१ पश्चात्ताप ।

खबर न लाभे एटली हो, कोण निज कोण छे आन? ॥ १८ ॥
'दशकंधर' छे दीपतो, लम्पट मांहो गणाय ।
वातसुण्यों हणी दोयने हो, तारा लिये बुलाय ॥ तारा ॥ १९ ॥
एतादृश[२] संकट पड़े, कामस मारण हार ।
'खर' थो सो रामे हण्यो हो, करतो पर उपकार ॥ तारा ॥ २० ॥
शरण ग्रहूं श्रीरामनो, लक्ष्मण सूं अभिराम ।
जेम 'विराध' निवाजिया हो, मारसे हम काम ॥ तारा ॥ २१ ॥
लंक पयालां छे सही, आज लगे ओ ईश ।
बोलाव्यो जावे सही हो, कारज विश्वा बीश ॥ तारा ॥ २२ ॥
दूतज छानों मोकल्यो, वीर विराध ही पास ।
वात जणावी विस्तरी हो, पायो सो उल्हास ॥ तारा ॥ २३ ॥
वेगा आवो वेगलूं आवो करो अरदास ।
काम तुम्हारो मारसे हो, देसे अरिने त्रास ॥ तारा ॥ २४ ॥
सन्तोषा णो स्वामीजी, निसुणो वचन अमोल ।
चलते छांटो अमितणो हो, आरति मांहो सुबोल ॥ तारा ॥ २५ ॥
साहण वाहण सामटे, चाली गयो सुग्रीव ।
आगे धरी विराधने हो, आरती वन्त अतीव ॥ तारा ॥ २६ ॥
चरण कमल प्रभुना नमी, भाखी मननी वात ।
पर दुःख कापण ने सहीहो, विरुद्ध अछे विख्यात ॥ तारा ॥ २७ ॥
हम तुमने छे सारिखा अबला दुःख अपार ।
हमारो तुम भांजसोहो, थांरो श्रीकरतार ॥ तारा ॥ २८ ॥
एह सुणन्तां वातजी, गहवरियोराजान ।
पर दुःख थी दुःख आपणे हो, साले साल समान ॥ तारा ॥२९॥
दुःख हैया में सांचरी, सुग्रीव ही सन्तोष ।
दीधो देव दया करी हो, कीधो सुख नो पोष ॥ तारा ॥ ३० ॥
वीर विराध कहे सही, आपांने ए काज ।

---

१ दूसरा । २ जैसा यहा तैसा ।

करवो छे ऊतावलो हो, न कियां पावो लाज ॥ तारा ॥ ३१ ॥
कपि पति भाखे कामजी, आपां करवूं एह ।
गुमनो होई सोधसूं हो, जई धरती ने छेह ॥ तारा ॥ ३२ ॥
द्वीप अने परद्वीप नी, सुधो अणावूं आप ।
तो तो साचो जाणजो हो, 'सूरजा' छे बाप ॥ तारा ॥ ३३ ॥
प्रभुजी चाली आविया, पुरी किष्किंधा देख ।
जाणे अलका१ अभिनवी हो, पायो सुख विशेष ॥ तारा ॥ ३४ ॥
बीजोर२ बोलावी लियो, ऊभो आवी खेत३ ।
दोई लड्या नवि जाणिया हो, साच झूठ ही हेत ॥ तारा ॥ ३५ ॥
'वज्रावर्त' सामर्थी, धनुष चढाव्यो देव ।
वियागई टंकार थी हो, प्रगट थयो ततखेव ॥ तारा ॥ ३६ ॥
लम्पट परनारी तणो, धीठा मांहीं धीठ ।
जग सघलो अवलोकतां हो, तुम सम अवर न दीठ ॥तारा॥३७॥
एक बाणसूं मारियो, 'साहस गति' सयतान४ ।
एक चपेटे सिंहने हो, हरिण लहे अवसान५ ॥ तारा ॥ ३८ ॥
बीर विराध तणी परे, थिर थाप्यो कपिनाथ ।
साचो करी सहु देखतां हो, आणो मेल्यो साथ ॥ तारा ॥ ३९ ॥
त्रयोदश६ कन्या भली, राम प्रत्ये आपन्त ।
प्रीति रीति काठी करी हो, कपिपति तो थापन्त॥ तारा ॥ ४० ॥
राम कहे कपिराजिया, तू साचा सम्भार७ ।
परंपराली पाळजो हो, पहीली सीता सार ॥ तारा ॥ ४१ ॥
ढाल भली चौतीसमीं, कपिपति काम समारी ।
केशराज ऋषिराजा कहे हो, अब सोधीजे नारी ॥ तारा ॥ ४२ ॥

दोहा (गुजरी रागे)

'रवणनें' घर रावणो, आज पड्या अवधारी ।
'राम' नी सुणी मृगावती, आणी मिली बहु नारी ॥ १ ॥

---

१ कुबेर भण्डारी नी नगरी (अलकापुर) २ बनावटी सुग्रीव । ३ रणभूमि
४ शैतान (राक्षस के तुल्य) ५ मृत्यु । ६ तेरह । ७ यादगार ।

दिवसवे चारने आंतरे, शूर्पणखाने 'सुन्द' ।
लंका नगरी आविया, वरसे आंसू बुन्द ॥ २ ॥
'शूर्पनखा' सुहामणी, करती अधिक विलाप ।
'रावण' ने गले लागीने, दीन वदे अति आप ॥ ३ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज आईरे पनोती जरासिधने ।

आंई रेपनोती रावण रायनेरे, पापिणी पाप रो मूलरे ।
सासरीया सघला तणोरे, कर आई उन्मूलरे ॥ आई ॥ १ ॥
रावण नाश करायवारे, आई लंकमझाररे ।
चलती जिहांजावे गाडरीरे, तिहां २ चालण हाररे ॥ आई ॥ २ ॥
आंसुडा लूया निज हाथसूंरे, चांपी चांपी हिरदामझाररे ।
आस्वासन देवेघणोरे, पूछे सकल समाचाररे ॥ आई ॥ ३ ॥

दोहा– कन्त हण्यो कुंवर हण्यो, हणिया देवर दोय ।
खेचर चउद हजारनो, हन्ता एकसूं जोय ॥ ४ ॥
लंक पयाले आवीयारे, हणिया अवर अगाध ।
रांक जेम हम काढीया, वसियो वीर विराध ॥ ५ ॥
बंधव तुम बैठांथकां, वरते ए अन्याय ।
घरती दिन दो चारमें, जातीही देखाय ॥ ६ ॥
एक सुवर्णे सामलो, बीजो पीलेवान ।
वनवासी छेभीलडा, पण नहीं केहने मान ॥ ७ ॥
वसवा भाणेजा भणी, देश अनेरो हेर ।
सगो सगे आवे नहीं, कोई दिनों के फेर ॥ ८ ॥
ए सघली श्रवणेसुणी, बोले वीर विवेक ।
घटिना फेराघणा, घटनो तो एक ॥ ९ ॥
पखाली कीडीनणो मुआमें दिनज्ञान ।
मारी करसूं पाधरा, अवर चलावो वात ॥ १० ॥
वात नहीं वतकानकी, नहीं राग नहीं रंग ।
राज काज भावे नहीं, होई रह्यो विरंग ॥ ११ ॥

करवो छे उतावलो हो, न कियां पावों लाज ॥ तारा ॥ ३१ ॥
कपि पति भाखे रामजी, आपां करवृ एह ।
सुमनो होई मोभसुं हो, जई धरती ने छेह ॥ तारा ॥ ३२ ॥
द्वीप अने परद्वीप नी, सुधी अणावुं आप ।
तो तो साचो जाणजो हो, 'सूरजा' छे बाप ॥ तारा ॥ ३३ ॥
प्रभुजी चाली आविया, पुरी किष्किंधा देख ।
जाणे अलका[१] अभिनवी हो, पायो सुख विशेष ॥ तारा ॥ ३४ ॥
बीजो[२] बोलावी लियो, ऊभो आवी खेत[३] ।
दोई लड़्या नवि जाणिया हो, साच झूठ ही हेत ॥ तारा ॥ ३५ ॥
'वज्रावर्तज' सामर्थी, धनुष चढाव्यो देव ।
विद्यागई टंकार थी हो, प्रगट थयो ततखेव ॥ तारा ॥ ३६ ॥
लम्पट परनारी तणो, धींठा मांही धीठ ।
जग सघलो अवलोकतां हो, तुम सम अवर न दीठ ॥तारा॥३७॥
एक बाणसु मारियो, 'साहस गति' सयतान[४] ।
एक चपेटे सिंहने हो, हरिण लहे अवसान[५] ॥ तारा ॥ ३८ ॥
वीर विराध तणी परे, थिर थाप्यो कपिनाथ ।
साचो करी सहु देखतां हो, आणी मेल्यो साथ ॥ तारा ॥ ३९ ॥
त्रयोदश[६] कन्या भली, राम प्रत्ये आपन्त ।
प्रीति रीति कारी करी हो, कपिपति तो थापन्त॥ तारा ॥ ४० ॥
राम कहे कपिराजिया, तू वाचा सम्भार[७] ।
सरसाली पाळजो हो, पहोली सीता वार ॥ तारा ॥ ४१ ॥
ढाल भली चौतीसमी, कपिपति काम समारी ।
केसराज ऋषिजी कहे हो, अब सोधीजे नारी ॥ तारा ॥ ४२ ॥

दोहा (गुजरी रागे)

'रतनजटि' घर रोवणो, आज पड्यो अवधारी ।
'खर' नी सुणी सुणावणी, आणी मिली बहु नारी ॥ १ ॥

१ कुबेर ... नी नगरी (... स्वर्ग) २ बनावटी सुग्रीव । ३ रणभूमि
४ शैतान (राक्षस के तुल्य) ५ मृत्यु । ६ तेरह । ७ यादगार ।

दिवसवे चारने आंतरे, शूर्पणखाने 'सुन्द' ।
लंका नगरी आविया, वरसे आंसू बुन्द ॥ २ ॥
'शूर्पनखा' सुहामणी, करती अधिक विलाप ।
'रावण' ने गले लागीने, दीन वदे अति आप ॥ ३ ॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज आईरे पनोती जरासिंधने ।

आई रेपनोती रावण रायनेरे, पापिणी पाप रो मूलरे ।
सासरीया सघला तणोरे, कर आई उन्मूलरे ॥ आई ॥ १ ॥
रावण नाश करायवारे, आई लंकमझाररे ।
बलती जिहांजावे गाडरीरे, तिहां २ बालण हाररे ॥ आई ॥ २ ॥
आंसुडा लूया निज हाथसूंरे, चांपी चांपी हिरदामझाररे ।
आस्वासन देवेघणोरे, पूछे सकल समाचाररे ॥ आई ॥ ३ ॥

दोहा– कन्त हण्यो कुंवर हण्यो, हणिया देवर दोय ।
खेचर चउद हजारनो, हन्ता एकसूं जोय ॥ ४ ॥
लंक पयाले आवीयारे, हणिया अवर अगाध ।
रांक जेम हम काढीया, वसियो वीर विराध ॥ ५ ॥
बंधव तुम बैठांथकां, वरते ए अन्याय ।
थाती दिन दो चारमें, जातीही देखाय ॥ ६ ॥
एक सुवर्णे सामलो, बीजो पीलेवान ।
वनवासी छेभीलड़ा, पण नहीं केहने मान ॥ ७ ॥
वसवा भाणेजा भणी, देश अनेरो हेर ।
सगो सगे आवे नहीं, कोई दिनों के फेर ॥ ८ ॥
ए सघली श्रवणेसुणी, बोले वीर विवेक ।
घटिना फेराघणा, घटनो तो एक ॥ ९ ॥
पखाली कीड़ीतणो मुआमें दिनजात ।
मारी करमूं पाम्परा, अवर चमाचो वात ॥ १० ॥
वात नहीं बतकानहीं, नहीं राग नहीं रंग ।
राज काज भावे नहीं, होई रह्यो विरंग ॥ ११ ॥

नींद नहीं लीलानहीं, फूल नहीं तम्बोल ।
भोजन पाणी पण नहीं, सुण्या न भावे बोल ॥ १२ ॥
हांसी नही गमननहीं, नहीं भोग नहीं योग ।
माणस मुआ सारीसो, होई रह्यो तस सोग ॥ १३ ॥
म्हानो हुवो खाटले, पड्यो रहै नरनाथ ।
गुंग मुंग बोले नही, आरती करे सहु साथ ॥ १४ ॥

ढाल चोपक मूलगी–

'मंदोदरी' चिन्ते तिनवारे, नाह दिलबात नहीधारे, पूछ्यां विन नहीं सरेम्हारे आई नव रावण' पे चाली, विनय कर पूछेहै आली सत्य व्रत पाली ॥ ६० ॥

ढाल पैंतीसवीं– तर्ज मेरे मन एसी आणबनी–

थारा चित्तमे कांई बसी मंदोदरी,
मांदो पति देखी पूछेबात इसी ॥ टेर ॥
परभाते अंधारे आये, घटतो जाय शशी ।
तेज हैज प्रताप प्रक्षीणो, शोभा लाज खसी ॥ थारा ॥ १ ॥

भुवनचंदजी कृत, ढाल चोपक तर्ज महीलांमे बैठी हो राणी कमलावती–

राणीं' मन्दोदरी वाणी इमकहै, सांभलजो नरनाथ ।
शांत रुण्डरीहो थारे मायची, नहीं कोई दीसे उत्पात ॥
सांभल्ज्यो महाराजा आज कांई लागीहो चिन्ता आपने ॥ टेर ॥ १॥
सहस अठारेहो थांरे सुन्दरी, तेमांहे हूं पटनार ।
अरजी करूं साहिब आपसूं, भाखोनी बात विचार ॥ सांभल ॥ २॥
रंग रागनी दीसेनहीं, और नहीं दीसे विनोद ।
आसन दूषण दीसे अतिघणा, केकोई दीयोरे प्रबोध सांभल ॥३॥
के कोई कामन कीधा आकरा, के कोई देवे कीधो दोस ।
के कोई बैरी आयो सामुहो, के कोई निजघर रो सोच सांभल ॥४॥

ढाल मूलगी–

सुंन अछे तुम मुज वल्लभी, भाखो जिसी तिसी ।
कर्णोसन्न उदास थईने, मनरू जाय धसी ॥ थारा ॥ २ ॥

रावण भाखे सुण मंन्दोदरी, चित्तमें आण चुभी।
सीता सूरति भालभलीए हैया मांही खुभी ॥ थारा ३ ॥

सवैया–३१ सा–रावण उवाच

भ्रकुटी तो भलीकबांन नेण तो समारेबांण,
त्रिया तीनलोकमें घडी न घडानी है ॥
दाडिम के दर्स जैसे रसनासे जपतराम,
अधरनकी ललीसो प्रबलीतो पुरानी है ॥
कण्ठनो अतिही क्षीण वासकसी बनीबीन,
मस्तकमें मोतिन की मांगही भरानी है ।
रावण' कहै मंन्दोदरी' वातमें अनोखी करी,
रघुनाथजी की रानीसो जानकी हर आनी है ॥ १ ॥

(मन्दोदरी)

अरे ! कन्त कुबुद्धि कौन पे सिखायो तो कूं,
एसी कुमति करी तूं करन' कुलहान की ।
रघुपति ईश जगदीश वोच जान्यो नहीं,
ताते वैर करी तूं तो बिगाडी है लङ्कान की ॥
जनकजी की जाया सोतो जोगमाया रूप,
सतीको हरलायो निपट करी हे नादान की ।
रावणकी रानी सेणी मण्दोदरी मुख बोले बानी,
पिया जानकी न आनीए निसानी घर जानकी ॥

ढाल मूलगी

धृ मूं छूं दिन रात घणेरो, न सकूं समझ करी ।
जो तूं मुझने चाहे देवी, मेलो प्रीति खरी ॥ थारा ॥ ४ ॥

ढाल दीपक मूलगी

एड़ीसे सीम चडो चोटी करूं किम बात आ खोटी, महारानी थाऊं में म्होटी । पतिव्रत पण को नीभावो, रावण कहे सीता पे आवो ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ७० ॥

नींद नहीं लीलानहीं, फूल नहीं तम्बोल ।
भोजन पाणी पण नहीं, सुण्या न भावे बोल ॥ १२ ॥
हांसी नही रामतनहीं, नहीं भोग नहीं योग ।
माणस मुआ सारीसो, होई रह्यो तस सोग ॥ १३ ॥
रातो हुयो खाटले, पड्यो रहै नरनाथ ।
गुंग मुंग बोले नही, आरती करे मद्दु साथ ॥ १४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

'मंदोदरी'चिन्ते निरधारं, नाह दिलबात नहींधारे, पूछ्यां विन नहीं मरम्मारे आई तब रावण' पे चाली, विनय कर पूछेहै आली सत्य व्रत पाली ॥ ६० ॥

ढाल पैंतीसवीं— तर्ज मेरे मन एसी आणवनी—

थारा चितमें कांई वसी मदोदरी,
मांदा पति देखी पूछेवात इसी ॥ टेर ॥
परवाड़े अंधारे आये, घटतो जाय शशी ।
तेज हैन प्रताप प्रक्षोणो, शोभा लाज खसी ॥ थारा ॥ १ ॥
भूलचंदजी कृत, ढाल क्षेपक तर्ज महीलांमे बैठी हो राणी कमलावती'
राणीं' मन्दोदरी राणी इमकहै, सांभलजो नरनाथ ।
सात खण्डरीहो थारे सायवी, नहीं कोई दीसे उत्पात ॥
सांभल महाराजा आज कांई लागीहो चिन्ता आपने ॥ टेर ॥ १॥
सहस अठारेहो थारे सुन्दरी, तेमांहे हूं पटनार ।
अरजी करूंछूं साहिब आपसूं, साखोनी बात विचार॥सांभल ॥ २॥
रंग रागतो दीसेनहीं, और नहीं दीसे विनोद ।
आमण दूमण दीसो अतिघणा, केकोई दीयोरे प्रबोध सांभल ॥३॥
के कोई कामण कीधा आकरा, के कोई देवे कीधो दोस ।
के कोई वैरी आगो सापुड्यो, के कोई निजघर रो सोच सांभल ॥४॥

ढाल मूलगी-

सुन अबे तुझ सुझ गल्लानी, भाखो जिसी तिसी ।
भर्त्तारवन्त उदास थईने, मतनू जाय वसी थारा ॥ २ ॥

अलगी जा आंखों आगे थी, मयली जेम मसी ॥ थारा ॥ १३ ॥
एटले 'रावण' चाली आयो, 'सीता' धमण धमी ।
शीतल वचनां सूं समझावे. आपे उपशमी ॥ थारा ॥ १४ ॥
मन्दोदरी राणी तुझ आगे किंकर मांहे गणी ।
हूं तुम दास सरीसो केतो, भाखुं अवर भणी ॥ थारा ॥ १५ ॥
नजर निहालो उत्तर वालो, टालो घात घणी ।
पालो दोब्यां हींस नवि पूगे, ओ असवार तणी ॥ थारा ॥ १६ ॥
होई अपूठी सीता बोले, सांभल लंक धणी ।
काल दृष्टि सुं हूं देखूं छूं, जाघर टाली अणी ॥ थारा ॥ १७ ॥
धिक् धिक् ए तुझ आशा माथे, थारो कोण वणी ।
जीवित 'राम' 'लक्ष्मण' हूं छू, अहि माथे रे मणी ॥ थारा ॥१८॥
वारम्बार वचन आक्रोशे. न त्यजे राय रली ।
हांक लीयोरे हरायो होवे, श्वान न जावे टली ॥ थारा ॥ १९ ॥
सीता की आरती तन अधि की. न शक्यो सूर्य खमी ।
आथमियो अलगो होवाने. व्यापी आण तमी ॥ थारा ॥ २० ॥
रावण ने ऊपजीये अधिको. कुमति तणी रे मती ।
उपसर्ग करावे अधिका, सीदावे रे सती ॥ थारा ॥ २१ ॥
फेहकार करतां अति फेरूं, घू घू घूक करे ।
घूक१ विचित्र परे कुदन्ता, नीमत नरे रे डरे ॥ थारा ॥ २२ ॥
पूछ्या स्फोट सुं व्याघ्र२ विशेषे. ओतू३ अन्योन्य लड़े ।
फूंफुता फणी४ करना परगट, मांहो मांही अडे ॥ थारा ॥ २३ ॥
भूत पिशाच वैताल विदीता. हट सुं हास्य हसे ।
डाकणी शाकणी महल्ली देवी. काली हाथ घसे ॥ थारा ॥ २४ ॥
उललंता दूर ललित अति. यम जेम कायधरे ।
'रावण' एह विकुर्वण करिने. आगे आणी मरे ॥ थारा ॥ २५ ॥
परमेष्ठी पंचे मन ध्याती, सीता खेत खरे ।

---

१ घूक (वृष) । २ वाघ (सिंह) । ३ बिलाडा । ४ सर्प ।

ढाल मूलगी

पियनी पीड़ाए पीड़ाणी, तबही ऊठी धसी ।
देव रमण उद्याने देवी, आवी एक ससी१ ॥ थारा ॥ ५ ॥
हूं मण्डोदरी छूं रे शुभोदरी, महोटे नाम चड़ी ।
'रावण' रानीं मांहीं बखानी, वनिता मांहे बड़ी ॥ थारा ॥ ६ ॥
भोली क्यूं भरमाणी छे तूं, रावण साथे रमी ।
मानस भवनो लाहो लीजे, हूं छूं दासी समी ॥ थारा ॥ ७ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज—बीड़ारी

सीताजी सूं मिलन मण्डोदरी राणी आई, सङ्ग सहेली लाई। रिम झिम करती आई बागमें, नवलख तारों की ज्योतिने छिपाई॥१॥
किणोरे घरजाई ऊपनी, किणां घर परणाई ।
के थारो प्रीतम तुझने छोडो, इहांपर नारी तूं कीयूं आई ॥ २ ॥
जनकजीरे घर जाई ऊपनी, दशरथ घर परणाई ।
कपट करी तुम पियुड़ो लायो, तुझने रण्डापो राणी देवन आई ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

सीता तूं धन्य तूं धन्य थारे, माथे अधिक रती ।
राजा रावण रे चित्त आई, मेली अवर छती ॥ थारा ॥ ८ ॥
भूचर राम तपस्वी तेनो, सेवक मात्र सही ।
श्री पति तजी ए पति जो पामे, कर्म वतीरे कही ॥ थारा ॥ ९ ॥
मन विचारीने मौन करी थी, सीता सही न रही ।
तूं तो सतियों मांही सयाणी, एतो हीन लही ॥ थारा ॥ १० ॥
किहां जम्बूक किहां सिंह सनूरो, गरुड किहां रे अही ।
किहां मुझ पति किहां तुझ पति लम्पट, लाजत नहींरे नहीं ॥ ११ ॥
नारी धन्य धन्य तुझ ठाकुर, सरखी जोड मिली ।
ते लम्पट थ्रू निर्लज रानी, दूती मांही भली ॥ थारा ॥ १२ ॥
एवो मुंहडो नांव देखावूं, तुझ सूं बात किसी ।

१ एक सखी ।

केलीहरा[1] कामी तणारे, देखावे सुविशाल ॥ विभीषण ॥ ७ ॥
मन्दिर विविध प्रकारनारे, सेज तणी वर शोभ।
भद्रे! भद्रपणूं भजोरे, आणी विषय सुख लोभ ॥ विभीषण ॥ ८ ॥
लम्पट ललचावे घणीरे, केलवणी ने कोड।
करी देखावे अति घणीरे, खेत खरे नवि खोड ॥ विभीषण ॥ ९ ॥
हंस तजी ने हंसलीरे, कदही न वंछे काग।
राम तजी सीनातणोरे, नहीं अवरां सू राग ॥ विभीषण ॥ १० ॥
नाम अपूठो आवीयोरे, वृक्ष अशो के हेठ।
मूकी रावण माननीरे, ए पण काढी वेठ ॥ विभीषण ॥ ११ ॥
विभीषण चित्त चिन्तवे रे, होई रह्यो मयमंत।
शीयल कोई मरदहे रे, आयो दीखे अन्त ॥ विभीषण ॥ १२ ॥
मंत्रीश्वर बोलाविया रे, विभीषण ते वार।
करे मिमलत सहु मिली रे उपज्यो ए अविचार ॥ विभीषण ॥१३॥
मोहतणो मद माचीयो रे, कोई न माने कार।
हुओ हरायो हाथियो रे, केम करीजे मार ॥ विभीषण ॥ १४ ॥
आयो दीसे आमनो रे, रावण काल विनाश।
कोई उपकर्म करी रे, कीजे लील विलास ॥ विभीषण ॥ १५ ॥
मति ऊपावे मनथकी रे ते माटे मंत्रीश।
जोरन चाले माहरो रे, कांन न मांडे ईश ॥ विभीषण ॥ १६ ॥
मिथ्या मतिनो माहिया रे जिन मतनो उपदेश।
माने नहीं प्रभु आपणूं रे, कीजे कांई कलेश ॥ विभीषण ॥ १७ ॥
'हनुमन्त' ने कपि राजिया रे, आदि मिल्या नृप आय।
धर्म पखे पखिया थया रे, मेल्यो रावण राय ॥ विभीषण ॥ १८ ॥
राम अने लक्ष्मण थकी रे, रावण नो संहार।
ज्ञानी वचन छे सही रे, चूक न पड़े लिगार ॥ विभिषण ॥ १९ ॥

---

१ केलीगृह—क्रीड़ा करने का घर।

धड़ मस्तक दो जूदा दीठा, माताजी अकुलाणी रे॥ सीता॥ ७॥
पग अनुसारे चाली आवी, राघव सूं रींझाणी रे।
लम्पटनी लालच नवि पूगी, तस घणूं खींझाणी रे॥ सीता॥८॥
'खर' 'दूपण' त्रिशिर लेई आवी, आग घीथी सिंचाणी रे।
सिंहनाद संकेत कियोंथी, लक्ष्मण सूं मण्डाणी रे॥ सीता॥ ९॥
लंका जई 'लंकपति' आण्यो, वात कही अतिताणी रे।
सिंह नादनो भेद लगावी एहूं ईहां आणीरे॥ सीता॥ १०॥
ए दश मस्तक कापेवाने, हूं तो काती कहाणी रे।
लंका नगरी बालेवाने, हूं बलबलती छाणी रे॥ सीता॥ ११॥
तेज प्रताप पराक्रम पीलग हूं घर मांडी घाणो रे।
पगे१ आवी छू रावण केरे, एकान्ते दुःख खाणीरे॥ सीता॥१२॥
श्रवणे सुणे पण रिस न आणे, रागीनी महिनाणी रे।
आगे२ सतेजी छे अति अधिको, जल आंगे उल्हाणीरे॥ सीता॥१३॥
एम सुणी लघु बन्धव जम्पे, भाई मति भरमाणी रे।
एको बलती गाडर घर में, घाले कौण अज्ञानी रे॥ सीता॥१४।
परनारी छे काली रे नागिणी, के विपवेली समानी रे।
जालव तांई जयतय जोवे, किहां ही नहीं ताणो रे॥ सीता॥१५॥
संपद तरुनी एह कुहाड़ी, आपद नी नीसाणी रे।
श्राप सतीनो छे दुःखदाई, मति दीये ए रीसाणी रे॥सीता॥१६॥
लाख कहूं के कोडी कहूं तुम, ए तो वस्तु वीराणी रे।
आज कल दिन चारां मांही, एतो वात दिखाणी रे॥ सीता॥१७॥
हूं म्हारो ओलम्भो टाल्हूं, राखो कीर्ति पुराणी रे।
लोक कहेशे काई न हुतो, 'रावण' आगे वाणी३ रे॥ सीता १८॥
'राम' सु 'लक्ष्मण' दोई पलोया, अनम्याने ही नमाणी रे।
सीता ने हूं देई आवूं, जेम रहे प्रीत धपाणी रे॥ सीता॥ १९॥
ढाल भली ए त्रीसमी, रावे एक न मानी रे।

---

१ पनोती। २ आगे-आगे ए तेज पहूं दे पर ते जल आगे-घटे खोलाच दे। ३ वाखीयो, वाणिक।

के जिन के पियू करती, 'रावण' सामो पग न भरे ॥ थारा ॥२६॥
रावण तो पचक्खाण न भांगे, 'सीता' सत्य न चले ।
पाकांने नहीं भूत पराभव, काचां ने रे छले ॥ थारा ॥ २७ ॥
ढाल भली ए पच्चवीशमी, धन्य जे टेक ग्रहै ।
'केशराज' ग्रहीतो साची, सीता ज्युं नीर वहै ॥ थारा ॥ २८ ॥

दोहा (मालवी गोड़ी रागे)

विभीषण निशिनीचरी, निसुणी लोकां मांहे ।
सीता पासे आवियो, करण दिलासा प्राहे ॥ १ ॥
महोदर समझावरा, वात सुणावे वीर ।
छे परनारी पराङ्मुख, साहसवन्त सधीर ॥ २ ॥
बाईजी तुम कौण छै, किहांथी आव्या चाली ।
कौण तुमे आण्या इहां, भाखो शङ्का टाली ॥ ३ ॥
घूंघट खेंची अधोमुखी, जाणी पुरुष प्रवीण ।
सत्यवती साची सती, वाणी वदे अदीन ॥ ४ ॥

ढाल छत्तीशवी तर्ज—एक दिवस रुकमण हरि साथे ॥

'सीता' नाम निशंक पणे रे, भाखे चारु वाणी रे ।
'विभीषण' कुलकेरो भूषण, निसुणे अमृत जाणी रे ॥ सीता ॥१॥
'जनक' पिता 'भामण्डल' भाई, राम-प्रिया हूं वखाणी रे ।
'दशरथ' ना कुल बहु वदिती, सतियों में अधिकारी रे ॥ २ ॥
राम नरेश्वर 'लक्ष्मण' देवर, शीलां नो हूं राणी रे ।
दण्डकारण्य मांहे आवी, धाम तणी स्थिती ठाणी रे ॥सीता ॥३॥
'सूर्यहास' असी तरु-डाले, देख्यो अधिको पाणी रे ।
'लक्ष्मण' जी लोल्या लीधो, ज्योंना वणी प्रगटाणी रे ॥ ४ ॥
करन परीक्षा वेग वाहो, वंशजाल कपाणो रे ।
शम्बूक नो तव शिर छेदाणो, मनमें अति पस्ताणो रे ॥सीता ५॥
खोजें देखी रावन मार्ने, ते न करी मति आणी रे ।
सिंह नाथन जिन उपगारे, मारों ने ए प्राणी रे ॥ सीता ॥ ६ ॥
रावे सुता शोकन मारी, आरीने चमकाणी रे ।



के जिन के पियू करती, 'रावण' सामो पग न भरे ॥ थारा ॥ २६ ॥
रावण तो पच्चक्खाण न भांगे, 'सीता' सत्य न चले ।
पाकां ने नहीं भूत पराभव, काचां ने रे छले ॥ थारा ॥ २७ ॥
ढाल भली ए पच्चीशमी, धन्य जे टेक ग्रहे ।
'केशराज' ग्रहीतो साची, सीता ज्यूं नीर वहे ॥ थारा ॥ २८ ॥

दोहा (मालवो गोड़ी रागे)

विभीषण निशिनीचरी, निसुणी लोकां मांहे ।
सीता पासे आवियो, करण दिलासा प्राहे ॥ १ ॥
महोदर समझावणा, बात सुणावे बीर ।
छे परनारी पराङ्मुख, साहसवन्त सधीर ॥ २ ॥
बाईजी तुम कौण छो, किहांथी आव्या चाली ।
कौण तुमे आण्या इहां, भाखो शङ्का टाली ॥ ३ ॥
घूंघट खेंची अधोमुखी, जाणी पुरुष प्रवीण ।
सत्यवती साची सती, वाणी वदे अदीन ॥ ४ ॥

ढाल छत्तीशवीं तर्ज—एक दिवस रुकमण हरि साथे ॥

'सीता' नाम निशंक पणे रे, भाखे चारु वाणी रे ।
'विभीषण' कुलके भूषण, निसुणे अमृत जाणी रे ॥ सीता ॥ १ ॥
'जनक' पिता 'भामण्डल' भाई, राम-प्रिया हूं वखाणी रे ।
'दशरथ' ना कुल बहू वदिती, सतियों मे अधिकानी रे ॥ २ ॥
राम नरेश्वर 'लक्ष्मण' देवर, श्रीजी नो हूं राणी रे ।
दण्डकारण्य माहे आवी, धाम तणी स्थिती ठाणी रे ॥ सीता ॥ ३ ॥
'सुन्दहास' असी नर-टाळे, देख्यो अधिको पाणी रे ।
'लक्ष्मण' जी लीलाए लीधो, ज्योती वणी प्रगटाणी रे ॥ ४ ॥
करन परीक्षा वेग वाही, वंशजाल कृपाणो रे ।
शम्बूकनो तब सिर छेदाणो, मनमें अति पस्ताणो रे ॥ सीता ॥ ५ ॥
सांढी देखी रावण साथे, ते न करी मति शाणी रे ।
विना मारग विन अपराधे, मार्यो ते ए प्राणी रे ॥ सीता ॥ ६ ॥
पाछे पुत्र लेवन पाणी, आवीने चमकाणी रे ।

'केशराज' ऋषि रावण केरी, वेला आवी जणाणी रे ॥ सीता ॥२०॥

दोहा (धन्या श्री रागे)

रावण होई रातडो, वदे विभीषण वीर ।
ग्रही वस्तु किम मेलिये, जब लग रहे शरीर ॥ १ ॥
'राम' मु 'लक्ष्मण' भोलड़ा, वन मांही है वास ।
माहण वाहण को नहीं, आप ही फरे उदास ॥ २ ॥
माहण वाहण माहरे, विद्यानो अति जोर ।
ए सूं करसे वापडा, कांई मचावे शोर ॥ ३ ॥
आज नहीं तो काल हीं, काल नहीं तो मास ।
मास नहीं तो वरस में, आपही करसे आश ॥ ४ ॥
एटले मांही आमना, ओ आवे से चाली ।
छलबल कोई केलवी, देस परहा टाली ॥ ५ ॥

ढाल सत्तीशमी तर्ज–जगत गुरु त्रशला नन्दन वीर

पहेली थी में सांभली रे, राम-त्रियाथी घात ।
होसे रावणनी मही रे, आण मिलीछे वात ॥
विभीषण वात विचारे एह, सत्य वचन ज्ञानी तणां रे,
कोई नहीं सन्देह ॥ विभीषण ॥ टेर ॥ १ ॥
मैंने कीधा था घणा रे, आछो ही उपक्रम ।
दशरथ जीवतो ऊगर्यो रे, थीरो छे जगधर्म ॥ विभीषण ॥ २ ॥
ज्ञानीनो बल छे घणो रे, न टले कोडि प्रकार ।
जाने जतनां थकां रे, पलटे लोकाचार ॥ विभीषण ॥ ३ ॥
भूचरी हीरे मुग नहीं रे, विभीषण नी वाच ।
देखो नो देसे नहीं रे, कामी एनो साच ॥ विभीषण ॥ ४ ॥
'पुष्पक' नाम विमानमें रे, 'सीता' लेई आप ।
क्रीडा करवा चालियो रे, टाल्या नटले पाप ॥ विभीषण ॥ ५ ॥
देखाड़े अतिरूपडा रे, रत्नमयी गिरि राज ।
नन्दन वनना थोरमां रे, देखाडे वन साज ॥ विभीषण ॥ ६ ॥
नदीनां तट करि सोहनां रे, हंसां केरा ख्याल ।

जैनो पहीलो मोचियोरे, तो कांई सुख थाय।
मन्दिर लागे वारथीरे, काळ्यां कांईयन जाय ॥ विभी० ॥ २० ॥
भयतो ऊपजसे महीरे, मांमो नहीं है लगार।
जेहनी आणी कामनीरे, ते तो आवण हार ॥ विभीषण ॥ २१ ॥
जे नृतगीयो प्राहुणोरे, तेतो जोवे वाट।
गोर्ड नार्णु आपनोंरे, कीया कांई उचाट ॥ विभीषण ॥ २२ ॥
लङ्का नगरी अति मजीरे, ढीलन कीधी रंच।
अन्न पाण लेई घणांरे, मेल्यो बहुलो संच ॥ विभीषण ॥ २३ ॥
कोट ओटना कांगूरारे, पोल अने प्राकार।
सबलाही समरावियारे, गोला यंत्र अपार ॥ विभीषण ॥ २४ ॥

मूलचन्दजी कृत ढाल चेपक तर्ज—भजो तुम सार मंत्र नवकार

करो कोई लाखें चतुराई, टले नहीं होनहार भाई ॥ टेर ॥
मंत्री कहे महाराजजी, फिर इक करो उपाय।
दुश्मण जोर कई नहीं लागे, लङ्का पतो न पाय ॥
आय के पाछा फिर जाई ॥ करो कोई ॥ १ ॥
यंत्र बड़ा आसाली का, लङ्कागढ के बार।
जो त्रिकुट निरमे करो, कबहुन होवे हार ॥
वैरी कोई आय सके नांई ॥ करो कोई ॥ २ ॥
यत्र कीयो गढ पे खड़ो, निर्भय रहण काज।
चक्र मूंल चौकी रखो, मजी आपणो साज ॥
स्वामी को काम करण नांई ॥ करो कोई ॥ ३ ॥
दुर्जय कोट असालि का, हरगिज टूटे नांय।
होनहार जो प्रगटई, भांजेला छिन मांय।
उसमें चले नहीं कांई ॥ करो ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी-

विद्यानी आसालीकारे, तेहनो सबल प्राकार।
देखतां पछा ऊपजेरे, कंचननों दम्पकार ॥ विभीषण ॥ २५ ॥

इणविध लंकाने सजी रे, ढीलीन कीधी लीगार ।
अथभवियण तुम्है सांभलो रे, राघवनो अधिकार ॥ विभीषण २६ ॥
(आगाडी के पद्य 'भूल्यो मन भंवरा' व 'कन्त तम्बाखूपरहरो' इस तर्ज मे भी गा सकते है)
राघव विरह विजोगीया रे आरति चन्त उदास ।
अन्न पान भावे नहीं रे, लम्बा लीये निस्सास ॥ राघव विरह ॥ २७ ॥
लक्ष्मण साथे बोलीयो रे, ढील पड़े छे एह ।
आशा दिन दश बीशनी रे, पछीत्यजसे देह ॥ विभीषण ॥ २८ ॥
दुःखियो अधिक ऊतावलो रे, सुखियो सुसतो होई ।
तृषियो जावे सरोवरे रे, सामो न आवे सोई ॥ विभीषण ॥ २९ ॥
ढीलो वानर राजियो रे, सुखमांही दिन जात ।
पर दुःखे दुःखियो नहीं रे, वात घडी नविधात ॥विभी॥ ३० ॥
एह सुणीने ऊठियो रे, हाथे ग्रही शर चाप ।
धम धमतो अति चालियो रे, होठ डसन्तो आप॥विभी॥ ३१ ॥
कम्पावे धरती घणी रे, कम्पावे गिरि शीश ।
वृक्ष ऊखेडी नांखतो रे, कोप्यो विद्याधीश ॥ विभीषण ॥ ३२ ॥
आयो चाली दरबारमें रे, खल भलियो सुग्रीव ।
धूजन्तो पग लागीयो रे, मारे सेव अतीव ॥ विभीषण ॥ ३३ ॥
ओलम्भोदिये अति आकरोरे, शुद्ध नहीं तुझ मांही ।
तूं घरमें सुख भोगवे रे, प्रभु तरु सेवे प्राही ॥ विभीषण ॥ ३४ ॥
वासर जावे वरससो रे, छगुणी रात्री गिणाय ।
तुझमें वीनक वीतियो रे, नोहीन समझे काय ॥विभीषण॥ ३५ ॥
गुंपड़ फूटां वैधने रे, सम्भारे नवि कोय ।
आरति तो अति आंधली रे, आप थकी तूं जोय ॥विभी॥ ३६ ॥
मेनत ताहरी ए भणी रे, खेचर दोई प्रकार ।
भूमि तणासो भौमीया रे, सघले तुम पेनार ॥ विभीषण ॥ ३७ ॥
वाचा पालो आपणी रे, काम करो ससिधाय ।
नहीं तो 'साहसगति' परे रे, दूंऊ परभव पहूंचाय ॥विभी॥३

मवल बली झुंझार सबन को पीर है ॥ रावण करडे बयण बहु मुग्वतें कह्यो, नहीं मानी तब बात हाथमें असि ग्रह्यो ॥ दोऊं लड्या तिणवार बहुत बल जोर मूं, बेतो अति बलवन्त प्राक्रम कोरसूं ।२।

ढाल मूलगी

हूं हूवो तब बाहरू१ रे, करतो अति आक्रोश ।
विद्या सघली अपहरीरे, 'रावण' कीधो रोप ॥ विभीषण॥५७॥
समाचार सुहामणारे. सीताजीना पामि ।
परम महासुख ऊपन्योरे, जाणे त्रिभुवन स्वामि ॥विभीषण॥५८॥
रत्नजटी विद्याधरूरे. कण्ठ लगाई लीध ।
तु म्हारे वालेसरूरे, खबर भली ते दीध ॥ विभीषण ॥ ५९ ॥
जिम जिम पूछे वातडीरे, तिम तिम ऊपजे राग ।
वारम्वार विशेषिएरे. रागीनूं ए भाग ॥ विभीषण ॥ ६० ॥
समाचार सगा तणारे. सांभलतां सन्तोष ।
मिलवामें ओछो नहींरे, प्रेमतणो अति पोप ॥ विभीषण ॥ ६१ ॥
दोहा—सब सन्नाटा छागया. सुन रावण का नाम ।
सीता पाछी आणवी, करडो दीसे काम ॥ १ ॥

(यह मूलगी तर्ज के अगाड़ी के पद " ईडर आवा आंबलीरे " इस तर्ज मे भी गाये जा सकते हैं)

... लङ्का कितनी दूर ॥ टेर ॥ (इस मुताबिक है)

पूछे प्रभु सुग्रीवनेरे, लंका कितनी दूर ।
आलमियां अलगी घणीरे, उद्यमवन्त हजूर ॥ विभीषण ॥ ६२ ॥
लंकानूं स्यूं पूछयोरे, पूछो रावण तेज ।
आज लगे अधिको अछेरे, सुरज तेज सहेज ॥ विभीषण ॥ ६३ ॥

ढाल चौपाई तर्ज गङ्को—

सुणो श्री 'राम' लंकागढ छे जिहां, वदे विद्याधरां एम वाणी ।
'रावण' रावणो तेज जग छाइयो, सुर नर असुर सब बात जाणी ॥ सु० ॥ १ ॥ विकट अति जेट अगूढ जलनिधि भर्यां, तिऊं

सबल बली झुंझार सबन को पीर है ॥ रावण करडे वचण बहु मुखते कह्यो, नहीं मानी तब बात हाथमें असि ग्रह्यो ॥ दोऊं लड्या तिणवार बहुत बल जोर सूं, वेतो अति बलवन्त प्राक्रम कोरखं ।२।

ढाल मूलगी

हूं हूवो तब चाहरू[1] रे, करतो अति आक्रोश ।
विद्या सबली अपहरीरे, ' रावण ' कीधो रोष ॥ विभीषण॥५७॥
समाचार सुहामणारे. सीताजीना पामि ।
परम महासुख ऊपन्योरे, जाणें त्रिभुवन स्वामि ॥विभीषण॥५८॥
रत्नजटी विद्याधररूरे. कण्ठ लगाई लीध ।
तू म्हारे वालेसररूरे, खबर भली ते दीध ॥ विभीषण ॥ ५९ ॥
जिम जिम पूछे वालडोरे, तिम तिम ऊपजे राग ।
वारम्वार विशेषिएरे. रामीनूं ए भाग ॥ विभीषण ॥ ६० ॥
समाचार सगा तणारे. सांभलतां सन्तोष ।
मिल्वामें थोडो नहींरे, प्रेमतणो अति पोष ॥ विभीषण ॥ ६१ ॥
दोहा—राम सन्नाटा छागया. सुन रावण का नाम ।
सीता पाछी आणवी, करड़ो दीसे काम ॥ १ ॥
(इसी ही मूलगी तर्ज के अगाड़ी के पद्य " ईडर आंबा आंबलीरे " इस तर्ज मे भी गाये जा सकते हैं)
राजेश्वर लङ्का कितनी दूर ॥ टेर ॥ (इस मुताबिक है)
पूछे प्रभु सुग्रीवनेरे, लंका कितनी दूर ।
आलिसरां अल्गी घणीरे, उद्यमवन्त हजूर ॥ विभीषण ॥ ६२ ॥
लंकानुं स्यूं पूछवोरे, पूछो रावण तेज ।
आज लगे अधिको अछेरे, सूरज तेज सहेज ॥ विभीषण ॥ ६३ ॥

ढाल दीपक तर्ज रखड़को—

सुणो श्री 'राम' लंकागढ छे जिहां, वद विद्याधरां एम वाणी । "रावण" रावको तेज जग छाइयो, सुर नर असुर सब बात जाणी ॥ सु० ॥ १ ॥ त्रिकूट अति कूट अमूट जलनिधि सयां, निकं

---

1 रुदन करने वाला

दिशां राक्षसां छाय लीधो। नाम लेतां थकां प्राण सांसे पड़े, जाणे यमराण आवास कीधो ॥ सु० ॥ २ ॥ जगत जाहर घणों तेज रावण तणो, देव दानव पिण शंक आणे। तेहना घर तणी वात दुर्लभ घणी. अधिक डरावणी सर्व जाणे ॥ सु० ॥ ३ ॥ विपम गढ नालि गोला विपम भूमिका. वलि विपम चऊं दिसे समुद्र खाई। अभङ्ग भट अतुलबली कटक अक्षौहणी, प्रथम थी कुणशके तेथी जाई ॥ सु० ॥ ४ ॥ वीशभुज धारणो शत्रु संहारणो, शीस दश शोभित अति ही रूडो। वडा वडा योध अति क्रोध-कारी जिहां, स्वामी आगे कहां नहीं एक कूड़ो ॥ सु० ॥ ५ ॥ नाम लंका तणो अधिक डरावणो, जावणो आवणो केम थावे। स्वामी सन्तोप करो केण मुझ उरधरो. जीव ए सुजश दो रहावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ मांयरे शीप इक दोय भुज देह में. सहश्रबाहू नृप आप हार्यो। इन्द्रने पकड दीयो कठ पिंजरे, वरुण कुवेर नो मान मार्यो ॥ सु० ॥ ७ ॥ लंक की शंक मनमांही अति मायरे, तेहसूं और अब वात कीजे। आप तो राम अलवेशर राजवी, माहरे आश दिन दोयजीजे ॥ सु० ॥ ८ ॥

(अन्य ग्रन्थकार रावण की आज्ञा मे इतनी ऋद्धि का कथन करते हैं)

सवैया

सूर्य रसोई तपे पवन अंगन बुहारे,
 वीहड१ करे दासीपणो चन्द्रमा करे प्रकारे (शे)
'विश्वानर' धोवे वस्त्र झलाझल नैजा झलके।
 नवग्रह बंधीया खाट पाय पग अति ही खलके ॥
अंगन अहि नांखे छांटा जम भैंसो नित्य पाणी भरे।
 विद्याधर कहे रामने रावण सेथी कुण अरे ॥ १ ॥
असी लाख गज बंध, कोड दशतुरी तुम्बारा।
 सोले सहंस सामन्त, पायदल अश्व अठारा ॥
क्षत्री लाख पचास, बावनश्वत पनरे राजा।

१ विधाता।

मचल चली झंझार सचन को पीर है ॥ रावण करडे वचण बहु मुखने कह्यो, नहीं मानी तब बात हाथमें असि ग्रह्यो ॥ दोऊं लड्या निणवार बहुत बल जोर सूं, वेतो अति बलवन्त प्राक्रम कोरसूं ।२।

ढाल मूलगी

हूं हूतो तब साहरू१ रे, करतो अति आक्रोश ।
सिया मचली अपहरीरे, 'रावण' कीधो रोप ॥ विभीषण॥५७॥
समाचार सुहामणारे, सीताजीना पामि ।
परम महासुख ऊपन्योरे, जाणे त्रिभुवन स्वामि ॥विभीषण॥५८॥
रत्नजटी विद्याधररे, कण्ठ लगाई लीध ।
तू म्हारे वालेसररे, खबर भली ते दीध ॥ विभीषण ॥ ५९ ॥
जिम जिम पूछे वानडीरे, तिम तिम ऊपजे राग ।
वारम्वार विशेषिण्रे, सगीनूं ए भाग ॥ विभीषण ॥ ६० ॥
समाचार सगा तणारे, सांभलतां सन्तोष ।
मिल्यामें ओछो नहींरे, प्रेमतणो अति पोष ॥ विभीषण ॥ ६१ ॥
दोहा-सब सन्नाटा छागया, सुन रावण का नाम ।
सीता पाछी आणवी, करडो दीसे काम ॥ १ ॥

(इसी ही मूलगी तर्ज के अगाड़ी के पद्य "ईडर आंबा आंबलीरे" इस तर्ज मे भी गाये जा सकते हैं)

राजेश्वर लङ्का कितनी दूर ॥ टेर ॥ (इस मुताबिक है)
पूछे प्रभु सुग्रीवनर, लंका कितनी दूर ।
अर्मासिमां अलगी वर्णीरे, उद्यमवन्त हजूर ॥ विभीषण ॥ ६२ ॥
लंकानूं स्यूं पूछवोरे, पूछो रावण तेज ।
आज लगे अधिको अछेरे, सूरज तेज सहेज ॥ विभीषण ॥ ६३ ॥

ढाल देशक तर्ज खटकों-

सुनो श्री 'राम' लंकागढ छे जिहां, बहे विद्याधरां एम वाणी । 'रावण' राजकी तेज जग छाईयो, सुर नर असुर सब बात जाणी । सु० ॥ १ ॥ विकट अति कोट अनूट जलनिधि सरीं, त्रिकूं

१ मदद करने वाला

दिशां राक्षसां छाय लीधो। नाम लेतां थकां प्राण सांसे पड़े, जाणे यमराण आवास कीधो॥ सु०॥ २॥ जगत जाहर घणों तेज रावण तणो, देव दानव पिण शंक आणे। तेहना घर तणी वात दुर्लभ घणी, अधिक डरावणी सर्व जाणे॥ सु०॥ ३॥ विषम गढ नालि गोला विषम भूमिका, वलि विषम चउं दिसे समुद्र खाई। अभङ्ग भट अतुलबली कटक अक्षौहणी, प्रथम थी कुणशके तेथी जाई॥ सु०॥ ४॥ वीशभुज धारणो शत्रु संहारणो, शीस दश शोभित अति ही रूड़ो। बडा बडा योध अति क्रोधकारी जिहां, स्वामी आगे कहां नहीं एक कूड़ो॥ सु०॥ ५॥ नाम लंका तणो अधिक डरावणो, जावणो आवणो केम थावे। स्वामी सन्तोष करो केण मुझ उरधरो, जीव ए सुजश दो रहावे॥ सु०॥ ६॥ मांयरे शीष इक दोय भुज देह में, सहश्रबाहू नृप आप हार्यो। इन्द्रने पकड़ दीयो कठ पिंजरे, वरुण कुबेर नो मान मार्यो॥ सु०॥ ७॥ लंक की शंक मनमांही अति मायरे, तेहसुं और अब वात कीजे। आप तो राम अलवेशर राजवी, माहरे आश दिन दोयजीजे॥ सु०॥ ८॥

(अन्य ग्रन्थकार रावण की आज्ञा मे इतनी ऋद्धि का कथन करते हैं)

सवैया

सूर्य रसोई तपे पवन अंगन बुहारे,
    वीहड१ करे दासीपणो चन्द्रमा करे प्रकारे (शो)
'विश्वानर' धोवे वस्त्र झलाझल नेजा झलके।
    नवग्रह बंधीया खाट पाय पग अति ही खलके॥
अंगन अहि नांखे छांटा जम भैंसो नित्य पाणी भरे।
    विद्याधर कहे रामने रावण सेथी कुण अरे॥ १॥
असी लाख गज बंध, कोड दशतुरी तुखार।
    सोले सहंस सामन्त, पायदल अङ्क अटार॥
क्षत्री लाख पचास, बावनशत पनरे राजा।

१ विधाता।

सबकोऊमाने शंक सुनत अमरापुरी बाजा ॥
बडे बडे वीर पांवे पडे चालतो सूर्य पोते डरे ।
विद्याधर कहे रायजी रावण होड कहो कुण करे ॥ २ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

राम कहे कपि पति ही सुणीये, लम्पटका गुण तो नहीं थुणीये, बात कहो किण विध ही वणीये जोर कर सीताने लावां, जगतमें जश अधिकों पावां ॥ सत्य ॥ ७३ ॥

ढाल मूलगी—

राम कहे सो जाणीयोरे, तेज पणुं संसार ।
कायर कपट करी घणूं रे, लेई गयु मुझ नार ॥ विभी० ॥ ६४ ॥
लक्ष्मण निजरां ठाहरे रे, तो गयां राजान ।
दोय दिन दो चार में रे ए घोडा ए मेदान ॥ विभी० ॥ ६५ ॥
लक्ष्मण भाखे खेचरूरे, रावण तो छ श्वान ।
सूना घरमें पेसियोरे, फिर एहनुं अभिमान ॥ विभी० ॥ ६६ ॥
क्षत्री ने छल नाकर्योरे, क्षत्रीनूं बल खेत ।
सोई साचूं मानवू रे, देखीजे निज नेत ॥ विभी० ॥ ६७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

लक्ष्मन तब भाखी है काल, 'रावण' यो कायर कंगाल, नादकी कीनो उन जाल । प्रभु छतां सीता नहीं लीधी, बात या अयुक्ती कीधी ॥ सत्य ॥ ७४ ॥ मारतसु 'जानकी' लेसां, सुभटांके इनाम ही देसां, कहे श्री राम की कहसां । जाम्बवान करता है अरजी, मानजो है प्रभु की मरजी ॥ सत्य ॥ ७५ ॥

मुनि रामचन्द्रजी कृत क्षेपक तर्ज मिलोको—

सुनजी महाराजा वचन हमारो, भलां चावां छां राज तुम्हारो ।
केन्द्र नट पर्व म्होटो एक ग्राम, विनयदत्त व्योपारी वसे तिण ठाम ॥
तिन के थी घर में सुन्दरी नारी, रूप अनूपम शांक समारी ।
इन्द्रदत्त मांडो पञ्झी पति साथे, दूगणा चोगणा वधे हाथोजी हाथे ।
बने सरकन्दे दे गिन नहीं माने, आवे जावे ने म्हावेजी छाने ।

एम करतां तो वीता बहु मासे, पूंजी तो खबर ही चौरांरे पासे ॥
बोले पल्लीपती सुणजो प्रकाशां, देसां मिजमानी दाम चुकासां ।
करने विभूषा आजो नारीने लीधां, तिमही पालन्तां हुवो छे वीदां।४।
आव्यो पल्लीमें चौरां विचारयो, लीधी नारीने उणनेजी मार्यो ।
एणी तो परे वादन कीजे, एडा माटे तो केम मरीजे ॥ ५ ॥

दोहा–पल्ली समाणी लंक है, पल्लीपति रावण जाण ।
नारी समाणी सीत है, राज हो वणिक समान ॥ १ ॥
विद्याधर कन्या बहु, अपच्छरने उणीहार ।
एक एकथी आगली, परणो केई हजार ॥ २ ॥
रावण लोक डरावणो, लड़तां नहीं रहै लाज ।
इण कारण सीता तणी, गई करो महाराज ॥ ३ ॥
लक्ष्मण सुनके कोपियो, बोले मूंछ मरोड ।
लावां वेगी सीतने, दशमस्तक नें तोड़ ॥ ४ ॥

श्री राम मुनि कृत क्षेपक तर्ज–सिलोका—

सुणतां तो लिछमन सिंहज्यूं गूज्यों, विद्याधरां को हीयोजी धूज्यों ।
सुणजो विद्याधर वात हमारी, सुनने तो चुपका जोवे इतकारी ॥१॥
नगर कुसुमपुर धन्नो व्योपारी, जिणरा घर में जमनाछे नारी ।
पांच पुत्रों में नहीं एक कमाऊं, तनमां तो रोग परदेशां जाऊं ।२।
अटवीमें मिलियो पुरुष इक सिद्धो, किरपाकरीने लोह कड़ो दीधो ।
इणसूं तो रोग मोटका जावे, लेई कड़ोंने रोग गमावे ॥ ३ ॥
चलियो तो आयो निजपुर बार, मूई नृप कन्या हुवो हाहाकार ।
नागनो विष गयो कड़ानी करणी, नृप हुकमसूं कन्या जो परणी।४।
मात पितासूं मिलीयो हुल्लासे, भोगवे सुख लीला वीलासे ।
एक दिन मज्जन मिष गङ्गातट आयो वड़ निकट तिहां पांनोंजी छायो
॥ ५ ॥ तिणमां तो रहै गोहज लांठी, कड़ो अम्बर१ में लेईने नांठी ।
चड़तां तो दीठी आतम सेण, शूरा सुभट नहीं कयोजी लेण ॥ ६ ॥

१ वस्त्र ।

सयकोऊमाने शंक सुनत अमरापुरी बाजा ॥
बडे बडे वीर पांवे पडे चालतो सूर्य पोते डरे ।
विद्याधर कहे रायजी रावण होड कहो कुण करे ॥ २ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

राम कहे कपि पति ही सुणीये, लम्पटका गुण तो नहीं थुणीये, बात कहो किण विध ही वर्णीये जोर कर सीताने लावां, जगतमें जश अधिको पावां ॥ सत्य ॥ ७३ ॥

ढाल मूलगी—

राम कहे सो जाणीयोरे, तेज पणूं संभार ।
कायर कपट करी घणूं रे, लेई गयू मुझ नार ॥ विभी० ॥ ६४ ॥
लक्ष्मण निजरां ठाहरे रे, तो गयां राजान ।
देखे दिन दो चार में रे ए घोडा ए मेदान ॥ विभी० ॥ ६५ ॥
लक्ष्मण भाखे खेचरूरे, रावण तो छे श्वान ।
सूना घरमें पेसियोरे, फिट एहनूं अभिमान ॥ विभी० ॥ ६६ ॥
शत्री ने छल नाकयोरे, क्षत्रीनूं बल खेत ।
मोई मारूं मानवूं रे, देखोजे निज नेत ॥ विभी० ॥ ६७ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

लक्ष्मन तब मारी है फाल, 'रावण' वो कायर कंगाल, नादकी कम्यो उन जाल । प्रभु छतां सीता नहीं लीधी, बात या अयुक्ती कीधी ॥ सत्य ॥ ७४ ॥ मारतसु 'जानकी' लेसां, सुभटांकू उचार ही देसां, कहे श्री राम की कहसां । जाम्बवान करता है अरजी, मानजो है प्रभु की मरजी ॥ सत्य ॥ ७५ ॥

मुनि रामचन्द्रजी कृत क्षेपक तर्ज मिलोको—

सुनजो महाराजा वचन हमारो, भलो चावो छो राज तुम्हारो ।
सेना नद पासे म्होटो इक ग्राम, विनयदत्त व्योपारी वसे तिण ठाम ॥
तिनके घर में सुन्दरी नारी, रूप अनूपम शाके समाली ।
द्यौढर मांको पड्यो पति मारे, दुगणा चोगणा बधे हाथोंजी हाथे ॥
बहे मजनने ते तिम नहीं माने, आवे जावे ने स्यावेजी छाने ।

दूजो त्रीजो मस्तक कण्ठ लगावे हो ॥ राज० ॥ २ ॥
चौथो छाती पंचम नाभि प्रमाणे हो सुण ।
छठो कटि लग सातमो साथल आणे हो ॥ राज० ॥ ३ ॥
आठमो जानू धरती अधर ऊठावे हो । सुन ।
नवमो अंगुल चारज ऊंची लावे हो ॥ राज० ॥ ४ ॥
वामे कर सूं शीला ऊंची करता हो सुन ।
वाम चरण सूं पाछी धरती में धरता हो ॥ राज० ॥ ५ ॥
पूजि अर्ची बहु विध भक्ति करावे हो सुन ।
हरि इण क्षेत्रे सोहि शीला ऊठावे हो ॥ राज० ॥ ६ ॥
तत् क्षिण सुरवर जय जय शब्द करावे हो सुन ।
पुष्प नी वृष्टी गंधाम्बू वरसावे हो ॥ राज० ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी

जेम लताए तेम ए शीलारे, देखाडी ऊपाड़ी ।
पुष्प वृष्टि हुई भलीरे, सुजश चढ्यो निलाडी ॥ विभीषण ॥ ७१ ॥
भल् भल् कहे देवतारे, प्रत्यय२ पामी जाम ।
सहु कोई आणन्दियारे, पाछा आव्या ताम ॥ विभीषण ॥ ७२ ॥
वृद्ध पुरुष परमारथीरे, वात विचारे एक ।
पहिलां दूतज मोकलोरे, जाणणहार विवेक ॥ विभीषण ॥ ७३ ॥
वातां में समझावीयोरे, पाछी आपे वाल ।
दोई घरे होय वधामणांरे, वाधे नहीं जंजाल ॥ विभीषण ॥७४॥
दूत 'महाबल' आगलोरे, मोकलिये सुप्रमाण ।
लंका तो साजी सुणीरे, कीधो अति मण्डाण ॥ विभीषण ॥ ७५ ॥
ढाल भली सेतीशमीरे, कीधो दूतही थाप ।
केशराज ऋषिजी कहेरे, जेहनो प्रबल प्रताप ॥ विभीषण ॥ ७६ ॥

दोहा (केदारा रागे)

राक्षसकुल सायर विचे, अमृत ऊपज्यो एक ।
विभीषण मति आगलो, जाणे विनय विवेक ॥ १ ॥
दूत धूत जाए धमी, विभीषणने पास ।

आतम सेणनो कीधो ऊपायो, नांखी लकड़ने वड़लो फूंकायो ।
गोह मारीने कडोजी लीधो, आतम सेणरो कारज सीद्धो ॥ ७ ॥
मनमें हर्ष्यो जिम अमृत पीधो एह सिलोको राम मुनि कीधो॥८॥
दोहा-गोह रावण सीताकड़ो, आतम सेण सूं राम ।
लंकागढ़--वड चूरने, लेवां रत्न बहु दाम ॥ १ ॥
नभचर अति विस्मय भये, सुन लक्ष्मण की वात ।
कही अनूपम तुम कथा, महा सुभट अवदात ॥ २ ॥
भूचर वेऊं अति जोर है, एनी केहने हाथ ।
कोट शिलाकी वात कहो, ज्यूं शंसय मिट जात ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी--

'आम्बनान' भाखे भल्‌ रे, ऊपाडे भुजपाण ।
कोटो शिलाने माहमे रे, रावण हन्ता जाण ॥ विभी० ॥ ६८ ॥
मार् वचन में सांभल्यु रे ए अति रूड़ी रीत ।
महने शोला ऊपाड़तां रे ऊपजे अति परतीत ॥ विभी० ॥ ६९ ॥
लक्ष्मण भाखे ए भलूं रे, वैरी विमाने देव ।
विद्याधर विद्या वले रे, आई गगा तन सेव ॥ विभी० ॥ ७० ॥

ढाल चंपक वर्ण मलारी--

जोवन लक्ष्मी पहली एह कहावे हो, सुणजो महाराज ।
कोई मुनि तिण ऊपर मोक्ष सिधावे हो राजिन्द ॥ १ ॥
[illegible] नर शिर पर छत्र करावे हो सुणजो ।

(* [illegible] अधिकार और भी पाया गयाहै वह लिखांगा है) [illegible] शिला [illegible] भवन है । इस शिला पर [illegible] पाट [illegible] गये हैं ॥ इस चौवीसी में [illegible] पाट और [illegible] मुनि । और कुन्थुनाथजी [illegible] ॥ अरनाथ के [illegible] पाट [illegible] पाट और मुनि [illegible] मुनि [illegible] ॥ नमीनाथ के चार पाट और [illegible], और [illegible] पाट [illegible] हैं ॥

किष्किंधा चालो आयो सुग्रीव आनन्द अति पायोजी ॥हनु॥१०॥
बेऊं मिली राम पे आवे, चरणां विच शीष नमावेजी॥हनु॥११॥
दोहा-पगे लागी ऊभोरयो, प्रभुजी केरे प्रासाद।
तुझ सम बीजो को नहीं, तारो जग जश वाद ॥ ६ ॥
दशकंधर लेई गयो, लंका नगरी मांही।
सीता छे तस शुद्धी तो, तुझथी आवे प्राही ॥ ७ ॥
हनुमन्त भाखे रामजी, मया करी कपिराय।
ते माटे हूं तेडीयो, वानर घणां कहाय ॥ ८ ॥
'गवगवाक्ष' 'शरभ' ज, 'गवय', 'जाम्बवान' 'नल' 'नील'।
'द्विविद' 'गन्धमादन' भला, 'अङ्गद' 'मेद' 'सलील' ॥९॥
इत्यादिक तो छे भला, वानर अति अभिराम।
छेली संख्या पूरणी, मांहि म्हारूं नाम ॥ १० ॥
पण हूं कारज एटला, करूं सांभलो राय।
लङ्का राक्षस द्वीपसूं, आणूं इहां ऊठाय ॥ ११ ॥

क्षेपक छप्पय छन्द

कहोतो ईन्द्र गिरि चहूं ईन्द्र इन्द्रासन टारूं,
कहोतो पेठ पाताल शेष को भार ऊतारूं।
कहोतो बांह बल करूं देव दानव सब दट्टूं,
कहोतो मारूं खग शीष दश रावण कट्टूं ॥
हनुमान कहत रघुनाथ से राम प्रताप इतनो करूं,
ऊठाय लंक रावण सहित दच्छिन की उत्तर धरूं ॥ १ ॥
दोहा-रावण लोक डरावणो, ते भाईयों सूं बांध।
आणूं प्रभुने आगले, कोईक वेला सांध ॥ १२ ॥
कहो तो हणूं कुटुम्बसूं, कुल नो करूं निकन्द।
सत्यवती सीता सती, आणूं धरी आणन्द ॥ १३ ॥
राम कहे साचो सहु, तारो वचन विचार।
जेम कहूं तूं तेम करे, नहीं सन्देह लगार ॥ १४ ॥

भयपामी राक्षस तणो, पाछो नावे नास ॥ २ ॥
सीता छोडावण तणी, रावण सूं अरदास ।
करसे लघु भाई भली, मानिस ही प्रभु खास ॥ ३ ॥
देवयोगे माने नहीं, पाछी वात विशेष ।
सर्व जणावे आपने, लीधो मानी नरेश ॥ ४ ॥
सुग्रीवे सुमतो कियो, अब लोई सहु साथ ।
हनुमन्त तब बोलावीयो, जाणी अति समाथ ॥ ५ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज वीरा लूम्बो झूम्बो होई आईजो

हनुमन्त थने रामजी बुलावे, सीता की खबर मंगावेजी ॥ टेर ॥
कपि पति भामण्डल राया, रघुवर ना सेवे पायाजी ॥ हनु० ॥ १ ॥
बलि वीर विराध विराजे, दल बल नो पार न छाजेजी ॥ हनु. ॥ २ ॥
सुग्रीवनो काम समार्यो, प्रभु साहश गतीने मार्योजी ॥ हनु. ॥३॥
खर श्रीखर दूषण भारी, लक्ष्मणजी लीधा मारीजी ॥ हनु. ॥४॥
फिर कोट शिलाने उठाई, है प्रबल बली दो भाईजी ॥ हनु. ॥५॥

सवैया—

कपिपति लिखी पत्री दूतको बुलाय कहै,
पौन सुत जाय पास लेख वेग दीजीये ।
कीजीये न देर करी देर में बिगार होत,
आय इत हाजिर आप देख लीजीये ॥
दशरथ नन्दन अति सुभट अनूप रूप,
लेखनी में लिखूं कहा देखत पतीजीये ।
आन इक काज भारी, रामहूकी लेगो नारी,
लंकपति ज्यांकी खबर जाय लाय दीजीये ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पूर्ववत

ले पत्रने दूत सिधायो, चलकर हड़मान पे आयोजी ॥ हनु ६॥
सिर नामी पत्र दे हाथ, हड़मान ने हर्ष अपारजी ॥ हनु ॥ ७ ॥
हनुमन्तकी दोनों नारी, इक हर्षी इक खिन्नाणीजी ॥ हनु ॥ ८ ॥
हनुमन्तने दिलासा दीनी, झट चाल्यो दोलत कीनीजी ॥ हनु ९॥

किष्किंधा चालो आयो सुग्रीव आनन्द अति पायोजी ।।हनु।।१०।।
वेऊं मिली राम पे आवे, चरणां विच शीष नमावेजी।।हनु।।११।।
दोहा–पगे लागी ऊभोरयो, प्रभुजी केरे प्रासाद ।
तुझ सम बीजो को नहीं, तारो जग जश वाद ॥ ६ ॥
दशकंधर लेई गयो, लंका नगरी मांही ।
सीता छे तस शुद्धी तो, तुझथी आवे प्राही ॥ ७ ॥
हनुमन्त भाखे रामजी, मया करी कपिराय ।
ते माटे हूं तेड़ीयो, वानर घणां कहाय ॥ ८ ॥
'गवगवाक्ष' 'शरभ' ज, 'गवय', 'जाम्बवान' 'नल' 'नील' ।
'द्विविद' 'गन्धमादन' भला, 'अङ्गद' 'मेद' 'सलील' ।।९।।
इत्यादिक तो छे भला, वानर अति अभिराम ।
छेली संख्या पूरणी, मांहे म्हारूं नाम ॥ १० ॥
पण हूं कारज एटला, करूं सांभलो राय ।
लङ्का राक्षस द्वीपछं, आणूं इहां ऊठाय ॥ ११ ॥

क्षेपक छप्पय छन्द

कहोतो ईन्द्र गिरि चढूं ईन्द्र इन्द्रासन ढारूं,
कहोतो पेठ पाताल शेष को भार ऊतारूं ।
कहोतो बांह बल करूं देव दानव सब दट्टूं,
कहोतो मारूं खग शीष दश रावण कट्टूं ॥
हनुमान कहत रघुनाथ से राम प्रताप इतनो करूं,
ऊठाय लंक रावण सहित दच्छिन की ऊत्तर धरूं ॥ १ ॥
दोहा–रावण लोक डगावणो, ते भाईयों सूं बांध ।
आणूं प्रभुने आगले, कोईक वेला सांध ॥ १२ ॥
कहो तो हणूं कुटुम्बछं, कुल नो करूं निकन्द ।
सत्यवती सीता सती, आणूं धरी आणन्द ॥ १३ ॥
राम कहे साचो सहु, तारो वचन विचार ।
जेम कहूं तूं तेम करे, नहीं सन्देह लगार ॥ १४ ॥

भयपामी राक्षस तणो, पाछो नावे नास ॥ २ ॥
सीता छोड़ावण तणी, रावण सूं अरदास।
करसे लघु भाई भलो, मानिस ही प्रभु खास ॥ ३ ॥
दैवयोगे माने नहीं, पाछी वात विशेष।
सर्व जणावे आपने, लीधी मानी नरेश ॥ ४ ॥
सुग्रीवे सुमतो कियो, अब लोई सहु साथ।
हनुमन्त तब बोलावीयो, जाणी अति समाथ ॥ ५ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज बीरा लूम्बो झूम्बो होई आईजो

हनुमन्त थने रामजी बुलावे, सीता की खबर मंगावेजी ॥ टेर ॥
कपि पति भामण्डल राया रघुवर ना सेवे पायाजी ॥ हनु० ॥ १ ॥
बलि वीर विराध विराजे, दल बल नो पार न छाजेजी ॥ हनु. ॥ २ ॥
सुग्रीवनो काम समार्यो, प्रभु साहस गतीने मार्योजी ॥ हनु. ॥३॥
खर त्रीशर दूषण भारी, लक्ष्मणजी लीधा मारीजी ॥ हनु. ॥४॥
फिर कोड शिलाने उठाई, है प्रबल बली दो भाईजी ॥ हनु. ॥५॥

सवैया—

कपिपति लिखी पत्री दूतको बुलाय कहै,
पौन सुत जाय पास लेख वेग दीजीये।
कीजीये न देर करी देर मे बिगार होत,
आय दूत हरखित आप देख लीजीये ॥
महा बलवन्त अति सुभट अनूप रूप,
लेखनी मे लिखूं क्या देखत पतीजीये।
आज एक काज भारी, रामहूकी लेगो नारी,
लंकपति ज्योंकी खबर जाय लाय दीजीये ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-पूर्ववत

ले पवने दूत सिधायो, चलकर हनुमान पे आयोजी ॥ हनु ६॥
लिख सारो पत्र में बाल, हनुमान ने हर्ष अपारजी ॥ हनु ॥ ७ ॥
हनुमन्तकी दोनों नारी, इक हर्षी इक खिल्यारीजी ॥ हनु ॥ ८ ॥
हनुमन्तने दीलासा दीनी, झट चाल्यो ढील न कीनीजी ॥ हनु ॥९॥

किष्किंधा चालो आयो सुग्रीव आनन्द अति पायोजी ॥हनु॥१०॥
बेऊं मिली राम पे आवे, चरणां विच शीष नमावेजी॥हनु॥११॥
दोहा–पगे लागी ऊभोरयो, प्रभुजी केरे प्रासाद ।
तुझ सम बीजो को नहीं, तारो जग जश वाद ॥ ६ ॥
दशकंधर लेई गयो, लंका नगरी मांही ।
सीता छे तस शुद्धी तो, तुझथी आवे ग्राही ॥ ७ ॥
हनुमन्त भाखे रामजी, मया करी कपिराय ।
ते माटे हूं तेडीयो, वानर घणां कहाय ॥ ८ ॥
'गवगवाक्ष' 'शरभ' ज, 'गवय', 'जाम्बवान' 'नल' 'नील' ।
'द्विविद' 'गन्धमादन' भला, 'अङ्गद' 'मेद' 'सलील' ॥९॥
इत्यादिक तो छे भला, वानर अति अभिराम ।
छेली संख्या पूरणी, मांहे म्हारूं नाम ॥ १० ॥
पण हूं कारज एटला, करूं सांभलो राय ।
लङ्का राक्षस द्वीपसूं, आणूं इहां ऊठाय ॥ ११ ॥

क्षेपक छप्पय छन्द

कहोतो ईन्द्र गिरि चढूं ईन्द्र इन्द्रासन हारूं,
कहोतो पेठ पाताल शेष को भार ऊतारूं ।
कहोतो बांह बल करूं देव दानव सब दट्टूं,
कहोतो मारूं खग शीष दश रावण कट्टूं ॥
हनुमान कहत रघुनाथ से राम प्रताप इतनो करूं,
ऊठाय लङ्क रावण सहित दच्छिन की ऊत्तर धरूं ॥ १ ॥
दोहा–रावण लोक डरावणो, ते भाईयों सूं बांध ।
आणूं प्रभुने आगले, कोईक वेला सांध ॥ १२ ॥
कहो तो हणूं कुटुम्बसूं, कुल नो करूं निकन्द ।
सत्यवती सीता सती, आणूं धरी आणन्द ॥ १३ ॥
राम कहे साचो सहु, तारो वचन विचार ।
जेम कहूं तूं तेम करे, नहीं सन्देह लगार ॥ १४ ॥

भयपामी राक्षस तणो, पाछो नावे नास ॥ २ ॥
सीता छोड़ावण तणी, रावण सूं अरदास ।
करसे लघु भाई भलो, मानिस ही प्रभु खास ॥ ३ ॥
देवयोगे माने नहीं, पाछी वात विशेष ।
सर्व जणावे आपने, लीधी मानी नरेश ॥ ४ ॥
सुग्रीवे सुमतो कियो, अब लोई सहु साथ ।
हनुमन्त तब बोलावीयो, जाणी अति समाथ ॥ ५ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल चेपक तर्ज वीरा लूम्बो झूम्बो होई आईजो

हनुमन्त थने रामजी बुलावे, सीता की खबर मंगावेजी ॥ टेर ॥
कपि पति भामण्डल गया रघुवर ना सेवे पायाजी ॥ हनु० ॥ १ ॥
बलि वीर विराध विराजे, दल बल नो पार न छाजेजी ॥ हनु. ॥ २ ॥
सुग्रीवनो काम समार्यो, प्रभु साहस गतीने मार्योजी ॥ हनु. ॥३॥
खर त्रीशर दूषण भारी, लक्ष्मणजी लीधा मारीजी ॥ हनु. ॥४॥
शिर कोड शिलाने उठाई, है प्रबल बली दो भाईजी ॥ हनु. ॥५॥

सवैया—

कपिपति लिखी पत्री दूतको बुलाय कहै,
पौंन सुत जाय पास लेख वेग दीजीये ।
कीजीये न देर करी देर में बिगार होत,
आय इन हकिकत आप देख लीजीये ॥
महा बलवन्त अति सुभट अनूप रूप,
लेखनी में लिखूं क्या देखत पतीजीये ।
आज एक काज सारी, रामकूंकी लेगो नारी,
लंकपति ज्योंकी खबर जाय लाय दीजीये ॥

ढाल चेपक तर्ज-पूर्ववत्

ले पत्र दूत सिधायो, चलकर हनुमान पै आयोजी ॥ हनु ६॥
लिख सारी पत्र में बात, हनुमान ने हर्ष अपारजी ॥ हनु ॥ ७ ॥
हनुमन्तके दोनो नारी, इक हर्षी इक बिलखाणीजी॥ हनु ॥ ८ ॥
हनुमन्तने डंका दीनो, झट चाल्यो ढील न कीनीजी॥हनु॥९॥

एक वार तो जायने, आणो खबर अवार ।
वश्य पडी छे पारके, वरते कवण प्रकार ॥ १५ ॥

ढाल अड़तालीशमीं तर्ज दधि सूत जात ही—

कपि रे ! प्रिया साथे कहे, प्राण प्रभु नो तुम पास ।
देह सुं न्यारो रहे रे, मन में थारी आश ॥ कपि ॥ १ ॥
अन्न तो मोय लागत फीको, स्वाद नहीं जलपान ।
सुवनो तो नींद न आवे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ २ ॥
राम नो मन नां रमे, नां रमे गुण गान ।
हास्य ख्याल विनोद नां गमे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ३ ॥
योगने साधियां योगियो रे, भजे ज्यूं भगवान ।
काम रागे राचीयांथी, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ४ ॥
हाथियो रे कुंज वननो, अरणीयो राजान ।
जेह सुमरे तेह वन ने, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ५ ॥
स्वैरणी स्वच्छा ए रमती, वंछे ही नर आन ।
अधिक तीव्र परिणाम राखे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ६ ॥
पंथियो थरा पड्यां पाणी, साथ राखे मान ।
मेहना जल माथे मनमा, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ७ ॥
मूंदडी मुज हाथ केरी आगे लेई रे धरे ।
जाणी ए अहिनाणी कारे, लहे कुशल खरे ॥ कपि ॥ ८ ॥
आवतां चूडामणी रे, आणीजे रे सही ।
तेह ए मह साच मानें, वात सफल कही ॥ कपि ॥ ९ ॥
दुःख वियोगे सो मानि तूं, आटे थाशी फेर ।
लछमण नो लंक पति करे, शिर छेदीयो ही देख ॥ कपि ॥ १० ॥
[illegible] दल बल साज सघारे, सपरहीत नरेश ।
निश्चिन्त छे सीतलीयो तुं, स्वर कल्या सुविशेष ॥ कपि ॥ ११ ॥

१ श्री राम हनुमान ने कहे छे के तूं म्हारी प्रिया (सीता) ने [illegible]
[illegible] (गाथा १५ सुधी) ए अर्थ विचारणी ।

जब लगे हूं फिर न आवूं, तब लगे ए ठाम।
छोडवूं नहीं वीनती ए, मानजो श्री राम ॥ कपि ॥ १२ ॥
राम 'लक्ष्मण' चरण प्रणमी, लेई निज परिवार।
वीर विमाने वैसी चाल्यो, पामी हर्ष अपार ॥ कपि ॥ १३ ॥
वाट जातां गिरी महेन्द्र, पुर माहेन्द्र उदार।
देखीयो थी रोष ऊपन्यो, आणी ए विचार ॥ कपि ॥ १४ ॥
माय माहरी वे गुन्हा थी, काढी दीधी ताम।
रीस ए मुझ अछे अधिकी, आजे फेडूं ठाम ॥ कपि ॥ १५ ॥
एम कहतां तूर रणना, लीया राय वजाय।
शब्द सुणी ब्रह्माण्ड फाटे, नगर नाठो जाय ॥ कपि ॥ १६ ॥

दोहा क्षेपक—

दूत भेजीयो नांनाजी ने मांने म्हारी आन।
नहीं तर तब रहसी नहीं, थोडोसी भी शान ॥ १ ॥

१ क्षेपय तर्ज राधेश्याम—

सुन दूत वचन ज्यों भूत लगा, त्यों 'महेन्द्र' राय रीसाया है।
काला मुख कर मार जूत शर, दूत भणी निकलाया है ॥
बस कह देना तेरे मालिक को, मैं फौरन ही आ जाता हूं ॥
मुझ को आन मनाने का मैं उसको मजा चखता हूं।
सौ पुत्रों को साथ वीर वे दल बल ले तैयार हुवे।
कायर नर को छोड और सब वीर पुरुष हूंसीयार हुवे ॥
रण भैरी जो वहां बजती थी, और घाव निशान लगाया है।
महेन्द्र भूप निज सेना ले कर, नगरी बाहर आया है ॥
नानाजी के निकट आयकर, खडा वीर हडमान हुआ।
मानों आया सूर्य ऊतर कर, एसा ही अनुमान हुआ ॥
महेन्द्र भूप यों बोला उन को तू तो अब तक बच्चा है।
तूं मेरे से नहीं जीतेगा, यह कहना हमारा सच्चा है ॥

१ सती अंजना से।

एक वार तो जायने, आणो खबर अवार ।
वश्य पडी छे पारके, वरते कवण प्रकार ॥ १५ ॥

ढाल अड़तालीशमी तर्ज दधि सूत जात हो—

कपि रे ! प्रिया माथे कहै, प्राण प्रभु नो तुम पास ।
देह मं न्यारो रहे रे, मन में थारी आश ॥ कपि ॥ १ ॥
अन्न तो मोय लागत फीको, स्वाद नहीं जलपान ।
सूवतो तो नींद न आवे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ २ ॥
राम नो मन नां रमे, नां रमे गुण गान ।
हास्य ख्याल विनोद नां गमे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ३ ॥
योगने साधियां योगियो रे, भजे ज्यूं भगवान ।
काम रागे राचीयांथी, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ४ ॥
हाथियो रे कुंज वननो, आणीयो राजान ।
जेह सुमरे तेह वन ने, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ५ ॥
स्वैरणी स्वच्छा ए रमती, वंच्छे हो नर आन ।
अधिक तीव्र परिणाम राखे, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ६ ॥
पंथियो घर परों पाणी, साथ राखे मान ।
मेहना जल माथे मनमा, एक थारो ध्यान ॥ कपि ॥ ७ ॥
मूंदडी मुज हाथ केरी आगे लेई ने धरे ।
जाणो ए अहिनाणी कारे, लहे कुशल खरे ॥ कपि ॥ ८ ॥
आवता चूडामणी रे, आणीजे रे सही ।
जेम ए मह साच माने, वात सफल कही ॥ कपि ॥ ९ ॥
कुल विशेषे सर मान तूं, आठ याहो [illegible] ।
[illegible] लंक पति करो, शिर छे टीणो ही देख ॥ कपि ॥ १० ॥
[illegible] वात सतगरु, [illegible] नरेश ।
[illegible] छे मोकलीयो हूं, सवा कग्या सुविशेष ॥ कपि ॥ ११ ॥

[illegible] हनुमान ने कहे छे के तूं म्हारी सीया (सीता) ने आश्वासन [illegible] ([illegible]) [illegible] ।

जब लगे हूं फिर न आवूं, तब लगे ए ठाम।
छोडवूं नहीं वीनती ए, मानजो श्री राम ॥ कपि ॥ १२ ॥
राम 'लक्ष्मण' चरण प्रणमी, लेई निज परिवार।
वीर विमाने बैसी चाल्यो, पामी हर्ष अपार ॥ कपि ॥ १३ ॥
वाट जातां गिरी महेन्द्र, पुर माहेन्द्र उदार।
देखीयो थी रोष ऊपन्यो, आणी ए विचार ॥ कपि ॥ १४ ॥
माय माहरी वे गुन्हा थी, काढी दीधी ताम।
रीस ए मुझ अछे अधिकी, आजे फेडूं ठाम ॥ कपि ॥ १५ ॥
एम कहतां तूर रणना, लीया राय बजाय।
शब्द सुणी ब्रह्माण्ड फाटे, नगर नाठो जाय ॥ कपि ॥ १६ ॥

दोहा क्षेपक—

दूत भेजीयो नांनाजी ने मांने म्हारी आन।
नहीं तर तब रहसी नहीं, थोड़ीसी भी शान ॥ १ ॥

१ क्षेपय तर्ज राधेश्याम—

सुन दूत वचन ज्यों भूत लगा, त्यों 'महेन्द्र' राय रीसाया है।
काला मुख कर मार जूत शर, दूत भगो निकलाया है॥
बस कह देना तेरे मालिक को, मैं फौरन ही आ जाता हूं।
मुझ को आन मनाने का मैं उसको मजा चखता हूं।
सौ पुत्रों को साथ वीर वे दल बल ले तैयार हुवे।
कायर नर को छोड़ और सब वीर पुरुष हर्षाया [illegible]
रण भैरी जो वहां बजती थी, और बाद्य नि[illegible] है।
महिन्द भूप निज सेना ले कर, नगरी बाहर [illegible] है।
नानाजी के निकट आयकर, खड़ा वीर [illegible]
मानों आया सूर्य ऊपर कर, ऐसा हो [illegible]
महेन्द्र भूप यों बोला उनको तू तो [illegible] है
तूं मेरे से नहीं जीतेगा, यह कहन [illegible] है।

१ सती अंजना से।

दोहा (क्षेपक)

नानासाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
बजरंगी अंगीकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगी ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
मैं छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड जायेगी ।
अब जोश हमारा देख आपकी, होस हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'सुरेन्द्र' नी परे, चल्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, बान मे त्रिण हेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरोरे, सुभट दीधा मोड ।
प्रचंड बाण उडी जाए, तृण तणीतो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
प्रदन कीर्ति आवी लडीयो, लडे चित्त ने चाय ।
दोई वीर विशेष बलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ते सुविचार कीधो, आज मुझे धिकार ।
स्वामीनानो काम विचमें, एह लगावी वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारी लेऊं मैं एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
काम प्रारम्भ्यो करूं, सोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
भांजी रथ सारथी भुजबले, बांधी लीधा सोय ।
उक्त महेन्द्र नरेन्द्र साहीयो, शूरथी एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
चरणे लागी कोड दीधा, आप प्रगटी नाम ।
मायने दुःख दीयो थी तुम्ह, तेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
स्वामीना कामे जाऊं लंका, तुम्हे प्रभुने पास ।
[illegible] पावीयावी, पामसो बहु ग्राम ॥ कपि० ॥ २४ ॥
[illegible] नाले, दीधो सिर चूंपो ।
[illegible] सजन गया छूव ॥ कपि० ॥ २५ ॥
[illegible] सुनत मूर्गावो, आंख दीठो आज ।

आपणो आप थकी शंको, आप पावे लाज ॥ कपि० ॥ २६ ॥
स्वामी काम प्रयाण कीजे, पन्थ में कल्याण ।
होईजो कही आप प्रभुने, चल्यो करी मण्डाण ॥ कपि० ॥ २७ ॥
वाटमें पर सिद्ध 'दधिमुख', आईयो इक द्वीप ।
साधु दो काउसग्गे दीठा, ध्याने लीन अतिव ॥ कपि० ॥ २८ ॥
पाखतीही तीन कन्या, राखी मन एकन्त ।
करे विद्या तणो साधन, दैवगति न लहन्त ॥ कपि० ॥ २९ ॥
लागीयो दवझाल पसरी, आवीयो प्रभु[१] धाय ।
उदधीनूं जल आणी अधिकूं, लीयो तेह बुझाय ॥ कपि० ॥ ३० ॥
साधुवन्दी कहे कुंवरी, स्वामी सांभलो वात ।
साधु उपद्रव टालीयोए, नहीं तो बलिजात ॥ कपि० ॥ ३१ ॥
तुम माहने लीये सिद्ध विद्या, एह हमारी जोय ।
विणही काले फले तरुवर, एह अतिशय कोय ॥ कपि० ॥ ३२ ॥
पूछही प्रभु आप कौन तुम ? ताम दीये जबाव ।
नगर 'दधिमुख' अछे नीको, अवर पुर में आवर ॥कपि०॥ ३३ ॥
गायतो गन्धर्व रूडा, कुसुम माला नार ।
ए अमे छऊं तस कुंवरी, रतितणे अवतार ॥ कपि० ॥ ३४ ॥
खेचरा बहुतरे वांछा, करी विविध प्रकार ।
तात नापे केमी रह्या, मन अपूठे मार ॥ कपि० ॥ ३५ ॥
एक 'अंगारक' ज खेचर, धरे आशा अगाह ।
कामवस्ये उन्मत्त हुओ, तात न करे विवाह ॥ कपि० ॥ ३६ ॥
ताते पूछ्यूं निमित्त ज्ञानी, पुत्रीनो वर कूण ! ।
धायसे ए साच भाखो, हूं अछूं[२] भल सूण ॥ कपि० ॥ ३७ ॥
मारसे जो साहसगति नें, सोई भलो भरतार ।
रूपे रूड़ो नहीं कूडो, तुम्ह हुसे किरतार ॥ कपि० ॥ ३८ ॥
केम जाण्यो जाय प्रभुजी, तेहथीए काज ।

---

१ पशुतावालो (हनुमान) ए फारसी भाषानो शब्द छे । तेनो अर्थ पाणी धाय छे ने उपरथी बतावाया लायक । २ भलो कपट रहित ।

दोहा (क्षेपक)

नानासाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
बजरंगो अंगीकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगी ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
मैं छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड़ जायेगी ।
अब जोश हमारा देख आपकी, होस हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'सुरेन्द्र' नी परे, चढ्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, वान में विण हेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरोरे, सुभट दीधा मोड़ ।
प्रचंड बाण उडी जाण, तृण तणांतो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
प्रसन्न कीर्ति आवी लड़ीयो, लड़े चित्त ने चाय ।
दोई वीर जिगेर बलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ते सुविचार कीधो, आज मुझे धिक्कार ।
स्वामीनाना काम विचमें, एह लगावी वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारी लेऊं मैं एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
[illegible] प्रारम्भ्यो करवुं, सोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
भांजी रथ मारथी सुजबले, बांधी लीधा सोय ।
[illegible] महेन्द्र नरेन्द्र पाडीया, सूर्यो एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
चरण [illegible] छोड दीया, आप प्रगटी नाम ।
[illegible] डायो थो तुम्ह, तेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
[illegible] लंका, तुम्हे प्रभुने पास ।
[illegible] पावसी बहु ग्राम ॥ कपि० ॥ २४ ॥
[illegible] नाने, दीदीयो सिर चूंबी ।
[illegible] बहु, सज्जन [illegible] ॥ कपि० ॥ २५ ॥
[illegible] सुनना सुर्णयो, आंख दीठो आज ।

आपणो आप थकी शंकी, आप पावे लाज ॥ कपि० ॥ २६ ॥
स्वामी काम प्रयाण कीजे, पन्थ में कल्याण ।
होईजो कही आप प्रभुने, चल्यो करी मण्डाण ॥ कपि० ॥ २७ ॥
घाटमें पर सिद्ध 'दधिमुख', आईयो इक द्वीप ।
साधु दो काउसग्गे दीठा, ध्याने लीन अतिव ॥ कपि० ॥ २८ ॥
साखतीही तीन कन्या, राखो मन एकन्त ।
करे विद्या तणो साधन, दैवगति न लहन्त ॥ कपि० ॥ २९ ॥
लागीयो दवझाल पसरी, आवीयो प्रभु१ धाय ।
उदधीनं जल आणी अधिकूं, लीयो तेह बुझाय ॥ कपि० ॥ ३० ॥
साधुवन्दी कहै कुंवरी, स्वामी सांभलो वात ।
साधु उपद्रव टालीयोए, नहीं तो चलिजात ॥ कपि० ॥ ६१ ॥
तुम साह्यने लीये सिद्ध विद्या, एह हमारी जोय ।
क्षणही काले फले तरुवर, एह अतिशय कोय ॥ कपि० ॥ ३२ ॥
पूछही प्रभु आप कौन तुम ? ताम दीये जवाब ।
नगर 'दधिमुख' अछे नीको, अवर पुर में आव२ ॥कपि०॥ ३३ ॥
रायतनो गन्धर्व रूडा, कुसुम माला नार ।
अमे छऊं तस कुंवरी, रतितणे अवतार ॥ कपि० ॥ ३४ ॥
खेचरा बहुतरे वांछा, करी त्रिविध प्रकार ।
तात नापे तेसी रह्या, मन अपूठे मार ॥ कपि० ॥ ३५ ॥
एक 'अंगारक' ज खेचर, धरे आशा अगाह ।
कामवस्ये उन्मत्त हुओ, तात न करे विवाह ॥ कपि० ॥ ३६ ॥
तातें पूछ्यं निमित्त ज्ञानी, पुत्रीनो वर कुण ? ।
कयसे ए साच भाखो, हूं अछूं३ भल गुण ॥ कपि० ॥ ३७ ॥
मारसे जो साहसगति ने, सोई भलो भरतार ।
आप रूडो नहीं कुडो, तुम्ह हुसे किरतार ॥ कपि० ॥ ३८ ॥
तम जाण्यो जाय प्रभुजी, तेहथीए काज ।

---

१ प्रभुतावालो (हनुमन्त) २ ए फारसी भाषानो शब्द छे। तेनो अर्थ पाणी थाय छे ते उपरथी बनाएला लायक। ३ भलो कपट रहित।

दोहा (क्षेपक)

नानासाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
बजरंगी अंगोकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगी ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
मैं छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड जायेगी ।
अब जोश हमारा देख आपकी, होश हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'सुरेन्द्र' नी परे, चढ्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, बान मे विण हेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरोरे, सुभट दीधा मोड़ ।
प्रचंड बाण उडी जाण, तृण तणीतो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
प्रसन्न कीर्ति आवी लटीयो, लंड चित्त न चाय ।
दोई वीर विनोद चलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ते सुविचार कीधो, आज मुझे धिक्कार ।
स्वामीनानो काम विचमें, एह लगावी वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारी लेऊं में एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
ध्यान धारयो कर्यु, शोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
भांजी रथ मारथी भुजबंद, बांधी लीधा सोय ।
इम महेन्द्र नरेन्द्र माहीयो, सूरथी एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
नगर स्वामी छोड दीधा, आप प्रगटी नाम ।
मातने दुःख दीधो थो तुम्हे, तेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
स्वामी काजे जाऊं लंका तुम्हे प्रभुने पास ।
[illegible] ससैन्य साथीसाथी, पासमो बहु ग्राम ॥ कपि० ॥ २४ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] नाने, दोहीत्रो सिर चुंबे ।
[illegible] [illegible] मानना बहु, सज्जन स्या सुंब ॥ कपि० ॥ २५ ॥
कीजे तुम सुजस सुनीतो, आज दीठो आज ।

आपणो आप थकी शंकी, आप पावे लाज ॥ कपि० ॥ २६ ॥
स्वामी काम प्रयाण कीजे. पन्थ में कल्याण।
होईजो कही आप प्रभुने, चल्यो करी मण्डाण ॥ कपि० ॥ २७ ॥
वाटमें पर सिद्ध 'दधिमुख', आईयो इक द्वीप।
साधु दो काउसग्गे दीठा, ध्याने लीन अतिव ॥ कपि० ॥ २८ ॥
पाखतीही तीन कन्या, राखो मन एकन्त।
करे विद्या तणो साधन. दैवगति न लहन्त ॥ कपि० ॥ २९ ॥
लागीयो दवझाल पसरी. आवीयो प्रभु[1] धाय।
उदधीनूं जल आणी अधिकूं. लीयो तेह बुझाय ॥ कपि० ॥ ३० ॥
साधुवन्दी कहै कुंवरी, स्वामी सांभलो वात।
साधु उपद्रव टालीयोए, नहीं तो वलिजात ॥ कपि० ॥ ३१ ॥
तुम माहने लीये सिद्ध विद्या, एह हमारी जोय।
विणही काले फले तरुवर. एह अतिशय कोय ॥ कपि० ॥ ३२ ॥
पूछही प्रभु आप कौन तुम ? ताम दीये जवाब।
नगर 'दधिमुख' अछे नीको. अवर पुर में आब[2] ॥कपि०॥ ३३ ॥
रायतो गन्धर्व रूडा, कुसुम माला नार।
ए अमे छऊं तस कुंवरी, रतितणे अवतार ॥ कपि० ॥ ३४ ॥
खेचरा बहुतरे वांछा, करी विविध प्रकार।
तात नापे वेसी रह्या, मन अपूठे मार ॥ कपि० ॥ ३५ ॥
एक 'अंगारक' ज खेचर, धरे आशा अगाह।
कामवस्ये उन्मत्त हुओ. तात न करे विवाह ॥ कपि० ॥ ३६ ॥
ताते पूछ्यूं निमित्त ज्ञानी. पुत्रीनो वर कूण !।
थायसे ए साच भाखो. हूं अछूं[3] भल गुण ॥ कपि० ॥ ३७ ॥
मारसे जो साहसगति नें. सोई भलो भरतार।
रूपे रूडो नहीं रुडो. तुम्ह सुसे किरतार ॥ कपि० ॥ ३८ ॥
केम जाण्यो जाप प्रभुजी. तेहथीए काज।

---

१ पहुंताचालो (हनुमन्त) २ ए फारसी भाषानो शब्द छे। तेनो अर्थ पाणी थाय छे ते उपरथी पाणीवाला लायक। ३ भलो कपट रहित।

दोहा (क्षेपक)

नानामाकी नीति को, सुनकर म्हारी फाल ।
वज्ररंगी अंगोकुंवर, बोला शीघ्र सवाल ॥ १ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम—

मत करीये मगरूरी इतनी, धूल मांय मिल जायेगी ।
जब तीर हमारे चालेंगे, तब मनकी मनमें रह जायेगी ॥
मैं छोटा हूं या मोटा, यह भी मालूम पड जायेगी ।
अब जोर हमारा देख आपकी, होस हवा उडजायेगी ॥

ढाल मूलगी—

नृप महेन्द्र 'सुरेन्द्र' नी परे, चढ्यो पुत्र समेत ।
मांहो मांही युद्ध मच्यो, बान मे विण छेत ॥ कपि० ॥ १७ ॥
अंजना सुत आकरोरे, सुभट दीधा मोड ।
प्रचंड बाण उडी जाए, तृण तणीतो कोड ॥ कपि० ॥ १८ ॥
प्रसन कीर्ति आवी लडीयो, लडे चित्त न चाय ।
दोउं वीर जिनेर बलीया, आपसमें न टलाय ॥ कपि० ॥ १९ ॥
हनुमन्ते सुविचार कीधो, आज मुझे धिक्कार ।
स्वामीनानो काम चित्तमें, एह लगावी वार ॥ कपि० ॥ २० ॥
मारी लेऊं मैं एक क्षणमें, मायकुल-क्षयथाय ।
काम प्रारम्भ्यो करवूं, शोच उपज्यो आय ॥ कपि० ॥ २१ ॥
[illegible] रथ सारथी सुजबके, बांधी लीधा मांय ।
[illegible] महेन्द्र नरेन्द्र मारीयो, सूरथी एम होय ॥ कपि० ॥ २२ ॥
[illegible] छोड दीधा, आप प्रगटी नाम ।
[illegible] दीसो थो तुम्ह, नेहना ए काम ॥ कपि० ॥ २३ ॥
[illegible] नाहे लेवा तुम्ह प्रभुने पास ।
[illegible] पार्थावार्थी, पामसो बहु ग्राम ॥ कपि० ॥ २४ ॥
[illegible] नमे, दोहीत्रो शिर चूमे ।
[illegible] मद्दू, मदन ग्या छूव ॥ कपि० ॥ २५ ॥
[illegible] मूर्छागो, आंख दीठो आज ।

बेठो। तोड तसु उच्छाली तवही, नाम निज सुनाय दीयो जब ही ॥ सत्य० ॥ ७४ ॥

दोहा मूलगा—

अभ्र[1] थकी आदित्य[2] ज्यूं, नीकलीयो वडवीर।
आलन आवे रंचही, साणे रह्यो शरीर ॥ ५ ॥
तास कीयो प्राकारवर, नगरी लंका पास।
कर्पूरनी परे तोडके, नांखी दीयो आकाश ॥ ६ ॥
रखवालो प्राकारनो[3], वज्रमुखो तसुनाम।
मारी लीधो झूझतो, शूर समारे काम ॥ ७ ॥

ढाल गुनचालीशमीं

तर्ज—श्री महावीर स्वामी आया—(गजराकी)

हनुमन्त वीर आयो, असगाय[4] असुहायो,
सयण जने मन भायो, आग्यो जेम बुलायो ॥ टेर ॥ १ ॥
पवननो वंश कहायो, सुरतरु[5] सुहायो।
राय रायों कहायो, कुले कलश चढायो ॥ हनु० ॥ २ ॥
कदहीन थाये कायो, खले[6] जाय न खायो।
गुणी आले गीत गायो किणही नवि छायो ॥ हनु० ॥ ३ ॥
जगत में सुजश छायो, अंजनीनो रे जायो।
थिर करी पावठायो, न चले रे चलायो ॥ हनु० ॥ ४ ॥
रामने काम धायो, भलो बोल पायो।
भूपने चित्त भायो, खरी खबर लेई आयो ॥ हनु० ॥ ५ ॥
'वज्रमुखनी' कुंवारी, सा करे रोप भारी।
हनुमन्त साथे आई, मांडेरे लड़ाई ॥ हनु० ॥ ६ ॥
तेहना शस्त्र कापी, मूलगे रूप थापी।
जोर न कोई होवे, तब सम्मुख जोवे ॥ हनु० ॥ ७ ॥
मन्मथ बाणे वींधी, कहे वात सीधी।

---

१ बादला। २ सूर्य। ३ कोट। ४ शत्रु। ५ कल्पवृक्ष। ६ खल (कपटी) थी ठगाय नहीं।

कयों थी एटले पापी, मेलव्यो देव साज ॥ कपि० ॥ ३९ ॥
तुम समार्यांये शान्ती हुई, हुई विद्या सिद्धि ।
मास छठे सीजती, तुम दर्शन आज प्रसिद्धि ॥ कपि० ॥ ४० ॥
चरीत्र सघली कही भाखी, जाणीयो पति देव ।
कुंवरी हरखी नाम प्रभुजी, चालीयो तत खेव ॥ कपि० ॥ ४१ ॥
कुंवरीए मुख एह सांभली, मोहतो भूपाल ।
लेई दल नल रामपासे, आवीया ततकाल ॥ कपि० ॥ ४२ ॥
दान्त अडतीसमीं रे, करण काज वीराज ।
केशराज मुनिंद भाखे, आवीयो अति साज ॥ कपि० ॥ ४३ ॥

दोहा (गुड़ मल्हार रागे)

उतपतिने आवीयो, लंका समीपे जाम ।
विद्याने आशालीका, दीठो 'हनुमन्त' ताम ॥ १ ॥
काली निशा होय जेहवी, तेहवा तस आकार ।
घोर महारे डगमणी, बोले 'हनुमन्त' लार ॥ २ ॥
मति हीण ? कपी ? किहां चल्यो, करू आज आहार ।
थारही ए तनु तणू, तो तू जाणे सार ॥ ३ ॥

ढाल रूपक तर्ज ख्यडका—

हाथ झाली गदा वायु नन्दन तदा, चालीओ आवीयो दुरग पासे।
ताम अतिश्याम डगवणी छे घणी, विद्या आशा लीका एम भासे
॥ हाथ ॥ १ ॥ रे मति हीण कपि तूं किहां चालीयो, सीरामणी करूं आज तेरो । तुझ जिम मार जाण भली अटकली, जेम इहां और नहीं आवे फेरो ॥ हाथ ॥ २ ॥

दोहा सूलगा—

तास मुखमें पसारीयो, हनुमन्त पेठो मांय ।
फेरे तबे मारी गदा मुखलाणी मुख थाय ॥ ४ ॥

ढाल रूपक सूलणी

तिणीके मांयसे पेठो, उर्णीमे युद्ध करन बैठो, गदासे पिंडमसां

१. [illegible] ।

क्यों थी एटले पापी, मेलव्यो दव साज ॥ कपि० ॥ ३९ ॥
तुम समाधीये शान्ती हुई, हुई विद्या सिद्धि ।
माग छटे सीजती, तुम दर्शन आज प्रसिद्धि ॥ कपि० ॥ ४० ॥
चरी४ सघली कही भाखी, जाणीयो पति देव ।
कुंवरी हरखी नाम प्रभुजी, चालीयो तत खेव ॥ कपि० ॥ ४१ ॥
कुंवरीए मुख एह सांभली, मोहतो भूपाल ।
लेई दल बल रामपासे, आवीया ततकाल ॥ कपि० ॥ ४२ ॥
ढालए अडतीसमींरे, करण काज वीराज ।
केशराज मुनिंद भाखे, आवीयो अति गाज ॥ कपि० ॥ ४३ ॥

दोहा (गुड़ मल्हार रागे)

उतपतिने आवीयो, लंका समीपे जाम ।
विद्याने आशालीका, दीठो 'हनुमन्त' ताम ॥ १ ॥
काली निशा होय जेहवी, तेहवा तस आकार ।
घोर महारे रूपमणी, बोले 'हनुमन्त' लार ॥ २ ॥
मति हीण ? कपी ? किहां चल्यो, करू आज आहार ।
थारहीं ए तनु तणुं, तो तू जाणे सार ॥ ३ ॥

ढाल चोपक तर्ज खड़का—

हाथ झाली गदा वायु नन्दन तदा, चालीओ आवीयो दुरग पासे।
तान अतिस्याम रूपवणी छे घणी, विद्या आशा लीका एम भासे ॥ हाथ ॥ १ ॥ रे मति हीण कपि तूं किहां चालीयो, सीरमणी करूं आज तेरो । तुहीं जिम मारग जाणे भली अटकली, जेम इहां और नहीं आवे फेरो ॥ हाथ ॥ २ ॥

दोहा मूलगा—

तात सुकृत पसायथी, हनुमन्त पेठो मांय ।
फोडे तन मारी गदा मूकव्याणी मुख माय ॥ ४ ॥

ढाल चोपक मूलगी

निसरी के सांचरी पेठो, दुर्गमें युद्ध करन पेंठो, गदाले सिंहसमा

१ नचान वेलो ।

बेठो। तोड तसु उच्छाली तवही, नाम निज सुनाय दीयो जब ही ॥ सत्य० ॥ ७४ ॥

दोहा मूलगा—

अभ्र[१] थकी आदित्य[२] ज्यूं, नीकलीयो वडवीर।
आलन आवे रंचही, साणे रह्यो शरीर ॥ ५ ॥
तास कीयो प्राकारवर, नगरी लंका पास।
कर्पूरनी परे तोडके, नांखी दीयो आकाश ॥ ६ ॥
रखवालो प्राकारनो[३], वज्रमुखो तसुनाम।
मारी लीधो झूझतो, शूर समारे काम ॥ ७ ॥

ढाल गुनचालीशमी

तर्ज–श्री महावीर स्वामी आया—(गजराकी)

हनुमन्त वीर आयो. असगाय[४] असुहायो.
सयण जने मन भायो, आग्यो जेम बुलायो ॥ टेर ॥ १ ॥
पवननो वंश कहायो, सुरतरु[५] सुहायो।
राय रायों कहायो. कुले कलश चढायो ॥ हनु० ॥ २ ॥
कदहीन थाये कायो. खले[६] जाय न खायो।
गुणी आले गीत गायो किणही नवि छायो ॥ हनु० ॥ ३ ॥
जगत में सुजश छायो. अंजनीनो रे जायो।
थिर करी पावठायो. न चले रे चलायो ॥ हनु० ॥ ४ ॥
रामने काम धायो, भलो बोल पायो।
भूपने चित्त भायो. खरी खबर लेई आयो ॥ हनु० ॥ ५ ॥
'वज्रमुखनी' कुंवारी, सा करे रोष भारी।
हनुमन्त साथे आई. मांडरे लड़ाई ॥ हनु० ॥ ६ ॥
तेहना शस्त्र कापी, मूलगे रूप थापी।
जोर न कोई होवे. तव सम्मुख जोवे ॥ हनु० ॥ ७ ॥
मन्मथ बाणे बींधी. कहे बात सीधी।

१ बादला। २ सूर्य। ३ कोट। ४ शत्रु। ५ कल्पवृक्ष। ६ खल (कपटी) भी ठगाय नहीं।

तुम रूपे राची, करूं सेव साची ॥ हनु० ॥ ८ ॥
रावनो नेह लेवा, कीया एह केवा ।
अब तुम पाय लागो, सुदशा मुझ जागी ॥ हनु० ॥ ९ ॥
हनुमन्ते ताम परणी, करी आप घरणी ।
रात्री रही जाग आगे, प्रभुने काम लागे ॥ हनु० ॥ १० ॥
लक्ष्मणरे गेहे आवे, बहु सन्मान पावे ।
पाय प्रणमन्त पूरो, सहु वात में शूरो ॥ हनु० ॥ ११ ॥
आवीयो केणे कामो, कहतो अभिरामो ।
रावनी राणी आणो, करी सर्व दिशाकाणी ॥ हनु० ॥ १२ ॥
आवीये मोरे पाछो, थाए सर्व दिशा आछी ।
कीजीये रायराजो, नहीं तिणमरे काजो ॥ हनु० ॥ १३ ॥
लहु कहे रे जमाई१ !, समजाव्यो रे भाई ।
पारकी नार दीजे नहीं जीव रखीजे ॥ हनु० ॥ १४ ॥
थारे गुणा रीस लागी, अगड वेऊं मेरे जागी ।
सराके कवण चलसे, संग्राम में धीर टलसे ॥ हनु० ॥ १५ ॥

क्षेपक नहीं मूलगी

रावणरी कहां है फरमावो, वर्गाये देवरमण जावो, कोई मत कबुद्ध उपजावो । लहुका वचन मान लीधा, कपि का काराज सब सीधा ॥ सन्त० ॥ ७० ॥

ढाल मूलगी

नर आंका पासी, चडे वनमां है वासी ।
आईयो देखी सीता, वसुधा मांही विदिता ॥ हनु० ॥ १६ ॥
रावनो न्याय रोवे, न्याय नींद में न सोवे ।
[illegible] ए रागी, तिहूं लोके वखाणी ॥ हनु० ॥ १७ ॥
[illegible] अशोक[illegible], कोमनो जग विलोके ।
[illegible] हनुमन्ते ए दीठी ॥ हनु० ॥ १८ ॥

१ [illegible] २ [illegible] जमाई ३ [illegible] प्रमाणे रावण [illegible]
[illegible] ।

अलक१ तो गाल-फरसे, नयणे तो नीर वरसे ।
आगले कीच मातो, जाय अधिक ही थातो ॥ हनु० ॥ १९ ॥
वदन विलखो देखाय, हीमे जेम कमलनी थाय ।
प्रतिपदा२ चंद्र जेहवो, तनु देखीजे एहवो ॥ हनु० ॥ २० ॥
उष्णता३ श्वास वाले, अधरनी४ शोहटाले ।
ध्यायती राम नाम, नहीं अवरों सूं काम ॥ हनु० ॥ २१ ॥
मलिनछे वस्त्र वेषे, मलिन काया विशेषे ।
देवी विदेही माता, देखतां लहीये साता ॥ हनु० ॥ २२ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–गवरल ईसरजी

वातां सुनके पतो लगायो, हनुमन्त नवल बागमें आयो, सीता माता की शुद्ध पायो । सीता झूले विखाके मांही कपि छिटकावे मूंदड़ी ॥ सीता माता का खोला में हनुमत डारी मूंदड़ी॥टेर॥१॥

ढाल मूलगी

विद्याए गुप्त होई, मूंदडी आणे सोई ।
मायनी गोद मूके, प्रभुनी शीख न चूके ॥ हनु० ॥ २३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज–गवरल ईशरजी

सीता देखत ही पहीचानी, याहै रघुवर की सहीलाणी । यहां पर कौन जिनावर आणी । मनमें करी कल्पना लेकर कण्ठ लगाई मूंदडी ॥ सीता माता की ॥ २ ॥

पू० रेख–श्री नथमलजी म० कृत क्षेपक तर्ज–पपैया काहे मचावत शोर ।
मुंदरीया कैसे आवे इण ठाय ॥ टेर ॥
मुन्दरिया या प्रभुजी के करकी, खिण भर अलगी न थाय॥मु. ॥१॥
देख मुन्दरी प्रति सिय इनपर, बोलत मुख से वाय ॥ मु० ॥ २ ॥
अरि मुन्दरी तूंभी बिछुरी, प्रभु की सगी हुई नाय ॥ मु० ॥ ३ ॥
आज थकि ए सिय जानकी, सहु पतीन न माय ॥ मु० ॥ ४ ॥
एह मुन्दरी अलग हुई सो, प्रभु विपत के मांय ॥ मु० ॥ ५ ॥
एम कहत चित अति अकुलानी, नयनों में नीर चलाय ॥मु०॥६॥

१ चोटलो । २ एकमरो चन्द्रमा । ३ ऊना । ४ होटनो शोभा ।

ढाल क्षेपक मूलगी

[illegible]गे प्रभुजी तो मरीया, हाय यह काम क्या करीया. वचन [illegible] दीन उच्चरीया। लायो कुण नर सुर या पंखी, जानकी [illegible] माहिं शंकी ॥ मत्प० ॥ ७६ ॥

जानकी मनमें बिलखानी, आपद ए आई अनजानी, करे दुःख [illegible] की रानी। वामाङ्ग फुरक्यो तिनवारी, शकुन तब थापे गुणकारी ॥ मत्प० ॥ ७७ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज मल्ली जिन बाल ब्रह्मचारी ॥

काग तुम यहांसे उड़जाना।
राम बसे वनवास जिन्हीकी खबर तुरत लाना ॥ टेर ॥
आगम निगम की बात जगतमें, तुमसे नहीं छांना।
काल दुकाल जोग विजोगन, बरते जे थांना ॥ काग० ॥ १ ॥
काग [illegible] शिरमन मांही, गावे पुराणा।
[illegible] भारभरीने ध्याऊं, वंछित फल पाना ॥ काग० ॥ २ ॥
आगोज मामसें आदर देवे, अधिका सन्माना।
[illegible] भावसूं तुम सन्तोषे, पीछे खाय खाना ॥ काग० ॥ ३ ॥
राम र लिछमन कुशल हुवेतो, तज दो ठीकाणा।
[illegible] जाय बैठजो, तुम्ह मम कुण स्याणा ॥ काग ॥ ४ ॥
[illegible] बानकड़ी सीताजी, हियमें हर्षाना।
[illegible] काग उडानभयन्ते, सीता मान मांना ॥ काग ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

[illegible] नयन निरखी, सीतामनमांहे हरखी।
[illegible] सराई, किल्या नाथजी आई ॥ हनु ॥ २४ ॥
[illegible] आई सुनाई, लंकपति हरषाई।
[illegible] आज सुनाली, रंगमांहि रमाली ॥ हनु ॥ २५ ॥
[illegible] बात नाहीं, तुमसूं कहाई।

---

* [illegible] त्रिजटा नामक [illegible] जो सीता के पास रही थी। इस लिये यहां [illegible] के बदले त्रिजटा को समझे।

मोकली फेरनारी, मानसे वात थारी ॥ हनु ॥ २६ ॥
स्वामीं नूं काम करवा, पापसूं पिण्ड भरवा ।
वनविषे पांवधारे, सुख किस्यु इन्कारे ॥ हनु ॥ २७ ॥
राजियां राय राजे, रावण राय विराजे ।
राणियां तूं ही रूडी मेलवे वात कूड़ी ॥ हनुमा ॥ २८ ॥
नग जड्या हेमनीका पीतले थाय फीका ।
असरखे पुरुष तीका, न लहै शोभजीका हनु ॥ २९ ॥
दैव गयो थो वगांसी जाम जोवे विमासी ।
आणी लंकेश मेली, थाय अब क्यूं न भेली ॥ हनु ॥ ३० ॥
हूं अने अवर रमणी, अछां हंसगमणी ।
ताहरी दासी थासां, ताहरूं दीधूं खासां ॥ हनु ॥ ३१ ॥
काने साहो रे छाली, तेहनी एहवी वाली ।
पुरुष थी न होय अलगी, विषय आग जव सलगी ॥ हनु ॥ ३२ ॥
स्वामीजी नियम लीधा, साधुजी ए रे दीधा ।
अण इच्छन्ती दारा कीया तस परिहारा ॥ हनु ॥ ३३ ॥
तेहथी वार वारं, आवूं हूं पास थारं ।
स्वामी ने स्वामी जाणे, आवे वात सहु ठाणे ॥ हनु ॥ ३४ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

'रावण' ने पति पणे कीजे, काज ज्यूं वंछित ही सीजे, नर भव को लाहो ही लीजे । सती कहै बोले किण दावे, निलर्ज तुझ लाज नहीं आवे ॥ सत्य ॥ ७८ ॥

ढाल मूलगी—

आडीयो भाली देसूं, एहना प्राण लेसूं ।
एहवी वात कही वे, जाणमे शीघ्र लहे वे ॥ हनु ॥ ३५ ॥
आवीयो राम स्वामी, अन्तरनोरे जामी ।
लक्ष्मण वीर भणीयो, नणद पति जेणे हणीयो ॥ हनु ॥ ३६ ॥
मारीयो कन्त देखे, प्रत्यक्ष एह पेखे ।
माहरो बोल ए साचो, जाणीजे जग में जाचो ॥ हनु ॥ ३७ ॥

भूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज अलगी रहनी—

दोय निजंक सीता इम बोले, सुन मन्दोदरी वाणी ।
सुहागी चटका करवाऊं, तो जाणे रघुवर राणी ॥
अलगी रहनी, तुज दूती ने कुण छेडे ।
तूं केम पडी मुज केडे ॥ अलगी रहनी ॥ १ ॥
रे पापण कुल हीणी कूड़ी, रूडो वात न सूजे ।
दूर रह तूं क्यूं मन्नावे, सीता इण पर गूंजे ॥ अलगी ॥ २ ॥
रीमाणी राणी अकुलाणी, किम जाणी शे पोले ।
मुठी उपाडी सीता ऊपर, हनुमन्तजी तब बोले ॥ अलगी ॥३॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज मत्रि पतीरा भरन कैसेजाना।

इम बोले हनुमन्त वानी, तूं सुनले मन्दोदरी रानी ॥ टेर ॥
'रावन' यह अकारज कीनो, विप घोल हलाहल पीनोजी ।
आखिर में होसी हानी ॥ इम बोले ॥ १ ॥
सती सीता ने हर लायो, यह कुजश मुल्क में छायोजी ।
देवर ने वस्तु बीरानी ॥ इम ॥ २ ॥
तुम घर में यह नहीं रहसी, फिट फिट सघला केसोजी ।
है ज्ञान हरनकी नीसानी, इम ॥ ३ ॥
राम प्रबल बलधारी, लक्ष्मन की छवि है न्यारीजी ।
नहीं रावन घर अगवानी ॥ इम ॥ ४ ॥

(दोहा क्षेपक)

प्रगटायो निज रूपनं, दीठो हनुमन्त नैण ।
मन्दोदरी मुकलित है, कडवा आकरा वैण ॥ १ ॥

[illegible] मुनि कृत ढाल क्षेपक तर्ज–मनवा [illegible]–

मन्दोदरी कहे सुणो जमाई, आकांई मूंडी कीधी ।
[illegible] में [illegible], मनो गल्याने लीधी । म्हाने मूंडोलागोजी
[illegible] तो मैरा कर्मो, मूजन भागोजी ॥ टेर ॥ १ ॥
[illegible] सिणगार्ने, कोई विनाशी पैतो ।
[illegible] ॥ म्हांने० ॥ २ ॥

नीच कामतो दूत पणा को, करतां लाज न आवे ।
सात पीडीमें कलंक लगायो, थो समपूत जब थावे ॥ म्हांने० ॥३॥
हनुमन्त भाखे सुणो सासुजी, मैंतो आछो कीधो ॥
छोड़ अन्यायी न्यायी झेल्यो, 'राघव' शरणो लीधो ॥
मैंतो साचू बोलूंजी, झूंठ तणो पखपात तजीने रामने झेलूंजी ॥टेर॥४॥
दूत पणा करता रयूं मेंणी, भडवा पणेछे म्हेणी ॥
तुझे भडवी कहूंके दूती, देखलीची तुझ रेंणी ॥ मैंतो० ॥ ५ ॥

स्वा० नेमीचदजी म० कृत क्षेपक-ढाल तर्ज-लावणी

पाछी जावण लागी बोल सुण अबको, उभी रहे मन्दोदर नार लेती जा लबको ॥ टेर ॥ अपर सुणो मेरी बात राम जोरूठो, थने लांबी पहिरामी हाथ हियो क्यों फूटो । थांरो अल्प दिनोको सुख जाणजे खूटो २ ओ सतियों केरो मुख वचन नहीं हुवे झूठो ॥ जोवचनज झूठो होय जगत होय डबको ॥ उभी० ॥ १ ॥ तूं इणपे आई चलाय वचन इम बोली २ कुलनी आब गमाय लाजने खोली, तुझमें नहीं गुणसार फली ज्यो फोली ॥ सज आई सिणगार जगत की गोली जो होय सती का लछ वचन कहे हबको ॥ उभी० ॥ २ ॥ भोग दलाली काज बनी तूं दूती, लम्पट का सुन बोल चढी किम भूति लागी इणके केड हड़कणी कुती, इण लखणो के न्याय पडे शिर झूती, कुलखणी बगडाल उठ्यो क्यों भभको ॥ उभी० ॥ ३ ॥ अब आवे छे रघुनाथ रावणना जमजे, पहरी लम्बी नणदल हाथ अबे नहीं समझे । मैं काडा कया बोल दोषतूं खमजे, सेठा राखो नेम पियु नेदमजे, सुर्योदय की आश पडे जद झबको ॥ उभी० ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी—

लाजनां बीज खोई, धीठी में धीठी होई ।
कां मुझने खीजावे, नाम परही पुलावे ॥ ह० ॥ २८ ॥
भूपने आयी भाग, पेलो पाणी न्हाख ।
बोलत कांईन राखे, ए फल तूंन पासे ॥ ह० ॥ ३० ॥

(दोहा क्षेपक)

रानी कहै रावन भणी, हा हा थयो अकाज ।
हनुमन्त मुज फिट फिट करी; बहु लाजी मैं आज ॥ १ ॥

धनचन्दजी कृत ढाल क्षेपक–तर्ज कन्दोरे कूंची लटके सखी तागचलके कहै मन्दोदरी सांभलोरे मतकीजो, ए कारजमहा दुःखदाय आप मानीलीजो परनारी की संगतमतकीजो, या सतियां मांयशिरोमणी रे मतकीजो ॥ मैं देर्यां नाय तपाय मानमेरी लीजो परनारी की संगतिमतकीजो ॥ १ ॥ थाणी चढ चाआकसीरे मतकीजो, उण परवाह नहीं तिलमात नाथमानीलीजो परनारी, कोइ उपाय कियां थकोरे मतकीजो, था हरगिज नावेहाथ वातमानी ॥ पर ॥ २ ॥ शठ जिसहटकरजो मति मानीलीजो, ग्यो जगमे अपयश छाय मान मेरीलीजो ॥ पर ॥ एमसुणी रावन कहै रे मत कीजो । तूं महिलां मे जाय । मानमेरी पर ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी–

दोई दो दिशे ताणी, दोईमे कौन शाणी ।
सती नारि सनेह, शीला उपरे त्रेण ॥ हनु ॥ ४० ॥
पड्या तावने मेहो, खोट मां है रे खेड़ो ।
जीतने अति भारी, सा कहै मोई आयो ॥ हनु ॥ ४१ ॥
ढाल नी ए कहावी, ग्रीम नवमी सुहावी ।
देशी रही शील दावे, केशरजी गावे ॥ हनु ॥ ४२ ॥

(दोहा आसावरी रागे)

हनुमन्त तब प्रगट भयो, प्रण में सीता पाय ।
राम सु लक्ष्मण कुशल छे, सुन्न मानो तुम माय ॥ १ ॥
आप तुम्हे कौन छो कहो, उदधि तयों क्यूं एह ?
आज भले कैर थान के किम्यूं करो छो नेह ॥ २ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज ख्याल ठेगरजी रहेतो–

तब सै कैहे हनुमन्त वाणी, माता तू क्यां चिन्ता आणी, रघुवर फेर्या है संचारा । हुन की सेवा थी रघुवर जाय तुम देदी मूंदड़ी ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झुझार।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली सिमलितकरी, पहेलो मोकलो दूत।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्युं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजचियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायां राय कहायो, दल बल सबल मिलायो।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो।
अहिनाणी विण कोन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो१ मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊ।
अवसर साध्यां आदर पामूं, नहींतर भोर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल चेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

वात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय।
सीता भाखेतोड मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल बाग में, युद्ध करी बल पूर।
वृक्ष ऊपाडी किया अधोमुख, पकड़ उच्छाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे वनचर, करे किम्यूं ए काम।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीडा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो तिण ठाम।
कहै सीता इतना कुण स्वामी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥ ५ ॥

१ माथ रो मोर – २ मूर्ख

साहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज ।
कीधो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

क्षेपक — राधे श्याम रामायण में से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह ।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥

बोली-हनुमान ! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छे तो हैं ।
लक्ष्मण जी की क्या हालत, ? भाई के साथ नीके तो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समझा ओतो ।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी ।
मुझ दुःखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी ॥
प्यारे को प्यारी मुन्दरी यह, लायाहूं बतौर निशानी के ।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों धान रहे वे पानी के ॥
लंका पर डङ्का बाजेगा अब समय वह आने वाला है ।
विश्राम प्रेम दिल में धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
सूरज के होने तक है क्या, जो जरा अंधारी रह जावे ।
जब अह्ला आवे गंगा में तब मल्ला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा —

देवी वियोग तुम्हारडे, राम तपे दिनरात ।
[illegible] पावक तपे, तपे जेम तरु जात ॥ ५ ॥
निशि हो वासरो, दिसतो हो फिरन्त ।
[illegible] तुम बिछोहीयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
[illegible] कोई घनघने, कहीं ही शोग सोच ।
[illegible] स्वामीनो, आरती अति आलोच ॥ ७ ॥
[illegible] [illegible], करे घणी निज [illegible] ।
[illegible] दिन [illegible] नेहथी, पण आरतीय [illegible] ॥ ८ ॥
कटक [illegible] रहो, आदि नृप सुग्रीव ।
[illegible] [illegible] मन्त्रो, आरति [illegible] अतीव ॥ ९ ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष ।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झझार ।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकल्यो दूत ।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्यूं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय ।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमी— तर्ज राजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायों राय कहायो, दल बल सबल मिलायो ।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो ।
अहिनाणी विण कोन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणी१ मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊं ।
अवसर साध्यां आदर पामूं, नहींतर भोंर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

वात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय ।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय ।
सीता भाखेतोड़ मतलाजे, लाजे पड्या उठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल बाग में, बुद्ध करी बल पूर ।
वृक्ष उपाड़ी किया अधोमुख, पकड़ उछाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम ।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीडा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो तिण ठाम ।
कहै सीता इतना कुण खासी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥५॥

१ माथ रो बोर — रत्न

साहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज ।
कीधो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

क्षेपक:— राधे श्याम रामायण में से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह ।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥

बोली-हनुमान ! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छेतो हैं ।
लक्ष्मण जी की क्या हालत, ? भाई के साथ नीकेतो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समझा ओतो ।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी ।
मुज दुःखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी
प्यारे को प्यारी मुन्दरी यह, लायाहूं बतौर निशानी के ।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों धान रहे बे पानी के ॥
लंका पर डङ्का बाजेगा अब समय वह आने वाला है ।
सिराम प्रेम दिल में धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
सूरज के होने नाब है क्या, जो जरा अंधारी रह जावे ।
जब अहला आवे गंगा में तब भला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा—

देवी वियोग तुम्हारडे, राम तपे दिनरात ।
दावानल परवत तपे, तपे जेम तरु जात ॥ ५ ॥
मात विछो हो वाळडो, हिमंतोही फिरन्त ।
लक्ष्मण तुमविछो हीयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
कदीही क्रोधे धमधमे, कदी ही शोगे सोच ।
करता वरने स्वामीजी, आरती अति आलोच ॥ ७ ॥
[illegible] पति ममसारणी, करे वर्णा निज दास ।
[illegible] दिन लीने नेहथी, पर आरतीय ईश ॥ ८ ॥
[illegible] भिन्नो छ पकडी, आदि नृप सुग्रीव ।
[illegible]

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झुझार।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकलो दूत।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्यूं छे सुत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज गजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायों राय कहायो, दल बल सबल मिलायो।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो।
अहिनाणी विण कोन पतिजे, एरे बडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो[1] मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊ।
अवसर साध्यां आदर पामूं. नहींतर भोर [2] कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

बात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय।
सीता भाखेतोड़ मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल बाग में, युद्ध करी बल पूर।
वृक्ष ऊपाड़ी किया अधोमुख, पकड़ उछाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम।
भूमी पड्या लाजेतुम भाग्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीड़ा रंगकरी फल लायो. पुंज कीयो तिण ठाम।
कहे सीता इतना कुण स्वामी. कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥ ५ ॥

१ माथ नो बोर – स्मूर्त

साहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज ।
कीधो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

दोहा:— राधे श्याम रामायण मे से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह ।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥

बोली-हनुमान ! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छेतो हैं ।
लक्ष्मण जी की क्या हालत, ? भाई के साथ नीकेतो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समझा ओतो ।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी ।
मुझ दुःखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी ॥
प्यारे की प्यारी मुन्दरी यह, लायाहूं बतौर निशानी के ।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों धान रहे वे पानी के ॥
लंका पर डङ्का बाजेगा अब समय वह आने वाला है ।
दिढ़ राम प्रेम दिल में धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
कागज के होते नाव हैं क्या, जो जरा अंधारी रह जावे ।
जब अहल्ला आवे गंगा में तब भला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा—

देखी वियोग तुम्हारडे, राम तपे दिनरात ।
दावानल पावन तपे, तपे जेम तरु जात ॥ ५ ॥
मास दिसे हो वाल्हा, हिमंतोही फिरन्त ।
लक्ष्मण तुमविण होयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
कदीहि करे धमधमे, कदी ही रोगे मोष ।
कारण बोलै स्वामीजी, आरती अति आलोच ॥ ७ ॥
बाला पति मनरावणी, करे घणी निस दीस ।
[illegible] दिन लीवे नेहथी, पण आरतीय ईस ॥ ८ ॥
[illegible] लियो छे एकलो, आदि नृप सुग्रीव ।
[illegible] [illegible] मनो, आरति वन्त अतीव ॥ ९ ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष ।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झुझार ।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकलो दूत ।
खबर करे सीतातणी, तिहां किस्यूं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय ।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायाँ राय कहायो, दल बल सबल मिलायो ।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो ।
अहिनाणी विण कौन पतिजे, एरे बडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो[1] मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊ ।
अवसर साध्यां आदर पासूं, नहींतर और २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल चेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

वात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय ।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय ।
सीता भाखेतोड मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल बाग में, युद्ध करी बल पूर ।
वृक्ष ऊपाडी किया अधोमुख, पकड़ उच्छाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम ।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीडा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो निज ठाम ।
कहे सीता इतना कुण खासी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥ ५ ॥

१ माथ रो बोर — चूडामणि

साहस गति नृप मारीयो, वा नर पतिने काज ।
कीधो किष्किंधा पुरी, उस्वामी विराजे आज ॥ ४ ॥

क्षेपक:— राधे श्याम रामायण मे से

हनुमान के वचन सुन, मिटा सभी सन्देह ।
दूत जान रघुराज का, हुआ हृदय से नेह ॥
बोली-हनुमान ! कुशल सब है, प्राणों के नाथ अच्छेतो हैं ।
लक्ष्मण जी की क्या हालत, ? भाई के साथ नीकेतो हैं ॥
किस तरह अंगूठी आई यहां, यह बात मुझे समझा ओतो ।
किस तरह तुम्हारा साथ हुआ, यह बात मुझे बतला ओतो ॥
फिर यह बतलाओ, महाराज रहते हैं शाद भी कभी कभी ।
मुझ दुःखिया को वे दुःख-भंजन, करते हैं याद भी कभी कभी ॥
प्यारे की प्यारी मुन्दरी यह, लायाहूं बतौर निशानी के ।
हां, अच्छे हैं दोनों भाई, ज्यों धान रहे वे पानी के ॥
लंका पर डङ्का बाजेगा अब समय वह आने वाला है ।
दिलदार प्रेम दिल मे धरिये, फिर राम बचाने वाला है ॥
सूरज के होते ताब है क्या, जो जग अंधारी रह जावे ।
जब अदला आवे गंगा में तब भला बुरा सब बह जावे ॥

दोहा मूलगा—

देवी वियोग तुम्हारडे, राम तपे दिनरात ।
दावानल परवत तपे, तपे जेम तरु जात ॥ ५ ॥
राम विछोहा बाळडो, हिमंतोही फिरन्त ।
लखमण तुमविछो होयो, आरति अधिक करन्त ॥ ६ ॥
कदीहा क्रोध धनवमे, कदी ही रागे मोच ।
करुण करे स्वामीतो, आरती अति आलोच ॥ ७ ॥
कारज करि समझावतां, करे घणी निज रीस ।
अब दिन कीजे केटलां, पण आरतीय ईश ॥ ८ ॥
कहक मिल्यो छ एकटो, आदि नृप सुग्रीव ।
मटे सनमटल सम्हो, अरति वन्न अर्नाव ॥ ९ ॥

वीर विराध वीराजीयो, सुभट पणे सुविशेष ।
महेन्द्रादिक मोटका, खेचर अवर अशेष ॥ १० ॥
एक एक थी आगला, सुभट महा झूझार ।
शूर वीरने साहसी, अम्बर थम्भन हार ॥ ११ ॥
पंचमिली मिसलितकरी, पहेलो मोकलो दूत ।
खबर करे सीनातणी, तिहां किस्यूं छे सूत ॥ १२ ॥
वानर सहु अवलोकीया, वानर पतिने दाय ।
कोईन आव्यो तामहूं लीयो बुलाई माय ॥ १३ ॥

ढाल चालीशमीं— तर्ज राजवियोंने राज पीयारो—

राजा राघव रायां राय कहायो, दल बल सबल मिलायो ।
खबर करेवा हूं मोकलीयो, आयो के प्रभु आयो ॥ राजा ॥ १ ॥
मुद्रिका प्रभु करनी आणी, तेहथी जाण्यो साचो ।
अहिनाणी विण कोन पतिजे, एरे वडांकी वाचो ॥ राजा ॥ २ ॥
देवो चूडोमणो१ मुझने वेगी, वेगे अपूठो जाऊ।
अवसर साध्यां आदर पामूं, नहींतर भोर २ कहाऊं ॥ राजा ३ ॥

ढाल चेपक तर्ज ख्याल की, मुनि श्री किशनलालजी कृत•

वात पूर्वली सुनी जानकी, हर्ष हिये न समाय ।
हनुमन्त भाखे करो पारणो, वनफल लाऊं जायजी ॥
इकवीश दिनोंसूं, सीता सतवन्ती कीनो पारणो ॥ टेर ॥ १ ॥
देव रमन उद्यान में सकोई, अमृत फल सुखदाय।
सीता भाखेतोड मतलाजे, लाजे पड्या ऊठायजी ॥ इक ॥ २ ॥
लेवनगयो रसाल बाग में, बुद्ध करी बल पूर ।
वृक्ष ऊपाड़ी किया अधोमुख, पकड़ उच्छाले दूरजी ॥ इक ॥ ३ ॥
सीता भाखे सुनरे बन्धव, करे किस्यूं ए काम ।
भूमी पड्या लाजेतुम भाख्यो, राक्षसनो भय पाम ॥ इक ॥ ४ ॥
क्रीडा रंगकरी फल लायो, पुंज कीयो तिण ठाम ।
कहे सीता इतना कुण खासी, कीनो पाप निकामजी ॥ इक ॥५॥

१ माथ रो मोर — २ मूर्ख

भावे जितना आप अरोगे, मैं खाऊं अपर तमाम ।
परम मोदमें कियो पारणो, भूख गमाई ताम जी ॥ इक ॥ ६ ॥
संकट टलियो धर्म प्रसादे, फली मनोरथ माल ।
देख पराक्रम राम दूतका, बोले सीता बालजी ॥ इक ॥ ७ ॥
धन्य मात जिन उदर धरीयो, राखन सगला सूत ।
चिरंजीव तूं आनन्द मांही, वाह रे अंजनी पूतजी ॥ इक ॥ ८ ॥

ढाल मूलगी

रघुवर प्रभुनी पामी सीता, अभिग्रह पूराणो ।
हनुमन्त हाथे दिन इक वीशमें, भोजन तो लेवाणो ॥ राजा ॥४॥
सीता भाखे चूडामणी लेओ, वेगही वेग सिधावो ।
रघुवर ल्यां थी ए पापीथी, मतिरे असाता पावो ॥ राजा ॥ ५ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज मूंदडीकी—

मैया भूखो भोजन पाऊं, देवो हुकम तोड़ फल खाऊं, दरखत तोड़ २ फल खाऊं ॥ अरम अपना बल दिखलाऊं, इस विध लायो मूंदडो ॥ सीता माता० ॥ ९ ॥ केहवे सीता सुन हनुमान, यहां है निशिचर अति बलवान, तोड़ मार गिरावे आन ॥ फिर में गुस्से के मर जाऊं, यहीं रह जावे मूंदडो ॥ सीतामाता ॥ १० ॥

ढाल मूलगी—

हनुमन्त नाम हमीने बोले, मांने वातन जाणी ।
प्रभू परमादे कंठो देवो, बोले अविकूं ताणी ॥ राजा० ॥ ६ ॥

क्षेपक तर्ज राधेश्याम (राधेश्याम रामायणमें से)

बोली सीता तुम छोटे से पर्वताकार हैं निशिचारी ।
कैसे जीतोगे लड़कर के आश्चर्य है यह मुझको भारी ॥
इतना सुनते ही हनुमत ने, पर्वत सुमेरु सा अंग करा ।
दिखलाकर जनक दुलारी को, मनका सब संशय दूर हरा ॥
बोले बलशाली नहीं इसमें, कुछ नहीं तारीफ हमारी है ।
यह तो है राम प्रताप प्रबल, और पूर्ण कृपा तुम्हारी है ॥
यह सुनके प्रसन्न भई रानी, पुन सीता ने सन्तोष किया ।
हनुमन्त गुणों बल सागर हो, हर्षित यह आशीर्वाद दिया ॥

ढाल मूलगी

तुझने तो खांधे बेसाड़ी, लेई जाऊं आजो ।
रावन राक्षकनां दल मोड़, तो जाणो शिर ताजो ॥ राजा ॥ ७ ॥
सीता भाखे एसब साचो, जेय कहो तेम करस्यो ।
सीता नाम धर्यों थी तो, पर पुरुष न जाने फरस्यो ॥ राजा ॥ ८ ॥
जेती ढील करो छो तेती, प्रभुने आरती थासे ।
धर्म नहीं हमने तुम कहवो, स्वामी वसे दुःख वासे ॥ राजा ॥ ९ ॥
वानर जात तणी चपलाई, रावण राक्षस देखे ।
रामचंद्र ना सेवक एहवा, मनमें भय सुविशेषे ॥ राजा ॥ १० ॥
सत्य वती कहे प्रभु सूं कहजो, नाम तणे आधारे ।
जीवी छूं हूं के मरी जाती, विरह देव तुम्हारे ॥ राजा ॥ ११ ॥

क्षेपकः— राधेश्याम

इन वृक्षांपर माता देखो, फल कैसे शोभा देते हैं ।
सुन्दरता अन्त भई सुन्दर, सुन्दर मन को हर लेते हैं ॥
दोचार तोड़ फल खालूं में, एसी तबियत में आय रही ।
आज्ञा देदो माता मुझको, तबियत मेरी लल चाय रही ॥
सीता बोली इन वृक्षांपर के, बेटा अनेक भट रखवाले हैं ।
तोड़ना फलों का दूर रहा, मारे जाते आने वाले हैं ॥

(दोहाः— क्षेपक)

खाने फल इस बागके, बेटा ! टेडी खोर ।
देख लेंय यदि निशाचर, तोडा लेंगे चोर ॥

क्षेपक राधेश्याम

इस तुच्छ निशाचर दलका क्या, मनमोच किया तुमने भारी ।
कुछ दुःख नहोवे तुमकोतो, आज्ञा दे दीजे महतारी ॥
परवाह न कुछ रखवालों की, परवाह द्वन्द मचाने की ।
परवाह फक्त मोय माता है, श्री मुखसे आज्ञा पाने की ॥
मन मुदित आज्ञा देदीजे, देखो क्या रंग दिखा ऊंगा ।
इस लंक पुरी की सैनाको, रणविद्या आज सिखा ऊंगा ॥

(ताप तुम्हारे से जननी, रामादल आज उजागर हो ।
विजयी हो पवन पुत्र रणमें, भयभीत दुष्ट दशकन्धर हो ॥
बल बुद्धि देखकर हनुमन्त की, सीयको कुछ २ विश्वास हुवा ।
असमंजस दूर हुवा मनका, चिन्ता का तनक विनाश हुवा ॥
बोली मीठे फल खावो सुत, फल मीठे रहे नसीब तुम्हे ॥
आशिर्वाद विजयी होवे, मीठेफल हो नसीब तुम्हे ॥

ढाल मूलगी–

लेई चूडामणीने चाल्यो, 'सीता' ने पगे लागी ।
देव रमण ये वनने भांजवा, हनुमन्तनी मति जागी ॥राजा॥ १२
'रक्ताशोक' विपथे रे निसुणो, बकुल विषय अकुलाणो ।
अकरणा अति आम्र भांजवा, अमर्ष तो अधिकाणो ॥ राजा ॥१३॥
'चम्पक' माथे कम्पन आणे, मंद अति मन्दोर ।
निर्दय 'कदली' दल कांपवा, फली ज्यो वन मोर ॥ राजा ॥१४॥

दोहा राधेश्याम —

आंखों भरजो देखी डाली, उस तरु में वह डाली न रही ।
है नजर डाल जिस डाल पे, कपि वह डाल गिरी लाली न रही ॥
फल लाल २ चुन २ खावे, कच्चे २ नीचे डाले ।
[illegible] न पड़ फल वृक्षोंपर, जो पड़ा पवन सुतके पाले ॥
[illegible] डाली से उस डाली पर, कपि कूद २ कर जाता था ।
[illegible] तोड़ तोड़ कुछ खाता था, कुछ सागर बीच बहाता था ॥
[illegible] अशोक वाटिका की, फिर सारे वृक्ष हिला डाले ।
कुछ तोड़ जमीं पर डाल दिये, कुछ सागर बीच बहा डाले ॥

— ढाल मूलगी —

[illegible] ।
[illegible] ॥ राजा ॥ १५ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ राजा ॥ १६ ॥

घुरको करी कपि सामी अयो, जाये नाम पुलाया।
एक एक थी आगे नासे, खायारे यहां खाया ॥ राजा ॥ १७ ॥
जाई पुकार्यो राजा रावण, वानर भांजी वाडी।
मखरा तरु तो कांई न गख्यूं. वाडी सर्व ऊजाड़ी ॥ राजा ॥१८॥
कोई ना हथियार छिनाया, कोई खाधा फाडी।
कोई ना मुख कान विलूर्यां, इज्जत तो अति पाड़ी ॥ राजा ॥ १९ ॥
सुभट लेई नृप-नन्दन आयो, दोई लड़िया भारी।
वानर तो बल वन्त विशेषे, सोई लीधा मारी ॥ राजा ॥ २० ॥

रूपक—राधेश्याम

फुर्ति से कपि मारी छलांग, दिल पर था लेश नहीं भयका।
मारी इक लात घुमा कपिने, दिया तोड कलेजा अक्षयका ॥
अक्षयगिरते सब सैन भगी, दौड लंका में आई है।
भय भीत पुकार करें भारी, लंका पति तेरी दुहाई है ॥
कुछ अंग भंग निशिचर कीने, कुछ पकड़ जमीं से मार दिये।
अध मरे भाग कुछ असुर गये, कुछ पैरों नीचे कुचल दिये ॥
मर्दन सब असुर किये पल में, थर थर थर सब थर्रा तेथे।
अब नहीं भूल यहां आवेंगे, कहते यों भागे जाते थे ॥
वा अमन पहुंच जावें गढ़में, ईश्वर का ध्यान लगावेंगे।
जिन्दे जब तक रहे दुनियों में, इससे लडने नहीं आवेंगे ॥
उस कपि बलकारी भटने, फुलवाडी तोड़ २ डाली।
विध्वंस अशोक वाटिका की, मुतलक न रही वहां हरियाली ॥
जहां सघन लगाये भारी थे, तहां नाथ हो गया उजियाला।
क्या बयान करें हम वानर का महाराज मार हमको डाला ॥
करतूत याद कर २ उस की, दिल दहमत भारी खाता है।
गात कीट पतंग सम नाथ भई, हरजां वोही दिखलाता है ॥
कर अंग भंग छोडा हमको, दुर्गति भी कीनी भारी है।
हम जय अशोक वाटि कामें, अब ताकत नहीं हमारी है ॥
सूरत जब यादकरें उसकी, दिल बीच उठे प्रभु होलाई।

यह काल कराल प्रलय आया, या अजल कालका शोला है।
यह वानर है या आफत है, बलवीर घोर बलवां का है।
हिम्मत नहीं सन्मुख जानेकी, छुप २ पेड़ांसे झांका है॥
अक्षय कुमार के मरतेही फिर पैर हमारे ऊखड़ गये।
ले जान लङ्क को भागदीये, भयभीत हुवे सबपछाड़ गये॥
अक्षय कुमार का मरनासुन, दशकंधर शोचमें छाया है।
क्या कल्पना चढ़ी बड़ी मनको, फिर धीर हृदयमें लाया है॥

दोहा क्षेपक—

प्रबल बली दश कन्धने, सबै बंधाया धीर।
बुलाया दरबार में, इन्द्रजीत बलवीर॥
बैठा अशोक वटिकाबीच, एक महाबली कपि आया है।
अक्षय कुमार को लातमार, जिसने सुर धाम पठाया है॥
कुछ सुभट साथमें लेजाओ, सीधे अशोक उपवन जाओ।
जिस तौर बने उगतीर पुत्र, कैदी कर कपि को ले आओ॥

सवैया—

बन्दि के विदेह नन्दनी के पद कञ्ज द्वन्द, पैठ्यो वाटिका में द्वार पालन सहार के। खाये फल भार डार तोरि के उखारे तरु, बाग [illegible] उजार्यो राम-जस को उचार केयूथप समेत भट किंकर हजारन [illegible] बांधि के विकल्ल [illegible] अक्ष को पछार के। कालसो कराल [illegible] नादको बेहाल किनो, केशरी कुमार वीर सुभटनको मारके॥१॥
दूर किये देख घननाद को निनाद किनो, मार के समग्र सैन्य भट सट कर्यो सटाकटे। लातन की चोट से महान रथ घोडे चार, सारथी संहार सट २ कर्यो सटाकटे॥ विश्व त्रिलोकी बर बैरि को [illegible] कीन कर्यो [illegible] कर्यो कटाकटे। केसरी किसोरी [illegible] लोटी पट २ कर्यो पटाकटे॥२॥

राग मूलतानी--

[illegible] इन्द्र जीत आवे।
[illegible] ॥ गाना ॥ ८१ ॥

क्षेपक राधे श्याम—

गर्जना नई अन्दाज नया, सामान नया सब साज नया।
दिन आजनया रण रागनया, रणको आया रणवाज नया॥

ढाल मूलगी—

पहिलातो बाणांसूं लड़िया, विविध परे बलवन्ता।
खडग आदे आयुद्ध छतीसे, सम्वाहे मति मंता॥ राजा॥ २२॥
इन्द्र जीतजी जेजे मूके शस्त्र महा दुःखदाई।
विचेहीथी छेदी नांखे, वानर एह बढाई॥ राजा॥ २३॥
इन्द्र जीतना भट तबधाया, जाये सघला नाठा,।
वारं अगज! अनेरा आगे, वानर थी अति त्राठा॥ राजा॥२४॥
भट भागा शस्त्र बल भागो, इन्द्रजीत नवी नाठा।
नाग पास बाणेकर वानर, बांध लीयो अति काठो॥ राजा॥२५॥
आणी मेल्यो रावण आगे, रावण हर्ष नमावे।
सेवक तूं आजन्म तणो मुझ, आज रामे चिन्त दीधो॥राजा॥२७॥
वनवासी फल शाकाहारी, मेला लूगडां लासो।
भील किम्पूं तूंशो पूरसे, थारा मननी आसो॥ राजा॥ २८॥
अवर कामनी नीठपडी थी, इहां कोई आवे।
अवतो प्राण पल्याछे सांसे, छूटेवा नविपावे॥ राजा॥ २९॥
पहीलो थो भाणेज जमाई, प्राण थकी ही प्यारो।
बन्दी वान हुवो अववेगे, सीता लेई पधारो॥ राजा॥ ३०॥
ओनो धूता धूर्त शिरोमणी, आप चली क्यूं नाया।
अंगा रातो अति धग धगता, भलिपरे हाथ गहाया॥ राजा॥ ३१॥
सेवक वर महाराछो थोरी, अवरें दूत कहायो।
ते माटे रे अवध्य अछेयण, एह विटम्ब करायो॥ राजा॥ ३२॥
हूंतो सेवक कदको थारो, कदका तुम मुझ स्वामी।
लाजन पामो झूठ कहतां, साच न मानो कामी॥ राजा॥ ३३॥
एक वार पवनं जय राजा, आयो थो बोलायो।
वरण तणा बन्दी खाना थी, रवर खेचर छोडायो॥ राजा॥ ३४॥

यह काल कराल प्रलय आया, या अजल कालका शोला है।
यह वानरहै या आफतहै, बनवीर बोर बलवां काहै ।
हिम्मत नहीं सन्मुख जानेकी, छुप २ पेडांसे झांका है ॥
अक्षय कुमार के मरतेही फिर पैर हमारे उखड गये।
लेजान लक को भागदौये, भयभीत हुवे सबपछाड़ गये ॥
अक्षय कुमार का मरनासुन, दशकंधर शोचमें छाया है।
क्या कल्पना बड़ी बडी मनको, फिर धीर हृदयमें लाया है॥

दोहा क्षेपक—

प्रबल बली दश कन्धने, मन बंधाया धीर।
बुलवाया दरबार में, इन्द्रजीत बलवीर ॥
बैठा अशोक वाटिकाबीच, एक महाबली कपि आया है।
अक्षय कुंवार को लातमार, जिसने सुर धाम पठाया है॥
कुछ सुभट साथमें लेजाओ, सीधे अशोक उपवन जाओ।
जिस तोर बने उसवीर पुत्र, कैदी कर कपि को ले आओ ॥

सवैया—

बन्दि के विदेह नन्दनी के पद कञ्ज द्वन्द, पैठ्यो वाटिका में द्वार पालन संहार के। खाये फल भार डार तोरि के उखारे तरु, बाग को उजार्यो गत-जग को उचार केयूथप समेत भट किंकर हजारन को बांधि के विपन्न सन्ध अच्छ को पछार के। कालसो कराल भट नायको बेहाल किनो, केशरी कुंवार वीर सुभटको मारके॥१॥
दूर किने देर घननाद को निनाद किनो, मार के समग्र सैन्य भट भट कर्यो सटाकदे। लातन की चोट से महान रथ घोड़े चार, सारथी संहार भट २ कर्यो सटाकदे॥ विश्व विलोकी वर बैरि को निरखी कोप कर्यो छूटी छोक छट कर्यो छटाकदे। केसरी किशोर [illegible] बांधुगे [illegible] [illegible] [illegible] में लांगी पट २ कर्यो पटाकदे ॥२॥

तर्ज मुसाफिर—

कहे सुभट [illegible] [illegible] [illegible]. इन्द्र जीत आवे।
निर्भीक [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] दावे ॥ राजा ॥ ३१ ॥

क्षेपक राधे श्याम—

गर्जना नई अन्दाज नया, सामान नया सब साज नया।
दिन आजनया रण रागनया, रणको आया रणबाज नया॥

ढाल मूलगी—

पहिलातो बाणांसूं लडिया, विविध परे बलवन्ता।
खडग आदे आयुद्ध छतीसे, सम्बाहे मति मंता॥ राजा॥ २२॥
इन्द्र जीतजी जेजे मूके शस्त्र महा दुःखदाई।
विचेहीथी छेदी नांखे, वानर एह बढाई॥ राजा॥ २३॥
इन्द्र जीतना भट तनघाया, जाये सघला नाठा,।
वारं अगज! अनेरा आगे, वानर थी अति त्राठा॥ राजा॥२४॥
भट भागा शस्त्र बल भागो, इन्द्रजीत नवी नाठा।
नाग पास वाणेकर वानर, बांध लीयो अति काठो॥ राजा॥२५॥
आणी मेल्यो रावण आगे, रावण हर्ष नमावे।
सेवक तूं आजन्म तणो मुझ, आज रामे चिन्त दीधो॥राजा॥२७॥
वनवासी फल शाकाहारी, मेला लूगडां लासो।
भील किस्यूं तूंगी पूरसे, धारा मननी आसो॥ राजा॥ २८॥
अबर कामनी नीठपडी थी, इहां कोई आवे।
अबतो प्राण पत्याछे सांगे, छूटेवा नविपावे॥ राजा॥ २९॥
पहीलो थो भाणेज जमाई, प्राण थकी ही प्यारो।
बन्दी वान हूवो अबवेगे, सीता लेई पधारो॥ राजा॥ ३०॥
ओतो धूना धूर्त शिरोमणी, आप चली क्यूं नाया।
अंगा रातो अति धग धगता, भलिपरे हाथ गहाया॥ राजा॥ ३१॥
सेवक वर महाराजो घोरी, अबरे दूत कहायो।
ते माटे रे अवध्य अछेयण, एह विटम्ब करायो॥ राजा॥ ३२॥
हूंतो सेवक कदको थागे, कदका तुम मुझ स्वामी।
लाजन पामो झठ कहेतां, साच न भाखे कामी॥ राजा॥ ३३॥
एक वार पवनं जय राजा, आयो थो बोलायो।
वरुण तणा बन्दी खाना थी, तम सेवक छोडायो॥ राजा॥ ३४

एक वार हूं पण आयो थो, स्वामी नो तेडायो ।
खल गुने रणमें घेर्यो थो, तब तुम्हाने मेल्हायो ॥ राजा ॥ ३५ ॥
धर्म पक्षनो मान कराणो, पाप पक्षे नविरेणो ।
लम्पट नरसूं वात करन्तां, पापे पिण्ड भरेणो ॥ राजा ॥ ३६ ॥
म्हारो हूंतो कोई न देखूं, अनुज एकने जीती ।
गणो है जे तुमने गाजे, वसुधा वात विदीती ॥ राजा ॥३७॥

ढाल दीपक तर्ज चाँदनी-स्वामी श्री नथमलजी कृत-

सुन महाराजा कटुक वचन मुखसे थी कबहुन बोलीये ।
कहे कपिराजा इण वचनों सुनो, अमल सुगव मनतो लीये ॥टेर॥
रघुवर की नारी हरलायो, जगमें तुझ अपजश छायो ।
थे कुलने कालो लगायो, सुन महाराजा ॥ १ ॥
है सीता सत्यवन्ती नारी, तिनकूं तूं जाणे कहूं प्यारी ।
कहूं मोन आईस, गर थारी ॥ सुन ॥ २ ॥
सुग्रीव भामण्डल महाराजा, प्रभु सेवे आणा शिरताजा ।
वेरी करे करसी काजा ॥ सुन ॥ ३ ॥
लक्ष्मण रणमें जब अरसी, क्रोडां ही सुभट तिहां मरसी ।
कहो उनरी होड कुण करसी ॥ सुन ॥ ४ ॥
है कोड शिलाने उठाई, सुरनर मिलने सुजश गाई ।
[illegible] बल सबने छाई ॥ सुन ॥ ५ ॥
[illegible] वात वदी आणी, जे भाखीथी केवल नाणी ।
[illegible] छे वाणी ॥ सुन ॥ ६ ॥

ढाल मुलगी-

[illegible] वचन नीर बहु वाहे ।
[illegible] मुखोडो तुं चाहे ॥ राजा ॥ ३८ ॥
[illegible] शिला शिर मारी ।
[illegible] एक मारी ॥ राजा ॥ ३९ ॥

[illegible]

[illegible] रावण? क्यूं

१ [illegible]

छाती मुझ छोले । मुझे कुण मार लेवे मूंडो, ऊंणीको दीसे छे भूंडो ॥ सत्य व्रत ॥ ७९ ॥

ढाल मूलगी—

एम सुणी कोप्यो अति वानर, नाग पास ने तोड़े ।
कमल नाल ज्यूं कुंजर बांध्यो, कहो कवण नर छोड़े ॥ राजा ॥ ४० ॥
विधुत पात तणी परे पड़ियो, रायनो मुकुट पाड़ी ।
खण्डो खण्ड करीने नांखे, कौण विचारी वाडी ॥ राजा ॥ ४१ ॥
ग्रहो ग्रहो रावण भारवे, रीसघणी विस्तारी ।
ताम सलंक निशंक पणेरे, विध्वंसी निरधारी ॥ राजा ॥ ४२ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

सहश्र थम्भ मेलही पारे, लंकाको विध्वंसे ज्यारे, कोलाहल मचियो है सारे । राम को दूत ही आयो, प्रलय सो करने देखायो ॥ सत्य० ॥ ८ ॥

(वैष्णव मत की रामायण मे हनुमानजी से लंका दहन काकथन इस प्रकार है) व्याख्यान में कहना या न कहना वक्ता की इच्छा पर निर्भर है (नागफास में बधे हुवे हनुमानजी को मारने के लिये रावण सुन के भटः पवन सुत के पास आये)

तर्ज मूंदड़ी की—

जबतो मारन उसको लागे, वसनहीं चलता हनुमंत आगे, निशिचर देख २ कर भागे । यूं नहीं मरु मैं हरगिज मेरे पास संजीवन मूंदड़ी ॥ सीतामाता० ॥ ११ ॥ मैं तो मौत बताऊं मेरी, लावो तेल रुई तुम गहरी, अबतो मत कर रावन देरी । पूंछको बांधके आग लगावो जल्दी मचावे मूंदड़ी ॥ सीतामाता० ॥ १२ ॥ सब लंका की रुई मंगाई उससे पूंछ बांध लपटाई, दीना ऊपर तेल गिराई । उसने आग लगाई देख याद कर लीनी मूंदड़ी ॥ सीतामाता० ॥ १३ ॥ पहिले रावन सन्मुख आई, बांकी दाढ़ी मूछ जलाई, पीछे लंका मे फिरवाई । लंका जला दीनी हनुमान हिया विचराली मूंदड़ी ॥ सीतामाता ॥ १४ ॥ लंका फिर २ के जल-वाई, घर एक विभीषण का नाहीं, बाकी सब पर आग लगाई

समुद्रमें जाय बूजाई पूंछ कारज कर लीनो मूंदडी ॥ सीता माता० ॥ १५ ॥

दोहा क्षेपक—

सीता पासे आवीयो, अब जाऊं छूं मात ।
चरी सुनाईने चल्यो, ले नारी ने साथ ॥ १ ॥

ढाल मूलगी-

क्रीडा रंग करीने रंगीलो, आयो वारम लाई ।
राम नमी चूडामणि आप्यू, लीधो कण्ठ लगाई ॥ राजा ॥ ४३ ॥
चूडामणि छातीमुं चांप्यो, जाणे सीता आनी ।
आज मिली वारुं वारुं, फरसे हैये लगावी ॥ राजा ॥ ४४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पन्नजी मूंडेबोल—

अरज रघुवरसेरे, कही हकिकत नाथ जानकी बड़ी जिगरसेरे ।टेर।
सिंहनाद कर कपट दशानन, सीता हरी कदरसेरे ।
लेआयो गढ़ लंक मांय, रथ बैठ अधरसेरे ॥ अरज ॥ १ ॥
बाग अशोकमें जाय उतारी, बहुत डरे निशि चरसेरे ।
राक्षसणी सहु रात कहंदे, बडो फजरसेरे ॥ अरज ॥ २ ॥
हाथ जोड हनुमन्त सीया सुध, कही हकीकत हरसेरे ।
जपे निरन्तर राम आपने, आंसू बरसेरे ॥ अरज ॥
बात सुनी मूर्छा प्रभुका, व्याकुल चित्त अन्दरसेरे ।
प्राणप्रिया सीता सतवन्ती, विपतमें तरसेरे ॥ अरज ॥ ४ ॥

क्षेपक सवैया—

कहे श्री राम सुनो हनुमान, कछु सुद्ध अछे सियके जिय मांही ।
है सब लंक निसांही कलंक रावन की चन ही चन छांहो ॥
जीवत है अब सीता सती, सब्बयोग गई हमने बिछुरांही ।
प्राणके पड पंकजमें, सब अन्न भोजन पावत नांही ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

सिता हवांथी मिलियो आशी, बीचे हुवाने कामी ।
देवकलां प्रभुने सुणाया, भलो भलो कहे रामो ॥ राजा ॥ ४५ ॥
हाल सहित वाली मनों, सीता शुद्ध लहाणी ।

केशराज' राघव सुखपायो, सभा सहुहर खाणी ॥ राजा ॥ ४६ ॥

दोहा रामग्री रागे

'राम नाम रलियामणो, राम नाम थो एक ।
सोता शुद्ध लही इहां. राम स्वरूपअनेक ॥ १ ॥
राम अने लक्ष्मण भला, सुग्रीवादिकदेख ।
सुभट महा शूरापणे, कटक मिल्यो सुविशेष ॥ २ ॥
भामण्डल मण्डलपति, वड वानर नल नीर ।
जम्भवान अंगज भला, कपिपति नन्द सलील ॥ ३ ॥
श्री महेन्द्र महिमानीलो, पवनंजय नो पूत ।
प्रबल महाबलि आगलो, रावण सषलाम्रत ॥ ४ ॥
वीर विराध विशेपीयो, राम सुपेण उदार ।
इत्या दिक नामे भला, अवर लहै कुण पार ॥ ५ ॥

ढाल चेपक तर्ज जगतगुरु तृशला नन्दन वीर ॥

रामहुकम तिण अवसरेरे, वानर लाखों कोड़ ।
आवी मिलोया एकठारे, दोड़े होडा होड़ ।
सती की वार चढे रघुबिर टेर ॥ १ ॥
आयुध छतीसे करधरेरे, बकतर टोपनी आव ।
हय गय रथ भट दीयतारे, पायक रयाछे फाब ॥ सतीकी ॥ २ ॥
निज २ रा परिवारसुंरे, जाई मिलीयो साथ ।
शूरा रण रसमें रमेरे, मिलीया चाली चाथ ॥ सतीकी ॥ ३ ॥
सिभो सिधावो सिद्ध करोरं, करजो स्वामनो काम ।
मतना पूठ देखाल जोरं, ज्यूं वधसी तुम्ह मान ॥ सतीकी ॥ ४ ॥
विविधा युध भलके तिहांरं. हर्प वदन हूंमीयार ।
किप्कि धाथी चालीयारे, श्री रघु वर तिणवार ॥ सतीकी ॥ ५ ॥

दोहा मूलगा—

विद्याधर विद्याभली, मिलोया केई कोड़ो ।
वाहर ए सीता तणी, आणी मही चहोडी ॥ ६ ॥
आप आपणे साथमें, नौवत केरोनाद ।

समुद्रमें जाय बूजाई पूंछ कारज कर लीनो मूंदड़ी ॥ सीता माता० ॥ १५ ॥

दोहा क्षेपक—

सीता पासे आवीयो, अब जाऊं छूं मात ।
चगी सुनाईने चल्यो, ले नारी ने साथ ॥ १ ॥

ढाल मूलगी-

क्रीडा रंग करीने रंगीलो, आयो नारम लाई ।
राम नमी चूडामणि आप्यु, लीधो कण्ठ लगाई ॥ राजा ॥ ४३ ॥
चूडामणि छातीसुं चांप्यो, जाणे सीता आवी ।
आज मिली थाकं थाकं, फरसे हैये लगावी ॥ राजा ॥ ४४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पनजी मुंडयोल—

अरज सुणरसेरे, कहो हकिकत नाथ जानकी बड़ी जिगरसेरे ।टेर।
सिंहनाद कर कपट दशानन, सीता हरी फन्दरसेरे ।
ले आयो गढ़ लङ्क मांय, रथ बैठ अधरसेरे ॥ अरज ॥ १ ॥
बाग अशोकमें जाय उतारी, बहुत डरे निशि चरसेरे ।
राक्षसी सह [illegible], घड़ी फजरसेरे ॥ अरज ॥ २ ॥
हाथ जोड़ हनुमन्त सीया मुख, कही हकीकत हरसेरे ।
[illegible] निरख राम आंखमें, आंसु नगसेरे ॥ अरज ॥
बात पूरी सुणी प्रभुका, व्याकुल चित्त अन्दरसेरे ।
प्राणप्रिया सीता सत्यवन्ती, विपतमें नगसेरे ॥ अरज ॥ ४ ॥

क्षेपक सवैया —

कहै श्री राम सुनो हनुमान, कछु सुद्ध अंध सियके जिय मांही ।
है सब देह विनाशी कलंक रावन को वन ही वन छांहो ॥
[illegible] है अब सीता सती, [illegible] हमने विछुरांही ।
[illegible] पद [illegible], पन [illegible] पावन नांही ॥ १ ॥

ढाल मूलगी —

[illegible] आयो, [illegible] हुवांज कायो ।
[illegible] ॥ राजा ॥ ४५ ॥
[illegible], [illegible] ।

केशराज' राघव सुखपायो, सभा सहुहर खाणी ॥ राजा ॥ ४६ ॥

दोहा रामग्री रागे

'राम नाम रलियामणो, राम नाम थो एक ।
सीता शुद्ध लही इहां. राम स्वरूपअनेक ॥ १ ॥
राम अने लक्ष्मण भला, सुग्रीवादिकदेख ।
सुभट महा शूरापणे, कटक मिल्यो सुविशेष ॥ २ ॥
भामण्डल मण्डलपति, वड वानर नल नीर ।
जम्भवान अंगज भला, कपिपति नन्द सलील ॥ ३ ॥
श्री महेन्द्र महिमानीलो, पवनंजय नो पूत ।
प्रवल महावलि आगलो, रावण सघलाभूत ॥ ४ ॥
वीर विराध विशेषीयो. राम सुषेण उदार ।
इत्या दिक नामे भला, अन्नर लहै कुण पार ॥ ५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज जगतगुरु त्रशला नन्दन वीर ॥

रामहुकम तिण अवसरेरे. वानर लाखों कोड ।
आवी मिलीया एकठारे, दोड़े होडा होड़ ।
सती की वार चढे रघुबिर टेर ॥ १ ॥
आयुध छतीसे करधरेरे, बकतर टोपनी आव ।
हय गय रथ भट दीपतारे, पायक रयाह्रे फाव ॥ सतीकी ॥ २ ॥
निज २ रा परिवारसुंरे, जाई मिलीयो साथ ।
शूरा रण रसमें रमेरे. मिलीया घाली बाथ ॥ सतीकी ॥ ३ ॥
सिधो सिधावो सिद्ध करोरे, करजो स्वामनो काम ।
मतना पूठ देखाल जोरे, ज्यूं वधसी तुम्ह मान ॥ सतीकी ॥ ४ ॥
विविधा युध भलके तिहांरे. हर्ष वदन हसीयार ।
किष्कि धाथी चालीयारे, श्री रघु वर निरधार ॥ सतीकी ॥ ५ ॥

दोहा मूलना—

विद्याधर विद्याभली, मिलीया केई कोड़ी ।
चादर ए सीता तणी, आणो सही बढोड़ी ॥ ६ ॥
आप आपणे साथमें, नोवत करोनाद ।

समुद्रमें जाय बूजाई पूंछ कारज कर लीनो मूंदडी ॥ सीता
माता० ॥ १५ ॥

दोहा क्षेपक—

सीता पासे आवीयो, अब जाऊं हूं मात ।
नमी सुनाईने चाल्यो, ले नारी ने साथ ॥ १ ॥

ढाल मूलगी-

क्रीडा रंग करीने रमोलो, आयो नारम लाई ।
राम नमी चूड़ामणि आप्यू, लीधो कण्ठ लगाई ॥ राजा ॥ ४३ ॥
चूड़ामणि छातीमें चांप्यो, जाणे सीता आनी ।
आन मिली वारंवार, करमे हिये लगानी ॥ राजा ॥ ४४ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज पनजी मुंडेबोल—

अरज सुणज्योरे, कहो हकिकत नाथ जानकी पड़ी जिगरसेरे ॥टेर॥
सिंहनाद कर कपट दशानन, सीता हरी कदरसेरे ।
ले आयो गढ़ लंक मांय, रथ बैठ अंबरसेरे ॥ अरज ॥ १ ॥
बाग अशोकमें जाय उतारी, बहुत डरे निशि चरसेरे ।
राक्षसी सहु राम कहंद, पड़ी फंदरसेरे ॥ अरज ॥ २ ॥
हाथ जोड़ हनुमन्त सीया सुध, कही हकीकत हरसेरे ।
नैर निरख राम आगले, आंसू बरसेरे ॥ अरज ॥
बात सुणी सुग्रीव प्रभुका, व्याकुल चित्त अन्दरसेरे ।
प्राणप्रिया सीता सत्यवन्ती, विपतमें नरसेरे ॥ अरज ॥ ४ ॥

क्षेपक सवैया—

कहे श्री राम सुनो हनुमान, कछु सुद्ध अंक सियके जिय मांही
है सत [illegible] कलंक रावन को वन ही वन छांही ॥
[illegible] है अब सीता सती, [illegible] गई हमने बिछुराही ।
[illegible] पंकजसे, मन [illegible] भोजन पावत नांही ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

[illegible] आयो, बांचे हृदय कामो ।
[illegible] सुग्रीव [illegible], भलो भलो कहे रामो ॥ राजा ॥ ४५ ॥
[illegible] सीता सुद्ध [illegible] ।

केशराज' राघव सुखपायो, सभा सहुहर खाणी ॥ राजा ॥ ४६ ॥

दोहा रामग्री रागे

'राम नाम रलियामणो, राम नाम थी एक ।
सीता शुद्ध लही इहां, राम स्वरूपअनेक ॥ १ ॥
राम अने लक्ष्मण भला, सुग्रीवादिकदेख ।
सुभट महा शूरापणे, कटक मिल्यो सुविशेष ॥ २ ॥
भामण्डल मण्डलपति, वड वानर नल नीर ।
जम्बवान अंगज भला, कपिपति नन्द सलील ॥ ३ ॥
श्री महेन्द्र महिमानीलो, पवनंजय नो पूत ।
प्रबल महाबलि आगलो, राखण सबलाभूत ॥ ४ ॥
वीर विराध विशेषीयो, राम सुषेण उदार ।
इत्या दिक नामे भला, अवर लहै कुण पार ॥ ५ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज जगतगुरु त्रशाला नन्दन वीर ॥

रामहुकम तिण अवसरेरे, वानर लाखों कोड़ ।
आवी मिलीया एकठारे, दोड़े होडा होड़ ।
सती की वार चढे रघुबिर टेर ॥ १ ॥
आयुध छतीसे करधरेरे, चकनर टोपनी आव ।
हय गय रथ भट दीपतारे, पायक स्याछे फाव ॥ सतीकी ॥ २ ॥
निज २ ग परिवारसंरे, आई मिलीयो साथ ।
शूर रण रसमें रमेरे, मिलीया घाली बाथ ॥ सतीकी ॥ ३ ॥
सिघो सिधावो सिद्ध करोरे, करजो स्वामनो काम ।
मतना पूठ देखाल जोरे, ज्यूं वधनी तुम्ह मान ॥ सतीकी ॥ ४ ॥
विविधा युध भलके तिहांरे, हर्ष चंदन हूंमीयार ।
किष्किं धाथी चालीयारे, श्री रघु वर तिणवार ॥ सतीकी ॥ ५ ॥

दोहा मूलगा—

विद्याधर विद्याभली, मिलीया केई कोड़ी ।
बाहर ए सीता तणी, आवी मही महोड़ी ॥ ६ ॥
आप आपणे साथमें, नौबत केरोनाद ।

[illegible] नो गाजीरणो, सुण्यो न जावे साद ॥ ७ ॥
शुभ वेला शुभ मुहूर्त, शुभही शकुन विचार ।
गगन पन्थ चाल्या सहू, राघवजीनी लार ॥ ८ ॥

[illegible] शर्मी - तर्ज भूली मालण है सत्यगुरु—

'राघव' आवो गोहो, सुभट सगला शूर ।
उलटा नीकल्यो, जेम दलनो पूर ॥ राघव० ॥ १ ॥
विविध वाहन विविध यान, विविध वेश विशेष ।
विविध [illegible] विविध नेजा, विविध रथ नरेश ॥ राघव ॥ २ ॥
विविध घोडा विविध हाथी, विविध रथ नर होई ।
विविध नो हथियार हाथे, विविध बाजा जोई ॥ राघव० ॥ ३ ॥
विविध [illegible] विविध नभ, [illegible] अभिराम ।
विविध [illegible] चाले, विविध परिवार राम ॥ राघव० ॥ ४ ॥
[illegible] हयांनो हिंसार ।
[illegible] अधिको, रथनणा चित्कार ॥ राघव० ॥ ५ ॥
[illegible] सुभट केरा, पडे कायर प्राण ।
[illegible] वाजे, [illegible] प्रमाण ॥ राघव० ॥ ६ ॥
[illegible] विमाने, कोई तो गजराज ।
कोई [illegible] रथ कोई [illegible] गगने चालिया गाज ॥ राघव० ॥ ७ ॥
[illegible] गिरिपाशी ।
[illegible] 'समुद्र सेतु' स्वामी ॥ राघव० ॥ ८ ॥
[illegible] कोई [illegible], कोई [illegible] ।
[illegible] संग्राम ॥ राघव० ॥ ९ ॥
[illegible] 'नल' बांध्यो 'नील' ।
[illegible] कोई न करी ढील ॥ राघव० ॥ १० ॥
[illegible] दिवा थान ।
[illegible] ॥ राघव० ॥ ११ ॥
'समुद्र' [illegible] प्रधान ।

[illegible]

आणी 'लक्ष्मण' भणी दीधी, पामीने सन्मान ॥ राघव० ॥ १२ ॥
रात रही ने प्रातः चाल्या, राय 'सेतु' 'समुद्र'।
साथ लाग्या भर्म भाग्या, हुवा अधिक अक्षुद्र ॥ राघव० ॥ १३ ॥
सुवेलाद्री चाली आया, तिहां राय 'सुवेल'।
जीती लीधो साथ किधो, कान लागी वेल ॥ राघव० ॥ १४ ॥
लंका नगरी प्रत्ये चाल्या, हंस द्वीपे जाय।
'हंस रथ नृपे जीतने तिहां, रह्या राघव राय ॥ राघव ॥ १५ ॥
आशनो आवीयो राघव, मीन रासे मन्द।
संचर्यो सघलोही जाण्यो, राय रवीनो नन्द ॥ राघव ॥ १६ ॥
लंकाने ए ग्रह लाग्यो, लंकनो रे विणास।
होय शे एमही जाणो, लोक पाम्या त्रास ॥ राघव ॥ १७ ॥
युद्धने सम्बाहीये अति, होई अति हुंसीयार।
लंकपति सामन्त शूरा, महा झुंझणहार ॥ राघव ॥ १८ ॥
नामथी 'मारित्र' मोटो, 'हस्त' राय 'प्रहस्त'।
सारणादिक सहस केई, निशाचर मदमस्त ॥ राघव ॥ १९ ॥
लंकपति रणतूर ताजा, केई कोडी तैयार।
ताडिवा आदेश आवे, शौर्यनो नहीं पार ॥ राघव ॥ २० ॥
लंकपति सूं लहु आतो, करे ए अरदास।
कांई उतावला थाओ, शोचमे सुखवास राघव ॥ २१ ॥
अणविमास्यो काम कीधो, ते पाटो कुल लाज।
अजहुं आतुर होईयांथी, नहीं सुधरे काज ॥ राघव ॥ २२ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत, ढाल क्षेपक तर्ज रुपये लो कल्दार—

अरज करूं मैं वारम्वार, सुनो वीर! शे करो विचार ॥टेर॥
कहे विभीषण सुनहु रावण पाछी देदो ये परनार ॥ अरज ॥ १ ॥
या नहीं माने तू क्यूं ताने, जाने सब जग नारि सिरदार ॥अरज॥२
प्राण गमासी जात लजासी, गासी लोक सब संसार ॥अरज ॥ ३ ॥

---

१ मन्द—यानि शनैश्चर मीनराशी पर, लंका मेष राशी पर लगा है।

म्हारी आंन नपावे, जिय दुःखपावे, जिणसूं कहूं छूं धरकरप्यार ४
दूजो वानों थई है अख्यानों, जाता लंक ने कीधी खुवार ॥५॥
कोट शिला उठाई वडी है पुणवाई, न्याई करता पर उपकार ॥६॥
लोक हसासो फिर पछतासो, पासो परभव दुःख अपार॥अरज७॥
ये नहीं जीतो होसी फजीतो, वांका पुण्य है अपरम्पार ॥अरज८॥

(रावणो वाच) तर्ज नई लावणी की—

कहै दशकन्धर सुनो विभीषण, वात सुणोनी इकम्हारी.
राम लिछमन दोय भीलड़ा म्हारे ऋद्धिनो नहीं पारी ॥कहै॥१॥
कुम्भ कर्ण सा वीर हमारे, प्रबल बली कहो कुन पाले ।
इन्द्रजीत मेघजीत इन्द्रने, रणमे बाण कहो कुणझाले ॥ कहै २ ॥
कनक कोट समुद्रसी खाई, भाई विभीषण सुण लीजे ।
गज रथ चार अक्षोहणी म्हारे, नाहक वाद नहीं कीजे ॥कहै ॥३॥
[illegible] देव नो नये [illegible]. पवन देवता अंगन झारे ।
[illegible] उदक हमारे, कहो अबहूं किणरे मारे ॥ कहै ॥ ४ ॥
[illegible] मुख दके चांदड़ा, ऋद्धि देख सुरपति लाजे ।
[illegible] [illegible] [illegible], तीन खण्ड मैने साजे ॥ कहै ॥ ५ ॥
[illegible] गिरि सम कंचन गजे, वाजा शोभ अपार लहै ।
[illegible] सीता [illegible] जावे, पापकनो कुणपार कहै ॥ कहै ॥ ६ ॥
[illegible] राम और लछमन दोई, सीता ने कामूं प्यारी ।
[illegible] [illegible] [illegible] कीनो, पर्ण मांहो अधि कारी ॥ कहै ॥ ७॥

[illegible] —

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ गावत ॥ २३ ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ गावत २४ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । गावत । २५ ॥

इन्द्रकी श्री थकी अधिकी, ताहरी छे देव ।
कांई खोवे रंक होवे, एक करी अह मेव ॥ राघव ॥ २६ ॥
इन्द्र जीत कहन्त काका, जन्म डरपण माहि ।
दूषित कीधूं तातनूं कुल, तात सहोदर नाही ॥ राघव ॥ २७ ॥
इन्द्र जीत ए नाम म्हारो, इन्द्र जीतूं जंग ।
कौण लक्ष्मण राम राजा, रहूँ तूं रसरंग ॥ राघव ॥ २८ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज– होगी की–सुगाणा मूलचन्दजी कृत—

इन्द्रजीत कहै सुण काका, थे दूध लजाया माका ॥ टेर ॥
रावण राय नरांसुर नायक, खण्डत्रय जश जांका ।
पकडी टेक कवहू न छोडे, थे क्यों करो निकमा हाका ॥
जानो नहीं पराक्रम म्हांका ॥ इन्द्रजीत० ॥ १ ॥
राम रु लिछमन दोय भीलडा, वनमांही वास उनोंका ॥
दल बलको कछु जोर न जिनों के, निकमा बतावो धाका ॥
जानों नहीं तेज लंकाका ॥ इन्द्रजीत० ॥ २ ॥
वक्त पड्यां देवेला वारो, ए लक्षण हैं थांका ।
निर्बल शीख देवे क्षत्री कूं, धिक् २ जन्म जिनांका ॥
लेवां सही जीत पताका ॥ इन्द्रजीत० ॥ ३ ॥

ढाल मूलगी—

पेला थे छेतर्यो रावण, भाख्यो झूठी बात ।
मारीयो मैं राय दशरथ, एह तुझ अवदात ॥ राघव० ॥ २९ ॥
इहां माहरी दाढ मांहे, आवीया छे दोय ।
चाहे छो ऊगारीयां तूं, सगो नहीं अरिहोय ॥ राघव० ॥ ३० ॥
जाणीये छे राम मिलीयो, वात मांही विचार ।
कूप पाणी जिस्यो होवे, तिस्यो चढस मसार ॥ राघव० ॥ ३१ ॥
लहू भाखे पुत्र सांभल, नहीं अरिसुं नेह ।
जिसो देखूं तिसो भाखूं आवीयो तुम छेह ॥ राघव० ॥ ३२ ॥
पुत्र नहीं तूं शत्रु सरिसो, कारण कुलनो छेद ।
दूधनो मूंडो थारो, कांई जाणे भेद ॥ राघव० ॥ ३३ ॥

स्वामी कामी पणे पिता तव, अंध मांही गिणाय ।
जन्म अंध समान तेनो, आज थकी कहिवाय ॥ राघव० ॥ ३४ ॥
पुत्र अने चारित्र नाहरे, भलो पणो न देखाय ।
भाईजी हूं किमु भाखे, लंक तो न रहाय ॥ राघव० ॥ ३५ ॥

दीपक सवैया

लंकामें दुग्ग तेरे, भंग कुम्भकर्ण जैसे ।
भट चंड बांके योध कहीये कृपानकी ॥
पाणीमें फराग कीनो, चन्द्रनिशा निवास लीनो ।
रवि है रमोणा और, कहा करी है बखान की ॥
रानी है मन्दोदरी निधानी, रूप रम्भा जैसी ।
गाजे गज गज द्वार, टोटणा खजान की ॥
कहत विभीषण तूं तो, जानकी फेर देवो ।
जानकी न लायो है, निशानी घर जानकी ॥
सरदी जो सुभट भट निकट बजरंग जैसे ।
कैसे २ कीना काम, थांरे कहा जानकी ॥
बाग के उजाड़ी, इन्द्रजीत के पछाड़ी ।
लंकाकं प्रजाल्यो है, सग मिकान की ॥
आवे अब रार तुम भाग के छिपोगे कहां ।
पापरूप आंग काल, लागी तप वानकी ॥
कहत विभीषण तूं तो, जानकी को फेर देवो ।
जानकी न लायो है निशानी घर जानकी ॥

ढाल दीपक सूरजी—

वचन सुन कोपतो धरतो, अरिकी प्रशंसा करतो, बोले यूं सुन
कैसे लाजे । खड्ग ग्रही विभीषणने मारूं, पछे हूं बंछित हो
सारूं ॥ कल्प ग्रन्थ दाखो ॥ ८१ ॥

ढाल सूरजी—

सुन सुभटां राव वचन कीधी असराल ।
तदुपरि कर्णको सामदने, उठायो तत्काल ॥ राघव० ॥ ३६ ॥

विभीषण ऊठीयो सामो, सामो लाग्या वीर ।
कुम्भकर्ण ने 'इन्द्रजीत' ज, धाई आया धीर ॥ राघव० ॥ ३७ ॥
विचे पडीने कीया अलगा, हाथीया जेम सोई ।
चित्त फाटयो रायजीनो, मेलवे नहीं कोई ॥ राघव० ॥ ३८ ॥
मत रहो मुझ नगरमांहे, अलग जाजे दूर ।
उणही ने भेलो होई, रहे राम हजूर ॥ राघव० ॥ ३९ ॥
मारीचे छे सांच बोलो, झूठे जगपती आय ।
विभीषण सो भलो भाई, नावीयो नृपदाय ॥ राघव० ॥ ४० ॥
रायने पगे लागी चाल्यो, लेई निज परिवार ।
तीश अक्षौहणी लसकर, लागीयो तसु लार ॥ राघव० ॥ ४१ ॥
हंस द्वीपे चाली आयो, रामने दरबार ।
सुग्रीवादिक ताम राजा, करे शोच अपार ॥ राघव० ॥ ४२ ॥
वैरियों विश्वास न होवे, तेहीमें ए रक्ष ।
स्वामीजीना अति जतन करवा, कहे प्रभु प्रत्यक्ष ॥ राघव० ॥४३॥
मोकल्यो जन राम पासे, खबर करवा हेत ।
रामजी 'सुग्रीव' सामा, मांडीरया नेत ॥ राघव० ॥ ४४ ॥
कहे कपिपती राक्षसानो, न ऊपजे विश्वास ।
भेद लेही मांहीलो हूं, भाखिमसो उल्लास ॥ राघव० ॥ ४५ ॥
नाम एक 'विशाल' खेचर, भाग्यही सुविशाल ।
धर्मपक्षे धर्मात्माए, धर्मनो प्रतिपाल ॥ राघव० ॥ ४६ ॥
सती सीता तणी करतां, वीनती नृप साथ ।
खीजीयो अति राय रावण, काढियो ग्रही हाथ ॥ राघव० ॥४७॥
चोरने चांनणो ना गमे, झूठ न गमे साच ।
लम्पटांने शील न गमे, गृह साची वाच ॥ राघव० ॥४८॥
जाई आगे हाथ साही, राम आणे मांहीं ।
पाय पड़तां लेई ऊंचो, मिल्या प्रभु गले बांहीं ॥ राघव० ॥४९॥

क्षेपक तुलसीकृत रामायण में से

बहुरी रामछ बिधाम बिलोकी, रहो ठटकि इकटक पग रोकी

भुज प्रलम्ब कंजारुण लोचन, श्याम गात प्रणत भय मोचन ॥
सिंह कन्ध आयत उर सोहा, आनन अमित मदन मनमोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता, मनधरि धीर कही मृदुबाता ॥

ढाल मूलगी–

कुशल पूछे नाग नागरी, पूज्य तुम गुणगार ।
आज भला दिन माहरो रे, देख दर्शन पाय ॥ राघव० ॥ ५० ॥

दोपक दोहा–

भ्रात सुग्रीव गुनी आगऊ, प्रभु भंजन भयभीर ।
[illegible] ? आरति हरण, शरण सुगद रघुवीर ॥
अनुज सहित [illegible] ढिग बैठारी, बोले वचन भक्त भयहारी ।
[illegible] सहित परिवारा, कुशल कुठाहर वास तुम्हारा ॥

ढाल मूलगी

[illegible] आया वेगी आज उपज्यो प्रेम ।
[illegible] पूछे [illegible], [illegible] केम ॥ राघव० ॥ ५१ ॥
[illegible] ने घणा दिवसे, [illegible] भला बोल ।
[illegible] जाना, मानसी [illegible] ॥ राघव० ॥ ५२ ॥
[illegible] धूप ।
[illegible], वचन [illegible] ॥ राघव० ॥ ५३ ॥
[illegible] ने छोडि ।
[illegible] सुग्रीव [illegible], [illegible] ॥ राघव० ॥ ५४ ॥
[illegible] ।
[illegible] तुमने, [illegible] ॥ राघव० ॥ ५५ ॥
[illegible], [illegible] आवी [illegible] ।
[illegible], [illegible] राघव० ॥ ५६ ॥

[illegible] ([illegible])

[illegible] दिन [illegible], [illegible] आवे नाम ।
[illegible] नाम ॥ १ ॥
[illegible], [illegible] समान ।

लांब पणे चवड़ा पणे, जोजन वीश प्रमाण ॥ २ ॥
वेला साधी वेगसुं, कीधो कटक पडाव।
राक्षस दल देखण तणो, आणे चित्त में चाव ॥ ३ ॥
ध्वनी शब्द सायर तणो, राम कटकनो साद।
लंकातो वहिरी हुई, कोला हलनो नाद ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

मन्दोदरी 'रावण' समझावे, वार ए पुनरपि नहीं आवे, कन्ता ? क्यूं दिलमें नहीं लावे। रामको तेज है भारी, प्रशंसे सारा नरनारी ॥ सत्य व्रत पालो ॥ ८२ ॥

क्षेपक सवैया—

जेठ सुरापति जोय, एम आसाढज आणी,
श्रवन न-चले सोस, जन्तु भाद्रवा वस जाणी।
अममन है आसोज, कन्त कुल काती वेसी,
मिगसिर दीनो माग पोह माह आयां पेसी ॥
नगराज भणे फागुन निकट, चेत २ कहै सावरी,
वैशाख एम वनिता वेद रखो सीत मती रामरी ॥

दोहा क्षेपक—

वर सीया रो आवीयो, ऊनाल्रो घन जान।
घर सायत में जावसी, राज ऋद्धि सन्मान ॥
वीराणी रहसी नहीं, रहसी सुथारी।
सोनारी जासी परी, करे भाभी कुम्भारी ॥

धूलचंदजी कृत,

ढाल क्षेपक तर्ज सावण आयो हो म्हारा सोजतिया सरदार।

रघु पतिआयो हो म्हारा हठभीना भरतार, लंकेश्वर रघु०
म्हारो जिय दुःख पायोहो, म्हारी अरजी लो अवधार ॥ लं० ॥१॥
थेतो काढ्यो भाई हो, थांरे कांई आई मन मांय ॥ लंके० ॥
थेतो कुबुद्धि कमाई हो, कीधो काम अन्याय ॥ लं० ॥ २ ॥
जो कुशल चावो हो, थेतो सूंपो पाछी सीत ॥ लं० ॥

[illegible] मन मांही लानो हो, थे क्यों होवे फोगट फजीत लं० ॥३॥
आनो कामन आमी हो, थांरे करनां ही कोड उपाय ॥ लं० ॥
थांरी लंका जासी हो, थेतो मानो म्हारी माय ॥ लं० ॥ ४ ॥

मुनि श्री [illegible] कृत ढाल दीपक–तर्ज–सीता माता की–

भाखे मन्दोदरी महाराज ? सुंपदो सीता सुन्दरी (टेर)
थांरे नारी सहस अठार, प्यारे लागो तिनसे प्यार ।
मानो इन्द्राणी अवतार, रूपमें देवो पुरन्दरी ॥ भाखे० ॥ १ ॥
करना अजहुन बिगड्यो काज, जो तुम्ह मान लेवो महाराज ।
नहींतर जासी दीने राज, पिछे पिछतासो पिया आप गाय ज्यूं
[illegible] सुन्दरी ॥ भा० ॥ २ ॥ तट के बोल्यो रावण ताम, तेरी
नारी अकल तमाम, अब नहीं थारो बोलण को काम, परी जाय
[illegible] मिट जाय, क्यों लप २ करे लपुन्दरी ॥ भाखे ॥ ३ ॥

श्री [illegible] कृत ढाल दीपक तर्ज–[illegible] ने [illegible] ।

थे किम भूला राजवी, आखर जावण रा थान, मन्दोदरी यूं सम-
झावे । [illegible] सीता लायवा, थे [illegible] तुम साथ ॥ मन्दो-
दरी । यो पियुने यूं समझावे ॥ टेर ॥ १ ॥
[illegible] सीता लायवा, थे किम [illegible] राज ॥ मन्दो० ॥
[illegible] राजा [illegible], और [illegible] आगो मान ॥ मन्दो० ॥ २ ॥
[illegible] आप क्यूं कियो सीता लाय ॥ मन्दो० ॥
[illegible] लंका दोषी है [illegible] ॥ मन्दो० ॥ ३ ॥
[illegible] मो कामी कौन हवाल ॥ मन्दो ॥
[illegible] आपनी नार ॥ मन्दो ॥ ४ ॥
[illegible] और [illegible] विनाश ॥ मन्दो ॥
[illegible] पाप ॥ मन्दो ॥ ५ ॥
[illegible] सेऊ ॥ मन्दो ॥
[illegible] ॥ मन्दो ॥ ६ ॥

[illegible] –

[illegible] आपसीतांने, [illegible]

नहीं जाने । कुणहै राम मुझआगे, देखत शिखी सर्प ही भागे ॥ सत्य ॥ ८३ ॥

दोहा मूलगा—

सम्वाहै शूरातणा, पहिरे बकतर टोप ।
प्रहस्तादिक सामन्ता, ओपे आछे ओप ॥ ५ ॥
कोई तो हाथी चढ्या, कोई हय असवार ।
कोई सिंहां ऊपरे, चढि मिम्या तेवार ॥ ६ ॥
कोई खर रथ बेसीया, कोई पलाणे महीप ।
कोई महिषीये बेसीया, कोई विमान विशेष ॥ ७ ॥
आप आपणा साथमूं, आप आपणो जोर ।
महेलो देई स्वामीने, ऊभा बांधी कौर ॥ ८ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी

रावण को हुकमहीपावे, मिलण मिम निज २ घरआवे, सुभट स हुमनमे ऊमावे । मात कहे सुनहु पुत्र प्यारा, लजाजे दूधमत म्हारा ॥ सत्य ॥ ८७ ॥ कायर की माता इमभाखे, शूर को मनमें डरराखे, आयां वेग म्हाल परोताके । आपांणे सुजश नहीं चहीजे सुखे घर आयने रहीजे ॥ सत्य ॥ ८५ ॥

स्वामी श्री चौथमलजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज हांक मनिकर गर्व दिवाना—

हांपिया१ पांतर मति जाईजो, ज्यूं त्यूं कर थे पाछा आईजो ।
नाहक देणोंजीव नाम थे मति मंडाई जोरे ॥ पिया ॥ १ ॥
मियां बीबी दोनोंही राजी, कांई करे झकमारे काजी ।
जराक अर्जी मान मचलसे थे गम खाईजोरे ॥ पिया ॥ २ ॥
पटा पुलीरी गर्ज है किनकूं, दायपडे नो दीजो उनकूं ।
गुप चुप सेरोनाक घर्णीरी निजर चुराईजो जी ॥ पिया ३ ॥
बाल पणामें टाबर म्हारे, उनको तुम्ह बिन कुण रखवाले ।
होसी कोण हवाल पिया, इम मनमें लाईजोजी ॥ पिया ४ ॥
ऊबर काम रगडा को कहवे, मुश्किल पाछो आवन देवे ।
डोग मायरी महर पिया थे मत घबराईजोजी ॥ पिया ॥ ५ ॥

जग मन मांही लागो हो. शे क्यों होवे फोगट फजीत लं० ॥३॥
[illegible] कामन आसी हो. थांरे करतां हो कोड उपाय ॥ लं० ॥
थांरी लंका जासी हो. शेनो मानो म्हारी माय ॥ लं० ॥ ४ ॥

मुनि श्री [illegible]जी कृत ढाल दीपक-तर्ज-सीता माता की-

थांने मन्दोदरी महाराज ? [illegible] सीता सुन्दरी (टेर)
थांरे नारी सहस अठार, प्यारे रागो तिनसे प्यार ।
मानो इन्द्राणी आकार, रूपमें देवी पुरन्दरी ॥ थांने० ॥ १ ॥
[illegible] अपशकुन बिगड्यो काज, जो तुम्ह मान लेवो महाराज ।
[illegible] जाता दीसे राज, पिछे पिछतासो पिया आप साप ज्यूं [illegible] छुछुन्दरी ॥ था० ॥ २ ॥ तट के बोल्यो रावण ताम. तेरी नारी [illegible] तमाम. अब नहीं थारो बोलण को काम, परी जाय [illegible] मीट [illegible], क्यों लप २ करे लघुन्दरी ॥ थांने ॥ ३ ॥

[illegible] कृत ढाल दीपक [illegible]-रामाजी ने पेड़ा भावे ।

[illegible] किम भूला सांई, आयो जाण रो थान, मन्दोदरी यूं सम-झावे । [illegible] सीची सायबा, तो सुख लहस्यो तुम सार ॥ मन्दो-दरी ।. हा पियुने यूं समझावे ॥ टेर ॥ १ ॥
[illegible] सार्थ[illegible], थे किम गीधा राज ॥ मन्दो० ॥
[illegible] बहलीयां. और रघुवर आयो साज ॥ मन्दो० ॥ २ ॥
[illegible] आप क्यूं किवो सीता लाय ॥ मन्दो० ॥
[illegible] दीसे है थुजाय ॥ मन्दो० ॥ ३ ॥
[illegible], सो [illegible] कौन हवाल ॥ मन्दो ॥
[illegible] आपनी नार ॥ मन्दो ॥ ४ ॥
[illegible]. और [illegible] कुल कपट विनास ॥ मन्दो ॥
[illegible] रघुवर पाय ॥ मन्दो ॥ ५ ॥
[illegible] निरख [illegible] ॥ मन्दो ॥
[illegible] ॥ मन्दो ॥ ६ ॥

[illegible]

[illegible]

नहीं जाने । कुणहै राम मुझआगे, देखत शिखी सर्प ही भागे ॥ सत्य ॥ ८३ ॥

दोहा मूलगा—

सम्बाहै शूरातणा, पहिरे बकतर टोप ।
प्रहस्तादिक सामन्ता, ओपे आछे ओप ॥ ५ ॥
कोई तो हाथी चल्या, कोई हय असवार ।
कोई सिंहां ऊपरे, चढि सिंह्या तेवार ॥ ६ ॥
कोई खर रथ बेसीया, कोई पलाणे महीप ।
कोई महिषीये बेसीया, कोई विमान विशेष ॥ ७ ॥
आप आपणा साथसूं, आप आपणो जोर ।
महेलो देई स्वामीने, ऊभा बांधी कोर ॥ ८ ॥

क्षेपक ढाल मूलगी

रावण को हुकमहीपावे, मिलण मिस निज २ घरआवे, सुभट स हुमनसे ऊमावे । मात कहे सुनहु पुत्र प्यारा, लजाजे दूधमत म्हारा ॥ सत्य ॥ ८७ ॥ कायर की माता इमभाखे, शूर को मनमें डरराखे, आयां चंग ग्वाल परोनाके । आपांणे सुजश नहीं चहीजे सुखे घर आयने रहीजे ॥ सत्य ॥ ८५ ॥

स्वामी श्री चौथमलजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज हांक मनिकर गर्ज दियाना—

हांपिया! पांतर मति जाईजो, ज्यूं त्यूं का थे पाछा आईजो ।
नाहक देणोंजीव नाम थे मति मंडाई जोरे ॥ पिया ॥ १ ॥
मियां बीबी दोनोंहो राजी, कांई करे हकमारे काजी ।
जराक अर्जी मान मबलसे थे राम ग्वाईजोरे ॥ पिया ॥ २ ॥
पटा पुलीरी गर्ज है जिनके, दापपडे तो दीजो उनके ।
गुप चुप सेगीनार घणीरी निजर चुराइजो र्जा ॥ पिया ३ ॥
बाल पणामें टाबर लारे, उनको तुम्ह बिन कुण रखवारे ।
होसी कौण हवाल पिया, इम मनमें लाईजोर्जा ॥ पिया ४ ॥
ऊपर काम झगडा को कहवे, मुश्किल पाछा आवन देवे ।
जोग मायारी महर पिया थे मन चमगईजोजी ॥ पिया ॥ ५ ॥

नागर की नारी इमबोली, हूलूं लारे वाली भोली ।
चौथमल कहै सुभटांने, नथमाल मनाई जोजी ॥ पिया ॥ ६ ॥

(वीराङ्गना का निज पतिसे कथन)

स्वामी श्री चौथमलजी कृत चोपक ढाल तर्ज गांधणजीरी—

कलिंगांरी राणी कवेहो नरवरजी. थे राठोडी रजपूत भागमत आईजोहो नरवरजी उनके कुम्भ स्थल भान जोहो नर० हाथी हन्दा मजबूत अजगर गति लाई जोहो ॥ नर ॥ १ ॥ दपट झपट रिपु दारजोहो नर० म्हारे लाजो मोतियन कीमाल, भूलमत आईजो हो नर । मगरूरी करजोमति हो नरवरजी अहंकार निगुण आगार । प्रभु गुन गाई जोहो. नर०॥२॥ मारी छतियां झघड़जो हो नर० थांरो नाम अमर रणधीर ॥ अरज महाराजसं हो नर० । कायरता करजो मतिहो नर० ज्यां लगे कलेजेतीर ॥ वीर वधु राजसुं हो नर । ३॥ मनरखो अपरछर भणीहो नर० थे जगके कीजो देर ॥ लर मे आगे हो नर० जोध सिपाही सिद्ध करो हो नर० चौथु कहे हो [illegible] नाथ गुरु ध्यासुं हो नर० ॥ ४ ॥

दोहा मूलगी

[illegible] अति गाजसे, [illegible] सुलतान ।
[illegible] कर्ण [illegible] बैठे [illegible] ॥ ९ ॥
[illegible] कुम्भकर्ण [illegible] ।
[illegible] अति [illegible] ॥ १० ॥
[illegible] जीय ।
[illegible] होय ॥ ११ ॥
[illegible] अनेक ।
[illegible] ॥ १२ ॥
[illegible] कोटि ।

[illegible]

रावण सामो आवही. हुंसियारी में होई ॥ १२ ॥

धूलचन्दजी कृत. ढाल क्षेपक तर्ज हांरे कायथड़ा रंगरो रसियो महिलां में
हांरेक ललना 'रावण' लड़वा आवीयो, हां-होईने हुंसीयारो रे
ललना गजरथ ऊपर वेसने हांरेक-धरतो अंग अहंकारोरे ललना॥
जगत्रय तृण सम जाणतो, हांरे-रावणजी तिणवारोरे ललना।रा०।१।
हांरे-विविध परे कर वीस में, हां ? आयुध धरतो आपोरे ललना।
थर हरावे मेदनी, हां-धरतो अति सन्तापोरे ॥ ललना ॥ रा०।२।
हां-बांका जोध सुभट जीके, हां-पोरुष धरता पूरोरे ललना।
एक २ थी आगला, हां-शूरां मांही शूरोरे ललना ॥ रावण ॥ ३ ॥
हां-अक्षोहणी चउ सहस ले, हां-चालण लागो जामोरे ललना ॥
लंका बारे नीकलतां, हां-शुकनथया निःकामोरे ॥ ललना॥ रा० ।४।
हां-विप डाबा खग जीमणा, हां-सामो वाजे वायोरे ललना ।
बीली बोवाडा करे, हां-दिशा गती देखायोरे ललना ॥ रावण ॥५॥
हां-शकुन वारन्ता चालीयो, हां- वरजे लोक अपारोरे ललना ।
अभिमानी मांनेनहीं. हां-नहीं मिटे होवण हारोरे ललना॥रा०।६।

ढाल यथा लीशमी—

तर्ज खड़को– (झूलणा छन्दमेंभी गासकतेहैं)

आवीयो रावण लोक डरावणो, रावण रावलो पार नावे।
छाईयो अम्बर कटक आडम्बरे, रयवर निज परतणी कोन पावे॥आ॥१
कोई हरिकेतु[१] कोई रे अष्टापद, केतु कोई गजराज केतु ।
मोर मंजार अहि कुर्कुट[२] केतुने. सुभट स्वामीतणा अधिक हेतु ।आ. २।
दण्ड कोई ग्रहे खड्ग कोई संग्रहे, कोई निज मुष्टिए सेल[३] साहे ।
कोई मुद्गर परिघायें[४] कुठारीका[५] शूल नाही मनमें उमाहे ।आ. ३।
बीस योजन लगे राम दल विस्तरे. अपर पचास जोजन प्रमाणे ।
सुभट बोलावता धैर्य डोलावता. एकसे एकनो अधिक नाणे ।आ. ४।
आप स्वामी तणी श्लाघ्यता[६] अनि घणी करत निन्दा पर स्वामी केरी।

१ सिंहका चिन्हवाली ध्वजा (केतु ध्वजा)। २ मूरगा। ३ पत्थर। ४ भोगल। ५ कुल्हाड़ी। ६ प्रशंसा (तारीफ)

[illegible] की नारी इमबोली, हूं लारे वाली भोली ।
चौथमल कहे सुमटांने, नथमाल मनाई जोजी ॥ पिया ॥ ६ ॥

(वीराङ्गना का निज पतिसे कथन)

स्वामी श्री चौथमलजी कृत दीपक ढाल तर्ज गांधणजीरी—

[illegible] नारी [illegible] नरवरजी, थे राठोडी रजपूत भागमत आ ईजो हो नरवरजी उन्नत कुम्भ स्थल भान जोहो नर० हाथी [illegible] [illegible] अजय मति लाई जोहो ॥ नर ॥ १ ॥ दपट झपट रिपु [illegible] नर० म्हारे लाजो [illegible] कीमाल, भूलमत आईजो हो नर । [illegible] हो नरवरजी अहंकार निगुण आगार । [illegible] गुन गाई जोहो, नर०॥२॥ माथी छतियां झगड़जो हो नर० [illegible] नाम [illegible] रणधीर ॥ अरज महाराजसुं हो नर० । कायरता [illegible] नर० ज्यां लगे कलेजे तीर ॥ वीर वधु राजसुं हो नर ॥ ३॥ [illegible] मर्यादो नर० थे जगके कीजो देर ॥ [illegible] हो नर० शीघ्र सिधारो सिद्ध करो हो नर० चौथू कहे हो [illegible] गुरु प्रसादसुं हो नर० ॥ ४ ॥

[illegible]—

[illegible], [illegible] सुल्तान ।
[illegible] बैठो गजान ॥ ९ ॥
[illegible] कुम्भकर्ण [illegible] ।
[illegible], [illegible] मय मन्त ॥ १० ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ११ ॥
[illegible] 'मय' 'मन्दादि' अनेक ।
[illegible] ॥ १२ ॥
[illegible] कोई ।

[illegible]

'विघ्न' मारीलीयो, 'दुरिते' 'शुक' मारी जमगेह वास्यो ॥आ०१२।
'सिंहजघन्ये' हण्यो 'पृथितवर' वानरे, एटले सूर्य पण अस्तपामे।
दोनों दल हव्या जे मुआते घव्या, प्रातः फरी मांडीया सुयश कामे
॥ आ० । १३ ॥ कपि सुभट मध्ये गजरथ वैमी नृप, आवीयो
विविध आयुद्ध धारी । रामसैना प्रते प्रवल वल धारके, माचीयो
एह संग्राम भारी ॥ आ० ॥१४॥ 'रावण' राय हुंकार करवे करी,
राक्षस चरण रण त्रिवय रोपी रहीयो । वानरा पग खस्या जाय
पाछा धस्या, अवसर ताम 'सुग्रीव' लहीयो ॥ आ० ॥१५॥ सलह
सन्नाह करी धनुष्य वर कर धरी, राक्षसांने मुखे जाम आवे ।ताम
'हनुमन्त' भाखन्त 'सुग्रीव' सूं, देव ! अब तुम रहो आप दावे ॥
आ० ॥ १६ ॥

क्षेपक सवैया—

वानर ईश चढे रणमेंजद, पौनके पूत पुकार करीहै ।
तिष्टरहो तुमपृष्ट रखोमुझ सृष्टिको नष्ट करीके करीहै ॥
मानत ना तल ग्रानहूमें चलको चचले हमसे झघरीहै ।
योंकह मान लयो सवपे, रथ पौंनसे वेग सवारी करीहै ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

चढ्यो 'हनुमन्त' दुर्दन्त दलने दले, राक्षसोंनूं मुख आवी रोके।
ताम वावो¹ धनुष्य वाण सम्भाल के, 'हनुमन्त' वीर ने आवी
रोके ॥ आ० ॥ १७ ॥ 'हनुमन्ते' अस्त्रघन छेदी वावा तणां, कहै
रे वूढा तूं तो कांई चाहै । पंच परमेष्ठी गुण परभव साधणो,
वापजी लोटवो छेरे लाहै ॥आ०॥१८॥ एम सुणी ताम 'वज्रोदर'
आवीयो, कहै रे अज्ञानमें तूं कांई वोले । आव उरहो वलीजेरे
अतुलीवली, हम तुम जोड छे एक तोले ॥ आ० ॥१९॥ केसरीनी
परे शब्द हियड़े धरी, आवीयो वीर 'हनुमन्त' हाकी। मोई मारी
लीयो वज्रनो तृण कीयो, पाछले कांई राखीन वाकी ॥आ०॥२०॥
जम्बूमाली² नृप नन्दन आवीयो, मोई ऊपाडी के नांग्वो दीनो ॥

१ माली राक्षस । २ रावणपुत्र ।

नं तुमारे अछे तूं कुणरे अछे, आपसमें रे भाखे घणेरी । आ० ५ ।
[illegible] [illegible] निट रे निट रे, मत डरे आयुद्ध अलग नांखी ।
[illegible] आयुद्ध सम्भालीले, आवी उरहो बजाव चोट चाखी ॥६॥
[illegible] घणा विविध भांतिरणा, चक्र परिघा गदा फरसी खांडा ।
[illegible] मुद्गर करी चोट करवे भारी, राक्षसा वांनर लडता चांडा ॥७॥
वानर राक्षसा जेम तरु भाजता तेम राक्षसा तब जाय भागा ।
हस्त प्रहस्त उद्धत बलवन्त अति, वानर साथे तब आयलागा ।आ ।८।

ढाल चोपक–तर्ज हांरे कायथडा—

हांरे [illegible] ललना 'हस्त' प्रहस्तज आवीया, हांरे-मामा 'नल' ने 'नीलो' रे ललना विविध प्रकारे युद्ध थयो, हांरे-अंशे चारुदी वीरोरे ललना [illegible] लड़ता आवीयो ॥ टेर ॥ ६ ॥
हांरे-हस्त [illegible] अपनीनो, हां नल उपर मेलन्तो रे ललना ।
[illegible] करने टेलीयोरे, हां-मनमें रोष घालतोरे ललना रा० ॥७॥
हांरे-रोष [illegible] आफल्या, हां-कमरन [illegible] कायोरे ललना ।
[illegible] आपसमां मारीया, हां-राक्षसने दोनूं मारीयोरे ॥ ललना रा० ।८।

ढाल मूलगी

'हस्त' 'नले' मारीयो 'नील' 'प्रहस्त' ने, अम्बर पुष्पनी वृष्टि हुई ।
'[illegible]' मारीयो [illegible] दल लावीयो, प्रातः नृप मोकले फौज जुई । आ० ॥९॥ रावण 'मारीच' 'शुक्र' 'सारण' 'सिंहरथ' 'अश्वरथ' '[illegible]' '[illegible]' ने 'उद्दामा' । 'मकर' 'ज्वर' 'भूप' 'कामाक्ष' 'ग[illegible]' 'विजयदत्त' 'विभीषण' 'शम्भु' मकामा ॥ आ० ॥१०॥
'[illegible]' '[illegible]' 'सन्ताप' 'शचिन' नामथी, 'आक्रोश' 'पुष्पास्त्र' '[illegible]' [illegible] । 'दुर्गति' 'नन्दन' '[illegible] प्रीति' 'सुदुर्द्धर' वानर [illegible] [illegible] ॥ आ० ॥ ११ ॥ राम 'मारीच' 'सन्ताप' [illegible] [illegible], 'नन्दन' वानर 'ज्वर' विदार्यो । राम 'उद्दाम' [illegible]

१ [illegible] । २ [illegible] । ३ [illegible] के [illegible] राजाओं का नाम है वे सब [illegible] । ४ [illegible] राजाओं के [illegible] राम सेना की तर्फ के सुभट हैं ।

'विघ्न' मारीलीयो, 'दुरिते' 'शुक' मारी जमगेह वास्यो ॥आ० १२॥ 'सिंहजघन्ये' हण्यो 'पृथितवर' वानरे, एटले सूर्य पण अस्तपामे। दोनों दल हव्या जे मुआते घव्या, प्रातः फरी मांडीया सुयश कामे ॥ आ० । १३ ॥ कपि सुभट मध्ये गजरथ बैसी नृप, आवीयो विविध आयुद्ध धारी । रामसैना प्रते प्रबल बल धारके, माचीयो एह संग्राम भारी ॥ आ० ॥१४॥ 'रावण' राय हुंकार करवे करी, राक्षस चरण रण विषय रोपी रहीयो । वानरा पग खस्या जाय पाछा घस्या, अवसर ताम 'सुग्रीव' लहीयो ॥ आ० ॥१५॥ सलह सन्नाह करी धनुष्य वर कर धरी, राक्षसांने मुखे जाम आवे । ताम 'हनुमन्त' भाखन्त 'सुग्रीव' सूं, देव ! अब तुम रहो आप दावे ॥ आ० ॥ १६ ॥

क्षेपक सवैया—

वानर ईश बडे रणमेंजद, पौनके पूत पुकार करीहै ।
तिष्टरहो तुमपृष्ट रखोमुझ सृष्टिको नष्ट करीके करीहै ॥
मावत ना तल ग्रानहूमें बलको बचले हमसे अघरीहै ।
योंकह मान लयो सबपे, रथ पौंनसे वेग सवारी करीहै ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

चल्यो 'हनुमन्त' दुर्दन्त दलने दले, राक्षसोंनूं मुख आवी रोके । ताम मावो१ धनुष्य बाण सम्भाल के, 'हनुमन्त' वीर ने आवी रोके ॥ आ० ॥ १७ ॥ 'हनुमन्ते' असघन छेदी बाबा तणां, कहे रे मूढा तूं तो कांई चाहे । पंच परमेष्टी गुण परभव साधणो, बापजी लोटचो हेरे लाहे ॥आ०॥१८॥ एम सुणी ताम 'वज्रोदर' आवीयो, कहे रे अज्ञानमें तूं कांई बोले । आर उरदो चलीजेरे अतुलीबली, हम तुम जोड छे एक तोले ॥ आ० ॥१९॥ केसरीनी परे शब्द दिगडे धरी, आवीयो वीर 'हनुमन्त' हाकी । मोई मारी लीयो वज्रनो नृप कांयो, पाछ्ले कांई राखीन बाकी ॥आ०॥२०॥ जम्बूमालीर नृप नन्दन आवीयो, मोटे उत्साही के नांदी दीनो ॥

१ माली रावन । २ रावणपुत्र ।

गयाग 'महोदर' प्रमुख बहुला मीली, अंजना अंगज घेरी लीनो ।।आ०।।२१।। कोई तो भुज विषे कोई तो मुख विषे, कोई तो पग विषे कोई लागी । कोई तो कुक्षे कीया सबल मारी लीया, हनुमन्त नीसरी गीम तानी ।। आ० ।। २२ ।।

चोपाक सवैया

बान चढ़े कपिके करने कुल्टा चल तामस ना चपलाई।
ना शागरी जल ता जल में, मनकी चपलासुत पौनसीं नांई ।।
वान संधानक तुनिको छुटिवो ठीकन ग्रानकी बाजी जीताई।
मोहन है परवाहननाके संगहै संगहै संगहै इनके पितु माई ।। १ ।।

ढाल मूलगी—

सागर बीच वड़वानल शोभतो, गक्षमां बीच ए वीर सोहै। भांगिया सबल ही ऊगतो सूर ज्यूं, जेमरे तिमिरनो खोज खोहै।। आ० ।। २३ ।। गक्षसां भग देखी अति कोपीयो, 'कुम्भकर्ण' जनर आप धायो। देव ईशान जिम शूल हाथे ग्रह्यो, कायरां धीरज धर भगायो ।। आ० ।। २४ ।। कोई पाये हण्या कोई कूर्पर हण्या, कोई हाथे हण्या अधिक आख्या। कोई मुद्गर हण्या कोई त्रिशूले हण्या कोई अन्योन्य कपि एम विणाख्या ।।आ०।। २५ ।। देखी सकल 'सुग्रीवजी' धाईयो, धाईया 'दधिमुख' ने 'महेन्द्रो'। धाईया 'कुमुद' 'अंगद' प्रमुख गाल्क [illegible], धाईया सहही महोटा कपिन्द्रो। आ०।।२६।। एतले भूपते 'कुम्भकर्ण' जलड़े अम्बरे देव देखे तमासो। विविध पर बाणनो मेह वरसाव तो, वैरिणी आपमें जाल हाथो ।। आ० ।।२७।। नींद बाणे करी नींद त्रिकरणा, गक्षने [illegible] कीना। जागृत बाणमें नाम सुग्रीवजी, नेर सचलाई [illegible] ।। आ० ।। २८ ।। 'कुम्भकर्ण' ज नणो [illegible], [illegible] मोटो गरजे। मुद्गर हाथमें कपिपति ऊपरे, [illegible] नहीं टोहो [illegible] ।।आ०।।२९।। अंगने वायरे वानरा [illegible] महाजी जैम हुआ। मुद्गरा भाजके नाम दूरा

[illegible]

कीया, सुग्रीव रायनो रथ प्रत्यक्षो ॥ आ० ॥३०॥ 'सुग्रीव' रायजी एक शीला मोटकी । रावणानुज[1] तणे शिरही पाड़े । मुद्गरे तोडी नांखत सो दश दिशे. रजतणी वृष्ठी अधिकी उडाडे ॥आ०॥३१॥ अम्बर छाहीयो कांई सूजेनहीं. लोकना नयन मुख रजही भरीया। ताम, सुग्रीव जल बाणने मूकवे. रजही वैसाडी प्रकाश करीया ॥आ० ॥३२॥ ताम वानरपति गक्षमां ऊपरे. रोषसूं मोलियो तडित घात। तेह ने कोई उपचार लागेनहीं. मूर्च्छियो तवकरे धरणी पात। आ० ॥३३॥ रावण उठीही ताम संग्रामने ताम सुत इन्द्रजीत आई आगे। बीनवे बापने छोड सन्तापने. कवण आगे तूंतो युद्ध मांगे ॥ आ ॥ ॥३४। नहीं यम वरुण नहीं नहींया 'कुवेरजी', 'इन्द्र' सोतो तोसे नांय जीतो । ओघर चाकर ए अछे वनचर, ऊछलो कूदवो छेरे रीतो ॥ ३५ ॥ आपो आदेश मुझ एह संग्रामनो. दूरथी देखजो काम म्हांरो । बापडा वानरा पान पाने करूं, जाणजो जाईयो तोरे थांरो ॥ आ ॥ ३६ ॥ होई सन्नद्ध बद्ध ने युद्ध में आवीयो स्वमुखे सहुने ताम प्रचारे । किहांरे सुग्रीव हनुमन्त किहां लक्ष्मण राम जे चोट म्हारी सहारे ॥ आ ॥ ३७ ॥

स्वामी श्रीरावतमलजी म० कृत क्षेपक ढाल तर्ज-ख्यालकी

सुरपति जित आयो, सैना घबराईरे श्री रघुनाथकी ॥ टेर ॥
इन्द्र जीत को आय देखी, भट सहु भागन लागा ।
पडी खलबली पेटमेंसरे है, प्राण पड़न की जागाजी ॥ सुर ॥ १ ॥
लक्ष्मण लुक बैठांकिहां मरे लेकर बिलकी ओट ।
बिल बाहीर झट आउरोमरे. चाख हमारी चोटजी ॥ सुर ॥ २ ॥
कपिपति यहां से किहां गयोमरे, क्यो कहां रघुनाथ ।
रण भूमीमें रंग सूंमरे, वेग बतावे हाथजी ॥ सुर ॥ ३ ॥

ढाल पूर्वली—

त्रासीया वानरा माथ इम बोलीयो. नांखी हथियार तुमअल्गा होवो । अणरे तु शत्रांने मारवा नियममुझ. थेरे थांराई नींद

1 कुम्भकर्ण।

राक्षस 'महोदर' प्रमुख बहुला मीली, अंजना अंगज घेरी लीनो ॥आ०॥२१॥ कोई तो भुज गिरे कोई तो मुख गिरे, कोई तो पग विषे कोई छाती । कोई तो कृपे कीया मगरू मागी लीया, हनुमन्त वीरनी गीस तानी ॥ आ० ॥ २२ ॥

दोपक सवैया

वान चले कपिके करते कुलटा चल नायम ना चपलाई ।
ना झखरी जवता जल में, मनकी चपलासुन पानगीं नाई ॥
वान संधानरु गेंचिवो छुटिवो टीकत ग्रानकी बाजी जीताई ।
बोलत है पग्वाहनीके रंगहे रंगहे रंगहे इनके पितु माई ॥ १ ॥

ढाल पूर्ववत्—

सायर बीच वडवानल१ शोभतो, राक्षमां बीच ए बीर सोहे । भांजीया सयल ही ऊगतो सूर ज्यूं, जेमरे तिमिरनो खोज खोहे॥ आ० ॥ २३ ॥ राक्षसां भंग देखी अति कोपीयो, 'कुम्भकर्ण' ज तब आप धायो । देव ईशान जिम शूल हाथे ग्रह्यो, कायरां धीरज थर थरायो ॥ आ० ॥ २४ ॥ कोई पाये हण्या कोई कर्पुर२ हण्या, कोई हाथे हण्या अधिक त्रास्या । कोई मुद्गुर हण्या कोई त्रिशूले हण्या, कोई अन्योन्य कपि एम विणास्या ॥आ०॥ २५ ॥ देखी बलवन्त 'सुग्रीवजी' धाईयो, धाईया 'दधिमुख' ने 'महेन्दो' । धाईया 'कुमुन्द' 'अंगद' 'प्रभु शालक'३, धाईया खटही म्होटा नरेन्दो ॥आ०॥२६॥ ए खट भूपने 'कुम्भकर्ण' ज लड़े अम्बरे देव देखे तमासो । विविध पर बाणनो मेह वरसावतो, योगिणी आपमें करत हासो ॥ आ० ॥२७॥ नींद बाणे करी नींद विकूर्वणा, राक्षसे नींदबल शयन कीना। जागृत बाण सूं ताम सुग्रीवजी, तेरे सघलाई ऊठाई लीना ॥आ०॥ २८ ॥ 'कुम्भकर्ण' ज तणो रथने स्वारथी, सुग्रीव राये तब भांजी राल्यो । मुद्गर करग्रही कपिपति ऊपरे, आवीयो सो नहीं टलेही टाल्यो ॥आ०॥२९॥ अंगने वायरे वानरा गिरिपड़े, गयवर स्फर्शथी जेम वृक्षो। मुद्गरे भाजके ताम टुकडा

१ समुद्र की अग्नी । २ खुणी । ३ भामण्डल ।

कीया, सुग्रीव रायनो रथ प्रत्यक्षो ॥ आ० ॥३०॥ 'सुग्रीव' रायजी एक शीला मोटकी । रावणानुज[1] तणे शिरही पाड़े । मुद्गरे तोडी नांखत सो दश दिशे. रजतणी वृष्ठी अधिकी उडाडे ॥आ०॥३१॥ अम्बर छाहीयो कांई सुजेनहीं. लोकना नयन मुख रजही भरीया। ताम, सुग्रीव जल बाणने मूकवे. रजही वैसाडी प्रकाश करीया ॥आ० ॥३२॥ ताम वानरपति राक्षसां ऊपरे. रोषसूं मोलियो तडित घात। तेह ने कोई उपचार लागेनहीं. मूर्च्छियो तवकरे धरणी पात। आ० ॥३३॥ रावण उठीही ताम संग्रामने ताम सुत इन्द्रजीत आई आगे। वीनवे बापने छोड सन्तापने. कवण आगे तूंतो युद्ध मांगे ॥ आ ॥ ॥३४। नहीं यम वरुण नहीं नहींया 'कुबेरजी', 'इन्द्र' सोतो तोसे नांय जीतो । ओधर चाकर ए अछे वनचर, ऊखलो कूटवो छेरे रीतो ॥ ३५ ॥ आपो आदेश मुझ एह संग्रामनो, दूरथी देखजो काम म्हांरो । बापडा वानरा पान पाने करुं, जाणजो जाईयो तोरे थांरो ॥ आ ॥ ३६ ॥ होई सन्नद्ध बद्ध ने युद्ध में आवीयो स्वमुखे सहुने ताम प्रचारे । किहांरे सुग्रीव हंनुमन्त किहां लक्ष्मण राम जे चोट म्हारी सहारे ॥ आ ॥ ३७ ॥

स्वामी श्रीरावतमलजी म० कृत क्षेपक ढाल तर्ज—ख्यालकी

सुरपति जित आयो, सैना घबराईरे श्री रघुनाथकी ॥ टेर ॥
इन्द्र जीत को आय देखी, भट सहु भागन लागा।
पडी खलबली पेटमेसरे हे. प्राण पडन की जागाजी ॥ सुर ॥ १ ॥
लक्ष्मण लुक बैठांकिहां सरे लेकर बिलकी ओट ।
बिल बाहीर झट आउरोमरे. चाख हमारी चोटजी ॥ सुर ॥ २ ॥
कपिपति यहां से किहां गयोमरे, रयो कहां रघुनाथ।
रण भूमीमें रंग संसरे. वेग बतावू हाथजी ॥ सुर ॥ ३ ॥

ढाल मूलकी—

त्रासोया वानरा आप इम बोलीयो, नांजी रुधिपार तुमअन्तर होवो । अणरे शु सन्ताने मारवा नियममुज, घेरे थांगीजई नींद

---

[1] कुम्भकर्ण।

राक्षस 'महोदर' प्रमुख बहुला मीली, अंजना अंगज घेरी लीनो ॥आ०॥२१॥ कोई तो भुज विषे कोई तो मुख विषे, कोई तो पग विषे कोई छाती । कोई तो कर्णे कीया गगल मांगी लीगा, हनुमन्त वीरनी रीस तानी ॥ आ० ॥ २२ ॥

चौपाई सवैया

वान चले कपिके करते कुलटा चाल तामस ना चपलाई।
ना झरबरी जवता जल में, मनकी चपलागुन पांनगीं नांई ॥
वान संधानरु गेंचिवो छुटिवो टीकत प्रानकी बाजी जीनाई।
बोलत हैं परवाहनीके रंगहै रंगहै रंगहै इनके पितु माई ॥ १ ॥

ढाल पूर्वली —

सायर वीच वडवानल१ शोभतो, राक्षसां वीच ए वीर सोहै। भांजीया सयल ही ऊगतो सूर ज्यूं, जेमरे तिमिरनो खोज खोहै॥ आ० ॥ २३ ॥ राक्षसां भंग देखी अति कोपीयो, 'कुम्भकर्ण' ज तब आप धायो । देव ईशान जिम शूल हाथे ग्रह्यो, कायरां धीरज थर थरायो ॥ आ० ॥ २४ ॥ कोई पाये हण्या कोई क्रपुरर२ हण्या, कोई हाथे हण्या अधिक त्राम्या । कोई मुद्गुर हण्या कोई त्रिशूले हण्या, कोई अन्योन्य कपि एम विणास्या ॥आ०॥ २५ ॥ देखी बलवन्त 'सुग्रीवजी' धाईया, धाईया 'दधिमुख' ने 'महेन्दो'। धाईया 'कुमुन्द' 'अंगद' 'प्रभु शालक '३, धाईया सटही म्होटा नरेन्दो ॥आ०॥२६॥ एखर भूपने 'कुम्भकर्ण' ज लड़े अम्बरे देव देखे तमासो। विविध पर बाणनो मेह वरसावतो, योगिणी आपमें करत हासो ॥ आ० ॥२७॥ नींद बाणे करी नींद विकूर्वणा, राक्षसे नींदवल शयन कीना। जागृत बाण सूं ताम सुग्रीवजी, तेरे सघलाई ऊठाई लीना ॥आ०॥ २८ ॥ 'कुम्भकर्ण' ज तणो रथने स्वारथी, सुग्रीव राये तब भांजी राल्यो । मुद्गर करग्रही कपिपति ऊपरे, आवीयो सो नहीं टलेही टाल्यो ॥आ०॥२९॥ अंगने वायरे वानरा गिरिपड़े, गयवर स्पर्शथी जेम वृक्षो। मुद्गरे भाजके ताम टुकडा

१ समुद्र की अग्नी । २ खूणी । ३ भामण्डल ।

कीया, सुग्रीव रायनो रथ प्रत्यक्षो ॥ आ० ॥३०॥ 'सुग्रीव' रायजी एक शीला मोटकी। रावणानुज१ तणे शिरही पाड़े। मुद्गरे तोडी नांखत सो दश दिशे. रजतणी वृष्ठी अधिकी उडाडे ॥आ०॥३१॥ अम्बर छाहीयो कांई सुजेनहीं. लोकना नयन मुख रजही भरीया। ताम, सुग्रीव जल वाणने मूकवे. रजही वैसाडी प्रकाश करीया ॥आ० ॥३२॥ ताम वानरपति राक्षसां ऊपरे, रोपसूं मोलियो तडित घात। तेह ने कोई उपचार लागेनहीं. मूर्च्छियो तबकरे धरणी पात। आ० ॥३३॥ रावण उठीही ताम संग्रामने ताम सुत इन्द्रजीत आई आगे। वीनवे बापने छोड सन्तापने. कवण आगे तूं तो युद्ध मांगे ॥ आ ॥ ॥३४। नहीं यम वरुण नहीं नहींया 'कुवेरजी', 'इन्द्र' सोतो तोसे नांय जीतो। ओघर चाकर ए अछे वनचर, ऊगलो कूटयो छेरे रीतो ॥ ३५ ॥ आपो आदेश मुझ एह संग्रामनो, दूरथी देखजो काम म्हांरो। बापडा वानरा पान पाने करुं, जाणजो जाईयो तोरे थांरो ॥ आ ॥ ३६ ॥ होई सन्नद्ध बद्ध ने युद्ध में आवीयो स्वमुखे सहूने ताम प्रचारे। किहांरे सुग्रीव हनुमन्त किहां लक्ष्मण राम जे चोट म्हारी सहारे ॥ आ ॥ ३७ ॥

स्वामी श्रीरावतमलजी म० कृत क्षेपक ढाल तर्ज—ख्यालकी

सुरपति जित आयो, सैना घबराईरे श्री रघुनाथकी ॥ टेर ॥
इन्द्र जीत को आय देखी, भट सहु भागन लागा।
पड़ी खलबली पेटमेंसरे है, प्राण पड़न की जागाजी ॥ सुर ॥ १ ॥
लक्ष्मण लुक बैठांकिहां मरे लेकर बिलकी औट।
बिल बाहीर झट आउरोमरे, चाख हमारी चोटजी ॥ सुर ॥ २ ॥
कपिपति यहां से किहां गयोमरे, ग्यो कहां रघुनाथ।
रण भूमीमें रंग घूमरे, वेग बताओ हाथजी ॥ सुर ॥ ३ ॥

ढाल मूलकी—

त्रासीया वानरा नाथ इम बोलीयो, नांखी हथियार तुमअन्क होवो। अपरे सु झल्लाने मागया नियमसुम, धरे थांरीजई नींद

१ कुम्भकर्ण।

गांगो ॥ आ ॥ ३८ ॥ जीम मरते किरणं आव गृह गाथुंरो, मान
ही मग मग आणी अविहणो । मेघनादन संगाने भामण्डल, अत्र
मर्थ मही अधिक करिहणो ॥ आ ३९ ॥

ढाल. सुखना ने तारे ……

हरिक ख्दना इन्द्रजीत आणी अड़ेगो, हो मत्तर पनिने गायोरे
ख्दना अग्र धाम अलि भानन्देर, हो मद हेरी स हाथी रे ख्दना
गमण मन्नुग आणीगो तहेगा १ ॥ हरिक ख्दना इन्द्रजीत मेघना-
दनी हो मुके दरन कृष्णोरे ख्दना ॥ मत्तर गोढे गेहने, हो
गाढुंरे जीमने हाथोरे ॥ गमण ॥ २ ॥

ढाल मुखनी

लिया लिखीमाहेरो हाथीगा जेहगा, तेहगा स्यारहं गृह हाथे ।
इनगो गीत गृह लेन मुहमेघदो, आणी कुम्भ अधिक धीमे ॥आ॥ ४०

ढेगम. ढाल मनो सुरंगम

हरिक ख्दना देहुं धीमा मन मिलगो, हो आगा अति गण्डाणोरे
ख्दना । मग्गन गढीगो आगणो, हो गीते के किलकाणोरे ख्दना
॥ गमण ॥ ११ ॥ हो-इन्द्रजीत अति पागनो, हो मुके माण लिया
मेरे ख्दना । राम 'सुग्रीव' ने गीहीगो, हो-भामण्डल (ने) गेग
हुंगारेरे ख्दना ॥ गमण ॥१२॥ हो-कुम्भर्क रणगीगने, हो-नलिना
देह लिगारेरे ख्दना । धेमा गाढी भारीगा, हो-जेस न गीगी
लिगारेरे ख्दना ॥ गमण ॥ १३ ॥

ढाल मुखनी—

'इन्द्रजीत' 'मेघनादन' अतिपागनो, अग्र मुके न सूके रे गोई ।
राम 'सुग्रीव' 'भामण्डल' पीडीगा, नामगो और न दरखना कोई ॥
आ० ॥ ४१ ॥ पवन उपगार मद्दा तेहुं उठीगा, देग फरगो अति
नगर्गो । वीर हनुमान मागो मद्दा पालहु, मुन्दिरगो नम मदे
रुपी धुरणो ॥ आ० ॥ ४२ ॥ माग उठाम ने फारगो भाणीगो,
कुर …… 'हनुमान', लीधे । पगनी पूण अधिका पाढी हाणीगा,

लटकतो जाय तेहनो शरीरो ॥आ०॥४३॥ लहु कहै रामसुं रावला वलविषे, प्रबल बल धारका एह होई। आनन१ अधिक ऊपर अछे तोही पण, सोह पावन्त ए नयन दोई ॥ आ० ॥ ४४ ॥ बांधीया एह दो रायने नन्दने, लंक मांही जब लगे न जाई। तब लगे उद्यम कीजीये आकरो, पामीये सुजश अति एह छोड़ाई ॥ आ० ॥४५॥ 'कुम्भकर्णे' 'हनुमन्त' जी काखमें, चांपियो एह विपरीत मांही। विना 'सुग्रीव' 'हनुमन्त' 'भामण्डल', सैन सघलो अछे शून्यग्राही ॥ आ० ॥ ४६ ॥

मुनि श्री रावतमलजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज-ख्याल की

कोई अकल ऊपावोरे, बन्धन छुडवावो जावो वेग सुं ॥ टेर ॥
सुनो श्री 'रघुनाथ' तिहारे, सैना के शिरमोड़।
अधिपति अपनी फौजका सरे, ताजा फल लीया तोडजी ॥कोई॥१॥
तीनों विनां तिहारी सेना, सघली दीसे सुनी।
रसवती नव २ भांतकीसरे, एक कसर अलनूनी ॥ कोई ॥ २ ॥
सुन्दर वर्ण शरीर श्यामजी, जिणमें रयो न जीव।
काम नगारी कामिनियों का, पहुंतो परभव पीवजी ॥कोई॥ ३ ॥
कहै 'अंगद' कर जोडने सरं, राम! गरीब निवाज?
हुकम हुवे हनुमन्त वीर को, लाऊं छुडाई आजजी ॥ कोई ॥४ ॥
हुकम हुवां सुं 'अंगद' चाल्यो, बालक 'रूप' बनाय।
कुम्भकर्ण के लारे लारे, रोतो रोतो जायजी ॥ कोई ॥ ५ ॥
बाबा बाबा बापजी सरे, आऊं तुम्हारे साथ।
रणमांही यहां कुण तुम लायो, यों कही पकड़ीयो हाथजी ॥ ६ ॥
कृपाल करन्तां धोती खोलने, बालकनो गयो नास।
धोती पकड़तो है कर ढीला, हनुमन्त उड्यो आकासजी* ॥कोई॥७

१ विभीषणने कहा कि भामण्डल और सुग्रीव यह दोनों कुल के लिये नेत्र के समान है। * उपर ग्रन्थ में अंगद ने बालक का रूप बनाकर हनुमान को छुड़ाया ऐसा लिखा है। और मूल रामायण में कुम्भकर्ण के साथ अङ्गद ने समझाकर हनुमान को छुड़ाया।

ढाल मूलगी

एहज वात करतां थकां अंगद, सुभट शूंभत प्रभु साथ काठो। क्रोधवस धनुष्य ग्रही बाण नांषे तिसें, पामी अवकाश हनुमन्त नाठो ॥ आ० ॥ ४७ ॥

चोपक सवैया

धनुको नमात नमादीये भूपन को,
पौनपूत तीजे धोस काहून निमारगो।
माथे पृथ्वि नाथन के फेने तोर डारें,
ताकी सुन्दर स्त्रीयाकी देखो चूंदड़ी उतारगो॥
मूछपे ठहगते नींबू ऐसे महामानी भूप,
एकना अनेक हूको माजनो बिगाड़गो ॥
पायके ओसान हनुकूद गोफलागमार,
कुम्भकर्णहुते छूट डेरा में पधारगो ॥ १ ॥

ढाल मूलगी

कुम्भकर्णानुज१ सलह साजी करी, भाइ सुत आगले आवी मण्डे। राय सुग्रीव 'भामण्डल' भूपना, बन्धन छोडाववा अधिक तण्डे ॥ आ० ॥ ४८ ॥ इन्द्रजीत 'मेघवाहन' चित्त चिन्तवे. एहतो माहरे तात तोले। युद्ध जुगतो नहीं जाई टलवूं भलं. एहतो शास्त्र सिद्धान्त बोले ॥ आ० ४९ ॥ नाग पासे करी बांधीया एह छे भूख तरसे रे सहजेही मरसे। मेलीए ए इहां लेई जासे किहां, परवशे होई नर कांई करसे ॥आ०॥ ५० ॥ मुंह टाली गया पांचों में परिलह्या. कुम्भकर्णानुज राय पासे। आवीने अटकले कोई बल नविचले, बन्धन छोड़वा मति विमासे ॥ आ० ॥ ५१ ॥ आरती आणेघणी बन्धन छोडन भणी, राम रु लक्ष्मण दोई भाई। ताम चित्त सांभली देव वाचा करी, सुमरिये आज थाए सहाई ॥ आ० ५२ ॥ देव महालोचन वचन सुधो घणुं. चिन्तव्यों आवीयो ततखेवा। सिंह निनाद विद्या रथ मूसल, हल देई साचवी राम

१ विभीषण।

सेवा ॥ आ० ॥ ५३ ॥ वीजली जेम चले नाश अरिनो करे, समरे साची गदा देवे दीधी । सार विद्यामहा गारुडी स्यन्दन१, आपी लक्ष्मण तणी सेव कीधी ॥ आ० ॥ ५४ ॥ वारुणाग्नेय वायव्य आदेकरी, दोई भाई भणी अस्त्र आपे । जाणीयो खिदमत दारछूं सेवक, थिर करी प्रेमनो भाव थापे ॥ आ० ॥ ५५ ॥ लक्ष्मण वाहन भूत गरुड तदा, पेखवे पन्नग परहा पुलाया । राय सुग्रीव भामण्डल मोकला, ताम हुवा सहु आवी मिलाया ॥आ०॥ ५६ ॥ ढाल चालीश ने दोयमी एह छे, जय जयकार जग में जणाणो । 'केशराज' पुण्यवन्त श्री रामनो, सुजश साचो सहुमें सुणाणो ॥ ५७ ॥

दोहा क्षेपक—

रावण कटकमें सांभल्यो, छूटा वन्दर वीर ।
दे ओलम्भो आकरो, आछा हुवा अधीर ॥

क्षेपकः— (राधेश्याम)

धिक्कार तुम्हारे शास्त्रों पर, लम्बे चौडे आकारों पर ।
जो दश दश वीश वीश वानर, करजायें काम हजारों पर ॥
आराम पसन्दो ? आलसियों ? क्यो दूध लजातेहो हो अपना ।
लंका विदेशीयों को देकर, अस्तित्व मिटाते हो अपना ॥
जी जान लडाकर रखना है, इस जन्म भूमिकी इज्जत को ।
मुझसे भी बढी चढी समझो, लंका नगरी की अजमत को ॥
तुम वह हो जिनसे दुनियों को, इस दश कन्धर ने जीता है ।
तुम वह हो यह लंका धीश्वर, जिनकी ताकत से जीता है ॥
जिनका राजा हो स्वर्ग जीत, कैलाश उठाने वाला है ।
जिसके नृपने बन्दी गृहमें यमसी, ताकत को डाला है ॥
उसकी सैयन उसके वर्ग, वनरों से घटे जमाने में, ।
तो सच मुच लाख लाख लानत, मर्दानी कौम कहाने में ॥

दोहा (नाक गर्ने)

अस्त हुवो रत्नीश पति, सुभट लहै विश्राम ।

---

१ रथ = २ सूर्य ।

प्रातः हुवां आवी मिल्या, माचविया संग्राम ॥ १ ॥
राक्षस अति क्रोधे चढ्या, वानर सैन्य मथन्त ।
मध्य दहाडे शूरा१, जिम सरवर डोलन्त ॥ २ ॥
देखी सेना भांजती, सुग्रीवादिक शरूर ।
करी घणी उठावणी राक्षस नाठा दूर ॥ ३ ॥
राक्षस भंग देखी करी, 'रावण' चढ्यो आप ।
थर हरावे मेदनी, करतो अति सन्ताप ॥ ४ ॥
दावा नल ने आगले, तरुवर जेम दहाय ।
तेम रावण ने आगले, वानरतो न रहाय ॥ ५ ॥
रावण दीठो आवीयो, आप चढन्ता राम ।
'विभीषण' वर्जी प्रभु, आपण चढियो ताम ॥ ६ ॥

ढाल तयांलीशमीं तर्ज श्याम कल्याण—

भजो नर राम, राम का दिन रूडा ।
रावण कीरे दशा कुदशाणी, जेही करे सोई कूडा ॥ भजो० ॥ १ ॥
रावण उदधि पूर ज्यूं, आवही दल ठेल ।
साहामो हुवो वीर धीर, दोई हुवा मुह मेल ॥ भजो० ॥ २ ॥
रे रे मूढ ! वीर देखी, वस्तु केरी वानी ।
अवर राखी तूं दीयोरे, माहरे मुख आनी ॥ भजो० ॥ ३ ॥
जेम आहेडी खेलन्तो, आगे राखे श्वान ।
तेम रामे तूं कीयो, राखवा निज प्राण ॥ भजो० ॥ ४ ॥
नेह न तूटे तुम्ह उपरे, जारे अपूठो होई ।
'राम' 'लक्ष्मण' सैन्य मूं, आज हणीया हूं जोई ॥ भजो० ॥ ५ ॥
एह मांहे आवसे तूं, डररे करूं छू एह ।
आव थानक मूलगे, मूलगो मुझ नेह ॥ भजो० ॥ ६ ॥
भाई असुहाई, शुद्ध सरल होई ।
ी कहै करे तैसो, कपट नाहीं कोई ॥ भजो० ॥ ७ ॥
राम आपही चढ्योथो, मेंही वरजीयो राखियो ।

१ भण्डशूरा ।

छते सेवक स्वामी काम, करत ना भल भाखीयो ॥ भजो ॥ ८ ॥
स्वामीजीसूं काम जाणी, युद्ध तणो मिस ठाणी ।
आवीयो छूं देव ! आज, सोई सुणो मुजवाणी ॥ भजो ॥ ९ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—मुनि श्री रामचन्द्रजी कृत,

विभीषण की बात सुनो बड़भाई, थे राम थकी करोमेल वखत है आई ॥ टेर ॥ श्री राम दयाल कृपाल साल दुसमनका, कुनझेले जोर महाराज उसी लिछमनका । म्हें चढसां महाराज मुझे फुरमायो पिन हटकर अरज मनाय मिलन मिस आयो ॥ हस्त प्रहस्त से, जोधकटे छिनमांई, विभीषण ॥ १ ॥ थर रर धरा धसकाय पाय जब धरसी सर रर चलसी बाण बहुत नर मरसी । अर रर करसी लोक एक नहीं अरसी, थरर्र हियो थर राय जब परसी । ऐसे लिछमन का जंग होसी रणमांई ॥ विभीषण ॥ २ ॥ मैं हितकी बोलूं बात इसोमे सोचो, माथे पडियो पेच वखतछै पोचो । 'भामण्डल सुग्रीव बंधेथेपासे, छिनमें छूटातेह हजून विमासे ॥ उलटो परे सब बात सीता तब आई ॥ विभीषण ॥ ३ ॥ गरुड़ाधिप सुर राय सहाय थयो भारी, यह दीधी अमोलक चीज हुवे नफु स्यारी ॥ दोय बंधव शुद्ध गीत दीसे अवतारी, पर रमणी के भ्रात बडे उपगारी । अजेन विगरी बात देवो फुर माई ॥ विभीषण ॥ ४ ॥ कर विछालो बात ठिकाने लाऊं, थे सर्व बातका जाण कांई समझाऊं । अबके विगरी बात लगे नहीं कारी, नो वानां की बात मानो इक म्हारी ॥ रत्नश्रवाजी तात केकसी माई ॥ विभीषण ॥ ५ ॥

ढाल मूलकी—

सती आपो रती शागो, वात छेहले आवी ।
मानो बोल एह अमोल, नहीं तर खुना म्हावो ॥ भजो० ॥ १० ॥
मरण थी मैं ना डरूं रे, राज्य तणो नहीं कामी ।
लोक मुखे अपवाद सुनन्तां, मैं दुःख पाऊं स्वामी ॥ भजो० ॥ ११ ॥
एह अपवाद मेटियां थी, सेवक हुं छूं थारो ।
कवण राम कवण हूं, मानो वचन हमारो ॥ भजो० ॥ १२ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज पूर्ववत्—

तड़क भड़कला रीस पीस दोनों ने, तुं लंकाने धोयो मुख खबर म्हांने । पिन देख जर्मा के छेह काढूं सागने, वनगामी ने मार सेऊं सीताने ॥ मुनि राम कहे सत्य वात ढले नहीं आई ॥ विभीषण की ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी—

खिजीयो अतिशय रावण, अजहूं एहिज वात ।
कोढीया थारो कोढीया पण, न गयो रे रे कुपात ॥ भजो० ॥ १३ ॥
भाई हत्या थी डरुं, लीयोथो तूंही बुलाय ।
रावण 'रूप' मूलगेरे, लीधो धनुष्य चढाय ॥ भजो० ॥ १४ ॥
भाई वडो बाप थानके, तेहथी ए अरदास ।
करूं छू हूं वेगे आवी, पहूंचाइ जम पास ॥ भजो० ॥ १५ ॥
दोई भाई की लड़ाई तव घणी अधिकाणी ।
मांहा मांही ना टलाए शुद्ध मतेरे मण्डाणी ॥ भजो० ॥ १६ ॥
'कुम्भकर्ण' इन्द्रजीत, अवर राक्षस धाया ।
'राम' 'रामानुज' अपर, रायजी चली आया ॥ भजो० ॥ १७ ॥

क्षेपक (राधेश्याम)

दोहा—अवतो निशिचर सैन्य सब, आई करके जोर ।
वर्षामें जैसे घिरे, उँमड घुँमड घन घोर ॥
आंधी की नाई बढे, वानर भी ततकाल ।
एक एक से भीड़ गये, कर किल्कार कराल ॥
डफ ढोल और शंखों के स्वर, धरती दहलाये देते थे ।
बलवानों के गर्जन तर्जन आकाश हिलाये देते थे ॥
'झन झन' ध्वनियो से एक ओर, खड्गादिक शस्त्र उच्छलते थे ।
दूसरी ओर खट-खट स्वर से गिरी-खण्ड मुष्ठिसे चलते थे ॥
रण-रङ्ग स्थल में मतवाले, रजनीचर कीश नाच उट्ठे ।
लाशों पर लाशों लोट ऊठी, शीशों पर शीश नाच ऊट्ठे ॥
आशा से अधिक लडे वानर, उनरजनीचर बलवन्तो से ।

शस्त्रों की धारें हार गई, मुष्टिकों नखों और दन्तोसे ॥
कट कट कर जब निशिचर-सेना, उस काल समरमें मरती थी ।
अन्याय न्याय का तब निर्णय, पृथ्वीकी लाली करती थी ।
छोटे २ वनरों द्वारा, होगई पराजय खलन्दल की ।
जगने अधर्म की छाती पर, अवलोंकी जीत 'धर्म' बलकी ॥

दोहा-'अवनी-अकम्पन' आदि भट, झूंझ गए जब जाय ।
जोये जब रण भूमि में, 'वज्रदन्त' अतिकाय ॥
तब लंका के नाथसे, ले आज्ञा वरदान ।
चला समरके वास्ते, इन्द्[1] जीत बलवान ॥
लंकामें सचमुच बढी हुई, ताकत इस इन्द्रजीत की थी ।
यह सेनाका सञ्चलकथ, युवराजकी इसको पदवी थी ॥
जीता था इसने इन्द्रलोक, यह इन्द्रजीत कह लाताहै ।
यह ही सबसे प्यारा बेटा, दशमुख का समजाता है ॥

दोहा-उसी समय संग्राममें, आ पहुंचा घन नाद ।
वानर सेनामे तभी, व्यापा विषम विषाद ।
छलसे बलसे और कौशलसे, लड़ताथा वह योद्धा रणमें ।
छुपजाता कभी प्रगट होता, दिन करता कभी निशा रणमें ॥
आकाश मार्ग पर जा जा कर, हड्डियों धूरी बरसाता था ।
तक २ कर वीर वानरों पे, नाना विधि बाण चलाता था ॥
लड़ते २ जब चूर हुई, तब डोल उठी वानर सेना ।
'रघुकुल के नाथ दुहाई है,' यह बोल उठी वानर सेना ॥
देखा जब रण भूमी में, वानर हैं लाचार ।
अज्ञा ले 'रघुनाथ' की हुवे 'लक्ष्मण' तैयार ॥
आते ही बलवीरने, रण में किया प्रकाश ।
एक बाण में असुर की, माया करदी नाश ॥
इन्द्रजीत कहने लगा, सन्मुख इन्हें निहार ।

१ इसका नाम मेघनाद ।

ओहो ! बच्चों भी भूप, अब रण को तैयार ॥
यह युद्ध स्थल वीरों का है, बच्चों का है खिल्वाड़ नहीं ।
धारें हैं यहां कृपानों की, मिष्ठान्नों का बाजार नहीं ॥
जिन दांतों का सूखा न दूध, दुःख होता उन्हें तोड़ने में ।
इसलिए लौट जाओ घर को, खुश है घननाद छोड़ने में ॥
लखण लाल कहने लगा, करके कड़ी निगाह ।
घुरा चोर की बात को, नहीं मानते शाह ॥
लंका पर रघुकुल की कमान, इसकारण आकर कड़की है ।
सत्यवती सीताजी की विरह ज्वाला, बदला लेने को भिड़की है ॥
इसलिये सम्भलजा इन्द्रजीत, यह इन्द्रिय जीत बढ़ रहा है ।
क्षत्री के काल जीत धनुपे, शायक जगजीत चढ़ रहा ॥
वह नहीं कहीं दब सकता है, जो बल रखता है मुट्ठों का ।
रघुवंश आन का पूरा है, कर देगा चूरा दुष्टों का ॥
लखणलाल के वैन सुन, हुआ इन्द्रजीत लाल ।
आपस में अब भिड़ गये, दोनों वीर विशाल ॥
खांडों पर खांडे खड़क उठे, बाणों पर बाण बोल उठे ।
वीरों का बांका युद्ध देख पृथ्वी आकाश डोल उठे ॥
छोडा जब रिपुने मेघ बाण, तब इधर समीर बाण छोडा ।
वह लगा छोडने अग्नि-बाण, लक्ष्मण ने नीर बाण छोडा ॥
नाना प्रकार की चतुराई, दश-कन्धर तनय दिखाता था ।
कौशल-किशोर के कौशल से, वेकार वार होजाता था ॥
हर तरह युद्धमें इन्द्रजीत, जब हार गया वेजान हुआ ।
लक्ष्मण के हाथके बाणों से, गम खा खा के हैरान हुआ ॥
तब लगा सोचने 'क्या करीए' यहतो सामान प्रलय काहै ।
लक्ष्मण साधारण मनुज नहीं, सचमुच अवतार विजय काहै ॥

ढाल मूलगी—

राम 'कुम्भकर्ण' लड़े, इन्द्रजीत'' जाम ।
लक्ष्मण सूरे आवी अड़ियो, एह वडो संग्राम ॥ भजो ॥ १८ ॥

'नील' "सिहजघन्य" 'दुर्मुख", 'घटोदर" सूं देख ।
'स्वयम्भू' जई दुरमति' सूं, नल 'सम्भू' सुविशेप ॥ भजो ॥ १९ ॥
'अंगद' ने 'मयनेमय' 'वीर विराध' 'सुग्रीव' ।
'स्कन्द' 'चन्द्रनख' निरूपम, माची रही अति रीव ॥ भजो ॥२०॥
'श्रीदत्त' ज, 'जम्बूमाली', 'भामण्डल,' जी 'केतु' ।
'हनुमन्त' 'कुम्भकर्णसुत' लाग्या रोप समेतु ॥ भजो ॥ २१ ॥
'कुन्द' ने 'धूमाक्षी' दाखी, 'किष्किन्धेश' 'सुमाली' ।
'चन्द्ररशिम' 'सारण' साथे. माचियो युद्ध कराली ॥ भजो ॥२२॥
'लक्ष्मण' ऊपरे 'इन्द्रजीत' मेले तमाम बाण ।
'लक्ष्मण' टाले प्रगट पणे, शूरों को सुलतान ॥ भजो ॥ २३ ॥
इन्द्रजीत पे अनुज[1] मेले, नाग पास अस्त्र ।
तांतणिये गज तेम बांध्यो, कोई फुरियो नहीं शस्त्र ॥ भजो ॥२४॥
रथ में घाली ततकाल, 'चन्द्रोदर' ले जावे ।
कटक मांही अति उच्छाए, राख्या थानक ठावे ॥ भजो ॥ २५ ॥
'कुम्भकर्ण' ने नाग पासे, रामे बांधी लीयो ।
'भामण्डल' हाथे देई, ते पहोंचाय दीयो ॥ भजो ॥ २६ ॥
अवर राक्षसों सूं आवी अड़ीया, वानरा भई आप ।
ते ते बांधी आंणीया, राम तणे परताप ॥ भजो ॥ २७ ॥
मेघ वाहने' बांधीयों, सांधिया ऊर नांही ।
दिवस फिरे देखो वैरी, जोर चले नहीं प्राही ॥ भजो ॥ २८ ॥
देखी नयन अति कुचयन, पामीया तब राय ।
वीर ऊपर शूल मेले, किंयू ही ए मरिजाय ॥ भजो ॥ २९ ॥
शूल अन्तगल नाम, छेदीयो जेम केली ।
लक्ष्मण नो लीला मेरे, सुदिन वेरी मेली ॥ भजो ३० ॥
श्री धरणेन्द्र दत्त शक्ती, विजय नामे अमोघा ।
विजय हेते रावण राय, ऊपाडी घन्तोघा ॥ भजो ॥ ३१ ॥

---

१ लक्ष्मण ।

धग धगन्ती जलती चलती, तड तडन्ती नादे ।
अन्त मेघ तडित लेखा, फेरवी अल्हादे ॥ भजो ॥ ३२ ॥
देव पाछा ओसरे, लोक न मेले नयन ।
देखतां थिरता मिटे, ऊपजेरे कुचयन ॥ भजो ॥ ३३ ॥
राम कहै सौमित्री ने, विभीषण नी लाज ।
आपने छे राखि ले ओ, मारे राक्षक राज ॥ भजो ॥ ३४ ॥
शरणे आयों राखणो, नहीं सहाय कराय ।
अवाल्ह नदियों तणी देखवा नटी जाय ॥ भजो ॥ ३५ ॥
सौमित्री आगे हुओ, गरुड नो असवार ।
रावणानुज पूठ दोयो, एह खरो व्यवहार ॥ भजो ॥ ३६ ॥
लक्ष्मण साथे कहै राय, आघो पाछो थाय ।
पर मरणे तूं कांमरे, जो तुझ आवी दाय ॥ भजो ॥ ३७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

अबतक में खेल खिलाना था, अब खा जाने की बारी है ।
इस शक्ती बाण की सूरत में आ पहुंचो मौत तुम्हारी है ॥
इसका मारा बचता ही नहीं, दिन उगते प्राण गवांता है ।
ज्यों ही यह तन पर पड़ती है तन मृतक तुल्य हो जाता है ॥
इसलिए सम्भल ओ रघुवंशी, तूं आज न बचने पायेगा ।
कहै रावण ललकार अबे हम, लखण जीत कहलायेगा ॥
हंस कर लक्ष्मण ने कहा, इस मद पर धिक्कार ।
बाण गये मुद्गर गये, गई खड्ग तल्वार ॥
जो भी हथीयार तुम्हारे थे, उन सब ने हारी मानी है ।
जब शस्त्र युद्ध में हार गये तो देव शक्ति को ठानी है ॥

ढाल मूलगी

श्रमावी अति ही श्रमावी, लक्ष्मण ऊपर तेह ।
रावण मूके रोपस्ठं रे, ताम हुचो अन्देह ॥ भजो ॥ ३८ ॥
सा आवन्ती देखी पेखी, सौमित्री सुग्रीव ।
'भामण्डल' 'नल' ने 'विराध,' हनुमन्त शूर अतीव ॥ भजो ॥३९॥

अस्त्रों सूं बलवन्त वारे, ताडे ताम अपार।
अंकुश खोटो हाथीयो, जेम न माने कार ॥ भजो ॥ ४० ॥
उरस्थले आवी पड़ी, मूर्च्छाणो नरनाथ।
हाहा कार हुओ घणो, शोचकरे सहु साथ ॥ भजो ॥ ४१ ॥
कोपी राम आवे ताम, बैसी रथ रसाल।
राय तणो रथ रोपसूंरे, तोड़ियो ततकाल ॥ भजो ॥ ४२ ॥
बीजो त्रीजो चउथो पंचमां रथ देखी।
तृण तणो पर तोडी नांखे, राघव रोप विशेपी ॥ भजो ॥ ४३ ॥
रावण चिन्तमें चिन्तवे, भाई तणों दुःख भूरी।
एतो हुवो आंधलो, रहीये एथी दूरी ॥ भजो ॥ ४४ ॥
लंकामें नृप आवीयो, आथमीयो दिनकार।
दुःखन जावे देखीयो, आणी एह विचार ॥ भजो ॥ ४५ ॥
रावण भागो जाणीयो, फिरीया राम तेवार।
लक्ष्मण पडियों देखतोंरे, न रही शुद्ध लिगार ॥ भजो ॥ ४६ ॥
मूर्च्छाए धरती पडया, करी शीतल उपचार।
उठाई बैठा किया, बोले लक्ष्मण लार ॥ भजो ॥ ४७ ॥
वत्स! तुमे क्यो पोढीया, क्योन प्रकाशो वयण।
शक्ती नहींजो वयणनी, कांई बतावो सयन ॥ भजो ॥ ४८ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज कवाली प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमलजी म० कृत---

लगाजो तीर लिछमन के, पड़े गश खाके भूमिपर।
कहे तब राम आंसू भर, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ १ ॥
सीया रावण के कबजेमें, अरे तुमने करी पेनी।
मेरा इस वनमे बेली कौन, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ २ ॥
अरे रणबीच सेनाको, सिवा तेरे हटावो कौन।
गिरगया क्यों धनुष्य तेने, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ३ ॥
तेरी हिम्मत पेही बन्धु, चढ़ाई कीजो लंकापे।
बधाजो धीर अबतमको, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ४ ॥

अगर नफ़रत हो लड़नेसेतो, फिर बनको चले वापस ।
कुछ भीतो कहो भाई, उठो लक्ष्मण उठो लक्ष्मण ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

ए मुख देखे ताहरो, सुग्रीवादि नरेश ।
बोलन आपो छो तुमें, आणे आरती अशेस ॥ भजो० ॥ ४९ ॥
रावण तो गयो ज़ीवतो, ए थारे चित्त रोप ।
रावण मारे तो सही, आणो चित्त सन्तोष ॥ भजो० ॥ ५० ॥
तिष्ट तिष्ट तूं कहां गयो, म्हारो भाई मारी ।
धनुष्य बान लेई चल्या, हनुमन्त कहे हाकारी ॥ भजो० ५१ ॥
किहां चाल्या प्रभुजी तुमें, वैर विशोधन भाई ।
रावण तो लंकामें गयो, ताम करयो पिछताई ॥ भजो० ॥ ५२ ॥
नारी हरी भाई हण्यो, एह अवस्था आपी ।
मैं आयों नासी गयो, फिटरे रावण पापी ॥ भजो० ॥ ५३ ॥
लक्ष्मण देखी मारीयोरे, प्रभुने वेदन मारी ।
ए कामन होवे कायरों, देखो क्यूंन विचारी ॥ भजो० ॥ ५४ ॥

सुरदासजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज पदरी—

छोटारे मेरा भैया बोलना इकवार ॥ टेर ॥
मातारे वचनों नीकस्यारे, पिता केरे उपदेश ।
अयोध्यारे पुरीरा मानवीरे आंपां, आय वस्या परदेश ॥ छोटा० ॥ १ ॥
आवन्तड़ा दोय आवीयोरे, जाऊंगो मैं एक ।
माता सुमित्रा बूजसीरे कांई बतासूं देख ॥ छोटा० ॥ २ ॥
जाईजो रे सीता जाई जोतो, लंका जाईजो रावण को राज ।
आंधा केरी लाकडी म्हारी, छिटक पडीछे आज ॥ छोटा० ॥ ३ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

गिरे लखण की देह पर, मूर्च्छा खाकर राम ।
वानर मण्डल में मचा, मातम और कोह राम ॥
कहते थे बडे २ वानरहा ! विधना क्या उत्पात हुआ ।
रघुकुल पर उल्का पात हुआ कपिदल पर वज्राघात हुआ ।

जब लखण नहीं तो राम कहां ! जब राम नहीं तो विजय कहां।
जब विजय नहीं तो सीया कहां, जब सीया नहीं शुभ समय कहां॥
उनका तो रण सीता पर था, लंका पर था उद्देश पे था।
अपना रण परमारथ पर था, साहस पर था आदेश पेथा।
था उनसे ज्यादा पक्षहमें लंका पर जय पाजाने का॥
जब सहायता को साथ हुवे, तो पूरा कार्य करानेका॥
संसार कहेगा-वनरोंने, वनमे बहकाये रघु वंशी।
वनरेतो वनको भाग गये, सबकुछ खो बैठेरघु वंशी॥
लानतहै ऐसेजीनेपर, जो नाम धराये अपना हम।
बेहतरहै डूबके सागरमें, अस्तित्व मिटाये अपना हम।

ढाल मूलगी—

जाय घटन्ती जामनी, कीजे कोड उपकर्म॥
प्रभु जीव्यों सहुजीवसे, म्होटो छे ए मर्म॥ भजो० ॥ ५५ ॥
एतो नवां लीशमीं, ढाल भली कहीवाय।
केशराज गह देखो, पुण्ये पाप पुलाय॥ भजो० ॥ ५६ ॥

दोहा (सिन्धु रागे—)

सुन 'सुग्रीव' 'विराध' 'नल', भामण्डल हनुमन्त।
देव करो ए एहवी, तुम घर जावो तुरन्त॥ १ ॥
नारोहरण बंधव मरण, दुःख रह्यो ए दूरी।
लंका न दीधी विभीषण, ए दुःख मान्हे भूरी॥ २ ॥

क्षेपक सवैया

मात को मोहन द्रोह दुमान को सोच न तात को मान दहे को।
राजको लोभन प्राण को धोभन बंधु विछोहन अन्तर हेको॥
नेकन चिन्तमें आवत केसव, सोचन लंकमें सीन रहेको।
तारण भूमिमें राम कहे, मुख सोच विभीषण भूप कहेको॥

दोहा मूलगी—

प्रातः हुवां रावणहणी, दई विभीषण राज।
लक्ष्मण साथे लागथं, सीतासुं नहीं काज॥

क्षेपक ढाल तर्ज बाहु बली खडा० श्रीराम मुनि कृत—
अबहूं नहीं रहूंरे अटक्को, म्हारो मन लागो लिछमनसूं ॥ टेर॥
जानीथी क्या ड्यआई, बंधव धरा पटक्यो ॥ अबहूं ॥ १ ॥
.यातो दुस्मन घर बैठी, धिक २ जीवत घटक्यो ॥ अबहूं ॥ २ ॥
मुझ संगे मुझ बंधव नीकस्यो, मुझ संगे वनमें भटक्यो ॥अबहूं॥३
राम बंधवनो होतही विरहो, फिट हीयाक्यूं नहीं फटक्यो ॥अबहूं॥४
क्षेपक ढाल तर्ज धूसोवाजेरे—धूलचंदजी कृत,
लक्ष्मण के रे बाणलग्यो शगती, रे लक्ष्मणके ॥ टेर ॥
रम कहै रे सुनो सब प्यारे, आजकरोरे ऐसी भगती ॥ लक्ष्मण॥१
लक्ष्मण वीरने जोरे जीवाड़े, देऊं म्होटोरराज सवाई घरती ॥ल॥२
पुण्य फले जो दशरथ केरो, केरं जीवाडे सीत सती ॥ ल० ॥४॥
नहीं भूलूंमें ऊपकार तुम्हारो, लक्ष्मण जिवणको कहो जुगती ।ल० ।४
दोहा मूलगा—
कहै विभीषण स्वामीजी, धीरज धरो अपार ।
कायर होईन थरहरो, उद्यम नो अधिकार ॥ ४ ॥
सक्ती हण्यां जीवे सही, ज्योंन ऊगे दिनकार ।
जब लग वरते जामनी, करलीजे उपचार । ५ ॥
तंत्र मंत्र ओषध जडी, कोईयक दाय उपाय ।
रात्री मांही कीजीये, जिम प्रभु सारो थाय ॥ ६ ॥
ढाल चमालीशमीं तर्ज पथीडा वात कहो—
जीवे हो जीवे वीरो बाल होरे, कोई करो तुम कामरे ।
बीजोरे काज सहु असुहामणोरे, ताम कहै श्रीरामरे ॥ जीवे० ॥१
ढाल क्षेपक मूलगी—
लिछमन को यहां से ले लीजे, लहु कहै अरजी सुन लीजे, इणी में जेज नहीं कीजे । ऊठाई निजकट के लाया, जापता इण विध करवाया ॥ सत्य० ॥ ८६ ॥
ढाल मूलगी—
सातज रे सात कोट किया भलारे, चारकिया दरबार रे ।
राजारें राजा रखवाले रह्यारे, होईने हूंसीयार रे ॥ जीवे० ॥ २ ॥

पूरब रे पूरब दिशिने आरणेरे, कपिपति ने हनुमन्त रे।
'दधिमुख'रे'दधिमुख''स्कन्द''गंवाक्ष' सूरं, तार गवय गुणवन्तरे।३
उत्तर रे उत्तर दिशे विहंगमारे, 'अंगद' 'कूरम' अंगरे।
महेन्द्रजरे महेन्द्र सुषेणजीरे, चन्द्ररश्मि सुचंग रे ॥ जीवे० ॥ ४ ॥
पश्चिम रे पश्चिम दिशे दुर्द्धर जयेरे, समर शील मन्मथ रे॥
'नीलजरे' नील विजयने सम्भूवरे ए साते समर थरे॥ जीवे० ॥५॥
दक्षिण रे दक्षिण दिशे भामण्डलूरे, वीर 'विराधज' मेद रे॥
गजनलरे गजलनने विभीषणूरे, भुवनजीत सुभेदरे॥ जीवे० ॥६॥
मांहैरे मांहे राघव राखीयोरे, सुग्रीवादिक ताम रे।
जागे रे जागे योद्धा महाबलीरे, मति को विणसे कामरे॥ जीवे० ॥७॥

(वक्ता से व्याख्यान में यदि शक्ति जाने का अधिकार पूर्ण न बच सके तो निम्नोक्त गाथाएं कहकर लक्ष्मणजी के शरीर में से शक्ति निकाल देनी चाहीये)

ढाल क्षेपक मूलगी—

प्रातः हुवां शक्ति ही जावे, विसल्या तनने फरसावे, प्रभुजी सुख साता पावे, लक्ष्मणजी पूछे है त्यारे, कोट ए एस्यो रखवारे॥ सत्य ॥ ८७ ॥ रघु पतिवात केहण लागो, शक्तिदे रावण तो भा गो तुमेंयहां आण्या धर रागो। कोटका जापता कीना, रात को सब पोहरा दीना ॥ सत्य० ॥ ८८ ॥

ढाल मूलगी—

सीतारे सीता ए हिज सों भलीरे, लक्ष्मण शक्ति प्रहाररे ।
प्रातः रे प्रातः प्राण प्रभुजी तजेरे, भाईसूं अति प्यार रे ॥जीवे०।८।
मूर्च्छारे मूर्च्छा आवी अति घणीरे, धरणी पडी ततकाल रे।
करी रे करी शीतलता सरीरे, उठाई साबालरे ॥ जीवे० ॥ ९ ॥
करुणज रे करुण स्वरे रोवे घणीरे, करती अधिक विलाप रे।
धम्मेरे धम्मे तनु विद्याधरीरे, देह पछाडे आपरे ॥जीवे० ॥१०॥
हावच्छ ? रेहा वच्छ? लक्ष्मण कहां गयोरे, प्रभुनी छोडी आजरे।
तुझ विन रे तुझ विन प्राण जीवे नहींरे, करसे सही अकाजरे।जीवे।११
हा धिक् रेहा धिक् अधिक अभागणीरे, म्हारे कीधे दूरजरे।

क्षेपक ढाल तर्ज बाहु वली सग० श्रीराम मुनि कृत—

अबहूं नहीं रहूंरे अटक्यो, म्हारो मन लागो लिछमनसूं ॥ टेर॥
क्या जानीथी क्या हुयआई, बंधव धरा पटक्यो ॥ अबहूं ॥ १ ॥
सीयातो दुस्मन घर बैठी, धिक २ जीवत घटक्यो ॥ अबहूं ॥२॥
मुझ संगे मुझ बंधव नीकस्यो, मुझ संगे वनमें भटक्यो ॥अबहूं॥३
राम बंधवनो होतही विरहो, फिट हीयाक्यूं नहीं फटक्यो ॥अबहूं॥४

क्षेपक ढाल तर्ज धूंसोवाजेरे—धूलचंदजी कृत,

लक्ष्मण के रे बाणलग्यो शगती, रे लक्ष्मणके ॥ टेर ॥
रम कहै रे सुनो सब प्यारे, आजकरोरे ऐसी भगती ॥ लक्ष्मण॥१
लक्ष्मण वीरने जोरे जीवाड़े, देऊं म्होटोरराज सवाई धरती ॥ल॥२
पुण्य फले जो दशरथ केरो, केरं जीवाडे सीत मती ॥ ल० ॥४॥
नहीं भूलूमें ऊपकार तुम्हारो, लक्ष्मण जिवणको कहो जुगती ।ल० ।४

दोहा मूलगा—

कहै विभीषण स्वामीजी, धीरज धरो अपार ।
कायर होईन थरहरो, उद्यम नो अधिकार ॥ ४ ॥
शक्ती हण्यां जीवे सही, ज्यों न ऊगे दिनकार ।
जब लग वरते जामनी, करलीजे उपचार । ५ ॥
तंत्र मंत्र औषध जड़ी, कोईयक दाय उपाय ।
रात्री मांही कीजीये, जिम प्रभु सारो थाय ॥ ६ ॥

ढाल चमालीशमीं तर्ज पथीडा वात कहो—

जीवे हो जीवे वीरो वाल होरे, कोई करो तुम कामरे ।
वीजोरे काज सहु असुहामणोरे, ताम कहै श्रीरामरे ॥ जीवे० ॥१

ढाल क्षेपक मूलगी—

लिछमन को यहां से ले लीजे, लहु कहै अरजी सुन लीजे, इणी में जेज नहीं कीजे । ऊठाई निजकट के लाया, जापता इण विध करवाया ॥ सत्य० ॥ ८६ ॥

ढाल मूलगी—

सातज रे सात कोट किया भलारे, चारकिया दरबार रे ।
राजारे राजा रखवाले रह्यारे, होईने हूंसीयार रे ॥ जीवे० ॥ २॥

दीठोरे दीठोहूं तवखेचरारे, सहश्र विजय तसनामरे ।
वयरजरे वयरज मैथुनने कारणे रे, मांड्यो नव संग्राम रे ॥जीवे॥२६
शक्तिज रे शक्तिज चन्दरवा तणी रे, कीधो ताम प्रहाररे ।
आव्यो रे आव्यो हूं चली भूतले रे, नलहूं शुद्ध लगाररे ॥जीवे॥२७
कौशल्य१ रे कौशल्य पुर उद्यानमें रे, पड़ियो पामूं दुःखरे ।
ओछो रे ओछो जले जेम माछलो रे, रंचन पामूं सुखरे ॥ २८ ॥
भूपतिरे भूपति श्री भरतेश्वररे आई गयो अभिरामरे ।
करुणारे करुणा अधिकी ऊपनी रे, कोमल छे परिणाम रे ॥ २९ ॥
आणी रे, आणी गन्धाम्बूतदारे२, सींच्यो अंग सजोर रे, ।
नाशी रे नाशी शक्ति गई सही रे, जेम जाग्यो थी चौररे ॥ ३० ॥
हुओ रे हुओ ताम समाधीयो रे, अचरीज अधिको पामरे ।
महीमारे महीमा गन्धाम्बू तणी रे, पूछीयो में शिर नाम रे ॥३१॥
भाई रे भाई तुम्हारो तव भणे रे, सारथ वाहज एकरे ।
'गजपुर' रे गजपुर थी इहां आवीयो रे, साथे महीप३ अनेकरे॥३२॥
तूटयो रे तूटयो भेसो एकजो रे, पड़ियो मारग वीच रे ।
माथे रे माथे पग दई चले रे, लोक जीके छे नीच रे ॥ ३३ ॥
म्होटो रे म्होटो उपद्रवे मुओ रे, 'सेतंकर' पूरि देखरे ।
पवनजरे 'पवनज पुत्र' नामे भलो रे, देव हुओ रे मनेखरे ॥ ३४ ॥
अवधजरे अवधि ज्ञान सूं देखीयो रे, पूर्व भवान्तर जामरे ।
व्याधिज रे व्याधि विकुर्वी देश में रे, पुर २ गाम ही गाम रे ॥३५॥
द्रोणजरे द्रोण मेघना देश में रे, नहीं व्याधी पेसाररे ।
मामो रे मामोजी में पूछीयो रे, एछे कवण विचार रे ॥ ३६ ॥
पृथ्वी रे पृथ्वी सघली माहरी रे, अन्तर गई कायरे ।
जिमछेरे जीमछे तिम नाम कहो रे, अठ कर्यां दुःख थाय रे ॥३७॥
बोले रे बोले सोप्रभु सांभलो रे, प्रियंकरा मुझ नार रे ।
रोगे रे रोग पीडी थी घणी रे, गर्भ तणो आधाररे ॥ ३८ ॥

---

१ अयोध्या। २ सुगन्धी पाणी। ३ राजा।

स्वामी रे स्वामीने देवर भलो रे, पीडाए सुविशेष रे ॥ जीवे०॥१२॥
मुझने रे मुझने त्रिवर वसुधारा रे, दीधे अव देवी आप रे ।
मांहे रे मांहे हूं पेख्रं सही रे, ऊपरे वाले छाप रे ॥ जीवे० ॥१३॥
एटले रे एटले एक विद्या धरु रे करुणा अति दान्त रे ।
विद्या रे विद्या वर अव लोक नी रे, अवलोकी भावन्त रे ॥जीवे०॥१४॥
वाई रे वाई आरति मतिकरो रे, लक्ष्मण लीला मांहे रे ।
प्रातः रे प्रातः ए उठसे सही रे, मिलसे राम उच्छाहे रे ॥जीवे०॥१५॥
सुमती रे सुमती हुईसा सुन्दरी रे, कदी होवे परभात रे ।
वारु रे वारु वर्तिका सांभल्यो रे, दुःख देशान्तर जात रे ॥ १६ ॥
रावण रे रावण अति रस रंगमां रे, लक्ष्मण मरियो जाणी रे ।
भाई रे भाई सुत नृप वांधीया रे, सुणी रोवे दुःखी आणी रे ॥१७॥
हा वत्स ! रे हा वत्स ! कुम्भकर्णजी रे, हा वत्स ! नन्द निरूप रे।
इन्द्रज रे इन्द्रजीत घनवाहनू रे, 'जम्बू माली' अनूप रे ॥ १८ ॥
अवरज रे अवर अनेरा राजीया रे, वन्धाणी तुम देह रे ।
मुझने रे मुझने जीवतां थकां रे, अजब तमाशो एह रे ॥ १९ ॥
सुमरी रे सुमरी गुण सुत भाई ना रे, वारम्वार पड़न्त रे ।
वैठो रे वैठो कीजे फिरी फिरी रे, रमणी जेम रडन्त रे ॥ २० ॥
एकज रे एकज विद्या धर भलो रे, एटले आवे चाल रे ।
पूर्वज रे पूर्व दिशीने वारणे रे, भामण्डल ने निहाल रे ॥ २१ ॥
भाखे रे भाखे वाणी अमीसमी रे, मेलवो राघव राय रे ।
लक्ष्मण रे लक्ष्मण जी जीवातणो रे, दाखूं हूं उपाय रे ॥ जीवे ॥ २२
भामण्डल रे भामण्डल, कर साहीयो रे, आण्यो प्रभुने पास रे ।
चरणे रे चरणे लागी वीनवे रे, आणीने उल्हास रे ॥ जीवे ॥ २३॥
पुर वर रे पुरवर छे सगीत जी रे, शशि मण्डल भूपाल रे ।
राणी रे राणी राजे सुप्रभा रे, नन्दन हूं सुविशाल रे ॥ जीवे ॥२४
नामे रे नामे छू प्रति चन्द जी रे, वैसी विमाने जाऊं रे ।
क्रीडा रे क्रीडा करवा कारणे रे सुन्दरी सूं शोभाऊं रे ॥ जीवे॥२५

स्नानोदक लावोसही, कोई म लावो वार ॥ २ ॥
आज लगे सेवक हुता, आगे तुम मुझ भ्रात।
भाई भिक्षा आपवे, राखो जग आख्यात ॥ ३ ॥
जिहां लगे जग जीवसूं, तिहां लगे उपकार।
विसरसूं नहीं तुम अछो, प्राण तणा दातार ॥ ४ ॥

ढाल पेंतालीशमीं तर्ज चढ़ो २ लाडा चार म लावो—

सोई समाणो अवसर साधे, अवसर साधे स्वामी आराधे ॥ टेर ॥
बैसी विमाने ते तब चलिया, विद्याधर विद्या बले बलिया।
पुरी अयोध्या चाली आया, भरत नरेश्वर सोवत पाया ॥ १ ॥
ऊपर भूमि ए मयज[1] सुहाली, गलती राते नींद रसाली।
अम्बरे रह्या राग आलापी, नाद-बले लीयो राय जगावी ॥ २ ॥
जाग्यो भूप हूवो हुंसियारी, दश दिशे जोवे नजर पसारी।
आगे ऊभा दीठा सोई, पूछे प्रभु कहो कारण कोई ॥ ३ ॥
'भामण्डल' भाखे सब वातां, भरत हीया में दुःख न समातो।
ऊठी तब ही हुओ आगे, बैसी विमाने मारग लागे ॥ ४ ॥
कौतुक मंगल आया चाली, सोवन्ती[2] रे जगावी वाली।
'द्रोण मेघ' नृप पासे जाची, सब गुण लक्षणवन्ती साची ॥५॥
कन्या सहश्र तणो परिवारो, ते सघली लागी तस लारो।
प्रतिज्ञा छे सहुनी सरखी, एकज पति करवाने हरखी ॥ ६ ॥
'भरत' अयोध्या ए पहोंचायो, भामण्डलजी आयो भायो।
विशल्या सघलीछं लीधी, चाल्या तब ही ढील न कीधी ॥७॥
जल द्वीपे ऊजालो देखी, रविऊग्यांनो भर्म विशेषी।
अतिही वेगे विमान चलावे, वान कगांनो प्रभुरे आवे ॥ सोई ॥ ८
सहु कोई आरतीया होता, कद आवे यो वाटज जोता।
सूर्य उदय पंकज विकसावे, देखी विशल्या सहु सुखपावे॥ सोई ९
विशल्या प्रभुनो तन फरसे जागे दूधे जलधर वरसे।

धूलचंदजी रत दीपक ढाल तर्ज म्हारा गुरुजी गुणवन्ता—(न टर फो)
म्हारा महाराजारो अंग फरस रही रे २ आहर्प म्होरे ॥ टेर ॥

---

१ शय्या = २ सोतीहुई—

हुईरे हुई सही निरोगणीरे, पुत्री पण परधानरे।
प्रसवीरे प्रसवी सुख समाधिमेंरे, विशल्या अभीधानरे॥ ३९॥
थारोरे थारो जेम तेम माहरोरे, देश हुतो समभायरे।
पुत्रीरे पुत्री स्नान जले करीरे, सीच्योंथी सुखथायरे॥ ४०॥
पूछयोरे पूछयो मुनिवर एकदारे, सत्य भूती सुख दायरे।
एछेरे एछे कौण विशेपथीरे, ज्ञाने भेद लहायरे॥ जीवे॥ ४१
द्राक्षरे द्रक्ष थकी घणोरे, मीठी वाणी विशेपरे।
पूरवरे पूरव भवना तपतणोरे, एफलछे सुविशेपरे॥ जीवे॥ ४२
घाव१जरे घावने सराहणूंरे, शल्य तणो अपाहररे।
व्याधिज व्याधि सहुनी क्षयकरेरे, लक्ष्मणजी भरताररे॥ ४३॥
ए गुण रे एगुणनो किरतारछेरे, स्नान तणो जलमाररे।
अमृत रे अमृत हीथी गुण घणारे, सुर गुरु न लहै पाररे॥४४॥
मुनिवररे मुनिवरनी वाणी थकीरे, प्रत्यय लही प्रत्यक्षरे।
जलनोरे जलनो प्रगट प्रभावजोरे, प्रगट्यो लोक समक्षरे॥४५॥
एमजरे एम कहीने मुझ भणीरे, स्नानतणुं जल दीधरे।
छोंटां छोंटां नाख्यो देशमांरे, देश निरोगी कीधरे॥ ४६॥
ओहिजरे ओहिज जलसूं सींचियोरे, में तुझ इण ही वाररे।
शक्तिजरे शक्ति शल्य गयो घावहीरे, रुझ्यो क्षण ही मझाररे॥४७॥
भरतजरे भरतजने में देखियोरे, जलनो प्रगट प्रभावरे।
आणोरे आणो अति ऊतावलूरे, छोडो अवर उपावरे॥ ४८॥
ढालजरे ढालज चम्मालीशमीरे, राम महा सुख पायरे।
जेहवीरे जेहवी तो भवतिव्यतारे, तेहवी मिलेही नहायरे॥४९॥

दोहा—वेलावल रागे

'भामण्डल' हनुमन्तजी, अंगद सुभट सलील।
राम कहै बोलाय के, कामतणी नहीं ढील॥ १॥
पहेला जाजो भरतपे, भरतभणी लेई लार।

१ विशल्या के स्नान जल से घाव का संरोहण, शल्य का अपहार और व्याधिका क्षय होगा, और इसका पति लक्ष्मण होगा।

स्नानोदक लावोसही, कोई म लावो वार ॥ २ ॥
आज लगे सेवक हुता, आगे तुम मुझ भ्रात।
भाई भिक्षा आपवे, राखो जग आख्यात ॥ ३ ॥
जिहां लगे जग जीवसूं, तिहां लगे उपकार।
विसरसूं नहीं तुम अछो, प्राण तणा दातार ॥ ४ ॥

ढाल पैंतालीशमीं तर्ज चड़ो २ लाडा वार म लावो—

सोई समाणो अवसर साधे, अवसर साधे स्वामी आराधे ॥ टेर ॥
बैसी विमाने ते तव चलिया, विद्याधर विद्या बले बलिया।
पुरी अयोध्या चालो आया, भरत नरेश्वर सोवत पाया ॥ १ ॥
ऊपर भूमि ए सयज[1] सुहाली, गलती राते नींद रसाली।
अम्बरे रह्या राग आलापी, नाद-बले कीयो राय जगावी ॥ २ ॥
जाग्यो भूप हुवो हूंसियारी, दश दिशे जोवे नजर पसारी।
आगे ऊभा दीठा सोई, पूछे प्रभु कहो कारण कोई ॥ ३ ॥
'भामण्डल' भाखे सब वातां, भरत हीया में दुःख न समातो।
ऊठी तब ही हुओ आगे, बैसी विमाने मारग लागे ॥ ४ ॥
कौतुक मंगल आया चाली, सोवन्तीर[2] रे जगावी वाली।
'द्रोण मेघ' नृप पासे जाची, सब गुण लक्षणवन्ती साची ॥ ५ ॥
कन्या सहस्र तणो परिवारो, ते सघली लागी तस लारो।
प्रतिज्ञा छे सहुनी सरखी, एकज पति करवाने हरखी ॥ ६ ॥
'भरत' अयोध्या ए पहोंचायो, भामण्डलजी आयो भायो।
विशल्या सघलीह लीधी, चाल्या तब ही ढील न कीधी ॥ ७ ॥
जल द्वीपे ऊजालो देखी, रविकरणांनो भर्म विशेषी।
अतिही वेगे विमान चलावे, बान करांनो प्रभुपे आवे ॥ सोई ॥ ८
सहु कोई आरतीया होना, कद आवे वो वाटज जोता।
सूर्य उदय पंकज विकसावे, देखी विशल्या सहु सुखपावे ॥ सोई ९
विशल्या प्रभुनो तन फरसे आणंद हुवे अम्बर बरसे।

धूलचंदजी कृत देशक ढाल तर्ज म्हारा गुरुजी गुणवन्ता—(नाटक की)

म्हारा महाराजाको अंग फरस रही रे २ आइपे म्हीरे ॥ टेर ॥

१ शय्या = २ सोती हुई—

कर सेथी तन फरसनलागी, जिम जिम साता थावे ।
दावानलके ऊपर जाणे,अमृत मेह वरसावे ॥ म्हारा ॥ १ ॥
इण पापण ने यो कुण लायो, शक्ति एम विचारे ।
इणआगेहूं किमकर ठहरूं, लारे लागो म्हारे ॥ म्हारा ॥ २ ॥
थरहर थरहर धूजन लागी, आतो वेरण म्हारी ।
फिट फिट फिट फिट दुनियोंकरसी, लाज गमासी मारी ॥ ३ ॥
सारंग नाठे सिंहनी आगल, गरुड़ थकी जिम सापो ।
रविना आगे तमतिम नासे, पुण्य थकी जिम पापो ॥ म्हरा ॥ ४ ॥
मन मुरझायो होगई विरुसी, शक्ति परी पुलाई ।
दांत पीसती नाठी देवी, जोर न चाले कोई ॥ म्हारा ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

शक्ति सहु देखन्तां नाठी, जेम नागणी मार्याथी लाठी ॥ सोई॥१०
सा जाती हनुमन्ते झाली, तब सान सके हिंडी हाली ।
जेम चीड़ी सिंचाणे साही, पूछन्तां बोलन्त उच्छाही ॥ ११ ॥
प्रज्ञसीनी हूं लघु भगिनी, देवी रूपेछू शुभ लगिनी ।
केड़ पडी फेरूं तसठामो, महा शक्तीछे महारूं नामो ॥सोई॥१२
धरणेन्द्रे रावण ने आपी, रावणे पणहूं थिरकरी थापी ।
कामसर्यो थो रावण केरो, पण लक्ष्मणनो भाग भलेरो ॥ १३ ॥
पूर्व भवना तपनो जोरो, विशल्या देख्यों मनमोरो ॥
थरहर थरहर करी धूजाणी, तेह भणी प्रभुमें नरहाणी ॥ १४ ॥
फिरी नवि आवूं साथ तुम्हारे, अब ए निश्चे उचित हमारे ।
अबके जो जीवेवा लहीसुं, छानी मानो होई रहीसु ॥ १५ ॥
सघले दीधो तब फिटकारो, लज्जा पामी ने हारी जमारों ।
दांतां साथे लीधोजूती, दृष्टि अगोचर हुई भूती ॥ सोई ॥ १६ ॥
विसल्या तनु फरसेफेरी, तिम तिम साता थाय घणेरी ।
बावना चन्दन लेपकराया, व्रण रुंजाणू अति सुखपाया ॥सोई १७
आलस्य मोड़ी ऊठ्यो स्वामी, सर्वप्रकारे साता पामी ।

देखे आंसू न्हांखेरामो, लक्ष्मण पूछे प्रभुने तामो ॥ सोई ॥ १८ ॥
ए स्यां कोट किसा रखवाला, ऐसी बाला रूपरसाला ।
एस्यों आवे छेरे वधावा, एस्यों लोकों नारे मेलावा ॥ सोई ॥१९॥
रामसहु विरतन्त सुनावे, विशल्या नी वात जणावे ।
कन्या सहश्र साथे सुहावे, विशल्या प्रभु विवाह करावे ॥ सोई ॥२०॥

धूलचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज धनबाली धन सुन्दरी

सुखकारी म्हारे आंगणीये ऊगोयोजी सह्यां अविचल सूर्य प्रकाश ॥टेर॥
गावे वधावे गोरडीजी कांई, झांणेस्वर सुखकार ।
लक्ष्मण जी जिवित ऊवर्योजी म्हारे हुओहै आनन्द अपार ॥सु १
लिछमन ने वींद वणावीयोजी कांई, सहस वनी परिवार ।
इन्द्राणीसम ओपतीजों कांई, विशल्या पठनार ॥ सु० ॥ २ ॥
दान नेपुण्य किया घणाजी कांई, कियोहै उच्छव अपार ।
धर्म प्रसादे सहु मिट्योजी कांई, एह म्होटो जंजाल ॥ सु० ॥३॥

ढाल मूलगी

सोलह हजारां नारीमांही, विशल्या पटराणी थाही ।
जेम राघव ने 'सीता' राणी, तेम 'लक्ष्मण' ने एह वखाणी ॥२१॥
विद्याधर ने वानर मिलीयां, आपण मांही कीजे रलियां ।
जन्मोच्छव जेम ओच्छव होवे, देवी देव तमासो जोवे ॥ २२ ॥
निशाणे तव पाड्यो घावो, आनन्दीयोरे अयोध्या गावो ।
साजन जनने अधिक उल्हासो, दुर्जन जन घरे पड़ीयो त्रासो ॥२३॥
'सौमित्री' जीवन्तो सुणीयो, 'रावण' आगतिवन्तो थुणियो ।
सामन्त मंत्री ने बोलावी, करे मतो उणवारे आवी ॥ सोई ॥२४॥

क्षेपक सवैया

आनी थी मौत में प्रीत के काज लिये तिनको मन दृढ शीलगहा है ।
वन्दर वीरनूं अंग महोदधि देखत ही गढ लंक दहा है ॥
राम रु लिछमन जोर बली मन गाजन यूं पिकनाय रहा है ।
नेह की नाट कुदाह लगी नव ए रे महाह ! मन्दाद् कहा है ॥ १ ॥

स्वामी श्री नथमलजी कृत ढाल च्चेपक तर्ज हांक मतिकर गर्व दिवाना

रावण वचन सुनीने भाखे, नीति वचन मंत्री मिल दाखे ।
अरज करां करजोर और दिलमांय विचारोरे ॥
मान प्रभु वचन हमारो(टेर)वचन हमारो मान आन हिरदामें धारोरे १
रामचन्द्र की सीता नारी, जिन्हकूं चाहो करनी प्यारी ।
यह सत्यवन्ती नार प्यार नहीं वंछे थारो रे मान ॥ २ ॥
मानधरी ने सीता लाया, कुलने म्होटा कलंक चढाया ।
अपयश फेल्यो अपार नार कुल करण संहारोरं ॥ मान ॥ ३ ॥
भाई पिण गयो तेहने पासे, प्रभुजी अब तूं क्यूं न विमासे ।
भाई सुत सामन्त तंतु बंधन को धारो रे ॥ मान ॥ ४ ॥
आयो दूत जो लंका धूजाई, रघुवर की है प्रबल पुण्याई ।
शक्ति गई महाराज काज, यह कैसे सारो रे ॥ मान ॥ ५ ॥
सीता दीजे ढील न कीजे, राम राय मनमां ही रीजे ।
सीजे सारो काम जाण ए मूंपां नारोरं ॥ मान० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी—

सौमित्री में शक्ति ए ताड्यो, जाण्यो थो ए मारी पाड्यो ।
रामजी मरसे हुआ प्रातो, नहीं जीवे विण लिछमन भ्रातो ॥सोई०।२५
वानरड़ा सवि जासे भाजि. धणियों विन नवि लडसे पाजी ।
वाए वादल जासे फाटी विण औषधए व्याधिज काटी ॥सोई०।२६।
भाई सुतसुं सहु छूठसे. नाग फासना बन्धन त्रूट से ।
महेजेही सहु आवी मिलसे. दूध मांहीए शाकर भलसे ॥सोई०।२७
एती मांहीं कोई न हुई दैव तणी कारणी छे जूई ।
स्वप्नानो हुवो विवाहो, भाई सुतनी आरती अगाहो ॥सोई० ।२८।
मंत्री भाखे सीता छूटे- भाई सुतना बंधन त्रूटे ।
एजा प्रभुजी तुम नहीं करसों, मूआ केडे तुमही मरसो ॥सोई०।२९।
एह अनुनय[1] आघो राखो, भूंडूं कीधानों फल चाखो ।

---

१ शर्त ॥ सीता वापिस देने से राम, रावण के भाई व पुत्रों को छोड़ सकते हैं ।

आप दुःखे परने दुःख जाणो, तुम आगेही आगे ताणो ॥सोई०।२०।
रावण मंत्रीश्वर अब गणिया, दूत बोलावोने इम भणीया ।
राजा राघव पासे जाई, वात कहोजो में कहिवाई ॥ सोई० ॥२१॥
आयोते राघव दरबारे, पोले रोक्यो ते प्रतिहारे ।
प्रभु आदेशे आघो आयो, सभा देखन्तो अचरज पायो ॥सोई०।२२।
इन्द्र सभा तेहवो ए दीसे, प्रभुजी इन्द्रज विश्वा वीसे ।
सामानिक सुरजे नृप पासे, पगे लागीने वचन प्रकाशे ॥सोई० ।२३।

ढाल क्षेपक मूलगी—

प्रभु ने नमस्कार कीधो, वचन यो बोले है सीधो, पत्र कर पद्म के दीधो । रावण जो वात कही मुझने, सुणाऊं वात सोही तुझने ॥ सत्य० ॥ ८९ ॥

ढाल मूलगी—

रावण भाखे तुम्ह गुण सिन्धु, मेलो म्हारा ए सुत बन्धु ।
सीता टाली लियो मुझ राजो, अर्थ लेईने सारो काजो ॥सोई०॥२४॥
कन्या तीन हजारज आपूं, आगे सारी प्रीतिज थापूं ।
इमही करतां नावे दाई, तो तुम सारू नहींछे कांई ॥सोई० ॥२५॥
राम कहे तूं कहजे तेहने, राज्य-अर्थी ते चाहे एहने ।
प्रमदा चाहूंन फेर अनेरी, वात मत कहीजो एहवी फेरी ॥सोई०॥२६
पूजी अर्ची ने ओ सीता, जो तुम द्यो विश्व विदिता ।
तो हूं मेलूं एहनो एहो, भाई सुत ने आणी लने हो ॥ सोई ॥२७॥
दूत कहे तुम स्वामी सयाणा, वचन कहो छो अधिक अयाणा ।
त्रिया हेते हारो छो प्राणो, रावण रूठ्यो नहीं को त्राणो ।सोई॥२८॥
सौमित्री तुम्ह जीवित जाण्यो, तेहथी तो तुम सुदिन पिछाण्यो ।
अबके सौमित्री कपि आपो, तुम्ह मरणोए निश्चय थापो ॥सोई॥२९
एकही रावण विश्वहीजेता, रावण नो बल भाग्यूं केता ।
सूर्य उदय थी जावे नाशी, अन्धकार बहु दूरी विमासी ॥सोई॥४०
सौमित्री कहे छे तूं दूतो, प्रभु अनुसारे हूं आहूतो ।
फहम विना तूं बोने बोलो, देवतायि छे पृथ्वी डोलो ॥ सोई ॥ ४१ ॥

फिट रावण नूं जीव्यूं आजो, बोलन्तां नविपामे लाजो ।
जेहना वाल्हा नन्दन भाई, बंधो थकी न शके छोड़ाई ॥सोई॥४२
जारे कहे तुम्ह स्वामीसाथे, एह कहीछे रघुवर नाथे ।
उन्दर बिलतज आवीखेते, साचकरं रे भाखी जेते ॥सोई ॥४३॥
लक्ष्मणनी एतातीवाणी, सांभलता वानरडां जाणी ।
कण्ठे साही बाहीर कीधो, दूतगयो प्रभुपासे सीधो ॥ सोई ॥४४॥
पांच अने एतो चालीशे. ढाल सफली सयस जगीसे ।
'केशराज' ऋषि राय विचारे, साचो जीते झूट्ठ हारे ॥सोई०॥४५॥

दोहा (केदारा रागे)

दूत कही श्रवणे सुणी, फरि तेव्या मंत्रीश ।
कहो मतो कीजे किस्यो, आरति चन्ता ईश ॥ १ ॥
मंत्री दाखे देवजी, सो वातों की एक ।
कहो सुणावों स्वामीने, स्वामी तजेजो टेक ॥ २ ॥
सीता दीधां रामने, सरे सहु तुम काम ।
भाई सुत आवे घरे, रहे सहुनी माम ॥ ३ ॥
एह सुणीने भीतरे, आणे अधिकी रीस ।
कोईन सूधो सरदहे, किस्यूं करे मंत्रीश ॥ ४ ॥

ढाल छंमालीसमीं । तर्ज श्रेणिक रायहूंरे अनाथी निर्ग्रन्थ

रावण राय आशा अधिकी थाय. तेतोछोडीरे क्यूं हीन जाय ॥टेर॥
दशकन्धर एमचिन्तवे, हिवकीजे कांई उपाय ।
कवण उपाये जीतवूं, एतो राम लक्ष्मण राय ॥ रावण ॥ १ ॥
आरती अधिकी ऊपनी भाई सुतनी अगाध ।
वश पडया छे पारके, ते छूट्या न दीसे आज ॥ रावण० ॥ २ ॥
अमोघ विजय शक्ती थी. कांईयन सर्यो काज ।
लक्ष्मण जीवतो, ऊगर्यो, केम रहेसे म्हारी लाज ॥ रावण० ॥ ३ ॥
अस्त्र शस्त्र बले करी, जीती न सकूं राम ।
कोई उपायथी वश करी, सारु वंछित काम ॥ रावण० ॥ ४ ॥

विद्या सहस्त्र साधी जीके. ते सहुने अव लोय ।
जेह थकी कारज सरे, तेतो आजन दीसे कोय ॥ रावण० ॥ ५ ॥
एकान्तिक विचारणा, कीधी नृपे ते सोई ।
विद्याजे बहु रूपिणी, ते साध्यां कारज होई ॥ रावण० ॥ ६ ॥
ए विद्या ने साधवारे, उद्यमी थयो ईश ।
एहथी मुझ थायसे. कारज विश्वा वीश ॥ रावण० ॥ ७ ॥
एम विमासो आवीयो, पोषध शाला मांही ।
मणि पीठिका ऊपरे, जाई बेठो रे ज्यांही ॥ रावण० ॥ ८ ॥
मन थिर राखी आपणूं, विद्याने समरन्त ।
प्रकट हुवे त्यों सुधी, लंक पति नियम धरन्त ॥ रावण० ॥ ९ ॥
मिटतो अण मेलतो, आसन पद्म ठावन्त ।
जप माला ने कर ग्रही, विधिसूं जाप जपन्त ॥ रावण० ॥ १० ॥
कहे देवी मण्डोदरी, तब पोलीया 'यम दण्ड' ।
दिवसतो, आठों लगे, करोरे धर्म प्रचण्ड ॥ रावण० ॥ ११ ॥
आंबिल ने नीवी करो, करो तप उपवास ।
दान द्यो शुद्ध भावसूं. करिये शील अभ्यास ॥ रावण० ॥ १२ ॥
पडहो दीधो पुर विषे. सहु कोई करजो धर्म ।
नहीं करेतो मारवो, भाखीरे वाणी गर्भ ॥ रावण० ॥ १३ ॥
खेचरे आवी सुग्रीवसुं, एह जणावी वात ।
विद्या तो बहु रूपिणी. साधे विश्व विख्यात ॥ रावण० ॥ १४ ॥
कपि पति भाखे रामसूं. कीजे कोई उपाय ।
सिंह अने चलि पांखयों, लीधीरे क्यूं छिन जाय ॥ रावण० ॥१५॥
एह विद्या साधवा, नदिजावे जो जाव ।
एकही सीधी नविपडे, बहुलारे विणसे काज ॥ रावण ॥ १६ ॥
रामकहे थिरतापणे, पूरोपोहे ध्यान ।
अन्तराय कोई मतिकरो, होई रे आतुर अज्ञान । रावण ॥ १७ ॥
आप ए सुग्रीवनी, कहियोरे उपकर्म ।
मूलही थी छेदवा, आतुर होई मर्म ।. रावण ॥ १८ ॥

फिट रावण नूं जीव्यूं आजो, बोलन्तां नविपामे लाजो ।
जेहना वाल्हा नन्दन भाई, बंधी थकी न शके छोडाई ॥सोई॥४२
जारे कहे तुम्ह स्वामीसाथे, एह कहीछे रघुवर नाथे ।
उन्दर बिलतज आधीखेते, साचकरं रे भाखी जेते ॥सोई ॥४३॥
लक्ष्मणनी एतातीवाणी, सांभलता वानरडां जाणी ।
कण्ठे साही बाहीर कीधो, दूतगयो प्रभुपासे सीधो ॥ सोई ॥४४॥
पांच अने एतो चालीशे, ढाल सफली सयस जगीसे ।
'केशराज' ऋषि राय विचारे, साचो जीते झूट्ठ हारे ॥सोई०॥४५॥

दोहा (केदारा रागे)

दूत कही श्रवणे सुणी, फरि तेड्या मंत्रीश ।
कहो मतो कीजे किस्यो, आरति वन्ता ईश ॥ १ ॥
मंत्री दाखे देवजी, सो वार्तो की एक ।
कही सुणावों स्वामीने, स्वामी तजेजो टेक ॥ २ ॥
सीता दीधां रामने, सरे सहु तुम काम ।
भाई सुत आवे घरे, रहे सहुनी माम ॥ ३ ॥
एह सुणीने भीतरे, आणे अधिकी रीस ।
कोईन सूधो सरदहे, किस्यूं करे मंत्रीश ॥ ४ ॥

ढाल छंमालीसमीं । तर्ज श्रेणिक रायहूंरे अनाथी निर्ग्रन्थ

रावण राय आशा अधिकी थाय. तेतोछोडीरे क्यूं हीन जाय ॥टेर॥
दशकन्धर एमचिन्तवे, हिवकीजे कांई उपाय ।
कवण ऊपाये जीतवू, एतो राम लक्ष्मण राय ॥ रावण ॥ १ ॥
आरती अधिकी ऊपनी भाई सुतनी अगाध ।
वश पडया छे पारके, ते छूट्या न दीसे आज ॥ रावण० ॥ २ ॥
अमोघ विजय शक्ती थी. कांईयन सर्यो काज ।
लक्ष्मण जीवतो, ऊगर्यो, केम रहेसे म्हारी लाज ॥ रावण० ॥ ३ ॥
अस्त्र शस्त्र बले करी, जीती न सकूं राम ।
कोई उपायथी वश करी, सारु वंछित काम ॥ रावण० ॥ ४ ॥

अंगदादिक आवीया, पामवा प्रशंस ।
गुप्त रावण पारखती, कर वारे विद्या भ्रंम ॥ रावण ॥ १९ ॥
उपसर्ग अति आकरा, कीधा विविध प्रकार ।
ध्यान थी दश कंधरु, नहीं चल्यो लगार ॥ रावण ॥ २० ॥
कहै अंगद रायसूं राम तेज अखण्ड ।
जाणीयो ते तेहथी, मांड्यो रे एह पाखण्ड ॥ रावण ॥ २१ ॥
तेहहरी सीता सती, परोक्षे परपंच ।
देखतां मण्डोदरी, हूं लई जाऊं रे खंच ॥ रावण ॥ २२ ॥
साही लीधी सुन्दरी, जेहवी होय अनाथ ।
नजर आगे रे रोवती, लेई चाल्यो कपि साथ ॥ रावण ॥ २३ ॥
निभ्रं छे वचने करी, अकट विकट अपार ।
विल २ शब्द करे घणूं, मण्दोदरी तिण वार ॥ रावण ॥ २४ ॥

धूलचन्दजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज धर्म करोरे म्हारा वेलियां—

प्रीतम ! पलने, खोल रे, कपि ए ले जावे कर जोर रे ॥ टेर ॥
रोवे पोटे रानी अनाथज्यूं, सबल करन्ती शौर रे ॥ प्री० ॥ १ ॥
ओ ध्यान कहो कांइ आडोरे आसी, प्रीतम पकड़ोंनी योने दौररे ॥२॥
इज्जत गमावे देखो वानर म्हारी, नायक एह निटोलरे ॥ प्री ॥३॥
वार वार विललाट करन्ती, पियु वोल बोल तूं बोल रे ॥ प्री ॥४॥

ढाल मूलगी

एह उपसर्ग आकरा, कीधा रावण पास ।
मण्दोदरी राणी तणा राय न देखे नयणे तास ॥ रावण ॥ २५ ॥
ध्यान सूं लग्न लीनता निहाले नहीं निजनार ।
जाणी निश्चक आकरो, विद्या सिधी तिणवार ॥ रावण ॥ २६ ॥
गगन ने उद्योतती, धरे रूप रसाल ।
शीघ्र सूं रावण आगे, आवी विद्या तत्काल ॥ रावण ॥ २७ ॥
अन्तरीक्ष रही सन्मुखे, कहै विद्या ताम ।
ताहरो मननो वंछियो, मैं करूं सघलो काम ॥ रावण ॥ २८ ॥
विश्वने वश आणवा, अछूं हूं समर्थ ।

कोण लक्ष्मण रामजी, अवरसहु छे व्यर्थ ॥ रावण ॥ २९ ॥
विद्या वायक सांभली. पाम्यो हर्ष अपार।
काज सर्यों अब माहरो, गई चिन्ता रे अपार ॥ रावण ॥ ३० ॥
कहे रावण रायजी, तूं कहे ते सहु साच।
समय सम्भालेसही, अविचल रहे तुम वाच। रावण ॥ ३१ ॥
विसर्जी विद्यातदा, जाई पहोंची निज ठाम।
वानरा पण रामने, करे आवी परणाम ॥ रावण ॥ ३२ ॥
देवी मण्डोदरी अंगद तणो, निसुणी एह उदन्त।
करतो हू हू कार अधिको, आवेरे घरही तुरन्त ॥ रावण ॥ ३३ ॥
स्नान भोजन करी रावण, गर्व पूरित गात।
विद्यानीतो सहाय पामी, करसुं सहुनो घात ॥ रावण ॥ ३४ ॥

धूलचंदजी कृत–चोपक ढाल तर्ज पतंगसोयारी

म्हारा प्राणपति अभिमानी ने समझावण चालोरे ॥ टेर ॥
मण्डोदरी रानी कहै वानी सुनलो वहनों सारीरे।
प्रियतम ने समझावा काजे, चालो मेरी लारीरे।
सोकड़ सहु हालोरे ॥ म्हारा० ॥ १ ॥
सब सिणगार उतार्यो तनको, मनको हर्ष मिटायो रे।
सादा पुराणा वस्तर लेकर, वनिता वेष बनायो रे ॥
देखेसी व्हालोरे ॥ म्हारा० ॥ २ ॥
इणपर रूप विरूप करीने, रावणपे चली आई रे ॥
आंख मांहीसूं आंसू वरसे, करे घणी नरमाई रे ॥
म्हांरी अरजी झालोरे ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥

॥ चोपक छंद छप्पर ॥

आज है वार आदित्य वदे इम महिला वानी।
दूजो सोमज देख राज रहसी नहीं रानी ॥
मंगल चाउंमन्द कन्थ किम बुद्ध कहावो,
निरपनिने करनश जोर ब करले प्यावो ॥

आज गया थावर इता कहे मन्दोदर कूकवे,
लंक डाण जांण आणीलग्या मानी हट नहीं मूकवे ।१।

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी श्री रामगुनि कृत—

कहे मन्दोदरी वात नाथ मुझ मांनो छोडो सीता की गैल आधी मत तां नां। रघुवर को महातेज जगत नहीं छांनो, घर फूटो महाराज भाई लियो कांनों ॥ नौकर सब इनठौर दौर गये भाजी ॥ दिन वदले महाराज लडत है पाजी ॥ तुमकूं को सिखवत नहीं कोई स्यांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ १ ॥

कुनजानी हस्त प्रहस्त सभी घटजासी, कुनजानी रणवीच राक्षस हटजासी । कुनजानी जम्बूमाली नंदकट जासी, कुनजानी सुग्रीव आदि छुटजासी । कुनजानी कपि रींछ जंगे अडजासी, कुनजानी गढलंक वंक धुडजासी ।
अठा आगे क्याहोसी जांने भगवांनो, कहे मण्डोदरी ॥ २ ॥

कुन जानीथी शक्ति खाली चलजासी, कुन जानी इन्द्रजीत जोधा वंधजासी । कुनजानी लिछमन वीर सहस परणेसी, कुनजानी वैरी फौज घेरो आय देसी । नन्दन वन्धनवीच देवर पिण जांना ॥ कोई– कहसी ऐसी वात नहींथो दांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ ३ ॥

॥ क्षेपक ढाल तर्ज हो पिऊ पथिड़ा ॥

होपिउ मतवाला हजेयन समझो कांयजो, भाईअरु नन्दन सबला बांधी यारेलो । होपिउ मतवाला सहुथाका समझायजो, शक्तिरे परमुख शस्त्र शरनहीं सांधीयारेलो ॥ १ ॥ होपिउ मतवाला पवन देवगयो आजजो, धूवां फूका पिण कीधा हमे हाथमूंरे लो । होपिउ मतवाला दुर्गापिण गई भाजजो, आरतिनहीं हुईछे आज प्रभातसूंरेलो ॥ २ ॥ होपिउ मतवाला सूर्यदेव गयो रूठजो, वेमाता पिण कोद्रव आज नां दलेरेलो । होपिउ मतवाला पुण्य पिणदीवी पूठजो, दिन२ निजदल राम अरिदलसे मिलेरेलो ॥ ३ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज गैरोजी फूल गुलावरो ।

थे मांनोजी सीखसुहामणी थेतो मांनो मांनो नणदीरा वीर म्हारा

साहिया में निरखी परखी इक वातमें शील रखने रखे शरीरा ॥ म्हारा सा-थे मांनो ॥ १ ॥ ए रामचद्र की भारजा आतो सति योमे शिरताज ॥ म्हारा ॥ केवली आगे भाखीयो, कांई भूलगया महाराज । म्हारा ॥ थे मांनो ॥ २ ॥ थे जानकी लाया घरजानकी आतो प्रानकी लेवनहारा ॥ म्हारा थे मांनो ॥ ३ ॥ कुमी नहीं किणवातरी, थांरे नारी सहस अठारा ॥ म्हारा ॥ वलि जोवोनी वक्त विचारने, रही थोडीसी घणीगई लारा ॥ म्हारा थेमांनो ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज दलाली लालनकी—

कहे मण्डोदरी सुन पिया रावण, आज सूतीमें महिलां ।
होई उदासी नींद निवारी, मैं भूली सगली सहिलांजी ॥
सीता ने लेई रामसूं मिलो मांनो मांनो पियाजी, म्हारी सीख
सीताने लेने रामसूं मिलो ॥ टेर ॥ १ ॥

इम करतां मुझ निद्रा आई, सुपनो एकज दीठो ।
कांई सुणाऊ तुझने आगे, पिण नांहघणो छे धीठोजी ॥ सीता ॥ २
राम चन्द्रजी की सेनाआई, फिर गई लंका दोली ।
लंकामांही आग लगाई घर २ मांही होलीजी ॥ सीता ॥ ३ ॥
मांही घाल्यो तेल घिरतने, रघु पतिने आई रीसो ।
बीश हाथतो तूटा देख्या, तूटा देख्या दश शीसोजी ॥ सीता ४
ओ सुपनो देखीने जागी, नयनो डार्यो नीर ।
अबहूं आई अरज करणने, मानों नणदीरा वीरजी ॥ सीता ॥ ५ ॥
रत्नश्रवाजी तात तुम्हारा, माता केकसी रानी ।
थे छोपोता सुमाली केरा, सघलोंने मन देवो पाणीजी ॥ सीता ६
वैश्रमन थी लंका लीधी, त्रिखण्डाधिप कहावो ।
रामचन्द्र को दुःखदेवतो, क्यूं थे लंक गमावोजी ॥ सीता ॥ ७ ॥
राम राजा छे वह महाबलिया, जिणने थे बैरज कीधा ।
पिण सीताने लाया उठाई, हानोमें धर्मेश लीधाजी ॥ सीता ॥ ८
म्होटी राण्यां सहस अठारह, थे छो म्हारा नाथ ।

आज गया थावर इता कहे मन्दोदर कूकने,
लंक डाण जांण आणीलग्या मानी हट नहीं मूकने ।१।
च्चेपक ढाल तर्ज लावणी श्री रामसुनि कृत—
कहे मन्दोदरी वात नाथ मुझ मांनो छोडो सीता की गैल आधी मत तां नां। रघुवर को महातेज जगत नहीं छांनो, घर फूटो महाराज भाई लियो कांनां ॥ नौकर सब इनठौर दौर गये भाजी ॥ दिन बदले महाराज लडत है पाजी ॥ तुमकूं को सिखवत नहीं कोई स्यांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ १ ॥
कुनजानी हस्त प्रहस्त सभी घटजासी, कुनजानी रणबीच राक्षस हटजासी । कुनजानी जम्बूमाली नंदकट जासी, कुनजानी सुग्रीव आदि छुटजासी । कुनजानी कपि रींछ जंगे अडजासी, कुनजानी गढलंक वंक बुडजासी ।
अठा आगे क्याहोसी जांने भगवांनो, कहे मण्डोदरी ॥ २ ॥
कुन जानीथी शक्ति खाली चलजासी, कुन जानी इन्द्रजीत जोधा बंधजासी । कुनजानी लिछमन वीर सहस परणेसी, कुनजानी वैरी फौज घेरो आय देसी । नन्दन बन्धनबीच देवर पिण जांना ॥ कोई– कहसी ऐसी वात नहींथो दांनो ॥ कहे मण्डोदरी ॥ ३ ॥
॥ च्चेपक ढाल तर्ज हो पिऊ पथिड़ा ॥
होपिउ मतवाला हजेयन समझो कांयजो, भाईअरु नन्दन सघला बांधी यारेलो । होपिउ मतवाला सहुथाका समझायजो, शक्तिरे परमुख शस्त्र शरनहीं सांधीयारेलो ॥ १ ॥ होपिउ मतवाला पवन देवगयो आजजो, धूवां फूका पिण कीधा हमे हाथमूंरे लो । होपिउ मतवाला दुर्गापिण गई भाजजो, आरतिनहीं हुईछे आज प्रभातसूंरेलो ॥ २ ॥ होपिउ मतवाला सूर्यदेव गयो रूठजो, नेमाता पिण कोद्रव आज नां दलेरेलो । होपिउ मतवाला पुण्य पिणदीवी पूठजो, दिन२ निजदल राम अरिदलसे मिलेरेलो ॥ ३ ॥
च्चेपक ढाल तर्ज गैरोजी फूल गुलाबरो ।
थे मांनोजी सीखसुहामणी थेतो मांनो मांनो नणदीरा वीर म्हारा

साहिबा मैं निरखी परखी इक वातमें शील रखने रखे शरीरा ॥
म्हारा सा-थे मांनो ॥ १ ॥ ए रामचद्र की भारजा आतो सति
योमे शिरताज ॥ म्हारा ॥ केवली आगे भाखीयो, कांई भूलगया
महाराज । म्हारा ॥ थे मांनो ॥ २ ॥ थे जानकी लाया घरजानकी
आतो प्रानकी लेवनहारा ॥ म्हारा थे मांनो ॥ ३ ॥ कुमी नहीं
किणवातरी, थांरे नारी सहस अठारा ॥ म्हारा ॥ वलि जोवोनी
वक्त विचारने, रही थोडीसी घणीगई लारा ॥ म्हारा थेमांनो ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज दलाली लालनकी—

कहे मण्डोदरी सुन पिया रावण, आज छतीमें महिलां ।
होई उदासी नींद निवारी, मैं भूली सगलो सहिलांजी ॥
सीता ने लेई रामसूं मिलो मांनो मांनो पियाजी, म्हारी सीख
सीताने लेने रामसूं मिलो ॥ टेर ॥ १ ॥
इम करतां मुझ निद्रा आई, सुपनो एकज दीठो ।
कांई सुणाऊ तुझने आगे, पिण नांहघणो छे धीटोजी ॥ सीता ॥ २
राम चन्द्रजी की सेनाआई, फिर गई लंका दोली ।
लंकामांही आग लगाई घर २ मांही होलीजी ॥ सीता ॥ ३ ॥
मांही घाल्यो तेल घिरतने, रघु पतिने आई रीसो ।
वीश हाथतो तूटा देख्या, तूटा देख्या दश शीसोजी ॥ सीता ४
ओ सुपनो देखीने जागी, नयनो डार्यो नीर ।
अबहूं आई अरज करणने, मानों नणदीरा वीरजी ॥ सीता ॥ ५
रत्नश्रवाजी तात तुम्हारा, माता केकसी रानी ।
थे छोपोता सुमाली केरा, सपलोने मत देवो पाणीजी ॥ सीता ६
वैश्रमन थी लंका लीधी, त्रिखण्डाधिप कहावो ।
रामचन्द्र को दुःखदेनगो, क्यूं थे लंक गमावोजी ॥ सीता ॥ ७ ॥
राम राजा छे बहु महाबलिया, जिणने थे बेरज कीधा ।
पिण सीताने लाया ऊठाई, छानीमें घमेड़ा लीधाजी ॥ सीता ॥ ८
म्होटी राण्यां सहस अठारह, थे छो म्हांरा नाथ ।

जो सीता थे पाछी नसूंपो, तो खालीकरास्यो पिउ म्हांराहाथजी॥९
इतरा दिन तक राज्य करन्तां, दिन२ क्रान्ति सवाई।
सुखसातामें बैठापिऊजी, आकांई कुमति कमाईजी॥ सीता॥१०
झर२ नेणां पाणी न्हांखे, पिन रावन वम नहीं आयो।
थाकी रानीसो इमभाखे, थांरी माता जणनेस्यूं खायोजी॥ ११॥

क्षेपक ढाल तर्ज अरजी सुन नेमहमारी—

पिया मेरी एक नमानी, हरलायोतू नार बिरानी ॥ टेर॥
रामचन्द्र की सीता लायो, गर्वधरी अधिकानी।
या नारी तुझ कथन नमांने, क्यों तुम अकल अमानी॥
छोड प्रभु अवतो गुमानी.॥ पिया॥ १॥
इन्द्र सरीसो राज तुम्हारे, समुद्रसी खाई भरानी।
सोवन कोट ओट लकाके, जिनमेंही लाय लगानी॥
वखत अपनी नपिछानी॥ पिया॥ २॥
थे कहता मुभ सैन्य अपर बली सोतो पास बंधानी।
कुलको कन्दन क्यों करे पियुडा, तूटेला अतितानी॥
रामके पुण्य प्रधानी॥ पिया॥ ३॥
दोहा- सुनली वातां नारकी, उत्तर कुछ नहीं देह।
शिक्षा सब खालीगई, ज्यों पत्थर पर मेह॥ १॥

ढाल मूलगी—

आप जणवा कारणे, आवे ते उद्यान।
सती साथे बोलीयो, तब मनसाने अनुमान॥ रावण॥ ३५॥
नियम भंग तणोरे भय अती. भांजी हणवा देख।
मारी देवर स्वामी थारो, सेवूं तुझ सुचि शेप॥ रावण॥ ३६॥
ए अवसरे रायजीनो, व्रत भंज्योरे भाव।
ते अवसरे अधो गतिने, नृप बांध्यो चौथी नो आय॥रावण॥३७
एह सुणन्तां कडुक वाणि, रायनी दुःखदाय।
तास असाता थी धरती, पड़ीरे मूर्च्छाखाय॥ रावण॥ ३८॥

करी शीतलता ऊठाई, अभिग्रह कीधो सार।
राम लक्ष्मण सूधां पीछे, त्यजवा चारे आहार ॥ रावण ॥३९॥

❀ क्षेपक राधेश्याम ❀

रावन कहे सुन सुन्दर मुखी, चपल चतुर चित्तचोर।
एक वार अनुराग से देखले मेरी ओर ॥
मॅझधार में मेरी नौका है सो पार लगादे ए सीता।
जिसराह में सच्ची राहत है, वह राह बतादे ए सीता ॥
कर कृपा दृष्टि मेरे ऊपर किञ्चित् मुसका दे ए सीता।
वसयही अर्ज है हे सीता, दीदार दिखादे ए सीता ॥
हर तरह प्रार्थना करता था, हर तरह प्रीति दिखलाता था।
फिर साम दाम और दण्ड भेद, चारो प्रकार समझाताथा ॥
देख असुर की ढीठता, लगी हृदयमें चोट।
बोली नीची दृष्टिसे, कर तिनकेकी ओट ॥
हे मूर्ख याद रख यहतेरे, पिछले पापोंका साया है।
जो छुने वनसे तूंमुझ को, इसजगह चुराकर लाया है ॥
नो हजार जुगनू रोशनहों, लेकिन न कमलिनी खिलती है।
सूरज जिस समय निकलतेहैं, वह उन्हींको देख चटकती है ॥
मेरी यह आंख कमलिनी है, सूरज समान श्री रघुवर है।
तेरी यह मदमातीवातें, एक जुगनू सेभी कमतर है ॥
मेरी और उनकी शानकोतू, निशिचर कुछ पहचानता है।
उन खरे करारे बाणोंकी, क्यों नहीं तू ताकत जानता है ॥
अफ़सोस जो अभि सन्मुख होते, तो अभी तुझे बतलादेते।
दमभर में शानो शौकत को, मट्टी में तेरी मिलादेते ॥
गर आज नहीं तो कल ही सही, जल्दी वो दिन आता है।
हे अभिमानी ! हे हठधर्मी ! करनी का फल तू पाता है ॥
क्रोधवश दशशीश को, सुनकर यह गुमार।
आगे अपनी लाल्की, और खेंची तलवार ॥

बस खबरदार हो ए सीता, चलती है जुबां बहुत तेरी ।
क्या कानसे तूने सुनी नहीं, ताक़त मेरी जुर्रत मेरी ॥
बस जल्द मानले हुक्म मेरा, वर्ना तेरा शर काटूंगा ।
यह गुस्ताखी तेजी तेरी, दमभर में अभो भुला दूंगा ॥

क्षेपक ढाल तर्ज रगत नाटक—

अरे रावण तूं धमकी दिखताकिसे, मुझे मरनेका खौफ खतरही नहीं । मुझे मारेगा क्या अपनी खेरमना, तुझे होनेकी अपने खबरही नहीं ॥ टेर ॥ १ ॥ क्यातूं सोनेकी लंक कामानकरे, मेरे आगे यह मिट्टी काघर ही नहीं । तेरी हस्तीहै क्या सिवा राम पिया, मेरी नजरीमें कोई बशरही नहीं ॥ २ ॥ क्यूं नहीं जीततू स्वयम्वर लायामुझे, मेरी चाहजो तेरे दिलमेंबसा । थातू कौन शहर मुझे देनी बता, क्या स्वयम्वरकी पहोंची खबरही नहीं ॥ ३ ॥ आवे इन्द्र नरेन्द्र जोमिलके सभी, क्या मजाल जो मेरा शीलहने । मेरे मनका सुमेरु हिलेगानहीं, मेरे मनमें किसीका डरही नहीं ॥ ४ ॥ चाहे चन्द्र गरम हो यदि सूर्यभी शीतल, समुद्र मर्यादा भंगकरे । अनहोनी जोबात हुवे जोकभी, तोमनमेरु हमारा हिलेगानहीं ॥ ५ ॥ तूंने सहस अठारा जो रानीवरी हाय उन्हपरभी तुझको सबरही नहीं। परतिरिया में तूं ने जो ध्यान किया, क्या निगोद नरक का खतर हीं नही ॥ ६ ॥ हुआसोतो हुआ अबमानकहा, मुझे राम पेजल्दी से देतू पठा । कहे न्यामत वगरना देखेगे यह, तोरे शरकी कसम तेरा शरही नहीं ॥ ७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

बोली चलरे पातकी, क्यों करता बकवाद ।
मैनेजो पहीले कही, करले उसकूं याद ॥
तू योद्धानहीं चौरहै अब, इसलिए तुझेधिकारतीहूं ॥
तेरी सोनेकी लंकापर, नफरत की ठोकर मारतीहूं ।
सच्ची सतवन्ती नारीका, सत् आसमान पर रहताहै ॥
व्रत पतिव्रता क्षत्रियाणीका, हरवक्त प्रान पर रहताहै ।

तूमुझे अकेली देखआज, सीनाजोरी दिखलाताहै ॥
पिंजरेमें फँसी सिंहनीको, नंगी तल्वार दिखाताहै ।
तल्वार मुझे मेरे तनको, हरगिज भी काटनहीं सकती ॥
मेरा पवित्र और पाकलहूं, नापाक यह चाट नहीं सकती ।
मेंबडी खुशीसे कहतीहूं, मुझपर तल्वार चलादे तू ॥
अहसान तेरा होगा मुझपर, जो दुःखसे मुझे छुडादेतू ।
परयाद रहे बेकसका खूं, रोवेगा तेरे दामन पर ॥
यह ही तल्वार लालहोकर, आयेगी तेरी गर्दनपर ।
हसरत की निगाह है तारोंमें, और आसमान सब तकताहै ।
मुझ बेगुनाह मुझ बेकसका, यह खून कहीं छिपसकताहै ॥
सन सना रहीहै हवाजोयह, सोमेरेलिए शहादतहै ।
'दोझख की आग भभकतीहै, वह तेरेलिये कयामतहै ॥

ढाल मूलगी—

काया–ममता छोडीने, तजी जीवीतव्य आश ।
शील समकित राखवाने, बैठी रे आगले तास ॥ रावण ॥४०॥
धीरज अवलम्बी करी, जाणी कर्म नो दोष ।
सती लंक पति ऊपरे, नहीं आण्यो रंचक रोष ॥ रावण ॥४१॥
एह सांभली राय चिन्ते, राम सुं छे अतिप्यार ।
हूं विपास करूं शुं चले ! न मिले एहनो उतार ॥ रावण ॥४२॥
शक्ति ने हीना होवेरे, थले पंकज जेम ।
माछलो तलफीमरे, जलने न उपजे प्रेम ॥ रावण ॥ ४३ ॥
जिन धर्म नो मर्म जाणी काम–अंधो होई ।
एह अन्याय अधिक महोटो, मैं कीधो छेरे मोई ॥रावण ॥४४॥
अण जुक्तो मैं कियो, विभीषण नो बोल ।
मान्यो नहीं मानने वस्य, माले रे शर सम तोल ॥रावण ॥४५॥

सेपक ढाल तर्ज लावणी–रामसुनि कृत

नहीं मान्यो विभीषण बोल हिवे पिछतायो, मनो भगो दियो दुःख हाथ नहीं आयो ॥ भाई बेटा बंधावाय परे हूं आयो ।

बस खबरदार हो ए सीता, चलती है जुबां बहुत तेरी ।
क्या कानसे तूने सुनी नहीं, ताक़त मेरी जुरत मेरी ॥
बस जल्द मानले हुक्म मेरा, वर्ना तेरा शर काटूंगा ।
यह गुस्ताखी तेजी तेरी, दमभर में अभी भुला दूंगा॥

क्षेपक ढाल तर्ज रगत नाटक—

अरे रावण तूं धमकी दिखताकिसे, मुझे मरनेका खौफ खतरही नहीं । मुझे मारेगा क्या अपनी खेरमना, तुझे होनेकी अपने खबरही नहीं ॥ टेर ॥ १ ॥ क्यातूं सोनेकी लंक कामानकरे, मेरे आगे यह मिट्टी काघर ही नहीं । तेरी हस्तीहै क्या सिवा राम पिया, मेरी नज़रीमें कोई बशरही नहीं ॥ २ ॥ क्यूं नहीं जीततू स्वयम्वर लायामुझे, मेरी चाहजो तेरे दिलमेंबसा । थातू कौन शहर मुझे देनी बता, क्या स्वयम्बरकी पहोंची खबरही नहीं ॥ ३ ॥ आवे इन्द्र नरेन्द्र जोमिलके सभी, क्या मजाल जो मेरा शीलहने । मेरे मनका सुमेरु हिलेगानहीं, मेरे मनमें किसीका डरही नहीं ॥ ४ ॥ चाह चन्द्र गरम हो यदि सूर्यभी शीतल, समुद्र मर्यादा भंगकरे । अनहोनी जोबात हुवे जोकभी, तोमनमेरु हमारा हिलेगानहीं ॥ ५ ॥ तूंने सहस अठारा जो रानीवरी हाय उन्हपरभी तुझको सबरही नहीं। परतिरिया में तूं ने जो ध्यान किया, क्या निगोद नरक का खतर हीं नही ॥ ६ ॥ हुआसोतो हुआ अबमानकहा, मुझे राम पेजल्दी से देतू पठा । कहे न्यामत वगरना देखेगे यह, तोरे शरकी कसम तेरा शरही नहीं ॥ ७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

बोली चलरे पातकी, क्यों करता बकवाद ।
मैंनेजो पहीले कही, करले उसकूं याद ॥
तू योद्धानहीं चौरहै अब, इसलिए तुझेधिक्कारतीहूं ॥
तेरी सोनेकी लंकापर, नफरत की ठोकर मारतीहूं ।
सच्ची सतवन्ती नारीका, सत् आसमान पर रहताहै ॥
व्रत पतिव्रता क्षत्रियाणीका, हरवक्त आन पर रहताहै ।

तूमुझे अकेली देखआज, सीनाजोरी दिखलाताहै ॥
पिंजरेमें फँसी सिंहनीको, नंगी तल्वार दिखाताहै।
तल्वार मुझे मेरे तनको, हरगिज भी काटनहीं सकती ॥
मेरा पवित्र और पाकलहूं, नापाक यह चाट नहीं सकती।
मैंवड़ी खुशीसे कहतीहूं, मुझपर तल्वार चलादे तू ॥
अहसान तेरा होगा मुझपर, जो दुःखसे मुझे छुडादेतू।
परयाद रहे बेकसका खूं, रोवेगा तेरे दामन पर ॥
यह ही तल्वार लालहोकर, आयेगी तेरी गर्दनपर।
हसरत की निगाह है तारोंमें, और आसमान सब तकताहै।
मुझ बेगुनाह मुझ बेकसका, यह खून कहीं छिपसकताहै ॥
सन सना रहीहै हवाजोयह, सोमेरलिए शहादतहै।
'दोझख की आग भभकतीहै, वह तेरेलिये कयामतहै ॥

ढाल मूलगी—

काया-ममता छोडीने, तजी जीवीतव्य आश।
शील समकित राखवाने, बैठी रे आगले तास ॥ रावण ॥४०॥
धीरज अवलम्बी करी, जाणी कर्म नो दोष।
सती लंक पति उपरे, नहीं आण्यो रंचक रोष ॥ रावण ॥४१॥
एह सांभली राय चिन्ते, राम सूं छे अतिप्यार।
हूं विषास करूं शूं वले ! न मिले एहनो उतार ॥ रावण ॥४२॥
शक्ति ने हीना होनेरे, थले पंकज जेम।
माछलो तलफीमरे, जलने न उपजे प्रेम ॥ रावण ॥ ४३ ॥
जिन धर्म नो मर्म जाणी काम-अंधो होई।
एह अन्याय अधिक महोटो, में कीधो छेरे सोई ॥रावण॥४४॥
अण जुक्तो में कियो, विभीषण नो बोल।
मान्यो नहीं मानने वस्य, गाले रे शर सम तोल ॥रावण॥४५।

सेपक ढाल तर्ज लावणी-रामभुनि कृत

नहीं मान्यो विभीषण बोल हिये पिछताय़ो, मनों भणी दियो दुःख हाथ नहीं आयो ॥ भाई बेटा बंधाबाय घरे हूं आयो।

मुझ लगी कुमति की संग यूं ही भरमायो ।। मैं कियो नहीं जिन धर्म कर्म बंधवायो । नहीं मांन्यो ।। १ ।। लंका सो मुझ राज काज नहीं सुधर्यो, गुरु ज्ञानी का वचन जानत हूं विसर्यो ।। निमित्तीक बोल अमोल जावे किमखाली, सह संपदा को खोय आपदा घाली ।। आंख मींच होय अन्ध सती हर लायो ।। सती हर० ।। नहीं ।। २ ।। अब आवे न पाछी बात हाथसे खोई, २।। म्हां जैसो कोई नीच भयो नहीं कोई ।। मण्डोदरी को स्वप्न साच दरसावे. इणपर रावण राय घणो पिछतावे ।। शूर्पनखा मुझ बहिन मुझे भरमायो ।। मुझे० ।। नहीं ।। ३ ।।

क्षेपक राधेश्याम—

कर लडाई रामसे, कटे भटन के शीश ।
लगा सोचने हृदय में, तब लंका के ईश ।।
भाई को वैरी करने का क्या फल है देख लिया मैं ने ।
बदला मिलगया मुझे उसका, जो उसपर जुल्म किया मैं ने ।।
मैं भी कैसा मतवाला था, यों भाई को त्यागा मैंने ।
भाई भाई ही था आखिर, क्यों भाई को त्यागा मैंने ।।
उसके मत पर मैं चलता तो. यश मिलता और भलाई थी ।
हा ? मैंने उलटे उसके ही, दर्बार में लात लगाई थी ।।

ढाल मूलगी—

परधानें परगट पणे, हूं वार्यो बहुबार ।
सो न मान्यो आज जाण्यो, मुखे पड़ी मुज छार ।। रावण ।।४६।।
कुल कलंक्यो मैं आपणो, मैं काज न सार्यो कोय ।
हाथ घसेजे शोच करे वे, न लहेरे वेला सोय ।। रावण ।। ४७ ।।

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—

कछू न विगर्यो हाल सीता जो सौंपूं ।। सब सुधरे मनका काज झण्ड जश रोपूं ।। घाल विमान के मांय सेना के बारे । सती जावे राम के पास हुवे जशसारे । रावण एम विमास सती संग आयो ।। सती० ।। नहीं मांन्यो ।। ४ ।। हे सीता ! चल

लार रामने देऊं। अब अश्लील वचन मुख मांय तुझे नहीं केऊं॥ इम कही सीता लेई गयो दिल गाढ़े, पिण शूर्पनखा तो वैर पूर्वलो काढे॥ मुनि राम कहे संग नीच तणी दुःख दायो॥ तणी०॥ नहीं॥ ५॥

डाल मूलगी—

मन अपूठो वालीयो, माठी जाणी परनार।
भोग थकी विरक्त थयो, पाछी देवा कियो विचार॥ रावण॥४८॥

डाल क्षेपक मूलगी—

भूप तब मनमें आलोची, वानमें एह करी पोची, आखिर में उमर है ओछी। काम अब करणो है ऐसो, जगतितल जश फेले जैसो॥ सत्य०॥ ९०॥ लेई तब सीता ने चाले, कहो कुण होत मने टाले, शूर्पनखा रावण कुं पाले॥ बालकनो रूप धर्यो जाम, रुदन को शब्द करे ताम॥ सत्य०॥ ९१॥

दोहा क्षेपक

रावण आयो गिरिगुहा, देखे मांही बाल।
क्यो रोवे आक्रन्द करं, कहीये थारो व्हाल॥

राम मुनि कृत क्षेपक डाल तर्ज किणमार्यो म्हारो मोर बताय पापी कि०

किम धार्यो विन पोंछ मुझ प्यारारे किम धार्यो रे, तीन लोक अवलोक करीने मेंतो चरण ग्रह्यां थांरारे॥ ग्रह्यां थांरारे॥ ग्रह्या०॥ किम॥ १॥

मोहमहि पतितात हमारो, मो मानभणी जाणेसारा जाणे॥ २॥
मुझकुं रावण विरलाजगमें, मोय छोडेसे जातेहै जमवारारे॥ ३॥

क्षेपक डाल तर्ज निहालदेरी—

मानी निर्मानी थयाजी कांई, शोभा नहीं सुलतान।
पणी उनवां पछेजी, जीवन मृत्यु समान॥
॥ अवमानन छोडो महिपतीजी॥ टेर॥ १॥

अनम नमावन आपकोजी कांई, विरुध पडो राजान।
आप पोने परने नमोजी कांई, हारी थयो हेरान॥ अव॥ २॥

मुझ लगी कुमति की संग यूं ही भरमायो ॥ मैं कियो नहीं जिन धर्म कर्म बंधवायो। नहीं मान्यो ॥ १ ॥ लंका सो मुझ राज्र काज नहीं सुधर्यो, गुरु ज्ञानी का वचन जानत हूं विसर्यो ॥ निमित्तीक बोल अमोल जावे किमखाली, सहू संपदा को खोय आपदा घाली ॥ आंख मींच होय अन्ध सती हर लायो ॥ मती हर० ॥ नहीं ॥ २ ॥ अब आवे न पाछी वात हाथसे खोई, २॥ म्हां जैसो कोई नीच भयो नहीं कोई ॥ मण्डोदरी को स्वप्न साच दरसावे. इणपर रावण राय घणो पिछतावे ॥ शूर्पनखा मुझ बहिन मुझे भरमायो ॥ मुझे० ॥ नहीं ॥ ३ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

कर लडाई रामसे, कटे भटन के शीश।
लगा सोचने हृदय में, तब लंका के ईश ॥
भाई को वैरी करने का क्या फल है देख लिया मैं ने।
बदला मिलगया मुझे उसका, जो उसपर जुल्म किया मैं ने ॥
मैं भी कैसा मतवाला था, यों भाई को त्यागा मैंने।
भाई भाई ही था आखिर, क्यों भाई को त्यागा मैंने ॥
उसके मत पर मैं चलता तो. यश मिलता और भलाई थी।
हा ? मैंने उलटे उसके ही, दर्बार में लात लगाई थी ॥

ढाल मूलगी—

परधानें परगट पणे, हूं वार्यो बहुवार।
सो न मान्यो आज जाण्यो, मुखे पड़ी मुज छार ॥ रावण ॥४६॥
कुल कलंक्यो मैं आपणो, मैं काज न सार्यो कोय।
हाथ घसेजे शोच करे वे, न लहेर वेला सोय ॥ रावण ॥ ४७ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज लावणी—

कछू न बिगर्यो हाल सीता जो सौंपूं ॥ सब सुधरे मनका काज झण्ड जश रोपूं ॥ घाल विमान के मांय सेना के बारे। सती जावे राम के पास हुवे जशमारे। रावण एम विमास सती संग आयो ॥ सती० ॥ नहीं मान्यो ॥ ४ ॥ हे सीता ! चल

लार रामने देऊं। अब अश्लील वचन मुख मांय तुझे नहीं केऊं॥
इम कही सीता लेई गयो दिल गाढ़े, पिण शूर्पनखा तो वैर
पूर्वलो काढे॥ मुनि राम कहे संग नीच तणी दुःख दायो॥
तणी० ॥ नहीं ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

मन अपूठो वालीयो, माठी जाणी परनार।
भोग थकी विरक्त थयो, पाछो देवा कियो विचार॥ रावण ॥४८॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

भूप तब मनमें आलोची, बातमें एह करी पोची, आखिर में उमर है ओछी। काम अब करणो है ऐसो, जगतितल जश फेले जैसो ॥ सत्य० ॥ ९० ॥ लेई तब सीता ने चाले, कहो कुण होत बने टाले, शूर्पनखा रावण कूं पाले॥ बालकनो रूप धर्यो जाम, रुदन को शब्द करे ताम ॥ सत्य० ॥ ९१ ॥

दोहा क्षेपक

रावण आयो गिरिगुहा, देखे मांही बाल।
क्यो रोवे आक्रन्द करे, कहीये थारो व्हाल॥

राम मुनि कृत क्षेपक ढाल तर्ज किणमार्यो म्हारो मोर बताय पापी कि०

किम धार्यो विन पोंछ मुझे प्यारारे किम धार्यो रे, तीन लोक अवलोक करीने मेंतो चरण ग्रह्यां थारारे॥ ग्रह्यां थारारे॥ ग्रह्या० ॥ किम ॥ १ ॥
मोहमांहि पतिनाल हमारो, मो मानमणी जाणेसारा जाणे॥ २॥
मुझकुं रावण विरलाजगमें, मोप छोडिस जातेई जमचारारे॥ ३॥

क्षेपक ढाल तर्ज निहालदेरी—

मानी निमांनी थयाजी कांई, शोभा नहीं सुलतान।
पणी ऊनवो पछेजी, जीवन मृत्यु समान॥
॥ अवमानन छोडो महिपतीजी ॥ टेर ॥ १ ॥
अनम नमावन आपकोजी कांई, विरुद पड्यो राजान।
आप पोते परने नमोनी कांई, हासी थयो हेरान ॥ अव ॥ २

पहिला ए कारज किमकियाजी कांई, पहूंच विना परतीय।
आणी अनरथ कियाघणाजी, अब मतदो पाछी सीय॥ अब॥ ३॥
अब देतां ए योपिताजी कांई, शिर रहतां गयो नाक।
नाक विना स्योंजीव वोजी कांई, दवमें बलियो ढाक॥ अ॥ ४॥
मानगयां महातम गयोजी कांई, विनमहातम जीवे सोय।
दिवटथयां दीवातणोजी कांई, महिमा नकरे कोय॥ अब॥ ५॥
स्यों जीववो हार्यां तणोंजी कांई, दिनमें चन्दा जेम।
मूल नमाने महितलेजी कांई अगनी जैसे हेम॥ अब॥ ६॥
मान राखनो मानलोजी कांई मतद्यो पाछी सीत।
'काने सुनसो सबमुखेजी कांई, रावन थयो फजीत॥ अब॥ ७॥
सम्बाहो बल आपणोजी कांई देखी नचूकोदाव।
थांने जीते जंगमेंजी कांई, ऐसो कुणछे राव॥ अब॥ ८॥
दिनफिरणे मनफिरेजी कांई, गाढो कियो मान।
मुझ आगे एकवणछेजी कांई, जाने सकल जहान॥ अब॥ ९॥

क्षेपक सवैया—

परकी तीय आणीघरे सुन, राजन मानकरी दलबलजोरे।
वीर भिडे नर राजजुडे रुनिशाण धरे, विद्याघन फोरे॥
रामकी तेग विशेपभई अब हारिके, हासिल देतही लोरे।
धिकहै नरनाथ निशाचरा टेकग्रही फिर टेककू छोरे॥ १॥
अकज मित्रजेमूढ अकज सुतविनय विहीणो, अकज अंगविन नयण अकज महतो मतिहीणो। अकजमुनि जे अपढ अकजनिस नेही नारी, टेक विना नर अकज अकज गुण गोठ गिमारी॥ अकज दास उद्यम विना. अकज कुलच्छन भूपना, कविगद कहे हो राय हर अकज कि हांने ऊपना॥ २॥ कर्म प्रमाण नृप तीको सुत मोह महिपति को पुत्र मांन मुझे, मेरी जगमें वडाई है। स्वर्ग लोक इन्द्र तिके मानत हमारी मोज, शुभ्र लोक दानव करे देवों सू लड़ाई है। मृत्यु लोक मांहि कोई नहीं देख्यो आपसो,

ढूंढी सब ठौर मैंतो याही ठौर पाई है। अवमो बतावो ठौर ताकी लागूं पीठ दौर मानकी तजत मरोर कोडी जातकूं लजाई है ३॥
मान खोयो इन्द्र ज्यों ने दियो तुम्है काठ मांही, मान खोयो धनद जिनेन्द्र व्रत धारी है। मान खोयो बाली जिन्है चिऊं दिशि तुम्है फेर्यो, करके तपस्याभये वडे ब्रह्म चारीहै।
मानहार्यो चन्द्र सूर्य करत प्रकाश रसवती, मानहारी दुर्गा जिणे आरती उतारीहै। मृत्यु लोकमांही मुझे आप एक खरो धार्यो आजहु बिसार्यो ताते लानत धिकारीहै ॥ ४ ॥

क्षेपक कुण्डलिया—

मत रोवे मुझ तन बसे मही न देमूं सीन, मान मिटावे माहरो एह कहां की रीत-एह कहां को रीत, ले सीया निज घर आयो, बैठी रह निश्चिन्त मान बल वध्यो सवायो। छूटे पुत्र ने बंधवा एहवो करूं उपाय, करिये तो सघला घरां सहु आवे सुखदाय ।१।

क्षेपक ढाल मूलगी—

वचन सुन रावन महाराजा, धिक् ए चिन्तवीयो काजा, मानगयां मृत्यु का साजा। सीता ने पाछी ले आवे, मूलगे थानक विठवावे ॥ सत्य० ॥ ९२ ॥

ढाल मूलगी—

आज देवी नविवने, लोकोंमां अपवाद।
हारी दीधी एम सहु कहसे, मिटियो नृप उन्माद ॥रावण ॥४९॥
सीता ने तो कारणे, मैं कीधो संग्राम।
काजन सीधो अपजश लीधो, लोक में कीधो कुनाम ॥रावण ॥५०॥
राम लक्ष्मण इहां आणी, मान सघलो मारि।
धर्म नो जश बोल रावण, देवूं अपूठी नारी ॥ रावण ॥ ५१ ॥
अजश अधोगति बंध थी मति, भली न उपजे कोई।
विवेक सघलो वीसरी, गति तेहवी मति होई ॥ रावण ॥ ५२ ॥
रात विषे नृप चिन्तवे, कब होवे पर भात ।

राम लक्ष्मण जीतीने, पाछी आपूं हाथ ॥ रावण ॥ ५३ ॥
एम चिन्तववां चित्त सूं, गई रात विहाय।
प्रातः प्रभुजी सुणी वार्ता, खेतज रे मांड्यो आय ॥रावण ॥५४॥
युद्ध सजीने जीपवा, चालण लाग्यो राय।
दर्पण मुख नवि देखीयो, राणी वारे मत जाय ॥ रावण ॥५५॥

क्षेपक ढाल तर्ज नेमकी जानबनी भारी—

रावण कूं समझावत रानी, सीख नहीं मानत अभिमानी—
रामकी नारी ले आयो, करूंगो मेरे दिलचायो॥
नारि वा कह्यो नहीं मांने, बात दोई आपरी तांने।
रामका पुण्य है भारी, दशा घर नहीं है प्रभु थांरी॥
दोहा—आयो राम महाबली, लंका लीधी घेर।
वानर गर्जे अतिघणा सयह. अबतो कन्था हेर॥
फेर नहीं बात बने आनी ॥ रावण कूं ॥ १ ॥
रम्भासी रानी है थांरे, सुरा सुर फिरत है लारे।
सबी को कहन ही कीजे, सीता ने पाछी ही दीजे।
जीव अरु राज ही रेवे, लोक सहु धन्य धन्य केवे॥
पीयातूं दिलमें नहीं सोचे, वखत ने क्यों नहीं आलोचे।
दोहा- घर फूटो महाराजजी' नहीं कोई तुमचो सेण॥
गई वखत फिर नावहीसरे, मान हमारो केण।
चैन यह आखिरकोजानी॥ रावन ॥ २ ॥
रावण कहे मन्दोदरी सेती, नारीकी तुच्छ बुद्धि एती॥
विद्या बहु रूपिनी साधी, हमारी शक्ति बहु वाधी।
राम रु लिछमन ने मारू, वंछित मुझकाज ही सारू॥
दोहा- लाऊं सबछोडाय ने मारूं, वानर राय।
सीतासूं सुखभोगवूसरे, जब हम तुम सुखथाय।
वाय कहूं प्रगट नहींछांनी, ॥ रावन ॥ ३ ॥
दोहा-- हठी हठसे नाहटे, मूके नहीं निजमान।
समर करनने सज्जथयो, करझाली करपान ॥ १ ॥

ढाल मूलगी—

हाथथी खडग पड्यो, मान रह्यो कर सोय।
चालन्तां शिरमुकट पड्यो, शकुन अशुद्ध होय ॥ रावण ॥ ५६ ॥
विनाश काले आसनू, आवियोंथी कुचयन।
देखी मंत्री बहु वारे, राय न मांने कथण ॥ रावण ॥ ५७ ॥
चालियो अडम्बर घणुं, मत्सर धरन्तो आप।
थर हरावे मेदनी, करतो अति सन्ताप ॥ रावण ॥ ५८ ॥
राक्षस अति आनन्दीया, शूरो देखी ईश।
आडम्बर अति आकरो, जीतसे विश्वा वीश ॥ रावण ॥ ५९ ॥

चेपक छन्द त्रिभंगी—

रावनकी फोजां वधती मोजां, चलती दरोजां कंकाली।
गयवर गाजन्ता तूरवजन्ता, शूर लजन्ता तव चाली॥
हयवर हणणाटां वहतां घाटां, खुरां संघाटां भूहाली।
रथ चणणाटां घणण घणाटां, तूटेचटां मतवाली ॥ १ ॥
राक्षस वलवन्ता जोर वहन्ता, मूछ गजन्ता तिहां आवे।
वाजित्र वजन्ता पीसे दन्ता, केई हसन्ता विनभावे॥
मुद्गर उछरन्ता हाक करन्ता, होई भय भ्रांता केई गावे।
माने मदमन्ता होयकर तन्ता, माने गत्ता धूजावे ॥ २ ॥
मानी मछराला रणे रसाला, पेट भूधाला मतवाला।
सिन्दूर सुण्डाला हाथीकाला, नचने वाला झूंशाला॥
वक्तर माला पडे हलाला, निरुध नशाला मछराला।
क्रोधे करकाला लंकावाला, दानवसारा केई पाला ॥ ३ ॥
आपसमें दोडे होड़ा होड़े, मूछ मरोड़े वलपाले।
कमनाहू तोडे सरासजोरं, लम्बे थोडे नहीं चाले।
वानरडा दोडे खालीपोटे, गोडा फोडे फिर चाले॥
भूचर भकभोरे शीन वहोरें, एकने तोरे हूनपाले ॥ ४ ॥
राक्षस गण देखीमान विशेषो, पर्नी सेसो नादिआयो।
रणभूमि धसेनो लानांदेसो, कपिसिरोरो सपायो॥

वानर चढेसी आज्ञालेसी, रामनरेशी मनभायो ।
लक्ष्मन शुभकेशी पीत मुवेशी, फतेकरेसी माजायो ॥ ५ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

रावन कहे सुभटांप्रति, हृदय करो बलवांन ।
युद्ध स्थलमेंदो मचा, जाकरके घमसान ॥
तेगे परशे तोमर मुद्गर, शर धन्वा भाले ले लोतुम ।
अस्त्रों शस्त्रों से सज्जितहो, रणमें आगे बढ खोलो तुम ॥
मैंभी चलताहूं साथ साथ, धावा आंधीसा करनाहै ।
या विजयी होकर जीनाहै, या वीर भूमि पे मरनाहै ।
इस प्रकार सजकरचला, निशिचर कटक विशाल ॥
पृथ्वि थर्रानेलगी, दहलगए दिगपाल ।
आंधीऔर वादलके समा, उठ उठ कर बढता जाताथा ॥
निशिसी करदो निशिचर दलने, दिनमें दिनकरन दिखाताथा ।
रावण दल साथमें रावणके, जब रामादलमें जापहूंचा ॥
तोजय कोशनाधीश की कहकर, कपि कटक मुकाबिल आपहूंचा ॥
यह कोपा हुआ कटक क्षणमें खलभलकर, खलदल दलने लगा ।
रावण की आंखांके आगे, रावण दल पीछे चलनेलगा ॥
निजदल पीछे भागता, देखाजब दशभाल ।
तब तेवर तिरछेतने, तीर तके ततूकाल ॥
तीखे तीरोंने किया, जातेही यह काम ।
काईसा फटने लगा, वानर कटक तमाम ॥
देखीजब सौमित्रीने, त्रस्त हुई कपि सैन ।
तभी अरुण मार्तण्डके, तुल्य होगये नैन ॥

ढाल मूलगी—

चाली रणमुख आवीयो, जीति करवाहेत ।
केशरी नीपरे गाजतो, पुण्य वीत्यो चित्त न देत ॥रावण ॥६०॥
ताम नरपति आप भाखे, कियां नृपति चोर ।
राम लक्ष्मण रक्षा करन्त, आवि देखूं बलजार ॥रावण ॥ ६१ ॥

ताम सन्मुख होई भाखे, सुमित्रानो नन्द ।
आव लंकपति गर्व तजी मुख, आंपां लड़स्यूं आनन्द ॥ रावण ॥६२॥

क्षेपक राधेश्याम

सन्मुख लक्ष्मण को निरख, रावण कहे कर नाद ।
अरे ! आज फिर आगया ! रहीन पिछली याद ॥
उसवार भाग्य ने बचादिया, इसवार बचने न पायेगा ।
पहले मूर्च्छा ही आई थी, पर अबके प्राण गंवायेगा ॥
मैं वह सागर हूं चढ़ा अगर तो प्रलय-काल दिखलायेगा ।
वह ज्वाला मुखी शैल हूं मैं, फूटा तो जग जल जायेगा ॥
लक्ष्मण बोले 'गर्वयह', यह घमण्ड दे त्याग ।
मैं मैं का अच्छा नहीं, होता ज्यादा राग ॥
है वही शक्ति शाली जगमें, जो नम्रभाव दिखलाता है ।
फलवाला जब तरु फलता है, नीचे को झुकता जाता है ॥
मैंना जो मैं-मैं कहती है, वह सबके मनको भाती है ।
बकरी जो मैं. मैं. कहती है वह गले छूरी फिरवाती है ॥
बात काट कर बीच में, बोला रावण राय ।
बच्चे ! यह रणभूमि है, राज-प्रासाद है नांय ।
साहस और स्वाभिमान हीतो, रणवीरों का आभूषण है ।
नाहर सा गर्जन तर्जन ही, सच्चे योद्धा के लक्षण है ॥
मैंना जो मैं-ना कहती है, पिंजरे में जन्म बिताती है ।
बकरी गर्दन कटवाती है, लेकिन मैं कभी न जाती है ॥
जाती है बोले लखण, उसकी भी गढ़ टेक ।
मैं वालीके लिखेगी, आताहै दिन एक ॥
हड्डी और मांस अलहदाकर, जब आंत निकाली जातीहै ।
उस आंतकी औजारों सेफिर, जब तांत बनाली जातीहै ॥
वह तांत किसी धुनकोवाले, हाथोंमें निस दिन जातीहै ।
धुनियां जब रूई धुनताहै, तब तुंही तूंही गातीहै ॥

वचन युद्ध किया प्रबल, दोनों पुक्तिके जान ।
उत दशशिर इतहै लखण, छोडे निजस्थान ॥

ढाल मूलगी—

युद्ध मण्यो राम रावण, लड़े सुभट अपार ।
बाण लक्ष्मण तणा बरसे, जाणे वर्षे जल धार ॥ रावण ॥ ६३ ॥

चेदक छन्द त्रिभंगी--

वानर अतिसोसे, भरियारोसे, होट मसोसे चलिआया ।
सुग्रीव भरोसे सबसन्तोषे, भरियाजोसे बरदाया ॥
राक्षसने खोसे शतीसदोषे, लंक मसोसे रे भया ।
स्वामीने तोषे सदानिदोषे, रावन खोसे रघुराया ॥ ६ ॥
वानर डेमण्डी वडा उमण्डी, रणना चण्डी आफरिया ।
शिर शिला प्रचण्डी राक्षस खण्डी, मारे अफण्डी लातरिया ॥
गुरजां झुण्डी मण्डी घणाघमण्डी, देखे चण्डी पाखरीया ।
एहवो पाखण्डी करदेमण्डी, देदे छण्डी परतिरिया ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी—

अस्त्र शस्त्र लडवेकरी, हूंसन राखी कोई ।
लंकपति सो रामानुज, विविध परे झूंझाणादोई ॥ रावण ॥ ६४ ॥
देखीबल लक्ष्मण तणोरे, शंकियो भूपाल ।
विद्या तब बहूरूपणी, समरे नृप तत् काल ॥ रावण ॥ ६५ ॥
विद्या आई अति ऊमाई, मांगे ए आदेश ।
हुक्म चाहूं स्वामी थारो, करूं कारज अशेष ॥ रावण ॥ ६६ ॥
ताम नृपति देई आदर, विद्या ने भाखन्त ।
एह अवसर विद्या थारो, कारज करी दाखन्त ॥ रावण० ॥ ६७ ॥
राय रावण करे आपण, रूपनो विस्तार ।
भूमी गगने पूठिपासे, दीसे, रौद्र अकार ॥ रावण ॥ ६८ ॥
देखी रावण रूप अधिका, सुग्रीवादिक भूर ।
शौच ऊपनो अधिक मनमें, रायदीसे पाणीनू पूर ॥ रावण ॥ ६९ ॥
ताम लक्ष्मण अधिक बलियो, गरुडनो असवार ।
जेमनट्टुओ फिरे नाचत, रावण केरीरे लार ॥ रावण ॥ ७० ॥

क्षेपक त्रिभंगी—

लक्ष्मन शरचाहे वडे ऊमाहे, चित्तने चाहे रोपभरी।
सणणणखुसावे साम्हांजा, भणगमावे चोट करी॥
रावण मनमांहे रोपभराहे, बाणहे जोर करी।
मनमें उच्छाहे कपिदलढाहे, भरता आहे प्राणहरी॥

ढाल मूलगी—

अरुणा वर्तज धनुष्य लीधो, वज्रमुखो तेबाण।
रावणने सन्मुख आवे, लक्ष्मण शूरों रो सुलतान॥ रावण॥७१॥
एक बाणेरे सो गुणोथावे, सोमांहीथी सहश्र।
सहश्रथी लखक्रोड प्रगटे, पुण्य प्रभावे अस्त्र॥ रावण॥ ७२॥

क्षेपक राधेश्याम

प्रथिवीपर पड़नेलगे कट कट कट वज्रवान।
मुर्दोंकी वस्तीघना, लंका का मैदान॥
रघुकुल नायक केबाणों, रघुकुल कीशान दिखादीदी।
उसप्रलय कालके धन्वाने, रणमें एक प्रलय मचाहीदी॥
जोबाण धनुष्यसे चलताथा, उससे लाखोंबन जातेथे।
इसतरह लक्ष्मणके कालबाण, लाखों को क्षणमें खानेथे॥
ज्यों आतिशबाजीका अंगार, लाखोंचिन गारियाँ काधरहै।
त्यों लक्ष्मणका एक बाण, अगणित बाणोंका सागरहै॥
विज्ञानकी पदवी ऊंचीहै, विज्ञान वेत्ता जानतेहैं।
जोबात असम्भवहो उसको, विज्ञानी सम्भव मानतेहैं॥
अबभी नित नये नयेदेखो, करताहै आविष्कार जगत।
परउस त्रेतावाले युगमेंथा, वें ज्ञानिक भण्डार जगत॥
इतनाहीं कि एकतीर, लाखों शरीर धर जाताथा।
सुनने तो यह है एक तीर लाखों शरीर पर आता था॥
थी यह उन्नत विज्ञान-कला, मन्त्रों की शक्ति थी यह।
जो भी हो प्रभु के बाणों में, ताकत थी यह खूबी थी यह॥
इस प्रकार को दण्ड से, शर जब चले अखण्ड।
युद्ध भूमि में रक्त की, सरिता बही प्रचण्ड॥
मानों दोनों मदमाते दल, सरिता के तट दिखलाते हैं।

गज अश्व सिपाही–मरे हुए, जल जन्तु समान सुहाते हैं ॥
पड–रहे भंवर थे पहियों के तैरेथे. कछु ए ढालों के ।
पत्ते थे टुकड़े खालों के, छाये सिंवार थे बालों के ॥
मे दसके झाग दीखते थे. लहरें थी टूटे तीरों की ।
ढायें गिरती थी आर पार, कट कट कर मृत शरीरों की ॥
बढ बढ लड़ते थे मुख्य सुभट, क्षण भरभी नहीं बैठते थे ।
वे मानों रणकी सरितामें. अच्छे तैराक तैरते थे ॥

अमुरों का होने लगा, जब ज्यादा संहार ।
तब तो मानों मृत्यु का, गर्महुआ बाजार ॥
लाशों पर लाशें पटीं. रण बनगया मसान ।
दृश्य भयकर होगया, लंका के दरम्यान ॥

गीधों के झुण्ड 'गोठ' करने, लाशों के पास जुड रहे थे ।
काकों के वृन्द चोंच फैला मुर्दों के निकट उडरहे थे ॥
श्वानोंकी टुकडी चीरफाड मृतकोंके थकड़े करतीथी ।
मज्जा अस्थियोंके हिस्सेपर, आपुसमें झगड़े करतीथी ॥
वैतालियोंका तीर्थबना, संग्राम भूमिका दरियावह ।
प्रेतनियोंका पकवान हुआ, मुरदार मांस और मज्जावह ॥
योगनियों उसविरियां आकर, खप्पर को खूब सजातीथो ।
चामुण्डाकेलिये खोपरियोंको, उनकी करताल बजातीथी ॥

इस प्रकारसेही हुआ, घोर घना संग्राम ।
लखण बाणसे रावण विद्या, आहत हुई तमाम ॥

ढाल मूलगी—

जिहां देखे तिहां मारे, बाणसूं ते रूप ।
एहि बन्ध कुबन्ध हुओ, चक्रज समेरे भूप ॥ रावण ॥ ७३ ॥

क्षेपक ढल मूलगी—

लक्ष्मण यह कितराहो मारे, रावण तब जोयोहै लारे अदश्येहो विद्यागई त्यारे । रावण जबहुवो बलहीनो, चक्रने याद करलीनो ॥ सत्य ॥ ९३ ॥

नाम सुदर्शन तेहनूं, आयुधनूं शिरदार ।
आयुद्ध शालाथी नीकली, राय पासे आवे तिणवार ॥रावण ॥७४॥
घसि आयो मन सुहायो, फेरवे ते चक्र ।
हरी लीयो अतिहोड़ मारे, न लिखेरे नेला चक्र ॥रावण ॥७५॥
चक्र लेई फेरियो रे मेलियो तिणवार ।
आकाश मार्गे चालीयो, आयो लक्ष्मणनी लार ॥ रावण ॥ ७६ ॥
राम सुभट कपि अति, चक्र आवन्तो देख ।
शोर मचियो कटके अधिको, शूं कीजे उपकर्म विशेष ॥रावण॥७७॥
आवीया प्रदिक्षिणा देई, वासु१देव विनाण ।
तेजे करी रविसारिसो, बैठोरे दक्षिण पाण२ ॥ रावण ७८॥
राय चिन्तवे वचन मुनिनो, साचही देखाय ।
भाई मंत्री कथन जेतां, ते सहुरे आज मिलाय ॥ रावण ॥७९॥
लक्ष्मण भाखे चक्र बांधव, अवसर तुम परिवार ।
वश्य थया सहु महागरे, राय ज्यूंरे अवर उपचार ॥ रावण ॥८०॥
राम भाखे लंक पतिसुं, नहीं चक्रसुं काज ।
आपो सीता जाऊं पाछो, करो तुम्हे सुखे राज ॥ रावण ॥ ८१ ॥
देखी आरतिमांही बंधव, विभीषण बोलन्त ।
आप सीता राखी जीवबू, मेलि ओ तन्तो तन्त ॥ रावण ॥८२॥

धूलचंदजी कृत क्षेपक ढाल तर्ज काना प्रीत लागीहो ।

लंका सरिसी सायबी, समुद्रसी खाई हो ।
एतो सुखने छोडने, मन जावो भाई हो ॥
बन्धव ! बोलगांनो हो ॥ टेर ॥ १ ॥
आंत तपीजे आगरी, कालेजो कलकेहो ।
अरजी छेली मायरी, नेणां जल ढलकेहो ॥ बन्धव ॥२॥

राम मुनि कृत क्षेपक ढाल तर्ज धजो सच्ची गुरु रेजन करीये ।

विभीषण की बात सुनीजे, बखत नहीं छे आनेकी ।
सीतादीजे ढील न कीजे, बात नहीं छे छानेकी ॥ वि० ॥१॥

१ लक्ष्मण । २ हाथ ।

शक्तिगई गई सवविद्या, सुत वन्धु वन्ध थानेकी।
पैंच नहीं भई सब जग केसी, म्हेणी देसी नृप रानेकी॥वि० ॥२॥
राज्य धानी सब रानी हारी, नहीं मानी कोई दानेकी।
चक्र गयो तुझ दुस्मन हाथे, वखत आई जिय जानेकी॥वि० ॥३॥
वार २ यह अरजी साहिब, किम रहे वस्तु विराने की।
सीता सूपूं बलिसब रखूं, दो आज्ञा पहूंचाने की॥ वि० ॥४॥
हूं चाकर तू ठाकुर मेरो. मोझ करो लंक थाने की।
श्री रघुवरजी नेक कहत है, वखत नहीं बहु तानेकी॥ वि०॥५॥
गुन्हमाफ कियो सवतांने, मत चूको अवमाने की।
लक्ष्मन भाखे ओछन राखे, राम कहै परमाने की॥ वि० ॥६॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

रावन कहै भोले क्यूं भूले, दीसे है थारो स्यूं सूने, उखारूं सब को जरामूले। जठे तठे आडो तूंही आवे, क नकटा लाज नहीं लावे॥ सत्य० ॥ ९४ ॥

ढाल मूलगी—

कोपीने तब कहे रावण, कहो किस्यो कहाव।
चक्र लक्ष्मण ने मारूं, मेली मुष्ठिनो घाव॥ रावण ॥ ८३ ॥
एमकहतां राय लक्ष्मण, ऊपन्यो अतिरोप।
फेकियो तब रावण ऊपर, चक्र सुदर्शन घोप॥रावण ॥ ८४॥

स्वा० नेमीचदजी कृत क्षेपक तर्ज खड़को—

लक्ष्मण कलकल्यो, कोपमे पर जल्यो कड कड़ी भीड ने चक्र वावे। आकाशे भमावीयो सन नन चलावीयो, जारे वैरीनो शीश छेद लावे। हरि को पावीयो चक्र-वलावीयो॥ टेर॥ १॥ रघु-सेना में जावतो, सुख वरतावतो, रत्न-सुवर्ण ने पुष्प जुई। महीमावस्तर तणी केसर सुगन्ध घणी, ए पंच प्रकारनी वृष्ठि हुई॥ ह०॥ २॥ राक्षस सेना मेंही चक्र आयो वही, तामघोर तो अन्ध कार हुवो। वावल विहामणी महा डरावणी, खार थकी अधिकोरे धूंवो॥ ह०॥ ३॥ वर्षा हुई अगन पत्थर तणी, धूल

कांकर ने फूंस कांटो। रंज उठीजती आंख बूरीजती उल्का-
पातने शाल कांटो ॥ ह० ॥४॥ हड़ड़ड़ ताम हड़ड़ाट हुवो घणो.
सड़ड़ड़ सो अगन रा बाण छूटे। धड़डड धरती सहु धूजे घणी,
तड़ड़ड़ करती नाड़तूटे ॥ ह० ॥ ५ ॥ झणणण ताम झणणाट
हुवो घणो, घणणणजिम मृग राज गाजे। फणणण जेम फुंकार
करत है अति, सणणण चक्र नो शब्द वाजे ॥ ह० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

आवन्तां चक्र देखीयो तब, वीर रस भूपाल।
चक्र मुष्ठि प्रहार दीधो, एहवीरे बहु विशाल ॥ रावण ॥ ८५ ॥
वेहूं ने बे हाथे हणतां, हुआं बेनो चार।
पुण्य विना रायजी ए, नहीं कर्यो कांई विचार ॥ रावण ॥ ८६ ॥
चक्रमांहिथी चक्र निकलो, मस्तक छेयोताम।
जेठ कृष्णा एकादशी, दिवसे पश्चिम जाम ॥ रावण ॥ ८७ ॥
महस चतुर्दश आयु भोगवी, अशुभ कर्म उपाय।
ठामे चौथे जई ऊपन्यो किधांना फलपाय ॥ रावण ॥ ८८ ॥
कुसुम केरी वृष्टि हुई, देव दीवे आशीष।
जगत में जयकार अधिको, जीतो कोडी वरीश ॥ रावण ॥ ८९ ॥
ढाल पट् चालीशमीरे, जीतिया श्री राम।
केशराज मुनीन्द्र भाखे, नवां वंछित काम ॥ रावण ॥ ९० ॥

ढाल सेषक मूलगी—

अष्टम यह 'वासु' 'बल' देव जानो, त्रिखण्डा धिप ही पहिचानो.
मानजो सबला ही आनो। हरि प्रति हरि ने तो मारे. या श्र
शास्त्र पूकारे ॥ सन्त० ॥ ९५ ॥

दोहा मार तरे—

राक्षस नामे दश दिशे, भय आणी मनमांय।
धूंवे दिशे छे गाजना, रव [illegible] माय ॥ १ ॥
[illegible] पर्ताजे [illegible], [illegible] निश्वास।
[illegible] [illegible] [illegible] पान

शक्तिगई गई सबविद्या, सुत बन्धु बन्ध बानेकी।
पेंच नहीं भई सब जग केसी, म्हेणी देसी नृप रानेकी ॥वि० ॥२॥
राज्य धानी सब रानी हारी, नहीं मानी कोई दानेकी।
चक्र गयो तुझ दुस्मन हाथे, वखत आई जिय जानेकी ॥वि० ॥३॥
वार २ यह अरजी साहिब, किम रहे वस्तु बिराने की।
सीता सूपूं बलिसब रखूं, दो आज्ञा पहूंचाने की ॥ वि० ॥४॥
हूं चाकर तू ठाकुर मेरो, मोझ करो लंक थाने की।
श्री रघुवरजी नेक कहत है, वरवत नहीं बहु तानेकी ॥ वि० ॥५॥
गुन्हमाफ कियो सबतांने, मन चूको अवमाने की।
लक्ष्मन भाखे ओछन राखे, राम कहै परमाने की ॥ वि० ॥६॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

रावन कहै भोले क्यूं भूले, दीसे है थारो स्यूं सूने, उखारूं सब को जरामूले। जठे तठे आडो तूंही आवे, क नकटा लाज नहीं लावे ॥ सत्य० ॥ ९४ ॥

ढाल मूलगी—

कोपीने तब कहे रावण, कहो किस्यो कहाव।
चक्र लक्ष्मण ने मारूं, मेली मुष्ठिनो घाव ॥ रावण ॥ ८३ ॥
एमकहतां राय लक्ष्मण, ऊपन्यो अतिरोप।
फेंकियो तब रावण ऊपर, चक्र सुदर्शन घोप ॥रावण ॥ ८४ ॥

स्वा० नेमीचदजी कृत क्षेपक तर्ज खड़को—

लक्ष्मण कलकल्यो, कोपमें पर जल्यो कड कड़ी भीड ने चक्र बावे। आकाशे भमावीयो सन नन चलावीयो, जारे वैरीनो शीश छेद लावे। हरि को पावीयो चक्र-चलावीयो ॥ टेर ॥ १ ॥ रघु-सेना में जावतो, सुख वरतावतो, रत्न-सुवर्ण ने पुष्प जुई। महीमावस्तर तणी केसर सुगन्ध घणी, ए पंच प्रकारनी वृष्ठि हुई ॥ ह०॥ २ ॥ राक्षस सेना मेंही चक्र आयो वही, तामघोर तो अन्ध कार हुवो। बावल विहामणी महा डरावणी, खार थकी अधिकोरे धूंवो ॥ ह० ॥ ३ ॥ बर्षा हुई अगन पत्थर तणी, धूल

कांकर ने फूंस कांटो। रंज उठीजती आंख चूरीजती उल्का-
पातने शाल कांटो ॥ ह० ॥४॥ हडड़ड़ ताम हडड़ाट हुवो घणो,
सड़ड़ड़ सो अगन रा बाण छूटे। धडडड़ धरती सहु धूजे घणी,
तड़डड़ करतो नाड़तूटे ॥ ह० ॥ ५ ॥ झणणण ताम झणणाट
हुवो घणो, घणणणजिम मृग राज गाजे। फणणण जेम फुंकार
करत है अति, सणणण चक्र नो शब्द बाजे ॥ ह० ॥ ६ ॥

ढाल मूलगी

आवन्तां चक्र देखीयो तब, वीर रस भूपाल।
चक्र मुष्टि प्रहार दीधो, एहथीरे बहु विशाल ॥ रावण ॥ ८५ ॥
बेहूं ने बे हाथे हणतां, हूआं बेनो चार।
पुण्य विना रायजी ए, नहीं कर्यो कांई विचार ॥ रावण ॥ ८६ ॥
चक्रमांहिथी चक्र निकली, मस्तक छेद्योताम।
जेष्ठ कृष्णा एकादशी, दिवसे पश्चिम जाम ॥ रावण ॥ ८७ ॥
महम चतुर्दश आयु भोगवी, अशुभ कर्म उपाय।
ठामे चौथे जई ऊपन्यो किधांना फलपाय ॥ रावण ॥ ८८ ॥
कुसुम केरी वृष्टि हुई, देव दीवे आशीष।
जगत में जयकार अधिको, जीवो कोडी वरीश ॥ रावण ॥ ८९ ॥
ढाल पट् चालीशमीरे, जीतिया श्री राम।
केशराज मुनीन्द्र भाखे, सर्या वंछित काम ॥ रावण ॥ ९० ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अष्टम यह 'वासु' 'बल' देव जानो, त्रिखण्डा धिप ही पहिचानो,
मानजो सघला ही आनो। हरि प्रति हरि ने तो मारे, बात या
शास्त्र पूकारें ॥ सत्य० ॥ ९५ ॥

दोहा सार राखी—

राक्षस नासे दस दिशे, भय आणी मनमाय।
धैर्य दिवे छे राक्षसां, नृप विभीषण आय ॥ १ ॥
आवि पतीजे जाणिने, जाणि नमो निरधार।
आवि मिलिया एकठा, राम विभीषण पास ॥ २ ॥

आयां प्रभुजी पाखती, प्रणमें प्रभुनापाय ।
दीलासो दीधोघणो, स्वमुख रावन राय ॥ ३ ॥
रावण पड़ियो देखने, विभीशण तिणवार ।
मूर्छाए धरणी ढल्यो, नरही शुद्ध लगार ।

क्षेपक ढाल तर्ज धूसारी—

मुख बोलोनी बन्धव! अभिमानी ॥ टेर ॥
किम सूता रणभौमि विचमें, कहां गईतेरी ठकुरानी ॥ मुख ॥ १ ॥
वीरहोय खण्डत्रय जीता, तोआज्ञा चलाई मनमानी ॥ मुख ॥ २ ॥
व्यताकोभय नहीं मनआण्यो, जनकसुता लेघर आनी ॥ ३ ॥
निश्चय भाविटरे नहींटारी, तो एह सदा केवल वानी ॥ मुख ॥ ४ ॥
मैं म्हारो ओलम्भो टार्यो, कहीं नहीं कोई हो अगवानी ॥ ५ ॥
परतीय खातिर प्रणगंवाया, जबर हठी वनकरी हानी ॥ मुख ॥ ६ ॥
हेबन्धव तूंमुझसे रूठो, नही बोलेतोकर शानी ॥ मुख ॥ ७ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

जबहोसहु आंतो विल्लाया यहमेंने क्या करवायाहै ।
हा! भाई होकर भाईका, रणमें संहार करायाहै ।
वहबड़ा भ्रातथा डरक्याथा, जोउसने लात लगाईथी ॥
पर मैंने इतने परही हा! उससेली ठान लड़ाईथी ।
अपमान लातसे जब समझा, तबकहां धीरता रहीमेरी ॥
सज्जनता शान्ति शील छोडातो, कब गम्भीरता रहीमेरी ।
मैंतुच्छ संकुचित चित्तकाथा, यहगलती हुई मुझीसेथी ॥
भाईथा बडासभी गुणमे, लंकाकी शान उसीसेथी ।

दोहा मूलगा—

विभीषण निज भाईनो, शोक करे अतिस्वाम ।
पेटेछूरी मारतां, हाथ ग्रह्या श्री राम ॥ ४ ॥
मन्दोदरी आदिसहु, शोक करन्ती नार ।
रावण प्रियने रोवती, झूरेमनही मझार ॥ ५ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज—हो पियु पंखीड़ा—

होपिउ अभिमानी नहींमांन्यो मुझबोलजो, दाखीरे मैंभाखीवात

थांने घणीरेलो ॥टेर॥ होपिउ अभीमानी नहींदाखी दिलखोलजो आणीरे घरराणी तिणदिन रघुवर तणीरेलो ॥ १ ॥ होपिउ अभिमानी कहांरही शमातेहजो, राज ऋद्धि त्यागी परभवथे गयारेलो । हो पिउ अभिमानी कहांरयो तुझनेहजो, क्षणमांही तो परवश प्रभुजी तुमथ पारेलो ॥ २ ॥

होपिउ अभिमानी क्यों पोढया रणभूमिजो, तुम विनरे अकुलावे जियड़ो मायरोरेलो होपिउ अभिमानी नहीं छोड्यो मानने तुमजो निजकृत कमाई संगासिधाई थायरेरोलो ॥ ३ ॥ होपिउ अभिमानी इसकेतीदेती ओलम्भजो, इसकेती देती ओलम्भजो रोतीरे मूर्च्छा ती भामन अति दुःख करेरेलो ॥

दोपक राधेश्याम—

इनपरही मन्दोदरी, मुखसे करती हाय ।
पतिप्यारे की लाशपे, गिरी पछाड़े खाय ॥

आंखे पसारकर दुःखियाने प्राणेश्वरके तनको देखा ।
लोहुसे लथपथ छिन्न भिन्न अपने जीवन धनकोदेखा ॥
चिल्लाईहाय सुहाग गया, शृंगार गया साम्राज्य गया ।
घरके राजाके साथ साथ, घरकी रानी का राज्य गया ॥

ईस प्रकार घण्टां तलक, रोई दुःखिया नार ।
चुडिएं तोडो हाथकी, बिछुए दिये उतार ॥

जोशब्दथे उसटूटे दिलके, वह लिखनेमें तेही नहीं ।
उस दुखियामनके पछतावे, सम्पूर्ण कहे जानेही नहीं ॥
आंसु ओंकी इतनी धारबही, सारा शरीर आंसु भरथा ।
एक नया समुद्र नहोजाए, लंकामें बस यहही भयथा ॥

प्रभुने मन्दोदरीकी, दशा निहारी दीन ।
उधर विभीषण भूपको, देखा निपट मलीन ॥

रहन सके आगे बढ़े, दिए बहुत उपदेश ।
दने वियोगी मनोंने, तब वियोगके क्लेश ॥

क्षेपक ढाल मूलगी—

वीर ए शूरपणे मूओ रावन सम राय नहीं हूओ, जगत अखियात एहु ओ। आस्वासन प्रभुजी दिलवावे, करोमत शोच समझावे।सत्य०९६।

दोहा मूलगा—

रामकरे समझावणी, कां रोवो सहु कोय ।
रावण रायां रावथो, अमरां अधिको जोय ॥ ६ ॥
वीर वृत्ति मांही मूओ, न मूओ कायर होय ।
शोकन करवो तेहथो, देखो चित्त अवलोय ॥ ७ ॥
संस्कार कायातणो, करो मत लावो वार ।
होती आवी थांहरे. सोई करो प्रकार ॥ ८ ॥
कुम्भकर्ण ने शत्रुजीत, घनवाहन ने आन ।
बन्धन छोडी मोकला, किया सहु राजान ॥ ९ ॥
सहू कुधुम्ब हुओ एकठो, आवि मिलीयो ताम ।
रोयां रीखियां खींजीयां, करे मृत्यु को काम ॥ १० ॥
परवाली पावन करी, पूजी अरची काय ।
करी रत्नमय पिंजरो, लेई चाल्या ते गाय ॥ ११ ॥
बावना चन्दन नी चिता, अगर घणो घनसार ।
दहन कर्म विधि साचवी, पक्ष्म अने परिवार ॥ १२ ॥
पद्म सरोवर नाहिया. पछे जलांजली दीध ।
प्रेत-कार्य रावण तणो, एटलो सघलो कीध ॥ १३ ॥
दिन केताने आंतरे. मिटे शोक सुजाण ।
कथा रही रावण तणी, आगे सुणो वखाण ॥ १४ ॥

ढाल सेतालीशमीं तर्ज यदुपति जीत्यो रे—

रघुपति जीत्यो रे. दशरथ नन्दन धीर ॥ रघु० ॥
लक्ष्मणनो वड़ वीर ॥ रघु ॥ सत्यवतीनो कन्थ ॥ रघु० ॥
गिरु ओनो गुणवन्त ॥ रघु० ॥ टेर ॥
नोबत केरा नादसूं, अम्बर रहियो गाजी ।
इन्द्र न आवे आसनेहो, सौर रह्यो अति लाजी ॥ रघु० ॥ १ ॥

घरघर रंग वधामणा, घर घर मंगलाचार ।
घर घर गुडी उछलेहो, मुख मुख जय जयकार ॥ रघु० ॥ २ ॥
जीत तणा कडरवा घणा, गावे गुणिय अपार ।
धन्य सीता धन्य रामजीहो, धन्य लक्ष्मण अवतार ॥ रघु० ॥ ३ ॥
हाथ पडी रावण तणे, तोये न खण्ड्यो शील ।
सीता धन्य ते कारणे हो. निर्मल गंग सलील ॥ रघु० ॥ ४ ॥
हठीमूं हठ लेई रयो, मिलियो कटक अपार ।
राम धन्य ते कारणेहो, न तजी त्रियानी लार ॥ रघु० ॥ ५ ॥
कांटो गयो तिहूं लोकनो, न तजे थो अभिमान ।
लक्ष्मण धन्य ते कारणेहो, मार्यो रावण मान ॥ रघु० ॥ ६ ॥
रामअने लक्ष्मण वदे, वाणि अमिय समान ।
कुम्भकर्ण आदि करीहो. निसुणो सहु राजान ॥ रघु० ॥ ७ ॥
राज्य करो आप आपणां. पहीलां जेम थो तेम ।
आण वहो लक्ष्मण तणोहो, होसे तुमने खेम ॥ रघु ० ॥ ८ ॥
एम सुणीने राजीया, आंसूं नांखे ताम ।
गद् गद् वाणि बोलिया हो, निसुणो श्रीरघुराम ॥ रघु० ॥ ९ ॥
काज नहीं राही तणूं. अमारे एक लिगार ।
संजम लेई साधसांहो. अम हम मोक्ष दुवार । रघु ॥ १० ॥
'कुसुमायुध' उद्यान में, 'अप्रमेय बल' नाम ।
चार ज्ञान शूं शोभता हो, आया मुनि अभिराम ॥ रघु० ॥ ११ ॥
साधु हुआते केवली, तिणही रातो मझार ।
केवल ओळव कारणेहो. आवे देव उदार ॥ रघु० ॥ १२ ॥
प्रातः हुआ श्रीरामजी. सौमित्री सूं साथ ।
कुम्भकर्ण आदि करीहो. चाल्या ते नर नाथ ॥ रघु० ॥ १३ ॥
देई प्रदक्षिणा वांदिया, साधु महा सुखकार ।
आगे बेठी सांभलेहो. धर्म तणो सुविचार ॥ रघु० ॥ १४ ॥
'इन्द्रजीत' 'घनवाहन', पूर्व भवान्तर वात ।

पूछे भाखे केवलीहो, निसुणो ए अवदात ॥ रघु० ॥ १५ ॥
'कौशम्बी' नगरी विषे निर्धन भाई दोय।
प्रथम 'पश्चिम' नामथीहो. साधु समीपे सोय ॥ रघु० ॥ १६ ॥
धर्म सुणी व्रत आदरी. मण्डियल करी विहार।
'कौशम्बी' नगरी फिरीहो, आया ते अणगार ॥ रघु० ॥ १७ ॥
'नन्दीघोष' राजा भलो, 'इन्द्रमुखी' तसुनार।
क्रिडा करत वसन्तनी हो, दीठो नयन पसार ॥ रघु० ॥ १८ ॥
'पश्चिम' नियाणुं करे, ए तप तणे प्रकार।
एहवी क्रीड़ा कारीहो, इणही घरे अवतार ॥ रघु० ॥ १९ ॥
वर्ज्यो पण माने नहीं, निन्दे नहीं निदान।
काल करीने उपन्योहो राय घरे सन्तान ॥ रघु० ॥ २० ॥
'रति वर्धन' नामे भलो, यौवन नो वयपाय।
राज्य लही रामत करेहो, तप करणी फल दाय ॥ रघु० ॥ २१ ॥
प्रथम साधू मरी ऊपन्यो पंचम कल्पे देव।
भाई राजा देखीयोहो, आयो सुग्तत् खेव ॥ रघु० ॥ २२ ॥
भेखधरी मुनिवर तणो, रति वर्धन नृप पास।
पूर्व चरित्र सुणावतां हो, जाति स्मरण ताम ॥ रघु० ॥ २३ ॥
संजम लीधो सादरो. पंचम स्वर्गे जाय।
दोय देव शचि करीहो. क्षेत्र विदेहे आय ॥ रघु० ॥ २४ ॥
'विबुध नगरे ऊपन्या, दोई भाई भूप।
संयम पामी वाग्मोहो, पाम्या स्वर्ग अनूप ॥ रघु० ॥ २५ ॥
तिहां थकी चवि आवीया, राजा रावण-गेह।
'इन्द्रजीत' धनवाहनू हो, भाई थया ससनेह ॥ रघु० ॥ २६ ॥
इन्द्रमुखी पट रागिनी, रति वर्धननी माय।
ए राणी मण्डोदरी हो, थांरी माय कहाय ॥ रघु० ॥ २७ ॥
इन्द्रजीत धनवाहनू, कुम्भकर्ण भूपाल।
अवरही बहु व्रतआदरे हो, पट् कापिक प्रतिपाल ॥ रघु० ॥ २८ ॥
राणीजी मण्डोदरी, आदि नारी अनेक।

संजम सूधो आदरेहो, चारु एह विवेक ॥ रघु० ॥ २९ ॥

धूलचंदजी कृत—क्षेपक ढाल तर्ज
जीरे मुनियाँ रो मेलो पुण्य पसायथी—

जीरे,-समता धारीने संजम आदर्यो, जीरे-दीवो संसार्यों ने पूठो, कर्मां पर काडी मूठो । मुगतीना लोभी, थारा जाऊंहो तोपे वारणा ॥ १ ॥ जीरे-प्यारा छ कायोंना न्यारा पापसूं, जीरे-तपकर आतम ने तारी, माया ममता ने मारी, टाली हो कुमती कुनार ने ॥ २ ॥ जीरे-घन जिम थे गाजो, गाजो शूरमा, जीरे-आप मुगतीना रसीया, म्हारे हिरदा में वसिया, कसिया हो तम्बूड़ा शिवपुर जाणरा ॥ ३ ॥ जीरे-गुणगनो आगर सागर ज्ञानरा, जीरे-त्यागी वैरागी भरपूरो सत्य वक्ता-शूरो, आशाथे पूरो भव्य जीवोंरी ॥ ४ ॥ जीरे-वाणि अनमोली तोली नहीं तुले जीरे-अमृत ना प्यालापाओ । भाव विध २ रलाओ, घणाही सुहावो नर ना रने ॥ ५ ॥ जीरे-सागई मुनिवर माला रतनोंकी, जीरे-भगवन्त वचनोंमें चालो । उलटा जानांने पालो, मालोहो मुनिर महियंल ऊपरे ॥ ६ । जीरे-पोपाड़ निवासी प्यासी ज्ञानरो, जीरे धूलचंद मुनि गुणगावे । मस्तक चरणोंमें नावे, तिरण तारण मुनिराजरे ॥ ७ ॥

ढाल मूलगी—

साधु नमी श्री रामजी, सौमित्री कपिनाथ ।
विभीषण आदिकरीहो, लारही लिया बहु साथ ॥ रघु ॥ ३० ॥
शणगारी लंकापूरी, ओछवनो अधिकार ।
विद्या धरीए कीजियोहो, मंगलनो विस्तार ॥ रघु । ३१ ॥
वेत्रण थाट बनावतां, लंका मांही प्रवेश ।
शुभ वेला शुभ मुहूर्तमेंहो, कीधो राम नरेश ॥ रघु ॥ ३२ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज ख्यालकी, राम मुनि कृत—

गढ़ लंका मांयने, आईरे असवारी राजा रामकी ॥ टेर ॥
राम लक्ष्मण तो दोये अधिका, हाथी होदे बैठा ।
सारा लोक लुगाई देखे, नगरी मांही पैठा ॥

दर्वाजामें चड़तां ऊचां, मोती झुम्बक देठारे ॥ गढ़ ॥ १ ॥
सावामण को मोती शोभे, बाजु सोहे और ।
राम चन्द्रजी दिलमें सोचे, इसो नदूजी ठौर ।
अयोध्या में शोभे ओतो, लेवां इसकूं तोररे ॥ गढ़ ॥ २ ॥
मनोगत भाव जाण कविवरने, बोले समस्या बोल ।
वमी चीजको वंछेन उत्तम, यह क्या और अमोल ॥
एक एकसे अधिका धिकहै, देखो आगली पोलरे ॥ गढ़ ॥ ३ ॥
सुनकर राम विचारे दिलमें, साचकहेछे एह ।
ए सब चीज विरानी इनसे, भूलन करना नेह ॥
अजब तरह की वस्तु देखत, कहतां न आवे छेहरे ॥ गढ़ ॥ ४ ॥
लोक तणेमुख शोभा सुनने, सीता पाम पधारे ।
सीता देखन की अभिलाषा, सोजाणे करतारे ॥
पग २ लाख पसावज देते, इनपर राम पधारे रे ॥ गढ़ ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

पुष्य गिरिने मस्तके, बैठीथी उद्यान ।
जाई जोई जानकीहो, जेहवी कही हनुमान ॥ रघु ॥ ३३ ॥
बांहि साई सुन्दरी, राघव लीधी गोद ॥
जीवितव्यए नवू थयूंहो, प्रगट पणे प्रमोद ॥ रघु ॥ ३४ ॥
पिंजरने ए प्राणियो, हुओ एकठो आज ।
राघवजी अब जाणीयोहो, हूंरे अछुं महाराज ॥ रघु ॥ ३५ ॥
महासती म्होटी सती, देव कहे आकाश ।
स्वर्ग मृत्यु पातालमें हो, पामी अति शाबास ॥ रघु ॥ ३६ ॥
आंसूं सूं पगधोवतां, आवी करे प्रणाम ।
सौमित्री सोल्हास[१]सूं, आज सर्या सहु काम ॥ रघु ॥ ३७ ॥
मस्तक चूंबी सादरो[२], सीता दिये आशीष ।
चिरानन्दे[३] चिरजी वजेहो, सफली सयल जगीश ॥ रघु ॥ ३८ ॥
भामण्डल प्रणमेंघणूं, बहिनी कहै चिरंजीव ।

---

१ स-उल्हास-आनन्द सहित, २ आदर सहित, ३ चिर-लांबो-आनन्द

म्हारीए आशीस थीहो, वाधो आयु अतीव ॥ रघु ॥ ३९ ॥
विभीषण सुग्रीव जी, हनुमन्त अंगद आया ।
चरण नमें सीता तणाहो, भूपतोजी भल भाय ॥ रघु ॥ ४०
'कुमुदिनी विकसे घणूं, देखी पूनम चन्द ।
सीता तेम प्रभु देखवेहो, पामी परमानन्द ॥ रघू ॥ ४१ ॥
'भुवना लंकृत हाथीए, चल्या सजोड़े राम ।
लक्ष्मण हाथी आगलेहो, जोड़ बनी अभिराम ॥ रघु ॥ ४२ ॥
आया रावण मन्दिरे, पेख्यो प्रवर प्रासाद ।
सहस थम्भनो शोभतोहो, करे गगनसूं वाद ॥ रघु ॥ ४३ ॥
लहु कहे घर माहरे, पूज्य पधारो आप ।
सहू कोई जाणेमहीहो, प्रीत तणी ए थाप ॥ रघु ॥ ४४ ॥
राय तणूं मन राखवा, आवे घर प्रभुतास ।
भोजन भक्ति भली करीहो, उपजाव्यो उल्हास ॥ रघु ॥ ४५ ॥
पहिरावो परिवारसूं, पोषी परिगल प्रेम ।
कर जोडीने वीनवेहो, राय विभीषण एम ॥ रघु ॥ ४६ ॥
ए घोडा एहाथीया, अरथ गरथ भण्डार ।
हेम रत्नपट कुलशूंहो, वस्तु अमोलक सार ॥ रघु ॥ ४७ ॥
ए लंका लीलावती, करो अपाणो ईश ।
ठकुरायत रावण तणोहो, छेलो विश्वा वीश ॥ रघु ॥ ४८ ॥
लंका राज्य तणो करो, प्रभुजीने अभि शेष ।
ताम राम बोल्या हसीहो, बोल हमारो एक ॥ रघु ॥ ४९ ॥
लंका दीधी तुम्ह भणी, पहीलीहो हम देख ।
आज तिलक सर्वी ताहरेहो, जाणो श्रीयो सुविशेष ॥ रघु ॥ ५० ॥
इन्द्र भवनमें इन्द्रजिम, राय भवन में स्वामी ।
परिवरियो परिवारसूं हो, आयो आनन्द पामी ॥ रघु ॥ ५१ ॥
सिंहोदर आदिकरी, नाम सहु नर नाह ।
दीधी थोजो कन्यकाहो, आणे परिण उच्छाह ॥ रघु ॥ ५२ ॥

को लक्ष्मण को रामने, परणावी ते बाल ।
सर्व सुलक्षण गुणवतीहो, रमणी रूप रसाल ॥ रघु ॥ ५३॥
इन्द्र तणा सुख भोगवे. क्षण मांही दिन जात ।
छ वर्षतो बोलिगयाहो, अब मिलवा मात ॥ रघु ॥ ५४ ॥
ढालज सेंता लीशमी. रंग विनोद विलास ।
'केशराज श्री रामनेहो, पूर्व पुण्य प्रकाश ॥ रघु ॥ ५५ ॥

दोहा नह रागे—

इन्द्रजीत घनवाहन्, मरुस्थे[1] लीमें जाय ।
महामुनि मुगतेगया, तीर्थ मेघरथ थाय ॥ १ ॥
'कुम्भ कर्ण शिव गतिलही. नदी नदी नर्मदा मांय ।
'पृष्ट रक्षित नामे भलूं, तीर्थ प्रवर्त्यो त्यांय ॥ २ ॥
अब माता 'अपराजिता' सुमित्रा सूं दोय ।
पुत्रोनी आरति करे. खबर न पावे कोह ॥ ३ ॥
खण्ड धातकीथी चली, आई गयो ऋषि देव[2] ।
पगे लागतां पूछही, माता सुण तनखेव ॥ ४ ॥
कां तुम अति आरति करो, कां तुम दुबले देह ।
आंसूं नांखी मायजी, उत्तर आये तेह ॥ ५ ॥
तात तणा आदेशथी, वत्स गया वनवास ।
सीता पण साथे हुई, पतिव्रता व्रत तास ॥ ६ ॥
सीता रावण अपहरी, करी घणो परपच ।
नन्दन हुआ वाहरूं, मेली कटकनो संच ॥ ७ ॥
राम अने रावण तणा, सुभटोंमे संग्राम ।
होतो रावण खीजियो, शक्ति चलावी ताम ॥ ८ ॥
लागी लक्ष्मणने हैये, पड़ियो मूर्च्छा खाय ।
विशल्या आदि आवीने, लेईगया खगराय ॥ ९ ॥
खबरन पामी आगली, ए अम आरतिहोय ।

---

१ विंध्यस्थली = २ नारद ऋषि =

के जीवन्तो ऊगर्यो, केवत्स मुओ सोय ॥ १० ॥
नारद भाखे मतिकरो, आरती एह लगार।
लक्ष्मण मार्यो नविमरे, जो रूठे करतार ॥ ११ ॥
जाऊं छूं लंकापुरी, लाऊं लक्ष्मण राम।
आरती भांजूं ताहरी, तोमुझ नारद नाम ॥ १२ ॥
एम कहीने आवीयो, राघवजीने पास।
माय मनोरथ पूरवा, एम करे अरदास ॥ १३ ॥

ढाल अड़ताली शमीं तर्ज रसीयानी (तथा अलगी रहनी—

सुमित्रा अपराजीतारे, जोवे प्रभुजी नीवाट।
लक्ष्मणजी ना घावनो, आणे अति उचाट हो सुणस्वामी ॥ १ ॥
खबर न कोई पायहो सुण स्वामी, झूरी पिंजर थायहो सुण स्वामी ॥ टेर —
रयणी छमासी जायह सुण स्वामी रही घणूं लीधो लायहो ॥सु०॥२॥
पुत्रों ऊपर मायनोरे, होवे नेह अपार।
सुरभी नी परे देखीयो रे, चित्त रहे वत्स लार हो ॥सु०॥३॥
फिरे कुदन्ती वानरीरे, सुतने कण्ठ लगाय।
माले सेवे पंखणीरे, लिये सुतनेरे बधाय हो ॥सु० ॥ ४ ॥
गर्भ धरे वे पोखवेरे, पाले वे अभिराम।
प्राण आपणा आपवेरे, सारे सुतनो काम हो ॥ सु०॥५॥
माता गंगा सारखीरे, माता तीर्थ रूप।
माता महियल मोटकीरे, मांने म्होटा भूप हो ॥ सु०॥६॥
पणमुकी गणपति वादमेंरे, अभिकाणी अतिभाय।
राजो हुओ गणधर्मारे, शंकरे कीधा न्याय हो ॥ सु० ॥७॥
वीर स्वामी मांने घणं रे, जनहुना गर्भ मांहे।
माताने दुःख दुई नेरे, संयम नहीं लीधो प्राहे हो ॥सु०॥८॥
घणूं किसुं कहिए दाखिएरे, माताने सुख देत।
सुरत दीधो संसारने रे, एह धर्म नी हेत हो ॥ सु० ॥९॥

* यह कल्पित कथन है।

रूड़ा भाखे रामजीरे, नाराद सूं सुखपाय।
लंकपति बोलाईके रे, भाखे प्रभु अकुलाय हो ॥सु० ॥१०॥
भूप! तिहारी भक्तिथीरे, विसर्यां हम माय।
आगेही खेंच्यां थकीरे, माताजी मरिजाय हो ॥सु० ॥११॥
अबही जाई उतावलारे, मिलिये मातने आज।
तो तो ए साचो पड़े रे, कीधो सघलो काज हो ॥सु०॥१२॥
कहे विभीषण रायजीरे, मांग्या श्रो दिन सोल।
ज्यूं एती त्यूं एटली रे, मांनो हमारो बोल हो ॥सु०॥१३॥
इन्द्रपूरीनी ओपमारे, आछी भांत अनूप।
अयोध्या समरावसूंरे, कहे लंकनो भूप हो ॥ सु० ॥ १४ ॥
विसर्ज्यों ऋषिरायजीरे, मातापासे आय।
वात कही सन्तोपनीरे, हर्ष हिये न समाय हो ॥ सु० ॥१५॥
कारीगर लंकातणारे, सुघड़ोंना सिरदार।
अयोध्याए आवीयारे, कांई न लागी वार हो ॥ सु० ॥१६॥
जेम कह्यू तिमही कर्यूं रे, चतुर पणे चित्त लावी।
के देखो हरीनी पुरीरे, के देखो ए आवी हो ॥ सु० ॥१७॥
दहाड़े अब सत्तरमेंरे, पुष्पक नामे विमान।
वैसी 'लक्ष्मण' रामजीरे, सोहम ने ईशान हो ॥सु० ॥१८॥
सीता विशल्या वलीरे, रामसुता सुकुमाल।
सघली बैठी सन्मुखेरे, विद्याधरी सुविशाल हो ॥ सु०॥१९॥
'विभीषण' सुग्रीवजी रे, भामण्डल हनुमान।
अंगद सूं दक्षिण दिशे रे, बैठा पुरुष प्रधान हो ॥सु० ॥२०॥
वाम दिशे विशेषथी रे, बैठा राक्षस राय।
पूठे सेवक सामटारे, लीयो विमान चलाय हो ॥ सु० ॥२१॥
अयोध्याने आसना रे, आया जाण्या जाम।
भरत भूप लघु भाईसूंरे, साहमा आवे ताम हो। सु०॥२२॥

---

१ शाक्रेन्द्र और ईशानेन्द्र एकत्रित हुवे जैसे—

ऊतरीया हाथी थकीरे, नजरे आया ईश ।
ईश विमाने ऊतर्यारे, आणी अधिक जगीश हो ।।सु० ।।२३।।

क्षेपक राधेश्याम—

राम-दरस के हेतु जब, अवध चला उमड़ाय।
भरत भूप के सहितसब, हुए उपस्थित आय ।।
इतनेमें नेत्र भरतजी के, आकाश के ऊपर जाते हैं।
उस समय अचानक निकल पड़ा, रघुराज हमारे आते हैं ।।
इतनेमें वह पुष्पक विमान, कुछ और समीप नजर आया।
आखिर को सबने क्या देखा, नभसे भूमण्डल पर आया।
अब तीन गुणोंयुत तीन व्यक्ती, उसके अन्दरसे प्रकट हुए।
साथही साथ आगे पीछे, जाहिर सब साथी सुभट हुए ।।
उस राम लक्ष्मण पे दृष्टिजमी, आगेको भरत झपटते हैं।
मेरे भइया, मेरे, भइया, कहकर चरणों में पड़ते हैं ।।
श्री रामचन्द्रजी भी गद् गद् थे, हाथों पे उठा लिया बढ़कर।
प्राणों से प्यारे भाई को, छातिसे लगालिया चढ़कर ।।

ढाल मूलगी—

भरत भूप भल भावसूंरे, रख्यो चरण शिर नांय।
ऊठाई ऊंचो करीरे, लीधो कण्ठ लगाय हो ।। सु० ।।२४।।
मस्तक चूंबे रामजीरे, वारम्बार विशेष ।
शत्रुघ्न पग लागतांरे, दिये सन्मान नरेशहो ।।सु० ।।२५।।
शत्रुघ्न ने भरतजीरे, लक्ष्मण ने परणाम ।
करतां लक्ष्मणजी कर्यूंरे, जेम कीधुं श्रीराम हो ।।सु०।।२६।।
ताम विमाने एक ठारे, बैठा बन्धव चार ।
दान शील तपभावसूंरे, पामे शोभ अपार हो ।। सु ।। २७ ।।
पहुं लाही प्रगट पधारे, आयोध्या नगरमां ।
मेलीथी प्रभु आवतांरे, पुनरपि फिरी जगावीहो ।। सु० ।। २८ ।।

क्षेपक राधेश्याम—

पातेही इसदावरके, आनंदे श्री राम ।

अवध पूरी बनगईहै, एक अलौकिक धाम ॥
जो नगरी सीता रामबिना, एक ख्वार दिखाई देतीथी ।
वह आज खुशोसे फूलागई गुल्ज़ार दिखाई देतीथी ॥
जो कली कभी मुरझाईथी, वह आज खुलपड़ी खिल आई ।
जहां अन्धकार का वासाथा, वहां आज धूपसी खिल आई ॥
जो वृक्षकभी पतझाड़मेंथे, वेफिर बाहरमे आयेहैं ।
मालीको आता हुआजान, गुलफिर गुल्ज़ारमें आयेहैं ॥
सरजू की लहरें उठ उठकर, स्वागत की उमंग जतातीहै ।
वृक्षोंकी लता लहलहा कर, फूलोंका फर्श बिछातीहै ॥
कूपोंमें होगयाहै, अमृत जैसा नीर ।
तालावोंमें भरगया, मानों आके क्षीर ॥

ढाल मूलगी—

छांटी थोड़े पाणिएरे. रज सघली बपसावी ।
करी सुगन्धी धूपणेरे, फूलही फूल बिछायी हो ॥ सु० ॥ २९ ॥
तोरण नी रचना करीरे, गलिए गलिए देखी ।
घर घर गुडी उछलेरे, घर घर हर्ष विशेषो हो ॥ सु० ॥ ३० ॥
बाजा विविध प्रकारनारे, भूमिअने आकाश ।
बाजे नीका नादसूंरे, होई रह्यो उल्लासहो ॥ सु० ॥ ३१ ॥
नगरी मांही आवीयारे, माधव देखो मोर ।
ऊंची नजर बिलोकतेरे, लोक करे चकोर हो ॥ सु० ॥ ३२ ॥

धूलचदजी कृत चेपक ढाल तर्ज दलाली लालनकी—

अयोध्या फूलरहीरे. घर आयाहै लक्ष्मण राम ॥ टेर ॥
घर २ मांही रंगवधावो. गौरी मंगल गावे ।
सब सिणगार सजीने सारी, रघुपति सामी जावे ॥ अ० ॥ १ ॥
आज आंगणिये सुरतरु फलियो, अमृत मेह वरसाया ।
मुंह मांग्या तो ढलगया पासा, इन्द्र चली घरआया ॥ अ० ॥ २ ॥

ढाल मूलगी—

कनक तणे कुसुमे करीरे, भरि भरि मोती थाल ।

वधावे वनिता वलीरे. गावे गीत रसाल हो ॥ सु० ॥ ३३ ॥
वधावे वारु वलीरे. कामनी कलश उदार ।
दाने जल धर वरसतारे. आया नृप दरवार हो ॥ सु० ॥ ३४ ॥
उतरी ताम विमानथी रे. राम- सुमित्रा नन्द ।
महिल मांही मन रंगसुं रे, आवे धरी आनन्दहो ॥ सु० ॥ ३५ ॥
पहेला कौशल्या तणा रे. चरणे नामें शीश ।
पाछे अवर माता भणी रे, माता दिये आशीश हो ॥ सु० ॥ ३६ ॥

सवैयो–

मात को मोह सत्य सीता को मैंभी लयो महानम मेरो ।
भरत की भक्ति सेव लक्ष्मण की. पोरम लयो पवन-सुत केरो ॥
रावण राय त्रिकूट गढ़ स्वाई. लंका मार कियो घन घेरो ।
ए सब पूर्व लेखहे मन, अवर प्रतापहे कैकेयी तेरो ॥ १ ॥

सीता विशल्या सतीरे, कौशल्या पगेलागी ।
पिछे सासु अवरनीरे, लहे आशीश सुहागी हो ॥ सु० ॥ ३७ ॥
जिसा सुतहम जन्मीयारे, तैसाही ममतोल ।
तुमपण नन्दन जन्मजोरे, मानी हमारो बोल हो ॥ सु० ॥ ३८ ॥
फिरी फिरीमा आपरा जितारे. लक्ष्मण केरा अंग ।
करसुं फरसे शिरधणूंरे, चुंबी कहे मन रंग हो ॥ सु० ॥ ३९ ॥
वत्स तुम्हारो आज मेरे, हुओ जाण्यो जन्म ।
नयणे निरख्यो आपणोरे. धन्य करतानी कर्म हो ॥सु० ॥४०॥
कष्ट घणुं वनवासनुंरे, सीताने रघुदेव ।
तेनो आघुं काढियुंरे,-जोने कीधां सेव हो ॥ सु० ॥ ४१ ॥
तातवणी पर रामजी रे, सीताए ने जेम ।
कहे लक्ष्मण रनवासमेरे हुंतो राख्यो एम हो ॥ सु० ॥ ४२ ॥
माताजी उदत पणेरे, मैं कीधो अविवेक ।
सीता-रामवियोगनोरे, हेतु हुओ हूं एक ॥ हो सु० ॥ ४३ ॥
पण थारी आशीस थीरे, वारे बादल फाटी ।

गयु सही आखी अणीरे, आया अरि निरघाटी हो ॥सु० ॥४४॥
ढालज अड़ तालीशमीं रे, गई वहोड़ी नार ।
केशराज ऋषि राजजीरें, पुण्य वडो संसार हो ॥ सु० ॥ ४५ ॥

❊ इति श्री जैन पद्य रामायणे ❊

१ रामविलापः, ''
२ वीर विराधाय राज्य प्रदानम् ''
३ सुग्रीवस्य संकट मोचनम्, ''
४ असालिकया लंकारक्षणम्, ''
५ विद्याधराणां रामेण सह-
वार्ता लापः । ''
६ कोटि शिलाया अधिकार । ''
७ अंजनी सुतस्य लंकाप्रस्थानत् ''
८ सेनयासह रामस्य-
लंकाप्रस्थानम् । ''
९ विभीषणस्य शरणागतिः, ''
१० युद्ध वर्णनम् ।
११ लक्ष्मणोपरि शक्तिप्रहारः ।
१२ मन्दोदरी शीक्षा ।
१३ बहुरूपिन्या विद्याऽधिकारः
१४ रावण मृत्युः ।
१५ विभीषणाय राज्य प्रदानम् ।
१६ अयोध्यायां रामस्य-
प्रत्यागमनम् ।
१७ भरत मेलनम् ।
इत्यादि विविध विषयकंम.

॥ तृतीय खण्डम् सम्पूर्ण ॥



श्री वीत रागाय नमः

श्री जैनपद्य रामायण

का

चतुर्थ खण्ड



दोहा

सुगुरु वडो संसारमें, ज्ञान दान दातार ।
शिष्य सुगुरु सेव्यांलहे, विद्यानो विस्तार ॥ १ ॥
'राम सुलक्ष्मण आवीया, माता हर्ष अपार ।
तेमन जाणे आपणो, केजाणे किरतार ॥ २ ॥
'भरत सुभक्ति करेभली, अवसर जाणी सार ।
उत्सव मण्डावे घणा, घर घर मंगलाचार ॥ ३ ॥
सेवक होई माचेव, स्वामी तणी अतिसेव ।
भूपतिनी पदवी तणो, नकरे को अहमेव ॥ ४ ॥
संयम लही स्वामीसूं, भरतभणे सुविचार ।
राज्यग्रहो प्रभु आपणूं, हूंलेऊं संयमभार ॥ ५ ॥
संजम तोहूं सादरो, लेतो राजामाथ ।
शईत शक्ति सूंपीगया, नृप-पद केरी आथ ॥ ६ ॥
आज लगे में राखीयो, एह तुम्हारो गज ।
दादाजी रे दयाकरो, सारूं आतम काज ॥ ७ ॥

ढाल गुणपचासी तर्ज नथनी (तथा उमसेन की ललीरे)

क्षणगईरे मेरी क्षणगई, लाखीणी मेरी क्षणगई ॥ कोडिलो मेरी क्षणगई, क्षणगई फिरी नावे सोई, अंजलीनूं रेजल जानूं जोई ॥ टेर ॥ १ ॥

समय समय मरन्नो जीव, वीतरागना वचन सदीव ॥ क्षण ॥

तनु साथे डोलन्ती छांय, कालरहे एपूरी चांह ॥ क्षण ॥ २ ॥
कालरूं औपध नहीं है विनाण, जम रूठ्यां नहीं राखे प्राण ॥ क्षण ॥
जातक१ ने जम खाई जाय, अण जातक सामूं नदिखाय ॥ क्षण ३ ॥
काले खाधोहु संसार, कालन खाधो जाय लगार ॥ क्षण ॥
.... ॥ क्षण ॥ ४ ॥
जरान पीड़े न ऊपजे रोग, नघटे इन्द्रीना बलयोग ॥ क्षण ॥
जबलग आवीन पूगेआव, तबलक करीजे धर्म की चाव ॥ क्षण ॥ ५ ॥
जेनरा जरा जमथी नडराय, तेतोढीलो करेरे न्याय ॥ क्षण ॥
मन्दिर द्वारे लागा लाय, तबतो काईहोन कढाय ॥ क्षण ॥ ६ ॥
सागर पल्लने आयु छेह, कौण विचारे गिणती एह ॥ क्षण ॥
जेदव बाले परवत प्राहे, क्योनबले खडतेदवमांहे ॥ क्षण ॥ ७ ॥
जग में भाख्यो सयल उपाय, घडी घटे क्षणहीना रहाय ॥ क्षण ॥
चावण१ चावी पन्थी पुलाय, पन्थीं पन्थे न रहेवा पाव ॥ क्षण ॥८॥
एह सयाण पणं मुझ आज, जेम तेम सारूं आतमकाज ॥ क्षण ॥
घर बालीने कीर्ति करन्त, मूर्ख शिरोमणी नामधरन्त ॥ क्षण ॥९॥
आली२ आंखे कहे श्रीराम, वत्स ! रहे वादे संयम काम ॥ क्षण ॥
राज्य करो तुम्ह पहिला जेम, जोमुझ साथे राखोप्रेम ॥ क्षण ॥१०॥
आज्ञा कारी तुम अभिधान, तेतो जाणे सयल जिहान ॥ क्षण ॥
पहीली जेम तुम्ह मानी आण, अबही करोमुझ बोलप्रमाण ॥ क्षण ॥११
भरत भूप करीने जुहार, ऊठी चाल्यो लोपी-कार३ ॥ क्षण ॥
लक्ष्मण दोडी साह्यो हाथ, आणी बेसाड्यो नरनाथ ॥ क्षण ॥ १२ ॥
'सीता' ने 'विशल्या' आद, राणी सहु आवी अल्हाद ॥ क्षण ॥
देवरने समझावे तेह, सुन्दरी वचन वदे ससनेह ॥ क्षण ॥ १३ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत चेपक ढाल तर्ज कमली वालेने—

नृप वनिता यों समझाय रही, मत संयम लेवो देवरजी ।
सुन संयमकी छतियां धरकी, फिर मुखसे न केवो देवरजी ॥टेर॥

---

१ पथिक पन्थ मे खाद्य खाकर विश्राम नहीं करता है । पाणी दीने को आतुर होता है ॥ २ आंसू सहित ॥

हिय हेज धरी इम कहत सीया, सुन संयम की अकुलात जीया ॥
इतना दिन वनवास लीया, हम आये जाचो ! देवरजी ॥ नृप०१॥
संयम का मारग बहुत कठिन, चलनाहै खड्ग की धार तच्छिण ॥
मत करिये हठ तुम्ह होके दच्छिन, अनतो गम खावो देवरजी ॥नृप२॥
हो सुकुमार फूल ज्यूं गौर वदन, वहां करना है कर्मों का कदन ॥
वड बन्धवकी अहो गुणके सदन!, आणामें वेवो देवरजी ॥नृप॥३॥
कहे लोक आयेघर राम सीया, जब भरतको संयम दिलायदिया ॥
यह अपयश हमसे नजाय सया, घर रूप! रहोहो देवरजी ॥नृप॥४॥

ढाल मूलगी—

म्होटो भाई तात समान, क्यूं न विचारे तूं राजान ॥ क्षण ॥
सायर केम तजे मर्याद, एतो निश्चय विधि वाद ॥ क्षण ॥ १४ ॥
विसारण संयम नी वात, जल क्रीडा कर वाने जात ॥ क्षण ॥
देवर साथे घाले बाख, तुम्हसूं खेलण कीअभिलाप ॥क्षण ॥१५॥
भाभियोंनो मन राखण हेत; चाल्यो भूपति महिल समेत ॥क्षण॥
घटिका दोई करी जल ख्याल, जल काठे ऊभो भूपाल ॥क्षण १६॥
एटले गज 'भुवना लंकार', थम्भो ऊखेडे रोप अपार ॥ क्षण ॥
आगो देखो तीयपरिवार, शोर मच्यो पडियो गजलार ॥क्षण १७॥
थर हर धूजण लागी बाल, देखी हाथी अति विकराल ॥ क्षण ॥
पूठे राखी सघली देवी, आयो नृप आगे नतखेरी ॥ क्षण ॥ १८ ॥
मदकरी आंधो तेरे गयेन्द, नयणं दीठो भरत नरेन्द्र ॥ क्षण ॥
मद उतरियो तेथीवार, शान्त हूओ गज छाडी विकार ॥क्षण॥१९॥
गज दर्शन देखी अभिराम, भूपति पण पायो सुख नाम ॥ क्षण ॥
काने नाही छाली जेम, भूपति आगे हाथी तेम ॥ क्षण ॥ २० ॥
वात सुणी ने आवे धाय, राम सु लक्ष्मण सुभट सुहाय ॥ क्षण ॥
करी उपाय अनेक आज, महानंन गज आन्योठाण ॥क्षण ॥२१॥
कुलभूषण ने भूषण देश, नमो नयर्या म्हांपगज निशोर ॥ क्षण ॥
पद्म सौमित्री भरत नरेश, नन्दन आवे लोक मनोर ॥क्षण॥२२॥

पूछे पद्म कहो ऋषिराय, भरत देखी गज निर्मद थाय ॥ क्षण ॥
देश सुभूषण केवल धार, भाखे भूपा सुणो सुविचार ॥क्षण॥२३॥
ऋषमे[१] लीधो संयम भार, साथे हुआ नृप चार हजार ॥ क्षण ॥
एषणा समिती न लह्यो आहार, तापस हुआ ते तेहीवार ॥क्षण॥२४
प्रल्हादन सुप्रभ नृप-नन्द, ताप सना व्रतपाली अमन्द ॥ क्षण ॥
चन्दोदय सूर्योदय देख, भवमांहि भमिया सुविशेष ॥क्षण ॥२५॥
चन्द्रोदय गजपुर में आय, हरिमति भूपति नन्द कहाय ॥ क्षण ॥
चन्द्रलेखा सुउदर उत्पन्न, कुलंकर नामे वित्पन्न ॥ क्षण ॥ २६ ॥
'सूर्योदय' पणते पुरमांहे, विश्व भूतिनो नन्दन प्राहे ॥ क्षण ॥
अग्नि कुण्डा उदर अवतार, श्रुतिरति नामे कुल आधार ॥क्षण॥२७।
'कुलंकर' नृप पद पावन्त, तापस वनमें पग ठावन्त ॥ क्षण ॥
विचेमिल्यो ज्ञानीअणगार, अभिनन्दन भाखे सुखकार ॥क्षण२८॥
तापस पंचाग्नी साधन्त, जीवघणानो आणे अन्त ॥ क्षण ॥
लाकड अग्नि लगाव्यो आप, तेमां है बलेछे साप ॥ क्षण ॥ २९ ॥
सो अहि पर भवनो तुम्ह बाप, क्षेमकर नामे लहे ताप ॥ क्षण ॥
फाडी लाकड़ काढ्यो नाग, जीव ऊगार्यो तेसो भाग ॥क्षण ॥३०॥
लाकड़ फाढ्यो माहे भुजंग, दीठो राजा हुओ विरंग ॥ क्षण ॥
दीक्षा ऊपर आणे भाव, 'श्रुतिरति' ताम कहन्त कहाव ॥क्षण॥३१॥
वय पाके दीक्षाद्य हेज, करचो काया आजश तेज ॥ क्षण ॥
एम सुणी भांग्यो उत्साह, लचिपचि मांही रह्यो नरनाह ॥क्षण॥३२॥
'श्रीदामा' राणी छे तास, 'श्रुतिरति' साथे छ सुविलास ॥ क्षण ॥
शक्या आयां पामी भेद, राजाजी करसे शिर छेद ॥ क्षण ॥३३॥
विषदेही मार्यो भरतार, वेगोही मूओते जार ॥ क्षण ॥
पापतणा फल एहिज जूरी, ए दोई भव भमिया भूरी ॥क्षण ॥३४॥

---

१ ऋषभदेव निराहारपणे मौनकर विचरने लगे, पीछे शेष मुनि निर्दोषआहार नमिलनेसे तापसहुए । उन्होंमेसे प्रल्हादन, और सुप्रभ राजाना पुत्रों अधिक भवकर तेहुए चन्द्रोदय-और सूर्योदय हुए ॥-

'राजगृह' नगर में विप्र, 'कपिल' घरे आयाते क्षिप्र ॥ क्षण ॥
'सावित्री' उदर 'नामे' विनोद, बीजो 'रमण' करन्त प्रमोद ॥ क्षण ॥ ३५
रमण गयो भणवाने वेद, देशान्तर भणियो करी खेद ॥ क्षण ॥
घर आवे निशी हुई जाम, यक्ष मन्दिरे लीधो विश्राम ॥ क्षण ॥ ३६ ॥
घडा बंधवनी 'शाखा' नारी दत्तविप्रसू प्रेम प्रकारी ॥ क्षण ॥
यक्ष मन्दिर में करी संकेत, सा आवी मेलण नेत ॥ क्षण ॥ ३७ ॥
पूठे आयो छे तमकन्त, दत्त न आयो ताम तुरन्त ॥ क्षण ॥
रमण ऊठावी माणे भोग, नारी न वंछे धन्य ते लोग ॥ क्षण ॥ ३८ ॥
काढी खड्ग करन्त प्रहार, भेद न जाणे कांई गमार ॥ क्षण ॥
रमण[1] देखी सुपडियो नन्त, शाखाए निज हण्यो कन्त ॥ क्षण ॥ ३९ ॥
भवमें भमी 'धन' माण प्रसिद्ध, इभ्य पुत्र हुओरे समृद्ध ॥ क्षण ॥
रमण हुओ सुत तेहनो जाण, लक्ष्मी उदरे भूषण सु वखाण ॥ क्षण ॥ ४०
परणावी कन्या बत्रीश, सुखमाणेते विश्वावीश ॥ क्षण ॥
ऊपर भूमि बैठा स्वामी, रजनी केरे पश्चिम जाम ॥ क्षण ॥ ४१ ॥
'श्रीधर' ऋपिने केवल ज्ञान, ऊपजीयुं छे अधिक प्रधान ॥ क्षण ॥
केवल ओछव करवा देव, देखी धर्म तणो लहे भेव ॥ क्षण ॥ ४२ ॥
ऊपर थकी ऊतारियोनन्द, ऋपि चन्दन भरे आनन्द ॥ क्षण ॥
वाटे जातां सापे खाध, शुभ परिणामेशुभ गति लाध ॥ क्षण ॥ ४३ ॥
भला भलातो भवने लेत, भला भलातो सिवरण देत ॥ क्षण ॥
भला भलाही पावे ठाम, भला भला गावत गुणग्राम ॥ क्षण ॥ ४४
जम्बू द्वीप अपर विदेह, रत्नपुरी नगरी गुणगेह ॥ क्षण ॥
अचल नामाछे चक्रीश, पूण्ण हरिणी माय जगीश ॥ क्षण ॥ ४५ ॥
'प्रिय दर्शन' नामे वरपुत्र, जाण्युं रावण घरनो सुत्र ॥ क्षण ॥
बाल पणे रखे वैराग धारे नहीं परणेते लाग ॥ क्षण ॥ ४६ ॥
मात पितानुं राखण हेत, कुंवर जव मान्यो परणेत ॥ क्षण ॥

१ रमण को दत्त समझकर शाखा—ओ, इसके साथ भोग करने लगी। विनोद ने, रमण को न पहिचान दत्त समझ के मार डाला॥ और शाखा अपने पति विनोद को मार दिया।

कन्या मेली हजारज तीन, परणायो कुंवर प्रवीण ॥ क्षण ॥४७॥
साठ[१] सहश्र वर्ष ग्रहीगृह वास, बहुला कीधा तप उपवास ॥क्षण॥
अन्त समय आणी शुभ ध्यान, पाम्यो पंचम अमर विमान ॥क्षण॥४८
धन[२] नो जीव करीने काल, भवमांही भमियो अमराल ॥क्षण॥
पोतनपुरमें ब्राह्मणवंश, शकुनाङ्गीमुख वंश वतंस ॥ क्षण ॥ ४९ ॥
मृदुमति नामे जन्मज लीध, भूंडोजाणी काढी दीध ॥ क्षण ॥
धूर्त सीख्यो माया जाल, आपाने ऊपायो साल ॥ क्षण ॥ ५० ॥
घर आण्यो न तजे परपंच, वेश्या सरीसो मांड्यो संच ॥ क्षण ॥
पीछे संयम व्रत प्रतिपाल, पंचम कल्प गयोते चाल ॥ क्षण ॥५१॥
गज भव कीधो माया भेली, गतितिर्यंच लहीए मेली ॥ क्षण ॥
गिरि वैताढ्य महामदमन्त, हाथी हुओए बलवन्त ॥ क्षण ॥५२॥
'प्रिय दर्शन' नो जीव जिकेव, भूपति भरत हुओरे तिकेव ॥क्षण॥
भरत[३]-तनु गजेन्द्र दीठो दर्श, जातिस्मरण पाम्यो सरस ॥ क्षण॥५३॥
भाई पुत्र पणानी प्रीति, क्यूं अबमें थाए विपरीती ॥ क्षण ॥
भति दुःख पामे म्हारे त्रास. गजमद छोड्यो एम विमास ॥क्षण॥५४॥
एह सुणी भरतेश्वरभूप, संजम आदर्यू रे अनूप ॥ क्षण ॥
साथ हुआ एक सहश्र नरेन्द्र, महियल विचरे भरत मुनीन्द्र ॥क्षण५५
आतम गुण आराधन कीध. समर समेरे सुधारस पीध ॥ क्षण ॥
शत्रु जय साधी संथार, पाम्यो भव सायरनो पार ॥ क्षण ॥५६॥
हाथी नानाविध तपकार, अनशन आराधी अतिसार ॥
पाम्यो प्रत्यक्ष पंचम कल्प, सुख साता तिहां छेरे अनल्प[४] ॥क्षण ५७
कैकेयी लियो संयम शुद्ध, पाल्यो टाली कर्म अशुद्ध ॥ क्षण ॥
माताजी गई मोक्ष मझार, जेहने नामे सदा जयकार ॥ क्षण॥५८॥

---

१ चौसठ हजार (जैन रामायण) २ धन मरके पोतनपुर नगर मे शकुनाङ्गी मुखनामक ब्राह्मण की स्त्री ब्रह्मपत्नि के उदर में मृदुमति नामक पुत्र पैदा हुआ। ३ भरत को देखने से हाथी को जातिस्मरण ज्ञान हुआ। ४ अन+अल्प—अल्प नहीं अर्थात् विशेष—

एतो भाखी रूड़ी ढाल, ए गुण पचासमीय विशाल ॥ क्षण ॥
केअराज कर शिरही चोड़ी, दोई भरतनमें करजोड़ी ॥ क्षण ५९ ॥

दोहा मल्हार रागे

भरतभूप दीक्षा ग्रही, राज्य तणो रे विवेक।
वासुदेव बलदेवनो, पदवीनो अभिषेक ॥ १ ॥
कीजे चित्त मूं चिन्तवी, भूचर खेचर नरेश।
आवी पूछे रामने, रामदियो आदेश ॥ २ ॥
मण्डप रचायो मोकलो, मांड्या बहु मण्डाण।
विधि सब लीढी साचवी, माजन मिल्या सुजाण ॥३॥
प्रथम कलश लक्ष्मण भणी, ढोलेते भूपाल।
पछी कलश श्री रामने, ढोलेते सुविशाल ॥ ४ ॥
वासुदेव ए आठमो, ए अष्टम बलदेव।
राज्य करो सुविशेषथी, सुरनर सारे सेव ॥ ५ ॥
वासु देवने देवता सेवे आठ हजार।
चार हजारे सेवीये, श्री बलदेव उदार ॥ ६ ॥
सोलह हजारों देशमें, जेहनी वरते आण।
राजा सोलह हजारही, आणकरे सुप्रमाण ॥ ७ ॥
हयवर गयवर रथवरू, लाखज बंयालीश।
पाला प्रौढ प्रतापस्त्र, क्रोडज अड़तालीश ॥ ८ ॥
खेचर खरी खिजमत करे, भूचर आण अखण्ड।
माने-सुर सेवा करू, पाले राज्य प्रचण्ड ॥ ९ ॥

ढाल पचासमी—
तर्ज हिंडोलणानी—

है उस रघुपति के धर्म सूं राजे, सघला सुखिया लोक। टेर।
अधिक नेहा अधिक मेहा, अधिक निपजण होई।
अधिक सुरभी दूध आपे, अधिक फल तरु ओई ॥
अधिक लाभ लहन्त वणजे, अधिक चाकर प्रान।

अधिक पुत्र कलत्र कमला, अधिक पूरे आश ॥ है उस ॥१॥
अधिक दान सुशील अधिका, अधिक तपही प्रकार ।
अधिक भावन पुज्य पावन, अधिक करणी सार ॥
अधिक पोपह ने सामायिक, अधिकहीं आचार ।
अधिक अधिकूं सर्वतो, अधिकाई नो अधिकार ॥ हैं ॥ २ ॥
नहीं हिंसा नहीं झूठज, नहीं कोई चौर ।
नहीं लम्पट नहीं लोभी, नहीं भूडा भौर ॥
नहीं क्रोधी नहींमानी, नहीं द्रेप लिगार ।
नहीं वाद विवाद विकथा, नहीं को कलिकार ॥ हैं ॥ ३ ॥
नहीं आल कराल काल, पिशुनको जंजाल ।
नहीं को परपंच रंचही, कोन केहनो साल ॥
नहीं झार जूगार धूरत, नहीं दुखियो कोई ।
जेहनी उपमान जगमें, आपहीं प्रभुहो सोई ॥ हैं ॥ ४ ॥
राम आपे विभीपणने, राक्षसनो द्वोप ।
कपिपतिने द्वीप कपीनो, अछेजेही सदीप ॥
हनुमन्तने प्रवर श्रीपुर, श्री पति आपन्त ।
कुलक्रमेंजे चाली आया, ते तिहां थापन्त ॥ हैं ॥ ५ ॥
लंकतो पायालां प्रगटो, लहै वीर विराध ।
'नीलने दे ऋक्षपुर, प्रतिसूर्य हनुपुर लाध ॥
रत्नजटी देवोपगीत, चन्द्रगति सुत देखी ।
'रथनू पुर नगर रूपाचले, ए लहेज विशेषो ॥ हैं ॥ ६ ॥
यथायोग्य जेही जाण्या, तिसो तेहने देश ।
देईने सन्तो पीया, श्री राम सकल नरेश ॥
गांव वाले गांव पायो, खेत वाले खेत ।
विमुखतो नर को नरहीयो, पद्म पृथिवी देत ॥ हैं ॥ ७ ॥
'शत्रुघ्न सूं रामभाखे, देश जेही सुहाय ।
सोई मांगों ताम मथुरा, आपही तस दाय ॥

राम भाखे वत्स ! मथुरा, पूरी अधिक दुसाधी[1] ।
जाणी बूजी आपणे गले, कौन बांधे व्याधी ॥ हूँ ॥ ८ ॥
'मधु नृपने चमरे[2] आप्यो अछे पहेलां शूल[3] ।
अरिहणी तस हाथ आवे, प्रगट छे प्रतिकूल ॥
शत्रुघ्न कहे तुम्हे हणियो, राक्षस नाथ निशंक ।
हूंही थारो भाई हूंतो कौणे यह मधु रंक ॥ हूँ ॥ ९ ॥
दियो मथुरा ए तमासो, देखसूं हूं जाय ।
राम आपी ताम मथुरा, एह शीक सुणाय ॥
शूलवर्जे होई गाफल, छले करजो काम ।
बल अरु जोर नहीं को चलसे, सीखदे श्रीराम ॥ हूँ १० ॥
रामे भाथा अक्षह सायक, आपीया तसु दोई ।
सारथी जमवदन[4] नामा, साथे दीधो सोई ॥
धनुष्यदियो अर्णवावर्त, अग्निमुख शर सार ।
लक्ष्मणे आप्यांथी हर्षे, भाई नो जयकार ॥ हूँ ॥ ११ ॥
शत्रुघ्नतब चालीयोरे, करत शीघ्र प्रयाण ।
साथे दलबल सामटोरे, वाजही निशाण ॥
नदी तटे विश्राम लीधो, खबर दीधी गय ।
वनकुबेरे[5] नारी सहित, मधुकेली कराय ॥ हूँ ॥ १२ ॥
असना आगार मांहे, शूलनूं रे निवेस ।
शत्रुघ्न छल देई राते, करे पूरीय प्रवेश ॥
वात सांभली मधु दौड़ीयो, आवही पुरमांहे ।
शत्रुघ्न ना सुभट बलिया, रोकियो ते प्राहे ॥ हूँ ॥ १३ ॥
मधुनन्दन लवण कुँवरे, मांडियो संग्राम ।
लड़त अधिको युद्धने मुख, मारी लीधो नाम ॥
रामना पुत्र आदिमां जेम, नारीगणे[6] रुर मारी ॥

१ दुसाध्य, २ = चमरेन्द्र = ३ = त्रिशूल =
४ जम = कृतान्त = वदन = ५ = कुबेर नामक वन = ६ लक्ष्मण =

जीतना घुरही बजाय, तेम एहने संहारी ॥ हूँ ॥ १४ ॥
पुत्रनो वध सुणीने मधु, कोपियोरे कराल ।
शत्रुघ्न सूं आवी अडियो, लड़े ताम भूपाल ॥
अस्त्र शस्त्रे चोट करवे, अधिक शूरातेह ।
देव असुरों जेममाचे, तेम माची एह ॥ हूँ ॥ १५ ॥
धनुष्य तो तव अर्णवा वर्त, अग्निमुख तेबाण ।
सुमरियां सानिध्यकारी४, हरण अरिका प्राण ॥
मरियो मधु जेम लुब्धक५, मारही मृगराज६ ।
घाव साल्यां मधु चिन्ते, हुओ एह अकाज ॥ हूँ ॥ १६ ॥
शूल नायो ना हणायो, सुप्रभा ७ नो नन्द ।
जन्म हार्यो कोन सार्यो, काजहूं मतिमन्द ॥
सेविया नहीं देव जिनवर, न किया तप प्रकाश ।
पात्र जाणी दान नदियो, आणी चित्त उल्हास ॥ हूँ ॥ १७ ॥
एह भावना भावतांरे, राखी शुद्ध परिणाम ।
लही दीक्षा प्राण छोड्या, हुओ सुर अभिराम ॥
स्वर्ग त्रीजे देव देवी, सारही तम सेव ।
देह ऊपर कुसुम वरस्यां, जयो जयो मधु देव ॥ हूँ ॥ १८ ॥
देव रूपेशूले जयकरी, चमरसू एवात ।
शत्रुघ्ने छल बले कीधो, मधु नृपनो घात ॥
मित्रमार्यो सुणी खींज्यो, तातश्री चमरेन्द्र ।
शत्रुघ्न ने आजमारूं, एम कहे एसुरेन्द्र ॥ हूँ ॥ १९ ॥
चलियो तव वेणुदारी, देव पूछे तास ।
किहां चाल्या मित्रहन्ता, तणो करवा नाश ॥
वेणुदारी फिरी भाखे, तेहनों अधिकार ।
अर्द्ध चक्री पुण्यपूरो, अधिक वर्ते वार ॥ हूँ ॥ २० ॥
धरणेन्द्र पासे लही रावण, शक्ति जीती जेण ।

४ सहायकारी =५ पारधी =६ सिंह =७भरत–

तीन लोक तणां कोंठो, हण्यो रावण तेण ॥
कौण मधु तस पति सरिसो, प्रभु तणो बल पामी।
शत्रुघ्ने मधु (ने) मारीयो छे, शान्ती हुओ स्वामी ॥ हुँ ॥ २१ ॥
चमर भाखे शक्ति जीति, विशल्या सुपसाई।
नारायण तो ना वखाणो, एहमें बल कांई ॥
तास अब्रह्म चारिणी नूं, सर्वयोग प्रभाव।
तेहथी जई शत्रुघ्ननो, करूं ओछो आव ॥ हुँ ॥ २२ ॥
एम कहीने चमर मथुरा, आवीयो ततकाल।
लोक सुखिया देश नीको, देखीयो सुविशाल ॥
प्रथम तोए प्रजा पीडुं, पछी पीडूं ईश।
एम चिन्ती रोग पीड़ा, करे विश्वावीश ॥ हुँ ॥ २३ ॥
रोगना उपचार कीधा, ताम विविध प्रकार।
सन्नीपाती ने जेम मिश्री, तेम ए उपचार ॥
ताम नृप कुल देवी समरी, सा कहे सुविचार।
मधु मार्या चमर कोप्यो, तेहना ए सुविकार ॥ हुँ ॥ २४ ॥
लोक दुखिया देखी राजा, करे अरती अपार।
छींकनो मूर्छायो माणस, जोवेशी दिन कार ॥
शत्रुघ्न तब चालो आयो, राम-लक्ष्मण पास।
चमर कोप्यो केम कीजे करे ए अरदास ॥ हुँ ॥ २५ ॥
देश भूषण कुलभूषण, आविया मुनि दोई।
राम-लक्ष्मण-शत्रुघ्न सुं, वन्देदी सहु कोई ॥
शत्रुघ्न ने जो ग्रही मथुरा, कहो प्रभु कोण हेत।
देश भूषण राम सुं कहे, पूर्व भव संकेत ॥ हुँ ॥ २६ ॥
शत्रुघ्न नो जीव मथुरा, उपन्यो बहु वार।
नामे श्रीधर विप्र हुवो, कामनो अवतार।
राज पत्नि लीयो तेह्रो करवा भोग विलास ॥
जाणकुआं चोर मार्यो, पामीयो ने त्रास ॥ हुँ ॥ २७ ॥
कुक्षम नृपने वध्य भूमिये, आणीयोने क्षिप्र।

एक दिवसे नट नाचे, देख हीं सो भूप ।
राये पुरुप पिछानियो, सोई अंक अनूप ॥
पासे तेड़ी करी दिलासा, जन्म भूमि दीध ।
अचले अंक सुमित्र थाप्यो, बिन्दु सिन्धु कीध ॥ हैं ॥ ३५ ॥
समुद्राचार्य नी पासे, लेई संयम भार ।
स्वर्ग पांचमें होई आया, मनुष्य लोक मझार ॥
शत्रुघ्न ए अचल हुओ, हेत मथुरा लार ।
अंक जीव कृतान्त आनन, सारथी तुम्ह सार ॥ हैं ॥ ३६ ॥
श्री प्रभापुर नगर नीको, श्री 'नन्दन' राय ।
धारणी उदर ऊपना सुत, सातही सुखदाय ॥
सुरनन्द श्रीनन्द श्री तिलक नामे जयन्त ।
सर्व सुन्दर चमर अने, जयमित्रजी गुणवन्त ॥ हैं ॥ ३७ ॥
श्री नन्दन रायसाथे, पुत्रसूं वैराग ।
मास१ जातक पाट थाये, साधवा शिव माग ॥
प्रीतिकर गुरु पासे संयम, आदर्यो ततखेव ।
लही केवल मोक्ष पहूतो, रायजी ऋषिदेव ॥ हैं ॥ ३८ ॥
भाई साते शुद्ध संजम, पालता विहरन्त ।
लब्धी जंघा चारणीरं, तपबले उपजन्त ॥
पुरी मथुरा आवी रहीया, तामते चौमास ।
छठ अट्ठम दश द्वादश, करे तप उपवास ॥ हैं ॥ ३९ ॥
पारणो जई अवर नगरे, करी आवे साध ।
तास तप आचार करणी, तणो अतिशय लाध ॥
चमरे कीधा रोग मिटिया, हुओ नगर निरोग ।
अधिक ओछव रंग घर घर, नहीं सुपने शोग ॥ ४० ॥
नीतिलपुर-परिसद ने मेल, धूरुने नरा केश ।
एहतो औषधी प्राहे, साधु ना सुविशेष ॥

१ एक मास वाले पुत्र को राज्या भिषेक कर अपर पुत्रों सहित दीक्षित बना । = २ पेराव (शु१) = २ घर सब =

वायरो तनु फरसी आवे, जले पग धोवाय।
वाय पाणी फरसियोंथी, रोग सघला जाय ॥ हैं ॥ ४१ ॥
अयोध्या ए आवीयाते, पारणाने काम।
अर्हदत्त सेठ गृह आंगणे, आवी ऊभा स्वाम ॥
भाव विन वंदना कीधी सेठे, संजम वन्त।
साधु स्यां चौमासा मांहे, विहरन्ता विचरन्त ॥ हैं ॥ ४२ ॥
शेठ जाणे पूछियेरे, किस्यो तुम आचार।
भेख दीसे साधुनोरे, फिरो छांड्या कार ॥
एम चिन्तवतोही रहियो, दियो वहुए आहार।
लेई ऊपासरे आया, जिहाँ छे अणगार ॥ हैं ॥ ४३ ॥
आचार्य श्रीनमी द्युतिवर, कियो उठी प्रणाम।
अवर साधु नकरे वन्दन, जाणी शंका ठाम ॥
अशन कीधां पछि पूछयो, आचार्य ऋषि राज।
पूज्य किहांथी पधारीया, किहां जासो आज! ॥ हैं ॥ ४४ ॥
पुरी मथुरा थकी आया, जायसूं पण तत्र।
एमकही ऋषि पांगूर्या, आविया था यत्र ॥
रूडा ऋषि संयमी शुद्धा, क्रयाने पालन्त।
गगने आवे गगने जावे, दोष सहु टालन्त ॥ हैं ॥ ४५ ॥
शिष्य पूछे सुगुरु पासे, कोणए निर्ग्रन्थ!।
सुगुरु भाखे साधु साचा, साधेही शिवपन्थ।
लब्धि वन्त महन्त मुनिवर, मांहे को नवि दोष ॥
एह सुणतां शिष्य मनमें, करे अति अफसोस ॥ हैं ॥ ४६ ॥
एह सांभली सोई श्रावक, करे पश्चात्ताप।
मास कार्तिक सुदि-सातम, चाली आया आप ॥
करी वन्दना वीनवे तुम, गुणां भरीत आगाध।
पाय लागीने खमाऊं, खमो मुझ अपराध ॥ हैं ॥ ४७ ॥
सप्त ऋषि सुप्रसादथीरे, शान्ति सघले देश।

सुणी कार्तिक पूणिमें, आवियोरे नरेश ॥
पाय नमी कहे साधुजीने, आहार लेवो मुझगेह ।
राज्य पिण्ड न ऋषि नेकल्पे, कहे मुनिवर तेह ॥ हैं ॥ ४८ ॥
शत्रुघ्न तवफिरी भाखे, धन्य २ ताहरो धर्म ।
देव कृत यह रोग मिटियो, कर्या विन उपकर्म ॥
कोई दिन तुम्ह इहां ठहरो, अवर ठाम विहार ।
मतिकरो अवतार ताहरो, करन जग उद्धार ॥ हैं ॥ ४९ ॥
सप्तऋषि कहे राय १नकरे, साधु ममता भाव
चालस्यूं नविरह्या खिणहीं, चरण गुणग्यूं चाव ॥
देव अरिहन्त नेजधारो, साधु सेवा साधी ।
शील समकित शुद्ध पालो, जेम न उपजे व्याधी ॥ हैं ॥ ५० ॥
ढाल ए पचासमींरे, साधुनो उपकार ।
अछे महोटा नहीं छोटा, गगन ने विस्तार ॥
'केशराज कहे साधु गुणज्यूं, गरुड़ आयां साप ।
नाशही तिम साधु अयां, पापने सन्ताप ॥ हैं ॥ ५१ ॥

दोहा—(सारंग रागे)

गिरि वैताट्य विशेषथी, दक्षिण श्रेणी देख ।
'रत्नरथ राजाभलो, रत्नपुरं सुविशेष ॥ १ ॥
चन्द्रमुखी उदर ऊपनी, मनोरमा सुकुमारी ।
एके ने परणावस्यूं, राय पड्यो सुविचारी ॥ २ ॥
'नारद लक्ष्मण स्तवो, सब गुण लक्षण वन्त ।
भाग्यवती ए भामिनी, जो थाए जो कन्त ॥ ३ ॥
'रत्नरथ राजानणा, कोप्या नाम कुँवार ।
गोत्रज वैर निवारके अमर्ष चढ़े अपार ॥ ४ ॥
कह्युं मतो ए क्रोटने, नारद नाठो जाय ।
पुरी अयोध्या आवीयो, लक्ष्मण लाग्यो पाय ॥ ५ ॥
मनोरमानूं रूप पट, लियो लिखी देखाय ।

लक्ष्मण थयो अनुरागियो रूपे राच्यो राय ॥ ६ ॥
लक्ष्मण तबही चालियो, साथे हुआ श्री राम ।
राक्षस-खेचर सैन्यसूं, आई गया अभिराम ॥ ७ ॥
रत्नरथ निज पुत्रसूं, आवीकरी संग्राम ।
लक्ष्मण ते जीती लिया, वाज्या सुयश दुदाम ॥ ८ ॥
'मनोरमा लक्ष्मण भणो, पुत्री देई प्रधान ।
'श्री दामा श्री रामने, रींजया राजान ॥ ९ ॥
साधी दक्षिण श्रेणीसहु, साध्या खग भूपाल ।
पुरी अयोध्या आवीया, राज्य करे सुविशाल ॥ १० ॥
लक्ष्मण ने अन्ते ऊरी, सोहे सोलह हजार ।
आठ अछे पट रागणी, इन्द्रणी अवतार ॥ ११ ॥
विशल्या आदिकरी, रूपवती वनमाल ।
'कल्याणमाला हतुर्थी, रत्नमाला सुखमाल ॥ १२ ॥
'जीतपद्मा प्रगटीमहा, अभयवती अवधार ।
'मनोरमा मनमोहनी, ए आठे पटनार ॥ १३ ॥
अढीसो नन्दन हुआ, शूर महा शृंझार ।
जाया अग्र महेपियां, ए आठे सुत सार ॥ १४ ॥
विशल्या नो श्रीधरु, रूपवती नो एह ।
'पृथ्वी तिलक सुहामणो, गुणमणि केरो गेह ॥ १५ ॥
वनमाला नो अर्जुन, उपमा अधिकी जास ।
जीतपद्मा नो जाणीये, श्री केशी सो उल्हास ॥ १६ ॥
'कल्याणमाला नोकह्यो, मंगल नाम अमन्द ।
'सुपार्श्व कीर्ती कल्पतरु, मनोरमा नो नन्द ॥ १७ ॥
रत्नमाला नों विमलजी, विमलसो नाम परिमाण ।
'अभयवती नो एसही, सत्यकीर्ति सुनाम ॥ १८ ॥
चार कही श्री राम ने, सीता सती सरेख ।
'प्रभावती ने रतिनिभा, श्रीदामा सुविशेष ॥ १९ ॥

गर्भधरं सीता सती, भलो सुपन अविलोय।
आवेचवी विमानथी शरभ सजोडे दोय ॥ २० ॥
करेप्रवेश निज आनने, वीनवीयो भरतार।
पुत्र युगल तुम्ह प्रसवसो, नहीं सन्देह लगार ॥ २१ ॥
शरभ विमान थकीचव्या, सुत मुझ असुखदाय।
होसे ए जाणोसही, कहे अयोध्या राय ॥ २२ ॥
सीताकहे स्वामीसुणो, एशी आरती ईश।
काम सकलही पाधरो करसे थी जगदीश ॥ २३ ॥
प्रीतघणी पहेलीअछे, प्रभुनी सीता साथ।
अब ओधान धर्यापछी, अति मन्मानी नाथ ॥ २४ ॥
शौक्य बलेमनमें घणूं. अमर्ष महोन जाय।
पणचलको चालेनहीं, ताम करे उपाय ॥ २५ ॥

ढाल एकावनमीं—
तर्ज हे रुक्मणी त तोसाची श्राविका--

शूलीथी अति आकरी, शूली शौक्य जोय। हो रघु पति।
शौक्य सरीसी शूलीका, अवरनदीसे कोय। हो रघुपति ॥ १ ॥
शौक कहोक्यू-नाकरे॥टेर॥ मुई दुःखदाईहो॥रघु॥ पूठन छण्डे पापणी
फिट फिट एह सगाई हो रघुपति ॥ शोक ॥ २ ॥
शस्त्र थकी तीखो खरो तास तीखो प्रताप हो रघु० ।
शस्त्र छिप्यो रहे म्यान में, लिपां उठे आपहो र० ॥ शो०॥३॥
सापणी ही थी सापणी. सापणी शोक कहायहो र० ।
सापणी मन्त्रे खीलीये शोक न क्यूं ही खिलाय हो र. शो० ॥४॥
आग थकी ऊनी खरी. ऊनी शोक ज होय हो ॥ र. ॥
कोऊर बन्हे जिम बीनरी, तेम ए बल्ती जाय हो ॥ र' ॥शो० ॥५॥
तबलग दूधज सावतो, जबलग कांजी दूरहो ॥ र. ॥
फाटे कांजी मेलव्ये. ए दृष्टान्त हजूर हो ॥ र. शो० ॥ ६ ॥
अम्बरे ऊभाईया घणा, देगाम था भेद हो ॥ र. ॥
प्रबल वायने राजवे. फाटी नया मन भेद हो ॥ र. शो० ।७॥

आटो आछो तो घणो, कोलहे तूटे बाकहो ॥ र. ॥
माणस फेरविया फिरे, जेम फिरन्तो चाक हो ॥ र. ॥शो०॥८॥
बाहिर२ मिलणे मिलीरही, मांहे कटका तीन हो ॥ र. ॥
काकड़ीया में तेवसी, लेगो देखी प्रवीन हो ॥ र. ॥शो० ॥९॥
पारो३ बानी सूं मिल्यो, हींगलूं कहिवाय हो ॥ र. ॥
सोहगीना संयोगथी, छटकी अलगी जाय हो ॥ र. ॥शो॥१०॥
ंबा जांबू आंबली, चोथो जूओ बोरहो ॥ र. ॥
पर कोमलता घणी, मांही अधिक कठोर हो ॥ र. शो० ॥११॥
त्यवती साची सती, वसुधा मांही विख्यात हो ॥ र. ॥
क्यां सा हलूई करो, अवरां केई वातहो ॥ र. ॥ शो० ॥१२॥
क्यां कहे सीता तणी, म्हारे तूं सिरदार हो ॥ र. ॥
भे अमृत केलवे, काती हृदय मझार हो ॥ र. ॥ शो० ॥१३॥
क दिवस रसरंग में, पूछे चित्तमें चावहो ॥ र. ॥
वण-रूप सोहामणूं, हमने लिखी देखाव हो ॥ र. शो० ॥१४॥
ता कहे सूं जाणीये, केहवो थो तस रूपहो ॥ र. ॥
तो कदहिन देखीयो, देखिया पांव अनूपहो ॥ र. शो० ॥१५॥
भाखे सुन सुन्दरी, सोई लिखो थे पांव हो ॥ र. ॥
ती धूर्त पणो करे, सीता सरल स्वभाव हो ॥ र. ॥शो० ॥१६॥
ता खिलि देखाड़िया, रावण पाय उदारहो ॥ र. ॥
क्यां ढांकी राखिया, पांव तणा आकार हो ॥ शु० ॥१७॥
ष्ठी विसर्जी वेवसूं, निज निज स्थानक जातहो ॥ र. ॥
ीता ओछी पाड़वा, केवो घाले घाठ हो ॥ र. ॥ शो० ॥१८॥
ग-आकार देखाविया, जब आया श्री राम हो ॥ र. ॥
छ्यां ए उत्तर दियो, व्हाली त्रियाना कामहो ॥र.॥शो० ॥१९॥
तो पावज पूजिये, जो तस साथे नेह हो । र. ॥
ात न मानी रामजी, शोक्य पलेखा एह हो॥ र. ॥शो० ॥२०॥
ाप आपणी दासीने, तेड़ीने ते नार हो ॥ र. ॥

गली गली बाजार में, सारी पूरी मझार हो ॥ र. शो० ॥ २१ ॥
सीता चित्त रावण वसे, सघले पाडे साद हो ॥ र. ॥
साल सरिसो सालसे, लोक मुखे अपवाद हो ॥र. ॥शो० ॥२२॥
मास वसन्त विराजियो, प्रभु तिय साथ कहन्त हो ॥ र. ॥
गर्भ ही खेद निवारवे, आयो एह वसन्त हो ॥र.॥शो० ॥२३॥
'महेन्द्रोदय' नामथी, आछोछे उद्यान हो ॥ र. ॥
विविध प्रकार विनोद नो, मांहे म्होटो थान हो ॥र.॥ शो०॥२४॥
क्रीडा करवा कारणे, चाल्यो जावा आज हो ॥ र. ॥
सीता कहे मुझ दोहलो, ऊपन्यो श्री महाराज हो ॥र.॥ शो० ।२५।
तवही राम मंगावीया, वाग तणा वर फूलहो ॥ र. ॥
सीता दोहल पूरवा, रचिया मण्डप अमूल हो ॥र.॥ शो० ॥२६॥
पछे पत्नी सूं प्रभु, वनमें आया चाल हो ॥ र. ॥
विविध वसन्त विनोदमें, रचि रह्या छे ख्याल हो ॥र.।शो० ॥२७॥
एटले सीता जीतणुं, फरक्यूं दक्षिण नयन हो ॥ र. ॥
शंकी मन मांही घणी, लहिये कोई कुनयन हो ॥ र. शो०॥२८॥
सीता प्रभुजी सूं कह्यो, करे विचार नरेश हो ॥ र. ॥
एतो एहवूं देखीये, उपजे कोई क्लेश हो ॥ र. ॥ शो० ॥२९॥
राक्षस ने हाथे चढी, दीठो राक्षस देश हो ॥ र. ॥
दैव नतो राजी थयो, सन्तापनां विशेष हो ॥र.॥शो० ॥ ३० ॥
दिल गयो वर्ष वरोवरे, आस्ती मांहे उदास हो ॥-र. ॥
पार न पामे केवली, नणेनतां दुःख नाम हो ॥र.॥शो० ॥३१॥
प्रभुजी दे आमासना, एम कहन्त महन्त हो ॥ र० ॥

१ साडामें अति ठकोठो = इन [illegible] में [illegible] [illegible] अथवा [illegible] की उपमा दीगी है । [illegible] "[illegible] ने" [illegible] ठिकाने "[illegible] में" ऐसा होना चाहीये । [illegible] होताहै । २ [illegible] पाप [illegible] । [illegible] पाप [illegible] है । [illegible] की उपमा दीगीहै । ([illegible] पाठान्तर)

सुख दुःख आपद सम्पदा, लागीलार रहन्त हो ॥र०॥शो० ॥३२॥
राम कहे घर जाई ने, कर कोई उपकर्म हो ॥ र० ॥
दान शीयल तप भावना, साचवे श्रीजिन धर्महो ॥र०॥शो० ॥३३॥
जिन धर्म नी सेवा करे, भाव विशुद्ध त्रिकाल हो ॥ र० ॥
आंबिल एकज धान्यनो, करत मिटे जंजालहो ॥र०॥शो० ॥३४॥
सीता आवी मन्दिरे, रहती सम्वर मांहि हो ॥ र० ॥
दानादिक विधि साचवे, आदरसूं उच्छाहिहो ॥ र० ॥ शो० ३५।
यलकर्या जगमें जिके, कोयन राखी खन्तहो ॥ र० ॥
एजिन वचने जाणजो, भावीहोवे ते अन्त हो ॥र०॥ शो० ॥३६॥
विजयसूर सुरदेवजी, पिंगल ने मधुमानहो ॥ र० ॥
कालक्षेप काश्यप कह्यो, शूल सुधर अभिधानहो ॥र०॥शो० ३७॥
ए साते अधिकारीया, म्होटा मेरु समान हो ॥ र० ॥
खबर दार करी थापीया, पुरुप महा परधानहो ॥ र० ॥ शो०३८॥
राघव आगे आवीया, ऊभाकरिय प्रणामहो ॥ र० ॥
थर हर लागा धूजवा, न सहाय प्रभु घामहो ॥ र० ॥ शोक॥ ३९

क्षेपक राधेश्याम रामायणमें से--

राज सभा का दूतथा, विजय नामी एक ।
लाताथा वह सभामें, पुर-सम्वाद अनेक ॥
एक रोज ऐसी खबर, लायाथा बुद्धिवान ।
जिसने उसके लिएभी, कर डाला हैरान ॥
सोचेथा खड़ा खड़ा विजय, कैसे यह खबर सुनाऊँमैं ?
कुछनहीं समझमें आताहै, क्योंकर यह वज्र गिराऊँ मैं?
मुंह जभी खोलता हूं अपना, तो हृदय मना कर देता है ।
रखता हूं मुखको बन्द अगर, कर्तव्य खबर तब लेता हैं ॥
अच्छा नौकरी प्रणाम तुझे, आगे यह काम न करना हैं ।
अबतो नौकर जिस बात का हूं, वह बात सभामें धरना हैं ॥
छाती तू पत्थर की होजा, तब बोलूं मैं उन बोलोंको ।

वाणि तूं घोर घटा बनजा, तब बरसाऊं उन ओलों को ॥
माता तुम्ह मुझे क्षमा करना, अपना मत नहीं सुनाता हूं।
तुम जैसे सतपर कायम हो, वैसेही फर्ज चुकाता हूं ॥
इस तरह हृदय को दृढ़ करके, दर्बार में अनुचर बोल उठा।
राजेश्वर ! बस इतना ही कहा, फिर कांपा फिर कुछ डोल उठा ॥
फिर कहा आज यह खबरें हैं, इस वक्त क्षमा कीजिये मुझे।
एकान्त समय में अर्ज करूं, ऐसी आज्ञा दीजिये मुझे।

बस इतनाही कहसका, विजयक्षर का मुख बैन।
आगे फिर वाणिरूकी, भरे नीरसे नैन ॥
दशा देखकर दूतकी, बोल उठे श्री राम।
कह डालो क्या बात है, रुकने का क्या काम ॥

तुमतो हो सभा–दूत भाई, नितकी खबरें लाने वाले।
एकान्त समयके फिकरे हैं, सबको भ्रम पहुंचाने वाले ॥
यह सत्य है कोई बात आज, ज्वाला होकरके भड़की है।
कारण इस समय अचानकही, मेरी भी छाती धड़की है ॥
वामांग फड़कते हैं मेरे, व्याकुलता बढ़ती जाती है।
होता है विदित मेरे तनसे, आत्मा सी खिंचती जाती है ॥
फिरभी मैं आज्ञा देता हूं, जो कुछहो प्रगट जरूर करो।
एकान्त समय में राम सुनें, इस भेद-भावको दूर करो ॥

ढाल मूलगी—

राम कहे भो भाइयो !, कां तुम्ह आरति वन्त हो ॥ र. ॥
कां कम्पो तरुपातज्यूं, भाखे विजय मदन्नहो ॥र.॥ दो० ॥५०॥
प्रभुजीसुं इक वीनती, पण मोते न कहिवाय हो ॥ र. ॥
सांभलतां अप्रुहा मणी, छे प्रभु ने दुःखदाय हो ॥र.॥ दो० ॥५१॥
अण कहियां लागे सही, स्वामी द्रोह नूं पाप हो ॥ र. ॥
दुनदीनें पड़ियो अछूं, ग्रही छछुन्दरी साप हो ॥ र. ॥ दो०॥५२
राम कहे अभय मानजो, जीव तणूं नो दान हो ॥ र. ॥
तुमने मैं दीधूं सही, भाखे लही प्रभु मानहो ॥र.॥ दो० ॥ ५३ ॥

क्षेपक राधेश्याम—

रोते रोते दूत तब, लगा सुनाने हाल ।
क्षीर-सिन्धुमें शेष नें, दिया जहर को डाल ॥
बोला-पुरवासियोंमें, उठा प्रश्न महान ।
जिसका श्री महाराज से, हैं सम्बन्ध प्रधान ॥

ढाल मूलगी—

देव ! सुणों देवी तणा, अति अपवाद प्रसिद्ध हो ॥ र. ॥
जण जण ने मुख आकरो, कान न जाये दीध हो ॥र.॥ शो ४४॥
सु सवादो फल देखीने, कहो कौण न खाय हो ! ॥ र. ॥
फूल सुगन्धों पेखके, सूंघ्यां विन न रहाय हो ॥शो०॥ ॥ ४५ ॥
लेखण ने लिखि देखिये, घटिका जेम घसाय हो ॥ र० ॥
न रहै त्रिया विण भोगव्यां, नरए निरतो न्यायहो ॥र०। शो० ।४६
मांसाहारी मानवी, न त्यजे पायो मांस हो ॥ र० ॥
लम्पट नारी पामिके, नत्यजे सोवत तास हो । र०॥शो ॥ ४७ ॥
भूखो भोजन पाय के, न रहे तेह लिगारहो ॥ र० ॥
नरहे तेम त्रिय पामके, नरजे त्रिपय विकारहो ॥र०॥शो ॥ ४८ ॥
अम्बर थी तूटे घणा, पंखी पंखणी पेखिहो ॥ र० ॥
क्यों बचे ओ पंखियो, आगे ऊभी देखि हो ॥र०॥ शो ॥ ४९ ॥
सांभली जे छे एहवी, लोकां केरी वाचहो ॥ र० ॥
शाण पणे सुविचारतां, देखाये पण साच हो ॥ र. ॥ शो० ॥५०॥
लेई गयो पण एकली, एकाकी ही आयहो ॥ र. ॥
काल घणो घर तेहनें, रही पण देखाय हो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५१ ॥
रावण तो विण भोगव्यां, रहियो होसे केम हो ॥ र. ॥
जाण्यो करस्युं आपणो, छोतो सूधुं एमहो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५२ ॥
छोती न लागे छे सही, म्होटा भांडा जेम हो ॥ र. ॥
जगमें जश अपयश पणूं, न विचारे छे प्रेम हो ॥र.॥शो० ॥५३॥

क्षेपक राधेश्याम—

रावण के कारण माताजी, थोड़े दिन रहीजो लङ्कामें ।

वस इसी वातको दोप समझ, कुछ लोग पड़े हैं शङ्कामें ॥
कहते हैं–धर्म नीति रक्षक जब, रघुकुल मणिकी गद्दी है।
तो पर–घर रह आनेवाली, नारी क्यों घरमें रक्खी है ? ॥
रैय्यत के पहिले वाजिब है, अपने पर राज करे राजा।
निर्दोप रहै जिसनें शासन, वैसाही काम करे राजा ॥
शङ्कित दलना का यह आन्दोलन, दिन पर दिन बढ़ता जाता है।
राजा का इसमें चुप रहना, दलका वल और बढ़ाता हैं ॥

ढाल मूलगी—

अपजश एतो ए बड़ो, जाम अमे न समाय हो ॥ र. ॥
प्रभु ने आवी जणावीयो, कीजे ज्यूंही सुहाय हो ॥र.॥ शो०॥५४॥
नाहना मुखथी महोटिका, बोले छे ए बोल हो ॥ र. ॥
सो वातों की एक है, जगमें जशही अमोल हो ॥र.॥ शो० ॥५५॥
आदि नाथ आदि करी, आज लगे ए वंश हो ॥ र. ॥
कोई न लागी कालिमा, पृथ्वी माहे प्रशंस हो ॥र.॥ शो० ॥५६॥
कीर्ति तो आजन्मनी, मतिहारो रघुनाथहो ॥ र० ॥
सीताहुई नाहुई, बहुलो छे तिय साथहो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५७ ॥
वज्राहत होई रह्या, एतो वात सुणन्त हो ॥ र. ॥
सीता साथे कालजो, काढे वो एकन्त हो ॥ र. ॥ शो० ॥ ५८ ॥
धीरज आदरी बालीया, महत्तरा१ ध्रे ताम हो ॥ र. ॥
भली जणावी वातए, करसुं जशनो काम हो ॥र.॥ शो० ॥ ५९ ॥
नहीं दिऊं जश जायवा, त्रियातो कोण मालहो ॥ र. ॥
विसर्ज्यां ने वेगथी, दुःख है ये न समान हो ॥र.॥ शो० ॥ ६० ॥
एकावनमीं ढालमें, सकल मिल्या शुभ साज हो ॥ र. ॥
केशराज सीता तणो, शोकवे कीधां काजहो ॥ र. ॥ शो० ॥ ६१ ॥

दोहा पन्ना श्री रागे—

सांझे पधार्या रामजी, सुणवा काजे नाद।
जिहां जावे तिहां सांभले, जण जण मुख अपवाद ॥१॥
रावणजी लेई गयो, जिहां रह्या चिरकाल।

जाणी सती आणी सही, राम अपूठी चाल ॥ २ ॥
वानी देखी वस्तुनी, सौजन करे आहार।
नारी रूप विलोकवे, ए जगनो व्यवहार ॥ ३ ॥
लेई गयो झख मारवा, झख मारणो गमार।
तिहांते झख मारी हसे. इहां किस्यो विचार ॥ ४ ॥

क्षेपक ढाल तर्ज समझ नर पाणी पतासा–धूलचंदजी सुराणा कृत–

समझ नर भावी बल भारी, चेत नर। इस पर जोर चले नहीं किसका सुनजो नर नारी ॥ टेर ॥ फिरता २ धोबीपाड़े, रघुवरजी आवे, २, जिन २ मुख की वातां सुनतां दिलड़ो दुःख पावे। धोवी द्वारे धोवण ऊभी आडो खड़कावे, खोल किवाडी पियुडा म्हारा जिवडा घबरावे। रजक रीस में आकर कहता वात सुणों म्हारी. ॥ इस पर० ॥ १ ॥ रात अंधेरी अर्ध निशी में बाहिर क्यों भटके ॥ २ ॥ कुमति–कुलछणनार–कलेशण मुझ उर में अटके ॥ जा जा जा तूं धोवी बोले घरमें नहीं राखूं ॥ २ ॥ राम सरीखो मैं नहीं रण्डी घात सची भाखूं। विगरी सीता पाछी लायो सुनी वात खारी। रामजी सुनी बात खारी। इस पर० ॥ २ ॥

(दोहा)

एम सुणीघर आवीया. राम न लाई वार।
चरचे चौखा चौकसी, भेज्या नगरी मझार ॥ ५ ॥
ओही कथानो केहवो ओही जन समुदाय।
आवी सुणावे रामने. तुरत फिरियो नहीं वाय ॥ ६ ॥
जेहतणे तो कारणे, रावणनो क्षय कीध।
फिट विधि? तें सीताभणी, कौण अवस्था दीध ॥ ७ ॥
लक्ष्मणजी पण सांभली. लोक मुखे ए वात।
जाणे पड्यो आकाशथी, वज्र तणो निर्घात ॥ ८ ॥

ढाल बावनमी तर्ज रेजीव! जिन धर्म कीजीये—

लक्ष्मणजी तो एम वीनवेहो, राघवसूं कर जोडी।

कांकीजे तोड़ा तोडी, नहीं सीता मांही खोड़ी ॥
न्योसाच कढाईन्होडी ॥ ल ॥ १ ॥
पाणीमें पत्थर तरे. पश्चिमदि शेदिनकार ।
उगन्तो सही जाणीए, सीतान लोपे कार ॥ ल० ॥ २ ॥
वैश्वानर शीलोपड़े, अमृत मारणहार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ३ ॥
सायरना जल भीतरे, उडे रेणु अपार ।
तोए सहीकर जाणजो सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ४ ॥
पंकज पत्थर ऊपरे. पावे अतिविस्तार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ५ ॥
सूर्य आथमियां थकी, चेतें, वासर चार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपे कार ॥ ल० ॥ ६ ॥
सापतणे मुख ऊपजे. अमिय तणो रस सार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ७ ॥
साधु नाम ससारमें, जो पामे कलिकार ।
तोए सही कर जाणजो. सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ८ ॥
ताल कूट विष खाइयां, आयुतणो अधिकार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ९ ॥
अंधकार सूरज करे. चन्द्रहरे अंगार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १० ॥
निर्दय धर्म लहेयणो. अन्यायी जगधार ।
तोए सहीकर जाणजो. सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ ११ ॥
काव्य कला नांछेयणो. मजानो१ परिहार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १२ ॥
क्षमा दया विण पांचही, तपही तपा प्रकार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १३ ॥
अन्यमति श्रुत सायरू, अवगाहिये निस्तार ।

१ निबुद्धि ।

तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १४ ॥
आंख विहूणो वांछही. देखूं सब संसार।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १५ ॥
चंचल चिन्तनो मानवी, ध्यान धरे सुखकार ।
तोए सहीकर जाणजो, सीता न लोपेकार ॥ ल० ॥ १६ ॥
प्रभु तुम्हने नवि वूजिए, अवलानं अतिरोप ।
सदोषही नवि छांडिये, एतोछे निर्दोष ॥ ल० ॥ १७ ॥
राम कहे महत्तर[१] नगं, लाधी मुझही सुणाय ।
मैंपणकांने सांभली. हेरा[२]पण कही आय ॥ ल० ॥ १८ ॥
वातकाए अपजशतणी. मुझतो सही नजाय ।
सीता काढूं घरथकी, जेमए कहण मिटाय ॥ ल० ॥ १९ ॥
दांतांदेई आंगुली, तवभाखे लघु भ्रात ।
संसअछे तुम्ह माहरो, फिरिमत काढो वात॥ ल० ॥ २० ॥

क्षेपक राधेश्याम—रामायणमेंसे—

लक्ष्मण बोला किसतरह, हैयहठीक उपाय ।
जांच लंकामें होचुकी, फिरभी त्यागी जाय ॥

हेदीनानाथ दयाकरिये, छाती छलनी होजातीहै ।
शब्दों की नहीं लड़ीहै, यह कोंटोंकी लडी दिखातीहै ॥
निर्दोषिनी नारीदण्डपाए, क्यायह अधर्म का काम नहीं ।
ऐसेकामों को करकेक्या, रघु कुलहोगा वदनाम नहीं ।
अवला अर्द्धांगिनी महासती. वेखता निकाली जातीहै ॥
पृथ्वी आकाश देखतेहो, ! कोशलपुर कैसाधातीहैं ॥
धिक्है उसप्रजाकी रक्षापै, जोयूं शिरपर चढ़जाय प्रजा ।
सन्तोष-पूर्ण शासनपरभी, पूरा सन्तोषन पाये प्रजा ॥
हम तरह तरह की शाक्षीसे, सन्तोषित करदेंगे सबको ।
मातामें कोई दोषनहीं, यह साबित करदेंगे सबको ॥

१ = राज कर्मचारी = २ जासूस (भेद)

'दबजाना ऐसे अवसरपर, अपनी भीरूता बताता है।
सच्चा चुपरहे समयपरतो, झूठा सच्चाहो जाताहै ॥
फिरनहीं हाथ चढ़आयेगा, जोहाथांसे खोजायेगा।
गृह लक्ष्मीकोयदि त्यागेंगे, तो गृह उजड़हो जायेगा ॥
रोषधरी लक्ष्मणकहे, हमकोतोहै क्रोध।
चलो प्रजाके सामने, डटकर करे विरोध ॥
प्रभुफिर बोलेधैर्यधर, सोचो छोटे राम।
नहीं खिलौनाहै कोई, है शासन का काम ॥
शासन जबतलक नहींहोगा, अपनी इच्छाओंपर मनपर।
तबतलक प्रभाव पड़ेगाक्या, पुर परिजन और पराजन पर ॥
रैय्यत पर भेंट चढ़ादेगा गृह को गृह लक्ष्मी को तनको।
पर रैय्यत के होकर खिलाफ, कर सकता राम न शासनको ॥
जिस जगह देवों से जांच हुई, आन्दोलन वहां न उठता है।
कपि-निश्चर-दल विश्वास सहित, सीता पर श्रद्धा रखता है ॥
शंकित है अवध इसलिये, मैं सीता का त्याग न करता हूं।
मन से तो हो सकता ही नहीं, तनसे यह साधन करता हूं ॥

ढाल मूलगी—

पड़ह फिरायो शहरमें, मुंह जोड़से जे केई।
धंस करूं श्रीरामनुं, मैं मारे वो तेई ॥ ल० ॥ २१ ॥
लोक वचन सीता सती, क्युं छोडे नरेश।
उतावल अब छे घणी, पाछे हाथ घसेस ॥ ल० ॥ २२ ॥
मून्ये मुंगो छै घणो, मूहंगी नहीं लगार।
सीतानो संसार में, भाख्यो धन्य अवतार ॥ ल० ॥ २३ ॥
ओ दिन क्युं न विचार्यो थी, जो दिन पड्यो वियोग।
माणस मुओ थी घणो, करता था अति शोग ॥ ल० ॥ २४ ॥
छाती फाटीनी थी घणी, आंसु नो झड़ लाय।
बरसनो ज्यूं भाद्रवो, सीता पांछे राय ॥ ल० ॥ २५ ॥

आज हुई अलखामणी, सुणी लोक ना बोल ।
मति रे विमासो भाईजी, सीताछे निर्मोल ॥ ल० ॥ २६ ॥
क्षण रूसे तूसे क्षणे, भेद न कोई लहाय ।
बाहिज दृष्टि भासीया, लोक नहीं समझाय ॥ ल० ॥ २७ ॥
राम कहै ए साचछे, परघर भंजन लोग ।
आविमिल्यो ए एहवो, दैव तणे संयोग ॥ ल० ॥ २८ ॥
जब लग नयणे न निरखही, कही न कहणी कोई ।
कही कहीणी घावली पडे, अधिक असाता होई ॥ ल० ॥ २९ ॥
सज्जन तो कोपे नहीं, कोपि न भजे विकार ।
सज्जननो गुण ए वड़ो, चाल्यो चले ते वार ॥ ल० ॥ ३० ॥
सायर सायरता भजे, न हुए गांव-तालाव ।
सायर शरनो आंतरो, एम भाखे जिनराव ॥ ल० ॥ ३१ ॥
एक नरा एकज घरा, एकज पुरी प्रसिद्ध ।
दूर किया मुहु जगत में, अपजश पडहो दीध ॥ ल० ॥ ३२ ॥
नारी सीता तुम्ह छांहड़ी, सुख दुःख लागी लार ।
छोडावी छूटे नहीं, कीधां कोटि प्रकार ॥ ल० ॥ ३३ ॥
कहे विभीषण रायजी, सीतानी दऊं साख ।
राजा रावण आगलही, आपण आपो राख ॥ ल० ॥ ३४ ॥
उपद्रव अति आकरा, करी डरावी एह ।
दिलासा देई ने करी, तेही प्रभु दीधो छेह ॥ ल० ॥ ३५ ॥
जब आई मण्दोदरी, तब कीधी अतिभांड ।
बोलावी दूती कहे, मूंडे पड़ावी खांड ॥ ल० ॥ ३६ ॥
रावण साथ लडो घणूं, काणी सकलही चोर ।
फिट फिट कही बतलावीयो, एकही शील सजोर ॥ ल० ॥ ३७ ॥
पूज्य प्रसाद तुम्हारड़े, करी न कोई परवाह ।
कणावड़ी जे को हुवे, तो भय धरे अगाह ॥ ल० ॥ ३८ ॥
सूंस करूं एहनीवती, जो भाखो तुम्ह ईश ।

सतियों मांही शिरोमणि, सीता विश्वावीश ॥ ल० ॥ ३९ ॥
लक्ष्मणजी भाखी रह्यो, भाखी रह्यो लंकेश ।
राम न मानी एकही, दिन तुझने आदेश । ल० ॥ ४० ॥
सीता थी विरचे नहीं, कोडी प्रकारे राम ।
वात कहन्तां विरचियो, जब सांभल्यो कुनाम ॥ ल० ॥ ४१ ॥
सासु सुसरा सब फिर्या, मात पिताने भ्रात ।
एह कुनाम थकी फिरी, हनुमन्त केरी मात ॥ ल० ॥ ४२ ॥
ए बावनमी ढालमें, जेही जेम कीधां कर्म ।
'केशराज' तेम भोगवे, ए जिन मतनो मर्म ॥ ल० ॥ ४३ ॥

दोहा वैराडी रागे—

कृतान्त मुख सेनापति, साथे कहे श्रीराम ।
सीता काढो घरथकी, वेगे करो ए काम ॥
अटवी मांहे मेलजो, जिहां न कोई नी आश ।
आपणही मरि जायसे, पामी ने अतित्रास ॥ २ ॥
पगे लागीने रोवतां, करतो अधिक विखास[1] ।
लक्ष्मण भाखे राम सुं, स्वामी सुणो अरदास ॥ ३ ॥
घर बाहिर किम काढीये, सीता सरीसी नार ।
गर्भवती सुविशेष थी, देखो वात विचार ॥ ४ ॥
मति बोलो मुझ आगले, बोल्यां में नहीं सार ।
काल रूप प्रभु होई रह्यो, अहि अहि कर्म विकार ॥५॥
रोवन्तो घर आवीयो, कोई न चाले सान ।
वात विचार पड्यो घणुं, भाई बाप समान ॥ ६ ॥

क्षेपक राधेश्याम-रामायण में से—

लक्ष्मण रोते रहगया, गया हृदयका डोल ।
लगे ढालने पर वहां, चली न दारुण दोल ॥
आज्ञादे रघुवर उठे, किया न और विचार ।
'लछु लक्ष्मणसे उसदिवस, हुआ नहीं आहार ॥

1 दुःख=

अपने मन्दिर के निकट, सर पृथिवीपर टेक ।
मनही मन चिन्ता लखण, करन लगे अनेक ॥
किसभांति आज्ञा का पालन, कर डाले आज्ञाकारी यह ।
किसतरह विसर्जन देवीका, मन्दिरसे करे पूजारी यह ॥
है एक और आज्ञा-पालन. दूसरी और संकट अतिहै ।
उगले न बने खाये न बने, वह साप छछुन्दरकी गतिहै ॥
हे विधना! साध्वी सीतापर. क्या वज्राघात किया तूने ।
जोमंगल-आश दिनोंसेथी. उसमें उत्पात कियातूने ॥
गृहीणीकापद जिसनेपाया, वह त्याज्य आजयों अतिशयहै।
न्यायाधीश्वर यहन्यायहैतो, न्यायालय अन्यायालयहै ॥
पूछे कोई उसके दिलसे. जिसपर यह आफत आतीहै ।
पति-सेवाकरती हुई सती, पति-द्वारा त्यागी जातीहै ॥
मैं खूबजानताहूं सीता. निर्दोपिनी निष्कलंकिनीहै ।
गुणखानीहै क्षत्राणीहै, विदुषीहैं जनक नन्दनीहैं ॥
इन्ही खयालोंमें लखण. पड़े एकदम रोय ।
मुखसे यह निकला प्रगट, विधना कैसी होय ॥

दोहा मूलगा—

गिरिसमेतनी जातनो, दोहलोकरो प्रमाण ।
आज्ञा प्रभुनी छेकहै, सेनापति रे सुजाण ॥ ७ ॥
भद्रपणे साभामिनी, ऊठी चालो जाम ।
शकुन वर्जना अवगुणी, चाली जाये ताम ॥ ८ ॥

क्षेपक राधेश्याम—रामायणमेंसे—

कौशलके राज-मार्गसेजब, वहरथ जंगलको जाताथा ।
पीछेहटताथा अन्धकार, आगे प्रकाश दिखलाताथा ॥
सचमुच उसदिन का वह तड़का, दुःख सुखसे मिला सवेराथा ।
कोशलके लिये अंधेराथा, जंगलके लिये उजेराथा ॥
आकाशके तारे फीकेथे, चन्द्रमा उदासहो रहाथा ।
कणनहीं ओसके गिरतेथे, पृथ्वीपर व्योम रो रहाथा ॥

दूसरी ओर लालिमालिये, सूरज रुक रुक कर उगताथा।
उनमोती जैसी बूंदांको, अति शीघ्र हंस सम चुगताथा॥
जबसाफ होगया सबमतला, तबनाची डाली हिलमिल कर।
अवलोक प्रकृतिका यह रहस्य, सबकलो हंसपड़ो खिल खिल कर।
पुष्पोंके केदल वृक्षोंको तज रथ-पथ परआय बिखरतेथे।
पक्षीअपने मीठे स्वरसे, माताका स्वागत करतेथे॥

दोहा मूलगा—

पवन गतिए प्रेरीदियो, सारथी ए रथसार।
गंगासागर ऊतरी, पहूंतो पेलेपार॥ ९॥
'सिंहनी नाद' अरण्यथी, आगेन चले सोई।
आंखे आंसु नांखतो, सीता सामो जोई॥ १०॥
कह्योन जाये कांईहीं, आवेहै योभराय।
फिटफिट जन्म सेवकतणो, काम दिया नटलाय॥ ११॥

क्षेपक राधेश्याम-रामायणमेंसे—

कहताहूंतो खुलतीनजुबां, चुपरहनेमें दम घुटताहै।
वह गाफिल कर्ज दारहूंमैं, जोभीतर भीतर लुटताहै॥
आज्ञाका बर्छा स्वामीने, माराहै मुझ हतभागीके।
यह अत्याचार धर्मकाहै, जो शिरपरहै अनुरागीके॥
बस इतनाही कहसके, नयनों बर्षे नीर।
धीरहृदय पलमात्रमें, फिरहोगया अधीर॥
निकले सिंहनी गुफासेज्यों, अपने शिशुका रोदन सुनकर।
रथसे उतरी त्यों सीता मात, सारथीका कम्प-कथन सुनकर॥
बोलीं-स्वामीकी आज्ञाको, पहिचान भूलहोई है।
दासीकोतो यहज्ञाभी, मामूली टहल-फूलहोई है॥
वेमेरे और तुम्हारेक्या, सारेही जगके हितकरहै।
सूरज वंशी राजेश्वरहैं, रघुकुलके गौरव रघुवरहैं॥
वेकहां क्लेशोडेंगे, जबयहि विश्वके प्रेमकहैं।
तुम धीरज धरकर यह कहदो, दासीको क्याआज्ञाहोई है॥

अपने मन्दिर के निकट, सर पृथिवीपर टेक ।
मनही मन चिन्ता लखण, करन लगे अनेक ॥
किसभांति आज्ञा का पालन, कर डाले आज्ञाकारी यह ।
किसतरह विसर्जन देवीका, मन्दिरसे करे पूजारी यह ॥
है एक और आज्ञा-पालन, दूसरी और संकट अतिहै ।
उगले न बने खाये न बने, वह साप छछुन्दरकी गतिहै ॥
हे विधना! साध्वी सीतापर, क्या वज्राघात किया तूने ।
जोमंगल-आश दिनोंसेथी, उसमें उत्पात कियातूने ॥
गृहीणीकापद जिसनेपाया, वह त्याज्य आजयों अतिशयहै।
न्यायाधीश्वर यहन्यायहैतो, न्यायालय अन्यायालयहै ॥
पूछे कोई उसके दिलसे, जिसपर यह आफत आनीहै ।
पति-सेवाकरती हुई सती, पति-द्वारा त्यागी जातीहै ॥
मैं खुबजानताहूं सीता, निर्दोषिनी निष्कलंकिनीहै ।
गुणखानीहै क्षत्राणीहै, विदुषीहैं जनक नन्दनीहैं ॥
इन्ही खयालोंमें लखण, पड़े एकदम रोय ।
मुखसे यह निकला प्रगट, विधना कैसी होय ॥

दोहा मूलगा—

गिरिसमेतनी जातनो, दोहलोकरो प्रमाण ।
आज्ञा प्रभुनी छेकहै, सेनापति रे सुजाण ॥ ७ ॥
भद्रपणे साभामिनी, ऊठी चालो जाम ।
शकुन वर्जना अवगुणी, चाली जाये ताम ॥ ८ ॥

चेपक राधेश्याम—रायायणमेंसे—

कौशलके राज-मार्गसेजब, वहरथ जंगलको जाताथा ।
पीछेहटताथा अन्धकार, आगे प्रकाश दिखलाताथा ॥
सचमुच उसदिनका वह तड़का, दुःख सुखसे मिला सवेराथा ।
कौशलके लिये अंधेराथा, जंगलके लिये उजेराथा ॥
आकाशके तारे फीकेथे, चन्द्रमा उदासहो रहाथा ।
कणनहीं ओसके गिरतेथे, पृथ्वीपर व्योम रो रहाथा ॥

दूसरी ओर लालिमालिये, सूरज रुक रुक कर उगताथा।
उनमोती जैसी बूंदांको, अति शीघ्र हंस सम चुगताथा॥
जबसाफ होगया सबमतला, तबनाची डाली हिलमिल कर।
अवलोक प्रकृतिका यह रहस्य, सबकली हंसपड़ी खिल खिल कर।
पुष्पोंके केदल वृक्षोंको तज रथ-पथ परआय बिखरतेथे।
पक्षीअपने मीठे स्वरसे, माताका स्वागत करतेथे॥

दोहा मूलगा—

पवन गतिए प्रेरीदियो, सारथी ए रथसार।
गंगासागर उतरी, पहूंतो पेलेपार॥ ९॥
'सिंहनी नाद' अरण्यथी, आगेन चले सोई।
आंखे आंसू नांखतो, सीता सामो जोई॥ १०॥
कह्योन जाये कांईहां, आवेहे योभराय।
फिटफिट जन्म सेवकतणो, काम दिया नटलाय॥ ११॥

क्षेपक राधेश्याम-रामायणमेंसे—

कहताहूंतो खुलतीनजुबां, चुपरहनेमें दम घुटताहे।
वह गाफिल कर्ज दारहूंमें, जोभीतर भीतर लुटताहे॥
आज्ञाका पत्थर रखसीने, माराहे मुझ हतभागीके।
यह अत्याचार धर्मकाहे, जो शिरपरहे अनुरागीके॥
बस इतनाही कहसके, नयनों वर्षे नीर।
धीरहृदय पलमात्रमें, फिरहोगया अधीर॥
निकले सिंहनी गुफासेज्यों, अपने शिशुका रोदन सुनकर।
रथसे उतरी त्यों सीता मात, सारथीका करुण-कथन सुनकर॥
बोलीं-स्वामीकी आज्ञाको, वहांपहचान भूलकोहै।
दासीकोतो वज्रआभी, मानूंगी फूली-फूलकीहै॥
वेमेरे और तुम्हारेक्या, सारेही जगके हितकाहै।
सूरज वंशी राजेश्वरहैं, रघुकुलके गौरव रघुवरहैं॥
वेवहां कलेजेडेंगे, जबदाहि दिलके भेदकीहै।
तुम्ह धीरज धरकर यह कहदो, दासीको क्या आज्ञादीहै॥

इन शब्दों से जब खिची, सकुचाहट की फांस ।
तवस्वारथी कहनेलगा, लेकर गहरी सांस ॥
हेमाता उमारमाहो तुम, मन-मन्दिरकी प्रतिमाहो तुम ।
महिमाहो तुम सुषमाहोतुम, अणिमा होतुम गरिमाहो तुम ॥
लंकामें डंकावजालिया, परअवध वध किए देताहै ।
बस बास अशोक वटिकाका सारे शोकोंका नेताहै ॥
भारत की ऊँची नारीका, तुमनेतो चरित दिखायाहै ।
पर नगर वासियोंने इक्को, अत्यन्त बूरा बतलायाहै ॥
वेकहतेहैं परवशतामें, जबप्रण गंवा देतीं माता ।
तबसच्ची प्रतिव्रता ओंकी, पदवीको पालेतीं माता ॥
यह नहीं समझतीहै, दुनियों आश्चर्य परीक्षादी तुमने ।
पतिकेहित एकही निजप्राणोंकोरख, पतिप्राणकी रक्षाकी तुमने॥
बस इसी एकही कारणसे, प्रभुने मुझे पठायाहै ।
बेटेके हाथों हीउसकी, माताका त्याग करायाहै ॥

दोहा मूलगा—

लेईगयो लंकाधणी, चित्तमें आणी चाव ।
लोकोंने मुख आकरो, निसुणी एह कहाव ॥ १२ ॥
राज तज्यांछे रामजी, मेला यांही राम ।
लक्ष्मण केरी वीनतीं, राम सुनी नहीं काम ॥ १३ ॥
ए वनश्वपद संभर्यो, जेहवूं जमनूं गेह ।
मुझ मूकीकेम जीवसे, प्रथम परिक्षण एह ॥ १४ ॥
एम सुणी मूर्छालही, रथथी ताम पडन्त ।
जाणे मूई सेनापति, आपण अधिक रडन्त ॥ १५ ॥
चेतलहे वन वायरे, फिरी फिरी मूर्च्छन्त ।
सुसती होईनेसती, तस साथे पूछन्त ॥ १६ ॥
दूरेकेट लीसापूरी, किहांअछे प्रभुआप ।
झगडूं जेछेड़ो ग्रही, कां दियो मुझ सन्ताप ॥ १७ ॥

वतलायो जायेनहीं, एहि अवसर श्री राम ॥ १८ ॥
सा सेनापति सूंकहे, मुझ भाख्यो ए एम ।
तूं कहजेश्री रामने, नकहेतो मुझनेम ॥ १९ ॥

डाल तेपनमीं—तर्ज विलवे राणी रुकमणी—

सीताजी दे उलम्भडो, सुण ससनेहीं राम ।
तुमथी एम केम चूजियूं, तुमे आशा विश्राम ॥ सीताजी
फौजबांधी लडतीनहीं, नाकरती तुम्ह त्रास ।
शुद्धकरी मुझ काढतां, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी
धरणेपण नविबेसती, नाकरती उपवास ।
लोकोंने नवि मेलती, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी
कूवे पण पड़ती नहीं, नालेती गलपास ।
पेटे छूरी न विमारती, कीधां केरे विसास ॥ सीताजी
कन्त भणी नवि क्रोध थी, नवि खाती विषग्रास
शाप न देती स्वामी ने, कीधां कांरे विसास ॥ सीता
होई ने अति आकती, मेली लाकड़ पास ।
जुहर१ पण करती नहीं, कीधां कांरे विसास ॥ सीत
पर्वत थी पड़ती नहीं, मरती रोकी न श्वास ।
छेहड़ो पकड़ नवि झघड़ती, कीधां कांरे विसास ॥सी
जाणती थी सुत जन्म से, पहोंचसे सब आश ।
साज न मिलसे आंगणे, कीधां कांरे विसास ॥ सी
सहीर सुहामणी आवसे, पहिराव सुं वस्त्र तास
देसे अमृत आशिष का, कीधां कांरे विसास ॥सी
गुरु गोत्र जमनावसुं, आणीने उल्लास ।
निर्धी सपत्नी ही करूं नहीं, कीधां कांरे विसास ॥सी
नाना दं नेकी परे, करसुं रंग विलास ।
एक न आवी पाधरी, कीधां कांरे विसास॥सीताजी

१ अग्नि स्नान ॥ = २ रुदन =

हूं जाणती थी माहरो, पूरो पुण्य प्रकाश ।
धणी भलो देवर भलो, कीधां कांरे विसास ॥सीताजी ॥ १२ ॥
अवरां ने अंधारड़ो माहरं छे उजास ।
दैव न शक्यो ओ साखही कीधां कांरे विसास ॥सीताजी॥१३॥
ऊंची नींची होवतां लांबा लेई निसास ।
दुःख आणी अति रोवती, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी॥१४॥
किहां सीता कुसुमालिका, किहां वननो वास ।
एती करी न विचारणा, कीधां कांरे विसास ॥सीताजी ॥ १५ ॥
गुप्तपणे घर भीतरे, कां न कर्यो शिर नास ।
भांड करी सब लोकमें, कीधां कांरे विसास ॥ सीताजी ॥१६॥
देखाये अति चगचगो, रंग कुसुम्ब पतंग ।
उतरियो ही देखियो, राम तणो तिम रंग ॥सीताजी ॥ १७ ॥
नगरां[1] केरा वालिया, ओछां केरो नेह ।
प्रहर घडी दिन आंतरे, रीतो देखे तेह ॥सीताजी ॥ १८ ॥
पहिला प्रहरनी छांहडी, घटती जाये जेम ।
राजचन्द्रनी प्रीतड़ी, मुझ सूं होई एम ॥ सीताजी ॥ १९ ॥
विन्दु तणां करे सायरु, उत्तम माणस जेह ।
सायरनो तो विंदुओ, राम कियोरे एह ॥ सीताजी ॥ २० ॥
कोईयक गुणतो चित्त धरी, लेतो मुझने राख ।
राक्षस राक्षसणी कन्हे, पूछी लेतो साख॥सीताजी ॥२१॥
लम्पट जे नर लालची, तेह तणी सुणी वात ।
मन चोर्यो तुम मुझभणी, हो लक्ष्मण जीना भ्रात ॥सीताजी॥२२॥
आपणये अंगी करूं, केम करीजे दूर ।

---

१ नगर का मालिक (राजा) और नीच (ओछा) मनुष्य का प्रेम अल्प समय में ही कम होजाता है ॥ (रीतो-रिक्त=मुकायलो) इस सम्बन्धमें ऐसा कहा है ।यथा-डुगर केरा वालिया, ओछा केरानेह । वहता वहे ऊतावला, छटक दिखावे छेह ॥'

शंकर ज्यूं विप आदर्यो, राख्यो रहे हजूर ॥ सीताजी ॥ २३॥
वडवानल सायर तणू, चाले जल नित्य ऊठ।
सायर उल्हावे नहीं, राखी रह्यो तसु पूठ ॥ ॥सीताजी॥ २४ ॥
जो प्रभुने सन्देह थो, कांरे न लीधो साच।
साचवडो संसारमें, साचतणी वडवाच ॥ सीताजी ॥ २५ ॥
भोगवी सुकृत आपणूं, वनही मांही वसन्त।
प्रभु ए कारज केम करे, जेह थी लोक हसन्त ॥सीताजी ॥२६॥
राजा राच्या ही भला, विराच्यां नहीं काज।
राम न हुओ माहरो, अवरोंने सीं लाज ? ॥ सीताजी ॥ २७ ॥
हूंस न राखी माननी, अपमाने नहीं पार।
दोई पक्ष पूरो वह्यो, हो म्हारा भरतार ॥ सीताजी ॥ २८ ॥
खीर नीरनो नेहलो, चन्द्र समुद्रां प्यार।
आंपांने ए ओपमा, कियो किसो करतार ॥ सीताजी ॥ २९ ॥
पंचही आश्रव सेवियां, सेव्यां पाप अढार।
शरणा चारे नविकर्यां, धर्म ही चार प्रकार ॥सीताजी ॥ ३० ॥
त्रि करण शुद्धन राखियां, मद आठे में कीध।
इन्द्रिय पांचे पोखियां, वस्य वतांवी न लीध ॥सीताजी ॥३१॥
विकथा चारे समाचरी, सेव्यां कुव्यसन सात।
कीधा चार कषायजी, पांच पदे विख्यात ॥ सीताजी ॥ ३२ ॥
ते फल ए हूं भोगवूं, दोष न प्रभु लवलेश।
कर्म लिख्यो फल पामिए, ए जिननो उपदेश ॥सीताजी ॥३३॥
रवि उग्यो देखेसहु, घुवड़ ने अंधकार।
घन वरसे जवासीओ, सूकयो जाय गमार ॥सीताजी ॥ ३४ ॥
मास वसन्ते केरड़े, पान तणूं नहीं पोष।
ऋतुराज मेह वसन्तनो, कोई न दीसे दोष ॥ सीताजी ॥ ३५ ॥
रामचन्द्र ना राजमां, सुखिया सहु लोक।
हूं वन मांहे रडवडूं, ए हम कर्मो योग ॥सीताजी ॥ ३६ ॥

अई अई कर्मगति वांकड़ी, नहींछे केहने मान।
तीर्थंकर चक्रीसह, नडियां एही जान ॥ २ ॥
रंककरी राजाकरे, राजाछे पणरंक।
करेसही नवि मेटियां, जाये विधिना अंक ॥ ३ ॥
अघट्यो घाट घड़ेघणूं, घड़ियाने भाजन्त।
माथेए तिहूं लोकने, दैवसदा गाजन्त ॥ ४ ॥
फरि फरि रोवेघणी, पग पग चलत थकाय।
दर्भांकुर कण्टक करी, पांव घणूं विंधाय ॥ ५ ॥

क्षेपक-राधेश्याम-रामायणमेंसे—

विरह घटा छारहीथी, घुमड़ घुमड़ जबघोर।
बोलेथा तबइस तरह, विरहिनका मन मोर ॥
तुम्हे तुम्हारी प्रजाको, दोषनहीं सुखधाम।
दो सौतोंकाहो रहा, था भीषण संग्राम ॥

गृह लक्ष्मी ने स्वामी के संग, चौदह बरसों बनवास किया।
उस राजलक्ष्मीके मदका, अपमान कराया इस किया ॥
अवडाह निकालापूं उसने, जोबनमें मुझे पढ़ायाहै।
सम्पूर्ण रूपसे रानीवन: जीवन-धनको भरमायाहै ॥
दुनियोंमें मुझसो दुःखी, औरन दूजीकोय।
जिसने सारी आयुही, संकटमेंही खोय ॥
कयारीसे व्याही करनेमें, क्रिसदर पिताको त्रासहुआ।
फिरज्योंही श्वसुरालय आयी, त्योंही पतिको बनवास हुआ।
रानीहोने जोगिनीहुई, पायाझोंपड़ा महल-बदले।
तिसपरभी नहीं निभानाके, कालेकाले बदल बदले ॥
लक्ष्मणका सहायकहो योंभेजा, रघुको कठिन वचन कहकर।
खुदभी स्वामीका विरहसहा, उस लंका नगरीमें रहकर ॥
मेरेही कारण प्राणनाथ, गमगीन रहे कितनेही दिन।
मेरेही खातिर मूनोंके, दरियाउलहे कितनेही दिन ॥

खल खंचने हूं परिहरी, कोन विचारी मर्म ।
मिथ्यात्वी उपदेश थी, मतिरे तजो जिनधर्म । सीताजी ॥३७॥
एम कही मूर्छा पड़ी, करी शीतल उपचार ।
करी सचेतन सुन्दरी, वचन वदे सुविचार ॥ सीताजी ॥ ३८ ॥
राम विनाहूं दुःख लहूं, तिमही मुझ विण स्वाम ।
लेसे आरती आकरी, विविध परे दुःख पाम ॥ सीताजी ॥ ३९ ॥
हूंतो हुई नाहुई, मुझ जैसी बहुलीदास ।
यतकरीजो आपणूं, प्रभु एमुझ अरदास ॥ सीताजी ॥ ४० ॥
जेहना घरमें जोवड़ो, लीजे ते प्रतिपाल ।
नाभि विना आराकरी, कहन नशके चाल ॥ सीताजी ॥ ४१ ॥
सूर्यवंशे दीवड़ो, तूं शशिहर तूं भाण ।
तूं सुरतरु तूं जलहरूं, महिमा मेरु समान ॥ सीताजी ॥ ४२ ॥
तूं प्रभु सायर सारिसो, गुणे भरियो भरपूर ।
धणी पणे में पामीयो, पूर्व पुण्य अंकूर ॥ सीताजी ॥ ४३ ॥
कायम रहे तुझ साहिबी, कायम तू राजान ।
सयल कुटुम्बोंसे होईजो, प्रभु तुम्हने कल्याण ॥ सीताजी ॥ ४४ ॥
संभलावे मुझ मुखतणा, स्वामीने ए बोल ।
बोल सहुने सुहामणा, आछा अत्तेरे अमोल ॥ सीताजी ॥ ४५ ॥
लक्ष्मणसुं ए माहरी, केजे तूं आशीश ।
सेवाकरजो प्रभुतणी, प्रभु थारे जगदीश ॥ सीताजी ॥ ४६ ॥
पन्थे शिघ्र होजोतुने, रेवत्स! विश्वावीश ।
विदाय कियो सेनापति, जाई मिल्यो निज ईश ॥ सीताजी ॥ ४७ ॥
त्रेपन मीं ए ढालमें, सीतासुं प्रभु कोप ।
'केशराज सोने वधे, ताव्यांथी अति ओप ॥ सीताजी ॥ ४८ ॥

(दोहा जयतश्री रागे)

सत्यवती सांचीसती, फरे घणूं वनमांहे ।
यूथ भ्रष्ट जिम हरणली, आपे निन्दे प्राहे ॥ १ ॥

कलेश अशेश ढल्यो, सीता भाग्य अपार ॥सु० ॥ १ ॥
कवण अछो तुम्ह आप, आपणो नाम प्रकाशो।
एह अरण्ये किसी तुम्हे, ए वडो तमासो ॥
निर्दयी थी निर्दय घणो, जेणे कीधो ए काम।
चौर अन्यायी आक्रोहो, तेह तणूं ए काम ॥ सु० ॥ २ ॥
आशंका सब छोडी, जोड़िने कर दोई।
पूछूं हूं तुझ पास, अधिक हूं अर्थी होई ॥
तुझ पीडाए पीडयो, दया वसी दिल मांही।
वीतक वीत्यूजे अछेहो, ते तुम्ह भाखो मांही ॥ सु० ॥३॥
सुमति नाम प्रधान, ताम तस पासे आवी।
कोमल वाणी प्रकाशी, वात तस कहे सुहावी ॥
'पुण्डरीक' पुरनो धणी, 'गजवाहन' पूत।
'वन्धुदेवी' जाइयो हो, रावण पर घर सूत ॥ सु० ४ ॥
वज्रजंघ जी राय, परम ए श्रावक कहियो।
देव गुरु धर्म तत्वतणो, जेणे निश्चय लहियो ॥
महोदर परनारीनो, विरुध वहन्त अपार।
परदुःख कापण छे घणोहो, जगमांही जशगार ॥सु० ॥५॥
हाथी लेवा काज, आजेही अटवी आयो।
हाथी चढिया हाथ, ताम मन घरही चलायो ॥
गेज मुणीने ताहरू आयो इहां नरेश।
भाई भणी अर भाणिये हो, वात विशेष अशेष ॥ सु० ॥६॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत सेपक नर्ज मेरे वापनेरे मुलको
चालधरो परवाया।

कहदे मांडनेरे क नाम निर्ता जिनगी वात ॥ टेर ॥
रूप अनूपम जगल विराजे, वडाथणी की जाई।
दुःख दाई इण घोर जंगलमें, कहो किन कारन आई। कहदे॥१॥
अथवा दानव देव विद्याधर, अप्सर तुझे दिठाई ॥

इतनेपरभी उसविधनाने, सुखसे नमुझे बिठलायाहै।
इन्तहा कष्टकी यहकरदी. जोअब वनमें भिजवायाहै॥
जिसने अपने जीवन भरमें, आरामन देखा भाला हो।
माङ्गलिक समय मेंस्वामीने, महलोंसे जिसे निकालाहो॥
ऐसी दुखियारी नारीको, हेवृक्षो?कहींभी देखाहै।
इतने कष्टों की मारीको, हे जीवो? कहींभी देखा है॥

सीता रह कसती नहीं, यों वियोग आधीन।
नीर बिना संसार में. कहीं रही है मीन॥
इन्हीं विचारों में हुई, जब अत्यन्त अधीर।
मूर्छाखा चेतन हुई, जब चलता शीत समीर॥

दोहा मूलगा—

भाग्यवन्त माणस जिके, तेतो नवि सीदाय।
दीठी सेना सामठी, आगे ऊभी आय॥ ६॥
जीवत ने मरवातणू, भय नवि आणे कोय।
नमोकार नाध्यान में, लोगां दीठी सोय॥ ७॥
लोक तदाचित्त चिन्तवे. ए कोई वनदेवी।
कारण कोई विचारवे, प्रगट-थई ततखेवी॥ ८॥
रोज सुणी सीता तणूं, स्वरनो जानन हार।
नायक तो सेनातणू, चित्त सूं करे विचार॥९॥
गर्भवती साची सती, सीदाती अतिजाण।
चाली आयो पाखती, सती तदा भय आण॥१०॥
अलंकार सहु अंगना ऊतारी ने ताम।
राजा आगे मेलिया. राखेवा निज माम॥ ११॥
बहिन !-न बिये मुझथकी, राजा भाखे रंग।
अलंकार एतादरा, अखे रहो तुझ अंग॥ १२॥

ढाल चौपनमीं—

तर्ज-नेमन माने कह्यो—

सू भूपति आय मिलियो, वज्र सुजंघ उदार।

कलेश अशेश दल्यो, सीता भाग्य अपार ॥सु० ॥ १ ॥
कवण अछो तुम्ह आप, आपणो नाम प्रकाशो ।
एह अरण्ये किसी तुम्हे, ए वडो तमासो ॥
निर्दयी थी निर्दय घणो. जेणे कीधो ए काम ।
चौर अन्यायी आकरोहो, तेह तणूं ए काम ॥ सु० ॥ २ ॥
आशंका सब छोडी. जोड़िने कर दोई ।
पूछूं हूं तुझ पास, अधिक हूं अर्थी होई ॥
तुझ पीडाए पीड्यो, दया वसी दिल मांही ।
चीतक वीत्यूजे अछेहो, ते तुम्ह भाखा प्राही ॥ सु० ॥३॥
सुमति नाम प्रधान. ताम तस पासे आवी ।
कोमल वाणी प्रकाशी, वात तस कहे सुहावी ॥
'पुण्डरीक' पुरनो धणी, 'गजवाहन' पूत ।
'बन्धुदेवी' जाइयो हो, रावण पर घर सूत ॥ सु० ४ ॥
वज्रजंघ जी राय, परम ए श्रावक कहियो ।
देव गुरु धर्म तत्वतणो, जेणे निश्चय लहियो ॥
महोदर परनारीनो, विरुध वहन्त अपार ।
परदुःख कापण छे घणोहो. जगमांही जशमार ॥सु० ॥५॥
हाथी लेवा काज, आजेही अटवी आयो ।
हाथी चढ़िया हाथ, ताम मन परखी चलायो ॥
रोज सुणीने नाहरू आयो इहां नरेश ।
भाई भर्णी अर मानिये हो. वात विशेष अशेष ॥ सु० ॥६॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत तेपक तर्ज मेरे साजनेरे मुखड़ो
चालपरो पराया।

कहदे मांडनेरे क नामें तिनी जिनगी रात ॥ टेर ॥
रूप अनूपम अपल विराजे, चन्द्रापर्यो की आई ।
दुःख दाई इस घोर जंगलमें, कहो किन कारन आई ॥ कहदे ॥१॥
अथवा दानव देव विद्याधर, कपट रूप दिखाई ॥

इतनेपरभी उसविधनाने, सुखसे नमुझे बिठलायाहै ।
इन्तहा कष्टकी यहकरदी. जोअब वनमें भिजवायाहै ॥
जिसने अपने जीवन भरमें, आरामन देखा भाला हो ।
माङ्गलिक समय मेंस्वामीने, महलोंसे जिसे निकालाहो ॥
ऐसी दुखियारी नारीको, हेवृक्षो?कहींभी देखाहै ।
इतने कष्टों की मारीको, हे जीवो ? कहींभी देखा है ॥

सीता रह सकती नहीं, यों वियोग आधीन ।
नीर बिना संसार में, कहीं रही है 'मीन ॥
इन्हीं विचारों में हुई, जब अत्यन्त अधीर ।
मूर्छाखा चेतन हुई, जब चलता शीत समीर ॥

दोहा मूलगा—

भाग्यवन्त माणस जिके, तेतो नवि सीदाय !
दीठी सेना सामठी, आगे ऊभी आय ॥ ६ ॥
जीवत ने मरवातणू, भय नवि आणे कोय ।
नमोकार नाध्यान में, लोगां दीठी सोय ॥ ७ ॥
लोक तदाचित्त चिन्तवे. ए कोई वनदेवी ।
कारण कोई विचारवे, प्रगट-थई ततखेवी ॥ ८ ॥
रोज सुणी सीता तणूं, स्वरनो जानन हार ।
नायक तो सेनातणू, चित्त सूं करे विचार ॥९॥
गर्भवती साची सती, सीदाती अतिजाण ।
चाली आयो पाखती, मती तदा भय आण ॥१०॥
अलंकार महु अंगना ऊतारी ने ताम ।
राजा आगे मेलिया. राखेवा निज माम ॥ ११ ॥
बहिन !-न बिये मुझथकी, राजा भाखे रंग ।
अलंकार एताहरा, अखे रहो तुझ अंग ॥ १२ ॥

ढाल चौपनमीं—
तर्ज—नेमन माने कह्यो—

सू भूपति आय मिलियो, वज्र सुजंघ उदार ।

धर्म ध्याने चित्त वासियो, आरती परही टाल ।
सुखसाता मांने घणीहो, पाछेही मन वाली ॥ सु० ॥ १२ ॥
अग्रसेना पति आवी, रामने चरणे लागी ।
वातविशेष विचार, कहेछेने अनु रागी ॥
'सिंहनिनाद अरण्यमें, प्रभुमें मूकी देवी ।
वानमुणी रथथी पडीहो, मूर्च्छाणी ततखेवी ॥ सु० ॥ १३ ॥
ननवाये लही चेतन अने, फिरफिर मूर्च्छा आवे ।
शुद्धनरही लगार नाम, गाढी दुःख पावे ॥
धीरज अति आलम्बीने, माताजी कही एह ।
स्वभलावी पण स्वामीने, वातभलीछे तेह ॥ सु० ॥ १४ ॥
उलम्भो तोनेणिए, सुणावी लीधो पहेलां ।
विगत विगतसुं वात, वातावी भाग्वी वहेलां ॥
जेमजेम निसुणे रामजी, सीता मुखना वयन ।
उपजतो जाये गणूंहो, तेमरचित्तमें चयन ॥ सु० ॥ १५ ॥
सदा राम तुम्ह काम, कियो सवलोही विमासी ।
कदहीन कीधो काम, जेहथी होवे हाँसी ॥
भाग्य दोपतो महायरे, ए अति उपज्यो रोष ।
सोनेन लागे श्यामताहो, स्वामी सदा निर्दोष ॥ सु० ॥ १६ ॥
लोकोनी सुणी वात, नाथजी तमें हमें छोडी ।
बालपणा की प्रीत, तृणजेम ताणी त्रोडी ॥
मिथ्या दृष्टिनी सुणी, वातयजो विपरीत ।
छोडोमति जिनधर्म नेहो, गणोजो कुलरीत ॥ सु० ॥ १७ ॥
एम सुणी मूर्च्छा पड्या, रघुनाथ तेवार ।
लक्ष्मण करी उपचार घणा, मूर्च्छाही निवार ॥
उठाई ऊभाकिया, वेदननो अनुमान ।
फिकांगई सीता सतीहो, प्यारी प्राण समान ॥ सु० ॥ १८ ॥

— राम-सीता-विरह-वर्णन —

एकाकी अबला को वनमें, नर कोई तजी अन्यायी ॥कहदे ॥२॥
कहुं मैं मांडनेरे क मां में वीती जितरी वात ॥ टेर ॥
दशरथ नृपनी पुत्र वधु में, रामचन्द्र घर नारी ।
भामण्डल की भगिनी हूं मैं, जनक विदेह दुलारी ॥ कहूंमैं ॥३॥

ढाल मूलगी—

एम सुणतां सचिव, राय परतीत सूं राखी ।
धुरथी छेह लगे मांडी, वातती सघली भाखी ॥
रोवन्ती राखी वही, मंत्रीने भूपाल ।
पीली माटी पाणिये हो, गिवली हुवे ततकाल ॥सु० ॥७॥
निष्कपट थी अति प्रगट पणे, भाखे तबते भूप ।
आज थकी तूं बेहनो, बन्धु अछूं अनूप ॥
एक धर्म जेही करे, तेही सगो संसार ।
सगपण तोछे कारमोहो, स्वामी तजी क्यूं नार ॥ सु० ॥८॥
भामण्डल जेहवो जाणी, राज ! मुझ घरे पधारो ।
होई खिजमतदार, करूंछूं सफल जन्मारो ॥
अवधारो अरदास, ए सोचतणूं नहीं काम ।
वारम्बार विशेष थीहो, रायभणे अभिराम ॥ सु० ९ ॥
पीयरिए धसि जायए, सासरे जो दुःखपावे ।
एहवात समरथ, त्रियाने कांईयन आवे ॥
सूधी वाटां चालतां, जोकांटा भाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
तोही दुश्मन लोकमें हो, नारी नवि लाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
लोक वचनथी राम, कामए कियो देखो ।
उतरियां थीरोष, तुम्ह सरिसो पेखो ॥
गवेषण करसेवणी, सुखनहीं लहे लगार ।
चक्रवाक जिम एकलोहो, आणे आरति अपार सु० ॥ ११ ॥
शिविकाए बेसाडी, ताम सीताघर आणी ।
आवी राय वियोगे, तिहां रहे राघव-राणी ॥

धर्म ध्याने चित्त वासियो, आरती परही टाल ।
सुखसाता मांने घणीहो, पाछेही मन वाली ॥ सु० ॥ १२ ॥
अग्रसेना पति आवी, रामने चरणे लागी ।
वातविशेष विचार, कहेछेने अनु रागी ॥
'सिंहनिनाद अरण्यमें, प्रभुमे मूकी देवी ।
वातसुणी रथथी पड़ोहो, मूर्च्छाणी ततखेवी ॥ सु० ॥ १३ ॥
पवनआये लही चेतन अने, फिरफिर मूर्च्छा आवे ।
शुद्धनरही लगार ताम, गाढो दुःख पावे ॥
धीरज अति आलम्बीने, माताजी कही एह ।
रखभलावी पण स्वामीने, वातभलीछे तेह ॥ सु० ॥ १४ ॥
उलम्भो तोतेणिए, सुणावी लीधो पहेलां ।
विगत विगतसुं वात, वातावी भाखी वहेलां ॥
जेमजेम निसुणे रामजी, सीता मुखना वयन ।
उपजतो जाये घणूंहो, तेमरचित्तमें चयन ॥ सु० ॥ १५ ॥
सदा राम तुम्ह काम, कियो सघलोही विमासी ।
कदहीन कीधो काम, जेहथी होवे हाँसी ॥
भाग्य दोपनो महायरे, ए अति उपज्यो रोष ।
मोनेन लागे श्यामताहो, स्वामी सदा निर्दोष ॥ सु० ॥ १६ ॥
लोकोनी सुणी वात, नाथजी तमें हमें छोडी ।
बालपणा की प्रीत, तृणजेम नाणी तोडी ॥
मिथ्या दृष्टिनी सुणी, वातघणी विपरीत ।
छोडोमति जिनधर्म नेहो, रागोजो कुलरीत ॥ सु० ॥ १७ ॥
एम सुणी मूर्च्छा पत्या, रघुनाथ तेवार ।
लक्ष्मण करी उपचार पणा, मूर्च्छाहो निरधार ॥
उठाई उन्नाहिया, वेदनतो असमान ।
किहांगई सीता सतीहो, प्यारी प्राण समान ॥ सु० ॥ १८ ॥
[illegible]

एकाकी अबला को वनमें, नर कोई तजी अन्यायी ॥कहदे ॥२॥
कहूं मैं मांडनेरे क मां में वीती जितरी वात ॥ टेर ॥
दशरथ नृपनी पुत्र वधु में, रामचन्द्र घर नारी।
भामण्डल की भगिनी हूं मैं, जनक विदेह दुलारी ॥ कहूंमें ॥३॥

ढाल मूलगी—

एम सुणतां सचिव, राय परतीत सू राखी।
धुरथी छेह लगे मांडी, वाततो सवली भाखी॥
रोवन्ती राखी वही, मंत्रीने भूपाल।
पीली माटी पाणिये हो, गिवली हुवे ततकाल ॥सु० ॥७॥
निष्कपट थी अति प्रगट पणे, भाखे तवते भूप।
आज थकी तूं बेहनी, बन्धु अछूं अनूप॥
एक धर्म जेही करे, तेही सगो संसार।
सगपण तोछे कारमोहो, स्वामी तजी क्यूं नार ॥ सु० ॥८॥
भामण्डल जेहवो जाणी, राज ! मुझ घरे पधारो।
होई खिजमतदार, करूंछूं सफल जन्मारो॥
अवधारो अरदास, ए सोचतणूं नहीं काम।
वारम्वार विशेष थीहो, रायभणे अभिराम ॥ सु० ९॥
पीयरिए धसि जायए, सासरे जो दुःखपावे।
एहवात समरथ, त्रियाने कांईयन आवे॥
सूधी वाटां चालतां, जोकांटा भाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
तोही दुश्मन लोकमें हो, नारी नवि लाजन्त ॥ सु० ॥ १० ॥
लोक वचनथी राम, कामए कियो देखो।
उतरियां थीरोप, तुम्ह सरिसो पेखो॥
गवेपण करसेवणी, सुखनहीं लहे लगार।
चक्रवाक जिम एकलोहो, आणे आरति अपार सु० ॥ ११ ॥
शिविकाए बेसाड़ो, ताम सीताघर आणी।
आवी राय वियोगे, तिहां रहे राघव-राणी॥

धर्म ध्याने चित्त वासियो, आरती परही टाल ।
सुखसाता मांने घणीहो, पाछेही मन वाली ॥ सु० ॥ १२ ॥
अग्रसेना पति आवी, रामने चरणे लागी ।
वातविशेष विचार, कहेछेते अनु रागी ॥
'सिंहनिनाद अरण्यमें, प्रभुमें मूकी देवी ।
वातसुणी रथथी पडोहो, मूर्च्छाणी ततखेवी ॥ सु० ॥ १३ ॥
वनवाये लही चेतन अने, फिरफिर मूर्च्छा आवे ।
शुद्धनरही लगार ताम, गाढो दुःख पावे ॥
धीरज अति आलम्बीने, माताजी कही एह ।
सभलावी पण स्वामीने, वातभलीछे तेह ॥ सु० ॥ १४ ॥
उलम्भो तोतेणिए, सुणावी लीधो पहेलां ।
विगत विगतसुं वात, वातावी भाग्वी वहेलां ॥
जेमजेम निसुणे रामजी, सीता मुखना वयन ।
उपजतो जाये गणूंहो, तेमरनित्तमें चयन ॥ सु० ॥ १५ ॥
सदा राम तुम्ह काम, कियो सघलोही विमासी ।
कदहीन कीधो काम, जेहथी होवे हाँसी ॥
भाग्य दोपतो महायरे, ए अति उपज्यो रोप ।
सोनेन लागे इयामताहो, स्वामी सदा निर्दोष ॥ सु० ॥ १६ ॥
लोकोनी सुणी वात, नाथजी तमें दसे छोटी ।
बालपणा की प्रीत, तुणजेम नाणी त्रोटी ॥
मिथ्या दृष्टिनी सुणी, वातघणी विपरीत ।
छोडोंमति जिनधर्म नेहो, सत्यांजो फुन्दरीन ॥ सु० ॥ १७ ॥
एम सुणी मूर्च्छा पस्या, रघुनाथ नेराग ।
लक्ष्मण करी उपचार पला, मूर्च्छाही निवार ॥
उठाई ऊभाकिया, वैदनतो अनमान ।
किहांगई सीता सतीहो, प्यारी प्राण समान । सु० ॥ १८ ॥
जैन-श्वेताम्बर-पुस्तक-प्रकाशक-संस्था-बीकानेर

लखण! अततुम सखातुम, प्रियतुम, तुमहृदयेश।
आजहृदय की कहेगा तुमसे यह अवधेश॥
थेमिलेहुए दोफूल, एक डालीके ऊपर खिलेहुए।
जालिम हाथोंसे दोनोंहीटूटे, और दममें जुदेहुए॥
एकही वायुके झोंकेने, करडाले तितर-बितर दोनों।
रस्ता निहारतेहैं अपना, होकरके इधर-उधर दोनों॥

ढाल मूलगी—

लोकवचन विषव्याप, हुवोथो नृपने भारी।
सीता वचन गारुडमंत्रे, लीधो उतारी॥
घर आयानृप आपणे, तामकरे सम्भाल।
महियलमे म्होटी सतीहो, वादिही दिएजन आल॥ सु०॥ १९॥
लोक बोक जगमांही, एतो न्याय कहाणा।
परघर भंजन लोक, ए आज जणाणा॥
रूडोदेखी नाशके, भूंडराने[1] भोर[2]।
भोरोंनो वाह्यो[3] बहुहो, कीधो काम कठोर॥ सु०॥ २०॥
बहेरी[4] विकथा वात, पुरुष पुर देखण आंधो।
मूंगी कहेण कुबोल, कहे पणन लिये सांधी॥
परघर फरवा पांगुली, लूली परधन लेण।
एह गुणोंनो धारणीहो, कहेणी कही कहो केण॥ सु०॥ २१॥
मतो देण मंत्रीशसु, काम समारण दासी।
प्रीतवती प्रिय साथ, महासुख भोग विलासी॥
पुण्यवती प्रगटी खरी, क्षमावती संसार।
होईनहीं होसी नहींहो, सीता सरिसी नार॥ सु०॥ २२॥

---

१ खुशहोना = २ मूर्ख = ३ ठगायाहुवा = ४ – २० – पा० २१मीं गाथा ओंका अर्थ वधिर केशिर वात श्रवण करनेका, आंधीकेशिर पुरुष देखनेका, गूंगीके शिर कुवचन कहनेका, पांगली शिरपर-घर फिरनेका, और —ीके शिरपर-धन हरण करनेका कथनआवे, वैसा सीता के शिर यह न (झंठाआल) आया हुवाहै।

चन्द्र कमल शुक भृंग, नागणी अठाम शशिहर।
विमद्रु पंकज-नाली, कलस जख केसरी वर ॥
कुरमंत्र चकने फले, कोयल अने मराल।
ए शब्दो केरी उपमाहो, सीताने सुविशाल ॥ सु० ॥ २३ ॥
देवी कहीते दूरी, इद्रनी नारी अलगी।
अमरी नहीं आसनी, आपणे कामे वलगी ॥
देवीशची अमरी थकी, सीता रूप रसाल।
दैवे दीधीथी खरीहो, मैंन रखाणो वाल ॥ सु० ॥ २४ ॥

मुनिश्री रूपचन्द्र कृत चेपक—तर्ज नवीनरसीया—

अनुचित करडाला यह कार्य, सीयाको भेजदिवी वनमें ॥ टेर ॥
जद सीयको लंकसे साथ करीथी, तदवहां सुरगण साख भरीथी।
होगया वहां विश्वास पूर्णतया, दोषनहीं इसमें ॥ अनु ॥ १ ॥
सौतोंने मिल कार्य कियायह, जिससे जशकुम्भ फूट गया वह।
कैसे रकखू गृहबीच वातया, फैली पुरजनमें ॥ अनु ॥ २ ॥
लक्ष्मण लहु आकर समझाया, कथन उन्होंका दायन आया।
कर नादानी प्रति पुरानी, तोड़ दिवी छिनमें ॥ अनु ॥ ३ ॥
कठिन-कष्टअब कैसे सहेगी, किन तिरसी किनभूखी रहेगी।
खुद मरजासी वनचर खासी, सोचत रघु मनमें ॥ अनु ॥ ४ ॥

ढाल नुलगी—

लक्ष्मण भाखे ताम, रामजी अवधारो।
माणसनो एमढङ्ग, वात विगड्योही विचारो ॥
मरेन हजही वाहगो, ते रूसविये काय।
जेहन मानी चोलतीहो, काईहुवे पस्ताप ॥ सु० ॥ २५ ॥
गई निसा यो जाय, स्वामी अवहीनम्भालो।
पछी वरस्यांमेह, कहिये सुपरे परनालो ॥
रागभावे स्वामीनी, जोरनी अवनाई।
हीसे सहो एन जाणजोहो, पाछुकी आवे ॥ सु० ॥ २६ ॥
जाजो स्वमी तुम्ह आप, करीने पवा दिलासा।

लखण! अततुम सखातुम, प्रियतुम, तुमहृदयेश ।
आजहृदय की कहेगा तुमसे यह अवधेश ॥
थेमिलेहुए दोफूल. एक डालीके ऊपर खिलेहुए ।
जालिम हाथोंसे दोनोंहीटूटे, और दममें जुदेहुए ॥
एकही वायुके झोंकेने, करडाले तितर-बितर दोनों ।
रस्ता निहारतेहैं अपना, होकरके इधर-उधर दोनों ॥

ढाल मूलगी—

लोकवचन विपव्याप, हुवोथो नृपने भारी ।
सीता वचन गारुडमंत्रे, लीधो उतारी ॥
घर आयानृप आपणे, तामकरे सम्भाल ।
महियलमें म्होटी सतीहो, वादिही दिएजन आल ॥ सु० ॥ १९ ॥
लोक वोक जगमांही, एतो न्याय कहाणा ।
परघर भंजन लोक, ए आज जणाणा ॥
रूड़ोदेखो नाशके, भूंडराने१ - भोर२ ।
भोरोंनो वाह्यो३ वहुहो, कीधो काम कठोर ॥ सु० ॥ २० ॥
बहेरी४ विकथा वात, पुरुप पुर देखण आंधो ।
मूंगी कहेण कुवोल, कहे पणन लिये सांधी ॥
परघर फरवा पांगुली, लूली परधन लेण ।
एह गुणोंनो धारणीहो, कहेणी कही कहो केण ॥ सु० ॥ २१ ॥
मतो देण मंत्रीशमं, काम समारण दासी ।
प्रीतवती प्रिय साथ, महासुख भोग विलासी ॥
पुण्यवती प्रगटी खरी, क्षमावती संसार ।
होईनहीं होसी नहींहो, सीता सरिसी नार ॥ सु० ॥ २२ ॥

१ खुशहोना=२ मूर्ख=३ ठगायाहुवा=४– २० –पा० २१मीं गाथा ओंका अर्थ वधिर केशिर वात श्रवण करनेका, आंधीकेशिर पुरुप देखनेका, गूंगीके शिर कुवचन कहनेका, पांगली शिरपर-घर फिरनेका, और लुलीके शिरपर-धन हरण करनेका कथनआवे, वैसा सीता के शिर यह कथन (झठाआल) आया हुवाहै ।

सीताही भलं पावसेहो, नहीं अवरोंसूं लाग ॥ सु० ॥ ३३ ॥

दोहा आसावरी रागे—

हाथी तो जगमें घणा, पण ऐरावति एक।
उच्चेश्रव पण एकछे, अश्व अछेरे अनेक ॥ १ ॥
गंगोदक पण एकछे, पाणीनो नहीं पार।
'क्षीरोदधि' पण एकछे, 'अम्बुधि१' अवर अपार ॥२॥
'परमेष्ठी'२ पण एकछे, मंत्र घणा गुणवन्त।
सुदर्शन३ पण एकछे, अवर गिरि नहीं अन्त ॥ ३ ॥
दाता सुरतरु४ एकछे, अवर घणा दे दान।
'दशारणभद्र' पण एकछे, करे घणा अभिमान ॥४॥
'शालिभद्र' पण एकछे, घणा भोगवे भोग।
'थूलिभद्र' पण एकछे, घणा ग्रहे जग योग ॥ ५ ॥
तेम सीता पण एकछे, नारी नामछे लाख।
आंबलिए पहुंचे नहीं, आंबानी अभिलाष ॥ ६ ॥
मास दिवस पूरा हुआ, शुभवेला शुभवार।
सीताए सुत जन्मीया, युगल पणे सुखकार ॥ ७ ॥

ढाल पचपनमी—

तर्ज बाबू गोरड़िया गुणगारी।

सीता स्वामीनी सुत जाया, तेतो युगल पणे सुखदाया।
तव आनन्द अधिकापाया, तव गोरड़िए गुणगाया ॥
तव गुहिर निसाण गुड़ाया ॥ सीता ॥ १ ॥
ओछव अधिक मंडाया, बंधीवान छुडाया।
सुत जायां जेम कीजिये, त्यूंही सब कराया ॥ सीता ॥ २ ॥
बारमो दिन आया, नन्दन नाम धराया।
'अनंगलवण मुखामणो, मदनांकुश कहवाया ॥ सीता ॥ ३ ॥
पांच धायकी पालीया, सामलियां मनभाया।
हाथो हाथ मेलावे अमर चवीने आया ॥ सीता ॥ ४ ॥

१ समुद्र=२ नमुक्कार मंत्र=३ मेरु=४ कल्प वृक्ष=

सीता आणोगेह हमारी, सुणी अरदासा ॥
अवर गयां आवेनहीं, अवरोंनो नहीं काज ।
त्रिया-हितेतो दौड़ियेहो, नहीं ए वातां लाज ॥ सु० ॥ २७॥
वयसीने विमाने स्वामी, चमुपति[1] साथे लीधो ।
खेचरने परिवारे चाल्यो, आलस नवि कीधो ॥
'सिंह निनाद–अरण्यमें, आपगया ततकाल ।
अतुरता मिलवात णीहो, जोजो जगनी ढाल ॥ सु० ॥ २८ ॥
ऊभां आवीने तिहां, जिहां मूकीथी सीता ॥
नयणे नावी नारी, ठामते दीठा रीता[2] ॥
थल जल तरु गिरि सोधीया, शुद्धन लागी कोई ।
कर पटकीने बोलियाहो, पांचांसू प्रभु सोई ॥ सु० ॥ २९॥
कपरे चिलुरी वाघ, वेगकरी सिंह खाधी ।
कयेरे गिलो अजगरे, मूई भारण्डे लाधी ॥
लेईगयो परद्वीपमें, आपां अलगी वात ।
आंसू ढाली बाहुड्याहो, राघवजी विललात ॥ सु० ॥ ३० ॥
फिरीआया पुरमांही, स्वामी अतिकग्ता शोगो ।
माहारूं घर घाल्यूं[1] हों, अहो पुरवासो लोगो ? ॥
किस्यू करूं तुम साथजी, गीमघणी आवन्त ।
अवदोई कांईन गिमूंढो, गईतो नवि पाकन्त ॥ सु० ॥ ३१ ॥
प्रेत कामश्रीगम ताम, सीतानां करावे ।
शून्य रूपसहु देखी, हैयो अति आय भरावे ॥
हैयेतो हष्टेहींतो, आगे ऊभी आय ।
वचने पण श्री रामनेहो, सीता रहीरे सुहाय ॥ सु० ॥ ३२॥
ए चौपनमीं ढाल, रामजी रहे उदासी ।
शोक्योंनूं नसपूं काम, फोकहे मांडी फांसी ॥
'केशराज सीतातणू, जश अरु सौभाग्य ।

1 सेनापति (कप्तान) 2रिक्त–खाली

सीताही भलं पावसेहो. नहीं अवरोंमूं लाग ॥ सु० ॥ ३३ ॥

दोहा आसावरी रागे—

हाथी तो जगमें घणा, पण ऐरावति एक।
उच्चैश्रव पण एकछे, अश्व अछेरे अनेक ॥ १ ॥
गंगोदक पण एकछे, पाणीनो नहीं पार।
'क्षीरोदधि' पण एकछे, 'अम्बुधि[१]' अवर अपार ॥२॥
'परमेष्ठी'[२] पण एकछे, मंत्र घणा गुणवन्त।
सुदर्शन[३] पण एकछे, अवर गिरि नहीं अन्त ॥ ३ ॥
दाता सुरतरु[४] एकछे, अवर घणा दे दान।
'दशारणभद्र' पण एकछे, करे घणा अभिमान ॥४॥
'शालिभद्र' पण एकछे, घणा भोगवे भोग।
'थूलिभद्र' पण एकछे, घणा ग्रहे जग योग ॥ ५ ॥
तेम सीता पण एकछे, नारी नामछे लाख।
आंबलिए पहूंचे नहीं, आंबानी अभिलाष ॥ ६ ॥
मास दिवस पूरा हुआ, शुभवेला शुभवार।
सीताए सुत जन्मीया, युगल पणे सुखकार ॥ ७ ॥

ढाल पचपनमीं—

तर्ज थारू गोदडिया गुणगारी।

सीता स्वामीनी सुत जाया, तेतो युगल पणे सुखदाया।
तब आनन्द अधिकापाया, तव गोगड़िए गुणगाया ॥
तव गुडिर निमाण गुड़ाया ॥ सीता ॥ १ ॥
ओछव अधिक मंडाया, वधीवान लुटाया।
सुत आयां जेम कोजिवे, त्युंही गण करावा ॥ सीता ॥ २ ॥
बारसमो दिन आया, नन्दन नाम धराया।
'अनंगलवण' गुणामणो, मदनांकुश कहवाया ॥ सीता ॥ ३ ॥
पांच धायहूती पालीया, भामनियां मनभाया।
हाथो हाथ संचारजे अमर नरोने आया ॥ सीता ॥ ४ ॥

---

१ समुद्र=२ नमुस्कार मंत्र=३ मेरु=४ [illegible] वृक्ष=

सीता आणोगेह हमारी, सुणी अरदासा ॥
अवर गयां आवेनहीं, अवरोंनो नहीं काज ।
त्रिया-हितेतो दौड़ियेहो, नहीं ए वातां लाज ॥ सु० ॥ २७॥
बयसीने विमाने स्वामी, चमुपति[1] साथे लीधो ।
खेचरने परिवारे चाल्यो, आलस नवि कीधो ॥
'सिंह निनाद-अरण्यमें, आपगया ततकाल ।
अतुरता मिलवात णीहो, जोजो जगनी ढाल ॥ सु० ॥ २८ ॥
ऊभां आवीने तिहां, जिहां मूकीथी सीता ॥
नयणे नावी नारी, ठामते दीठा रीता[2] ॥
थल जल तरु गिरि सोधीया, शुद्धन लागी कोई ।
कर पटकीने बोलियाहो, पांचांसूं प्रभु सोई ॥ सु० ॥ २९॥
कपरे विलुरी वाघ, वेगकरो सिंह खाधी ।
कयेरे गिलो अजगरं, मूई भारण्डे लाधी ॥
लेईगयो परद्वीपमें, आपां अलगी वात ।
आंसू ढाली बाहुव्याहो, राघवजी विललात ॥ सु० ॥ ३० ॥
फिरीआया पुरमांही, स्वामी अतिकरता शोगो ।
माहारूं घर घाल्यूं[1] हों, अहो पुरवासो लोगो ? ॥
किस्यू करूं तुम साथजी, गेमघणी आवन्त ।
अबदोई कांईन गिमूंहो, गईतो नवि पाकन्त ॥ सु० ॥ ३१ ॥
प्रेत कामश्रीगम ताम, सीतानां करावे ।
शून्य रूपमहु देखी, हैयो अति आय भरावे ॥
हैयेतो दृष्टेहींतो, आगे ऊभी आय ।
वचने पण श्री रामनेहो, सीता रहीरे सुहाय ॥ सु० ॥ ३२ ॥
ए चौपनमीं ढाल, रामजी रहे उदासी ।
शोकयोंनूं नसर्‌पूं काम, फोकहे मांडी फांसी ॥
'केशराज सीतातणू. जश अरु सौभाग्य ।

१ सेनापति (कप्तान) २रित्त-खाली

सीताही भलूं पावसेहो. नहीं अवरोंमूं लाग॥ सु० ॥ ३२ ॥

दोहा आसावरी रागे—

हाथी तो जगमें घणा, पण ऐरावति एक।
उच्चेश्रव पण एकछे, अश्व अछेरे अनेक ॥ १ ॥
गंगोदक पण एकछे, पाणीनो नहीं पार।
'क्षीरोदधि' पण एकछे, 'अम्बुधि१' अवर अपार ॥२॥
'परमेष्ठी'२ पण एकछे, मंत्र घणा गुणवन्त।
सुदर्शन३ पण एकछे, अवर गिरि नहीं अन्त ॥ ३ ॥
दाता सुरतरु४ एकछे, अवर घणा दे दान।
'दशारणभद्र' पण एकछे, करे घणा अभिमान ॥४॥
'शालिभद्र' पण एकछे, घणा भोगवे भोग।
'थूलिभद्र' पण एकछे, घणा ग्रहे जग योग ॥ ५ ॥
तेम सीता पण एकछे, नारी नामछे लाख।
आंबलिए पहूंचे नहीं, आंबानी अभिलाष ॥ ६ ॥
मास दिवस पूरा हुआ. शुभवेला शुभवार।
सीताए सुत जन्मीया, युगल पणे सुखकार ॥ ७ ॥

ढाल पचपनमीं—

तर्ज बालू गोदड़िया गुणगारी।

सीता स्वामीनी सुत जाया, तेनो युगल पणे सुखदाया।
नव आनन्द अधिकापाया. नर गोंगड़िए गुणगाया॥
तन गुहिर निसाण गुडाया ॥ सीता ॥ १ ॥
ओछव अधिक मंडाया. बंधीवान छुडाया।
सुत जायां जेम कीजिये. त्यूंही सब करावा ॥ सीता ॥ २ ॥
बारमो दिन आया. नन्दन नाम धराया।
'अनंगलवण सुहामणो. मदनांकुश कहाया ॥ सीता ॥ ३ ॥
पांच धायकी पालीता. भामनियां मनभाया।
हाथो हाथ मंचायरे अमर बर्धाने आया ॥ सीता ॥ ४ ॥

१ समुद्र=२ नवकार मंत्र=३ मेरु=४ कल्पवृक्ष=

सीता आणोगेह हमारी, सुणी अग्दासा ॥
अवर गयां आवेनहीं, अवरोंनो नहीं काज।
त्रिया-हितेतो दौड़ियेहो, नहीं ए वातां लाज ॥ सु० ॥ २७॥
वयसीने विमाने स्वामी, चमुपति[१] साथे लीधो।
खेचरने परिवारे चाल्यो, आलस नवि कीधो ॥
'सिंह निनाद-अरण्यमें, आपगया ततकाल।
अतुरता मिलवात णीहो, जोजो जगनी ढाल ॥ सु० ॥ २८॥
ऊभां आवीने तिहां, जिहां मूकीथी सीता ॥
नयणे नावी नारी, ठामते दीठा रीता[२] ॥
थल जल तरु गिरि सोधीया, शुद्धन लागी कोई।
कर पटकीने बोलियाहो, पांचांसूं प्रभु सोई ॥ सु० ॥ २९॥
कपरे विलुरी वाघ, वेगकरी सिंह खाधी।
कयेरे गिलो अजगरे, मूई भारण्डे लाधी ॥
लेईगयो परद्वीपमें, आपां अलगी वात।
आंसू ढाली बाहुड्याहो, राघवजी विललात ॥ सु० ॥ ३०॥
फिरीआया पुरमांही, स्वामी अतिकग्ता शोगो।
माहारूं घर घाल्यूं[१] हों, अहो पुरवासी लोगो? ॥
किस्यू करूं तुम साथजी, गीमघणी आवन्त।
अबदोई कांईन गिमूंहो, गईतो नवि पाकन्त ॥ सु० ॥ ३१॥
प्रेत कामश्रीराम ताम, सीतानां करावे।
शून्य रूपसहु देखी, हैयो अति आय भरावे ॥
हैयेतो दृष्टेहींतो, आगे ऊभी आय।
वचने पण श्री रामनेहो, सीता रहीरे सुहाय ॥ सु० ॥ ३२॥
ए चौपनमीं ढाल, रामजी रहे उदासी।
शोक्योंनूं नसर्पू काम, फोकहे मांडी फांसी ॥
'केशराज सीतातणू, जश अरु सौभाग्य।

१ सेनापति (कप्तान) २रित्त-खाली

भव्यजीव जाण्या खरा, पात्र शिरोमणि पात्रो ।
जीतीतो कोई नासके होई माणम मात्रो ॥ सीता ॥ १८ ॥
विद्या विविध प्रकारनी, बहुनरे विज्ञानो ।
सिद्ध किया सिद्धारथे, म्होटा पुरुष प्रधानो ॥ सीता ॥ १९ ॥
वज्रजंघनी पुत्रिका, शशिचूला तस नामो ।
उदर लक्ष्मी रेवती तणे, उपजीछे अभिरामो ॥ सीता ॥ २० ॥
कन्यावर बत्रीशसूं, वज्रजंघजी तामो ।
अनंगलवण परणात्रीयो, कीधां उत्तम कामो ॥ सीता ॥ २१ ॥
पृथिवीपुर पति परगड़ो, पृथु नामा भूपाला ।
पटराणी अमृतवती, कन्या कनकमाला ॥ सीता ॥ २२ ॥
मदनांकुश ने मांगतां, नाये ते राजानो ।
वंश अजाणे क्यूं हुवे, कन्या केरो दानो ॥ सीता० ॥ २३ ॥
एम सुणी चढी चालीयो, वज्रजंघ शर सांधी ।
व्याघ्ररथ पृथु सहायजी, जीती आण्यो बांधी ॥ सीता० ॥ २४ ॥
पृथु भूपति ए तेडियो, पोतन पुर पति धाई ।
वार न लागी आवीयो, करे मित्र सहाई ॥ सीता० ॥ २५ ॥
वज्र जंघे सुत तेडिया, चाले अति मण्डाणे ।
लवणांकुश तो चालिया, वर्ज्या पण नवि माने ॥ सीता० ॥ २६ ॥
दोई पखे भट सामटा, मांड्यो अति संग्रामो ।
पृथु-बल आगे भाजीया, वज्र जंघ भट जामो ॥ सीता० ॥ २७ ॥
मातुल-सेना भांजती, लवणांकुश देखन्ता ।
कगे उठावणी आकरी, चान्द्या पृथु पेखन्ता ॥ सीता० ॥ २८ ॥

तान सेवक मूलगी—

उभय दल आपस में भिड़िया, नाना विध आयुध से लड़िया, केई नर भूमिपर पडिया । भाजती फौज देखी जाम, पृथु ने रीस आई ताम ॥ सत्यव्रतपालो ॥ ९७ ॥ पृथु कहे सुनिये अति जोर, आगे क्यों मामने मोरे । चन्द दिन जीता जो चाहो, नमन कर घर फिर जावो ॥ सत्य० ॥ ९८ ॥

चन्द्रकला जेम वाधही, बालपणे बालाय ।
शृग शरभ तणीपरे, राजाजी रींजाया ॥ सीता ॥ ५ ॥
सासूजी पगे लागतां, दीधीथी आशीषो ।
हम सरखा सुतजन्मजो, कीधो सफल जगीसो ॥ सीता ॥ ६ ॥
कौशल्या इक जाईयो, सीता दोई विदिता ।
कौशल्या थीतोघणो, अधिकाणी ए सीता ॥ सीता ॥ ७ ॥
सिद्ध पुत्रछे अणुव्रती, सिद्धारथ[1] अभिधानो ।
विद्यावल ऋद्धिकरी, सवविधि जाण सुजाणो ॥ सीता ॥ ८ ॥
विदेह आदि क्षेत्रविषे, स्वेच्छा विहारे ।
गगनगति सोताघरे, भिक्षाने पधारे ॥ सोता ॥ ९ ॥
चारु भोजन पानसुं, दीधो तसु अहारो ।
सुखपूछे सीताघणूं, उत्तर दिएते सारो ॥ सोता ॥ १० ॥
देव सुगुरु प्रसादथी, महारे वोतेही खेमो ।
दर्शन करूंजिन साधुनां, शुद्ध धरूं व्रत नेमो ॥ सीता ॥ ११ ॥
सो पूछे सीतासती, कोण अवस्था थारी ।
चरित्र सुणावो आपणो, धुरथीछह लगेभारी ॥ सीता ॥ १२ ॥
छाती भरी आवीघणी, भाईजाणी तासो ।
सो वानां राजाकरें, अतितो परघर वासो ॥ सीता ॥ १३ ॥
कहे अष्टांग निमित्तियो, करुणानी मति आणी ।
सुत लवणांकुश सारिसा, शी आरती तुझ राणी ॥ सीता ॥ १४ ॥
शुभ लक्ष्मण करी शोभता, जेम लक्ष्मण रामो ।
'लवणांकुश छे तेहवा, शा आरतिना ठामो ॥ सीता ॥ १५ ॥
देईअति आसासना, सीता सुसती कीध ।
आश वड़ी संसारमें, आशाए लंका लीध ॥ सीता ॥ १६ ॥
प्रार्थना कीधी घणी, पुत्र पढावो भाई ।
वी मानी सिद्धारथे, हरखी सीता माई ॥ सीता ॥ १७ ॥

१ इस नाम वाले मुनि,

भव्यजीव जाण्या खरा, पात्र शिरोमणि पात्रो ।
जीतीतो कोई नासके होई माणम मात्रो ॥ सीता ॥ १८ ॥
विद्या विविध प्रकारनी, बहुतरे विज्ञानो ।
सिद्ध क्रिया सिद्धारथे, म्होटा पुरुष प्रधानो ॥ सीता ॥ १९ ॥
वज्रजंघनी पुत्रिका, शशिचूला तम नामो ।
उदर लक्ष्मी रेवती तणे, उपजीछे अभिरामो ॥ सीता ॥ २० ॥
कन्यावर बत्रीशसूं, वज्रजंघजी तामो ।
अनंगलवण परणावीयो, कीधां उत्तम कामो ॥ सीता ॥ २१ ॥
पृथिवीपुर पति परगड़ो, पृथु नामा भूपाला ।
पटराणी अमृतवती, कन्या कनकमाला ॥ सीता ॥ २२ ॥
मदनांकुश ने मांगतां, नाये ते राजानो ।
वंश अजाणे क्यूं हुवे, कन्या केरो दानो ॥ सीता० ॥ २३ ॥
एम सुणी चढी चालीयो, वज्रजंघ शर सांधी ।
व्याघ्ररथ पृथु सहायजी, जीती आण्यो बांधी ॥ सीता० ॥ २४ ॥
पृथु भूपति ए तेडियो, पोतन पुर पति धाई ।
वार न लागी आवीयो, कष्टे मित्र सहाई ॥ सीता० ॥ २५ ॥
वज्र जंघे सुत तेडिया, चाले अति मण्डाणे ।
लवणांकुश तो चालिया, वर्ज्यां पण नवि माने ॥ सीता० ॥ २६ ॥
दोई पखे भट सामटा, मांड्यो अति संग्रामो ।
पृथु-बल आगे भाजीया, वज्र जंघ भट नामो ॥ सीता० ॥ २७ ॥
मातुल-सेना भांजती, लवणांकुश देखन्ना ।
करा उठावणी आकरी, चाल्या पृथु पेखन्ना ॥ सीता० ॥ २८ ॥

ढाल रोपक मूलगी—

उभय दल आपस में भिड़िया, नाना विध आयुध से लड़िया, के
नर भूमिपर पडिया । भाजती फौज देखी जाम, पृथु ने रोम आ
ताम ॥ सत्यव्रतपालो ॥ ९७ ॥ पृथु कहे सुनिये अवि छोरे, आ
क्यों सामने मोरे । चन्द दिन ठौरा जो नाबो, समन कर
फिर जाबो ॥ सत्य० ॥ ९८ ॥

मुनि श्री रूपचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज कांईरे जबाब करूं रसिया-

कांईरे मिजाज करे झूठो, झूठोजी झूठो साफ है झूठो, तो पर आज सीयासुत रूठो ॥ टेर ॥ मिजाज करे क्यूं इतरो मन में, ओ सब साज उडेगो छिन में ॥ कां० ॥ १ ॥ थोथा चणा जिम अधिको वाजे, मो आगे भाजतां तव कुल लाजे ॥ कां ॥ ॥ २ ॥ निज बलमें क्यों भूले भोले ! तुने पकड़ पछाडूं एक ही ठोले ॥ कां० ॥ ३ ॥ काहे करो ओख्यों काढ़ डरावे, क्या मझाल तूं हमको जीत के जावे ॥ कां० ॥ ४ ॥ आंटीले भूप आये भगती में, तो सम ढोर किसी गिनती में ॥ कां० ॥ ५ ॥ क्यों लड़ने को सन्मुख आवो, मर मम हाथों क्यों पाप लगावो ॥कां० ॥ ६ ॥ कीडी पर कटकी नहीं करते, तो निर्बल वृद्ध से कबहु न लरते ॥ कां ॥ ७ ॥ वृद्ध पणे झगड़ो नहीं कीजे, श्री शार्दूल शिष्य कहे समता ही लीजे ॥ कां० ॥ ८ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

छोरा ए बोलीरां वेड़ा, देख्या नहीं एबदार एडा, भागो मत आवो अब नेड़ा। मच्यो तब द्वन्द युद्ध भारी, बांध लियो पृथु ने तिणवारी ॥ सत्य० ॥ ९९ ॥

ढाल मूलगी—

लवणांकुश हसि बोलिया, ए अण जाण्यो वंशो।
तसु आगे क्यूं भांजता, पामी वंश प्रशंसो ॥ सीता० ॥ २९ ॥
पृथु भाखे कुंवर सुणो, वंश जणाणो आजो।
पराक्रम वंश न सही सके, अष्टापद घन गाजो ॥ सीता० ॥३०॥
'वज्रजंघ' सूं 'पृथु' कहे, अंकुशनें मैं दीधी।
कनक मालिका बालिका, परणावो पर सिद्धि ॥ सीता० ॥ ३१ ॥
रंगहुओ दोई नृप में, कीधो कटक पड़ावो।
एटले चाली आवियो, नारदजी ऋषि रावो ॥ सीता० ॥ ३२
रंग रली दोई दलां, देखी पूछे साधो।
दीसो छो रस रंगमें, कहो किस्यो तुम्ह लाधो! ॥सीता ॥ ३३

कन्या पृथु राजा तणी, 'अंकुश सुं परणेतो ।
कीजे छे ते जाणवो, हर्ष तणो संकेतो ॥ सीता० ॥ ३४ ॥
सबलानो ए जोहरो, तेरे गुदिनो पावो ।
वंश कहो कुंवरां तणां, जेम वधे चित्त चावो ॥ सीता० ॥३५॥
नारद भाखे नयणछे, तेतो देखे भानो ।
ए आंधाने पूछवो, किस्यो अछे रवि छानो ॥ सीता० ॥३६॥
आदि हुआ आदीश्वरू, आदि नाथ जगदीशो ।
भरत हुओ सुत तेहनो, ते पण धुरे चक्रीशो ॥ सीता० ॥ ३७ ॥
पुरुष पनोता होवता, इणही वंश विख्यातो ।
पुरी अयोध्या प्रगटिया, राम सु लक्ष्मण भ्रातो ॥ सीता० ॥३८॥
गर्भ विषे जब ए हुता, लोक-वचन ने त्रासो ।
पामी राम दिवाड़ियो, सीता ने वन वासो ॥ सीता० ॥ ३९ ॥
रामचन्द्र ना नन्द छे, सीता उदर उत्पन्न ।
वंश इक्ष्वांकु ना विषे, म्होटा पुरुष रतन्न ॥ सीता० ॥ ४० ॥
अंकुश कहे ऋषि रायजी, भलोन कीधो एहो ।
कारण अति अबला भणी, क्युं देवाए छेहो ॥ सीता० ॥ ४१ ॥
लवण कहे ऋषिता पुरी, कहो छे केतिक दूर ? ।
साठ अने शत योजन, दीसे एह हजूर ॥ सीता० ॥ ४२ ॥
वज्र जंघ कहे कुंवरां, अब चालो निज थानो ।
लक्ष्मण राम देखाड़सुं, शुभपणे मन मानो । सीता० ॥ ४३ ॥
मानी वात विशेषथी वज्रजंघजी भाखी ।
कनक माला परणाविये, अंकुश रवि-शशि-साखी ॥ सीता० ॥४४॥
पंचावनमी ढाल में, सुर तणो ने सूरो ।
केशराजजी तो कहे, जो पूर्व पुण्य अंकुरो ॥ सीता० ॥ ४५ ॥

दोहा सोरठ राग—

'वज्रजंघ पृथु रायजी, लवणांकुश सीलार ।
चाल्या दलबल साम्हटे, गाम्हनै देश अपार ॥ १ ॥

१ साथीन सम्मेकी =

पहेलीतो लोकाक्षपुरी, लवणांकुश आवन्त।
'कुबेरकन्त जी रायजी, जीती जश पावन्त॥ २॥
रायकर्ण लंकाकपति, जीती लीधो जेह।
भ्रातृशत विजयस्थली, आण मनाव्या एह॥ ३॥
उतरिया गंगानदी, जिहांछे गिरि कैलाश।
तिहांथी उत्तर नेदिशे, आयाधरी उल्हास॥ ४॥
नन्दनचारु देशबहु, जीती लीधा स्वामी।
सिंहल कुन्तल ए, जीत्याछे जश पामी॥ ५॥
'भूतरवादि कालाम्बु, नन्दी नन्दन देश।
'भीम शूल शलभातल, साधीलिया सुविशेष॥ ६॥
साधीलिया सुखमेंसहु, सिंधुना[१] परकूल।
अनारज[२] ने आरजा, कीधो सघलो सूल॥ ७॥

देशबहु साधिवन्या, साथेघणा भूपाल।
पुण्डरीक पुरी आवीया, लवणांकुश सुविशाल॥ ८॥
'वज्रजंघ धन्य रायजी, जेहता ए भाणेज।
एम सुणतां घर आवीया, माय मिलणनूं हेज॥ ९॥
'लवणांकुश बहु रायसुं, प्रणमे माता पाय।
मातादे आशीपड़ी, वधजो अधिको आय॥ १०॥
नन्दननें नीकीपरे, करजे तुं करतार।
राम-लक्ष्मण सारिसा, भूमितणा भरतार॥ ११॥
वज्रजंघने कहे कुंवरां, एहछे अवसर सार।
पुरी अयोध्या जायके, कीजे तात जुहार॥ १२॥
'लम्पाक कालाम्बू लंका, और सुकन्तल चूल।
'सरभानल ओदघणा, साथे हुआ अनुकूल॥ १३॥
प्रयाणनी भम्भाभली, देवाड़े अभिराम।
साहण वाहण सामटे, कुंवर चाल्या ताम॥ १४॥

१ सिंधुनदीके पर नादेश २अनार्य—और आर्य

ढाल छपनमीं तर्ज कडवरांनी—

आवेरे दोई लवणांकुश सजी, साजी तात प्रत्ये ।
आपो देखावण करी विधिसाजा, चाल्या करी अधिक दिवाजा ॥ १ ॥
रोवन्ती माताजी बोले, किस्यूं करो तुम एहो ।
युद्धतणी विधि सजी चाल्या, मुझमन एह अन्देहो ॥ आ० ॥ २ ॥
पितृ१ पितृव्य२ तुम्ह दुर्जय३, पहूंची सकेनहीं देव ।
तीन लोकनो कण्टक रावण, मारी लियो ततखेव ॥ आ० ॥ ३ ॥
ठूंठतिके नवि वायेहाले, मेरु नविगाये कम्पे ।
म्होटासूं लड़वूं नविगोवा, पुत्रांसू मा-जम्पे ॥ आ० ॥ ४ ॥
जलधर केरी गाजसुणीने, अष्टापद अति कोपे ।
कूदी कूदी निज गोड़ा तोड़े, पण घनने नवि लोपे ॥ आ० ॥ ५ ॥
विनय करेवा जोतुम्ह जावो, तो तुम्ह वेगा होवो ।
पूज्य पूज्यां पीड़ प्राजे, एह विमासी जोवो ॥ आ० ॥ ६ ॥
पतिविनमें तुम्हसूं मन बांध्यू, तुम्हविन सी गतिम्हारी ।
रांकतणा छोरुआछो येतो, मनहीं चलोमें धारी ॥ आ० ॥ ७ ॥
पुत्रकहे माजी तुम्ह साचा, जेम किगारा काजो ।
तेहि साथे न मिले मन मोती, तूट्यां मेघ आकाशो ॥ आ० ॥८॥
माताजी कहे पुत्रनिगुणो, ए रहिवायो कामो ।
कानणहारी तारतणीपरे, जोड़ही अभिरामो ॥ आ० ॥ ९ ॥
पुत्र तुम्हारा हमछों एहवी, किम कहि राचे वानो ।
छोहरा ए छोंडनी केरा, इमही कहसे नातो ॥ आ० ॥ १० ॥
आनन्द कारी मातईने, युद्ध तणूंनो नामो ।
कुल दोईनो उज्जल, सुन्दरछे संग्रामो ॥ आ० ॥ ११ ॥
एमकहीने चल्या कुंवर, रोनी मेली मावां ।
उत्साहवन्त महन्त कटकसूं, रेणुरही नभ छावी ॥ आ० ॥ १२ ॥
कुठार कुद्दालतणा सम्वाहण, हाग दसही हजारो ।

१ पिता (राम)-२ काका (लक्ष्मण)-३ कोई भी जीत सके नहीं ।

पन्थतणा तरु छेदी सूधो, कीधो पन्थ अपारो ॥ आ० ॥ १३ ॥

ढाल क्षेपक मूलगी—

अनुक्रम अवधपुरी आया, डेरा पुरबाहिर लगवाया, सैन्यसे पुरसब घेराया । दूतने खबर आयदीनो, राम रु लिछमन सुनलीनो ।

व्रत पालो १०० । सेनापति सेना ललकारो युद्धकी खूनकरी यारी, भुजास्फोट सुभटकरे भारी । सैन्यद्वय आपसमें मिलिया, समर रा सौंखी महाबलिया ॥ सत्य ॥ १०१ ॥

ढाल मूलगी—

सेनानीसूं अबी अडिया, अतिबलवन्ता दोई ।
नहीं सेनानी कह्यूरे सारे, एहसुणे प्रभु सोई ॥ आ० ॥ १४ ॥
सौमित्री कहे एरे पतंगा, आतुर अति देखाता ।
आरति पराक्रम पावक मांही, करवा झंपापाता ॥ आ० ॥ १५ ॥
एमकहीने राम-सुलक्ष्मण, सुग्रीवादिक लारो ।
युद्धभणी चाली सहामीआया, कोईन लाई वारो ॥ आ० ॥ १६ ॥
एटले नारद नेमुख सांभली, भांमण्डलजी भाई ।
गोचन्तीकहे भाई! मुझसूं प्रभुजीतो ए कीधी ।
खुणस करीने तुम्ह भाणेजा, लडवानो मति लीधी ॥ आ० ॥ १८ ॥
'भांमण्डल कहे रामे करियो, जेमतूं त्यागी बिगाड़ो ।
अणजाण्यांए दोई हणवा, करसे नहीं विचारो ॥ आ० ॥ १९ ॥
जबलगे विणसे एनहीं कारज, तबलग दौडीजावा ।
करूं निवेडो वात जणाची, रामहीं रोष मिटावा ॥ आ० ॥ २० ॥
एमसुणी सीता भामण्डल, बैसी विमाने आवे ।
,लवणांकुश धसी माताजीने, चरणे शीश नमावे ॥ आ० ॥ २१ ॥
'सीता कहे भामण्डल भाई, थोंरो मामो साचो ।
माताने भाणेजा मांहे, नेह जणाणो जाचो ॥ आ० ॥ २२ ॥
[illegible] उठाई ऊंचा, लीधा कण्ठ लगाई ।
[illegible]र चुम्बी खोले बेसाडी, मामोकहे सुखदाई ॥ आ० ॥ २३ ॥

वीरतणी पत्नी नी कीर्ति, पहिलीथी जगमांई ।
वीर प्रसूनी कीर्ति बीजी, ए पामीते आही ॥ आ० ॥ २४ ॥
वीरतणासुत वीर अछोतुम्ह, कामकरोरे विमासी ।
पितृ वंशों माथे लडतां, होसे जगमां हासी ॥ आ० ॥ २५ ॥
जेहने रणमां राजा रावण, आपणपे रे मराणो ।
प्रगटपणे एनोरे पचाड़ो, सघलेही रे मनाणो ॥ आ० ॥ २६ ॥
लवणांकुश कहे मामाजी तुम, वात करो ए फीकी ।
आवी मिल्यां उसरिया अलगां, वात न लागे नीकी ॥ आ०॥२७॥
एम कहन्तां दोई पक्षना, शूर अति सम्भाया ।
स्वामी तणो ए काम समारण, अधिकपणे उमाया ॥ आ० ॥२८॥
सुग्रीवादिक सगही खेचर, भूचर भटने डगवे ।
भामण्डल खेचर साथे, गण्डे सरिये दावे ॥ आ० ॥ २९ ॥
लवणांकुश अंकुश सरिसा तोला, शूर शिरोमणि शूर ।
राम तणा भट उपर आवे, जेम आवे जल पूर ॥ आ० ॥ ३० ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायण में से-

इतनी समग सेना-सहित, आ पहुंचे कपिराज ।
बोले-हे लघु बालकों ! संभलो रणमें आज ॥
अच्छा तो यह है- धनुष बाण, धरती पर धरो लड़ाई में ।
सुग्रीव देखकर डरता है, आजाय न मौत लड़ाई में ॥
लंका विजयी दलके आगे, मत यह प्रत्यञ्चायें फेरो ।
अपने सदन में जाकर के तुम्ही रमो कर शिशुपन जेरो ॥
कुश बोले क्या तुम्हीं हो, वानर-पति सुग्रीव ।
भागे हमारे तुल्य सभे, देखे पहले जीव ॥
भय भाग साहसगति से तुमने फिर राम-लखन को बुलाया था ।
वह हृदय सुधारक है जिसने, उस योद्धा को मरवाया था ॥
बालक नहीं पर युद्ध रहे थे, उन्हों के तीर ।
जीत लिया सुग्रीव का, उनमें बुद्धि गंभीर ॥

बोले-बस बस मुंह बंध करो, क्यों विष टपकाये जाते हो।
मट्टी के ढेले होकर तुम, गिरि-शिखरों से टकराते हो॥
ऐसा कह कर कुश के उपर, दौडे सुग्रीव मिटाने को।
धाता है राहु दिवाकर पै, जिस तरह ग्रास कर जाने को॥
लेकिन रास्तेही में कुश ने, सम्पूर्ण वीरता हरडाली।
बाणों से नयनों के आगे, बस चका चौंधसी कर डाली॥
लड़ते लडते सुग्रीव थके, पर बालक का तन छुआ नहीं।
कुश वैसेही मुसकाते थे, मानों अब तक कुछ हुआ नहीं॥

बोल उठे कुश--कर चुके, पूरा तुम अरमान।
अब बच्चों का बाणभी, स्वीकारें श्रीमान्॥

जैसेही कुशके धन्वासे छोटासा शर कुश का पहूंचा।
सुग्रीव मूर्च्छावन्त हुवे, माथा घूमा कांपा पहूंचा॥
अङ्गद दौडा ज्यूं ही उसने, कपिपति को गिरजाते देखा।
आगया उबाल नेत्रों में, जब लव को मुसकाते देखा॥
बादल की नाई आकर के-गर्जे-बच्चे ! क्यों हंसता है !।
ऐसा होता ही आया है, दो लड़ते हैं एक गिरता है।
राजा के गिरजाने का बदला, अङ्गद युवराज चुकायेगा।
हो सावधान हंसने वाले, यह नाहर तुझे रुलायेगा॥

लव बोले क्यों व्यर्थ ही, बकता ओ बाचाल।
नाहर तूं कबसे हुआ, ! विदित हमें सब हाल॥

जबसे स्वामी घातीके पगमें, यह अपना शीष झुकाया है।
तब से ही इस दुनियों में, नाहर पन तूने पाया है।
अच्छा नाहरजी घर जाओ, क्यों प्राण गँवाने आये हो।
यह रावण का दरबार नहीं, जो पैर जमाने आये हो॥

कैसे सह सकता भला, अंगद 'लव' के वैन।
बाल-भास्कर की तरह, अरुण होगये नैन॥

गम्भीर गर्ज के साथ साथ बस गदा चलादी बच्चों पर।

लेकिन सबने देखा वह थी, 'कुश' के बाणों की नोकों पर ॥
इतनेमें लवने शरछोड़ा, शिर घूमा जिससे अंगद का ।
पृथ्वी पर गिरतो गया किन्तु, तन लाल था रीस अंगद का ॥

ढाल मूलगी—

सुग्रीवादिक 'भामण्डल' सूं, पूछे ए कुण होई ? ।
'भामण्डल' कहे सीता जाया, राम तणा सुत दोई ॥आ० ॥ ३१ ॥
आवी सीता चरणे लाग्या, खेचर बैठा आगे ।
'लवणांकुश' उठावणी आगे, राम तणा भट भागे ॥ आ० ॥३२॥
जिहां तिहां रण रंगही खेले, हरि जेम मृग-वन मांही ।
रथ सारथी नेरे निखेदी, एक न कोई साही ॥ आ० ॥ ३३ ॥
राम सु लक्ष्मण सामा आया, देखी सुन्दर ताई ।
कोई शूर ऊपन्या आई, जोई रह्या लोभाई ॥ आ० ॥ ३४ ॥
नयणे नेह जणावे निजसुं, परस्तु पोसे द्वेषो ।
नयणोंना निन्याती भाख्या, लिखे लई सयल विशेषो ॥आ०॥३५॥
मनतो मिलवाने उमाहे, चलती तामस जागे ।
एही अवसर छे कांई ज्ञानी, न रहे संशय तग आगे ॥आ०॥३६॥
लवण कहे रघुपति सुं रूड़ी, अङ्कुश लक्ष्मण साथे ।
चोर सहस अक्षोहणीनो पति, तुम हण्यो निज हाथे ॥आ० ॥३७॥
मोरे हम तुम साथे अड़िया, सुजश दियो जग नाथे ।
अस्त्र शस्त्र सं अति लड़िसुं, नहीं नर पड़िसुं पाधे ॥ आ० ॥३८॥
रावण सुं लड़तां न थाक्या, सो अब लड़ो हम सेती ।
हमतो आदि थकी अब लड़सां, क्षत्रीनी ए रीती ॥ आ० ॥३९॥
एमसुणीने राम-सु लक्ष्मण, लवणां कुश दो वीर ।
धनुष्य चढ़ायो सन्मुख आवे, मेरु तणी पर धीर ॥ आ० ॥४०॥

श्री राधेश्याम रामायण में से—

देखी जब निज साथियों की, सब दिशी में हार ।
लक्ष्मण तत्क्षण होगये, लड़ने को तैयार ॥

सोचा-जगविजयी सेना का, इस तरह भागना लज्जा है।
बच्चों से रघुकुल का दबना, सचमुच कलङ्क का टीका है॥
परबच्चे यह बच्चेक्याहै, बेजोड दिलेर जहांकेहैं।
शायद ब्रह्माने प्रथमबार, सिरजे यहबच्चे वहांकेहैं॥
अस्तु शीघ्रतासे वहां, पहुंचे यह बलवान।
जहां बालके खड़ेथे, तानेहुए कमान॥
देखा-कितनेही योद्धागण, पृथिवीपर शयनकर रहेहैं।
बातिनमें सबमें सांसेहैं, जाहिरमें सभी मर रहेहैं॥
हतको देखातो आहतथा, आहत हतसा दिखाताथा।
कितने हतथे कितने आहत, यहजोड नजोडा जाताथा॥
वहशान्त विपिनकी तपो भूमि, उसओर लालहो दमकीहै।
उसलाली-मेंकुन्दन जैसो, शस्त्रोंकी ढेरी चमकीहै॥
मनों विपिन स्थलिने ओढा, यह सुर्ख दुपट्टा तारो का।
या लाल प्रभाने पहना है, यह गहना मुक्ताहारों का॥
दूसरी ओर यह भी देखा-दो बच्चे धनुष-चढाये हैं।
उस अवधपुरी के शासन-पर, अपना अधिकार जमाये हैं॥
बोले-सुकुमारों ? धन्य तुम्हें, सचमुच अद्भुत बल पाया है।
किष्किन्धा के गर्वीलोंको, रणमे नीचा दिखलाया है॥
लेकिन रघुवर को-रघुकुल को, ब्रह्मा भी हरा नहीं सकता।
सागर कितनाही बढे मगर, सूरज को डुबा नहीं सकता॥
इसलिए फौज को लौटादे, तुमसे रन करना ठीक नहीं।
बच्चोंकोमार बाल-हत्या का, अघ निजशिर पर लेना ठीक नहीं॥
कुश बोले यह ठीक है, कहते जो श्रीमान्।
किन्तु हमारी भी विनय, सुनिये धर कर ध्यान॥
ईश्वर-भक्तों का प्रथम कर्म, ईश्वर की भक्ति करना है।
फिर ईश्वर भक्तों ही की, इस जग में वृद्धि करना है॥
ईश्वर-भक्तों की वृद्धी को, धर्मी राजा आवश्यक है।

सङ्गीत जमाने की खातिर, सुन्दर बाजा आवश्यक है ॥
हम खूब जानते हैं-रघुपति, रैय्यत का पालन हारा है।
लेकिन वह त्रिभुवन विजयी नर, नारी के द्वारा हारा है ॥
सीता साध्वी के कष्टों ने, करदिया नष्ट उसके बल को।
अब नहीं बढ़ाई जग देता, लङ्का किष्किन्धा कौशल को ॥
इस लिए जगत का धर्म हुआ, उससे सिंहासन ले लेना।
जो व्यक्ति योग्य हो शासन के, उसको ही शासनदे देना ॥
अतएव देश के नाते से, हम को यह धर्म चुकाना है।
उस मद से भरे महिपतिका, मद सब विध्वंस कराना है ॥
अच्छा ये बातें जाने दो, अब योद्धा पन की बात करो।
याती वापिस घर को जाओ, या आओ रन की बात करो ॥
लक्ष्मण बोले क्षत्री के प्रति, ऐसा कटु वाक्य न अच्छा है।
क्षत्रीतो फिरने के बदले, रनमें कट जाना सीखा है ॥
जिसने रावन को संहारा है, उसको तुम भीरू समझते हो।
ठहरो इन बाणों से बिंधकर, क्षण यम लोक पहुंचते हो ॥
अब क्या था दोनों तरफ, खिंचे धनुष और बान।
क्षण भर में होने लगा, युद्ध घोर घमसान ॥

ढाल सूनगी—

एम सुणीने राम-सु लक्ष्मण, लवणांकुश दो वीर।
धनुष्य चढ़ाती सन्मुख आवे, मेरु तणो पर धीर ॥ आज ॥ २० ॥
रामतणा रथनो सारथियो, सेनापतिजे सुहावे।
वज्रजंघजी लवण तणोरथ, खेड़वे जय पावे ॥ आज ॥ २१ ॥
वीरविराध लक्ष्मण रथआगे, पृथु अंकुश रथने ।
रथ सारथिया चारई मसवत, एक एकने छेड़े ॥ आज ॥ २२ ॥
पितृ पितृव्य जाणीजाणी, कुंवरजीनो संह।
प्रभुजीपुरो-नंदन जाणे, चोट करन निःशंक ॥ आज ॥ २३ ॥
विविधायुध विनिमयेरे, लड़े इम बनाते।
रामकुं छेद रथवाही, लिये नाखि दिगन्ते ॥ आज ॥ २४ ॥

कहे सारथी हंयनहीं हाले, पीड़ाणा शरघावे ।
कर्या घावसूं ताडतांही, पाछाही पगठावे ॥ आ० ॥ ४५ ॥
रथ प्रभुजीनो सिथिलहुओअति. वयरिये अति ताड्यो ।
करी सिथिलता खेंचत रश्मी, अरि तोही न नमाड्यो ॥ आ०
राम कहे न पड्या कर ढीला, कोई काम इण सारे ।
सो कर ढीला आज पड्याछे, सांसो कोण निवारे? ॥ आ ॥ ४
वज्रा वर्ता धनुप धणीनूं, सघलू काम समारे ।
सोही मुंडो फेरी रहीयो, वातपड़ी अविचारे ॥ आ० ॥ ४८
मूसल-रत्न दलन वल अरिनूं, सो पण ढीलो पड़ियो ।
अरिगंजन अंकुश स हल ए, एही अहिसूं न चि अड़ियो ॥ आ०
जक्ष हजारे से वितछे रे, हल मूसल ए स कामा ।
कोई अवस्था केरे केडे, हुआ आज निकामा ॥ आ० ॥ ५०
राघवनां जेम जेम लक्ष्मण नां, सघलाही उप कर्मो ।
जेकीधा तेसाम्रां नायां, जग जागन्तो धर्मो ॥ आ० ॥ ५१ ॥

चेपक राधे श्याम रामायण में से

लक्ष्मण जिस समय अग्नि-शर से, सर्वत्र अग्नि फैलाते थे ।
कुशल तभी बाण से जल वरसा, तत्क्षण उसे बुझाते थे ॥
फिर लक्ष्मण अपना बाण छोडा, जब जल को घीसा करते थे
कुश तभी वाण से रेते के, घी को मट्टी सा करते थे ॥

धीरे धीरे बड़ चला, वैज्ञानिक संग्राम ।
घटा जभी छाई इधर, उधर खिलगई घाम ॥

बाणों ही बाणों के द्वारा, नाना प्रकार के ज्वर आये ।
बाणों ही बाणों के द्वारा, सब नष्ट हुवे सब बिल गाये ॥
माया की सेनायें बनकर, लड़ती थी मरती जाती थीं ।
धोखे की शक्लें धाती थीं, बनती थीं मिटती जाती थीं ॥

जब वैज्ञानिक युद्ध का, होने आया अन्त ।
तन्त्र शक्तियों की बनी, वह रण भूमि तुरन्त ॥

उच्चाटन-मारण-वशीकरण-, सम्मोहन आदि तन्त्र आये ।
इन तन्त्रों ने इन मन्त्रों ने, कितने ही कौतुक दिखलाये ॥
लड़ते थे कभी प्रगट होकर, ओर कभी गुप्त हो जाते थे ।
नाना प्रकार की लीला से, वीरता वीर दिखलाते थे ॥

ढाल मूलगी—

एटले अंकुश वाणे हणीयो, हैये लक्ष्मण काको ।
मूर्च्छाए पड़ियो रथमांहीं, अंकुश कीधो शाको ॥ आ० ॥ ५२ ॥
मूर्च्छाए पड्यो प्रभु पेखी, रथतो घरने चलायो ।
वीर विराध विचारी वारु, स्वामी संज्ञापायो ॥ आ० ॥ ५३ ॥
वीर विराध सूं प्रभु बोलियो, अनुचित कार्य तें कीधो ।
राम लड़े रस रंगे रणमें, मुझ रथ घरने लीधो ॥ आ० ॥ ५४ ॥
लेई रथ रणमें अरिने हणीश, चक्र छेदी शीशो ।
लक्ष्मणजी फरि रणमें आयो, उपजी छे अति रीसो ॥आ०॥५५॥
रे ! अंकुश कुंवरा तृण जेम तोड़ू, कोई न लावूं वारो ।
चक्र चलावे अरिने दावे, अंकुश सुतनी लारो ॥ आ० ॥ ५६ ॥
देई प्रदक्षिणा पाछो वलियो, लक्ष्मण ने करे बेठो ।
जेम तरु पंखी उडी अपूठो, आवी माले पेठो ॥ आ० ॥ ५७ ॥
फिरी मुकीयो सो फिरी आयो, पण्डित ताम विचारे ।
गोतीने पहुंचे ए गुण गिरुओ, सो युंही क्यूं मारे ॥ आ० ॥ ५८ ॥
राम-सु लक्ष्मण आरती आणे, वासु देव बल देवा ।
ए दोई भाई ऊपजीया, पदवी ए हम लेवा ॥ आ० ॥ ५९ ॥
एह छपस्थमां हाले कुंवरा, किरती अधिक दे[illegible] ।
केशराज जग जेता जेथी, ते आगे जश पाता ॥ आ० ॥ ६० ॥

दोहा रामायणे—

'सिद्धारथ माधेकरी, नारद ऋषि [illegible] ,
सिमिमूं करतां वन्दना, गाढो मुग्ध [illegible] ॥ १ ॥
दुश्चिन्ता देखी रामने, नारदजी [illegible] ।

कोण कारण आरतितणूं, राघव कहे तुरन्त ॥ २ ॥
फोड़ादाधां ऊपरे, कांपीड़ो ऋपिदेव ।
भूमि पराई थापछे, आवे ए अहमेव ॥ ३ ॥
एआया बलियामहा, नहीं हमारो ताल ।
कारण ए आरतितणूं, ऋपिभाखे सुविशाल ॥ ४ ॥
हर्प-थान विपवादयह, कांईकरो रघुनाथ ।
एह सुबोल सुहामणा निसुणो सघलो साथ ॥ ५ ॥
ए जाया सीतातणा, युगलपणे अभिराम ।
लवणांकुश अभिधानथी, पुत्र तुम्हारा राम ॥ ६ ॥
त्याग तणोदिन थुरथकी, युद्धतणो दिनअन्त ।
सम्भलायो श्री रामने, सीतानो विरतन्त ॥ ७ ॥
प्रभुजीने मिलवाभणी, आया आणीस्नेह ।
आप जणावण कारणे, करी देखावी एह ॥ ८ ॥
एहनीए अहिनाणिका, मनस्यूं करो विचार ।
चक्र अपूठोतो फर्यो, जो सगपण व्यवहार ॥ ९ ॥
अदिनाथनां पुत्रनी, निसुणी होसे वात ।
'बाहुबल भाईतणी,चक्रेन कीधोघात ॥ १० ॥
तुमढालीने तुमतणी, अवरां शिर केमहोय ।
हाथीजाया हाथीया, साथे लडन्तो जोय ॥ ११ ॥
विस्मय पीड़ा खेदनो, हर्पहैये नसमाय ।
मूर्च्छाखाई धरणी पड्या, लीधा ताम उठाय ॥ १२ ॥
आंखेआंसू नांखता, लक्ष्मण लीयालार ।
पुत्रोंने मिलवा चल्या, कोईन लायावार ॥ १३ ॥
स्वरथ[1]थी तब ऊतर्या, आवन्ता प्रभुदेख ।
'लवणांकुश सकुमारजी, विनयकरे सुविशेप ॥ १४ ॥
हाथांथी हथियारजे, अलगा नांख्या ताम ।

१ स्पन्दनथी-इति पाठान्तरे (अपने रथसे)

राम-अने लक्ष्मण तणे, चरणकरे प्रणाम ॥ १५ ॥

ढाल सत्तावनमी—तर्ज बूढ़ा आडा डोकरा रे मोहना—

चन्दन शशीजल छांयड़ीरे नन्दना, शीतलहोई अपाररे नन्दन परम ॥ ते नवि पूजीहीरे नन्दना नन्दन वडो संसार रे ॥ नन्दन है पियारे ॥ टेर ॥ १ ॥ नन्दना रे नन्दन थी आनन्दरे, नन्दन सुख कन्दरे ॥ नन्दन पूनमचन्द रे, उल्लासे वंश समुन्दरे ॥ नन्दन परम ॥२॥ सुत पाछे सुख सयलजीरे, नन्दना, पहेलू सुखतो पूतरे ॥ स्थितिनो थोभण पूतजीरे, नन्दना, पुत्र थकी घरसूतरे ॥ नन्दन ॥ ३ ॥ उठाई उंचा करीरे ॥नन्दना ॥ लीधा कण्ठलगायरे हलधरनेहरिजीतणेरे ॥नन्दना । हैज हैये नसमायरे ॥ नन्दन ॥ ४॥

क्षेपक राधेश्याम—

ज्यूं ही नारद से सुना, वैदेही-वृत्तान्त ।
वीर-भूमि पैदल तभी, वरम उठा रस शान्त ॥
क्षमा मांगने को बढ़े, लव-कुश दोनों भाय ।
आगे बढ़ रघुनाथ ने, छाती लिया लगाय ॥
पुत्रों का और पिता का, यह प्रिय-मिलन निहार ॥
सुर-पुर से बरसे सुमन, जगने की जयकार ।
लखन लाल ने जब लखे, युगल स्वरूप अनूप ।
कहा-अमंगल रण हुआ, आज सुमंगल रूप ॥
आशीर्वाद के लिए आज, प्रत्येक हृदय उमड़ाना है ।
अभिवादन करने को तन का, हर रोम रोम हर्षाना है ॥
यह हार नहीं है जीत हुई, अपयश के भीतर यश पाके ।
कोशलने खुद पर जय पाई, परिपूर्ण परीक्षा में आके ॥
इस रण का निर्णय कौन करे, किसने यह युद्धस्थल जीता ।
कोशल ने यह दोनों जीते, इन दोनों ने कोशल जीता ॥

ढाल मूलकी—

खोले लीधा बालकां रे, नन्दना ॥ चूंबे शिर सोवार रे ॥ नहसार्ते नयनो ढरेरे नन्दना । पोषे प्रेम अपार रे ॥ नन्दना० ॥ ५ ॥

सत्रुघ्न पगे लागतारे ।।नन्दना।। आलिंगिन अधिकार रे ।। लवणांकुश पाय नमेरे, ।।नन्दना।। ताम सहु परिवाररे ।। नन्दन० ।।६।। दोई पक्षना राजीयारे, ।।नन्दना।। मांहोमांहे उच्छाहरे ।। होवे रंग विनोदजीरे ।नन्दना।। जाणे मांड्यो विवाह रे ।। नन्दन० ।। ७ ।। पराक्रम दीठो पुत्रोंनांरे, ।। नन्दना ।। पुत्र पितामें मेलरे । मिलियो वचन आगोचरूरे, ।।नन्दना।। दूधे साकर भेलरे ।। नन्दन० ।।८।। निरखी हरखी जानकीरे ।।नन्दना।। वात पडी सहु ठाम रे । बाहुड़ी गई निज थानकेरे, ।।नन्दना।। बैसी विमाने तामरे ।। नन्दन० ।। ९ ।। सरखा पुत्र शोभियारे, ।।नन्दना।। थी लक्ष्मणजी राम रे । इन्द्र तणे घर ऊपन्या रे, ।।नन्दना।। जयन्तक अभिराम रे ।। नन्दन० ।। १० ।। सरखा सुत छे कोई नारे ।।नन्दना।। असरखारे अनेक रे । गाली देघाडण हारजीरे ।।नन्दना।। जश बाला को एकरे ।। नन्दन० ।। ११ ।। भामण्डलजी भाखीयूंरे ।।नन्दना।। ए नृपने सुपसायरे । ए तुम रसरंग देखीयोरे ।।नन्दना।। सु सन्मान्यो रायरे ।। नन्दन० ।। १२ ।। भामण्डल जेम वाल्होरे ।।नन्दना ।। महारो तो छे तेमरे । खीर नीर ज्यूं मिली रयोरे ।।नन्दना।। नृप सूं प्रभुने प्रेम रे ।। नन्दन० ।। १३ ।। बेसी विमाने विराजता रे नन्दना ।। लक्ष्मण राम उच्छाहीरे । आगे बैठा पुत्रजीरे नन्दना । आवे नगरी मांहीरे ।। नन्दना० ।। १४ ।। ऊंची ग्रिवाये लोकजीरे ।।नन्दना।। मिलीया ख्याले आयरे ।। मुख मुख जय उच्चरेरे ।। नन्दना ।। धन्य धन्य राघव रायरे ।। नन्दन ।। १५।। उतरिया विमानथीरे ।।नन्दना।। आवीने दरबाररे ।। ओच्छव मांड्यो अति घणोरे । नन्दना।। घर घर मंगलाचाररे ।। नन्दन० ।। १६ ।। नोबत वाजे नाद सूंरे ।।नन्दना।। नाचे पात्र अपाररे ।। जड मंडिने वरसिया रे ।। नन्दना।। वरस्या कंचन धाररे ।। नन्दन० ।। १७ ।। लक्ष्मणजी सुग्रीवजी रे ।।नन्दना।। विभीषण हनुमान रे ।। अंगद आदि सहु मिली रे ।।नन्दना।। विनवियो राजानरे ।। नन्दन० ।। १८ ।। राज-वियोगे पुत्र

सुंरे ॥ नन्दना ॥ दिनकाढ्याथा मानरे ॥ परदेशोंमें एकलीरे नन्दना ॥ रयणी छमासी जानरे ॥ नन्दन ॥ १९ ॥ पतिने पुत्र वियोगिणीरे ॥ नन्दना ॥ योगिणी जेहवी जोयरे ॥ मरीजासे साटल थलीरे ॥ नन्दना ॥ पातिक म्होटो होयरे ॥ नन्दन ॥ २० ॥ इहां लेईआवीयेरे ॥ नन्दना ॥ पामी प्रभु आदेशरे ॥ आगे इच्छा रावलीरे ॥ नन्दना ॥ पंचवाक्य सुविशेषरे ॥ नन्दन ॥ २१ ॥ भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावीजे केमरे ॥ नन्दन ॥ ॥ २२ ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायणमेंसे—

रघुपतिबोले-सीयासे पृथक्न होगा राम।
किन्तु करेगा वहनहीं, प्रजा विरोधी काम ॥
संसार सहस्रों रूपरचे, पर मुझको डिगानहीं सकता।
ब्रह्माभी चाहेतोमुझको, इसहठसे हटानहीं सकता ॥
मेरी इसमें कुछरायनहीं, यहसब रैयत की मर्जीहै।
जिसने उनकोवन भेजावह, महलोंमें फिर रख सकतीहै ॥
वाल्मीकिजीनेकहा, धन्य तुम्हें श्रीकन्त।
दिखादिया संसारको, प्रजा-प्रेमकाअन्त ॥
मेरीतो सम्मतियही, करोन ऐसाकाम।
जिसके द्वारा विश्वमें, रघुकुलहो बदनाम ॥
बहुमतसे होकरके विरुद्ध, राजाका चलना ठीकनहीं।
जबप्रजा खिलाफ होरहीहै, तो सियाका रखना ठीकनहीं ॥
अच्छा अब प्रथम प्रजाकाही, अज्ञान मिटाया जायेगा।
जिस दर्पणमें धुंधलापनहै, उनको चमकाया जायेगा ॥
इतनेमेंहो सिदचन्, गर्जे पवन कुमार।
बोले-मुनिमहाराजका, है अति श्रेष्ठ विचार ॥
मैं शपथ पूर्वक कहताहूं सब झगड़ोंको मिटाऊंगा।
फिर महलोंमें अपनी मांको, अपने स्कंधे पहुंचाऊंगा।

शत्रुघ्न पगे लागतारे ॥नन्दना॥ आलिंगिन अधिकार रे ॥ लवणां-कुश पाय नमेरे, ॥नन्दना॥ ताम सहु परिवाररे ॥ नन्दन० ॥६॥ दोई पक्षना राजीयारे, ॥नन्दना॥ मांहोमांहे उच्छाहरे ॥ होवे रंग विनोदजीरे । नन्दना॥ जाणे मांड्यो विवाह रे ॥ नन्दन० ॥७॥ पराक्रम दीठो पुत्रोंनारे, ॥ नन्दना ॥ पुत्र पितामें मेलरे । मिलियो वचन आगोचरूरे, ॥नन्दना॥ दूधे साकर भेलरे ॥ नन्दन० ॥८॥ निरखी हरखी जानकीरे ॥नन्दना॥ वात पडी सहु ठाम रे । बाहुड़ी गई निज थानकेरे, ॥नन्दना॥ बैसी विमाने तामरे ॥ नन्दन० ॥ ९ ॥ सरखा पुत्र शोभियारे, ॥नन्दना॥ थी लक्ष्मणजी राम रे । इन्द्र तणे घर ऊपन्या रे, ॥नन्दना॥ जयन्तक अभिराम रे ॥ नन्दन० ॥ १० ॥ सरखा सुत छे कोई नारे ॥नन्दना॥ असरखारे अनेक रे । गाली देघाडण हारजीरे ॥नन्दना॥ जश बाला को एकरे ॥ नन्दन० ॥ ११ ॥ भामण्डलजी भाखीयूंरे ॥नन्दना॥ ए नृपने सुपसायरे । ए तुम रसरंग देखीयोरे ॥नन्दना॥ सु सन्मान्यो रायरे ॥ नन्दन० ॥ १२ ॥ भामण्डल जेम वाल्होरे ॥नन्दना॥ महारो तो छे तेमरे । खीर नीर ज्यूं मिली रयोरे ॥नन्दना॥ नृप द्वं प्रभुने प्रेम रे ॥ नन्दन० ॥ १३ ॥ वेसी विमाने विराजता रे नन्दना ॥ लक्ष्मण राम उच्छाहीरे । आगे बैठा पुत्रजीरे नन्दना । आवे नगरी मांहीरे ॥ नन्दना० ॥ १४ ॥ ऊंची ग्रिवाये लोकजीरे ॥नन्दना॥ मिलीया ख्याले आयरे ॥ मुख मुख जय उच्चरेरे ॥ नन्दना ॥ धन्य धन्य राघव रायरे ॥ नन्दन ॥ १५॥ उतरिया विमानथीरे ॥नन्दना॥ आवीने दरबाररे ॥ ओच्छव मांड्यो अति घणोरे । नन्दना॥ घर घर मंगलाचाररे ॥ नन्दन० ॥ १६ ॥ नोबत वाजे नाद स्वंरे ॥नन्दना॥ नाचे पात्र अपाररे ॥ जड़ मंडिने वरसिया रे ॥ नन्दना॥ वरस्या कंचन धाररे ॥ नन्दन० ॥ १७ ॥ लक्ष्मणजी सुग्रीवजी रे ॥नन्दना॥ विभीषण हनुमान रे ॥ अंगद आदि सहु मिली रे ॥नन्दना॥ विनवियो राजानरे ॥ नन्दन० ॥ १८ ॥ राज-वियोगे पुत्र

हूंरे ॥ नन्दना ॥ दिनकाढ्याथा मातरे ॥ परदेशांमें एकलीरे नन्दना ॥ रयणी छमासी जागे ॥ नन्दन ॥ १९ ॥ पतिने पुत्र वियोगिणीरे ॥ नन्दना ॥ योगिणी जेहवी जोयरे ॥ मरीजासे खाटल चलीरे ॥ नन्दना ॥ पातिक म्होटो होयरे ॥ नन्दन ॥ २० ॥ इहां लेईआवीयेरे ॥ नन्दना ॥ पामी प्रभु आदेशरे ॥ आगे इच्छा रावलीरे ॥ नन्दना ॥ पंचवाक्य सुविशेषरे ॥ नन्दन ॥ २१ ॥ भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावीजे केमरे ॥ नन्दन ॥ ॥ २२ ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायणमेंसे—

रघुपतिबोले-सीयासे पृथकन होगा राम।
किन्तु करेगा वहनहीं, प्रजा विरोधी काम॥
संसार सहस्रो रूपरचे, पर मुझको डिगानहीं सकता।
ब्रह्माभी चाहेतोमुझको, इसहठसे हटानहीं सकता॥
मेरी इसमें कुछरायनहीं, यहसब रैयत की मर्जीहै।
जिसने उनकोवन भेजावह, महलोमें फिर रख सकतीहै॥
वाल्मीकिजीनेकहा, धन्य तुम्हें श्रीकन्त।
दिखादिया संसारको, प्रजा-प्रेमकाअन्त॥
मेरीतो सम्मतियही, कोन ऐसाकाम।
जिसके द्वारा विश्वमें, रघुकुलको बदनाम॥
यह्मतसे होकरके विरुद्ध, राजाका चलना ठीकनहीं।
जबप्रजा खिलाफ होरहीहै, तो सियाका रखना ठीकनहीं॥
अच्छा अब प्रथम प्रजाकाही, अज्ञान मिटाया जावेगा।
जिस दर्पणमें धुंधलापनहै, उसको चमकाया जावेगा॥
इतनेमेंही सिहरन्, गर्जे पवन कुमार।
बोले-मुनिमहाराजका, है अति श्रेष्ठ विचार॥
मै शपथ पूर्वक कहताहू कह झूठादोष मिटाऊंगा।
फिर महलोंमें अपनी मांको, अपने संगमें पहुंचाऊंगा।

शत्रुघ्न पगे लागतारे ।।नन्दना।। आलिंगिन अधिकार रे ।। लवणांकुश पाय नमेरे, ।।नन्दना।। ताम सहु परिवाररे ।। नन्दन० ।।६।। दोई पक्षना राजीयारे, ।।नन्दना।। मांहोमांहे उच्छाहरे ।। होवे रंग विनोदजीरे ।नन्दना।। जाणे मांड्यो विवाह रे ।। नन्दन० ।।७।। पराक्रम दीठो पुत्रोंनारे, ।। नन्दना ।। पुत्र पितामें मेलरे ।मिलियो वचन आगोचरूरे, ।।नन्दना।। दूधे साकर भेलरे ।। नन्दन० ।।८।। निरखी हरखी जानकीरे ।।नन्दना।। वात पडी सहु ठाम रे । बाहुडी गई निज थानकेरे, ।।नन्दना।। वैसी विमाने तामरे ।। नन्दन० ।। ९ ।। सरखा पुत्र शोभियारे, ।।नन्दना।। थी लक्ष्मणजी राम रे। इन्द्र तणे घर ऊपन्या रे, ।।नन्दना।। जयन्तक अभिराम रे ।। नन्दन० ।। १० ।। सरखा सुत छे कोई नारे ।।नन्दना।। असरखारे अनेक रे । गाली देवाडण हारजीरे ।।नन्दना।। जश वाला को एकरे ।। नन्दन० ।। ११ ।। भामण्डलजी भाखीयूंरे ।।नन्दना।। ए नृपने सुपसायरे । ए तुम रसरंग देखीयोरे ।।नन्दना।। सु सन्मान्यो रायरे ।। नन्दन० ।। १२ ।। भामण्डल जेम वाल्होरे ।।नन्दना ।। महारो तो छे तेमरे । खीर नीर ज्यूं मिली रयोरे ।।नन्दना।। नृप सं प्रभुने प्रेम रे ।। नन्दन० ।। १३ ।। वेसी विमाने विराजता रे नन्दना ।। लक्ष्मण राम उच्छाहीरे । आगे बैठा पुत्रजीरे नन्दना । आवे नगरी मांहीरे ।। नन्दना० ।। १४ ।। ऊंची ग्रिवाये लोकजीरे ।।नन्दना।। मिलीया ख्याले आयरे ।। मुख मुख जय उच्चरेरे ।। नन्दना ।। धन्य धन्य राघव रायरे ।। नन्दन ।। १५ ।। उतरिया विमानथीरे ।।नन्दना।। आवीने दरवाररे ।। ओच्छव मांड्यो अति घणोरे। नन्दना।। घर घर मंगलाचाररे ।। नन्दन० ।। १६ ।। नोवत वाजे नाद सूंरे ।।नन्दना।। नाचे पात्र अपाररे ।। जड मंडिने वरसिया रे ।। नन्दना।। वरस्या कंचन धाररे ।। नन्दन० ।। १७ ।। लक्ष्मणजी सुग्रीवजी रे ।।नन्दना।। विभीषण हनुमान रे ।। अंगद आदि सहु मिली रे ।।नन्दना।। विनवियो राजानरे ।। नन्दन० ।। १८ ।। राज-वियोगे पुत्र

सूंरे ॥ नन्दना ॥ दिनकाढ्याथा मातरे ॥ परदेशोंमें एकलीरे नन्दना ॥ रयणी छमासी जागरे ॥ नन्दन ॥ १६ ॥ पतिने पुत्र वियोगिणीरे ॥ नन्दना ॥ योगिणी जेहवी जोयरे ॥ मरीजासे साटल वलीरे ॥ नन्दना ॥ पातिक म्होटो होयरे ॥ नन्दन ॥ २० ॥ इहां लेईआवीयेरे ॥ नन्दना ॥ पामी प्रभु आदेशरे ॥ आगे इच्छा रावलीरे ॥ नन्दना ॥ पंचवाक्य सुविशेपरे ॥ नन्दन ॥ २१ ॥ भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावोजे केमरे ॥ नन्दन ॥ ॥ २२ ॥

क्षेपक राधेश्याम रामायणमेंसे—

रघुपतिबोले-सीयासे पृथक न होगा राम।
किन्तु करेगा वह नहीं, प्रजा विरोधी काम॥
संसार सहस्रो रूपरचे, पर मुझको डिगानहीं सकता।
प्रजाभी चाहेतोमुझको, इसहठसे हटानहीं सकता॥
मेरी इसमें कुछरायनहीं, यहसब रैयत की मर्जीहै।
जिसने उनकोवन भेजावह, महलोंमें फिर रख सकतीहै॥
वाल्मीकिजीनेकहा, धन्य तुम्हें श्रीकन्त।
दिखादिया संसारको, प्रजा-प्रेमकाअन्त॥
मेरीतो सम्मतियहही, करोन ऐसाकाम।
जिसके द्वारा विश्वमें, रघुकुलको बदनाम॥
बहुमतसे होकरके विरुद्ध, राजाका चलना ठीकनहीं।
जबप्रजा खिलाफ होगईहै, तो सियाका रखना ठीकनहीं॥
अच्छा अब प्रथम प्रजाकाही, अज्ञान मिटाया जायेगा।
जिस दर्पणने भ्रमफैलायाहै, उसको चमकाया जायेगा॥
इतनेमेंही सिहवत्, गर्जे पवन कुमार।
बोले-मुनिमहाराजका, है अति श्रेष्ट विचार॥
मैं प्रथम पूछकर हरनाई कर सबका संशय मिटाऊंगा।
फिर महलोंमें अपनी मांको, अपने कन्धे पहुंचाऊंगा।

कानोंकी सुनी नहीं, आँखोंकी देखीहुई सुनाऊंगा ।
उस सोतीहुई अयोध्याको, सीताका ज्ञान कराऊंगा ॥
फिरभी विश्वास न होगा तो, रैयतसे रनठन जायेगा ।
यह सहन शक्तिवाला हनुमत्, वस रुद्र-रूप बनजायेगा ॥
पृथ्वी आकाश विलोकेंगे, उस समय कर्म इस सेवकका ।
ब्रह्मा और शंकर देखेंगे, उस समय धर्म इस सेवकका ॥
तामसी प्रकृतिका दुनियां से, अस्तित्व मिटाया जायेगा ।
सद्गुण की सामग्रीसे फिर, संसार बसाया जायेगा ॥
यह जीवन सुफल तभीहोगा, यहआँखें सुखी तभी होंगी ।
जब सीतापति की वामांगी, कोशलकी साम्राज्ञी होंगी ॥
वचनों से बजरंगके, दहल उठा संसार ।
हुआ तामसी प्रकृतीमें, भीषण हाहा कार ॥
सुन बजरंगी का यह प्रण, वीरोंके हृदय फडक उट्ठे ॥
अनुमोदन को बचों के भी, तर्कश मे तीर कडक उट्ठे ।
सीयापति की इतने पर भी, वह दिव्य मूर्ति मुसकाती थी ।
घटनाकी घटा बरसतीथी, सूरज पर बूंद न आतीथी ॥

ढाल मूलगी—

भाखे राघव राजीयोरे ॥ नन्दना ॥ बोलावीजे केमरे ॥ जन-अपवाद मिथ्योनहींरे ! ॥ नन्दना ॥ तुमपण जाणोएमरे ॥ नन्दन ॥ २२ ॥ हूंजाणूं सीता सतीरे ॥ नन्दना ॥ सापण जाणे आपरे । दिव्य कियां सघलों मिटे रे ॥ नन्दना ॥ लोक-वचन सन्ताप रे ॥ नन्दन ॥ २३ ॥ सर्व लोकनी साखसूंरे ॥ नन्दना ॥ दिव्य कराऊं देवरे । मुंहडो फिर से लोकनोरे ॥ नन्दना ॥ साच लह्यां ततखेव रे ॥ नन्दन ॥२४॥ भलूं २ भूपे भण्यूंरे ॥ नन्दना ॥ नगरी बाहिर जायरे । मण्डप मांड्यों मोटकोरे, ॥ नन्दना ॥ मंचक बहु मण्डायरे ॥ नन्दन ॥ २५ ॥ आवी बैठा राजीयारे ॥ नन्दना ॥ विभीषण सुग्रीव रे । भूचरने खेचर सहुरे ॥ नन्दना ॥

आया जंगम जीवरे ॥ नन्दन ॥ २६ ॥ पुरी अयोध्या ए सहुरे ॥ नन्दना ॥ ते डाव्या सहु लोकरे । साच दियां लोगां खरूंरे ॥ नन्दना ॥ ज्यूं फिरी नवि करे खोकरे ॥ नन्दन ॥ २७ ॥ प्रभु आदेशे चालीयोरे ॥ नन्दना ॥ कपिपति लेवा तास रे । पुण्डरीक पुरी आवीयोरे ॥ नन्दना ॥ आणी अति उल्हास रे ॥ नन्दन ॥ ॥ २८ ॥ पग प्रणमी सीता तणारे ॥ नन्दना ॥ तेम करे अरदास रे पुरी अयोध्या आयकेरे ॥ नन्दना ॥ सफल करो हम आशरे ॥ नन्दन ॥ २९ ॥ पुष्पक नामे विमान एरे ॥ नन्दना ॥ मोकल्यो रघुनाथ रे । मतूं करीने मोकल्योरे ॥ नन्दना ॥ एहूं मघले साथ रे ॥ नन्दन ॥ ३० ॥ आज लगे समियुत थोरे ॥ नन्दना ॥ अरण्ये तज्यानूं दुःख रे । वलि किस्यू करसे प्रभु रे ॥ नन्दना ॥ सयूं स्वामीनूं सुखरे ॥ नन्दन ॥ ३१ ॥

मुनि श्रीरूपचन्दजी कृत ढाल क्षेपक तर्ज पन्नजी मूंडे बोल।

माता जलदी चाल, चाल चाल वनिता का वासी वाट उडीकेहो ॥टेर॥
जन अपवाद थकी प्रभु थोने, काढ दिया घर वारे हो ।
तो पिण अनुपम प्रेम केम, रघुनाथ विसारे हो ॥ माता० ॥ १ ॥
विरह तुम्हारे कृश तन वोर, कारे मुख प्रभु हेगा हो ।
थां विन तजसी प्राण जानमच, होनो भोगा हो ॥ माता० ॥ २ ॥
थांरी याद में लक्ष्मणजी को, मुख पंकज कुमलाणो हो ।
दर्शन प्यासी नित रहे उदासी, करूणा आणो हो ॥ माता० ॥३॥
साच कहूं माजीसा थां विन, दिसे अयोध्या सूनीटो ।
आप आने सूं रंगरली होसी, नित दूनी हो ॥ माता० ॥ ४ ॥
कपिपति कहे कर जोड़ सिया से, रघुपति मुजने भेज्यो हो ।
अवधपुरी चालन नाकारो, मन से देज्यो हो ॥ माता० ॥ ५ ॥

ढाल मूलकी—

पुनरपि कपिपति बोलवेरे, ॥ नन्दना ॥ बुद्धिकरे वा काजरे । पुलाव्या छे तुम प्रभुरे ॥ नन्दना ॥ मेलनारो गाजरे ॥ ३२ ॥ एम सुणी हरखी खरीरे ॥ नन्दना ॥ पांजणी पुरारे ।

बैसीने विमानमेंरे ॥ नन्दना ॥ आगेगई तबमातरे ॥ नन्दन ॥
॥ ३३ ॥ माहेन्द्रोदय बागमेंरे ॥ नन्दना ॥ उतारीयु विमानरे ।
लक्ष्मण जई पगे लागीयोरे ॥ नन्दना ॥ पगेलाग्या नृप आनरे ॥
नन्दन ॥ ३४ ॥ आगेबैसी विनवेरे ॥ नन्दना ॥ घेर पधारो आ
जरे । ए घरएपुर थाहरोरे ॥ नन्दना ॥ एथारोसहु राजरे ॥ नन्दन ॥
॥ ३५ ॥ सतीकहे वत्स? साचएरे ॥ नन्दना ॥ पहिली करिस्युं
शुद्धिरे । पाछे जाणे केवलीरे ॥ नन्दना ॥ जेउपजसे बुद्धिरे ॥
नन्दन ॥ ३६ ॥ ए सघलूं सम्भलाव्युरे ॥ नन्दना ॥ राघवजीने
आपरे ॥ सतीकने प्रभु आयकेरे ॥ नन्दना ॥ बोलेसीधा न्याय रे
॥ नन्दन ॥ ३७ ॥ रावण साथे रागनो रे ॥ नन्दना ॥ न हुवो
छे लवलेश रे । धीज करो धृति आदगी रे ॥ नन्दना ॥ देखे लोग
अशेष रे ॥ नन्दन ॥ ३८ ॥ हसी बोली तब जानकी रे ॥नन्दना
॥ प्राण नाथ ? अवधार रे । तुम्ह थी शाणो कौण छे रे ॥
नन्दना ॥ न करो काम विचार रे । नन्दन॥३९॥ बात कहन्तां
विरचिया रे ॥ नन्दना ॥ लवणांकुश ना तात रे ॥ ओछोतो ओ-
छी कररे ॥ नन्दना ॥ पूरा पूरी बात रे ॥ नन्दन ॥ ४० ॥
झूठी जाणो छो मने रे, ॥ नन्दना ॥ तो पहेलां द्यो दण्ड रे । पाछे
करस्युं हूं सही रे, ॥ नन्दना ॥ धीज तणी पगमण्ड रे ॥ नन्दन ॥
४१ ॥ राम कहे भद्रे ? सुणो रे ॥ नन्दना ॥ मैं नवि जाणी खोड
रे ॥ अवही जाणूं छूं नहीं रे ॥ नन्दना ॥ लोक करे मुखमोड रे
॥ नन्दन ॥ ४२ ॥ तेहथी ए मुझ ऊपनीरे ॥ नन्दना ॥ उतारवा
तुझ भार रे ॥ दिव्य करो सहू देखतां रे, ॥ नन्दना ॥ साचे सहु
नो प्याररे ॥ नन्दन ॥ ४३ ॥ युक्तिवात कहे जानकीरे, ॥नन्दना॥
दिव्य[1] करूं हूं पंचरे । अग्नि में डाकी पडूं रे ॥ नन्दना ॥ न

१ दिव्य-दिव्यज-अर्थात् धीज, मनुष्य अपराधी है निरपराधी-इसकी
परीक्षा के लिए पांच उपाय हैं । १ तुला= २ अग्नि= ३ जल=
विप= ५ कोश=

करूं को खल संचरे ॥ नन्दन ॥ ४४ ॥ चावल१ ने चाखूं मही रे ॥ नन्दना ॥ पिऊं२ तातो कोश रे। जीभे३ साहूं फालीया रे। नन्दना ॥ चढूं४ तुला ए सरोस रे। नन्दन ॥ ४५ ॥ इणमें जो तुमने गमे रे ॥ नन्दना ॥ सोई करो पर साद रे। शंका कोई मति आणजो रे ॥ नन्दना ॥ मुझने एह अन्हाद रे ॥ नन्दन ॥ ४६ ॥ सिद्धारथ ऋपि रायजीरे ॥ नन्दना ॥ अन्तरिक्ष भाखन्तरे। मतिरे वरांसो रामजीरे ॥ नन्दना ॥ दवावी दाखन्तरे ॥ नन्दन ॥४७॥ लोक सहु प्रभु आगलेरे ॥ नन्दना ॥ करे विनती आवीरे। सीताजी म्होटी सतीरे ॥ नन्दना ॥ शील तणे सुप्रभावीरे ॥नन्दना॥ ४८॥ कह्यो तेही कीधो सहीरे ॥नन्दना ॥ जगमें एही कहायरे ॥ रहे वाघो ए काम नेरे ॥ नन्दना ॥ समजो राघव रायरे ॥ नन्दन ॥ ४९ ॥ हूंतो समजूं छूं सहीरे ॥ नन्दना ॥ सीता छे निर्दोष रे ॥ दोष चढाव्यू छो तुम्हेरे ॥ नन्दना ॥ मुझने ए अफसोसरे ॥नन्दन॥५०॥ मीठा मुखड़ा आगलेरे ॥ नन्दना ॥ कड़वा तुम पर पूठरे। पंचों में परमेश्वर [illegible] नन्दना ॥ वात पड़ी ए झूठरे ॥ नन्दन ॥ ५१ ॥ कूर्म५ जिव्हानी परेरे ॥ नन्दना ॥ एह तुम्हारी जीहरे। खिण मांही खिण बाहीरेरे ॥ नन्दना ॥ आतुर बहु अबीहरे ॥ नन्दन ॥ ५२ ॥ काल फरी तुम भाखसोरे ॥ नन्दना ॥ सीता छे सकलंकरे। [illegible] मन राख्यू [illegible] रे ॥ नन्दना ॥ किहां गयूं छे शंकरे ॥ नन्दन ॥ ५३ [illegible] करावी आकरो रे ॥ नन्दना ॥ आज करूं सहु साचरे। [illegible] संसार मांरे नन्दना ॥ मणि नवि धावे काचरे। नन्दन॥५४॥ [illegible] तीनसोनी खणीरे ॥ नन्दना ॥ [illegible] [illegible]। पुरुष [illegible] [illegible] [illegible] ॥ नन्दना ॥ [illegible] नन्दन [illegible] ॥ नन्दन ॥ ५५ ॥

१ [illegible] = २ [illegible] (सीसा) को [illegible] = ३ [illegible] लोह का [illegible] को हाथ में [illegible] = ४ [illegible] ५ [illegible] परे ([illegible])

सत्तावनमीं ढालमेंरे ॥ नन्दना ॥ राघव थाप्यो थीजरे ॥ केशराज
सत्य-शीलथीरे, ॥ नन्दना ॥ साच साचनूं बीजरे ॥ नन्दन ॥५६॥

दोहा केदाररागेः—

गिरि वैताढ्य जाणिये, उत्तर श्रेणि मझार।
हरि विक्रम वड राजवी, जय भूषण सुतसार ॥ १ ॥
अठोत्तर शत कुंवरी, परणावी राजान।
सुख भोगवतां आवीयो, मोह तणो अवसान ॥ २ ॥
मातुल-नंदन "हेमशिखर", किरण मण्डला नार ॥
वे मरजोद विलोकतां, वात पड़ी सुविचार ॥ ३ ॥
काटी दिधी कामिनी, आपण संयम धार।
'विद्युत् दष्ट्रा' नाम थी, राक्षसणी थै ते नार ॥ ४ ॥
अयोध्याना उद्यानमां, ऋषि प्रतिमा प्रतिपन्न।
राक्षसणी उपसर्ग थी, निश्चल राख्यो मन्न ॥ ५ ॥
साधु हुओ ते केवली, ओच्छव करवा काज।
इन्द्रादिक बहु देवता, आवी अधिक विराज ॥ ६ ॥
अवसर देखी थीजनो, देव दया पर प्राही।
हरीजी साथे वीनवे, जोर वहे जग मांही ॥ ७ ॥
ज्ञानीजी निश्चल लहे, सीता सती अपार।
दग्धे छे अवलाभणी, मूर्ख लोक गंवार ॥ ८ ॥
सीता सानीध्य[1] कारणे, अनीक[2] पति अभिराम।
मूकी हरि[3] आपण करे, केवल ओछव काम ॥ ९ ॥

---

[1] सहायता, [2] सेनापति, [3] इन्द्र

दोहा के पहीली गाथा से लेकर नवमी गाथा तक का स्फुटार्थ यह है—कि हरि विक्रम राजा का पुत्र जय भूषण की किरणमंडला नामक स्त्री अपने मामा का पुत्र हेमशिखर के साथ आसक्त थी। इस वात की जयभूषण को मालूम पड़ते ही अपनी स्त्री (किरणमंडला) को देश निकाला दे दिया। वह स्त्री मर कर विद्युद्दष्ट्रा नाम की राक्षसणी हुई। और जयभूषण दीक्षा लेकर फिरते २ इस समय मे अयोध्या के उपवन

रामतणा आदेश थी, दीधां काष्ट धगाय ।
मिली रही ज्वाला वली, देख्यां ही न खिजाय ॥ १० ॥
सीता-पावक१ पारवती, आवी एम भाखन्त ।
वीत राग अज साधु सुर, आप साखी राखन्त ॥ ११ ॥
लोक पाल सहु सांभलो, सूर्य चन्द्र वड़ देव ।
दिवस निशाना साखिया, तुम जाणो सहु भेव ॥ १२ ॥
मने करी वचने करी, काया ए करी जोय ।
जागत ने सोवत विषे, राम टाली नर कोय ॥ १३ ॥
जोको में वांछ्यो हुवे, वाली करो मुझ छार ।
वैश्वानर जग साखीया, एह अछो तुमचार ॥ १४ ॥
नहीं तर तूं पाणी हुजे, एम कही ततकाल ।
श्री नमोकारही सुमरती, डाके पड़िसा बाल ॥ १५ ॥
पड़तांही पहीली थई, अग्नि फिटी बाव ।
निर्मल पाणीमुं भरी, शील तणे सुप्रभाव ॥ १६ ॥

ढाल क्षेपक तर्ज-अलबेल्यानीः—

झल झलती मिलती घणीरे लाल, झाल्यो झाल अपाररे । सुजाण सीता । जाणे केसू फूलीया रे लाल, गना खेर अंगाररे ॥ सुजाण सीता ॥ १ ॥ धीज करे म्होटी सतीरे लाल ॥ टेर ॥ शील तणे परमाणरे ॥ सुजाण सीता ॥ लक्ष्मण राम तिहां खड़ारे लाल, मिलीया राणो राण रे ॥ सु० ॥ धीज ॥ २ ॥ स्नान करी निर्मल जलेरे लाल, पावक पासे आयरे । सुजाण सीता । ऊभी जाणे देवांगनारे लाल, तिणरो रूप दिखायरे ॥ सु० धीज ॥ ३ ॥ सर

में आकर कायोत्सर्ग किया । यह राजकुमार आकर मुनि को घोर उपसर्ग दिया । मुनि स्थिर रहे । शुक्लध्यान भावना भाते हुये केवल ज्ञान की प्राप्ती हुई । ज्ञानोत्सव के लिये इन्द्रादिक [illegible] आया, [illegible] के आग्रह से इन्द्र ने अपने सेनापति को सीता की सहायार्थ भेज कर आप केवल ज्ञान का उत्सव किया ।

१ अग्नि ।

नारी मिलिया घणारे लाल, ऊभा बहु अकुलायरे ।।सुजाणसीता।।
भस्म होसी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्यायरे ।। सु० ।।
धीज ।। ४ ।। राघव विन वंछ्यो हुवेरे लाल, सुपना में नर कोपरे
। सुजाण सीता । तो मुझ अग्नि प्रजालजोरे लाल, नहीं तर पाणी
होयरे ।। सु० धीज ।। ५ ।। इम कही वैठी आगमेंरे लाल, तुरत
थयो अग्नि नीररे ।। सुजाण सीता ।। जाणे द्रह जल से भर्यो रे
लाल, झूले मन धर धीर रे ।। सु० ।। धीज ।। ६ ।

ढाल मूलगी चेपक

अग्नि मिट पानी जद होवे, लोक सब दश दिश ही जोवे, कलंक को बीज ही खोवे । कहो अब किणरो हे मूंडो, करेगो सीता को भूंडो ।। सत्यव्रत पालो ।। १०२ ।। प्रथमतो वातां जे ऊठी, वेतो सब आज हुई झूठी, इन्हीं पर शोकोंही रूठी । सीता है बिलकुल ही साची, सत्य अरु शील माही राची ।। सत्य० ।। १०३ ।।

ढाल अठावनमीं–तर्ज नायकानी

सिंहासन जल ऊपरेरे, ते उपर सा जायरे ।। सीता ।।
हंसी ज्यूं पंकज उपरेरे, बैठी शोभा पाय रे ।। सीता ।। १ ।।
सत्यवती साची सतीरे लाल ।।टेर।। साचो जेहनो शीलरे ।।सीता।।
सुरवर सानिध्यकारीयारे लाल, शीलथकी अति लीलरे।।सीता।।२।।
अग्नि सूं ज्वाला आकरी रे, धग धगता अंगाररे ।। सीता ।।
सीताने शोले करी रे. सलिल हुआते साररे ।।सीता ।।सत्य०।।३।।
अर्ण वावर्त नामथीरे, चोखूं छे ते चाप रे ।। सीता ।।
सीताने शोले करी रे, राम चढ़ाड़ियूं आप रे सीता।।सत्य०।।४।।
हनुमन्त उदधि उलघियो रे, भंजिओ वर उद्यान रे ।। सीता ।।
सीताने शोले करी रे ।। सीजायो राजान रे ।। सीता ।।सत्य०।।५।।
पत्थर पाणी ऊपरेरे । तारविया श्रीराम रे ।। सीता ।।
सीताने शोले करी रे, सरिया वंछित कामरे ।।सीता।। सत्य० ।।६।।
शक्ति प्रहारें ना मूओरे, सौमित्रीजी सोईरे ।। सीता ।।

देवेने वलि दानवे रे, रावण तो न मराय रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, मारि लियो सोई राय रे ॥ सीता ॥ स० ॥८॥
त्रिकोटी लंका पुरी रे, किहांहीन लगाव रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, लिधी विन उपाव रे ॥ सीता ॥ स० ॥९॥
राम तजाई अरण्यमें रे, जिहां न आशा कोई रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, रान विलावल होई रे ॥ सीता ॥ सत्य १० ॥
पुत्र पनोता ऊपना रे, दोई ते सम तोल रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, निका ते निरमोल रे ॥ सीता ॥ सत्य ११ ॥
लक्ष्मणसूं जाई अड्या रे, तो नहीं पाम्या हार रे ॥ सीता ॥
सीताने शीले करी रे, सुराह्या संसार रे ॥ सीता ॥ सत्य १२ ॥
पियरियो ने सासरियो रे, उज्वाल्या कुल दोई रे ॥ सीता ॥
उज्वाल्या पियु रामजी रे, अपकीर्ति मल धोई रे ॥ सीता ॥ स० १३ ॥
गुल २ शब्द सुहामणा रे, कोई करे हूंकार रे ॥ सीता ॥
कोई भम्भाएभला रे, कोई जय २ कार रे ॥ सीता ॥ सत्य १४ ॥
कोई खल २ खांतसूं रे, कोई दिल २ देव रे ॥ सीता ॥
विविध प्रकारे चेष्टाए रे, देव करे ततखेव रे ॥ सीता ॥ सत्य १५ ॥
धों ३ नादसूं रे, वाजे मधुर मृदंग रे ॥ सीता ॥
ताल स्वर उपांगसूं रे, होई रह्यो रसरंग रे ॥ सीता ॥ सत्य १६ ॥
कोई वजावे वांसली रे, कोई वजावे वीण रे ॥ सीता ॥
तान रु मान अनुमानसूं रे, होई रह्या लय लीन रे ॥ सीता ॥ स० १७ ॥
कोई अलापे रागने रे, कोई सुरती धरन्त रे ॥ सीता ॥
नाचे नाच वारांगना रे, वे २ शब्द करन्त रे । सीता ॥ सत्य १८ ॥
चापी नूं जल वाधियो रे, जेम सायर कल्लोल रे ॥ सीता ॥
फरगूं दिशा चारमां रे, करतो अधिक अडोल रे ॥ सीता ॥ स० १९ ॥
मांचा ताम तणावनां रे, लाग्या नाठा लोग रे ॥ सीता ॥
असंख्याता आकला रे, जाणी करतो जोग रे ॥ सीता ॥ सत्य २० ॥
विद्याधर ने वेगसूं रे, नाम गया ने नाश रे ॥ सीता ॥
पाणीनो भय पामके रे, ऊना अति आकाश रे ॥ सीता ॥ स० २१ ॥



अटवी मांहे मेलतांरे, सम्भल्यो नहीं सोचरे ॥सीता०॥सत्य०॥२४॥
सुप्रभावथी सुधर्यांरे, ताहरा सघला काजरे ॥ सीता ॥
छेल्ह दुःखए मैं दियूरे, आगतणूंता आजरे ॥सीता॥ सत्य ॥ २५ ॥
इत्यादिक एतूंखमेंरे, म्हाराअति अपराधरे ॥ सीता ॥
आपसुधारी आपणीरे, धन्य मानच भवलाधरे॥ सीता॥स०॥ २६
सीता भाखेस्वामीजीरे, कांईकरो विखादरे ॥ सीता ॥
जेहीभलो जगजाणवोरे. तेसहु तुम्ह प्रसादरे ॥ सीता ॥ स० ॥ २७॥
जन-अपवाद निवारवारे, नांखी आगमझाररे ॥ सीता ॥
हूंजीवती ऊगरीरे, नामतणे आधाररे ॥ सीता ॥ स० ॥ २८ ॥
भूमण्डलनी रेणुथीरे, सूर्यझांखो थायरे ॥ सीता ॥
एगुणवाय तणूं घणूरे, रेणूनो नकहायरे ॥ सीता ॥ स० ॥ २९॥
सापही माथे मींडकोरे, नाजन्तो देखायरे ॥ सीता ॥
एगुण मंत्रतणो घणोरे, मिंडकनो नकहायरे ॥सीता॥स०॥ ४०
चैत्रहीमासे कोकिलारे, कूहूशब्द करायरे ॥ सीता ॥
एगुण आंबानोघणोरे, कोकिलनो नकहिवायरे ॥ सीता ॥स०॥४१
नगर तणातो खालनारे, पाणीजे पूजायरे ॥ सीता ॥
एगुण गंगाजी तणोरे, पाणीनो नणीनो नकहायरे ॥ सीता॥स०४२
पारस फरस्यां लोहनूंरे. कंचन नाम धरायरे ॥ सीता ॥
एगुण पारसनो घणोरे, लोहतणूं नकहायरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४३॥
विवाहतणा दिन आदियीरे, आजतणा दिनछेहरे ॥ सीता ॥
नेकीते नव स्वामीनीरे, बड़ी लगीछे देहरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४४
दुःखदिनें राखियोरे प्रभुजी थांरो नामरे ॥ सीता ॥
तेमुखमेंनहि राखियोरे, एहपरीक्षा ठामरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४५ ॥
माहरो ताहरो लोकनोरे, कोईन दीसे दोषरे ॥ सीता ॥
दोषजुए कृत कर्मनोरे, करो सगल रोषरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४६ ॥
घरे पधारो आपजेरे, पूरो मुखभोगरे ॥ सीता ॥
भोगविण भन्न भावजुंरे, दुख्खनो संयोगरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४७

ढाल क्षेपक तर्ज—नवकार ही मन्त्र वड़ा है।

घर चलना तुम्हें जरूरी, कहे राघवजी धर प्यार के ॥टेर॥
वीती जो वात विसारो, चित्तकी मम चिन्ता टारो,
प्रियमान कयोहि व म्हारो, गुण सज्ज नभाव निहार के,
मम करो कामना पूरी ॥ घर० ॥ १ ॥
धरलिया जनम धन तेरा, सत्य शील दृढाया गहरा,
मन मुदित होगया मेरा, दो झट पट वैन उच्चार के,
नहीं पूरी अयोध्या दूरी ॥ घर० ॥ २ ॥
होगई वात जो हूर्गा प्रिय ! याद प्रीत कर जूनी,
तुम विना अयोध्या सूनी, मेरे अवगुण दूर निवार के,
मैं कहू छोड़ मगरूरी ॥ घर० ॥ ३ ॥
सव सम्पद सुख को भोगो, झट पट अव चलो ओरोगो,
मिटजाय मोर मन शोगो, (शुभ उदय मिल्यो संयोगो)
अव कथन मेरो अवधार के करदो सव माफ कसूरी ॥ घर० ॥४॥
रघुपति कसर नहीं राखी, कही भिन भिन रखीन वाकी,
मुनि भयरव इण पर भाखी, आपरगट मध्य पीपार के,
धन्य सत्य शील में पूरी ॥ घर० ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

सीता भाखे स्वामीजीरे, सरियु तुम्ह सन्मानरे ॥ सीता ॥
सांयम लेस्यूंसादरोरे, नरजन्म सुख आनरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४८ ॥
एमकहीं ऊपाड़ीयारे, स्वहाथे शिरकेशरे ॥ सीता ॥
प्रभुजीने पकड़ावीयारे, जिन नाजेम सुरेशरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४९
प्रभुजी तव मूर्च्छित पड्यारे, नरही शुद्धलगाररे ॥ सीता ॥
'जयभूषण श्रीगुरुमुखेरे, लीधो संयम धाररे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५६
सुव्रता गुरुणीकनेरे, सीखे विविध विशालरे ॥ सीता ॥
परम महासुख पामीयूरे मट्यो सहु जंजालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५१
अट्ठाव नमी ढालमेंरे, पट्कायिक प्रतिपालरे ॥ सीता ॥
केशराज धन्य एसतीरे, नमिये चरण त्रिकालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५२

दोहा (धन्या श्री रागे)

चन्दनसुं सिंच्योप्रभु, थयो सचेतन जाम।
किहांगई सीता सती, राम कहे अभिराम ॥ १ ॥
भोभोभूचर खेचरो,भक्त महाछो भूर ।
लुंचित-केशा कामिनी, मेलोआणी हजूर ॥ २ ॥
रे लक्ष्मण ! तेनासुणी, ए सघला ही लोक ।
हांसीकरे छे हर्षसुं, देखी म्हारो शोक ॥ ३ ॥
धनुष्यग्रहे रोपे भर्यो, लक्ष्मण भाखे ताम ।
ए सहु सेवक स्वामिना, कोण हांसीनो ठाम ॥ ४ ॥
प्रभुजीजेम सीता तजी, दोषतणो डरआण ।
तेमसीता संसारए, तज्यो भवभय आण ॥ ५ ॥
प्रभु आगल शिर लोचियूं, जग भूषण गुरु पास ।
संयमलीधो सादरो, ममतासुं वनवास ॥ ६ ॥
जयभूषण प्रभु केवली, आज हुयाछे देव ।
आपजई ओछवकरो, चरण कमलनी सेव ॥ ७ ॥
तिहां अछे सीता सती, बैठी सतियां मांहि ।
दर्शन कीजे देवीनूं आपण पे उच्छाहि ॥ ८ ॥
सहजपणा में आवीया, राम करे सुविचार ।
शुभ गुरु पे संयम लियो, धन्य २ सीता नार ॥ ९ ॥
एम कही परिवार सूं, जयभूषण गुरु संग ।
आवी पाय प्रणमी करी, देशना सुणी सुचंग ॥ १० ॥
देशना अन्ते पूछियूं, हूं छूं भव्य अभव्य ।
तुमने नहीं अभव्यता, भद्र ! जाणो तुम भव्य ॥ ११ ॥
एहिज भवे शिव पांमशो, पामी केवल ज्ञान ।
जनम जरा भय टालशो, तुम छो पुरुष प्रधान ॥ १२ ॥
संयम विन शिवपति नहीं, ते तो मैं न लेवाय ।
लक्ष्मन मारो मोहिनीं, मैं क्यूं हिं न तजाय ॥ १३ ॥

ढाल च्रेपक तर्ज—नवकार ही मन्त्र बड़ा है।

घर चलना तुम्हैं जरूरी, कहे राघवजी धर प्यार के ॥टेर॥
वीती जो वात विसारो, चित्तकी मम चिन्ता टारो,
प्रियमान कयोहि व म्हारो, गुण सज्ज नभाव निहार के,
मम करो कामना पूरी ॥ घर० ॥ १ ॥
धरलिया जनम धन तेरा, सत्य शील दृढाया गहरा,
मन मुदित होगया मेरा, दो झट पट बैन उचार के,
नहीं पूरी अयोध्या दूरी ॥ घर० ॥ २ ॥
होगई वात जो हूणी प्रिय ! याद प्रीत कर जूनी,
तुम विना अयोध्या सूनी. मेरे अवगुण दूर निवार के,
मैं कहू छोड़ मगरूरी ॥ घर० ॥ ३ ॥
सब सम्पद सुख को भोगो, झट पट अब चलो ओरोगो,
मिटजाय मोर मन शोगो, (शुभ उदय मिल्यो संयोगो)
अब कथन मेरो अवधार के करदो सब माफ कसूरी ॥ घर० ॥४॥
रघुपति कसर नहीं राखी, कही भिन भिन रखीन वाकी,
मुनि भयरव इण पर भाखी. आपरगट मध्य पीपार के,
धन्य सत्य शील में पूरी ॥ घर० ॥ ५ ॥

ढाल मूलगी—

सीता भाखे स्वामीजीरे, सरियु तुम्ह सन्मानरे ॥ सीता ॥
सांयम लेसूंसादरोरे, नरजन्म सुख आनरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४८॥
एमकहीं ऊपाड़ीयारे. स्वहाथे शिरकेशरे ॥ सीता ॥
प्रभुजीने पकड़ावीयारे, जिन नाजेम सुरेशरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ४९
प्रभुजी तब मूर्च्छित पड्यारे, नरही शुद्धलगाररे ॥ सीता ॥
'जयभूपण श्रीगुरुमुखेरे, लीधो संयम धाररे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५६
सुव्रता गुरुणीकनेरे, सीखे विविध विशालरे ॥ सीता ॥
परम महासुख पामीयूरे मट्यो सहु जंजालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५१
अट्ठाव नमी ढालमेंरे, पट्कायिक प्रतिपालरे ॥ सीता ॥
केशराज धन्य एसतीरे, नमिये चरण त्रिकालरे ॥ सीता ॥ स० ॥ ५२

दोहा (धन्या श्री रागे)

चन्दनसूं सिंच्योप्रभु, थयो सचेतन जाम।
किहांगई सीता सती, राम कहे अभिराम ॥ १ ॥
भोभोभूचर खेचरो,भक्त महाछो भूर।
लुंचित-केशा कामिनी, मेलोआणी हजूर ॥ २ ॥
रे लक्ष्मण ! तेनासुणी, ए सघला ही लोक।
हांसीकरे छे हर्षसूं, देखी म्हारो शोक ॥ ३ ॥
धनुष्यग्रहे रोषे भर्यो, लक्ष्मण भाखे ताम।
ए सहु सेवक स्वामिना, कोण हांसीनो ठाम ॥ ४ ॥
प्रभुजीजेम सीता तजी, दोषतणो डरआण।
तेमसीता संसारए, तज्यो भवभय आण ॥ ५ ॥
प्रभु आगल शिर लोचियूं, जग भूषण गुरु पास।
संयमलीधो सादरो, समतासूं वनवास ॥ ६ ॥
जयभूषण प्रभु केवली, आज हुवाछे देव।
आपजई ओछवकरो, चरण कमलनी सेव ॥ ७ ॥
तिहां अछे सीता सती, बैठी मतियां मांहि।
दर्शन कीजे देवीनूं आपण पे उच्छांह ॥ ८ ॥
सहजपणा में आवीया, राम करे सुविचार।
शुभ गुरु पे संयम लियो, धन्य २ सीता नार ॥ ९ ॥
एम कही परिवार सूं, जयभूषण गुरु मेल।
आवी पाय प्रणमी करी, देशना सुणी सुचंग ॥ १० ॥
देशना अन्ते पूछियूं, हूं छूं भव्य अभव्य।
तुमने नहीं अभव्यता, भद्र ! अछो तुम भव्य ॥ ११ ॥
एहिज भवे शिव पांमसो, पामी केवल ज्ञान।
जन्म जरा भय टाल सों, तुम छो पुण्य प्रधान ॥ १२ ॥
संयम विन निरवाणि नहीं, ते तो मैं न सेवाय।
लक्ष्मण सागे मोहिनी, मैं क्यूं ही न तजाय ॥ १३ ॥

ऋषि भाखे चिन्ता नहीं, भोगवी पद बलदेव।
आपहीं प्रति बूजसो, जिनमतनूं ए भेव ॥ १४ ॥
विभीषण भाखे भलु, सीता रावणे लीध।
किण कर्मे लक्ष्मण हण्यो, रावण पणे प्रसिद्ध ॥ १५ ॥
भामण्डल सुग्रीव हूं, लवणांकुश ए दोय।
किसे कर्मे करी ऊपन्या, प्रभु भक्ता सहु कोय ॥ १६ ॥

ढाल एगुणसाठमीं तर्ज- मईड़ा दानी वे।

स्वामी भाखे सयल विचार, दक्षिण भरत अछे भलो।
भाखे स्वामी वे खेमपुरे, नयदत्त वणिक बसे गुण आगलो भा०१
सुनन्दा उदर दोई, नन्दन धुर धनदत्त छे।
भाखे०वसुदत्त विशेष, याज्ञवल्क्य सुमित्तछे ॥ भा० ॥ २ ॥
तिणही नगर मझार, सागरदत्त वसे सही।
भाखे गुणधर नामे नन्द, गुणवती कन्याकही ॥ भा० ॥ ३ ॥
'सागर दत्ते दीध, धनदत्त ने सा सुन्दरी।
भाखे जाणी सरखी जोड, लालचतो कोनाधरी ॥ भा० ॥ ४ ॥
रत्नप्रभा तसमात, अर्थ तणेलोभेकरी।
भाखे शेठअछे श्रीकान्त, तेहने दीधी दीकरी ॥ भा० ॥ ५ ॥
याज्ञवल्क्ये जाणी, जणावी मित्रोंभणी।
भाखे वसुदत्ते निशिजाई, हण्यों श्रीकान्त ने हणी ॥भा० ॥ ६ ॥
श्री कान्ते पणतेह, मारीलियो तत्र नासतां।
भाखे एसुथो व्यवहार, चिणसे परही विनामतां भा० ॥ ७ ॥
'विन्ध्या वनमेंआय, मृगहुआते दोयत्रे।
भाखे गुणवंती नोजीव, हुई हिरणली सोयत्रे ॥ भा० ॥ ८ ॥
हरणी केरेहेत, मुआदोई कुरंगवे ॥ भाखे० ॥
रुलिया काल अपार, जगमें करतां जंगवे ॥ भाखे ॥ ९ ॥
सो धनदत्त तेवार, भाई मूओते सांभली।
भाखे हुओ अधिक उदास, वरथी चाल्यो नीकली ॥ भा० ॥१०॥

रातें लागीभूख, ताम मुनीश्वर देखीया ।
भाखे० भोजन केरंकाम. चारुवचन विशेषीया ॥ भाखे ॥ ११ ॥
संग्रह नकरेसाधु. दिनहींतो रात्रे किस्यू ।
भाखें० तुम्ह सरिसाने रात्री, भोजनक्यों मनमें वस्यूं ॥ भा० ॥१२
प्रतिबोधाणो सोई, श्रावक हुआ साचलो ।
भाखे०स्वर्ग सुधर्म देव, आगेकी अब सांभलो ॥ भा० ॥ १३ ॥
महापुर नगर मझार, मेरु सेठ प्रिया धारणी ।
भाखे० पद्मरूचि सुत सार, श्रावक मतिसुख कारणी ॥भा०॥१४॥
एकदिन गोकुल जात, पड़ियो वृषभ विलोकीयो ।
भाखे० दयातणो मतिआणो. मंत्र राज तेहने दियो ॥ भा०॥१५॥
छत्र छाय नरेन्द्र, श्रीदत्ता उदर ऊपन्यो ।
भाखे वृषभध्वज अभिधान, नन्द निरूपम नीपन्यो ॥भा०॥१६॥
कुंवर करतो केली, आयोहिथाने चालो ।
भाखे० जिहां मूओछेबेल, देखी ऊपज्यूं मनरली ॥ भा० ॥१७॥
जातिस्मरण पामी. ताम करावे देहरो ।
भाखे० उपकारीनेहित, कुंवर कुंवर सेहरो ॥ भा० ॥ १८ ॥
भींतेआलेख्यू रूप, वृद्ध वृषभनो नामते ।
भाखे० सेठही रूपअनूप, जेमहूओ धोकामते ॥ भा० ॥ १९ ॥
पलाणीयो हयएक, तेनेपासे राखीयो ।
आरक्ष नरने एह, भूपतिने सुत भाखीयो ॥ भ० ॥ २० ॥
एहना रूपनो जाण, महारी पासे आणजो ।
भाखे करसूं तस उपकार, क्रियोगुणनो मानजो ॥ भा० ॥ २१ ॥
एमकही घरेजाय, एहने सेठ पधारीयो ।
भाखे०गोकुल मांहीजान, पद्मरूची डाकारीयो ॥ भा० ॥ २२ ॥
भींते आलेख्यू ते चित्र. देखी विस्मय पामीयो ।
भाखे आश्चर्य लही शुद्ध, आतम आव्यो धामीयो ॥ भा० ॥२३॥
पूछे भाखे सेठ. म्हारा कीधा कामते ।

भाखे० कुंवर करे परणाम, आप प्रकाशो नामवे ॥ भा० ॥ २४ ॥
प्रभुजी तुम्ह सुपसाय, पायो पद अभिरामवे।
भाखे० तूं मेरा गुरुदेव, तुझकूं करूं सलामवे ॥ भा० ॥ २५ ॥
भोगविए ए राज्य, तुम्हारो आपीयो।
भाखे० पुरमांही वडवीर, आपसमो कर थापीयो ॥ भा० ॥ २६ ॥
सेठ अने सुकुमार, श्रावक ना व्रत पालवे।
भाखे० स्वर्ग दूसरे देव, विलसे सुख चिरंकालवे ॥ भा० ॥ २७ ॥
गिरि वैताढ्य विख्यात, नगरी नन्दावर्तवे।
भाखे नन्दीश्वर अभिधान, राजा राज्य करन्तवे ॥ भा० ॥ २८ ॥
पद्मरूचि सो देव, करतो अति आनन्द वे।
भाखे० कनक प्रभानी कूख, नन्दन नयनानंदवे ॥ भा० ॥ २९ ॥
राज्य करी व्रत लीध, स्वर्ग पंचमें जायवे।
भाखे० पूर्व विदेह मझार, क्षेमा नगरी आयवे ॥ भा० ॥ ३० ॥
विपुला वाहन राय, नारी पौमावे उदरे।
भाखे० श्री चन्द्र नरेन्द्र, राज्य तणी पदवी वरे ॥ भा० ॥ ३१ ॥
गुप्ति समाधी समीप, संयम लीधो सादरो।
भाखे० ब्रह्मलोकनो देव, होई आयो पाधरो ॥ भा० ॥ ३२ ॥
ए अष्टम बलदेव, देवे सेव्या सदैव वे।
भाखे० वृषभ ध्वजनो जीव, राजाए सुग्रीववे ॥ भा० ॥ ३३ ॥
जे हुतो श्रीकान्त, भव में भमियो भूरीवे।
भाखे० पाटणकन्द मृणाल, होई पुण्य अंकूरवे ॥ भा० ॥ ३४ ॥
वज्र सुकण्ठ नरेश, हेमवती नो जाईयो।
० शम्भू नाम लहन्त, साजन मन भाईयो ॥ भा० ॥ ३५ ॥
हुतो वसुदत्त, हुओ शम्भू भूपनो।
भाखे० विजय पुरोहित नारी, नलचूड़ा अनूपजो ॥ भा० ॥ ३६ ॥
नामे तो श्रीभूति, नन्दन नीको जाणीयो।
भाखे० गुणवती भवमांहे, भूपति ठाणे आणीयो ॥ भा० ॥ ३७ ॥

श्रीभूति ने घरनार, नाम प्रणामें सरस्वती ।
भाखे० वेगवती सुकुमारी, ऊपजी अधिक कलावती ॥भा० ॥३८॥
सा यौवन वयपाय, एक दिन गई उद्यानवे ।
भाखे० एकध्याने प्रतिपन्न, साधु रह्यो शुभ ध्यानवे ॥ भा० ॥३९
लोक करन्तासेव, एहचोदेखी साधुवे ।
भाखे० आणीद्वेष अतीव, साभाखे अपराधवे ॥ भा० ॥ ४० ॥
नारीसाथे एह, भोगवतो वरभोगवे ।
भाखे० मैंदीठो एआज, तामफिर्या सहुलोगवे ॥ भ० ॥ ४१ ॥
ऋषिकरे काउसग्ग, प्रगट पणेतो एमकही ।
भखे० उत्तरसे एदोष, तोमें पारेवो सही ॥ भ० ॥ ४२ ॥
सुरेकरी सानिध्य, वेगवती मुख मीचेवे ।
भाखे० आकुल व्याकुल थाय, पावेदःख अतिवचे ॥ भा० ॥ ४३ ॥
एह सुणीने बात, मापित्रो त्रासी घणी ।
भाखे० भयमानी मनमांहे, भाखे अवगुण आपणू ॥ भा० ॥ ४४ ॥
'सुदर्शन मुनिपास, आविलोक घणामिल्या ।
भाखे० खमजो मुझ अपराध, तुम तपस्वी तेमांभल्या ॥ भा० ॥४५
सांमी नांख्यों खेह, सूर्य झांखोनापड्यो ।
भाखे० तुमने देखी निर्दोष, किस्यूंरके नर बापड़ो ॥भा० ॥ ४६ ॥
तुझ रूठ्यां जगमांही, कोईनहींतो राखिले ।
भाखे० क्षमाकरो ऋषिराय, धाऊंमुखो एम भाखोले ॥ भा० ॥ ४७
एम सुणन्तांलोक, पुनरपि सेवा साचवे ।
भाखे० श्रावक धर्मसाध, वेगवती मनराचवे ॥ भा० ॥ ४८ ॥
राजा देखीरूप, वेगवतीमूं मांगियो ।
भाखे० कन्याकेरे काज, पुरोहित तब जाणियो ॥ भा० ॥ ४९ ॥
मिथ्यादृष्टि जाणी, कन्या नापे तातवे ।
भाखे० जोरे लोधीबाल, जनक हणीकरी घातवे ॥ भा० ॥ ५० ॥
विप्रकियोरे नियाण, राजाने दुःखदायवे ।
भाखे० होजो वचन प्रमाण, मर एह उपायवे ॥ भा० ॥ ५१ ॥

भाखे० कुंवर करे परणाम, आप प्रकाशो नामवे ॥ भा० ॥ २४ ॥
प्रभुजी तुम्ह सुपसाय, पायो पद अभिरामवे ।
भाखे० तूं मेरा गुरुदेव, तुझकूं करूं सलामवे ॥ भा० ॥ २५ ॥
भोगविए ए राज्य, तुम्हारो आपीयो ।
भाखे० पुरमांही वडवीर, आपसमो कर-थापीयो ॥ भा० ॥ २६ ॥
सेठ अने सुकुमार, श्रावक ना व्रत पालवे ।
भाखे० स्वर्ग दूसरे देव, विलसे सुख चिरंकालवे ॥ भा० ॥ २७ ॥
गिरि वैताढ्य विख्यात, नगरी नन्दावर्तवे ।
भाखे नन्दीश्वर अभिधान, राजा राज्य करन्तवे ॥ भा० ॥ २८ ॥
पद्मरूचि सो देव, करतो अति आनन्द वे ।
भाखे० कनक प्रभानी कूख, नन्दन नयनानंदवे ॥ भा० ॥ २९ ॥
राज्य करी व्रत लीध, स्वर्ग पंचमें जायवे ।
भाखे० पूर्व विदेह मझार, क्षेमा नगरी आयवे ॥ भा० ॥ ३० ॥
विपुला वाहन राय, नारी पौमावे उदरे ।
भाखे० श्री चन्द्र नरेन्द्र, राज्य तणी पदवी वरे ॥ भा० ॥ ३१ ॥
गुप्ति समाधी समीप, संयम लीधो सादरो ।
भाखे० ब्रह्मलोकनो देव, होई आयो पाधरो ॥ भा० ॥ ३२ ॥
ए अष्टम बलदेव, देवे सेव्या सदैव वे ।
भाखे० वृषभ ध्वजनो जीव, राजाए सुग्रीववे ॥ भा० ॥ ३३ ॥
जे हुतो श्रीकान्त, भव में भमियो भूरीवे ।
भाखे० पाटणकन्द मृणाल, होई पुण्य अंकूरवे ॥ भा० ॥ ३४ ॥
वज्र सुकण्ठ नरेश, हेमवती नो जाईयो ।
भाखे० शम्भू नाम लहन्त, साजन मन भाईयो ॥ भा० ॥ ३५ ॥
जे हुतो वसुदत्त, हुओ शम्भू भूपनो ।
भाखे० विजय पुरोहित नारी, नलचूडा अनूपजो ॥ भा० ॥ ३६ ॥
नामे तो श्रीभूति, नन्दन नीको जाणीयो ।
भाखे० गुणवती भवमांहे, भूपति ठाणे आणीयो ॥ भा० ॥ ३७ ॥

श्रीभूति ने घरनार, नाम प्रणामें सरस्वती।

भाखे० वेगवती सुकुमारी, ऊपजी अधिक कलावती ॥भा० ॥३८॥

सा यौवन वयपाय, एक दिन गई उद्यानवे।

भाखे० एकध्याने प्रतिपन्न, साधु रह्यो शुभ ध्यानवे ॥ भा० ॥३९

लोक करन्तासेव, एहवोदेखी साधुवे।

भाखे० आणीद्वेप अतीव, साभाखे अपराधवे ॥ भा० ॥ ४० ॥

नारीसाथे एह, भोगवतो वरभोगवे।

भाखे० मैंदीठो एआज, तामफिर्या सहुलोगवे ॥ भ० ॥ ४१ ॥

ऋपिकरे काउसग्ग, प्रगट पणेतो एमकही।

भखे० उत्तरसे एदोप, तोमें पारेवो सही ॥ भ० ॥ ४२ ॥

सुरेकरी सानिध्य, वेगवती मुख मीचेवे।

भाखे० आकुल व्याकुल थाय, पावेदुःख अतिववे ॥ भा० ॥ ४३ ॥

एह सुणीने वात, मावित्रों त्रासी घणी।

भाखे० भयमानी मनमांहे, भाखे अवगुण आपणूं ॥ भा० ॥ ४४ ॥

'सुदर्शन मुनिपास, आविलोक घणामिल्या।

भाखे० खमजो मुझ अपराध, तुम तपस्वी तेमांभल्या ॥ भा० ॥४५

सांमी नांख्यों खेह, मूर्ख झांखोनापड्यो।

भाखे० तुमने देखी निर्दोप, ऋिस्यूंवके नर बापडो ॥भा० ॥ ४६ ॥

तुझ रूठ्यां जगमांही, कोईनहींजो राखिले।

भाखे० क्षमाकरो ऋपिराय, थाऊंसुखी एम भाखीले ॥ भा० ॥ ४७

एम सुणन्तांलोक, पुनरपि सेवा सावते।

भाखे० आवरु धर्मसाध, वेगवती मनरागवे ॥ भा० ॥ ४८ ॥

राजा देखीरूप, वेगवतीयूं राचीयो।

भाखे० कन्याकेरे काज, पुरोहित नव जाचियो ॥ भा० ॥ ४९ ॥

मिथ्यादृष्टि जाणी, कन्या नापें वालवे।

भाखे० जोरे लेपीवाल, जनक तणीकी घातवे ॥ भा० ॥ ५० ॥

विप्रकियोरे निदान, राजाने दुःखदायवे।

भाखे० होजो वचन प्रमाण, मेंह एह उपायवे ॥ भा० ॥ ५१ ॥

दिन थोडाघर राख, छोडी दीधी ब्राह्मणो ।
भाखे० आरजिका अभिराम, हरिकान्ता पासेभणी ॥ भा० ॥५२॥
मरण तणेहूंहेतु, होजो शम्भूनेहणी ।
भाखे० ग्रहीसंयम सुरलोक, पामीगति पंचम तणी ॥भा०॥ ५३ ॥
जनक तणेघरआय, सोताजीए ऊपनी ।
भाखे० वयर विलय नविजाय, जेमभाखी तेम नीपनी॥भा०॥५४
मुनिवर जी ने जेह, झूठो आल चढावीयो ।
भाखे० झूठो आलज एह, लोकांमांही पावीयो ॥ भा० ॥ ५५ ॥
भवमें भमत अपार, शम्भु जीव सुहामणो ।
भाखे० कुशध्वज छे विप्र, रूडो ने रलियामणो ॥ भा० ॥ ५६ ॥
सावित्री तस नारी, उदरे लियो अवतारवे ।
भाखे० नन्दन नामे प्रभास, सुन्दर ने सुखकारवे ॥ भा० ॥ ५७ ॥
विजयसिंह नी पास, संयम लीधो सादरा ।
भाखे० दुक्कर तप जय कार, सहे परिषह आकरा ॥ भा० ॥ ५८ ॥
गिरी समेते जात, कनकप्रभ विद्याधरूं ।
भाखे० ऋद्धि तणो विस्तार, देखी भोग पुरन्दरू ॥ भा० ॥ ५९ ॥
ए तप तणोही प्रकार, म्हारे ऋद्धिज एहवी ।
भाखे० होजोकरेही निपाण, जेहवी गति मति तेहवी ॥भाखे॥६०
जईतीजे सुरलोक, देवतणा सुखभोगवी ।
भाखे० आयुकर्म नेअन्त, आयोते सुरवरचवी ॥ भा० ॥ ६१ ॥
हुओ रावण राय, भाई तुम्हारो ए वडो ।
भाखे० महुरायां शिरताज, वसुधामांहे वांकडो ॥ भा०॥ ६२ ॥
याज्ञवल्क्य नो जीव, भमतोए भवसिन्धुवे ।
भाखे० एतूं उपज्यो आय, रावण नो लघुबन्धुवे ॥ भा० ॥ ६३ ॥
श्रीभूति हण्योजे राय, पृथिवी एपहीली गयो ।
भाखे० पुर भले सुप्रतिष्ठ, पुनर्वसु खेचर थयो ॥ भा० ॥ ६४ ॥
क्षेत्र विदेह मझार, पुण्डरिकीणी छे विजय ।

भाखे० नामे त्रिभुवनानन्द, चक्री भगवंतही भजय ॥ भा०६५ ॥
अनंग सुन्दरी तास, पुत्री अमरी अवतरी ।
भाखे० पुनर्वसु तसदेखी, लेईचाल्यो तस अपहरी ॥ भा० ॥ ६६
चक्री सुभटे आय, पन्थे रोक्यो पापीया ।
भाखे० अकुलाणो झुझन्त, सुभटअति सन्तापीया ॥ भा० ॥ ६७॥
अनंगसुन्दरी बाल, यान थकी डाकी खरी ।
कोई निकुंझमझार, आवीपडीसा सुन्दरी ॥ भा० ॥ ६८ ॥
पुनर्वसु लेईदिक्ष, आगे सुखियो थायजो ।
भाखे० कीधो एह निदान, ए सुन्दरीइं पायजो ॥ भा० ॥ ६९ ॥
भोगवो सुरपद सार, विविधप्रकारे ऊंझियो ।
भाखे० दशरथ घर अवतार, ए प्रभु लक्ष्मणजी हुओ ॥भा०७०॥
वसती वनहर मझार, राज-सुता अनिरुधवे ।
भाखे० तपतो उग्र अपार, करतीभाव विशुद्धवे ॥ भाखे ॥ ७१ ॥
अन्त समय आराधी, मन्थारे मूतीसती ।
भाखे० अजगर आवी गलन्त, आगतिने नपडी रती ॥ भा०॥७२
बीजे कल्पे वमाप, हुई विशल्या एहवे ।
भाखे० लक्ष्मण नेसुखदाय, दिन२ वधतो नेहवे ॥ भा० ॥ ७३॥
गुणवती नोभ्रात, गुणधर नाम धरायवे ।
भाखे० संसारतो सर्व असार, कुण्डल मण्डित थायवे ॥ भा०॥७४॥
श्रावक व्रत प्रतिपाल, कीधो धर्म त्रिकालवे ।
सीता सहोदर एह, भामण्डल भूपालवे । भा० ॥ ७५ ॥
काकन्दी पुरमांही, वाम देव ना पुत्रवे ।
भाखे० श्यामा उदर जननार, गन्धव पवना सूतरवे ॥ भा०॥७६॥
'सुनन्द' वसुनन्द अन्य, हुओ स्वर्गरुवे ।
भाखे० प्रतिलाभ्यो मुनिराज, मान स्वमवने पावले ॥भा०॥७७
उत्तर कुरु भवलेई, सुधर्मे सुर लोकवे ।
भाखे० काकन्दी गजान, रतिवर्द्धन आलोकवे ॥ भा० ॥ ७८ ॥

दिन थोडाघर राख, छोडी दीधी ब्राह्मणो।
भाखे० आरजिका अभिराम, हरिकान्ता पासेभणी ॥ भा० ॥५२॥
मरण तणेहूंहेतु, होजो शम्भूनेहणी।
भाखे० ग्रहीसंयम सुरलोक, पामीगति पंचम तणी ॥भा०॥ ५३॥
जनक तणेघरआय, सीताजीए ऊपनी।
भाखे० वयर विलय नविजाय, जेमभाखी तेम नीपनी॥भा०॥५४
मुनिवर जी ने जेह, झूठो आल चढावीयो।
भाखे० झूठो आलज एह, लोकांमांही पावीयो ॥ भा० ॥ ५५॥
भवमें भमत अपार, शम्भु जीव सुहामणो।
भाखे० कुशध्वज छे विप्र, रूड़ो ने रलियामणो ॥ भा० ॥ ५६॥
सावित्री तस नारी, उदरे लियो अवतारवे।
भाखे० नन्दन नामे प्रभास, सुन्दर ने सुखकारवे ॥ भा० ॥ ५७॥
विजयसिंह नी पास, संयम लीधो सादरा।
भाखे० दुक्कर तप जय कार, सहे परिषह आकरा ॥ भा० ॥ ५८॥
गिरी समेते जात, कनकप्रभ विद्याधरूं।
भाखे० ऋद्धि तणो विस्तार, देखी भोग पुरन्दरू ॥ भा० ॥ ५९॥
ए तप तणोही प्रकार, म्हारे ऋद्धिज एहची।
भाखे० होजोकरेही निपाण, जेहवी गति मति तेहवी ॥भाखे॥६०
जईतीजे सुरलोक, देवतणा सुखभोगवी।
भाखे० आयुकर्म नेअन्त, आयोते सुरवरचवी ॥ भा० ॥ ६१॥
हुओ रावण राय, भाई तुम्हारो ए वडो।
भाखे० महुरायां शिरताज, वसुधामांहे वांकड़ो ॥ भा०॥ ६२॥
'याज्ञवल्कय नो जीव, भमतोए भवसिन्धुवे।
भाखे० एतूं उपज्यो आय, रावण नो लघुबन्धुवे ॥ भा० ॥ ६३॥
श्रीभूति हण्योजे राय, पृथिवी एपहीली गयो।
भाखे० पुर भले सुप्रतिष्ठ, पुनर्वसु खेचर थयो ॥ भा० ॥ ६४॥
क्षेत्र विदेह मझार, पुण्डरिकीणी छे विजय।

भाखे० नामे त्रिभुवनानन्द, चक्री भगवंतही भजय ॥ भा० ६५ ॥
अनंग सुन्दरी तास, पुत्री अमरी अवतरी।
भाखे० पुनर्वसु तसदेखी, लेईचाल्यो तस अपहरी ॥ भा० ॥ ६६
चक्री सुभटे आय, पन्थे रोक्यो पापीया।
भाखे० अकुलाणो झुझन्त, सुभटअति सन्तापीया ॥ भा० ॥ ६७॥
अनंगसुन्दरी बाल, यान थकी डाकी खरी।
कोई निकुंझमझार, आवीपडीसा सुन्दरी ॥ भा० ॥ ६८ ॥
पुनर्वसु लेईदिक्ष, आगे सुखियो थायजो।
भाखे० कीधो एह निदान, ए सुन्दरीहूं पायजो ॥ भा० ॥ ६९ ॥
भोगवी सुरपद सार, विविधप्रकारे झूंझियो।
भाखे० दशरथ घर अवतार, ए प्रभु लक्ष्मणजी हुओ ॥ भा० ७० ॥
वसती वनहर मझार, राज-सुता अनिरुधवे।
भाखे० तपतो उग्र अपार, करनीभाव विशुद्धवे ॥ भाखे ॥ ७१ ॥
अन्त समय आराधी, मन्थारे सूतीसती।
भाखे० अजगर आवो गलन्त, आगतिने नपटो रती ॥ भा० ॥ ७२
बीजे कल्पे वसाय, हुई विशल्या एहवे।
भाखे० लक्ष्मण नेसुखदाय, दिनर भजतो नेहवे ॥ भा० ॥ ७३ ॥
गुणवतो नोभ्रात, गुणधर नाम धरायवे।
भाखे० संसारतो भव अमार, कुण्डल मण्डित थायवे ॥ भा० ॥ ७४ ॥
श्रावक व्रत प्रतिपाल, कीधो धर्म त्रिकालवे।
सीता सहोदर एह, भामण्डल भूपालवे । भा० ॥ ७५ ॥
काकन्दी पुरमांही, राय देव ना पुत्रवे।
भाखे० श्यामा उदर अवतार, गन्धव धनना पुत्रवे ॥ भा० ॥ ७६ ॥
'सुनन्द' पनुनन्द अन्य, हुओ स्वकारणे।
भाखे० प्रतिलाभ्यो मुनिपक्ष नान गनअने पारणे ॥ भा० ॥ ७७
उत्तर कुरु भरतेई, सुधर्मे सुर लोकवे।
भाखे० काकन्दी राजान, रतिवर्द्धन आलोकवे ॥ भा० ॥ ७८ ॥

सुदर्शनाजी मांय, दोई सुतउदर धारीया।
भाखे० प्रियंकर प्रसिद्ध, शुभंकर शुभकारीया ॥ भा० ॥ ७९ ॥
राज्यकरी व्रतपाली, देवहुआ ग्रैव्येकवे।
भाखे० लवणांकुश एदोई, सीता सुत सुविवेकवे ॥ भा० ॥ ८० ॥
सुदर्शनाजी माय, भवान्तर नी जेहवे।
राखे० सिद्धारथ साथाय, जेही पढाया एहवे ॥ [० ॥ ८१ ॥
ए मुनि वचन सुणन्त, बहुजनने वैराग्यवे।
भाखे० ग्रही संयम पावन्त, सेनानी सौभाग्यवे ॥ भा० ॥ ८२ ॥
राम नमी ऋषिपाय, पायाअति सन्तोष वे।
भाखे० आरति गईसुखथाय, प्रीती तणा अति पोषवे ॥ भा० ॥८३
एगुण साठमी ढाल, भवान्तर अवदातवे।
भाखे० केशराज ऋषिराजमें, चारुकही एवातवे ॥ भा० ॥ ८४ ॥

दोहा (सारंग सोरठी रागे)—

सीता पासे चालिके, तबआया श्री राम।
सुकुमालांगी स्वामिनी, कठण घणूं एकाम ॥ १ ॥
शीत तापना क्लेशअति, क्षुधा तृपानी व्याय।
रहेवो मेलेलूगडे, जिनमत नीए छाय ॥ २ ॥
भारथकी ए भारअति, म्होटो संयम भार।
क्यूंनिवर्तसे एभणी, सांसो एह अपार ॥ ३ ॥
राजा रावण-आगले, राखी रही निजटेक।
राखजे संयम विषय, साचीटेक अनेक ॥ ४ ॥
एम विमासी वन्दना, किधी राघव राय।
लक्ष्मण आदे प्रणमीया, सीताजीना पाय ॥ ५ ॥
स परिवारे रामजी, अयोध्या आवन्त।
गुण गातां सीता तणा, गाढो सुख पावन्त ॥ ६ ॥

ढाल साठमी-

तर्ज-ओभूनी-अथवा-खेमावन्त सुण भगवन्तनोजी-

सतियों में सीता साचीजी, सुरवर दीधी साखी (टेर)
भलि २ मुख भाखी ॥ स० ॥
श्री मुखे भाखी रामजी जी, शील सहाय राखीयां जी ॥स०॥१॥
तीरथ में साचो सुद्दीजी, तीरथ चारु ही देखी ।
मंत्रों में साचो सुणोजी, श्री नमोकार निशेषी ॥ स० ॥ २ ॥
दानों में साचो कह्योजी, जीवतणूं जगदान ।
व्रतों में साचो कह्योजी, साचो शील प्रधान ॥ स० ॥ ३ ॥
नियमों में साचो भण्योजी, नियम वडो सन्तोप ।
साचो तप तपियां तणोजी, समता रसनो पोप ॥स०॥ ४ ॥
दुष्कर तप तपगे करीजी, सेनापतिजी सोई ।
स्वर्गे पहूंच्यो पांचमेजी, परम महा सुखहोई ॥ स० ॥ ५ ॥
साठ वर्ष लगे स्वामीनीजी, विविध परे तप कीध ।
काया कीधी दूबलीजी, नरभवनूं फल लीध ॥ स० ॥ ६ ॥
अहोनिशा तेतीशनोजी, अनशन अति आराधो ।
दश विध आराधन करीजी, समरस नो रस साधी ॥ स० ॥ ७ ॥
सागरतो बावीशनोजी, पायो पूरो आव ।
अच्युत इन्द्र पद भोगवेजी, सीता पुण्य प्रभाव ॥ स० ॥ ८ ॥
गिरि वैताढ्ये जाणीयेजी, कंचन पुर परसिद्ध ।
कनकरथ राजा भलोजी, राज्य करे समृद्ध ॥ स० ॥ ९ ॥
मन्दाकिनी सुमातुनीजी, चन्द्रमुखी उल्लास ।
पुत्री दोई पाणवाजी, स्वयम्बर मण्डप नाम ॥ स० ॥ १० ॥
राम सु लक्ष्मण नेडियाजी, पुत्रने परिवार ।
आया आडम्बर घणेजी, करी जग जयकार ॥ स० ॥ ११ ॥
लवण 'वरे' मन्दाकिनीजी, चन्द्रमुखी मदनाल ।
'अङ्कुश' नेआगे घणीजी, परिणावे उम्माल ॥ स० ॥ १२ ॥

सुदर्शनाजी मांय, दोई सुतउदर धारीया।
भाखे० प्रियंकर प्रसिद्ध, शुभंकर शुभकारीया॥ भा०॥ ७९॥
राज्यकरी व्रतपाली, देवहुआ ग्रैव्येकवे।
भाखे० लवणांकुश एदोई, सीता सुत सुविवेकवे॥ भा०॥ ८०॥
सुदर्शनाजी माय, भवान्तर नी जेहवे।
भाखे० सिद्धारथ साथाय, जेही पढाया एहवे॥ [ ] ०॥ ८१॥
ए मुनि वचन सुणन्त, बहुजनने वैराग्यवे।
भाखे० ग्रही संयम पावन्त, सेनानी सौभाग्यवे॥ भा०॥ ८२॥
राम नमी ऋषिपाय, पायाअति सन्तोप वे।
भाखे० आरति गईसुखथाय, प्रीती तणा अति पोपवे॥ भा०॥८३
एगुण साठमी ढाल, भवान्तर अवदातवे।
भाखे० केशराज ऋपिराजमें, चारुकही एवातवे॥ भा०॥ ८४॥

दोहा (सारंग सोरठी रागे)—

सीता पासे चालिके, तवआया श्री राम।
सुकुमालांगी स्वामिनी, कठण घणूं एकाम॥ १॥
शीत तापना क्लेशअति, क्षुधा तृपानी व्याय।
रहेवो मेलेल्लूगड़े, जिनमत नीए छाय॥ २॥
भारथकी ए भारअति, म्होटो संयम भार।
क्युंनिवर्तसे एभणी, सांसो एह अपार॥ ३॥
राजा रावण-आगले, राखी रही निजटेक।
राखजे संयम विपय, साचीटेक अनेक॥ ४॥
एम विमासी वन्दना, किधी राघव राय।
लक्ष्मण आदे प्रणमीया, सीताजीना पाय॥ ५॥
स परिवारे रामजी, अयोध्या आवन्त।
गुण गातां सीता तणा, गाढो सुख पावन्त॥ ६॥

ढाल साठमीं—

तर्ज—ओंभूनी—अथवा—खेमावन्त सुण भगवन्तनोजी—

सतियों में सीता साचीजी, सुरवर दीधी साखी (टेर)
भलि २ मुख भाखी ॥ स० ॥
श्री मुखे भाखी रामजी जी, शील सहाय राखीयां जी ॥स०॥१॥
तीरथ में साचो सुहीजी, तीरथ चारु ही देखी ।
मंत्रों में साचो सुणोजी, श्री नमोकार विशेषी ॥ स० ॥ २ ॥
दानों में साचो कह्योजी, जीवतणुं अभयदान ।
व्रतों में साचो कह्योजी, साचो शील प्रधान ॥ स० ॥ ३ ॥
नियमों में साचो भण्योजी, नियम वडो सन्तोष ।
साचो तप तपियां तणोजी, समता रसनो पोष ॥स०॥ ४ ॥
दुष्कर तप तपने करीजी, सेनापतिजी सोई ।
स्वर्गे पहूंच्यो पांचमेजी, परम महा सुखदोई ॥ स० ॥ ५ ॥
साठ वर्ष लगे स्वामीनीजी, विविध परे तप कीध ।
काया कीधो दूबलीजी, नरभवनुं फल लीध ॥ स० ॥ ६ ॥
अहोनिशा तेतीशनोजी, अनशन अति आराधी ।
दश विध आराधन करीजी, समरस नो रस साधी ॥ स० ॥ ७ ॥
सागरतो बावीशनोजी, पायो पूरो आय ।
अच्युत इन्द्र पद भोगवेजी, सीता पुण्य प्रभाव ॥ स० ॥ ८ ॥
गिरि वैताढ्ये जाणीयेजी, कंचन पुर प्रसिद्ध ।
कनकरथ राजा भलोजी, राज्य करे समृद्ध ॥ स० ॥ ९ ॥
मन्दाकिनी सुभानुनीजी, चन्द्रमुखी उद्दाम ।
पुत्री दोई परणवाजी, स्वयम्बर मण्डप नाम ॥ स० ॥ १० ॥
राम नु लक्ष्मण नेडियाजी, पुत्रने परिवार ।
आया आडम्बर घणेजी, पाम्यो जय जयकार ॥ स० ॥ ११ ॥
लवन 'वरे' मन्दाकिनीजी, चन्द्रमुखी कउशाल ।
'अङ्कुश' ने आगे भलीजी, पहिराने वरमाल ॥ स० ॥ १२ ॥

लक्ष्मण कुंवर कोपियाजी. अढाईसो वरसार।
लवणांकुश ने आगलेजी, मांडवे युद्ध अपार ॥ स० ॥ १३ ॥
लवणांकुश भाखे भलीजी, काकोजी ते बाप।
प्रीतपनोतो छेघणोंजी. सूंकरवो सन्ताप ॥ स० ॥ १४ ॥
अवध्यछे भाई भणोजी, तेहथी वध नविथाय।
गज केसरीने आगलेजी, बोलन्तां नलजाय ॥ स० ॥ १५ ॥
शर्माणा सुमता थयाजी, वैराग्ये वन वास।
अनुमति मांगी बापनीजी. आया मुनिवर पास ॥ स० ॥ १६ ॥
अढाईसो एकठाजी, कुंवर एकही वार।
'महाबल मुनि श्रीमुखेजी, लीधो संयम भार ॥ स० ॥ १७ ॥
लवणांकुश कुंवर तणोजी, कीधो तव विवाह।
स्वामी अयोध्या आवीयाजी. हुओघणो उत्साह ॥ स० ॥ १८ ॥
'भामण्डल भूपालनेजी, उपर भूमिआय।
बहुविध भावे भावनाजी, चित्तने लिये समझाय ॥ स० ॥ १९ ॥
वशकरी श्रेणीदोईनेजी, वर्तावी जय आण।
अबजो दीक्षा लीजियेजी, तो सघलोसु प्रमाण ॥ स० ॥ २० ॥
एम चिन्तवतां तेहनेजी, माथे विद्युत् पात।
देवकुरु एजई ऊपन्याजी, सुखमांही दिनजात ॥ स० ॥ २१ ॥
एक दिवस हनुमन्तजी जी, मेरु गिरिपे जाय।
चैत्रमासे क्रीडा करीजी, मन रलियापत थाय ॥ स० ॥ २२ ॥
वाटे आवन्तां थकांजी, रवि आथमतो देख।
एह स्वरूप संसारनूंजी, चित्त चिन्ते सुविशेष ॥ स० ॥ २३ ॥
दिनने आदे ऊगीयोजी, वध्यो मध्य दिन ताय।
वध्योदिन घटवे करीजी, माणम एम गणाय ॥ स० ॥ २४ ॥
पुत्र पनोतो पाटवीजी, राज-भार थापन्त।
दीक्षा महोत्सव मांडियोजी, दानघणूं आपन्त ॥ स० ॥ २५ ॥
'धर्मरत्न गुरु पाखतीजी, लीधो संयम भार।

सुन्दरी साडी सातसेजी, लागीप्रभुने लार ॥ स० ॥ २६ ॥
खावे पीवे पहिरवेजी, करवे भोग विलास ।
प्रेम करावे पद्मनीजी, मांडी एप्रिगमूं आश ॥ स० ॥ २७ ॥
अलूणी सीला चाढवेजी, प्रिय साथे वैराग्य ।
करेतिका धन्य कामनीजी, माथे शिरनूं भाग ॥ स० ॥ २८ ॥
आर्जिका लक्ष्मीवतीजी, प्रवर्तिनी कहिवाय ।
साथेरहे ए साधवीजी, पडेगुणे गुनपाय ॥ स० ॥ २९ ॥
साचो संयम पालवेजी, कर्मतणो क्षयकार ।
हनुमन्त हुआ केवलीजी, पाम्या भवनो पार ॥ स० ॥ ३० ॥
हनुमन्त-दीक्षा सांभलीजी, चित चिंते श्री राम ।
कदप्रभु दीक्षातणोजी, छांडो विषय सुखठाम ॥ स० ॥ ३१ ॥
सौधर्म-हरि अवधि एकरीजी जाणीएह परणाम ।
विषय महागति कर्मकीजी, कहे ममाए नाम ॥ स० ॥ ३२ ॥
चर्मशरीरी-रामजीरे, करे धर्मनी हांसी ।
वखाणे विषया घणीजी, न चढे वचन विमासी ॥ स० ॥ ३३ ॥
हाहामें जाण्योसहीजी, लक्ष्मण-राम-सनेह ।
वचन् अगोचर छेघणोजी, कोईन पावेछेह ॥ स० ॥ ३४ ॥
ताम चल्या दो देवताजी, पुरी अयोध्या आय ।
नेह परिक्षा कारणेजी, मांडे एह उपाय ॥ स० ॥ ३५ ॥
लक्ष्मणने माया करीजी, देखाडे नेदेव ।
अन्तेउर सहु रोवतोजी, करुणस्वरे ततखेव ॥ स० ॥ ३६ ॥
पद्म? पद्म? हा? पद्मनयन?जी, पद्मिनी अधिक पुकार ।
रोवेमरण अकालनूंजी, कह्यो किम्नूं किरतार ! ॥ स० ॥ ३७ ॥
वक्षस्थल कूटेघणोजी, मोकलुटा केश ।
मेलीनेते मानुनीजी, करती अधिक कलेश ॥ स० ॥ ३८ ॥
विलोकी विषवाद येजी, जाते लक्ष्मण भूप ।
जीवितनूं जीवितपणूंजी, भाई भूप अनूप ॥ स० ॥ ३९ ॥

लक्ष्मण कुंवर कोपियाजी. अढाईसो वरसार ।
लवणांकुश ने आगलेजी, मांडवे युद्ध अपार ॥ स० ॥ १३ ॥
लवणांकुश भाखे भलीजी, काकोजी ते बाप ।
प्रीतपनोतो छेघणोंजी. सूंकरवो सन्ताप ॥ स० ॥ १४ ॥
अवध्यछे भाई भणोजी, तेहथी वध नविथाय ।
गज केसरीने आगलेजी, बोलन्तां नलजाय ॥ स० ॥ १५ ॥
शर्माणा सुमता थयाजी, वैराग्ये वन वास ।
अनुमति मांगी बापनीजी. आया मुनिवर पास ॥ स० ॥ १६ ॥
अढाईसो एकठाजी, कुंवर एकही वार ।
'महाबल मुनि श्रीमुखेजी, लीधो संयम भार ॥ स० ॥ १७ ॥
लवणांकुश कुंवर तणोजी, कीधो तव विवाह ।
स्वामी अयोध्या आवीयाजी. हूओघणो उत्साह ॥ स० ॥ १८ ॥
'भामण्डल भूपालनेजी, उपर भूमिआय ।
बहुविध भावे भावनाजी, चित्तने लिये समझाय ॥ स० ॥ १९ ॥
वशकरी श्रेणीदोईनेजी, वर्तावी जय आण ।
अबजो दीक्षा लीजियेजी, तो सघलोसु प्रमाण ॥ स० ॥ २० ॥
एम चिन्तवतां तेहनेजी, माथे विद्युत् पात ।
देवकुरु एजई ऊपन्याजी, सुखमांही दिनजात ॥ स० ॥ २१ ॥
एक दिवस हनुमन्तजी जी, मेरु गिरिपे जाय ।
चैत्रमासे क्रीडा करीजी, मन रलियापत थाय ॥ स० ॥ २२ ॥
वाटे आवन्तां थकांजी, रवि आथमतो देख ।
एह स्वरूप संसारनूंजी, चित्त चिन्ते सुविशेष ॥ स० ॥ २३ ॥
दिनने आदे ऊगीयोजी, चढ्यो मध्य दिन ताय ।
चढ्योदिन घटवे करीजी, माणस एम गणाय ॥ स० ॥ २४ ॥
पुत्र पनोतो पाटवीजी, राज-भार थापन्त ।
दीक्षा महोत्सव मांडियोजी, दानघणूं आपन्त ॥ स० ॥ २५ ॥
'धर्मरत्न गुरु पाखतीजी, लीधो संयम भार ।

सुन्दरी साडी सातसेजी, लागीप्रभुने लार ॥ स० ॥ २६ ॥
खावे पीवे पहिरवेजी, करवे भोग विलास ।
प्रेम करावे पद्मनीजी, मांडी एप्रियसुं आश ॥ स० ॥ २७ ॥
रूणी सीला चाढवेजी, प्रिय साथे वैराग्य ।
रेतिका धन्य कामनीजी, साथे शिवनूं माग ॥ स० ॥ २८ ॥
ार्जिका लक्ष्मीवतीजी, प्रवर्तिनी कहिवाय ।
ाथेरहे ए साधवीजी, पढेगुणे गुखपाय ॥ स० ॥ २९ ॥
ाचो संगम पालवेजी, कर्मतणो क्षयकार ।
हनुमन्त हुआ केवलीजी, पाम्या भवनो पार ॥ स० ॥ ३० ॥
हनुमन्त-दीक्षा सांभलीजी, चिन्त चित्ते श्री राम ।
कष्टग्रह्यू दीक्षातणोजी, छांडो विषय सुखठाम ॥ स० ॥ ३१ ॥
सौधर्म-हरि अवधि एकरीजी जाणीएह परणाम ।
विषय महागति कर्मकीजी, कहे सभाए नाम ॥ स० ॥ ३२ ॥
चर्मशरीरी-रामजीरे, करे धर्मनी हांसी ।
वखाणे विषया घणीजी, न वदे वचन विमासी ॥ स० ॥ ३३ ॥
हाहामें जाण्योसहीजी, लक्ष्मण-राम-सनेह ।
वचन अगोचर छेघणोजी, कोईन पावेछेह ॥ स० ॥ ३४ ॥
नाम चल्या दो देवताजी, पुरी अयोध्या आय ।
नेह परिक्षा कारणेजी, मांडे एह उपाय ॥ स० ॥ ३५ ॥
लक्ष्मणने माया करीजी, देखाते नेदेव ।
अन्तेउर सहु रोवतोजी, करुणस्वरे ततखेव ॥ स० ॥ ३६ ॥
पद्म? पद्म? हा? पद्मनयनरीजी, पोकर्नो अधिक पुकार ।
रोदेमरण अकालनुंजी, कांईकिन्नूं किरतार! । स० ॥ ३७ ॥
वक्षस्थल कूटेघणीजी, माथेकुटा केश ।
मेलीनेने मानुनीजी, करती अधिक कलेश । स० ॥ ३८ ॥
विलोकी विषवाद एजी, भाते लक्ष्मण भूप ।
जीवितनूं जीवितपणूंजी, भाई भूप अनूप । स० ॥ ३९ ॥

ात कहन्तां मरिगयोजी, फिटरे पापी काल ।
तारियो छलवट करीजी, रघुपतिस्यों भूपाल ॥ स० ॥ ४० ॥
ह कहन्त स्वमीनोजी, वचनां साथे जीव ।
निकलीगयो ततक्षण तदाजी, आतुर पणे अतीव ॥ स० ॥ ४१ ॥
सिंहासन बैठा थकाजी, हेमथम्भ अवथम्भि ॥
आंख पसार्योही रह्योजी, लेप बिम्ब निरदम्भि ॥ स० ॥ ४२ ॥
लक्ष्मण मूओ जाणिकेजी, देवकरे विखवाद ।
हास्यथकी अनरथ हुओजी, वहोगयो परसाद ॥ स० ॥ ४३ ॥
विश्वाधार विशेपथीजी, ओंयों हणियो एह ।
श्चात्ताप करी घणोजी, स्वर्ग गया सुरतेह ॥ स० ॥ ४४ ॥
न्तः पुरिनी पद्मनीजी, मूओ जाणी कन्त ।
कूटे पीटे आवटेजी, रोवे अति विलवन्त ॥ स० ॥ ४५ ॥
शोक वचन श्रवणे सुणीजी, राघव धसि आवन्त ।
अमंगल अजाणीयाजी, मण्डे किस्यो तुरन्त ॥ स० ॥ ४६ ॥
जीवेछे मुझभाईजीजी, एमसूं केम मरन्त ?।
मूर्च्छियो कोई प्रकारथीजी, तव उपचार करन्त ॥ स० ॥ ४७ ॥
वैद्य बुलाया वेगसूंजी, पूछ्यूं ज्योतिप जाण।
तंत्र मंत्र उपकर्म अतिजी, कीधा आप प्रमाण ॥ स० ॥ ४८ ॥
कोइयन आयो पाधरोजी, ताम प्रभु मूर्च्छाय ।
संज्ञापामी ने खरोजी, करुण स्वरे विललाय ॥ स० ॥ ४९ ॥
शत्रुघ्न सुग्रीवजीजी. विभीपण लंकेश ।
दुःखे अधिकूं आरडेजी. रोवे राय अशेप ॥ स० ॥ ५० ॥
कौशल्यादिक मायजीजी, नयणे नांखे नीर ।
छोडिने वडवीर नेजी, गया विललाई वीर ॥ स० ॥ ५१ ॥
मार्ग मार्ग पन्थमेंजी, घर घर हाटे हाट ।
शोकमय सहुको हुआजी, पड़ी अचिन्ती वाट ॥ स० ॥ ५२ ॥
लवणांकुश प्रभुने नमीजी, अनुमति मांगे आप ।

ए संसार असारछेजी, यमनो प्रबल प्रताप ॥ स० ॥ ५३ ॥
अमृतघोप मुनिशपेजी, पामी उत्तम दिक्ख ।
मोक्ष गया मुनिवर सहीजी, आराधी गुरु शिक्ख ॥ स० ॥ ५४ ॥
भाईने पुत्रों तणोजी पामी घणो वियोग ।
फिरी फिरी मूर्च्छाए प्रभुजी, वधतो जाये शोग ॥ स० ॥ ५५ ॥
भाईजीए तुम्ह विनाजी, पुत्रां दीधी पूठ ।
हजु किस्यूं आगे हुसीजी, तिहांथी वेगो उठ ॥ स० ॥ ५६ ॥
मोहे मूर्च्छाणो घणोजी, जाण्यो राम नरेश ।
विभीषणादिक रायजीजी, समझावे सुविशेष ॥ स० ॥ ५७ ॥
धीरा मांही धीरतुजी, वीरों को शिरताज ।
लज्जा कारी लोकमेंजी, अधिर पणुं तजि आज ॥ स० ॥ ५८ ॥
एह सुणी अति कोपियोजी, होठ डसी बोलन्त ।
प्रबल वायने वाजवेंजी, डुंगर नवि डोलन्त ॥ स० ॥ ५९ ॥
जीवेछे मुझ भाईजीजी, मुआ तुम्हारा भ्रात ।
देवोतुम्हे दाग उतावलोजी, अवसर वहियोजात ॥ स० ॥ ६१ ॥
वलि वलितुं भाईजीजी, कांई लगावे वार ।
छिद्रलई करसे घणूंजी, दूर्जन एह वेमार ॥ स० ॥ ६२ ॥
अथवा दुर्जन देखतांजी, कोपेनहीं राजान ।
एमकहीं खांधे धरीजी, नवृत्ती अनेरे थान ॥ स० ॥ ६३ ॥
स्नान करावे हायसुंजी, अंगूछीने अंग ।
विलेपन विधि आचरीजी, राम करे अतिरंग ॥ स० ॥ ६४ ॥
थालभरी भोजन तणोजी, मूके आगे आण ।
भाईजी आरोगीयेजी, बोले मीठी वाण ॥ स० ॥ ६५ ॥
कदहीं अंकारे रोपिकेजी, चूंबे वार अनेक ।
सन्तक पालकनी परेजी, सूणगदे विवेक ॥ स० ॥ ६६ ॥
पोढाणी ने पालकेजी, आपही भले पांव ।

१ गोशीर्ष चन्दन =

वात कहन्तां मरिगयोजी, फिटरे पापी काल।
छेतरियो छलवट करीजी, रघुपतिस्यों भूपाल ॥ स० ॥ ४० ॥
एह कहन्त स्वमीनोजी, वचनां साथे जीव।
निकलीगयो ततक्षण तदाजी, आतुर पणे अतीव ॥ स० ॥ ४१ ॥
सिंहासन बैठा थकाजी, हेमथम्भ अवथम्भि ॥
आंख पसार्योंही रह्योजी, लेप बिम्ब निरदम्भि ॥ स० ॥ ४२ ॥
लक्ष्मण मूओ जाणिकेजी, देवकरं विखवाद।
हास्यथकी अनरथ हुओजी, वहोगयो परसाद ॥ स० ॥ ४३ ॥
विश्वाधार विशेषथीजी, ओंयों हणियो एह।
पश्चात्ताप करी घणोजी, स्वर्ग गया सुरतेह ॥ स० ॥ ४४ ॥
अन्तः पुरिनी पद्मनीजी, मूओ जाणी कन्त।
कूटे पीटे आवटेजी, रोवे अति विलवन्त ॥ स० ॥ ४५ ॥
शोक वचन श्रवणे सुणीजी, राघव भासि आवन्त।
अमंगल अजाणीयाजी, मण्डे किस्यो तुरन्त ॥ स० ॥ ४६ ॥
जीवेछे मुझभाईजीजी, एमखूं केम मरन्त ?।
मूर्च्छियो कोई प्रकारथीजी, तव उपचार करन्त ॥ स० ॥ ४७ ॥
वैद्य बुलाया वेगसूंजी, पूछ्यूं ज्योतिष जाण।
तंत्र मंत्र उपकर्म अनिजी, कीधा आप प्रमाण ॥ स० ॥ ४८ ॥
कोइयन आयो पाधरोजी, ताम प्रभु मूर्च्छाय।
संज्ञापामी ने खरोजी, करुण स्वरे विललाय ॥ स० ॥ ४९ ॥
शत्रुघ्न सुग्रीवजीजी. विभीषण लंकेश।
दुःखे अधिकूं आरडेजी. रोवे राय अशेष ॥ स० ॥ ५० ॥
कौशल्यादिक मायजीजी, नयणे नांखे नीर।
छोडिने वडवीर नेजी, गया विललाई वीर ॥ स० ॥ ५१ ॥
मार्ग मार्ग पन्थमेंजी, घर घर हाटे हाट।
शोकमय सहुको हुआजी, पड़ी अचिन्ती वाट ॥ स० ॥ ५२ ॥
लवणांकुश प्रभुने नमीजी, अनुमति मांगे आप।

ए संसार असारछेजी, यमनो प्रबल प्रताप ॥ स० ॥ ५३ ॥
अमृतघोष मुनिशषेजी, पामी उत्तम दिक्ख।
मोक्ष गया मुनिवर सहीजी, आराधी गुरु शिक्ख ॥ स० ॥ ५४ ॥
भाईने पुत्रां तणोजी पामी घणो वियोग।
फिरी फिरी मूर्च्छाए प्रभुजी, वधतो जाये शोग ॥ स० ॥ ५५ ॥
भाईजीए तुम्ह विनाजी, पुत्रों दीधी पूठ।
हजु किस्यूं आगे हुसीजी, तिहांथी वेगा ऊठ ॥ स० ॥ ५६ ॥
मोहे मूर्च्छाणो घणोजी, जाण्यो राम नरेश।
विभीषणादिक रायजीजी, समझावे सुविशेष ॥ स० ॥ ५७ ॥
धीरा मांही धीरतुजी, वीरों को शिरताज।
लज्जा कारी लोकमेंजी, अधिर पणुं तजि आज ॥ स० ॥ ५८ ॥
एह सुणी अति कोपियोजी, होठ डसी बोलन्त।
प्रबल वायने वाजवेगी, डूंगर नवि डोलन्त ॥ स० ॥ ५९ ॥
जीवेछे मुझ भाईजीजी, मुआ तुम्हारा भ्रात।
देवोतुम्हे दाग उतावलोजी, अवसर वहियोजात ॥ स० ॥ ६१ ॥
वलि वलितूं भाईजीजी, कांई लगावे वार।
छिद्रलई करसे वगूंजी, दुर्जन एह पैसार ॥ स० ॥ ६२ ॥
अथवा दुर्जन देखतांजी, कोपेनहीं राजान।
एमकही खांधे धरीजी, नञ्यो अनेरे थान ॥ स० ॥ ६३ ॥
स्नान करावे हाथसूंजी, अंगूछीने अंग।
विलेपन विधि भावसोजी, राम करे अतिरंग ॥ स० ॥ ६४ ॥
थालभरी भोजन तणोजी, मूके आगेआन।
भाईजी आरोगोवेजी, बोले मीठी वाण ॥ स० ॥ ६५ ॥
कदहीं अंकार रोपिकेजी, चूंबे वार अनेक।
मस्तक पालकनी परेजी, छूपणवंत विवेक ॥ स० ॥ ६६ ॥
पोढावी ने पालकेजी, आपहीं चम्पे पाव।

१ मोहोमें पैजावर =

कानेलागी वात करेजी, कहिर घाले वाय ॥ स० ॥ ६७ ॥
ए विध पोषे मोहिनीजी, न लहे शुद्ध लगार।
वोली१गया खट्मास जवजी, वैरीकरे विकार ॥ स० ॥ ६८ ॥
इन्द्रजीत ने सुंदनाजी, नन्दन महाभय वन्त।
अपरही वयरी घणाजी, निसुणी ए विरतन्त ॥ स० ॥ ६९ ॥
'अयोध्या ए आवीयाजी, गुप्तपणे ततकाल।
सूनी जाणीने गुफाजी, जेम आवन्त सीयाल ॥ स० ॥ ७० ॥
खवर लेई श्री रामजीजी, अंकारोयो बन्धु।
धनुष्य वाणने करग्रहीजी, गाजन्तां जेम सिन्धु ॥ स० ॥ ७१ ॥
आसन कम्पे अवधिसूंजी, आवे देव जटायु।
देवघणासूं परिवर्योंजी, करवा राम सहायु२ ॥ स०॥ ७२ ॥
सुरवर सानिध्य साचवेजी, तेनहीं केहने पाडी।
विभीषणादिक खेचराजी, अलगाकिया तेताड़ी ॥ स० ॥ ७३ ॥
लक्ष्मण संयम ग्रह्योजी, भेट्यो गुरु अतिवेग।
तेग फूरीनहीं राजनींजी, तामग्रही व्रत वेग ॥ स० ॥ ७४ ॥
ढाल भणीए साठमीजी, जेहनां चरम शरीर।
'केशराज वश मोहनेजी, हुआ अधिक अधीर ॥ स० ॥ ७५ ॥

दोहा (गोडी रागे)

देव जटायु रामने, देखावे दृष्टान्त।
समझावा ने कारणे, आव्यो छे एकान्त ॥ १ ॥
पंकज रोपे शील उपरे, सींचे सूको वृक्ष।
उखर खेते अकालहीं, वावे वीज प्रत्यक्ष ॥ २ ॥
घाणी पीले रेतनी, ताम कहे श्रीराम।
किस्यूं करेरे मानवी, मूढ़ पणानों काम ? ॥ ३ ॥
पंकज२ ऊगे पाणिए, पाणी विण न उगन्त।
जलसूं सींच्ये मूसलू, क्यूंही नवि फूलन्त ॥ ४ ॥

१ पूरेहुवे= २ सहाय= २ कमल=

बीज न ऊगे जल विना, उखर खेत विशेष ।
वेलू पिल्यां घाणिए, मूर्ख तेल मत देख ॥ ५ ॥
तब बोल्यो हसि देवता, एओ एमज होय ।
मूओ फरी जीवे नहीं, स्वामी विमासी जोय ॥ ६ ॥
एम कह्यां कोप्या घणूं, आलंगीने१ देह ।
कहे दूरजा दृष्टिथी, आणूं छूं तुझ छेह ॥ ७ ॥
सेनापति२ सुर लोकथी, जटायु नो उपाय ।
देखे जब लागे नहीं, मोहमें रहे रघुराय ॥ ८ ॥
आप उपायज केलवे, मूई नारी एक ।
खांधे धरीने आवीयो, राम वदे सुविशेष ॥ ९ ॥
एकां मूर्ख धीट नर, मूई नारी खांध ।
लेई फरे लेशे नहीं, मूओ आयुखो सांध ॥ १० ॥
स्वामी ? अमगल कहां कहो, ए मुझ व्हाली नार ।
हैया थकी नवि ऊतरे, राम कहे सुविचार ॥ ११ ॥
व्हाला थी व्हालो हुवे, मूओ फरि नावन्त ।
मूआ गयाते शोचतां, शोभ न को पावन्त ॥ १२ ॥
पर उपदेशो जग घणो, आप न समझे कोई ।
राम मोहे मोही रह्या, नाम कहे सुर सोई ॥ १३ ॥
डुंगर बलतो देखीए, पग तले नवि देखन्त ।
छिद्र पराया पेखिए, पोताना न पेखन्त ॥ १४ ॥
ए वचने प्रति बूझियो, प्रभुजी आयो ठाम ।
लक्ष्मण भाईजी नहीं, मूओ जाणे ए नाम ॥ १५ ॥
तबने दोई देवता, आपणो देखाय ।
पगेलागी प्रभुजीनवे, स्वर्गे पहुंता जाय ॥ १६ ॥
संस्कार कारावयो, राम किधो नेवार ।
आपदुखा ऊतारता, लेवा संयम भार ॥ १७ ॥

१ राम लक्ष्मण के शरीरको आलिंगन कर = २ कृतान्तवदन

कानेलागी वात करेजी, कहिर घाले वाय ॥ स० ॥ ६७ ॥
ए विध पोपे मोहिनीजी, न लहे शुद्ध लगार।
वोली१गया खट्मास जवजी, वैरीकरे विकार ॥ स० ॥ ६८ ॥
इन्द्रजीत ने सुंदनाजी, नन्दन महामय वन्त।
अपरही वयरी घणाजी, निसुणी ए विरतन्त ॥ स० ॥ ६९ ॥
'अयोध्या ए आवीयाजी, गुप्तपणे ततकाल।
सूनी जाणीने गुफाजी, जेम आवन्त सीयाल ॥ स० ॥ ७० ॥
खवर लेई श्री रामजीजी, अंकारोयो बन्धु।
धनुष्य बाणने करग्रहीजी, गाजन्तां जेम सिन्धु ॥ स० ॥ ७१ ॥
आसन कम्पे अवधिसूंजी, आवे देव जटायु।
देवघणासूं परिवर्योजी, करवा राम सहायु२ ॥ स०॥ ७२ ॥
सुरवर सानिध्य साचवेजी, तेनहीं केहने पाडी।
विभीपणादिक खेचराजी, अलगाकिया तेताड़ी ॥ स० ॥ ७३ ॥
लज्जाणा संयम ग्रह्योजी. भेट्यो गुरु अतिवेग।
तेग फूरीनहीं राजनींजी, तामग्रही व्रत वेग ॥ स० ॥ ७४ ॥
ढाल भणीए साठमीजी, जेहनां चरम शरीर।
'केशराज वश मोहनेजी, हुआ अधिक अधीर ॥ स० ॥ ७५ ॥

दोहा (गोडी रागे)

देव जटायु रामने, देखावे दृष्टान्त।
समझावा ने कारणे, आव्यो छे एकान्त ॥ १ ॥
पंकज रोपे शील उपरे, सींचे सूको वृक्ष।
उखर खेते अकालहीं, वावे वीज प्रत्यक्ष ॥ २ ॥
घाणी पीले रेतनी. ताम कहे श्रीराम।
किस्यूं करेरे मानवी, मूढ पणानों काम ? ॥ ३ ॥
पंकज३ ऊगे पाणिए, पाणी विण न उगन्त।
जलसूं सींच्ये मूसलूं, क्यूंही नवि फूलन्त ॥ ४ ॥

---

१ पूरेहुवे= २ सहाय= ३ कमल=

बीज न ऊगे जल विना, उखर खेत विशेष ।
वेलू पिल्यां घाणिए, मूर्ख तेल मत देख ॥ ५ ॥
तब बोल्यो हसि देवता, एजो एमज होय ।
मूओ फरी जीवे नहीं, स्वामी विमासी जोय ॥ ६ ॥
एम कह्यां कोप्या घणूं, आलिंगीने१ देह ।
कहे दूरजा दृष्टिथी, आणूं छूं तुझ छेह ॥ ७ ॥
सेनापति२ सुर लोकथी, जटायु नो उपाय ।
देखे जब लागे नहीं, मोहमें रहे रघुराय ॥ ८ ॥
आप उपायज केलवे, मूई नारी एक ।
खांधे धरीने आवीयो, राम वदे सुविशेष ॥ ९ ॥
एकां मूर्ख धीट नर, मुई नारी खांध ।
लेई फरे लेशो नहीं, मूओ आयुखो सांध ॥ १० ॥
स्वामी ! अमंगल कहां कहो, ए मुझ व्हाली नार ।
हैया थकी नवि उतरे, राम कहे सुविचार ॥ ११ ॥
व्हाला थी व्हालो हुवे, मूओ फरि नावन्त ।
मूआ सगाते शोचतां, शोभ न को पावन्त ॥ १२ ॥
पर उपदेशो जग घणो, आप न समझे कोई ।
राम मोहे मोही रह्या, ताम कहे सुर सोई ॥ १३ ॥
डुंगर बलतो देखीए, पग तले नवि देखन्त ।
छिद्र पराया पेखिए, पोताना न पेखन्त ॥ १४ ॥
ए वचने प्रति बुझियो, प्रभुजी आयो ठाम ।
लक्ष्मण भाईजी मही, मूओ जाणे ए राम ॥ १५ ॥
तरने दोई देवता, आपणो देखाय ।
पगेलागी प्रभुजीतणे, स्वर्गे पहुंता आय ॥ १६ ॥
संस्कार कायातणो, राम कियो नेहार ।
आपहुया उजवालना, लेवा संयम भार ॥ १७ ॥

१ राम लक्ष्मण के शरीरसे आलिंगनकर = २ कृतान्तवदन

शत्रुघ्न ने राजनी, पदवी आये ईश ।
शत्रुघ्न इच्छेनहीं, संयम साथे जगीश ॥ १८ ॥
लवण-तणो अंगजअछे, अनंगदेव उदार ।
राज-भार तस अर्पियो, ओछवकरी अपार ॥ १९ ॥

ढाल इकसठमीं—तर्ज हामेरे पूज्यजी हा मेरे गुरुजी

धन्य प्रभु रामजी धन्य परिणामजी, पृथ्वीमें प्रशंसवे ।
धन्य तुम्ह तातजी धन्यतुझ मातजी. धन्यतेरा कुलवंशवे ॥धन्य॥१
मुनिसुव्रतने तीर्थे वर्ते, सुव्रतजी गणधारवे ।
अर्हद्दासे वताव्यो सद्गुरु, भवजल तारण हारवे ॥ धन्य ॥ २ ॥
शत्रुघ्न-सुग्रीव-विभीषण, वीर विराध उदारवे।
सोलेहजार नरेश्वर साथे, रामहुवा व्रतधारवे ॥ धन्य ॥ ३॥
वरनारी संयमव्रत लीधो, सहम तदा सेतीशवे।
श्रीमती आरजिका केरी, सेवकरे निश दीसवे ॥ धन्य० ॥ ४ ॥
पंचाचारी शुद्धाहारी, समितीगुप्ति प्रतिपालवे ।
शीलसुधारी परउपगारी, पट्कायिक रखवालवे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
छठ्ठअठ्ठम आदि तपकीजे, विविध अभिग्रह वन्तवे ।
कंचन नीपरे काय कसीजे, गुरु गिरुवा गुण वन्तवे ॥ धन्य ॥ ६ ॥
चवदेपूर्व अंग इग्यारे. पढ्या बुद्धि प्रमाणवे ।
पण्डित राज शिरोमणीसाचा, सवविधि जाण सुजाणवे ॥धन्य॥७॥
आसेवन नेग्रहण शिक्षा, दो सिक्या गुरुने संगवे ।
गुरुकुलवासे साठवर्ष लगे, रहिया मनने रंगवे ॥ धन्य ॥ ८ ॥
गुरु आदेशे उग्रविहारी, एकाकी विचरन्तवे ।
तीनहा रात्रे ध्यान तणेवल, अवधि अति उपजन्तवे ॥ धन्य ॥ ९ ॥
चउद रज्जात्मक लोकविलोके, जेमतो फलका मांहीवे ।
अनुज अधिक वेदन अनुभवतो, दीठो नरके प्राहीवे ॥धन्य॥१०॥
प्रभुजी चिन्ते जव हूं हूतो, नामे श्री धनदत्तवे ।
लक्ष्मणजी हूतो लघुभाई, वसुदत्त सुदत्तवे ॥ धन्य ॥ ११ ॥

उहांपण मुझेकाजे मूओ, भवमें भमतो भूरीवे ।
इहांपण लक्ष्मण मुझसाथे, रह्योनित्य हजूरीवे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥
वरस सो कुँवर पणेरे, मण्लीक शयतीनवे ।
दिग्विजय चालीस वर्षलगे, पदचीधर प्रवीनवे ॥ धन्य० ॥ १३ ॥
इग्यारे हजार पांचसे ऊपर, वरस विदिता माठ वे ।
सर्वायु तस चार महश्रनूं, दीसे ग्रन्थ ही पाठ वे ॥ धन्य० ॥ १४ ॥
अविरतीने वलि नर्के पहूंत्यो, कृत कर्मोनो जोरवे ।
जैसो कीजे तैसो लहिये, कांई करो नर शोर वे ॥ धन्य० ॥ १५ ॥
एमचिन्तवतां राम ऋपीश्वर, कर्म हणेवा हेतवे ।
तपजप अधिका अधिका कीजे, ममता भाव समेतवे ॥ धन्य० ॥ १६ ॥
दो१ उपवास किया दिनतीजे, लेवा काज आहारवे ।
'स्यन्दनस्थल२ नगरे पउधारे, जयणानी गतिमारवे ॥ धन्य० ॥ १७ ॥
चन्द्रही जेम चकोरादेखे, तेम पुरना सहु लोकवे ।
सन्मुखआया प्रणमेपाया, ए शुभनो संयोगवे ॥ धन्य० ॥ १८ ॥
आप आपणा घरनेद्वारे, भोजन केरा थालवे ।
आगेमूके भक्तिन चूके, आणीभाव रसालवे ॥ धन्य० ॥ १९ ॥
लोक शब्द थी घोरमच्यो अति, हाथीभंजे थम्भ वे ।
ऊंचाकान करे अतिघोड़ा, हुओ अधिक अचम्भवे ॥ धन्य० ॥ २० ॥
ओआहारन लीधोरामे, चलिआया नृपगेहवे ।
'प्रतिनन्दी भूपेप्रतिलाभ्या, आणीधर्म सनेहवे ॥ धन्य० ॥ २१ ॥
प्रभुजीनो पारणो पहूंत्यो, उपज्यो अति उल्हासवे ।
पंचसुदिव्य प्रसिद्धाहुआ, उद्घोषण आकाशवे ॥ धन्य० ॥ २२ ॥
प्रभुजी वननेंजई चिन्तविन्ने, पुरमांहे नविजाईवे ।
क्षोभघणो लोगोंने उपज्यो, कुण्डाई नवि थाईवे ॥ धन्य० ॥ २३ ॥
अब सुजतो वनमें फिरिने, मिलया आहारजी आईवे ।
नर्हीतर छई अभिग्रहकीधो, करवा तप उपवासवे ॥ धन्य० ॥ २४ ॥

१ [illegible] २ [illegible]

शत्रुघ्न ने राजनी, पदवी आये ईश ।
शत्रुघ्न इच्छेनहीं, संयम साथे जगीश ॥ १८ ॥
लवण-तणो अंगजअछे, अनंगदेव उदार ।
राज-भार तस अर्पियो, ओछवकरी अपार ॥ १९ ॥

ढाल इकसठमी—तर्ज हामेरे पूज्यजी हा मेरे गुरुजी

धन्य प्रभु रामजी धन्य परिणामजी, पृथ्वीमें प्रशंसवे ।
धन्य तुम्ह तातजी धन्यतुझ मातजी. धन्यतेरा कुलवंशवे ॥धन्य॥१
मुनिसुव्रतने तीर्थे वर्ते, सुव्रतजी गणधारवे ।
अर्हद्दासे वताव्यो सद्गुरु, भवजल तारण हारवे ॥ धन्य ॥ २ ॥
शत्रुघ्न-सुग्रीव-विभीषण, वीर विराध उदारवे ।
सोलेहजार नरेश्वर साथे, रामहुवा व्रतधारवे ॥ धन्य ॥ ३ ॥
वरनारी संयमव्रत लीधो, सहम तदा सतीशवे ।
श्रीमती आरजिका केरी, सेवकरे निश दीसवे ॥ धन्य० ॥ ४ ॥
पंचाचारी शुद्धाहारी, समितीगुप्ति प्रतिपालवे ।
शीलसुधारी परउपगारी, षट्कायिक रखवालवे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥
छठ्ठअठ्ठम आदि तपकीजे, विविध अभिग्रह वन्तवे ।
कंचन नीपरे काय कसीजे, गुरु गिरुवा गुण वन्तवे ॥ धन्य ॥ ६ ॥
चवदेपूर्व अंग इग्यारे. पढ्या बुद्धि प्रमाणवे ।
पण्डित राज शिरोमणीसाचा, सबविधि जाण सुजाणवे ॥धन्य॥७॥
आसेवन नेग्रहण शिक्षा, दो सिक्या गुरुने संगवे ।
गुरुकुलवासे साठवर्ष लगे, रहिया मनने रंगवे ॥ धन्य ॥ ८ ॥
गुरु आदेशे उग्रविहारी, एकाकी विचरन्तवे ।
तीनदी रात्रे ध्यान तणेबल, अवधि अति उपजन्तवे ॥ धन्य ॥ ९ ॥
चउद रज्जात्मक लोकविलोके, जेमतो फलकर मांहीवे ।
अनुज अधिक वेदन अनुभवतो, दीठो नरके मांहीवे ॥धन्य॥१०॥
प्रभुजी चिन्ते जब हूं हूतो, नामे श्री धनदत्तवे ।
लक्ष्मणजी हूतो लघुभाई, वसुदत्त सुदत्तवे ॥ धन्य ॥ ११ ॥

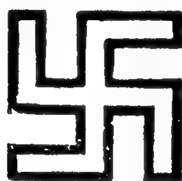
उहांपण मुझेकाजे मूओ, भवमें भमतो भूरीवे।
इहांपण लक्ष्मण मुझसाथे, रह्योनित्य हजूरीवे॥ धन्य० ॥ १२ ॥
वरस सो कुँवर पणेरे, मण्डलीक शयतीनवे।
दिग्विजय चालीस वर्षलगे, पदवीधर प्रवीनवे॥ धन्य० ॥ १३॥
इग्यारे हजार पांचसे ऊपर, वरस विदिता साठ वे।
सर्वायु तस बार सहश्रनूं, दीसे ग्रन्थ ही पाठ वे॥धन्य०॥१४॥
अविरतीने चलि नर्के पहूंत्यो, कृत कर्मांनो जोरवे।
जैसो कीजे तैसो लहिये, कांई करो नर शोर वे॥ धन्य० ॥१५॥
एमचिन्तवतां राम ऋषीश्वर, कर्म हणेवा हेतवे।
तपजप अधिका अधिका कीजे, समता भाव समेतवे॥धन्य०॥१६॥
दो१ उपवास किया दिनतीजे, लेवा काज आहारवे।
'स्यन्दनस्थल२ नगरे पउधारे, जयणानी गतिसारवे॥धन्य०॥१७॥
चन्द्रही जेम चकोरदेखे, तेम पुरना सहु लोकवे।
सन्मुखआया प्रणमेपाया, ए शुभनो संयोगवे॥ धन्य० ॥ १८ ॥
आप आपणा घरनेद्वारे, भोजन केरा थालवे।
आगेमूके भक्तिन चूके, आणीभाव रसालवे॥ धन्य० ॥ १९ ॥
लोक शब्द थी शोरमच्यो अति, हाथीभंजे थम्भ रे।
ऊंचाकान करे अतिघोडा, हुओ अधिक अचम्भरे॥धन्य० ॥ २०
ओआहारन लीधोरामे, चलिआरा नृपगेहवे।
'प्रतिनन्दी भूपेप्रतिलाभ्या, आणीमन सनेहवे॥ धन्य० ॥ २१ ॥
प्रभुजीनो पारणो पहूंत्यो, उपन्यो अति उल्हासरे।
पंचसुदिव्य प्रसिद्धाहुआ, उद्घोषण आकाशरे॥ धन्य० ॥ २२ ॥
प्रभुजी वननेजई चितचिन्ते, पुरमांही नावि जाऊंवे।
क्षोभपणो लोगोंने उपज्यो, दुःखदाई नहि थाऊंवे॥धन्य० ॥ २३
अल मूलतो घननें विषेरे, मिल्या आहारसी आववे।
नहींतर एह अभिग्रहकीधो, करवा तप उपावनवे॥ धन्य० ॥ २४॥

१ छट्ठ–दो दिनके उपवास की तपस्याके, २ स्यन्दनस्थल नगरमें आये [illegible]

-(कलश)-



राम-लक्ष्मण अने रावण, सती सीतानी चरी।
कही भाखी चरित्र साखी, वचन रचनाए करी ॥ १ ॥
संघ रंग विनोद वक्ता, अने श्रोता सुख भणी।
केशराज मुनिंद जम्पे, सदा हर्ष वधामणी ॥ २ ॥



इति श्री जैनपद्य रामायणे-भरत दीक्षाग्रहणं-मधुमरणं—शत्रुघ्नराज्य प्रदानं-सीतोपरिकलंकं-सीता वनवासं-लवणांकुशयो-जन्मं-विद्यापठन-लवणांकुश पाणिपीडनं-राम-लक्ष्मण सार्ध-युद्धं-सीताग्निप्रवेशं-सीता दीक्षा ग्रहणं-देवमाया-लक्ष्मण मरणं-रामदीक्षा-मोक्षप्राप्ति-पूर्वभव वर्णनमादि-विषयकं चतुर्थ-खण्डं समाप्ति मफणीत—

इति श्री जैनपद्य-रामायणं सम्पूर्णम्

शुभं भूयात्— कल्याण मस्तु—
इत्यर्हम्— इत्यर्हम् इत्यर्हम्

लिखितं श्री शार्दूलशिष्य मुनि रूपेन्दुना

मुद्रकः—

राम-श्याम प्रिन्टिङ्ग प्रेस

कटला बाजार, जोधपुर.

परिशिष्ट (१)

गीत [१] तर्ज—सहेल्यां हे आंबो मोरियो

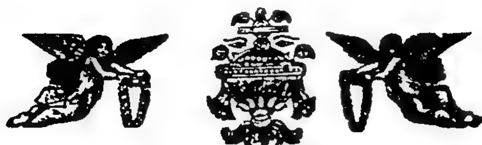
राज कंवर रलियावणा, नयणांरा हे धन जीवन जेह के,
हरसावण हिवड़ां तणा, वरसावण हे आनन्दरस मेह के,
रघुनन्दन मन मोहियो [टेर]

एतो किसा हे नगररा राजवी? अवनीपत हे किण घर अवतार? के,
किण विध इण पुर आविया, हिवड़ां रा हे हरखेवण हार के,
रघुनन्दन मन मोहियो [२]

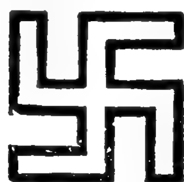
एतो अवध नगर रा है राजवी, रघुकुल रा है जाणूं सूरज चंद के,
सीय-सुयम्वर निरखवा अठे आया है एतो आनन्द कन्द के,
रघुनन्दन मन मोहियो [३]

एतो नेह नगर रा है राजवी, आनन्द रा है दरसे आवास के,
नयण-निवाजण आविया, जग जीवण है प्राणां रा ही प्राण के,
रघुनन्दन मन मोहियो [४]

-(कलश)-



राम-लक्ष्मण अने रावण, सती सीतानी चरी।
कही भाखी चरित्र साखी, वचन रचनाए करी ॥ १ ॥
संघ रंग विनोद वक्ता, अने श्रोता सुख भणी।
केशराज मुनिंद जम्पे, सदा हर्ष वधामणी ॥ २ ॥



इति श्री जैनपद्य रामायणे-भरत दीक्षाग्रहणं-मधुमरणं—शत्रुघ्नराज्य प्रदानं—सीतोपरिकलंकं—सीता वनवासं—लवणांकुशयो—जन्मं—विद्यापठनं—लवणांकुश पाणिपीडनं—राम—लक्ष्मण सार्ध—युद्धं—सीताग्निप्रवेशं—सीता दीक्षा ग्रहणं—देवमाया—लक्ष्मण मरणं—रामदीक्षा—मोक्षप्राप्ति—पूर्वभव वर्णनमादि—विषयकं चतुर्थ—खण्डं समाप्ति मफणीत—

इति श्री जैनपद्य—रामायणं सम्पूर्णम्

शुभं भूयात्—   कल्याण मस्तु—
इत्यर्हम्—   इत्यर्हम्   इत्यर्हम्

लिखितं श्री शार्दूलशिष्य मुनि रूपेन्दुना

मुद्रकः—

राम—श्याम प्रिन्टिङ्ग प्रेस

कटला बाजार, जोधपुर.

सीताजी तथा सखियां री सलाह

गीत [३]   तर्ज—बालम छोटो रे

ओ धनुष बड़ो विकराल, रघुवर छोटो रे,
कमल जिसो तन राम रो,
ओ धनुष वजर सो जाण, रघु० ॥१॥
बड़ो कठण पण पिता कियो,
कोई रंच न कियो विचार, रघु० ॥२॥
धनुष बड़ो कै मत बड़ो,
म्हारो राम भंवर भरतार रघु० ॥ ३ ॥
छोटो छोटो मत कहो,
ओ पूरण ब्रह्म परेस रघु० ॥४॥
सूरज छोटो सो लगे,
कोई जग में करे प्रकाश, रघु० ॥ ५ ॥
रघुवर चाप चढावसी,
कोई इणमें फेर न फार, रघु० ॥६॥

बरात चढे है

गीत [४]   तर्ज—धूंसारी

रघुवर री बरात बणी भारी रे, सियावर री ॥ टेर ॥
मुंडाला सुनेर सा सजिया अमर-सिमाळसी अम्बारी रे, रघु०
चंचल हय चित चाल चुकावण नाचे मोर मनोहारी रे, रघु०
रंग रसीला बाजा बाजे, शब्द हुवै आनन्दकारी रे, रघु०
देव सकल भूपत मिल आया, छाजे बण्या छत्रधारी रे, रघु०

गीत [२] तर्ज—जलो म्हारी जोड़ रो उदयापुर मालहे है

कंवर दशरथ तणा, कोई जादू कीनो है।
भंवर मन भावणा, म्हारो मन हर लीनो है ॥ टेर ॥

म्हे थाने आली! बरजिया हे, रघुवर रुख मत जोय।
सुखरी सीख सुणी नहीं जद,
बैठी तन मन खोय ॥ कंवर ॥१॥

रघुवर-रुख लागो नहीं हे सखी!, तो तन मन किण काम,
वे हिज तन मन सफल हे सखी,
ज्यां रचियो रंग राम, ॥ कं० ॥२॥

जे नयणा छाकां छई, सखी राम-रूप-रस चाख,
दूजी दिस नहिं देखसी वांने,
लोभ दिखावो लाख ॥ कंवर ॥३॥

दया दीठ जिण दिस हुई, जाणूं दुनिया रा चूका दाम,
कोड़ काम करणा मदा यांरी,
एक अदा रो काम, ॥ कंवर ॥४॥

श्रवण वयण सुख ना सुणे, सखी! नारद सारद वीण,
लज तज लारे लग रया हे,
अली बडा २ परवीण ॥ कंवर ॥५॥

सुर तरु तो सूको लगे है, अली! अमरत फीको होय,
लूखो जग तिणने लगे अली,
जिण लीना ए जोय ॥ कंवर ॥६॥

ए सूरज सूरज तणा हे, सखी! ए चंदारा ही चन्द,
ए मनमथ मनमथ तणा हे अली,
ए इन्दर रा ही इन्द ॥ कंवर ॥७॥

सीताजी तथा सखियां री सलाह

गीत [३] तर्ज—बालम छोटो रे

ओ धनुष बड़ो विकराल, रघुवर छोटो रे,
कमल जिसो तन राम रो,
ओ धनुष बजर सो जाण, रघु० ॥१॥
बड़ो कठण पण पिता कियो,
कोई रंच न कियो विचार, रघु० ॥२॥

धनुष चढ़ो कै मत चढ़ो,
म्हारो राम भंवर भरतार रघु० ॥ ३ ॥
छोटो छोटो मत कहो,
ओ पूरण ब्रह्म परेस रघु० ॥४॥

सूरज छोटो सो लगे,
कोई जग में करे प्रकाश, रघु० ॥ ५ ॥
रघुवर चाप चढ़ावसी,
कोई इणमें फेर न फार, रघु० ॥६॥

बरात चढ़े है

गीत [४] तर्ज—घूंमरी

रघुवर री बरात बणी भारी रे, सिणगार री ॥ टेर ॥
गुंडाला सुमेर सा सजिया अमर-विमाणमी अम्बारी रे, रघु०
चंचल हय जिण चाल नुकावण नाचे मोर मनोहारी रे, रघु०
रंग रसीला बाजा बाजे, शब्द हुवे आनन्दकारी रे, रघु०
देव सकल भूपत मिल आया, छाने पड़्या छत्र भारी रे, रघु०

गीत [५] तर्ज—बामण का

सांवरिया ! तूं जीवन री है जड़ी, राम प्यारा रे !
तूं हिवडा रो है हार ॥ १ ॥
रघुवर प्यारा रे, हांरे राम प्यारा रे ! हांरे गोविन्द प्यारा रे,
नेह लग्यो सो निभायले रे ॥ टेर ॥
सांवरिया ! तूं सरवर में हंसला, राम प्यारा रे !
म्हे चातक तूं मेह ॥ २ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे
सांवरिया ! म्हे भंवरा तूं कुंज है, राम प्यारा रे !
म्हे चकोर तूं चन्द ॥ ३ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे
सांवरिया ! म्हे जलचर तूं नीर है, राम प्यारा रे !
म्हे काया तूं जीव ॥ ४ ॥
राम प्यारा रे ! नेह लग्यो सो निभायले रे

श्री सीताजीरो पति-प्रेम

गीत [६] तर्ज—कांई रे जवाब करूं रसिया

कांई रे जवाब करूं हरि सूं ?
जवाब करूंगी, जवाब करूंगी,
रामैयारा चरणां में लपट रहूंगी ।
सांवरियारा चरणां रो ध्यान धरूंगी
कांई रे जवाब करूं हरिसूं ॥ टेर ॥
पलकां रे ऊपर पग धर आजो,
ो हिवड़ारे आसण आप विराजो, कांईरे० ॥१॥

कहोजी ! प्रभूजी ! थांने किण विलमाया ?
तो दासी रे महलां विलम्ब सूं आया, कांईरे० ॥२॥
आप, बिना म्हारो भवन अलूनो,
तो आप बिना सब ही जग सूनो, कांईरे० ॥३॥
आप मिल्यां सबही सुख मानूं,
तो आप मिल्यां धन जीवन जानूं, कांईरे० ॥४॥
ले पग पूर मधुर मन मांडूं,
तो ओ अंजन म्हारा नयणां में आंजूं, कांईरे० ॥५॥
नेहरे नीर चरण जुग धोसूं,
तो प्रेम पदारथ भोग परोसूं कांईरे० ॥६॥
चरण पियूख प्रेम सूं पीऊं,
तो इण रामैया ने जोयां ही जीऊं, कांईरे० ॥७॥
प्रेम पलंग पर प्रभु पोढाऊं,
तो पाय पलोट परम सुख पाऊं, कांईरे० ॥८॥

श्रीरामजी सीताजी ने समझावे

गीत [७] तर्ज—पणिहारी बीकानेरी

पिता-वचन पालण वन जावां
वचन पाल आवां प्यारी !
प्राण-प्रियाजी थे भवन बिराजो हे!
आ आज्ञा मानो म्हांरी ।
तात ससुर री सेवा कीजो,
मन मांहे धीरज धारो,
दिन आवां कोई दिन जावे हो!
आपां मिलां पाछा प्यारी !

ऊगे भाण हजार प्रभूजी जे ऊगे भाण०
हंजी तो ही आप बिना छे अंधार, प्रभूजी० ॥६॥
नेह निहावण हार प्रभूजी थेतो नेह निहावण हार०
हांजी म्हारा भव भवरा भरतार, प्रभूजी० ॥७॥

सीताजी श्रीरामचन्द्रजीरो हुकम पायो अब सासूजी सूं विदा मांगे

गीत [११] तर्ज—पणिहारी बीकानेरी

हुकम हुवो सुसराजी सा रो, बरस चतुरदस बन-चारी,
प्राण प्रियाजी म्हारा वन में पधारे हो पति-सेवा ही सुखकारी
चित्त लागो पीतमरे चरणां, भवन रहण रुचि नहीं म्हांरी,
हुकम करो तो सासू ! पिव संग जाऊंसा ! पति-सेवा ही सुखकारी
सीख सुणी म्हें मात पितारी, पति परमेसर तनुधारी,
पति विन गति पतनी ने नाहीं हो, पति-सेवा ही सुखकारी
धन धन है थांरा पिता सियाजी, धन धन है माता थांरी,
ज्यांने थांने लाड़ी ! लाड लाडाया है, पति-सेवा ही सुखकारी,

कौशल्याजीरो उपदेश

गीत [१२] तर्ज—पणिहारी

परम धरम पतिव्रत कहयो, सुण सीताजी,
ओ सारांरो सार सीताजी !
पति जग में परकाश है, सुण सीताजी,
पति बिन घोर अंधार सीताजी !

जग पूजे पति पूजतां, सुण सीताजी !
सुर सेवे पति-सेव, सीताजी !

पति परमेसर सारिखो, सुण सीताजी !
पति देवांरो देव, सीताजी !

पति भजतां जग जीतजे, सुण सीताजी !
कदे न होवे हार, सीताजी !

पति सेयां सुख संपजे, सुण सीताजी !
पति पूज्यां भवपार, सीताजी !

पति नयणांरी पूतली, सुण सीताजी !
पति हिवडारो हार, सीताजी !

पति जीवणरी है जडी, सुण सीताजी !
पति आतम आधार, सीताजी !

पतिव्रता री प्रशंसा

गीत [१३] तर्ज—हां सखीजी ने पक्का आवे

हां पतिव्रत-पालनहारी, धन्य धन्य धरती पर नारी ॥टेर॥

धन्य वंश जिणमें वा जाई, धन सुसराल जठे परणाई ।
धन्य पुरुष जिणने आ ब्याही,
धन्य धन्य धरणी जठे वा आप पधारी रे, पति० ॥ १ ॥

पति के प्रेम रहे नित राती, मात पिता मन मोद दाती ।
सास ससुर ने सुख उपजाती,
प्रम चन्द चन्द्रिका, दोनूं-कुल उजियारी रे, पति० ॥ २ ॥

स्त्रियां रो राम-विरह वर्णन

गीत [१४] तर्ज—जलो म्हारी जोड़ रो

सनेही सांवरो बणगो वन-वासी हे !
रसीलो रामजी अब कद घर आसी हे ! ॥ टेर ॥

नयणां रो अंजन सांवरो, म्हारे हिवडा रो रंजनहार।
गंजन दुःख परजातणो, ओतो भव-भंजन भरतार,
सनेही० ॥ १ ॥

जिण वन रघुनन्दन बसे हे सखी ! सो नन्दन वन जाण,
चरण धरण हरि जिण धरे, हूं तो पल पल वारूं प्राण,
सनेही० ॥ २ ॥

सुर नर रो तन जे हुवो हे सखी! तो आवे किण काम,
वनरा पशु पन्छी भला है, वे तो नयन निहारे राम,
सनेही० ॥ ३ ॥

राम बसे जिण जंगलां हे सखी! सो हिज सुरग निवास,
राम-विहूणो सुरग ही सखी ! तन उपजावे त्राम,
सनेही० ॥ ४ ॥

वन तो वडभागी वड़ो, सखी रमे जठे रघुराज।
राम प्रभू त्यागी तिका, आतो अवध अभागी आज,
सनेही० ॥ ५ ॥

अवध प्रजा म्हांने करी, दिया रघुवंशी भरतार।
राम-विछोहो क्युं कियो, ओतो कांई भूलो करतार,
सनेही० ॥ ६ ॥

गीत [१५] तर्ज—

राम विना तो म्हांरे सुख ही सूल ।
राम विना तो म्हांरे धान ही धूल ॥
राम विना तो म्हांरे हार ही सांप ।
राम विना तो म्हांरो पुन्न ही पाप ॥

राम विना तो म्हांरे पीत ही रार ।
राम विना तो म्हांरे जीत ही हार ॥
राम विना तो म्हांरे हरख ही सोग ।
राम विना तो म्हांरे भोग ही रोग ॥

गीत [१६] तर्ज—रोहण दो गिणगोर

किण विध विसर्यो जाय,
रामैयो म्हांसूं किण विध विसर्यो जाय ।
ओजी म्हांरो दशरथ राजकुंवार,
ओजी म्हांरो जनक सुता भरतार,
सांवरियो म्हासूं पलक न विसर्यो जाय ॥ टेर ॥

हरि हिवडे रो हार,
अली हे ! म्हारो प्राणां रो प्राण आधार ।
हां हे म्हांरो जनम सुधारण हार,
हां हे म्हांरो मरण मिटावण हार,
सांवरियो० ॥ १ ॥

आनन्द रो आगार,
आली हे म्हांरो नुपढ़ां रो सरदार,
हां हे जो तो निराधारां आधार,

स्त्रियां रो राम-विरह वर्णन

गीत [१४] तर्ज—जलो म्हारी जोड़ रो

सनेही सांवरो बणगो बन-वासी हे !
रसीलो रामजी अब कद घर आसी हे ! ॥ टेर ॥

नयणां रो अंजन सांवरो, म्हारे हिवडा रो रंजनहार ।
गंजन दुःख परजातणो, ओतो भव-भंजन-भरतार,
सनेही० ॥ १ ॥

जिण वन रघुनन्दन बसे हे सखी ! सो नन्दन वन जाण,
चरण धरण हरि जिण धरे, हूं तो पल पल वारूं प्राण,
सनेही० ॥ २ ॥

सुर नर रो तन जे हुवो हे सखी! तो आवे किण काम,
वनरा पशु पन्छी भला है, वे तो नयन निहारे राम,
सनेही० ॥ ३ ॥

राम बसे जिण जंगलां हे सखी! सो हिज सुरग निवास,
राम-विहूणो सुरग ही सखी ! तन उपजावे त्रास,
सनेही० ॥ ४ ॥

वन तो वडभागी वड़ो, सखी रमे जठे रघुराज ।
राम प्रभू त्यागी तिका, आतो अवध अभागी आज,
सनेही० ॥ ५ ॥

अवध प्रजा म्हांने करी, दिया रघुवंशी भरतार ।
राम-विछोहो क्युं कियो, ओतो कांई भूलो करतार,
सनेही० ॥ ६ ॥

हां हे ओतो निरधन रो धन सार
सांवरियो० ॥ २ ॥
प्रेम रो पारावार,
अली हे ओतो सारां रो ततसार।
हां हे हरि नेह निभावण हार,
हां हे प्रभु पार लगावण हार,
सांवरियो० ॥ ३ ॥
जोवे न कुल आचार,
अली हे ओतो नहिं गुण रूप अपार।
हां हे हरि रीझे नेह निहार,
हां हे ओतो भगती-वस भरतार,
सांवरियो० ॥ ४ ॥
देखो भूल अपार,
अली हे वांने भूल रह्यो संसार।
हां हे तो ही वो नहिं भूलण हार,
हां हे हरि सवरी करण संभार,
सांवरियो० ॥ ५ ॥

भरतजी आदि पाछा अयोध्या जावता

श्रीरामजी ने विनती करे।

गीत [१७] तर्ज—समदण जावांला थारी बलिहारी है

रघुवर ! दरसण देवणने वेगा आइजो।
प्यारा प्रभू ! प्रेमरा प्यासां ने मत तरसाईजो॥
वचन पिता रा पालो,
सतपथ चालो, धरम संभालो स्वामी !
ज्यूं निज वचन निभाईजो ॥ रघु० ॥ १ ॥

चवदा बरस बितावो,
उणरे दूजे ही दिन आवो, स्वामी !
आगे मत विलम्ब लगाईजो ॥ रघु० ॥ २ ॥
आप दया मय नामी,
अन्तरजामी, सुख रा सागर स्वामी !
जिवड़ारी जलन मिटाइजो ॥ रघु० ॥ ३ ॥

सूपंनखां आई

गीत [१८] तर्ज—पनजी मून्डे बोल

बोल बोल हिवडारा जिवडा !
कांइ थांरी मरजी रे ? वालम ! मून्डे बोल ॥ टेर ॥
सुन्दर रूप अनूपम जोवन, सो वन किण विध आया रे ?
भोग भोगवा जोग, जोग किम लीनो काया रे, वालम० ॥१॥
थांरे जिसो नहीं नर सुन्दर, म्हारे जिसी न नारी रे ॥
आ जोड़ी जग मांय, विधाता एक उतारी रे, वालम० ॥२॥
तीन लोक रो राजा रावण, सो है म्हारो भाई रे ।
म्हासूं नेह निभाय, पाय पूरण प्रभुताई रे, वालम० ॥ ३ ॥

प्रभुरो उत्तर

गीत [१६] तर्ज—बालम छोटो रे

बन्धव छोटो है ! तूं भामण कर भरतार बन्धव० ॥ टेर ॥
म्हांसूं छोटो बन्धवो, कोई सुन्दर रूप अपार, बंधव० ॥१॥
स्याम वरण पण है नहीं, वो गौर वरण दीदार, बन्धव० ॥२॥
म्हारे तो संग सुन्दरी, कोई नहीं उणरे संग नार, बन्धव० ॥३॥

सूर्पनखां लछमणजी ने कहे है

गीत [२०] तर्ज—झरोखां झालो देजा है भांगडली

म्हारे सूं मोह करलो हो साजन जी ! थांरी मूरत मो मन मोह्यो,
हिरदा सूं मोने वरलो हो साजन जी !

श्रीराम वचन (प्रभु विरहलीला करे)

गीत [२१] तर्ज—रुण झुणियो ले

हे सरिता रा हंसलां ! थे महर करो ।
सीता ने वेग बताय, ओ उपकार करो ॥
ऊजल थांरी जात है, थे महर करो ।
कोई ऊजल खान र पान, ओ उपकार करो ॥
हे सूवा ! हे सारिका ! थे महर करो ।
सीता रो पतो बताय, ओ उपकार करो ॥
हे आरणरा हेरणां ! थे महर करो ।
सीतारी बात सुणाय, ओ उपकार करो ॥
बनवासी पशु पंछियां, थे महर करो ।
म्हांरी सारा ही करो सहाय, ओ उपकार करो ॥
हे तरुवर ! हे वेलड़ी ! थे महर करो ।
प्यारी रो पतो बताय, ओ उपकार करो ॥
पर-हित कारण प्रगटिया, थे महर करो ।
म्हांरा जीवरी जलन मिटाय, ओ उपकार करो ॥
हे सूरज ! हे चन्द्रमा ! थे महर करो ।
म्हांने बिछड़ी प्रिया मिलाय, ओ उपकार करो ॥
जीवजड़ी म्हांसूं बीछड़ी, थे कृपा करो ।
म्हांसूं उण विन जियो न जाय, ओ उपकार करो ॥

परिशिष्ट (२)

भामंडल और सीता का पूर्वभव का सम्बन्ध और उनका जन्म

भरतक्षेत्र में दारुग्राम था। उसमें वसुभूति नामक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम अनुकोशा था। इनके पुत्र का नाम अतिभूति था। अतिभूति की स्त्री सरसा एक कयान नामक ब्राह्मण पर आसक्त होगई और वह ब्राह्मण उसे साथ लेकर भाग गया। कहा है " जो काम से आतुर होते हैं उन्हें न भय होता है, न लज्जा होती है "।

अतिभूति अपनी स्त्री की खोज करने के लिए भूत की भांति भूतल पर भटकने लगा। जब यह बात उसके मात पिता को मालूम हुई तो वे भी अपने पुत्र और पुत्रवधू को ढूंढने के लिए परदेश को चल पड़े। घूमते घूमते, किसी समय उन्हें एक साधु मिले। साधु को भक्ति भाव से नमस्कार करके वे उनका धर्मोपदेश सुनने के लिए बैठ गये। धर्मोपदेश सुनने से उन्हें संसार से वैराग्य होगया और वसुभूति तथा अनुकोशा दोनों पति-पत्नी ने साधु के समीप दीक्षा लेली। इसके बाद गुरु की आज्ञा लेकर अनुकोशा, कमलश्री नामक आर्या के पास जाकर रहने लगी। चारित्र का पालन करते करते कुछ समय के पश्चात् दोनों ने शरीर का त्याग किया और दोनों सौधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुए। वहां से च्यव कर वसुभूति का जीव वैताढ्य पर्वत पर रथनूपुर नगर का चन्द्रगति नामक राजा हुआ और अनुकोशा भी देवलोक से च्यवकर इसी राजा की पुष्पवती नाम की रानी हुई।

अतिभूति की स्त्री सरसा ने भी, जिसे कयान लेकर चला गया था, संसार को असार समझकर एक साध्वी के पास

दीक्षा लेली और वह काल करके ईशान देवलोक में देवी रूप से उत्पन्न हुई। अतिभूति अपनी स्त्री की खोज करता करता कुछ समय के अनन्तर मर गया और चिरकाल तक संसार में भटक कर एक बार हंस का बालक हुआ। उसे सेन नामक पक्षी लेकर खाने लगा, पर दैवयोग से वह किसी प्रकार उससे छूट गया और जैसे तैसे उड़ता उड़ता एक साधु के पास आकर गिर पड़ा। उस समय उसके प्राण सिर्फ कण्ठ में शेष रह गये थे। इस प्रसंग पर महा करुणासागर उन मुनि ने उसे नवकार मन्त्र सुनाया। मन्त्र के प्रभाव से वह हंस बालक आयु समाप्त होने पर किन्नर लोक में दस हजार वर्ष की आयु वाला देव हुआ। वहां से चल कर वह विदग्ध नामक नगर के राजा प्रकाशसिंह की प्रवरा रानी के उदर से कुण्डलमण्डित नामक पुत्र हुआ।

भोगोपभोग में आसक्त कयान, मृत्यु का ग्रास बन कर भवाटवी में भटकता भटकता चक्रपुर नगर के राजा चक्रध्वज के उपाध्याय धूम्रकेतु की स्वाहा नामक स्त्री के उदर से पुत्र हुआ। उसका नाम पिंग रक्खा गया। राजा चक्रध्वज की कन्या अतिसुन्दरी तथा पिंग एक ही गुरु के पास विद्याभ्यास करते थे। वहां दोनों का आपस में प्रेम होगया। मौका पाकर पिंग ने अति सुन्दरी का हरण किया और वहां से भाग कर विदग्ध नामक नगर में जाकर रहने लगा। वहां वह घास तथा लकड़ियां बेच कर किसी प्रकार अपना निर्वाह करने लगा, क्योंकि गुणहीन पुरुषों का पेट ऐसे कार्य किये विना भरता ही नहीं है।

एक बार उस नगर के राजकुमार कुण्डलमण्डित की [illegible] अतिसुन्दरी पर पड़ गई। चार आंखें होते ही दोनों की [illegible]पस में प्रीति बँध गई। इसके बाद अपने पिता के डर से कुन्डलमंडित गुप्त रूप से अतिसुन्दरी को साथ लेकर वहां से निकल भागा और किसी पर्वत पर जाकर वहां मकान बना कर रहने लगा। अतिसुन्दरी के वियोग से व्याकुल होकर पिंग पागल की तरह इधर उधर फिरने लगा। उसे किसी समय गुप्ताढ्य नामके आचार्य के दर्शन होगये। उनसे धर्मोपदेश सुन कर उसने दीक्षा धारण करली पर अतिसुन्दरी का अनुराग उसके अन्तःकरण

नामक नगर में धन्य नामक व्यापारी की स्त्री सुन्दरी के उदर से तुम्हारा जीव वरुण नाम से पुत्र रूप में जन्मा। वह अत्यन्त उदार था। उस भव में अपने उदार स्वभाव के कारण वह साधुओं को इच्छा से भी अधिक दान देता था। वहां से काल करके तुम देवलोक में देव हुए। फिर वहां से भी चल कर तुम पुष्कला नामक नगरी में नन्दिघोस राजा की रानी पृथ्वी देवी की कूंख से नन्दिवर्धन नामक पुत्र हुए। राजा नन्दिघोस तुम्हें राज सिंहासन पर बिठा कर यशोधर नामक मुनि के समीप दीक्षित होगये। वे आयु पूर्ण करके ग्रैवेयक देवलोक में देव हुए, और तुम श्रावक-धर्म का पालन करके आयु समाप्त होने पर काल करके ब्रह्म देवलोक में उत्पन्न हुए। वहां से चलकर तुम्हारा जीव पूर्व महाविदेह क्षेत्र में वैताढ्य पर्वत की उत्तर दिशा की तरफ शशिपुर नामक नगर में विद्याधरों के स्वामी रत्नमाली की स्त्री विद्युल्लता के उदर से महापराक्रमी सूर्यजय नामक पुत्र हुआ। एक बार रत्नमाली राजा ने विद्याधरों के अत्यन्त अभिमानी राजा वज्रनयन को जीतने के लिए सिंहपुर नगर में आकर, बाल, वृद्ध, स्त्री, पशु तथा उपवन सहित नगर को जलाना आरंभ किया। उस समय एक पूर्वजन्म में उपमन्यु नामक उपाध्याय था। उसका जीव सहस्त्रार स्वर्ग में देव हुआ था। वह वहां से आकर रत्नमाली से कहने लगा—'हे रत्नमाली! यह घोर पातक मत कर। पूर्वजन्म में तूँ भूरिनन्दन नामक राजा था। उस समय तूंने मांस-भक्षण न करने की प्रतिज्ञा की थी। पर तूंने उस प्रतिज्ञा का पालन नहीं किया। इस कारण कितनेक भवों में भटक कर किसी पुण्य के प्रताप से तूं रत्नमाली राजा हुआ है। अतएव अनेक भवों में भ्रमण कराने वाला ऐसा घोर कृत्य मत कर। देव के इस प्रकार के वचन सुन कर रत्नमाली चुपचाप बैठा रहा। देव इसके बाद पूर्वभव का वृत्तान्त कहने लगा—"हे राजन्! पहले मैं उपमन्यु नामक उपाध्याय था। उस समय स्कन्द नामक पुरुष ने मुझे मार डाला था। मर कर मै हाथी हुआ। हाथी को पकड़ कर भूरिनन्दन राजा अपने घर ले आया। कुछ समय वहां रहने के बाद एक बार संग्राम में जाने से मेरी मृत्यु होगई। मृत्यु के पश्चात् उसी भूरिनन्दन राजा की रानी गधारा के उदर से मेरा जीव अरिसूदन नामक पुत्र हुआ। उस भव में मुझे जातिसमरण ज्ञान उत्पन्न

करता था। उसके एक दूत का नाम अमृतस्वर था। अमृतस्वर की स्त्री उपयोगा के उदर से उदित तथा मुदित नाम के दो पुत्र थे। अमृतस्वर का वसुभूति नामक एक ब्राह्मण मित्र था। उसके साथ उपयोगा का प्रेम-सम्बन्ध होगया। वह अपने प्रेमी से कहने लगी—"अगर तुम मेरे पति (अमृतस्वर) को मार डालो तो हम लोग निर्भय होजायेंगे।" वसुभूति ने उपयोगा की बात स्वीकार करली और वह अमृतस्वर को मार डालने का अवसर खोजने लगा। कहा भी है—'कामी पुरुष कौन-सा कुकृत्य नहीं कर डालता है?' कुछ दिनो बाद अमृतस्वर और वसुभूति, राजा के काम से विदेश जाने के लिए निकले। मौका पाकर वसुभूति ने राह में ही अमृतस्वर का काम तमाम कर दिया और स्वयं नगर में आकर लोगों से कहने लगा–'अमृतस्वर स्वयं परदेश चला गया है और एक विशेष प्रयोजन से मुझे पीछे लौटा दिया है।' उसने उपयोगा से कहा—'लो, हमारे तुम्हारे सम्भोग में विघ्न डालने वाले अमृतस्वर को, तुम्हारे कथनानुसार मैंने यमलोक भेज दिया है।' उपयोगा ने कहा–'बहुत अच्छा किया' पर जब तक मेरे ये दोनों पुत्र जीवित हैं तब तक हम लोग मनचाही मौज नहीं लूट सकते। अगर ये दोनों मर जायँ तो बस, फिर कोई अड़चन नहीं रह जायगी। वसुभूति बोला 'तुम चिंता न करो। मैं इन्हें भी मार डालूंगा।' दैवयोग से इनकी इस गुप्त मन्त्रणा का हाल वसुभूति की स्त्री को मालूम होगया। उसके हृदय में ईर्षा की आग भड़क उठी और उसने उपयोगा के पुत्र उदित और मुदित को यह सारी घटना कह सुनाई। यह सुनते ही उदित के क्रोध का पार न रहा। उसने अवसर पाकर वसुभूति की जीवन-लीला समाप्त करदी। वसुभूति मर कर नलपल्ली में म्लेच्छ हुआ। तदन्तर किसी समय विजयपर्वत राजा ने मतिवर्धन नामक मुनि से धर्मदेशना सुन कर दीक्षा धारण की। और उदित तथा मुदित दोनो भाईयो ने भी दीक्षा ग्रहण की। ये दोनो साधु साथ साथ विहार करते हुए कर्मयोग से वे रास्ता भूल जाने के कारण नलपल्ली नामक उसी म्लेच्छ वस्ती में पहुँच गये। वही वसुभूति का जीव म्लेच्छ हुआ था। इन दोनों साधुओ को देखते ही उसे जाति स्मरण ज्ञान होगया। पूर्वभव की घटना स्मरण हो आने से पूर्व वैर का स्मरण करके वह मुनियों को मारने दौड़ा पर म्लेच्छों के राजा ने उनकी रक्षा की।

म्लेच्छ राजा और इन मुनियों का पूर्वभव का सम्बन्ध यह था— म्लेच्छ राजा पूर्वजन्म में एक मृग था। उसे एक शिकारी ने मारा था। उदित और मुदित मुनियों के जीव वहां किसान रूप में थे, उस समय मृग को शिकारी से बचाया था। इसी कारण म्लेच्छ राजा ने इनकी रक्षा की। आखिर वहां से विहार करके दोनों मुनि धर्म-कृत्य करके अन्त में अनशन धारण कर काल करके महाशुक्र नामक स्वर्ग में सुन्दर और सुकेश नामक दो देव हुए। वसुभूति का जीव म्लेच्छ योनि भोग कर मरने के बाद चिरकाल तक अनेकानेक योनियों में घोर वेदनाएं सहन करता हुआ, एक बार किसी शुभ कर्म के योग से, अत्यन्त कठिनाई से मनुष्य रूप में उत्पन्न हुआ। उस जन्म में तापस होकर मरने के पश्चात् ज्योतिष्क देवलोक में यह धूमकेतु नामक देव हुआ। तदनन्तर उदित तथा मुदित के जीव महाशुक्र स्वर्ग से च्यवकर भरत-क्षेत्र में अरिष्ट नगर के राजा प्रियंवद की रानी पद्मावती के उदर से रत्नरथ और चित्ररथ नाम के दो पुत्र हुए। ज्योतिष्क देवलोक से भ्रष्ट होकर धूमकेतु भी उसी राजा की कनका नामक दूसरी रानी के उदर से अनुद्धर नामक पुत्र हुआ। वह रत्नरथ और चित्ररथ के साथ वैर करने लगा, पर इन दोनों ने उसके प्रति कभी भी द्वेष नहीं किया। कुछ समय के बाद राजा प्रियंवद ने रत्नरथ को राज सिंहा-सन पर बिठा कर, शेष दो पुत्रों को युवराज-पद दिया और आप छह दिन का अनशन करके, काल कर देवलोक में देव होगया। राजा रत्नरथ राज्य का संचालन करने लगा।

एक समय की बात है। युवराज अनुद्धर ने किसी राजा की कन्या की मँगनी की। राजा ने वह कन्या अनुद्धर को न ब्याह कर राजा रत्नरथ को ब्याह दी। इससे अनुद्धर आग बबूला होगया और राज्य में लूटमार मचाने लगा। शत्रु ने पकड़ कर उसका मुंड मरदन की ओर उसे छोड़ दिया। तब वह तापस होगया। वहां किसी स्त्री के साथ समागम होगया और उसकी तपस्या निष्फल होगई। इस कारण मृत्यु के बाद चिरकाल तक भव-भ्रमण करते करते किसी कर्म के उदय से फिर मनुष्य भव की प्राप्ति होगई। इस भव में भी उसने तापस दीक्षा अंगीकार करके अज्ञान-तप किया। इससे मरने के बाद वह ज्योतिष्क नामक देवलोक में अनवधन

नामक देव हुआ। रत्नरथ और चित्ररथ नामक दोनों भाई धर्म लाभ करके, जिन-दीक्षा अंगीकार करके, अन्त में अच्युत कल्प नामक स्वर्ग में अतिबल और महाबल नामक महर्द्धिक देव हुए। वहां से चल कर सिद्धार्थ नगर में क्षेमंकर राजा की रानी विमला देवी की कूंख से कुलभूषण और देवभूषण नाम से हम दोनों भाई पुत्र रूप में जन्मे। हम क्रमशः बडे हुए तो हमारे पिताजी ने घोष नामक उपाध्याय के पास अध्ययन करने के लिए हमें भेज दिया। बारह वर्ष तक उपाध्याय के घर रह कर हम दोनो ने विद्याभ्यास किया। तेहरवां वर्ष लगने पर हम समस्त कलाओ में कुशल होगये। तब घोष उपाध्याय हमें राजमन्दिर में ले आये। वहां राजमहल की खिड़की में बैठी हुई एक राजकन्या को देख कर, उसके लावण्य के कारण हमारे अन्तःकरण में काम विकार जागृत होगया। अज्ञानवश हमारी दृष्टि उसके सम्बन्ध में विकृत होगई।

हम राजा के पास आये। हमने सीखी हुई सब कलाएँ उन्हें बताई। महाराज ने प्रसन्न होकर उपाध्याय को अच्छी सीख (विदाई) देकर विदा किया। हम पिताजी की आज्ञा लेकर अपनी माता को नमस्कार करने के लिए अन्त पुर में गये। वहां वह कुमारी माता के पास बैठी दिखलाई दी। उस समय हमारी माता ने हमसे कहा—'यह कनकप्रभा तुम्हारी बहिन है। जब तुम दोनों भाई उपाध्याय के यहां पढने चले गये तब इसका जन्म हुआ था। यह बात तुम्हें अब तक मालूम नहीं है।' माता के मुख से यह वृत्तान्त सुन कर हम लज्जित हुए। अज्ञानवश अपनी बहिन के साथ काम-भोग भोगने की इच्छा होने के लिए हमें धिक्कार है। ऐसा समझ कर वैराग्य होआने से हम तत्काल वहां से निकल पडे और गुरु के पास पहुँच कर दीक्षित होगये।

कुछ दिनो बाद हम शरीर से निरपेक्ष होकर और अहंकार का परिहार कर इस पर्वत पर आकरके कायोत्सर्ग ध्यान में रहे। हमारे पिता क्षेमंकर राजा हमारे वियोग से अनशन व्रत लेकर काल करने के बाद गरुड़ देवलोक में महालोचन देव हुए। एक बार अपने अंग के कम्पन से उन्होंने समझा कि हमारे ऊपर कोई उपसर्ग

उदर से पुत्र रूप से उत्पन्न हुआ। उसका नाम रतिवर्द्धन रक्खा गया, क्रमशः वह यौवन अवस्था में आया और राजगद्दी पर आरूढ हुआ। इसके बाद वह अपने पिता की तरह अपनी पत्नी के साथ क्रीडा करने लगा, प्रथम नामक दूसरे मुनि कालधर्म पाकर तपस्या के योग से पंचम कल्प देवलोक में एक महान् ऋद्धि-धारी देव हुए। देव ने अवधिज्ञान द्वारा अपने पूर्वजन्म के भाई की उत्पत्ति जानी और उसे बोध देने के उद्देश्य से वह मुनि का वेष धारण कर उसके पास आया। राजा रतिवर्द्धन ने विनयपूर्वक वन्दना करके उसे आसन पर बिठलाया। इसके बाद मुनि-वेषधारी देव ने बन्धु-प्रेम से प्रेरित होकर अपना और उसका पूर्वभव कह सुनाया। पूर्वभव सुनने से रतिवर्द्धन राजा को जाति-स्मरण ज्ञान उत्पन्न होगया और उसने विरक्त होकर दीक्षा अंगीकार करली। वहां से काल करके तुम दोनों भाई विदेह क्षेत्र में विबुद्ध नगर के राजा हुए। वहां तुम दोनों ने धर्म-देशना सुन कर दीक्षा धारण की और अन्त में देह त्याग कर अच्युत देवलोक में उत्पन्न हुए। वहां से चलकर इन्द्रजीत तथा मेघवाहन नाम से तुम दोनो भाई प्रतिवासुदेव रावण के पुत्र हुए हो रतिवर्द्धन की माता इन्दुमुखी वहां से काल करके अनेक भव करने के बाद तुम्हारी माता मन्दोदरी हुई है।

राजा भरत और भुवनालंकार हाथी का पूर्वभव-संबंध

श्री ऋषभदेव स्वामी के साथ चार हजार राजाओं ने दीक्षा ग्रहण की थी। उनमें से श्रीऋषभदेव भगवान आहार का त्याग करके और मौन धारण करके विचरने लगे। अतएव उनके साथ दीक्षा लेने वाले सब तापस आहार के बिना दुःखी होने लगे। इन तापसों में चन्द्रोदय तथा सूर्योदय नामक दो तापस प्रह्लादन सुप्रभ राजा के पुत्र थे। काल करके अनेक भवों में चिरकाल तक भटकने के बाद, उनमें से चन्द्रोदय गजपुर के राजा हरमति की रानी चन्द्र-लेखा की कुक्ष से कुलंकर नामक पुत्र हुआ। सूरोदय भी उसी नगर में विश्वभूति ब्राह्मण की अग्निकुण्डा पत्नी के उदर से श्रुतिरति नामक पुत्र हुआ। राजकुमार कुलंकर यौवन अवस्था प्राप्त होने पर सिंहासन पर आसीन हुआ। एक बार वह तापसो के आश्रम में गया

था। वहां अभिनन्दन नामक अवधिज्ञानी साधु ने उनसे कहा-इस आश्रम में पञ्चाग्नि साधन करने वाला एक तपस्वी जलाने के लिए लक्कड़ लाया है। उसमें एक सांप है। वह तुम्हारे पूर्वजन्मों में से एक जन्म का क्षेमकर नामक पितामह है। अतएव उस लक्कड़ को चीर कर उसकी रक्षा करो। मुनि का कथन सुन कर राजा कुलकर दुःखी हुए और तत्काल ही उन्होंने लक्कड़ चिरवाया। उसमें सच मुच एक सांप निकला। यह देख कर राजा कुलकर को वैराग्य हो आया और उन्होंने दीक्षा लेने का विचार किया। इतने श्रुतिरति ब्राह्मण राजा से कहने लगा—हे राजन्! इस धर्म का नाम क्या है? अगर आपकी इच्छा हो ही तो वृद्धावस्था में उसे अंगीकार करना। इस समय क्यों दुःख भोगना चाहिये? ब्राह्मण का यह कथन सुन कर कुलकर ने दीक्षा लेने का आग्रह त्याग दिया। राजा की पत्नी श्रीदामा का इस उपाध्याय (श्रुतिरति) का अनुचित सम्बन्ध था। एक बार उसने सोचा अगर हमारे कार्य की खबर राजा को लग गई तो वह हमें मार डालेगा। अतएव मैं ही राजा को मार डालूं तो झंझट मिटेगी। ऐसा विचार करके श्रीदामा ने उपाध्याय की सलाह से अपने पति कुलकर राजा को विष देकर मार डाला। इसके बाद कुछ दिनों में श्रुतिरति ब्राह्मण भी मर गया। वे दोनों दीर्घ काल तक नाना प्रकार की योनियों में भटकते फिरे। उसके बाद किसी समय राजगृह नगर में कपिल ब्राह्मण की स्त्री सावित्री के उदर से विनोद और रमण नामक दो युगल पुत्र जन्मे। उनमें से रमण वेदाध्ययन करने के लिए परदेश गया था। कुछ समय बाद वेद का अध्ययन करके वह अपने घर लौट रहा था। जब वह राजगृह नगर के नजदीक आ पहुंचा तब रात्रि हो जाने के कारण वहीं एक यक्ष के मन्दिर में सो गया। उसी समय उसके भाई विनोद की स्त्री शाखा, दत्त नामक एक ब्राह्मण के साथ संकेत करके रात्रि के समय वहीं आई। उसके पीछे पीछे विनोद भी आया। शाखा रमण को ही दत्त समझ कर उसके साथ सोने के लिए उद्यत हो गई। इधर विनोद ने अपने भाई को पहचान न सकने के कारण तलवार के घाट उतार दिया। तब शाखा ने विनोद को भी मार दिया। तब रमण की इच्छा ... विनोद दीर्घ काल तक भव भ्रमण करके किसी ... धन नाम से पुत्र हुआ। रमण भी भवाटवी में भटकता

भटकता उसकी स्त्री लक्ष्मी के पेट से भूषण नामक पुत्र हुआ। यौवन अवस्था प्राप्त होने पर पिता की आज्ञा से बत्तीस कन्याओं के साथ उसका विवाह हुआ। एक बार रात के समय स्त्रियों के साथ क्रीडा करता हुआ वह बैठा था। उसी पिछली रात्रि में श्रीधर नामक एक मुनि को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ। देवताओं ने केवलज्ञान का महोत्सव किया। यह देख कर धर्म के प्रति उसकी रुचि जागृत हुई। अतएव वह उसी समय उठ कर उन साधुओं को वन्दना करने के लिए चल पड़ा। रास्ते में जाते समय उसे एक सांप ने काट खाया। उस समय उसके परिणाम शुभ थे, अतएव काल करके उसने शुभ गति पाई। तदनन्तर जम्बू द्वीप के महाविदेह क्षेत्र में, हनुपुर नगर में, अचल चक्रवर्ती राजा की महारानी हरिणी की कुक्षी से वह प्रियदर्शन नामक धर्मतत्पर पुत्र हुआ। वहां उसने दीक्षा लेने की इच्छा की, पर अपने पिता की आज्ञा से तीन हजार कन्याओं के साथ उसने विवाह किया, फिर भी उसका अन्तःकरण वैराग्यमय ही बना रहा। गृहवास में रहते हुए भी चौसठ हजार वर्ष उत्तम तप करके वह ब्रह्मलोक स्वर्ग में देव हुआ।

धन सेठ मर कर लम्बे समय तक संसार में परिभ्रमण करता हुआ पोतनपुर नगर में शकुनाग्निमुख ब्राह्मण की पत्नी ब्रह्म-पत्नी के उदर से मृदुमति नामक पुत्र हुआ। वह पुत्र अविनयी था। अतएव उसके पिता ने उसे बाहर निकाल दिया। परन्तु कुछ समय बाद समस्त कलाएं सीख कर वह घर लौट आया। घर आकर वह रात दिन जुआ खेलने लगा। उसे जीतने में कोई भी समर्थ न हो सका, अतएव उसने बहुत सा धन कमा लिया। फिर उसी नगर में रहने वाली वसन्तसेना नामक वैश्या के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध होगया और उसने खूब भोग भोगे। अन्त में वैराग्य होने से उसने दीक्षा धारण करली। शक्ति के अनुसार चारित्र का पालन कर वह भी ब्रह्म देवलोक में उत्पन्न हुआ। वहां से चल कर पूर्वजन्म के माया दोष के कारण वह वैताढ्य पर्वत पर भुवनालंकार नामक हाथी हुआ है। प्रियदर्शन का जीव भी ब्रह्म देवलोक से चलकर तुम्हारा यह महाभुज भाई भरत हुआ है। इनका दर्शन होते ही हाथी को जाति-स्मरण ज्ञान हुआ है और वह मद-रहित होगया है। कहा है—'विचार करने से रौद्र भय नहीं रहता।'

शत्रुघ्न के पूर्वभव का वृत्तान्त

शत्रुघ्न का जीव एक बार मथुरा नगरी में उत्पन्न हुआ। वह किसी समय साधुओं की सेवा करने वाला श्रीधर नामक ब्राह्मण हुआ, वह बहुत रूपवान था। एक बार वह रास्ते में जा रहा था तब वहां के राजा की रानी ललिता की नजर उस पर पड़ गई। रानी उस पर मोहित होगई। कामभोग भोगने की इच्छा से रानी ने उसे अपने पास बुलाया। श्रीधर के आने पर राजा भी अचानक वहां आ पहुँचा। इससे ललिता बहुत घबराई। श्रीधर को देखकर राजा चिल्लाया—'चोर है चोर इसे पकड़ लो।' राजा के कर्मचारी तत्काल दौड़े और श्रीधर को पकड़ कर बांध लिया। राजा की आज्ञा पाकर कर्मचारी उसे सूली पर चढ़ाने के लिए ले गये। उस समय कल्याण नामक एक साधु ने श्रीधर को देखा। उसे देखकर मुनि ने जान लिया कि यह ब्राह्मण साधु सेवक है। अतएव मुनि ने उसे छोड़ देने के लिए राजा को समझाया। राजा ने उसे छोड़ दिया और तत्काल ही दीक्षा लेली। दीक्षा पालन कर शरीर का अन्त होने पर वह स्वर्ग चला गया।

स्वर्ग से चल कर वह मथुरा के राजा चन्द्रप्रभ की स्त्री कांचनप्रभा के उदर से अचल नामक पुत्र हुआ। अचल, राजा चन्द्रप्रभ को बहुत प्यारा था, अतएव उसी को राज्य मिलेगा, यह सोच कर उसके भानुप्रभ आदि आठ सौतेले भाइयों को बड़ी डाह हुई और वे उसे मार डालने का प्रयत्न करने लगे। प्रधानमन्त्री को यह रहस्य मालूम होगया और उसने अचल को सावधान कर दिया। अचल वहां से भाग गया। रास्ते में एक जंगल आया और जंगल में कांटा चुभने के कारण वह रोने लगा। यहां होकर उज्जयिनी नगरी का निवासी, अपने पिता द्वारा बाहर निकाला हुआ, अंक नामक एक पुरुष लकड़ियों का भार लिये आ रहा था। उसने अचल को रोते देख भार नीचे उतारा और अचल के पैर में से कांटा निकाल दिया। कांटा निकल जाने पर वेदना कम हो जाने से अचल ने कहा—'तुमने बहुत अच्छा किया है। जब तुम सुनो कि मथुरा में अचल राजा हुआ है, तब वहां आना। तुम मेरे महान् उपकारक हो।'

अचल वहां से रवाना होकर कौशाम्बी नगरी पहुँचा। वहां उसने सिंहगुरु नामक आचार्य के समीप अनुविद्या का अभ्यास करने वाले राजा इन्द्रदत्त को देखा। अचल ने भी उसे अपना धनुष चलाना बताया। इससे प्रसन्न होकर राजा इन्द्रदत्त ने पृथ्वी अपनी कन्या उसे प्रदान करदी। अचल ने बलवान होकर अंग आदि देश जीत लिये। इसके बाद उसने मथुरा-नगरी पर चढाई करदी और भानुप्रभ आदि आठो सौतेले भाईयो को कैद कर लिया। तब उसके पिता चन्द्रप्रभ ने, अपने पुत्रों को छुड़ाने के लिए अपने प्रधान मन्त्री को उसके पास भेजा। अचल के पास आकर प्रधानमन्त्री ने भानुप्रभ आदि को छोड़ने की प्रार्थना की। उस समय अचल ने अपना संपूर्ण पूर्व वृत्तान्त कह कर उसे विदा किया। प्रधानमन्त्री ने सारा वृत्तान्त राजा चन्द्रप्रभ से निवेदन किया। राजा चन्द्रप्रभ अचल के ऊपर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और यद्यपि अचल सबसे छोटा था फिर भी मथुरा में लाकर उसका राज्यभिषेक कर दिया। अचल पर ईर्षा रखने वाले भानुप्रभ आदि आठो पुत्रों को देश-निकाला देदिया। पर अचल ने उन्हें वापिस बुलाकर अदृष्ट सेवक बना लिया। इसके बाद एक बार अचल राजा ने नाट्यगृह में, अपने पैर का कांटा निकालने वाले अंक को देखा। उसने उसी समय सेवको को भेज कर अंक को अपने पास बुला लिया और उसकी जन्मभूमि श्रावस्ती नगरी का राज्य उसे दे दिया। दोनो एकता पूर्वक राज्य करने लगे। कुछ समय बीत जाने के बाद अचल और अंक ने विरक्त होकर समुद्रगुप्ताचार्य के समीप दीक्षा धारण करली। दोनो दीक्षा पालन करके अन्त में ब्रह्म देवलोक में जन्म ग्रहण किया। अचल का जीव वहां से चल कर यह तुम्हारा छोटा शत्रुघ्न हुआ है। पूर्वजन्म के मोह के कारण उसे मथुरा नगरी का राज्य लेने की इच्छा हुई। अंक का जीव ब्रह्म देवलोक से आकर तुम्हारा यह कृतान्तवदन नामक सेनापति हुआ है।

राम, लक्ष्मण, सीता विभीषण, रावण, सुग्रीव लवणांकुश आदि का पूर्वभव वृत्तान्त

प्राचीन काल में दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में क्षेमपुर नामक

एक नगर था। वहां नयदत्त नामक एक वाणिक् निवास करता था उसकी सुनन्दा नामक स्त्री के उदर से धनदत्त और वसुदत्त नाम दो पुत्र उत्पन्न हुए। याज्ञवल्क्य नामक एक ब्राह्मण के साथ उसकी मित्रता थी। उसी नगर में एक सागरदत्त नामक दूसरा वाणिक भी रहता था। उसकी पत्नी रत्नप्रभा के पेट से उत्पन्न गुणधर नामक पुत्र और गुणवती कन्या थी। सागरदत्त ने अपनी कन्या गुणवती नयदत्त के पुत्र धनदत्त को देदी और उसकी पत्नी ने द्रव्य के लोभ से उसी नगर में रहने वाले श्रीकान्त नामक सेठ को देदी। याज्ञवल्क्य को यह समाचार मालूम हुआ तो उसने धनदत्त तथा वसुदत्त से कह दिया। क्रोध से आग बबूला होकर वसुदत्त श्रीकान्त को मार डालने के लिए रात में रवाना हुआ। वहां उसने श्रीकान्त को मारा और श्रीकान्त ने तलवार से वसुदत्त को मार डाला। मरने के बाद दोनो विन्ध्याटवी में मृग हुए। गुणवती भी अविवाहित अवस्था में ही मर कर उसी अटवी में मृग के रूप में जन्मी। उसके लिए फिर दोनों मृग आपस में लडे और दोनो की मृत्यु होगई। पारस्परिक वैर के कारण वे दोनो अनेक भवो में भटकते फिरे।

इधर धनदत्त अपने भाई वसुदत्त की मृत्यु से दुःखी हुआ रात में भटक रहा था, तब उसे भूख लगी। उसी समय उसकी दृष्टि कुछ साधुओ पर जा पड़ी। उसने उनसे खाना मांगा। मुनियों में से एक ने कहा—'साधु तो दिन में भी अन्नपानी नहीं रखते, ऐसा होते हुए भी तुम्हें रात में भोजन मांग कर खाने की इच्छा क्यों हुई ! ऐसे अंधकार में अन्न को कौन देख सकता है ?' इस प्रकार बोध देकर उसके कानो में बोध रूपी अमृत डालकर मुनि वहां से चले गये। तत्पश्चात् काल करके धनदत्त सौधर्म देवलोक में देव हुआ। देवभव की आयु पूर्ण करके वह महापुर नगर में मेरुश्रेष्ठ नामक श्रावक की धारिणी स्त्री की कुक्ष से पद्मरुचि नामक पुत्र हुआ। यौवन अवस्था प्राप्त होने पर किसी समय वह अपनी इच्छा से घोड़े पर सवार होकर गोकुल की ओर गया। रास्ते में उसने मरणासन्न पड़े हुए बैल देखे। उसके दिल में दया उमड़ पड़ी अतएव वह घोड़े से नीचे उतरा, बैलों के पास गया और उनके कान में पंचपरमेष्ठी (नवकार) मन्त्र सुनाया। उनमें का एक बूढ़ा बैल देह त्यागने के बाद अवधार-

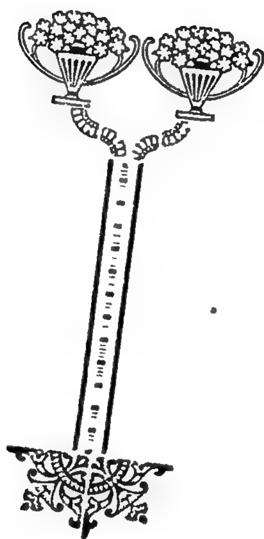
मन्त्र के प्रताप से, उसी नगर में, छत्रछाय राजा की रानी श्रीदत्ता के उदर से वृषभध्वज नामक पुत्र हुआ। वह बड़ा होकर इच्छानुसार इधर उधर डोलता फिरता था। एक बार वह बैलो के पहले वाले स्थान पर आया। पूर्वजन्म के दर्शन से उसे वहां जातिस्मरण ज्ञान होगया। उसने उस स्थान पर एक मकान बनवाया और उसकी दीवाल पर मरणासन्न बैलो के चित्र बनवाये। साथ ही बैलों के कान में नवकारमन्त्र सुनाने वाले पुरुष को चित्रित किया। इसके बाद उसने वहां पहरेदार नियत कर दिये और उन्हें हिदायत करदी कि इन चित्रो को जो मनुष्य यथार्थ-साक्षात् की तरह देखे, उसकी खातरी करके उसी समय मेरे पास आकर निवेदन करना। इस प्रकार व्यवस्था करके वृषभध्वज कुमार अपने महल को चला गया।

इसके बाद कुछ दिन व्यतीत होजाने पर वह पद्मरुचि सेठ वहां आया और उसने दीवाल पर चित्र देखे। चित्र देख कर वह चकित सा रह गया और कहने लगा—यह सब मुझे लक्ष्य करके चित्रित किया गया है। यह बात पहरेदारो ने वृषभध्वज के पास जाकर निवेदन की। वृषभध्वज वहां आया और पद्मरुचि से पूछने लगा—इन चित्रो का आप क्या वृत्तान्त जानते हैं? तब पद्मरुचि ने कहा—पहले मरते हुए इन बैलों को मैंने नवकारमन्त्र सुनाया था। इस बात को जानने वाले किसी पुरुष ने यहां मेरा चित्र अंकित किया है। इतना सुनते ही वृषभध्वज ने उसे नमस्कार किया और कहा- यह जो वृद्ध बैल अंकित है, वह मैं हूं। आपके द्वारा सुनाये गये नवकारमन्त्र के प्रभाव से मैं राजपुत्र हुआ हूं। इस तिर्यञ्च योनि में कृपा करके आपने मुझे नवकारमन्त्र न सुनाया होता तो फिर मुझे वैसी ही योनि मिलती। यह आपका ही प्रताप है। अतएव आप मेरे स्वामी, गुरु तथा देव हैं। यह राज्य भी मुझे आपके ही प्रताप से मिला है अतएव उसे आप ही स्वीकार कीजीये और उसका उपभोग कीजिये।

इसके बाद पद्मरुचि तथा वृषभध्वज श्रावक के व्रतों का पालन करते हुए दिन बिताने लगे। इस प्रकार बहुत समय व्यतीत होजाने पर दोनों आयु का अन्त होने के बाद ईशान देवलोक में महान् ऋद्धिधारी देव हुए। उनमें से पद्मरुचि का जीव स्वर्ग से चल

कर मेरु की पश्चिम दिशा में, वैताढ्य पर्वत पर नन्दावर्त नगर में राजा नन्दीश्वर की स्त्री कनकमाला की कूंख से नयनानन्द नामक पुत्र हुआ। बहुत समय राज्य का सुख भोग कर, अन्त में दीक्षा ग्रहण करके, काल करके माहेन्द्र देवलोक में देव हुआ। वहां से चल कर पूर्व महाविदेह क्षेत्र में क्षेमा नगरी के नरपाल विपुलवाहन की रानी पद्मावती के उदर से श्रीचन्द्र नामक पुत्र हुआ। वह फिर बहुत समय तक राजभोग भोग कर समाधिगुप्त मुनि के समीप दीक्षा ग्रहण करके, आयु पूर्ण होने पर काल करके ब्रह्म देवलोक का इन्द्र हुआ। वहां से चलकर पद्म नामक बलवान राजा राम हुआ, और वृषभध्वज ईशान स्वर्ग से चल कर, कितनेक भव करके यह सुग्रीव हुआ है।

श्रीकान्त का जीव मृग भव के पश्चात् अनेक पर्यायों में भ्रमण करता हुआ मृणालकन्द पत्तन में वज्रजम्बू नामक राजा की स्त्री हेमवती के उदर से शंभु नामक पुत्र हुआ। वसुदत्त का जीव भी इसी प्रकार अनेक भवों में भटकने के बाद शंभु राजा के उपाध्याय विजय की पत्नी रत्नचूड़ा की कूंख से श्रीभूति नामक पुत्र हुआ। गुणवती भी भव-भ्रमण करके श्रीभूति की स्त्री सरस्वती के उदर से वेगवती नामकी कन्या हुई। वेगवती जब यौवन अवस्था में आई तब उसने एक बार मानव-समूह द्वारा वन्दनीय सुदर्शन नामक प्रतिमाधारी साधु को देख कर उनका उपहास किया। वह बोली- 'ओ हो! आज यह साधु दिखाई पड़ा है। पहले तो यह औरतों के साथ क्रीडा करता फिरता था। उन स्त्रियों को इसने और कहाँ भेज रक्खी है। न मालूम क्यों ऐसों को लोग वन्दना करते हैं? वेगवती के इस प्रकार कहने से जनता की श्रद्धा उन मुनि पर नहीं रही और लोगों ने उन पर दोषारोपण करके उनके साधुत्व को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। यह अवस्था देख मुनि ने प्रतिज्ञा की-'जब तक मुझ पर लगाया हुआ कलंक न मिटे अपना तब तक मैं पारणा नहीं करूंगा।' इस प्रकार की प्रतिज्ञा करने पर देवता के कोप से वेगवती के मुख पर सूजन चढ़ गई। वेगवती के पिता ने सोचा साधु के माथे मिथ्या कलंक मढ़ने का ही यह भयानक फल है। फलतः उसने वेगवती का खूब तिरस्कार किया। इसके पश्चात्, [illegible] और देवता से पीड़ित और पिता के भय से भीत वेगवती सुदर्शन मुनि के पास



अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अशामतो	अशातो	२७	२
मयरनी	भयरवनी	२७	२२
रांघत	रांघत ही	३०	२३
त्रट्यां	त्रूट्यां	३०	२५
योगणोप	योगणीप	३२	२७
हूत	दूत	३४	१२
सहथ	सहथ्थ	३४	२०
हूंसियार	हूॅसीयारी	३४	२४
रावती	रोवती	४४	१३
महियर	सहियर	४६	५
साहा	साही	४८	२५
प्राती	प्रीती	७३	८
अजया	अजपा	७५	३
कहूं	करूं	८१	१
गुप	गुप्तो	१०६	६
सजम	संयम	१०७	१४
वालावी	बोलावी	१०८	१६
उघम	उद्यम	११२	१८
शाक्षा	शिक्षा	१३७	१५
भांतो	भांति	१४०	२८
विविकप	विवेकप	१४४	२०
राघवजी	राघवजी	१४६	६
पतिन	पतित	१४६	१७
राघव	राघव	१४७	११
राज	राजा	१५१	२३
तृष्णा	तृपा	१५६	२३
जुऊआंजी	जुआजुआ	१६०	२
आचायो	आवीयो	१७७	११
आय	आप	१७९	२०
ए	फदे	१८२	२६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
कोशनाधीश	कोशलाधीश	३१६	१५
ततूकाल	तत्काल	३१६	१६
आभूपण	आभूषण	३१७	१८
पुक्तो के	युक्ति	३१८	१
भया	भाया	३१८	६
जा	जावे	३१६	३
ववि	चली	३१६	३०
अदश्ये	अदृश्य	३२०	२६
हानो	हीनो	३२०	२७
थपा	थया	३२५	५
इस	इम	३२५	६
धंटां	घटां	३२५	१८
में तेही	में आते ही	३२५	२०
पदम	पद्म	३२६	१८
कापोना	कायोना	३२६	६
वणि	वाणि	३२६	१२
भाय	भाया	३३१	३
थाय	थाप	३३१	११
पहिरावी	पधरावी	३३१	१४
आये	आपे	३३२	१७
नाराद	नारद	३३४	१
त्रिक्लट	त्रिकूट	३३७	११
आपराजिता	अपराजिता	३३७	१७
पदम	पद्म	३४१	२७
ऋृपमे	ऋृपमे	३४२	३
शंक्या	शका	३४२	२२
इ२प	इभ्य	३४३	११
शत्रुंजय	शेत्रुंजय	३४४	१६
क	करे	३४५	२१
पारेले	पाले	३४५	२१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
ढाली	टाली	३९८	१८
वीलवे	वीनवे	४०३	२५
आप	आय	४०४	६
इन्द्रदिक	इन्द्रादिक	४०६	१४
सीताने शीले करीरे	युद्धे जीत्यो जोईरे	४०६	१
वात	व्रत	४३०	१७
काये	कापे	४३०	२२
चढको	चटको	४३२	३
मोग	भोग	४३२	२३
ढाले	ढोले	४३३	७

ब्रह्मचर्य रक्षा में

तवि	नवि

परिशिष्ट (४)

धन्यवाद

जिन महानुभावों ने मेरे उत्साह की वृद्धि करने के लिए ग्राहक श्रेणि में पहिले ही से अपना नाम लिखाकर उदारता प्रकट की है अतः उन सज्जनों को मैं हृदय से धन्यवाद दे रहा हूं और भविष्य में भी मेरे कार्य में सहयोग देते रहें, यही प्रार्थना करता हुआ उनके नाम नीचे लिख देता हूं।

श्री	सेठ चिमनलालजी चंपालालजी गुलेच्छा	पुस्तक नग	५१	सींचन
,,	साधुरामजी अगरचन्दजी ,,	,,	१५	,,
,,	रतनलालजी मानमलजी ,,	,,	११	,,
श्री	सेठ शिम्भुरामजी गणारामजी फार्म के मालिक सेठ छगनमलजी मूथा	पु० नग	२५	मु० मनुन्दा
,,	असराजजी कालूरामजी मूथा	,,	१५	रायचूर
,,	कनकमलजी बोहरा	,,	५	अयतारन्
,,	अभयराजजी पेथरचन्दजी संकलेचा	,,	१०	,,
,,	सेठ लिखमीचन्दजी पुखराजजी गुलेच्छा कपड़ा बाजार		५	जोधपुर
,,	सेठ किशोरमलजी किस्तूरचन्दजी मोदी मोदियों की गली		५	जोधपुर
,,	पुन्नीलालजी मोदी की धर्मपत्नी		१२	जोधपुर
,,	सेठ प्यारेलालजी लालवाणी		६	नागौर
,,	केसरीमलजी खींवी की धर्मपत्नी		५	नागौर
श्री	व्यास नथमलजी मूलचन्दजी		१५	नागौर
,,	चन्दनमलजी भांडू		५	कुचेरा

स्थानकवासी संघ	५	बालोतरा
,, मूलचन्दजी आसारामजी	५	गढ सीवाणा
,, छोगमलजी मूलचन्दजी जिनाणी	५	गढ सिवाणा
,, जैन स्थानकवासी ज्ञान मुनि मण्डल पुतस्कालय	५	जालोर
,, जैन वर्धमान सभा	५	घूघाड़ा
,, मगनीरामजी कपूरचन्दजी बोरा	५	पाली
,, उम्मेदमलजी सिरदारमलजी नाहर	५	देवली (आऊवा)
जैन श्री संघ करमावस मालियों की	५	करमावस
जैन श्री संघ बिरांटियां (मेला का)	५	बिरांटिया
,, अमरचन्दजी गजराजजी समदड़िया	६	नानणा
,, नानक पुस्तकालय	१५	विजयनगर
,, किस्तूरचदजी मुणोत की धर्मपत्नी गंगाबाई	५	पीपाड़
,, सूरजमलजी मिश्रीमलजी मुणोयत	५	पीपाड़
,, मोतीलालजी सोनराजजी बोरा	५	पीपाड़
,, हरखचन्दजी मोतीलालजी कोठारी	५	पीपाड़
,, जुगराजजी जवन्तराजजी खिवसरा	५	पीपाड़
,, पेमराजजी बोहरा	५	पिपलिया
,, किसनलालजी लूनिया	५	पिपलिया
,, नथमलजी मूलचन्दजी	११	सादड़ी
श्री संघ	५	झूटा

—जो महाशय कम से कम पांच पुस्तकों के ग्राहक बने हैं उन महानुभावों के नाम अंकित किये गये हैं।

भवदीयः—

जैनोपदशक वैद्य,

धूलचन्द सुराणा

पीपाड़ सीटी.

